

श्री भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः।

क.१२८३६

तस्य

२३५६९

प्रथम-खंडे जीवस्थाने

हिन्दीभाषानुवाद-सद्यः-प्रस्तावनाकेपरिशिष्टे सम्पादिता

सत्प्ररूपणा २



सम्पादक.

अमरावतीस्य-किंग-एडवर्ड-कालेज-संस्कृतविभागात्: एम् ए, एल् एल्. बी, इत्युपाधिधारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादकौ

पं. फूलचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री * पं. हीरालालः सिद्धान्तशास्त्री, न्यायतीर्थः

संशोधने सहायकौ

व्या. वा., सा. सू., पं. देवकीनन्दनः * डा. नेमिनाथ-तनय-आदिनाथः

सिद्धान्तशास्त्री

उपाध्यायः, एम् ए, डी. लिट्.

प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शिताचाराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फण्ड-कार्यालय.

अमरावती (वरार)

क्रि. स. १९९७]

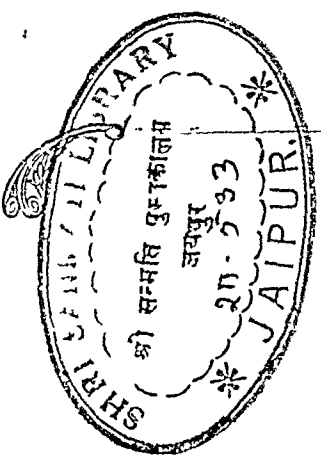
वीर-निर्वाण-सवत् २४६६

[ई. स. १९४०

मूल्यं रूप्यक-द्वादशकम्

खंड भाग
१ १

पुस्तक
२



प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र,
जैन-साहित्योद्धारक-मंड-कार्यालय

अमरावती (बरार)



मुद्रक-

टी. एम्. पाटील,
भेनेजर

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती (बरार)

| विषय | पृष्ठ नं. | विषय | पृष्ठ नं |
|--------------------------------------------|-----------|--------------------------------------|----------|
| प्राक् कथन | १-३ | ५ वारहवें श्रुतांग दृष्टिवादका परिचय | ४१-६८ |
| प्रस्तावना | | १ परिक्रम | ४३ |
| ग्रन्थकी प्रस्तावना (अप्रेजीमें) | I-VI | २ सूत्र | ४६ |
| १ तादृश्यप्रतीय प्रति के लेखन कालका निर्णय | १-१४ | ३ पूर्वगत | ४८ |
| २ मन्थरूपणके अन्तकी प्रशस्ति | १ | ४ प्रथमायुयोग | ५६ |
| ३ धातुके अन्तकी प्रशस्ति | ७ | ५ चरित्रा | ५९ |
| ४ सन्तर्पणा विभाग | १४ | महाकर्मपयटिपाहुड | ६० |
| ५ वर्णणाराट विचार | १५-३३ | कसायपाहुड | ६७ |
| १ वेद्यणकमिण पाहुड ओर | १६ | ६ त्रयका विषय | ६८ |
| २ तर्पणा नामपर रांडसजा | १७ | ७ रचना और भाषाशैली | ७० |
| ३ वेदवातांटेके आदिका | | विषय-सूची | |
| ४ वेदनाचरण | १९ | १ सन्तर्पणा-आलापसूची | ७२ |
| ५ वेदनाराट समाप्तिकी पुष्पिता | २१ | २ आलापगत विशेष विषयसूची | ८२ |
| ६ इन्द्रगन्धिकी प्रमाणिकता | २२ | शुद्धिपत्र | ८३ |
| ७ मूडनिद्रीसे प्रतिलिपि | | सन्तर्पणा २ | |
| १ क्रमेवालेकी प्रामाणिकता | २३ | मूल, अनुवाद और संवृष्टियां | ४११-८५५ |
| २ वेदनालेके आदि अवतरणोंका ठीक अर्थ | २५ | परिशिष्ट | |
| ३ वेदना ओर वर्णणानुसंगी | | १ पारिभाषिक शब्दसूची | १ |
| ४ सीमाओंका निर्णय | ३० | २ अवतरण गायथासूची | ६ |
| ५ वर्णणा निर्णय | ३१ | ३ प्रतियोंके पाठभेद | ७ |
| ६ णमोकार मन्त्रके आदिकर्ता | ३३-४१ | ४ प्रतियोंमें छूटे हुए पाठ | १३ |
| ७ धवलकारका मत | ३३ | ५ विशेष टिप्पण | १५ |
| ८ श्वेताम्बर मान्यता विचार | ३५ | | |

श्रीधवलसिद्धान्त प्रथम विभागके प्रस्तावित होनेसे हमे जो आशा थी, उसकी सोलहों आने पूर्ति हुई। हमे यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष और सतोष है कि मूडनिद्री मठको भेट की हुई शाराकार और पुरतकाकार प्रतियोंके बहा पट्टुचनेजर उन्हें विमानमें निराजमान करके जुद्धस निकाला गया, श्रुतपूजन किया गया और सभा की गई, जिसमें वहाके प्रमुख राजनों और विद्वानोंद्वारा हमारी सशोधन, सम्पादन और प्रकाशन व्ययथाकी बहुत प्रशंसा की गई और यह मत प्रगट किया गया कि आगे इस सम्पादन कार्यमें वहाकी मूल प्रतिये मिलान ही सुविधा दी जाना चाहिये, नहीं तो ज्ञानावरणीय कर्मका वध होगा। यह सभा मूडविद्री मठके भट्टारकजी श्री चारुकीर्ति पंडिताचार्यवर्यके ही सभापतित्वमें हुई थी।

उक्त समारम्भके पश्चात् स्वयं भट्टारकजीने अपना अभिप्राय हमें सूचित किया और प्रति मिलानकी व्यवस्थादिके लिये हमे वहा आनेके लिये आमन्त्रित किया। इसी बीच गोम्भटस्वामीके महाभारतकाभियेकका सुअवसर आ उपरिगत हुआ। यद्यपि छुट्टियां न होनेके कारण हम उक्त महोरसवमे सम्मिलित होनेके लिये नहीं जा सके, किंतु हमारे कार्यमें अभिरुचि रखने और राहायता पहुंचानेवाले अनंरु श्रीमान् और धीमान् वहा पहुंचे और उनमेंसे कुछने मूडविद्री जाकर प्रथराज महाधवलकी भी प्रतिलिपि कराकर प्रकाशित करानेके लिये भट्टारकजी व पंचोंकी अनुमति प्राप्त कर ली। सम्योचित उदारता और सद्भावनाके लिये मूडविद्री मठका अधिकारी वर्ग अभिनन्दनाय है और उस दिशामे प्रयत्न करनेवाले सजन भी धन्यवादके पात्र है। अत्र हम उस सम्भवमें पत्र-व्यवहार कर रहे हैं, और यदि सब सुविधाए मिल सकी, जिनके लिये हम प्रयत्नशील हैं, तो हम शीघ्र ही मूडविद्रीकी समस्त बबलादि श्रुतोंकी प्रतियोंकी (फोटोस्टाट मशीन या माइक्रोफिल्मिंग मशीन द्वारा) प्रतिलिपियां कराकर प्रथराजका चिराययी उद्धार करनेमें सफलभूत हो सकेंगे। इस महान् कार्यके लिये समस्त धर्मिष्ठ और साहित्यप्रेमी सजनोंकी सहानुभूति और क्रियात्मक सहायताकी आवश्यकता है, जिसके लिये हम समाजपर का आह्वान करते हैं।

प्रथम विभागका प्रकाशनोत्सव ४ नवम्बर सन् १९३९ को किया गया था। तबसे आज ठीक आठ मास हुए हैं। इतने अल्पकालमें द्वितीय विभागका सशोधन सम्पादन होकर मुद्रण भी पूरा हो रहा है, यद्यपि कार्यमें कठिनाइयां अनेक उपस्थित होती रहती हैं। इस सम्फलतामें समाजकी सद्भावना और देवी प्रेरणा बहुत कुछ कार्यकारी दिखाई देती हैं। यदि समय अनुकूल रहा तो आगे प्रायः वर्षमें दो भागोंका प्रकाशन करानेका प्रयत्न किया जायगा।

इस विभागके सम्पादनमें भी पूर्वोक्त सहयोग पूर्ववत् ही चलता रहा है, अर्थात्

प. फूलचंद्रजी शास्त्री और प. हीरालालजी शास्त्री स्थायी रूपसे सम्पादन कार्यमें हमारे साथ सलभ रहे, तथा प. देवकीनन्दनजी शास्त्री और डा आदिनाथजी उपाध्यायसे हमें सशोधनमें यथावसर वाञ्छित साहाय्य मिलता रहा। धबलाकी जो प्रशस्तिवा इस विभागके साथ प्रकाशित हो रही है, उनका सहायनपुरकी प्रतिसे अक्षरशः मिलान वीरसेवामंदिरके अधिष्ठाता प जुगलकिशोरजी ने करके भेजनेकी कृपा की। उन्हीं प्रशस्तियोंके कनाडी पाठोंके सशोधनका अत्यन्त कठिन कार्य डा. उपाध्येके सहयोगी, राजाराम कालेज, कोल्हापुरमें कनाडीके प्रोफेसर श्रीयुत कुन्दनगारजी द्वारा किया गया है। वीरसेवामंदिरके पं. परमानन्दजी शास्त्रीने प्रस्तुत विभागमें आई हुई अवतरण-गाथाओंके प्राकृत पत्रसंग्रहमें होने न होने की हमें सूचना दी। बीनाके प वशीधरजी व्याकरण-चार्यने पृ ४४१-४४३ पर आये हुए व्याकरण सबधी कठिन प्रकरणपर अपनी सम्मति विस्तारसे हमें लिख भेजनेकी कृपा की। प महेन्द्रकुमारजी न्यायाचार्यने इस भागके प्रथम फार्मका प्रूफ देखकर मुद्रण-संबधी अनेक सूचनाएं देनेकी कृपा की। इस सब सहायताके लिये हम इन विद्वानोंके बहुत ही अनुग्रहीत हैं। और भी अनेक विद्वानोंने अपनी बहुमूल्य सम्मतिया हमें या तो व्यक्तिगत पत्र द्वारा या समालोचनके रूपमें पत्रोंमें प्रकाशित कराकर देनेकी कृपा की। उन सबसे भी हमने लाभ उठानेका प्रयत्न किया है। अतएव वे सब हमारे धन्यवादके पात्र हैं। उन सम्मतियों आदि परसे जो संशोधन या सूचनाएं प्रथम खडके विषयमें हमें आवश्यक प्रतीत हुईं, उनका भी समावेश इस विभागके शुद्धिपत्रमें किया जाता है। पाठक उससे प्रथम खडमें उचित सुधार कर लें।

हमारे अनेक प्रेमी पाठकोंने कुछ सूचनाएं ऐसी भी भेजी थीं जिनका, भेद है, हम पालन करनेमें असमर्थ रहे। इनमें एक सूचना तो प्राकृत अर्थोंका या उनके कठिन स्थलोंका सरसृत रूपान्तर देते जानेके सम्बन्धमें थी। इसको स्वीकार न कर सकने का कारण हम प्रथम जिल्दके प्राक्कथनमें ही दे चुके है और हमारा वह मत अब भी कायम है। दूसरी सूचना हमारे वयोवृद्ध पाठकोंकी और से यह थी कि भाषान्तरका टाइप छोटा पडता है, उसे और भी बड़ा कर दिया जाय तो उन्हें पढनेमें सुविधा होगी। हम बहुत चाहते थे कि अपने वृद्ध पाठकोंकी इस मूर्त्तिमान् कठिनाई को दूर करें। किन्तु पाठक देखेंगे कि मूल्के टाइपसे अनुवादका टाइप बहुत कुछ छोटा होते हुए भी उसमें मूल्से कहीं अधिक स्थान लगता है। अब हम यदि उसे और भी बड़े टाइपमें लें तो हमारी निश्चित की हुई खंड-व्यवस्था और ग्हाल्यूसमें बड़ी गडबड़ी उपपन्न होती है। अतएव विश्वास होकर हमें अपनी पूर्ण पद्धति ही कायम रखना पडी। आशा है हमारे वृद्ध पाठक प्रकाशन सबधी इस कठिनाईको समझकर हमें क्षमा करेंगे।

इस विभागके सशोधनमें भी हमें अमरावती जैनमन्दिरकी प्रतिके अतिरिक्त आराने सिद्धान्त भवन तथा कारजाके महावीरब्रह्मचर्याश्रमकी प्रतियोंका लाभ मिलता रहा तथा सहारन-पुरकी प्रतिके जो कुछ पाठभेद पहलेसे नोट थे उनसे लाभ उठाना गया है। अतएव इन सब प्रतियोंके अधिकारियोंके हम अनुग्रहीत हैं।

श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी और जैन साहित्योद्धारक फंडकी ट्रस्ट कमेटीके अन्य सब सदस्योंका इस कार्यको प्रगतिशील बनाये रखनेमें पूरा उत्साह है, और इस कारण हमें व्यवस्थामें किसी विशेष कठिनाईका अनुभव नहीं हुआ, बल्कि आगे सफलताकी पूरी आशा है।

यूरोपीय महासमरके कारण इस खडके लिये यथेष्ट कागज आदिका प्रवध करनेमें बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई, जिसको हल करनेमें हमारे निरन्तर सहायक पंडित नाथूरामजी प्रेमीका हमपर बहुत उपकार है।

सत्साहित्यकी कदर करनेवाले मर्मज्ञ पाठकोंने प्रथम जिल्दका जो खागत किया है और उसके लिये हमारी ओर जो प्रशंसाके भाव व्यक्त किये हैं, उसने लिये हम उनकी गुणग्राहकताके कृतज्ञ है। पर हम यह फिर भी व्यक्त कर देते हैं कि इस महान् कठिन कार्यमें यदि हमें सचमुच कुछ सफलता मिल रही है तो उसका श्रेय हमें नहीं, किन्तु समाजकी उसी सद्भावना और समयकी प्रेरणाको है जो उचित कालमें उचित कार्य किसी न किसीसे करा लेती है। इस सम्बन्धमें हमारी तो, महाकवि कालिदासके शब्दोंमें, यही धारणा है कि—

सिद्धान्तित कर्मसु महस्सपि यनियोग्या सम्भावनागुणमोहि त्मीश्वराणाम् ।
कि चाऽभविष्यदरुणस्तमसा विभेत्ता त चेत्सरस्त्रिभणो धुरि नाकरिष्यत् ॥

किंग एडवर्ड कालेज,
अमरावती
१५/७/१४०

हीरालाल जैन

पुस्तकालय

INTRODUCTION

1. Age of the palm-leaf manuscript of Dhavala at Mudbidri

In the introduction to Vol I we had conjectured that the palm-leaf manuscript of Dhavala deposited at Mudbidri was at least five or six hundred years old. We are now in a position to throw some more light on the subject of the manuscript tradition. At the end of Sūtri rūpanā after the colophon we find some text which, when reconstructed, yields three verses in Kannese in praise of Padmanandi, Kulabhushana and Kulacandra respectively. The relation between these three notabilities has not been mentioned here, but there is no doubt that they are identical with the teachers of the same names mentioned in the Sravana Belgola inscription No 40 (v4) as successively related to each other in a spiritual genealogical order. There is similarity in the adjectives used for them at both the places. The inscription also tells us that the teachers belonged to the brilliant line of Desigana, a branch of the Nandigana of Mulaswaha which had owned, amongst others, Kundakunda, Umāsāb, Samantabhadra, Pūyapūtri and Akalamka. One of the pupils of Padmanandi was Prabhācandra who is said to have been the author of a celebrated work on Logic. He, thus, appears to be identical with the author of Prameyacakamala-mūrtanda and Nyāya-kumudā-candraya. This inscription is not dated, but the line extends upto the third generation beyond Kulacandra, and there we find Devakīrti Muni who, according to inscription No 39 (v3), attained heaven in 1163 A D. The immediate successor of Kulacandra Muni was Māghanandi whose lay disciple Nimbadeva Sāmanta has also found mention in the Sukrabara Basti inscription of Kolhapur as a feudatory of the Silāhāra king Gaudarāṭṭiyadeva for whom there are mentions from 1108 to 1136 A D. Taking all these factors into consideration we may safely conclude that the persons mentioned in the Satprarūpanā Prasasti flourished probably during the eleventh century A D. The Kannese verses being obviously the interpolations of the scribe who may have been the pupil of the last teacher, we might infer that a copy of the Dhavala was made about this period.

The Prasasti found at the end of the Dhavala Ms throws still more light on the subject. The text of this long Prasasti is partly in Kannese and partly in Sanskrit and the Kannese portion is very corrupt. But the fact that emerges from it prominently is that the Ms of Dhavala was presented to the famous teacher Subhacandra Siddhantadeva of the Banniyakere temple on the occasion of the completion of her Srutapancami vow by Demyakka who was the aunt of Bhujabalaganga Permadideva of Mandali Nadu. Subhacandra is said to have belonged to the Desigana. His line begins from Kundakunda, and the other names of teachers mentioned are Gridhapiccha, Balākapiccha, Gūmanandi, Devendra, Vasanandi, Ravicandra, Dāmanandi, Vīranandi, Sridharadeva, Mahābhāridēva, Candrakīrti, Divākaranandi and, lastly, Subhacandra. On scrutinizing these facts in the light of epigraphic references that

are available to us, we find that the Subhacandra to whom the Ms of Dhavala was given is identical with that Subhacandra whose death is commemorated in Sravana Belgola inscription No 45 (117) of 1123 A D, because the spiritual genealogy of Subhacandra is given at the two places agrees entirely. We even find three verses that are common between our Prasasti and the inscription, the numbers of these verses in the inscription being 12, 13 and 21. The Banniyakere temple with which Subhacandra is the recipient of the Ms, has been associated, was built, according to Shimoga inscription No 97 (Ep China Vol VII) in 1113 A D. In this inscription Bhujabalaganga Permadideva, also mentioned in our Prasasti, makes a grant to the temple, and at the close of the record Subhacandra of Desigana is praised. Thus, the temple of Banniyakere with which Subhacandra was associated was built in 1113 A D, while he died in 1123 A D. The Ms of Dhavala was, therefore, presented to Subhacandra by Demyakka between 1113 and 1123 A D.

We also get some light about the donor of the Ms from epigraphic records. Sravana Belgola Inscription No 49(129) is in commemoration of a lady variously named as Demati, Demavati, Devavati and Demyakka, who is said to have been a pupil of Subhacandra. She is said to have died by the Jain form of renunciation on the 11th day of the dark fortnight in Saka 1042 (A D 1120). In the inscription the lady is highly eulogised for her four forms of charity which included gifts of shastis or holy books. These mentions leave no doubt in our mind that this lady is the same as the donor of the Dhavala Ms. The date of the gift is, therefore, brought within closer limits between 1113 and 1120 A D.

The upshot of the above discussion is that we are confronted with three facts about Dhavala Ms namely—

1. A copy of the Dhavala Ms was made probably about three generations prior to the death of Devakīrti Muni in 1163 A D, i.e. about 1100 A D.
2. A Ms of Dhavala was presented to Subhacandra by lady Demyakka sometime between 1113 and 1120 A D.
3. A palm-leaf Ms of Dhavala making mention of the above fact and indicating fact No 1 exists at Mudbidri.

The probability in my mind is that it was the present palm leaf Ms at Mudbidri which was copied by a pupil of Kulacandra and presented by Demyakka to Subhacandra. But the possibility of the object of Demyakka's gift being a later copy of the first Ms and the present Ms being a still more subsequent copy of the second, mechanically reproducing the eulogistic verses and the Prasasti of the former ones, cannot be entirely precluded until the present palm-leaf Ms at Mudbidri is thoroughly examined from all points of view internally as well as externally.

2. Is Vargana Khanda included in the available Mss. of Dhavala?

The six main divisions of the present work, on account of which it acquired the title of Satkhandāgama, were Jyotthana, Khuddabandha, Bandhasmitta-vicaya,

Vedāna, Vaggana and Mahābandha. We had already stated in the previous volume that of these six Khandas, the first i. e. the Mahābandha exists in a separate manuscript and is not included in the Mss of Dhavalā which contain all the remaining five Khandas. To this an objection was raised from one quarter that the available Mss of Dhavalā contain not even five, but only the first four Khandas, Vaggana Khandā being also missing from them. This view was based upon a misinterpretation of one text and a wrong reading of another text found at the beginning of the Vedāna Khandi and then support was sought for the view by a series of wrong co-relations and a number of allegations against the old reporters like Indranandi and the recent copyist from Mudbidri Mss. These have been critically examined by me from every possible point of view on the basis of all available material, with the result that my previous statements have been fully confirmed. The last word on this subject, as well as on others of a similar nature, however, could only be said when the Mudbidri Mss have also been thoroughly examined and the whole work has been critically edited.

3 Authorship of the Namokara Mantra

Panca-namokara Mantra is the most sacred formula of Jaina religion. It forms part of the daily prayers of all the Jains whether Digambara or Svetāmbara. It has been regarded almost as an eternal revelation and the question of its authorship was never raised. It is this very formula that forms the benedictory text at the beginning of Jivatthana and the author of Dhavalā throws important light upon its authorship. He divides sacred writings into two kinds according to their benedictory text forms their integral part or not. Now, different benedictory texts are found at the beginning of the Jivatthana Khandi and that of the Vedāna Khandi. But the author of the Dhavalā places the first Khandi in one category and the other in the second category on the clearly stated ground that at the second place the benedictory text was not an integral part of the writings because it was not the original composition of the author who had merely borrowed it from elsewhere. But he regards the Namokara formula as integrally connected with the Jivatthana. This shows that in the opinion of the author of Dhavalā the Namokara formula was the original composition of Puspādanta the author of the Sūprauṇanā which was the first part of Jivatthana.

I tried to pursue the inquiry further and found that in the Svetāmbara Āgama, Ajja Vāra is credited with having interpolated the formula in one of the Mūlasūtras. A survey of the Svetāmbara Pāṭiśāhis and equivalent mentions in the Digambara texts revealed a number of points of contact and of difference between them in the names and dates of various notabilities like Ajja Vāra, Ajja Mankhu or Mangu and Nāgānāthi, associated with this sacred formula and with the study and preservation of portions of the lost canon. But a clarification of these and ultimate conclusions on the points raised must await further investigation and study.

4. A comparative review of the contents of Ditthivāda

The twelfth Jaina Sūtrakṅga Ditthivāda, according to the traditions of both the Digambaras and the Svetāmbaras, was irretrievably lost. But a brief resume of its

contents is found in the literature of both the sects. The Digambaras work Sūtrakṅdā-gama of Puspādanta and Bhūtabāhi as well as Kasāya-pāhudi of Guṇadharaśārya are claimed to be directly based upon it. It would, therefore, be interesting to take a bird's eye view of the contents of this most important Jaina Sūtrakṅga, leading up to the positions that have been preserved.

The Ditthivādi was divided into five parts, Paṭikamma, Sutta, Pādhamaṅga, Puvvagaṇa and Cūhā. The Svetāmbaras place Puvvagaṇa first and Anuoga, with its subdivisions Mulapādhamaṅga, and Guṇānuoga, instead of Pādhamaṅga, next in the above order. The two schools differ entirely in the matter of the subsections of the first part, Paṭikamma. The Digambaras name five Pannattis under it, namely, Canda, Suna, Jambudīva, Divasāyara and Viyāha, while the Svetāmbaras count under it seven Semās, namely, Siddha, Minussa, Puṭṭhi, Oḡāha, Uvasampajjara, Vipparajana and Cūca, each of which is again divided into fourteen or eleven sections like Māḡāpayaṃ, Egatthapayaṃ, Atthapayaṃ, Pādhomāsapayaṃ, Keubhuam, Kāsibaddham, Egūṇam, Duṇam, Tigunam, Keubhuram, Paduggaho, Samsārapaduggaho, Nandāvittam and Siddhāvattam. The nature of the subject-matter of these is shrouded in mystery. The Digambara subdivisions, on the other hand, are quite intelligible and their contents are also clearly stated. There is, however, one thing remarkable about the Svetāmbara subdivision that the first six divisions of Paṭikamma are said to be in accordance with the Jaina view which recognised four Nayas, while the seventh was an addition of the Ajivikas who recognised three Rasas or Nayas. It appears from this that the Ajivika view-point was also accommodated in the Jaina Agama and that at one time the Jains recognised only four instead of seven Nayas.

The second division of Ditthivāda was Sutta which, according to the Digambaras, dealt, firstly, with the philosophy of the soul according to their own ideas, and, secondly, with the philosophical theories of others, such as Teṭāsiya, Niyativādi, Saddavādi and the like. They also speak of eighty-eight divisions of Sutta of which, they say, the names have been forgotten. The Svetāmbaras mention twenty-two subdivisions of Sutta and point out that they may be studied according to four Nayas, namely, Chinnacheda, Achinnacheda, Tikā and Cātuska, of which the first and the fourth Nayas are followed by the Jainas, while the second and the third are adopted by the Ajivikas. In this way, Sutta is shown to possess eighty-eight subdivisions. Here again, the mention of the Ajivika view-point and its accommodation are remarkable.

Pādhamaṅga division of Ditthivāda, according to the Digambaras, deals with Paurāṇic accounts. As mentioned before, the Svetāmbaras give the name of this division as Anuoga and subdivide it as Mula-pādhamaṅga dealing with the lives of the Tirthamkaras, and Gandānuoga dealing with the lives of Kulakaras and other distinguished persons in separate sections (Gandakās). Amongst these the account of the Citrāntara Gandikā is very astonishing and staggering.

Puvvagaṇa was the most important division of Ditthivāda because its fourteen subdivisions, known as Puvvas, contained, in fact, all the essential wisdom of the

(V)

Trithankaras There is no substantial difference in the name or in the nature of the contents of the fourteen Puvvas in the Digambari and the Svetāmbari accounts of them, except that the eleventh Puvva is called Kallāri by one and Avanyān by the other, while there is also some difference in the extent (number of padas) of the twelfth Puvva, Pānāvāya. Both schools agree that some studied the entire Śrutī while others stopped at the tenth Puvva. This view, in a way, shows the significance of placing Anuoga or Padhamānuoga before Puvvagaya, for, otherwise, those that stopped at the tenth Puvva could have no knowledge of Anuoga.

The fifth and the last division of Dittihvāda is Culinā, which, according to the Digambari school, dealt with the sciences pertaining to Jala, Sthāli, Maya, Rupa and Akāsa. The other school has no account of the Culinā to give except that they were appendices of the first four Puvvas and that their number was, in all, thirtyfour. But if they were appended to the Puvvas, it remains unexplained why a separate division for them was thought necessary.

The Puvvas are said to have been divided into Vāttihus and each Vāttihu was subdivided into twenty Pāhudas, their total number, according to the Digambari school, being 197 and 3900 respectively. The Kammāpayādī Pāhuda, of which the subject-matter has been preserved with all its twentyfour Adhikaras, in the Saṅkhandigama, was one of the 280 Pāhudas included in the second Puvva Aggeyyam. Similarly, the Kasāya-Pāhuda of Guvadharcarya is based upon one of the Pāhudas included in the fifth Puvva Nāmapavāda. Nothing corresponding to these portions in age and subject-matter is yet found in the Svetāmbari literature.

5. Subject-matter, language and style.

This volume is entirely devoted to the specification of the various soul qualities under different stages of spiritual advancement and under various conditions of life and existence, which have already been dealt with, in a general way, in the first volume. It is entirely the work of the commentator Vrasena who takes his stand upon the foregoing Sūtras, but the idea of the twenty categories that form the basis of his treatment here is borrowed from elsewhere. He starts by quoting an old verse which names the twenty categories. The earliest work where we find the treatment of the subject under the same twenty categories is the Tiloya-pannati. It is, however, still a matter for investigation as to who started the idea of the twenty categories first.

We have tabulated the numerical specifications on each page in order to show the subject at a glance and facilitate reference, and the number of tables is in all 546. The various divisions and subdivisions leading to this high number would become clear by a glance at the table of contents.

The language is throughout Prakrit except for a few Sanskrit passages in the beginning, and by the very nature of the subject-matter which consists mostly of enumeration, the style is very indifferent to grammatical forms. In the enumerations

(VI)

of the soul qualities words have frequently been used without inflections. In fact, abbreviated forms with dots are also met with all over in the Mss. But since the Mss. used by us were not uniform on the point, we preferred to give the fuller forms, and have also taken the liberty to complete the enumerations where omissions in the Mss. were obvious. But we have not attempted to make the words inflected for fear of changing the entire character of the author's style which is so natural in its own way under the circumstances.

The number of older verses found quoted in this volume is thirteen, all in Prakrit. One of them (No 228, on page 788) is said to have been taken from 'Pundia', a work which is otherwise unknown.

As before, I have, in this brief survey, avoided details which the interested reader would find in the Hindi translation.

१ ताड़पत्रीय प्रतिके लेखनकालका निर्णय

सत्यरूपणाके अन्तकी प्रशस्ति

नल सिद्धान्तकी प्राप्त हस्तलिखित प्रतियोंमें सत्यरूपणा विवरणके अन्तमें निम्न कनाडी पाठ पाया जाता है—

सततनाताभासद पात्मभोगनियोग चाकस्तेय चित्तवृत्तियलपि नललद्वन गल्प त्तिद गवो
'नरियोगेन गोचरतपाण्णि-सिद्धान्तमुनाद्वचन्नुदय युधेक्षपउमंडन मतणमेणेसुदुयुगपाणक भेदवृद्धि
अन्यन्तोन्^१ गार्तेय चित्तगरीय पद्विण्ण^२ उपुथालि^३ हल्लरोजातरागरागितदिनं कुलभूषण^४ दिव्यसैद्धान्त-
मूर्गद्वानुगाल्यनोपागमपीथमहर्ष^५ सतत नालकायमतिमचरित दिनादि दिनके वीर्यं तउविर्हिदुस्य वियम-
भिमेनो न्यतनधिष्टमोकागद तरे कतु मुन्युगिडे सचरित कुलचन्द्रदेवभेद्धान्तमुनीन्द्ररुजितयशोवज्जलजगमतीर्थ-
महर्ष^६

भने यह कनाडी पाठ अपने सहयोगी मित्र डाक्टर ए. एन्. उपाध्याय प्रोफेसर राजाराम काठेन कोल्हापुर, जिनकी मातृभाषा भी कनाडी है, के पास सशोधनार्थ भेजा था। उन्होंने यह कार्य अपने कालेजके कनाडी भाषाके प्रोफेसर श्री. के. जी. कुदनगर महोदयके द्वारा करा कर भेरे पास भेजनेकी छुपा की। इसप्रकार जो सशोधित कनाडी पाठ और उसका अनुवाद मुझे प्राप्त हुआ, वह निम्न प्रकार है। पाठक देखेंगे कि उक्त पाठ परसे निम्न कनाडी पद्य सुसशोधित-तर भिन्नाल्लेमें सशोधकोंने कितना अधिक परिश्रम किया है।

१

सततनाताभासनेय पात्मभोगनियोग (वाणि) वा-
गार्तेय चित्तवृत्तियोलवि नल (वि गउ मोहना) गल्-
प गलेद गउ प्रचुरपफज्जोभितपग्गणादिसि-
दान्तमुनीन्द्रचंद्रसुदय उध केसवपउमज्जम् ॥ १ ॥

२

भाणमोक्षमय्युगुणणाच्छिन्न वृद्धिगे चन्द्रन्ते वा-
गार्तेय चित्तगरीयपदपत्तन्वस्सुधाहिल्लसरो-
जातररागरजितमम कुलभूषणादिव्यसेव्यसै-
दांगमुनीन्द्रसंतिथयोवज्जलजगमतीर्थियत्तम् ॥ २ ॥

१ पास प्रतियोंमें इस प्रशस्तिमें अनेक पाठभेद पाये जाते हैं। यहाँ पर सहासपुरकी प्रतिके अनुसार पाठ म्पा गया है जिनका भिन्न हमें बीसेमा महरिके अधिष्ठाता प. जगलकिशोर्जी मुस्ताफेके द्वारा प्राप्त हो गया। ताउ श्मारी अ. प्रतिम जो अधिक पाठ पाये जाते हैं वे टिप्पणमें दिये गये हैं। २ अनन्तज्जनोत्त। ३ परमिगनपम्। ४ अर्षत्। ५ दिव्यमेव्य। ६ तीर्थदमद्वयस्सै। ७ महर्षरु।

२

सत्यरूपणाके अन्तकी प्रशस्ति

३

सततकालकायमतिमचरित दिनादि दिनके वी-
यं तलेद्वदु भिक नियमगल्लनाहुविचेकनोघदे-
द तवे कतु मन्गुगिदे सचरित कुलचन्द्रदेवसे-
द्धान्तमुनीन्द्ररुजितयशोवज्जलजगमतीर्थरुत्तवम् ॥ ३ ॥

इसका हिन्दीमें सारानुवाद हम इसप्रकार करते हैं—

१

श्रीपद्मनन्दि सिद्धान्तमुनीन्द्ररूपी चन्द्रमाका उदय विद्वद्विष्णुरूपी कुमुदिनी समूहका मंडन था। वे प्रफुल्ल कमलके समान सुशोभित थे, तथा उनके मनमें निरंतर शान्त भावना और पावन सुख-भोगमें निमग्न सरस्वती देवीका निवास होनेसे वे सहज ही सुदूर शरीरके अधिकारी हो गये थे।

२

वे दिव्य और सेव्य कुलभूषण सिद्धान्तमुनीन्द्र अपने ऊर्जित यशसे उज्वल होनेके कारण जगम तीर्थके समान थे। मन्त्रण, मोक्ष और सदगुणोंके समुद्रको वढानेमें वे चन्द्रके समान थे, तथा सरस्वती देवीके चित्तरूपी वल्लीके पदपकज (के निवास) से गर्वयुक्त विद्वत्समुदायके हृदयकमलके अंतर रागसे उनका मन रजायमान था।

३

ऊर्जित यशसे उज्वल कुलचन्द्र सैद्धान्तमुनीन्द्रका उद्भव जगमतीर्थके समान था। निरन्तर कालमें काय और मनसे सच्चास्त्रिवान्, दिनोंदिन शक्तिमान् और नियमवान् होते हुए उन्होने विवेकवृद्धिद्वारा ज्ञान-दोहन करके कामदेवको दूर रखा। यह सच्चास्त्रि ही कामदेवके क्रोधसे बचनेका एकमात्र मार्ग है।

इसप्रकार इन तीन कनाडी पद्योंकी प्रशस्तिमें क्रमशः पद्मनन्दि सिद्धान्तमुनीन्द्र, कुलभूषण सिद्धान्तमुनीन्द्र और कुलचन्द्र सिद्धान्तमुनीन्द्रकी विद्वत्ता, बुद्धि और चास्त्रिकी प्रशंसा की गई है। पर उनसे उनके परस्पर सम्बन्ध, समय व धवलश्रय या उसकी प्रतिसे किसी प्रकारके सम्बन्धका कोई ज्ञान नहीं होता। अतएव इन वातोंकी जानकारीके लिए अन्यत्र खोज करना आवश्यक प्रतीत हुआ।

श्रवणवेत्युलके अनेक शिखलेखोंमें पद्मनन्दि मुनिके उल्लेख पाये हैं। पर सब जगह एक ही पद्मनन्दिसे तात्पर्य नहीं है। उन लेखोंसे ज्ञात होता है कि भिन्न भिन्न कालमें पद्मनन्दि नाम व उपाधिधारी अनेक मुनि आचार्य हुए हैं। किन्तु लेख न. ४० (६४) में हमारे प्रस्तुत पद्मनन्दिसे अभिप्राय रखनेवाला उल्लेख ज्ञात होता है, क्योंकि, उसमें पद्मनन्दि सैद्धान्तिकके

लोकाभिधकाके पुत्र तथा यदुवंशी राजा नारसिंहके मन्त्री कहे गए हैं। इन यादव व होयसलवंशीय राजा नारसिंह तथा उनके मन्त्री हुल्लराज या हुल्लपका उल्लेख अन्य अनेक शिलालेखोंमें भी पाया जाता है, जिनसे उनकी जैनधर्म में श्रद्धाका अच्छा परिचय मिलता है। (देखो जैन शिलालेख संग्रह, सू. पृ. ९४ आदि)। पर उक्त विषय पर प्रकाश डालनेवाला शिलालेख नं० ३९ है जिसमें देवकीर्तिकी प्रशस्तिके अतिरिक्त उनके स्मृतिशाला समय शक १०८५ सुभानु सत्रसर आपाड शुक्र ९ बुधवार सूर्योदयकाल वतलाया गया है, और कहा गया है कि उनके शिष्य लखनदि, माधवचन्द्र और त्रिभुवनमल्लने गुरुभक्तिसे उनकी निपटकी प्रतिष्ठा कराई।

देवकीर्ति पद्मानन्दिसे पाच पीढी, कुलभूषणसे चार और कुलचन्द्रसे तीन पीढी पश्चात् हुए हैं। अतः इन आचार्योंको उक्त समयसे १००-१२५ वर्ष अर्थात् शक ९५० के लगभग हुए मानना अनुचित न होगा। न्यायकुमुदचन्द्रकी प्रस्तावनाके विद्वान् लेखकने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक उस ग्रन्थके कर्ता प्रभाचन्द्रके समयकी सीमा ईश्वी सन ९५० और १०२३ अर्थात् शक ८७२ और ९४५ के बीच निर्धारित की है। और, जैसा ऊपर कहा जा चुका है, ये प्रभाचन्द्र वे ही प्रतीत होते हैं जो लेख नं० ४० में पद्मानन्दिके शिष्य और कुलभूषणके सधर्म कहे गए हैं। इससे भी उपर्युक्त कालनिर्णयकी पुष्टि होती है। उक्त आचार्योंके कालनिर्णयमें सहायक एक और प्रमाण मिलता है। कुलचन्द्रमुनि के उत्तराधिकारी माघनन्दि कोल्लपुरीय कहे गये हैं। उनके एक गृहस्थ शिष्य निम्बदेव सामन्त का उल्लेख मिलता है जो शिलाहार नरेश गंडरादिलदेवके एक सामन्त थे। शिलाहार गंडरादिलदेवके उल्लेख शक सं. १०३० से १०५८ तक के लेखोंमें पाये जाते हैं। इससे भी पूर्वोक्त कालनिर्णयकी पुष्टि होती है।

पद्मानन्दि आदि आचार्योंकी प्रशस्तिके सम्बन्धमें अब केवल एक ही प्रश्न रह जाता है, और वह यह कि उसका धवलाकी प्रतिमें दिये जानेका अभिप्राय क्या है? इसमें तो संदेह नहीं कि वे पद्य मुडविद्वीकी ताडपत्रीय प्रतिमें हैं और उर्ध्वपरसे प्रचलित प्रतिलिपियोंमें आये हैं। पर वे धवलाके मूल अंश या धवलाकारके लिखे हुए तो हो ही नहीं सकते। अतः यही अनुमान होता है कि वे उस ताडपत्रवाली प्रतिके लिखे जानेके समय या उससे भी पूर्वकी जिस प्रति परसे वह लिखी गई होगी उसके लिखनेके समय प्रक्षिप्त किये गये होंगे। संभवतः कुलभूषण या कुलचन्द्र सिद्धान्तमुनिकी देख-रेखमें ही वह प्रतिलिपि की गई होगी। यदि विद्यमान ताडपत्र की प्रति लिखनेके समय ही वे पद्य डाले गये हों, तो कहना पड़ेगा कि वह प्रति शककी दशवीं

१. जैन शिलालेखसंग्रह, लेख नं. ४०

२. Sukrabara Basti Inscription of Kolhapur, in Graham's Statistical Report on Kolhapur.

न्यायकुमुदचन्द्र, पृष्ठिका पृ. १२४ आदि.

उमास्वाति शुद्धपिच्छ

वलाकीपिच्छ

(उनकी परम्परामें)

समन्तभद्र

(उनके पश्चात्)

देवनन्दि, विनेन्द्रबुद्धि वृन्धपाद

(उनके पश्चात्)

अकलक

(उनके पश्चात् मूलसंघ, नन्दिगणके देशीगणमें)

गोह्लाचार्य

त्रैकाल्य योगी

पद्मानन्दि कौमारदेव

कुलभूषण

प्रभाचन्द्र

कुलचन्द्र

माघनन्दिमुनि (कोल्लपुरीय)

गडविमुक्तदेव, शुतकीर्ति

कनकनन्दि देवचन्द्र, माघनन्दि

त्रैविधदेव, देवकीर्ति प. दे. के शिष्य

शुभचन्द्र त्रै. दे., रामचन्द्र त्रै. देव.

भागुकीर्ति

देवकीर्ति

धन प्रश्न यह उपस्थित होता है कि उक्त पद्मानन्दि आदि आचार्य किस कालमें उत्पन्न हुए? जिस उपर्युक्त शिलालेखों उनका उल्लेख आया है, उसमें भी समयका उल्लेख कुछ नहीं पाया जाता। किंतु वहां उस लेखका यह प्रयोजन अनस्य वतलाया गया है कि महामंडलाचार्य देवकीर्ति पंडितदेवने कोल्लपुरकी स्मृतिरायण वसदिके अधीन केल्ठेरोय प्रतापपुरका पुनरुद्धार कराया था, तथा, जिननामपुरमें एक दानशाला स्थापित की थी। उन्हीं अपने गुरुकी परोक्ष गिनयके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भडारी अभिनव-गंग-दंडनायक श्री हुल्लराजने उनकी निपट्या निर्माण कराई। तथा गुरुके अन्य शिष्य लखनदि, माधव और त्रिभुवनदेवने महाप्रधान व स्वाभिरिक करके प्रतिष्ठा की। हुल्लराज अपरनाम हुल्लप वासिंशके यक्षराज और

एतु नारर वेत् सिगु पुविमुद देमेदेयेथेलेनिप जगदीका तालिद रामगन्धिसिद्धान्तरैर-

सात्ततेदेवधिष ताल्याद् त्रिरोधमिदेष ? त्रिभुधर ।
स्वाततेयेचतेशे परमार्थयोळिनु नेग लते येसिय ॥
नाता [निम्ना (१) रे [ज-न ?] निनेक-रिगादिदि-
दान्तामुन्निरे मुगतिताकगयेळु निरीत त्तरो ॥
योगिरामपरथित-यथेमाग श्रीधरदेरैर गंभान्प्ररासा . ।
श्रीधरगीनिधिरासरोजेगञ्जर मळघारिदेगं श्रीधरयेतज ॥
नारोन्मन्निष्ठवदुचितकाम् अनुयागामि यथेनेगपुत्रोदरोदे पूणि ।
यिनोके यमके नदने भा जळगामनेजेमीगेके ॥
तन मनक . ' क्लीन्नुमदोद्धत नप चित्तज- ।
मनोमळ [गिरळमते ?] नेसिन्नुमनेकगारिदेर [ररेयेग ?] ॥

श्रुतपर [वलिचिने ?] मेदगोमंयु एरियुदि-न निदेरेममुंलदिक्कुगुरिला तगिळ भिळरे
युगुविळ मुंदिळ (मरेन्नु) रेरे [भाग ?] यगिगमल् गुगगगातलिय मळघारिदेर ॥

आमळघारिदेरमुनिमुधर तिलरोळग्रण्यमन्निमिक्षित [कंयायमुने ?] नित्तकयायकोथ' ले. अमान-
मायामद्वयतिंगेदंरिनुमरीधिगळपूर (दि ?) यत श्री नेमिचन्त्रीतिंमुनिनायययत्तचरियत्रुत्तियि ॥
मळघारिदेवोदि । वेळगिदुदु विनेन्नुनासनं पुष निमंलमामि मत्तगीगद् । वेळगिरपुदु चन्त्रीतिंभट्टारकीर ॥
वेळगुप कींतिचकि ने यदुत्तिसुधारपुणंमूर्तेयो
ळ्येकेदुमल वोददे सितलंछानामागिरे चन्नुनंदम ॥
तळेदु जा मनगोळे दिगत... निमिती-

जलमुभचन्त्रीतिंमुनिनाययदिं विडुथानियधरो ॥
(पयिठ ?) प्रयकिरगारावीयचन्त्रीतिंमुनाद्राशांतगतंतीसंगळ मुनिचुन्नुवंदितरायरा-
नांतचिठर सिधराद्विवाकरणदिसिद्धान्तेदरिदे निनागमवाधिपारागारदरो । इयाकुदरिदेविलिकेयु
सिद्धात्तवारीधिय तळदेवदुंवेडोने-पुलिमुनेनेळु वि. मारुणंविदिसिद्धांतदेवराबिळागममममममामांमंतिम-
मुपंमुदुपुरानिकर म्यायगतघोर मरळलितोपुगतगघोपमेने सिंकोवायंति नोपनिमंलधमामुलाविन-
कंकरिती गभीरलम ठाळि भूराळवके पवित्रतामि नेगळ्दरा विद्धात्तरनाकर ॥ अत्रपयितियत्
मरेदुमदोपमे लोकिक्कदातंयनाडद देववागिल ।
तेरेयद् सासुत्रतमितभागिरीयोगद् मेदयोभमेयु ॥
गुरिसयकुकुड्यायवके गालद् गढविमुक्कृतियं ।
मरेयदुवोरदुभारतपअरितं मळघारिदेर ॥ अत्रपयितियत्

कीदः श्रीगणेशंभवंकरअद्यावदुलोकरणः एयेवाद् श्रीमळघारिदेरयमिन पुत्र- पवित्रो मुनि ।

१ अ प्रतिमं यदा ' तददेवप्रर ' एंमा पाठ है ।

२ अ. प्रतिमं ' मुनिवितरुपायकोथ ' इतना पाठ नहीं है ।

७
एतुंमंमनसि प्रत्यासना
एतुंमंमनसि प्रत्यासना
एतुंमंमनसि प्रत्यासना

ययलोकं अन्तकी मरास्ति

एतुंमंमनसि प्रत्यासना
एतुंमंमनसि प्रत्यासना
एतुंमंमनसि प्रत्यासना

?

एतुंमंमनसि प्रत्यासना
एतुंमंमनसि प्रत्यासना
एतुंमंमनसि प्रत्यासना

२

ययलोकं अन्तकी मरास्ति
ययलोकं अन्तकी मरास्ति
ययलोकं अन्तकी मरास्ति

१ अ. एतुंमं ' एतुंमंमनसिप्रत्यासना ' इतना पाठ है ।

पट्टलङ्गमकी प्रस्तावना य श्रीमान् शुभचन्द्रदेवमुनिप विद्वान्बिष्णानिधिः ॥१॥

२

नन्द्याधिष्ठितमूर्तये परिलम्बसाङ्गोलमस्तभके (?)

मादिभ्यस्त्रिपिण्डमभितिलचिते (?) ग्योतिर्मये मन्त्रे ।

मूर्तयन्त्रमूलरराङ्गलो स्थादाङ्गहर्म्यं मुदा,

यो (?) देवन्दुराचिंतोद्विप्येद्वैसन्नित्तरेखरु (?) तप ॥ २ ॥

३

देवन्द्यादिदान्तमुनिन्द्रपादपकेभ्यम् शुभचन्द्रदेवः ।

यदीयानामपि विनेयचोत्तवत् तसो हतुमल समये ॥ ३ ॥

४

परमनिवेश्यरभिरचितवरसिद्धान्तान्पुराणिपातरादी ।

चरे यद्विगसुगु गुणगणधर शुभचन्द्रदेवसिद्धान्तिकर ॥ ४ ॥

५

श्रीमन्निन्द्यादप्यपरगगुप्तः श्रीजेनशासनमगुहृत्तवाधिचन्द्रः ।

सिद्धान्तशास्त्रिद्विदितदिव्यवाणी धर्मप्रबोधकुङ्कः शुभचन्द्रसूरिः ॥ ५ ॥

६

पिण्डोत्तमदेभ्यन्दुलज्जोत्तमो भग्याम्भोजकुलप्रबोधकृते विद्वज्जाननन्दकृत ।

स्येयाङ्कुरद्विसेन्दुनिर्मल्यसोवहोसमालम्बन स्तम्भ श्रीशुभचन्द्रदेवमुनिपः सिद्धान्तरत्नाकरः ॥ ६ ॥

७

कुलान्यकुलान्युत्तरतमीशालसिद्धे विभक्तितपुत्रितेरे सज्जाननन्दपुत्रे ।

प्रितितिमलनागसहस्रान्दिन्द्रमूर्तेः शुभमविशुभचन्द्रो राजवद्राजतेऽयम् ॥ ७ ॥

८

द्विद्वन्द्वित्वान्तरमरिभौषिं रत्नजयालङ्कृतचारमूर्तेः ।

नीयाधिः श्रीशुभचन्द्रदेवो भग्याङ्गिज्जनीराजितराजहसः ॥ ८ ॥

९

श्रीमान् भूपालमौलिरुद्विगतमणिगणभ्योत्तरयोतित्तिभिः,

भग्याम्भोजात्तात्प्रमदकरनिधिस्तत्कमायासयादिः ।

इत्यरुन्दर्पदंपमकलितगिःलितस्वर्णितक्षार्यस्य,

नीयाज्जेनान्जनास्वाननुपमवित्तयो नोवसिद्धान्तदेवः (?) ॥ ९ ॥

१०

नीयात्सावतुपमं शुभचन्द्रदेवो भावोन्नवोन्नवविनाशनमूलमंत्रः ।

निसन्द्यात्प्रविशुयस्तुतिभूरिपात्रे त्रेलक्ष्ययोश्मणिदीपसमानकीर्तिः ॥१०॥

११

मूर्पेशमस्य रिपमस्य विनूपात्र क्षेत्रं शुभस्य यतसोऽनघलम्भुभिः ।

युधिः शुभपितृवत्तासुरभोजकस्पालवयुधाश्विवसताष्टुभक्त्यदेवः ॥११॥

रस्ति श्रीसमस्तगुणगणालङ्कृतसत्यशौचाचारुचरितनयविनयोऽलसपसेयु विभुः समसंज्ञेयु
भाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदियु गुणगणालङ्कृतं जितस्तनसमायमसुष्ठुलितदिन्यगन्धः शुभगोधो-
दकपवित्रगाथेयु गोत्रपवित्रेयुं सम्भक्तत्रुडामणिंयुं स्यादलिनदश्रीभुजबलगागयेभिर्दिदेयतेयरुमपर रविदेवि
(?) यक् श्रुतपचामिय नौज्जन्गेयानाडवनिगभेऽयुंयुं गैय्यालयद्वार्यायं युजनपिलयातरुमेनिसिदत्तम
गुरुगुण श्रीशुभचन्द्रभिद्धातदेवगं श्रुतपूजेय माडि चरेधिसि कोट धत्रलेय पुस्तक मगलमहा ॥

श्रीकुपण (कोपण) प्रसिद्धपुरासापुरदेवलो वशवाधि शोभाकरसूचित निसिलसाक्षरिनास्यविलासदर्पण ।
नाकजनायवचजिनपादपयोस्त्रुष्टुदेन्दु मूलोत्तमेद वणिपुडु लिखमन मनुनीतिमार्गन ।

जिनपदपवाराधकमनुपमवित्त्याशुगोभिदानविनोद मनुनीतिमार्गनसतीजनदूर लौकिकार्थदनिगलिखम् ।
चारिनिधिनोऽलोसुत्तमनेरिदुवकेंडु नेरेडु वरुण सुददिं भारतियकेरळोकिद्धहारमनु नरिसलेखेवरेवा गिन्नय ॥

यह प्रशस्ति बहुत अशुद्ध और संभवतः खलन प्रचुर है । इसमें गद्य और पद्य तथा संस्कृत और कनाड़ी दोनो पाये जाते हैं । विना मूढ़विद्विमी प्रतिके मिलान किये सर्वथा शुद्ध पाठ तैयार करना असंभवसा प्रतीत होता है । लिपिकारोंने कहीं कहीं कनाडीको विना समझे संस्कृतरूप देनेका भी प्रयत्न किया जान पडता है जिससे बडी गडबडी उत्पन्न होगई है । उदाहरणार्थ—कत्तो एक वचनका रूप कुन्दकुन्दाचार्यर् तृतीयां परिवर्तित कुन्दकुन्दाचार्यर् पाया जाता है । ऐसे स्थलोंको विद्वान् सशोकाने खूब संभाला है । पर कई स्थलोंकी पूर्ति फिर भी नहीं की जा सकी , कनाड़ी पद्य भी बहुत अष्ट और गद्यके रूपमें परिवर्तित हो गये है जिनका अर्थ भी समझना कठिन हो गया है । तथापि उससे निम्न बातें स्पष्टतः समझमें आती हैंः—

१. धवलानी प्रति वनियकेरे चैल्यालयके सुप्रसिद्ध आचार्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवको समर्पित की गई थी ।

२. शुभचन्द्रदेव देशीणके थे और उनकी गुरुपरंपरामें उनसे पूर्व कुन्दकुन्द, गुद्वपिष्ठ । बलकापिष्ठ, गुणान्दि, देवेन्द्र, वसुनन्दि, रविचन्द्र, दामनन्दि, वीरनन्दि, श्रीधरदेव, मलधारिदेव, (नेमि) चन्द्रकीर्ति और दिवाकरनन्दि आचार्य हुए ।

३. पुस्तक-समर्पण कार्य मंडलिनानुके भुजबलगागपेर्मांडिदेवकी काकी देभियकने श्रुत-पंचमी व्रतके उद्यापनके समय किया था ।

शुभचन्द्रदेवकी उक्त गुरुपरंपरा परसे उनका पता लगाना सुलभ हो गया । उक्त परंपरा, एक दो नामोंके कुछ भेदके साथ प्रायः वही है, जो श्रवणत्रालुके शिलालेख नं. ४३ (११७) में पाई जाती है । यही नहीं, किन्तु धवलकी प्रशस्तिके तीन पद्य ज्योंके लो उक्त शिलालेखमें भी पाये जाते हैं (पद्य नं. १२, १३ और २१) । लेखमें शुभचन्द्रदेवके स्वर्गवासका समय निम्न प्रकार दिया गया है—

आणान्मोक्षिममशशोऽशुशिलिते जाते शकाश्चे ततो
वषे शोभकृताङ्गे न्युपनते मासे पुन श्रावणे ।
पश्चे कृष्णविपक्षभविनि सिसे वारे दशम्यां त्रियो
स्वर्गान्तः शुभचन्द्रदेवगणभृत् सिद्धांतवारनिधि ॥

अर्थात् शुभचन्द्रदेवका स्वर्गवास शक संवत् १०४५ श्रावण शुक्ल १० दिने^३ सितवार (शुक्रवार) को हुआ । उनकी निषद्या पौरसल-नरेश विष्णुवर्धनके मंत्री गगराजने निर्माण कराई थी ।

शिमोगसे मिले हुए एक दूसरे शिलालेखमें बनियेको चैत्यालयके निर्माणका समय शक सं० १०३५ दिया हुआ है और उसमें मन्दिरके लिये मुजबलगगपेर्माडिदेवद्वारा दिये गये दानका भी उल्लेख है । अन्तमें देशीगणके शुभचंद्रदेवकी प्रशंसा भी की गई है । (एपी-ग्राफिआ कर्नाटिका, जिह्द ८, लेख नं० ९७)

खोज करनेसे धवला प्रतिका दान करनेवाली श्राविका देमियकका पता भी श्रवणबेल्युलके शिलालेखोंसे चल जाता है । लेख नं० ४६ में शुभचन्द्र मुनिकी जयकारके पश्चात् नागले माताकी सन्तति दंडनायकिकति लकले, देमति और बूचिराजका उल्लेख है और बूचिराजकी प्रशंसाके पश्चात् कहा गया है कि ये शक १०३७ वैशाल सुदि १० आदित्यवारको सर्व परिग्रह त्याग पूर्वक स्वर्गवासी हुए और उन्हेंकी सृष्टिमें सेनापति गाने पापाण स्तम्भ आरोपित करारा । लेखके अन्तमें 'मूलसंघ देशीगण पुस्तक गच्छके शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य बूचणकी निषद्या' ऐसा कहा गया है । इस लेखमें जो बूचणकी ज्येष्ठ मगिनी देमतिकी उल्लेख आया है, उसका सविस्तर वर्णन लेख नं० ४९ (१२९) में पाया जाता है जो उनके संन्यासमरणकी प्रशस्ति है । यहाँ उनके नाम-देमति, देवमती तथा दोनार देमियक दिये गये हैं और उन्हें मूलसंघ देशीगण पुस्तक गच्छके शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवकी शिष्या तथा श्रेष्ठिराज चामुण्डकी पत्नी कहा है । उनकी धर्मबुद्धिकी प्रशंसा तो लेखमें खूब ही की गई है । उन्हें शासन देवताका आकार कहा है, तथा उनके आहार, अभय, औपध और शास्त्रदानकी स्तुति की गई है । उस लेखके कुछ पय इस प्रकार हैं:—

१

आहार त्रिजगजनाय त्रिभय भीताय द्विव्योपध,
स्याधिरथापदुतेदीनमुखिने श्रोत्रे च शास्त्रागमम् ।
एव देवमातिस्मयैव ददती प्रमक्षये स्वायुषा-
मईवमसि विषयाय त्रिभिना द्विभ्यो वषु प्रोदभूर ॥ ४ ॥

२

आनीत्तरक्षोभकरप्रतापोषावनीपालकृत्वात्तरस्य ।
चायुषडनाक्षो वणिज प्रिया की मुख्या सती या सुवि देमतीति ॥ ५ ॥

३

भूलोकचेत्यालयचैत्यपूजाव्यापारदृशादरतोऽवर्तार्णा ।
स्वर्गोत्सुराति विलोक्यमाना पुर्येनं लावण्यगुणेन यात् ॥ ६ ॥

४

आहारशास्त्रामयभेजानां द्ययिन्यलं धणचतुष्टयाय ।
पश्चात्समाधिक्रियया मृदन्ते स्वस्थानवत्स्य प्रविनेश योषे ॥ ७ ॥

५

सद्भर्मशत्रु कलिकालराज लिवा न्यवस्यापितधमदृत्त्या ।
तस्या जयस्तम्भनिभ शिलाया स्तम्भं स्ववस्थापयति स लक्ष्मी ॥ ८ ॥

लेखके अन्तमें उनके संन्यासविधिसे देहत्यागका उल्लेख इसप्रकार है—

श्री मूलसघद देशीगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर् गुडि सक वर्ष १०४२;नेय
विकारि संवत्सरद फाल्गुण व. ११ वृहवार दन्दु संन्यासन विधिवि देमियक मुडिपिदल ।

अर्थात् मूलसघ, देशीगण, पुस्तकगच्छके शुभचन्द्रदेवकी शिष्या देमियकने शक १०४२
विफारिसंवत्सर फाल्गुन व. ११ वृहस्पतिवारको संन्यासविधिसे शरीरत्याग किया ।

उक्त परिचय पसे समव तो यही जान पड़ता है कि धवलाकी प्रतिका दान करने-
वाली धर्मिष्ठा साध्वी देमियक ये ही होंगी, जिन्होंने शक १०४२ में समाधिमरण किया । तथा
उनके भतीजे भुजबलि* गंगपेर्माडिदेव जिनका धवलाकी प्रशस्तिमें उल्लेख है उनके भ्राता
बूचिराजके ही सुपुत्र हों तो आश्चर्य नहीं । उस त्रतोषापनके समय बूचिराजका स्वर्गवास हो
सुका होगा, इससे उनके पुत्रका उल्लेख किया गया है । यदि यह अनुमान ठीक हो तो धवलाकी
प्रति जो संभवतः मूडविद्वितीकी वर्तमान ताड़पत्रीय प्रति ही हो और जो शक ९५० के लगभग
लिखाई गई थी, बूचिराजके स्वर्गवासके पश्चात् और देमियकने स्वर्गवासके पूर्व अर्थात् शक १०३७
और १०४२ के बीच शुभचन्द्रदेवके सुपुर्द की गई, ऐसा निष्कर्ष निकलता है । पर यह भी
समव है कि श्रीमती देमियकने पुरानी प्रतिमा नवीन छिपि कराकर शुभचन्द्रको प्रदान की और
उसमें पूर्व प्रतिके बीच-बीचके पय भी लेखकने कापी कर लिये हों ।

प्रशस्तिके अन्तिम भागमें तीन कनाडाके पय हैं जिनमेंसे प्रथम पय 'श्री कुपण' आदिमें
कोपण नामके प्रसिद्ध पुरकी कीर्ति और शेष दो पयों में जिन नामके किसी श्रावकके यशका
वर्णन किया गया है । कोपण प्राचीन कालमें जैनियोंका एक बड़ा तीर्थस्थान रहा है ।

* भुजबलीर होयल नरेंगामी उपाधि पाई जाती है । देलो शिलालेख न० १३८, १४३, ४९१,
४९४, ४९७

चांगुंडराय पुराणके 'असिधारा व्रतदिदे', आदि एक पद्यसे अवगत होता है कि तत्कालीन जैनी कोपणमें सष्टेखना पूर्वक देहत्याग करना विशेष पुण्यप्रद मानते थे। श्रवणत्रैलोकके अनेक लेखोंमें इस पुण्य भूमिका उल्लेख पाया जाता है। लेख नं० ४७ (१२७) शक संवत् १०३७ का है। इसके एक पद्यमें कहा गया है कि सेनापति गगने असख्य जर्ण जैनमंदिरोंका उद्धार कराकर तथा उत्तम पात्रोंको उदार दान देकर गगवाडिदेश को 'कोपण' तीर्थ बना दिया। यथा—

मत्तिन मात्तन्वितरलि जीर्ण जिनाश्रयकोथिय क्कम
वेत्तिरे धुत्तिनन्वितरनिवर्णलोल नेरे माडिडुत्तम-
सुरमपात्रदानदोदव मेरेवुचिरे गक्कवाडितो-
म्भयर सासिर कोपणमाडुडु गक्कण्डण्डनाथनि ॥ ३९ ॥

इससे कोपण तीर्थकी भारी महिमाका परिचय मिलता है।

लगभग शक सं० १०८७ के लेख नं० १३७ (३४५) में हुल्ल सेनापतिद्वारा कोपण महातीर्थमें जैन मुनिमंडके निश्चिन्त अश्वय दानके लिये बहुत सुवर्ण व्ययसे खरीदकर एक क्षेत्रकी वृत्ति लगाई जानेका उल्लेख है। यथा—

भियन्दिन्द हुल्लसेनापति कोपणमहातीर्थेदोळघानियुवा-
दिदियुमुत्तन्न चतुर्विंशति-जिन-मुनि सबके निश्चिन्तमाग
क्षय त्रान सख्य पाट्टि यह-क्कना-मना-क्षेत्र-जिर्णतु सट्ट-
सियनिन्वीलोक मेहम्मोगळे विडिसिद पुण्यपुजेकधाम ॥ २७ ॥

इससे ज्ञात होता है कि यहा मुनि आचार्योंका अर्च्छा जुटाव रहा करता था और संभ-
गत: कोई जैन विशालय भी रहा होगा।

लगभग १०५७ के लेख न. १४४ (३८४) के एक पद्यम सेनापति एच द्वारा कोपण व अन्य तीर्थस्थानोंमें जिनमंदिर बनवाये जाने का उल्लेख है। यथा—

माडिन्दिद जिनेन्भन्नाल्लना कोपणादि तीर्थदल्ल
दरिणिनेवरो-वेत्तेसेन वेल्गोलदल्ल बहुचित्रभिच्चिय ।
नोत्तर मन्जोळि पुोम्भिनमेच-वसुपत्तिथि ते-
गूरे पारिणिक्कोण्डु कनेइठे जम्मन्लिद्वडे लीलेधि ॥ १३ ॥

निजाम हैजावाद स्टेटके रायचूर जिलेमें एक कोपल नामका ग्राम है, यही प्राचीन कोपण सिद्ध होता है। वर्तमानमें वहा एक दुर्ग तथा चहार दीवाली है जो चालुक्य कालीन कलाके शोतक समझे जाते हैं। इनके निर्माणमें प्राचीन जैन मंदिरोंके चित्रित पाषाण आदिका उपयोग दिखाई दे रहा है। एक जगह दीवालमें कोई तीस शिलालेखोंके टुकड़े जुने हुए पाये

जाते हैं। इस स्थानपर व उसके आसपास कोई दस बीस कोसकी इर्दगिर्दमें अशोकके कालसे लगाकर इस तरफके अनेक लेख व अन्य प्राचीन स्मारक पाये जाते हैं।

कोपणके समीप ही पाल्कीगुण्डु नामक पहाडी पर, अशोकके शिलालेखके पास वराग-
चरितके कर्ता जटासिंहनन्दि के चरणचिह्न भी, पुरानी कवचडमें लेखसहित, अंकित है। (वराग-
चरित, भूमिका पृ. १७ आदि)

इसप्रकार यह स्थान बड़ा प्राचीन, इतिहास प्रसिद्ध और जैनधर्म के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है *।

२. सत्प्ररूपणा विभाग

पट्टखंडागमकी पूर्व प्रकाशित प्रथम पुस्तक तथा अब प्रकाशित होनेवाली द्वितीय पुस्तकको हमने 'सत्प्ररूपणा' के नामसे प्रकट किया है। प्रथम जिल्दके प्रकाशित होनेपर शंका उठाई गई है कि उस ग्रंथको सत्प्ररूपणा न कहकर 'जीवस्थान-प्रथम अश' ऐसा लिखना चाहिये था। इसके उन्होंने दो कारण बतलाये हैं। एक तो यह कि इस विभागके भीतर जो मंगलाचरण है वह केवल सत्प्ररूपणाका नहीं है बल्कि समस्त जीवस्थान खंडका है और दूसरे यह कि इसके आदिमें जो विषय-विवरण पाया जाता है वह सत्प्ररूपणाके बाहरका है, सत्प्ररूपणाका अग नहीं ×। इन दोनों आपत्तियोंपर विचार करके भी हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि हमने जो इस विभागको 'जीवस्थानका प्रथम अश' न कहकर 'सत्प्ररूपणा' कहा है वही ठीक है। इसके कारण निम्न प्रकार है—

१. यह बात ठीक है कि आदिका मंगलाचरण केवल सत्प्ररूपणाका ही नहीं, किन्तु समस्त जीवस्थानका है। पर, अबान्तर विभागोंकी दृष्टिसे सत्प्ररूपणाके भीतर उसे लेनेसे भी वह समस्त जीवस्थानका बना रहता है। सब ग्रंथोंमें मंगलाचरणकी यही व्यवस्था पायी जाती है कि वह ग्रंथके आदिमें किया जाता है और जो भी खंड, स्कंध, सर्ग, अध्याय व विषयविभाग आदिमें हो उसीके अन्तर्गत किये जाने पर भी वह समस्त ग्रंथका समझा जाता है। समस्त ग्रंथपर उसका अधिकार प्रकट करनेके लिये उसका एक स्वतंत्र विभाग नहीं बनाया जाता। अतएव जीवस्थान ही क्यों, जहातक ग्रंथमें सूत्रकारकृत दूसरा मंगलाचरण न पाया जावे वहातक उसी मंगलाचरणका अधिकार समझना चाहिये, चाहे विषयकी दृष्टिसे प्रथमें कितने ही विभाग क्यों न पड़ गये हों। स्वयं धवलोककारने आगे वेदनाखंड व कृति अनुयोगद्वारके आदिमें आये हुए मंगलाचरणको शेष दोनों खंडों व तेषीस अधिकारोंका भी मंगलाचरण कहा है। यथा—

* देखो जैनमि मा ५, २ पृ. १७०

× अनेकात्, बर्ष २, कृष्ण ३, पृ. २०१

है। इनमेंसे चार खंडोंके सम्बन्धमें तो कोई मतभेद नहीं है, किन्तु वेदना और वर्णा खंडकी सीमाओंके सम्बन्धमें एक शंका उपन की गई है जो यह है कि “धवलप्रथ वेदना खंडके साथ ही समाप्त हो जाता है-वर्णाखंड उसके साथमें लगा हुआ नहीं है”। इस मतकी पुष्टिमें जो युक्तियां दी गई हैं वे संक्षेपत निम्न प्रकार हैं—

१. जिस कम्मपयडिपाहुंडके चौवीस अधिकारोंका पुष्पदन्त-भूतवलिने उद्धार किया है उसका दूसरा नाम ‘वेयणकसिणपाहुंड’ भी है जिससे उन २४ अधिकारोंका ‘वेदनाखंड’ के ही अन्तर्गत होना सिद्ध होता है।

२. चौवीस अनुयोगद्वारोंमें वर्णा नामका कोई अनुयोगद्वार भी नहीं है। एक अवान्तर अनुयोगद्वारके भी अवान्तर भेदान्तर्गत सक्षित वर्णा प्ररूपणाको ‘वर्णाखंड’ कैसे कहा जा सकता है ?

३. वेदनाखंडके आदिके मंगलसूत्रोंकी टीकामें बीरसेनाचार्यने उन सूत्रोंको ऊपर कहे हुए वेदना, वधसामित्तविचय और खुदावधका मंगलाचरण बतलाया है और यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्णाखंडके आदिमें तथा महाबंधखंडके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है। उपलब्ध धवलके शेष भागमें सूत्रकारकृत कोई दूसरा मंगलाचरण नहीं देखा जाता, इससे वहां वर्णाखंडकी कल्पना गलत है।

४. धवलमें जो ‘वेयणाखंड समत्ता’ पद पाया जाता है वह अशुद्ध है। उसमें पडा हुआ ‘खंड’ शब्द असंगत है जिसके प्रक्षित होनेमें कोई सन्देह मात्तम नहीं होता।

५. इन्द्रनिदि व विबुधश्रीधर जैसे ग्रंथकारोंने जो कुछ लिखा है वह प्रायः किंवदन्तियों अथवा सुने सुनाये आधारपर लिखा जान पड़ता है। उनके सामने मूल ग्रंथ नहीं थे, अतएव उनकी साक्षीको कोई महत्व नहीं दिया जा सकता।

६. यदि वर्णाखंड धवलके अन्तर्गत था तो यह भी हो सकता है कि लिपिकारने शीघ्रता वश उसकी कापी न की हो और अधूरी प्रतिपर पुरस्कार न मिल सकने की आशंकासे उसने ग्रंथकी अन्तिम प्रशस्तिको जोडकर ग्रंथको पूरा प्रकट कर दिया हो। X

अब हम इन युक्तियोंपर क्रमशः विचार कर ठीक निष्कर्ष पर पहुंचनेका प्रयत्न करेंगे।

१. वेयणकसिणपाहुंड और वेदनाखंड एक नहीं हैं।

यह बात सत्य है कि कम्मपयडिपाहुंडका दूसरा नाम वेयणकसिणपाहुंड भी है और यह गुण नाम भी है, क्योंकि वेदना कर्मोंके उदयको कहते हैं और उसका निरवशेषरूपसे जो वर्णन

X जैनभिक्षुमन्त मारग ६, १ पृ ४२, अनेकान्त ३, १ पृ ३.

उपरि उक्तमागेषु तिसु खडेषु कस्सेदु मगळ ? तिण्ण खडाण । X X X क्ख वेयणाए आदीए उत्त मगळ सेस-दो-बडाण होदि ? ण, कवीए आदिभिद्द इत्तस्स प्दस्स मगळस्स सेस तेवीस-अणि योगारोसु पउत्ति-उत्सणादी ।

ऐसी अवस्थामें गणोकार मन्त्ररूप मंगलाचरणके सप्ररूपणाके आदिमें होते हुए भी उसके समस्त जीवस्थानके मंगलाचरण समक्षे जानेंमें कोई आपत्ति तो नहीं होना चाहिये।

२. यथार्थतः तो वह मंगलाचरण सप्ररूपणाका ही है। आचार्य पुष्पदन्तने उस मंगलाचरणको आदि लेकर सप्ररूपणा मात्रके ही सूत्रोंकी तो रचना की है। यदि हम इसे भूलबलि आचार्यकी आगेकी रचनासे पृथक् कर लें तो पुष्पदन्तकी रचना उस मंगलसूत्र सहित सप्ररूपणा ही तो कहलायगी। जीवस्थानका प्रथम अंश यही सप्ररूपणा ही तो है।

३. यदि इस अंशको सप्ररूपणा न कह कर जीवस्थानका प्रथम अंश कहते तो पाठक उससे क्या समझते ? इस नामसे उसके विषय पर क्या प्रकाश पड़ता ? वह एक अज्ञात कुलशील और निरुपयोगी शीर्षक सिद्ध होता।

४. हमने जो ग्रंथका विषय-विभाग किया है वह मूलग्रंथ पुष्पदन्त और भूतवलिद्वारा पट्खंडागमनी अपेक्षासे है, और उसमें सप्ररूपणासे पूर्व किसी और विषयविभागके लिये स्थान नहीं है। मंगलाचरणके पश्चात् छह सात सूत्रोंमें सप्ररूपणाका यथोचित स्थान और कार्य बतलानेके लिये चौदह जीवसमाप्तों और आठ अनुयोगद्वारोंका उल्लेखमात्र करके सप्ररूपणाका विवेचन प्रारम्भ कर दिया गया है। धवलटीकाके कर्ताने उन सूत्रोंकी व्याख्याके प्रसंगसे जीवस्थानकी उत्पत्तिकामा कुछ विस्तारसे वर्णन कर डाला तो इससे क्या उस विभागको सप्ररूपणासे अलग निर्दिष्ट करनेके लिये एक नये शीर्षककी आवश्यकता उत्पन्न होगई ? ऐसा हमें जान नहीं पड़ता। षट्खंडागमने भीतर जो सूत्रकारद्वारा निर्दिष्ट विषय विभाग हैं उन्हींके अनुसार विभाग रखना हमने उचित समझा है। धवलकारने भी आदिसे लगाकर १७ सूत्रोंकी क्रमसंख्या लगाता रखा है और उनकी एक ही सिलसिलेसे टीका की है जिसे उन्होंने ‘संतसुत्तविवरण’ कहा है जैसा कि प्रस्तुत भागके प्रारम्भिक वाक्यसे स्पष्ट है। यथा—

‘सपदि सत्त-सुत्त-विवरण-समत्ताणत्तर वेसिं परूवण मणिस्सामो’।

३. वर्णाखंड-विचार

पट्खंडागमके छह खंडोंका परिचय प्रथम जिल्दकी भूमिकामें कराया जा चुका है। वहां यह बतलाया गया है कि उन छह खंडोंमें से प्रथम पांच अर्थात् जीवद्वान्ण, खुदाबंध, बंधसा-मित्तविचय, वेदना और वर्णाण उपलब्ध धवलकी प्रतियोंमें निबद्ध हैं तथा शेष छठवां अर्थात् महाबंध स्वतंत्र पुस्तकारूढ है, जिसकी प्रतिलिपि अभीतक मूडविंदी मठके बाहर उपलब्ध नहीं

रूपा के उमका नाम वेणकमिगगाहुड (वेदनाखंडप्रप्राथन) है । किन्तु इससे यह आवश्यक नहीं हो जाना कि ममस्त वेणकमिगगाहुड वेदनाखंडके ही अन्तर्गत होना चाहिये, क्योंकि यदि वेदनागाना गोमे तम तो उद्द नंडोंकी अग्रप्रकृता ही नहीं रहेगी और समस्त पट्टवंड वेदनाखंड के ही अग्रप्रकृत मानना पड़ेगे चूंकि त्रीमृगणा आदि सभी खंडोंमें इसी वेणकमिगगाहुडके अर्थों का ही तो मण्डल किया गया है ऐसा कि प्रथम जिनकी भूमिकाओं दिये गये मानचित्रों तथा साहित्यका पृ. ७४ आदिमें उद्धृतोंमें स्पष्ट है । यह खंड-कल्पना कल्पयडिगहुड या वेणकमिगगाहुडके अन्तर्गत अस्मत्तर्भेदोंकी अवेक्षामें की गई है किसी एक खंडको समूचे पाहुडका अधिकांश ही नहीं माना गया । स्वयं यमलाकारसे वेदनाखंडको महाकल्पयडिगगाहुड समझ लेनेके विरुद्ध पाठकों को सतर्क कर दिया है । वेदनाखंडके आदिमें मगलके निबन्ध अनिवार्यका विशेष करते ममस्त वे कहने हैं—

‘ म च वेणकमिगगाहुड महाकल्पयडिगहुड, अग्रयस्मत्तर्भेदोऽस्मिन्निरोशदो ’

अर्थात् वेदनाखंड महाकर्मप्रकृतिप्राथन नहीं है, क्योंकि अग्रयवकी अवयवी मान लेनेमें विशेष उपाय होता है । यदि महाकर्मप्रकृतिप्राथनके चौबीसों अनुयोगद्वार वेदनाखंडके अन्तर्गत अंतर्गत तो वात्राकार उन ममके समूहको उमका एक अवयव क्यों मानते ? इससे विलकुल स्पष्ट है कि वेदनाखंडके अन्तर्गत उक्त चौबीसों अनुयोगद्वार नहीं हैं ।

२. क्या वर्गणा नामका कोई पृथक् अनुयोगद्वार न होनेसे उसके नामपर खंड संज्ञा नहीं हो सकती ?

कल्पयडिगगाहुडके चौबीस अनुयोगद्वारोंमें वर्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार नहीं है, यह त्रिकुण्ड सत्य है, किन्तु किसी उपभेदके नामसे वर्गणाखंड नाम पड़ना कोई असाधारण घटना तो नहीं कही जा सकती । यथार्थतः अन्य खंडोंमें एक वेदनाखंडको छोड़कर अन्य शेष सम खंडोंके नाम या तो विषयानुसार कल्पित हैं, जैसे जीवद्वरण, खुदावच, व महावध । या किभी अनुयोगद्वारके, उपभेदके नामानुसार हैं, जैसे वधसाभित्तविचय । उसीप्रकार यदि वर्गणा नामक उपाभिप्राय पदसे उसके महत्त्वके कारण एक विभागका नाम वर्गणाखंड रखा गया हो तो हमें कोई आश्चर्य ही बात नहीं है । चौबीस अधिकारोंमेंसे जिस अधिकार या उपभेदका प्रधानत्व पाया गया उसीके नामसे तो खंड संज्ञा की गई है, जैसा कि धवलाकारने स्वयं प्रश्न उठाकर कहा है कि इति, स्वयं, कर्म और प्रकृतिका भी यहाँ प्ररूपण होनेपर भी उनकी खंडग्रंथ संज्ञा न करके केवल तीन ही खंड कहे जाते हैं क्योंकि शेषमें कोई प्रधानता नहीं है और यह उनके संक्षेप प्ररूपणसे जाना जाता है । इसी संक्षेप प्ररूपणका प्रमाण देकर वर्गणाको भी खंड संज्ञासे

× इसी धवलाकार, निन्द, भूमिका पृ. ६५ टिप्पणी.

द्युत करनेका प्रयत्न किया जाता है । पर संक्षेप और विस्तार आयोगिक शब्द हैं, अतएव वर्गणाका प्ररूपण धवलाके संक्षेपसे किया गया है या विस्तारसे यह उसके विस्तारका अन्य अधिकारोंके विस्तारसे मिलान द्वारा ही जाना जा सकता है । अतएव उक्त अधिकारोंके प्ररूपण-विस्तार को देखिये । वंशसाभित्तविचयखंड अमरावती प्रतिके पत्र ६६७ पर समाप्त हुआ है । उसके पश्चात् मगलाचरण व श्रुतावतार आदि विवरण ७१३ पत्र तक चलकर कृतिका प्रारंभ होता है जिसका ७५६ तक ४३ पत्रोंमें, वेदनाका ७५६ से ११०६ तक ३५० पत्रोंमें, स्वयंका ११०६ से १११४ तक ८ पत्रोंमें, कर्मका १११४ से ११५९ तक ४५ पत्रोंमें, प्रकृतिका ११५९ से १२०९ तक ५० पत्रोंमें और वचन के वच और वंशनीयका १२०९ से १३३२ तक १२३ पत्रोंमें प्ररूपण पाया जाता है । इन १२३ पत्रोंमेंसे वंशका प्ररूपण प्रथम १० पत्रोंमें ही समाप्त करदिया गया है, यह कहकर कि—

‘ पृथ उधेसे सुदायधस्त पृष्कारस-अणियोगद्वाराण परूणा ऋयन्वा ’ ।

इसके आगे कहा गया है कि—

‘ तेष यधण्जिन्-परूणे कीरमाणे वरगण-परूवणा णिच्छण कायन्वा, अणगहा तेरीन्-वरगणाहु इमा चैव वरगणा न मयाओग्गा अणगओ नधयओग्गाओ ण हंति ति अणगमाणुत्तचीदो । वरगणाणमणु-मगणद्वद्वाण् तत्थ इमाणि अट्ट अणियोगद्वाराणि णादव्वाणि भवति ’ इत्यादि ।

अर्थात् वंशनीयके प्ररूपण करनेमें वर्गणा की प्ररूपणा निश्चयतः काना चाहिये, अन्यथा तेईस वर्गणाओंमें ये ही वर्गणाए वधके योग्य हैं अन्य वर्गणाए वंशके योग्य नहीं हैं, ऐसा ज्ञान नहीं हो सकता । उन वर्गणाओंकी मार्गणाके लिये ये आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं । इत्यादि ।

इम प्रकार पत्र १२१९ से वर्गणाका प्ररूपण प्रारंभ होकर पत्र १३३२ पर समाप्त होता है, जहाँ कहा गया है कि—

‘ पृव निस्समोचयपरूवणाण् समचाण् वाहिरिचरगणा समत्ता होटि ’ ।

इसप्रकार वर्गणाका विस्तार ११३ पत्रोंमें पाया जाता है, जो उपर्युक्त पाच अधिकारोंमेंसे वेदनाको छोड़कर शेष सबसे कोई दुगुना व उससे भी अधिक पाया जाता है । पूरा खुदावधखंड ४७५ से ५७६ तक १०१ पत्रोंमें तथा वंशसाभित्तविचयखंड ५७६ से ६६७ तक ९१ पत्रोंमें पाया जाता है । किन्तु एक अनुयोगद्वारके अन्तर्गतके भी अन्तर्गत भेद वर्गणाका विस्तार इन दोनों खंडोंसे अधिक है । ऐसी अवस्थामें उसका प्ररूपण संक्षिप्त कहना चाहिये या विस्तृत और उससे उसे खंड संज्ञा प्राप्त करने योग्य प्रयत्न प्राप्त होसका या नहीं, यह पाठक विचार करें ।

३. वेदनाखंडके आदिका मंगलाचरण और कौन कौन खंडोंका है ?

वेदनाखंडके आदिमें मंगलसूत्र पाये जाते हैं। उनकी टीकामें ध्वलाकारने खडविभाग व उनमें मंगलाचरणकी व्यवस्था सवधी जो सूचना दी है उसको निम्न प्रकार उद्धृत किया जाता है—

‘ उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेषु कस्सेद मगल ? तिण्ण सडान । कुदो ? वरगणा-महावधधानमादीए मगलकरणादो । ण च मगलेण विणा भूदण्डलिभडारओ गथस्स पारभदि, तस्स अणाइरियत्तपसागोदोXX कदि-मास-त्तम्भ-पयडि-अणियोगद्वारणि वि एत्थ परुविदाणि, तेसि परुडगथसण्णमसाडण तिण्णि नेम सडणि ति िमहं उचदे ? ण, तेसि पहाणत्ताभावादो । त पि कुदो णवन्दे ? सखेवेण परुवण्णदो ’ ।

वर्णाखंडको ध्वलान्तर्गत स्वीकार न करनेवाले विद्वान् इस अवतरणको देकर उसका यह अभिप्राय निकालते हैं कि—“ वीरसेनाचार्यने उक्त मंगलसूत्रोंको ऊपर कहे हुए तीनों खंडों वेदना, वधसामित्तविचओ और खुदाबधो-का मंगलाचरण वतलते हुए यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्णाखंडके आदिमें तथा महावधखंडके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है, मंगलाचरणके विना भूतवलि आचार्य ग्रंथका प्रारंभ ही नहीं करते हैं। साथ ही यह भी बतलाया है कि जिन कदि, फास, कम्म, पयडि (वधण) अणुयोगद्वारोका भी यहा (एत्थ)-इस वेदनाखंडमें प्ररूपण किया गया है उन्हें खडप्रथ सज्ञा न देनेका कारण उनके प्रधानताका अभाव है, जो कि उनके संक्षेप कथनसे जाना जाता है। उक्त फास आदि अनुयोगद्वारोसे किसीकी भी शुरूमें मंगलाचरण नहीं है और इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वेदनाखंडमें की गई है, तथा इनमेंसे किसीकी खडग्रंथकी सज्ञा नहीं दी गई यह बात ऊपरके शंका समाधानसे स्पष्ट है। ”

अब इस कथनपर विचार कीजिये। ‘ उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेषु ’ का अर्थ किया गया है ‘ ऊपर कहे हुए तीन खंड, अर्थात् वेदना, वधसामित्त और खुदाबंध ’। हमें यहाँपर यह याद रखना चाहिये कि खुदाबध और वधसामित्त खंड दूसरे और तीसरे हैं जिनका प्ररूपण हो चुका है, और अभी वेदनाखंडके केवल मंगलाचरणका ही विषय चल रहा है, खंडका विषय आगे कहा जायगा। ‘ उवरि उच्चमाण ’ की संस्कृत छाया, जहाँतक मैं समझता हूँ, उपरि उच्यमान ही हो सकती है, जिसका अर्थ ‘ ऊपर कहे हुए ’ कदापि नहीं हो सकता। ‘ उच्यमान ’ का तात्पर्य केवल प्रस्तुत या आगे कहे जानेवालेसे ही हो सकता है। फिर भी यदि ‘ ऊपर कहे हुए ’ ही मानलें तो उससे ऊपरके दो और आगेके एक का समुच्चय कैसे हो सकता है ? ऊपर कहे हुए तीन खंड तो जीवघाण आदि तीन हैं, बाकी तीन आगे कहे जानेवाले हैं। इसप्रकार उपर्युक्त वाक्यका जो अर्थ लगाया गया है वह बिल्कुल ही असंगत है।

अब आगेका शंका-समाधान देखिये। प्रश्न है यह कैसे जाना कि यह मगल ‘ उवरि

उच्चमाण ’ तीनों खंडोंका है ? इसका उत्तर दिया जाता है ‘ क्योंकि वर्णाण और महावध के आदिमें मगल किया गया है ’। यदि यहा जिन खंडोंमें मंगल किया गया है उनको अलग निर्दिष्ट कर देना आचार्यका अभिप्राय था तो उनमें जीवघाणका भी नाम क्यों नहीं लिया, क्योंकि तभी तो तीन खंड शेष रहते, केवल वर्णाण और महावधको अलग कर देनेसे तो चार खंड शेष रह गये। फिर आगे कहा गया है कि मंगल क्रिये विना भूतवलि भट्टारक ग्रंथ प्रारंभ ही नहीं करते, क्योंकि उससे अनाचार्यत्वका प्रसंग आ जाता है। पर उक्त व्यवस्थाके अनुसार तो यहा एक नहीं, दो दो खंड मगलके विना, केवल प्रारंभ ही नहीं, समाप्त भी क्रिये जा चुके, जिनके मंगलाचरणका प्रवध अत्र किया जा रहा है, जहा स्वयं टीकाकार कह रहे हैं कि मंगलाचरण आदिम ही किया जाता है, नहीं तो अनाचार्यत्वका दोष आ जाता है। इससे तो ध्वलाकारका मत स्पष्ट है कि प्रस्तुत ग्रंथरचनाने आदि मगलका अनिवार्य रूपसे पालन किया गया है। हमने आदिमगलके अतिरिक्त मध्यमगल और अन्तमगलका भी विधान पडा है। किन्तु इन प्रकारोंसे किसी भी प्रकार द्वारा वेदनाखंडके आदिका मगल खुदाबधका भी मगल सिद्ध नहीं किया जा सकता। इसप्रकार यह शंका समाधान विषयको समझानेकी अपेक्षा अधिक उलझनमे ही डालने वाला है।

आगेके शंका समाधानकी और भी दुर्दशा की गई है। प्रश्न है कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहा प्ररूपित है, उनकी खडसज्ञा न करनेके केवल तीन ही खंड क्यों कहे जाते हैं ? यहा स्वभावतः यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यहा कौनसे तीन खंडोंका अभिप्राय है ? यदि यहा भी उन्हीं खुदाबध, वधसामित्त और वेदनाका अभिप्राय है तो यह वतलनेकी आवश्यकता है कि प्रस्तुतमें उनकी क्या अपेक्षा है। यदि चौबीस अनुयोगद्वारोंसे उत्पत्तिको यहा अपेक्षा है तो जीवस्थान, वर्णाण और महावध भी तो वहाँसे उत्पन्न हुए हैं, फिर उन्हें किस विचारसे अलग किया गया ? और यदि वेदना, वर्णाण और महावधसे ही यहा अभिप्राय है तो एक तो उक्त क्रममें भग पडता है और दूसरे वर्णाखंडके भी इन्हीं अनुयोगद्वारोंमें अन्तर्भावका प्रसंग आता है। जिन अनुयोगद्वारोंकी ओरसे खंड सज्ञा प्राप्त न होनेकी शिकायत उठायी गई है उनमें वेदनाका नाम नहीं है। इससे जाना जाता है कि इसी वेदना अनुयोगद्वार परसे वेदनाखंड सज्ञा प्राप्त हुई है। पर यदि ‘ एत्थ ’ का तात्पर्य “ इस वेदनाखंडमें ” ऐसा लिया जाता है तब तो यह भी मानना पड़ेगा कि वे तीना खंड जिनका उल्लेख किया गया है, वेदनाखंडके अन्तर्गत है। पयडिके आगे वधन और क्यों अपनी तरफसे जोडा गया जबकि वह मूलमें नहीं है, यह भी कुछ समझमें नहीं आता। इसप्रकार यह प्रश्न भी बड़ी गडबडी उत्पन्न करनेवाला सिद्ध होता है।

अतः वेदनाखंडके आदिमें आये हुए मंगलाचरणको खदाबध और वधसामित्तका भी सिद्ध

एक भी देखनेमें नही आता जहा पर लेखकने अधिकार सर्वथी सूचना गलत सलत अपनी ओरसे जोड या घटा दी हो। अतएव चाहे वह खड शब्द मौलिक हो और चाहे किसी लिपिकार द्वारा प्रक्षिप्त, उससे वेदना खंडके चहा समाप्त होने की एक पुरानी मान्यता तो प्रमाणित होती ही है।

५ इन्द्रनन्दिकी प्रामाणिकता

इन्द्रनन्दि और विबुध श्रीधरने अपने अपने श्रुतावतार कथानकोंमें षट्खण्डागमकी रचना व धवलादि टीकाओंके निर्माणका विवरण दिया है। विबुध श्रीधरका कथानक तो बहुत कुछ काल्पनिक है, पर उसमें भी धवलान्तर्गत पाच या छह खंडोंवाली बातोंमें कुछ अविश्वसनीयता नहीं दिखती। इन्द्रनन्दिने प्रकृत विषयसे संबंध रखनेवाली जो बातों दी है उसको हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें पृ. ३० पर लिख चुके हैं। उसका संक्षेप यह है कि वीरसेनने उपरितन निवन्धनादि अठारह अधिकार लिखे और उन्हें ही सत्कर्मनाम छठवा खड संक्षेपरूप बनाकर छह खंडोंकी वहत्तर हजार ग्रंथप्रमाण, प्राकृत संस्कृत भाषा मिश्रित धवलाटीका बनाई। उनके शब्दोंका धवलाकारके उन शब्दोंसे मिलान कीजिये जो इसी संबंधके उनके द्वारा कहे गये है। निवन्धनादि विभागको यहा भी 'उवरिम ग्रंथ' कहा है और अठारह अनुयोगद्वारोंको संक्षेपमें प्ररूपण करनेकी प्रतिज्ञा की गई है। धरसेन गुरुद्वारा श्रुतोद्धारका जो विवरण इन्द्रनन्दिने दिया है वह प्रायः ज्यों का लो धवलकार के वृत्तान्त से मिलता है। यह बात सच है कि इन्द्रनन्दि द्वारा कही गयीं कुछ बातें धवलान्तर्गत वातसे किंचित् भेद रखती है। किन्तु उनपरसे इन्द्रनन्दिको सर्वथा अप्रामाणिक नहीं ठहराया जा सकता, विशेषतः खडविभाग जैसे स्थूल विषयपर। यद्यपि इन्द्रनन्दिका समय निर्णोत नहीं है, पर उनके संबंधमें प. नाथूरामजी प्रेमीका मत है कि ये वे ही इन्द्रनन्दि है जिनका उल्लेख आचार्य नेमिचन्द्रने गोम्मटसार कर्मकाण्डकी ३९६ वीं गाथामें गुरुरूपसे किया है जिससे वे विक्रमकी ११ हवीं शताब्दिके आचार्य ठहरते है *। इसमें कोई आश्चर्य भी नहीं है। वीरसेन व धवलाकी रचनाका इतिहास उन्होंने ऐसा दिया है जैसे मानो वे उससे अच्छी तरह निकटतासे सुपरिचित हों। उनके गुरु एलाचार्य कहां रहते थे, वीरसेनने उनके पास सिद्धान्त पढकर कहां कहा जाकर, किस मंदिरमें बैठकर, कौनसा ग्रंथ साम्हने रखकर अपनी टीका लिखी यह सब इन्द्रनन्दिने अच्छी तरह बतलाया है जिसमें कोई वनावट व कृत्रिमता दृष्टिगोचर नहीं होती, बल्कि बहुत ही प्रामाणिक इतिहास जचता ह। उन्होंने कदाचित् धवला जयधवलाका सूस्मावलोकन भले ही न किया हो और शायद नोट्स ले रखनेका भी उस समय रिवाज न हो, पर उनकी सूचनाओंपरसे यह बात सिद्ध नहीं होती कि धवल

कना तथा कृति आदि चीवीतों अनुयोगद्वारोंको वेदनाखण्डान्तर्गत बतलाना बडा बेतुका, वे आधार और सारे प्रसंगको गडबडीमें डालनेवाला है। यह सब कल्पना किन भूलोंका परिणाम है और उक्त अवतरणोंका सच्चा रहस्य क्या है यह आगे चलकर बतलाया जायगा। उससे पूर्व शेष तीन शक्तियोंपर और विचार करलेना ठीक होगा।

४. वेदनाखंड समाप्तिकी पुष्पिका

वचलामें जहा वेदनाका प्ररूपण समाप्त हुआ है वहा यह वाक्य पाया जाता है—

एव वेयण-अप्याशुगणिगोद्वारे समसे वेयणाखंड समत्ता।

इसके आगे कुछ नमस्कार वाक्योंके पश्चात् पुनः लिखा मिलता है 'वेदनाखंड समाप्तम्'। ये नमस्कार वाक्य और उनकी पुष्पिका तो स्पष्टतः मूलग्रंथके अंग नहीं हैं, वे लिपिकार द्वारा जोडे गये जान पडते हैं। प्रश्न है प्रथम पुष्पिकाका जो मूल ग्रंथका आवश्यक अंग है। पर उसमें भी 'वेयणाखंड समत्ता' वाक्य व्याकरण की दृष्टिसे अशुद्ध है। वहा या तो 'वेयणाखंडो समत्तो' या 'वेयणाखंडं समत्त' वाक्य होना चाहिये था। समालोचकका यह भी अनुमान गलत नहीं कहा जा सकता कि इस वाक्यमें खंड शब्द संभवतः प्रक्षिप्त है, उस शब्दको निकाल देनेसे 'वेयणा समत्ता' वाक्य भी ठीक बैठ जाता है। हो सकता है वह लिपिकार द्वारा प्रक्षिप्त हुआ हो। पर विचारणीय बात यह है कि वह कत्र और किस लिये प्रक्षिप्त किया गया होगा। इस प्रश्नको आधुनिक लिपिकारकृत तो समालोचक भी नहीं कहते। यदि वह प्रक्षिप्त है तो उसी लिपिकारकृत हो सकता है जिसने मूडविद्रीकी ताडपत्रीय प्रति लिखी। हम अन्यत्र बतला चुके हैं कि वह प्रति संभवतः शककी ९ वीं १० वीं शताब्दिकी, अर्थात् आजसे कोई हजार आठसौ वर्ष पुरानी है। उस प्रक्षिप्त वाक्यसे उस समयके कर्मसे कम एक व्यक्तिका यह मत तो मिलता ही है कि वह वहा वेदनाखंडकी समाप्ति समझता था। उससे यह भी ज्ञात हो जाता है कि उस लेखककी जानकारिमें वहीसे दूसराखंड अर्थात् वर्णणाखंड प्रारंभ हो जाता था, नहीं तो वह वहां वेदनाखंडके समाप्त होनेकी विश्वासपूर्वक दो दो बार सूचना देने की धृष्टता न करता। यदि वहां खडसमाप्ति होनेका इसके पास कोई आधार न होता तो उसे जवर्दस्ती वहां खंड शब्द डालनेकी प्रवृत्ति ही क्यों होती? समालोचक लिपिकारकी प्रक्षेपक-प्रवृत्ति को दिखलते हुए कहते हैं कि अनेक अन्य स्थलोंपर भी नानाप्रकारके वाक्य प्रक्षिप्त पाये जाते हैं। यह बात सच है, पर जो उदाहरण उन्होंने बतलाया है वहां, और जहांतक मैं अन्य स्थल ऐसे देख पाया हूं वहां सर्वत्र यही पाया जाता है कि लेखकने अधिकारोंकी सीध आदि पाकर अपने गुरु या देवता का नमस्कार या उनकी प्रगति संबंधी वाक्य या पद्य इधर उधर डाले हैं। यह पुराने लेखकोंकी शैली सी रही है। पर ऐसा स्थल

जयधवल ग्रथ उनके साम्हने मौजूद ही नहीं थे। उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं लिखी जिसकी इन ग्रंथोंकी वार्तासे इतनी विषयता हो जो पक्कर पीछे स्मृतिके सबहरे लिखनेवाले द्वारा न की जा सकती हो। इसके अतिरिक्त उनका ग्रथ अभीतक प्राचीन ग्रंथोंपरसे सुसंपादित भी नहीं हुआ है। किसी एकाग्र प्रतिपत्से कभी छाप दिया गया था, उसीकी कापी हमारे साम्हने प्राप्त है। उन्होंने जो वार्ता किन्नदित्तियों व सुने सुनाये आधारपरसे लिखी हो वह भी उन्होंने बहुत सुव्यवस्थित करके, भरसक जाच पडतालके पश्चात्, लिखी है और इसीतरह वे बहुतेसी ऐसी वार्ताओं पर प्रकाश डाल सके जो धवलादिमें भी व्यवस्थित नहीं पायी जाती, जैसे धवलासे पूर्वकी टीकायें व टीकाकार आदि। वे कैसे प्रामाणिक और निर्भीक तथा अपनी कमजोरियों को स्वीकार करलेनेवाले निष्पक्ष ऐतिहासिक थे यह उनके उस वाक्य परसे सहज ही जाना जा सकता है जहाँ उन्होंने साफ साफ कहा दिया है कि गुणधर और धरसेन गुरुओंकी पूर्वापर आचार्य परम्परा हम नहीं जानते क्योंकि न तो हमें वह बात बतलानेवाला कोई आगम मिला और न कोई मुनिजन ×। नितनी स्पष्टवदितता, साहित्यिक सचाई और नेतिकत्व इस अज्ञानकी स्वीकारतामें भरी हुई है? क्या इन वाक्योंको लिखनेवालेकी प्रामाणिकतामें सहज ही अनिश्वास किया जा सकता है?

६. मूडविद्वासे प्रतिलिपि करनेवाले लेखककी प्रामाणिकता

जिस परिस्थितिमें और जिस प्रकारसे धवला और जयधवलाकी प्रतियाँ मूडविद्वासे बाहर निकली हैं उसका हम प्रथम शिल्पकी सूचिकायें विवरण दे आये हैं। उस परसे उपलब्ध प्रतियाँकी प्रामाणिकतामें नाना प्रकारके सन्देह करग सामारिक है। अतएव जो धवलाके भीतर वर्णणाबंधका होना नहीं मानते उन्हें यह भी कहनेको मिल जाता है कि यदि मूल धवलामें वर्णणाखंड रहा भी हो तो उक्त लिपिकारने उसे अपना परिश्रम बचानेके लिये जानबूझकर छोड़ दिया होगा और अन्तिम प्रशास्ति आदि जोड़कर अपने ग्रंथको पूरा प्रकट कर दिया होगा ताकि उसके पुरस्कारादिमें फरक न पड़े। इस कल्पनाकी सचाई सुठवाई का पूरा निर्णय तो तभी हो सकता है जब यह ग्रथ ताडपत्रीय प्रतिसे मिलाया जा सके। पर उसके अभावमें भी हम इसकी संभावनाकी जांच दो प्रकारसे कर सकते हैं। एक तो उस लेखकके कार्यकी परीक्षा द्वारा और दूसरे विद्यमान धवलाकी रचना की परीक्षा द्वारा। धवलाके संशोधन संपादन संबंधी कार्यमें हमें इस बातका बहुत कुछ परिचय मिला है कि उक्त लेखकने अपना कार्य कक्षांतक ईमानदारीसे किया है। हमें जो प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं वे मूडविद्वासे आई हुई कनाडी प्रतिलिपिकी नागरी प्रतिकापी की भी कापियाँ हैं। ये बहुत कुछ खलन-प्रचुर और अनेक प्रकारसे दोष पूर्ण हैं।

× मतपरवर्षणा, जिल्द १, पृष्ठीका पृ. १५

पर तो भी तीन प्रतियोंके मिष्टानसे ही पूरा और ठीक पाठ देना संभव हो जाता है। इससे इतत होता है कि जो खलन इन आंगकी प्रतियोंमें पाये जाते हैं वे उस कनाडी प्रतिलिपिमें नहीं हैं। यद्यपि कुछ स्थल इन मूल प्रतियोंके मिष्टानमें भी पूर्ण या निम्नदेश विनिर्गत नहीं हो पाये और इसलिये संभव है वे स्पष्टन उसी प्रथम प्रतिलिपिकार द्वारा हुए हों, पर इस संशयकी स्थिति, भाषा और विषय सम्बन्धी कठिनायियोंको देखते हुए हमें आश्चर्य उन बातका नहीं है कि वे खलन हैं, किन्तु आश्चर्य इस बातका है कि वे बहुत ही घेरे और नाजूक हैं, जो किसी भी लेखकके द्वारा अपनी शक्तिभर सामर्थ्यकी रक्षापर भी, हो सकते हैं। जो केवल एक गडके खंडको छोटकर प्रशान्ति आदि मिष्टान्तर क्रमको पूरा प्रकट करनेका दुःसाहस कर सकता है, उसके द्वारा शेष लिपि भी ईमानदारीके साथ लिखे जानेकी आशा नहीं की जा सकती। पर उक्त लेखकका अभी तक हम जो परिचय धवलापर परिश्रम करके प्राप्त कर सके हैं, उसपरसे हम दृष्टान्तके साथ कह सकते हैं कि उसने अपना सर्व भरसक ईमानदारी और परिश्रमसे किया है। उनपरसे उसके द्वारा एक गडको छोड़कर अपने ही प्रकट कर देने जैसे छत्र-कण्ट किने जानेकी शक्ती बचानेको हमारा जो विद्वुल नहीं चाहता।

पर यदि ऐसा कुछ कण्ट हुआ है तो गडकी जांच द्वारा उनका पूरा खलना भी कठिन नहीं होना चाहिये। धवलाकी कुछ टीकाका प्रमाण इन्द्रनन्दिन बत्तार हजार और ब्रह्मनेने मत्त हजार बतलाया है। हमारे समुदाय धवलाकी तीन प्रतियाँ मौजूद हैं, जिनकी श्लोक संख्याकी हमने पूर्ण तालिकासे जांच की। अभावकी प्रतियोंमें १४६५ पं अर्थात् २९२० पृष्ठ हैं और प्रलेखक गूडर १२ पंक्ति लिखी गई हैं। प्रलेखक पंक्तिमें ६२ से ६८ तक अक्षर पाये गते हैं जिससे औसत ६५ अक्षरकी ली जा सकती है। तदनुसार कुल पंक्तियों १९३० × ७१,११५ आर्ड। इसे सामान्य लेखमें चाँटे आप सत्तर हजार कहिये, चाँटे चहत्तर हजार। कारना व आरामकी प्रतियोंकी भी उक्त प्रतासे जांच द्वारा प्रायः यही निष्कर्ष निकलता है। इसमें तो अनुमान होना है कि प्रतियोंमेंसे एक टांडका गड गांधव होना असंभवसा है, क्योंकि उस टांडका प्रमाण और सव टांडोंको देखते हुए हमसे कम पांच सात हजार तो अवश्य रहा होगा। यह कभी प्रस्तुत प्रतियोंमें दिखाई दिये बिना नहीं रह सकता था।

भियके ताताम्यकी दृष्टिसे भी धवला अपने प्रस्तुत रूपमें अपूर्ण कही नज़र नहीं आती। प्रथम तीन खंड तो पूरे हैं ही। चौथे वेदना खंडके आदिसे कृति आदि अनुयोगभार प्रारंभ हो जाते हैं। इनमें प्रथम छह कृति, वेदना, फास, कग, पयडि और बधन स्वयं भगवान् मूलवर्ति-द्वारा प्ररूपित हैं। इनके अन्तमें धवलाखाले कहा है—

‘शुद्धबलिभगवत्पुण्य देवेन्दं सुगं देवतासाधिविभवेण लिहिदं सेनेण मूनि-वेप-अट्टार-अधि-योगप्रदानं विधि संपोषणं पक्कणं कल्याणी (धाला अ. प. १३३)

इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आचार्य भूतबलिकी रचना यहीं तक है। किन्तु उक्त प्रतिज्ञा तात्पर्यके अनुसार शेष निबन्धनादि अठारह अत्रिकारोंका वर्णन धवलाकारने स्वयं किया है और अपनी उस रचनाको उन्होंने चूल्किा कहा है—

एतौ उन्नरिममथो चूलिका नाम ।

इन्हीं अठारह अनुयोगद्वारोंकी वीरसेनद्वारा रचनाका विशद इतिहास इन्द्रनादिने अपने श्रुतान्तारमें दिया है * । इसी चूलिका विभागको उन्होंने छठवा खंड भी कहा है। इसप्रकार चौबीसों अनुयोगद्वारोंके ऋचके साथ प्रथम अपने स्वाभाविक रूपसे समाप्त होता है। अब यदि इन्हीं अनुयोगद्वारोंके भीतर वर्णखंड नहीं माना जाता तो उसने लिये कौनसा विषय व अत्रिकार शेष रहा और यह कहाँसे छूट गया होगा ? लेखकद्वारा उसके छोड़ दिये जानेकी आशंकाको तो उस रचनामें बिल्कुल ही गुनाहश नहीं रही।

वेदनाखंडके आदि अवतरणोंका ठीक अर्थ

वेदनाखंडके आदि मगलाचरणकी व्यवस्था संबंधी सूचनाका जो अर्थ लगाया जाता है और उससे जो गड़बड़ी उत्पन्न होती है उसका हम ऊपर परिचय करा चुके हैं। अब हमें यह देरना आस्यक है कि उक्त भूलोंका क्या कारण है और उन अवतरणोंका ठीक अर्थ क्या है। 'उन्नरि उगगणेषु तिसु रडेसु' का अर्थ 'ऊपर कहे हुए तीन खंड' तो हो ही नहीं सकता। पर ऐसा अर्थ नित्ये जानेके दो कारण मालूम होते हैं। प्रथम तो 'उन्नरि' से सामान्य ऊपर अर्थात् पूर्वोक्त का अर्थ ले लिया गया है और दूसरे उसकी आवश्यकता भी यों प्रतीत हुई क्योंकि आगे वर्णना और मशत्रुमें अलग मगल करनेका उल्लेख पाया जाता है। पर खोब और विचारसे देना जाता है कि 'उन्नरि' शब्दका वक्ताकारने पूर्वोक्तके अर्थमें कहीं उपयोग नहीं किया। उन्होंने उम शब्दका प्रयोग सर्वत्र 'आगे' के अर्थमें किया है और पूर्वोक्तके लिये 'पुव्व' या पुपुत्त का। उदाहरणार्थ, संतपस्वणा, पृष्ठ १३० पर उन्होंने कहा है—

सचि पुव्व उच्च-पपत्तिसुक्किच्चा पृष्ठ १३० पव्वसुव्वरि सचि पुव्वुत्त-जहण्णाट्टिदि च पपिप्पत्ते चूलियाए गा अधियारा भवति ।

अर्थात् पूर्वोक्त प्रकृति समुत्कीर्तनादि पांचोंके ऊपर अभी कहे गये जघन्यस्थिति आदि जोड़ देनेपर चूलिकाके नौ अविकार हो जाते हैं। यहा ऊपर कहे जा चुकेके लिये 'पुव्व उच्च' १ 'पुव्वुत्त' शब्द प्रयुक्त हुए हैं और 'उन्नरि' से आगेका तात्पर्य है।

पृ ७३ पर 'उन्नरि' से जने हुए उन्नरीदो (उन्नरितः) अव्ययका प्रयोग देखिये। आचार्य कहते हैं—

* स प १. पृ ३८, ६०.

उन्नानुपुव्वी पच्चणुपुव्वी जत्थत्थाणुपुव्वी चेदि लिच्छिा अणुपुव्वी । ज मूलादो परिवाडीए उच्चदे सा पुव्वणुपुव्वी । तिससे उदाहरण 'उत्तममिय च वदे' । इच्चममादि । ज उन्नरीदो हेडा परिवाडीए उच्चदि सा पच्चणुपुव्वी । तिससे उदाहरण—एल करेमि य पणम जिणवत्तससरस्स चडुमणस्स । सेसाण च जिणण सिवसुहक्का विलोमण ॥

यहा यह बतलाया है कि जहां पूर्वसे पश्चात्की ओर क्रमसे गणना की जाती है उसे पूर्वानु-पूर्वी कहते हैं, जैसे 'ऋषभ' ऋषभ और अजितनाथको नमस्कार' । पर जहां नीचे या पश्चात्से ऊपर या पूर्वकी ओर अर्थात् विलोमक्रमसे गणना की जाती है वह पश्चादानुपूर्वी कहलाती है जैसे मैं वर्द्धमान जिनेशको प्रणाम करता हूँ और शेष (पार्श्वनाथ, नेमिनाथ आदि) तीर्थंकरोंको भी । यहाँ 'उन्नरीदो' से तात्पर्य 'आगे' से है और पीछे की ओरके लिये हेडा [अध] शब्दका प्रयोग किया गया है ।

धवलोंमें आगे बचन अनुयोगद्वारकी समाप्तिके पश्चात् कहा गया है ' एतौ उन्नरिमगथो चूलिया णाम ' । अर्थात् यहाँसे ऊपरके प्रथका नाम चूलिका है। यहा भी 'उन्नरि' से तात्पर्य आगे आनेवाले ग्रथविभागसे है न कि पूर्वोक्त विभागसे ।

और भी वचनोंमें सैकड़ों जगह 'उन्नरि' शब्दका प्रयोग हमारी दृष्टिमें इसप्रकार आया है " उन्नरि भण्णमाणुण्णिमुत्तादो, " ' उन्नरिमसुत्त भणदि ' आदि । इन्में प्रत्येक स्थलपर निर्दिष्ट सूत्र आगे दिया गया पाया जाता है। उन्नरिका पूर्वोक्तके अर्थमें प्रयोग हमारी दृष्टिमें नहीं आया

इन उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि उन्नरिका अर्थ आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है, पूर्वोक्तसे नहीं। और फिर प्रकृतमें तो 'उच्चमाण' पद इस अर्थको अच्छी तरह स्पष्ट कर देता है क्योंकि उसका अभिप्राय केवल प्रस्तुत और आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है। पर यदि आगे कहे जानेवाले तीन खंडोंका यह मगल है तो इस बातका वर्णना और महाबंधके आदिमें मगलाचरणकी सूचनासे कैसे सामञ्जस्य बैठ सकता है ? यही एक विकट स्थल है जिसने उपर्युक्त सारी गड़बड़ी विशेषरूपसे उत्पन्न की है। समस्त प्रकारणपर सब दृष्टियोंसे विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि धवलाकी उपलब्ध प्रतियोंमें वहा पाठ की अशुद्धि है। भेरे विचारसे 'वर्णणमहावधानमादीर मगल-करणादो' की जगह 'वर्णणमहावधानमादीए मगलाकरणादो' पाठ होना चाहिये। दीर्घ 'आ' के स्थानपर ष्वस्व 'अ' की मात्रा की अशुद्धिया तथा अन्य स्थलोंमें भी ष्वस्व दीर्घके व्यत्यय इन प्रतियोंमें भरे पड़े हैं। हमें अपने सशोधनमें इसप्रकारके सुधार सैकड़ों जगह करना पड़े हैं। यथार्थतः प्राचीन कन्नड लिपिमें ष्वस्व और दीर्घ स्वरोंमें बहुधा विवेक नहीं किया जाता था X । हमारे अनुमान किये हुए सुधारके साथ पढ़नेसे पूर्वोक्त

X ज उपाय्ये, परमात्मप्रकाश, भूमिका, पृ ८३.

समस्त प्रकरण व शक्ता-समाधानतम ठीक बैठ जाता है। उससे उक्त दो अवतरणोंके बीचमें आये हुए उन शक्ता संपाधानोंका अर्थ भी सुलभ जाता है जिनका पूर्वकथित अर्थसे त्रिलकुल ही सामान्य नहीं बैठता बल्कि विरोध उत्पन्न होता है। वह पूरा प्रकरण इस प्रकार है—

उपरि उच्यमानेषु तिस्रु खंडेषु कस्सेदु मगल ? त्रिण्य खडण । कुत्रो ? रगणा-महावधानमादीणु मंगलाग्रणादौ । न च मगलेण त्रिणा भूतवलिभारमो गथस्स पारभदि, तस्स अणाहरियत्तपसगादौ । कथ भेयणाए आदीण उच मगल सेस दो राडण होदि ? न, रुद्रीए आदिनिह उचस्स एदस्सेव मगलस्स सेलत्तेवीस अणियोगद्वारोसु पउत्तिदण्णादौ । महारुम्मपयत्तिणु-इत्तेण चउवीसपुद्दमणियोगद्वाराण भेदाभावादौ एरात्त, तरो ण्णस्स म्म मंगल तत्त न विरुग्गदौ । न च प्देसि णिण्ह खडणमेयत्तमेगखडत्तपयगादौ ति, न एस योसो, महारुम्मपयत्तिणु-इत्तेण प्देसि वि एरात्तदस्सगादौ । रुदि पास-म्म पयत्ति-अणियोगद्वाराणि वि एथ पत्तियोगि, तेरि राडगयत्तणमकाडण त्रिण्य चेन रगणिति किमट्ट उचदे ? न, तेसि पदाणत्ताभावादौ । त वि कुत्रे गन्धे ? संक्षेपेण परुग्गणादौ ।

इसका अनुवाद इस प्रकार होगा—

शंका—आगे कहे जाने वाले तीन खंडों (वेदना वर्णना और महावध) में से जिस खंड का यह मंगलाचरण है ?

समाधान—तीनों खंडोंका ।

शंका—कैसे जाना ?

समाधान—वर्णनाखंड और महावध खंडके आदिमें मगल न किये जानेसे । मगल-क्रिये विना तो भूतबलि भ्रष्टारु प्रयत्ना प्रारंभ ही नहीं करते क्योंकि इससे अनाचार्यत्वका प्रसंग आ जाता है ।

शंका—वेदनाके आदिमें कहा गया मगल शेष दो खंडोंका भी कैसे हो जाता है ?

समाधान—क्योंकि कृतिके आदिमें किये गये इस मंगलकी शेष तेवीस अनुयोगद्वारों भी प्रवृत्ति देवी जाती है ।

शंका—महारुम्मप्रकृतिपाहुडत्वकी अपेक्षासे चौबीसो अनुयोगद्वारोंमें भेद न होनेसे उनमें एरुत्त है, इसलिये एरुत्ता यह मगल शेष तेवीसोंमें विरोधको प्राप्त नहीं होता । परंतु इन तीनों खंडोंमें तो एरुत्त है नहीं, क्योंकि तीनोंमें एरुत्त मान लेनेपर तीनोंके एक खडत्वका प्रसंग आजाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि-महारुम्मप्रकृतिपाहुडत्वकी अपेक्षासे इनमें भी एरुत्त देखा जाता है ।

शंका—कृति, स्पर्श, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहा (अंशके इस भागमें) प्ररूपित किये गये हैं, उनकी भी खड भय सज्ञा न करने तीन ही खड क्यों कहे जाते हैं ?

समाधान—क्योंकि इनमें प्रधानताका अभाव है ।

शंका—यह कैसे जाना ?

समाधान—उनका संक्षेपमें प्ररूपण किया गया है इससे जाना ।

इस परसे यह बात स्पष्ट समझमें आजाती है कि उक्त मगलाचरणका सम्बन्ध बंध-सामित्त और खुदावध खंडोंसे बैठाना त्रिलकुल निर्मूल, अस्वामात्रिक, अनावश्यक और धवलाकार के मत्से सर्वथा विरुद्ध है । हम यह भी जान जाते हैं कि वर्णनाखंड और महावधके आदिमें कोई मंगलाचरण नहीं है, इसी मगलाचरणका अधिकार उनपर चालू रहेगा । और हमें यह भी सूचना मिल जाती है कि उक्त मगलके अधिकारान्तर्गत तीनो खंड अर्थात् वेदना, वर्णना और महावध प्रस्तुत अनुयोगद्वारोंसे बाहर नहीं है । वे किन अनुयोगद्वारोंके भीतर गर्भित है यह भी संकेत धवलाकार यहा स्पष्ट दे रहे हैं । खड सज्ञा प्राप्त न होने की शिक्कायत किन अनुयोगद्वारोंकी ओरसे उठाई गई ? कादि, पास, कम्म और पयत्ति अनुयोगद्वारोंकी ओरसे । वेदना-अनुयोगद्वारका यहा उल्लेख नहीं ह क्योंकि उसे खंड सज्ञा प्राप्त है । धवलाकारने बंधन अनुयोगद्वारका उल्लेख यहा जान बूझकर छोडा है क्योंकि बंधनके ही एक अवान्तर भेद वर्णनासे वर्णनाखंड संज्ञा प्राप्त हुई है और उसके एरु दूसरे उपभेद वधविधानपर महाबंधकी एक मन्थ इमारत खडी है । जीवह्याण, खुदावध और बंधसामित्तविचय भी इसीके ही भेद प्रभेदोंके सुफल है । इसलिये उन सबसे भाग्यवान पाच पाच यशस्वी सतानके जनयिता बंधनको खंड सज्ञा प्राप्त न होने की कोई शिक्कायत नहीं थी । शेष अठारह अनुयोगद्वारोंका उल्लेख न करनेका कारण यह है कि भूतबलि भ्रष्टारुके उनका प्ररूपण ही नहीं किया । भूतबलिकी रचना तो बंधन अनुयोगद्वारके साथ ही, महावध पूर्ण होने पर, समाप्त हो जाती है जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं ।

इसी अवतरणसे ऊपर धवलाकारने जो कुल कहा है उससे प्रकृत विषयपर और भी बहुत विशद प्रकाश पडता है । वह प्रकरण इसप्रकार है—

तथेद्व कि णिवद्धमादो अणिउद्धमिदि ? न ताव णिवद्धमगलमिद्व महाकलयपयडीपाहुडस्स रुदि-वादि-चउवीसअणियोगावयवस्य आदीणु गोदमसाभिणा पउविदस्स भूतवलिभडारएण वेयणाएउडस्स आदीण मगलट्ट तत्तो आणेदुण उत्रिदस्स णिवद्धत्तविरोहादौ । न च वेयणाएउड महारुम्मपयडीपाहुड अउगवसस अवयवित्तविरोहादौ । न च भूदवली गोदमो विगलसुदुधारायसस धरसेणाहियिसीसस्स भूदवलिस्स गयल-सुदयारयवडुमागतवासिगोदमत्तविरोहादौ । न चाणो पयारो णिवद्धमगलत्तस्स हेदुभूदो अत्थि । तम्हा अणिवद्धमगलमिद्व । अथवा दोहु णिवद्धमंगल । कथ वेयणाएउडविउउगयसस महारुम्मपयत्तिपाहुडत्त ? न, कदिया (दि) चउवीस-अणियोगद्वारोहोत्तो एथेण पुधभूदमहारुम्मप्रवयत्तिपाहुडभावादौ । एदेसिमणियोगद्वाराण कम्मपयत्तिपाहुडसे संत पाहुड-उहत्त परसज्जे ? न एस दोसो, कथचि दृच्छिज्जमाणत्तादौ । कथ वेयणाए

महापरिमाणाय उन्मत्स वेयणादडरस वेयणा-भागे ? न, जस्य मेहितो प्युतेण पुधभूदस्स अन्वगविस्स अणुरत्तभावे। न च वेयणाए नुचुमण्टिमिडिच्चमाणत्तादो। कथं भूदजल्लिस्स गोदमत्त ? किं तस्स गोदमत्तेण ? उन्मत्समायाहा मगन्तम गिन्तवत्त ? न, भूदजल्लिस्स सड-गय पडि क्खारत्ताभावादो। न च अण्णेण न्य-गया-त्तिराण पणवेस्सस्स पुडिग्हा (पुडिग्हा) मद्धय-सदकमस्स पल्लओ क्तारो होटि, अडप्पसगादो। अथत्ता भूदजयी गोदो च न्णगहिण्यवत्तादो। ततो सिद्धिद्विद्वद्दसगरत्त पि। उवरि उच्चमाणेसु तिसु उअेसु इत्यादि।

१ शंका — इन्में से, अर्थात् निवद्ध और अनिवद्ध मंगलोंमेंसे, यह मंगल निवद्ध है या अनिवद्ध ?

समाधान—यह निवद्ध मंगल नहीं है, क्योंकि कृति आदि चौबीस अवयवोंवाले महाकर्मप्रकृतिपाण्डुके आदिमें गौतमस्यामीद्वारा इसका प्ररूपण किया गया है। भूतबलि स्थापने उसे वहाँसे लाकर वेदनाखंडके आदिमें मंगलके निमित्त रख दिया है। इसलिये उसमें निवद्धत्वका विरोध है। वेदनाखंड कुछ महाकर्मप्रकृतिपाण्डु तो है नहीं, क्योंकि अवयवकी ही आययी माननेमें विरोध आता है। और भूतबलि गौतमस्यामी हो नहीं सकते, क्योंकि निरुक्त श्रुतके नारक और धरसेनाचार्यके शिष्य ऐसे भूतबलिमें सकलश्रुतके धारक और वर्षमान-स्यामीके शिष्य ऐसे गौतमपनेका विरोध है। और कोई प्रकार निवद्ध मंगलपनेका हेतु होता नहीं है, इसलिये यह मंगल अनिवद्ध मंगल है। अथवा, यह निवद्ध मंगल भी हो सकता है।

२ शंका—वेदनाखंड आदि खंडोंमें समाविष्ट (ग्रय) को महाकर्मप्रकृतिपाण्डुपना कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान—स्यौक्ति कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारों से सर्वथा पृथक्भूत महाकर्मप्रकृति-पाण्डुकी कोई सत्ता नहीं है।

३ शंका—इन अनुयोगद्वारोंमें कर्मप्रकृतिपाण्डुत्व मान लेनेसे तो बहुतसे पाण्डु माननेका प्रसंग आ जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि यह बात कयचित् अर्थात् एक दृष्टिसे अभीष्ट है।

४ शंका—महापरिमाणवाली वेदनाके उपसहाररूप इस वेदनाखंडको वेदना अनुयोगद्वार कैसे माना जाय ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि अवयवोंसे एकान्ततः पृथक्भूत अवयवी तो पाया नहीं जाता। और इससे यदि एकसे अधिक वेदना माननेका प्रसंग आता है तो वेदनाके बहुत्वसे कोई अनिष्ट भी नहीं, क्योंकि वह बात इष्ट ही है।

५ शंका—भूतबलि को गौतम कैसे मान लिया जाय ?

समाधान—भूतबलि को गौतम माननेका प्रयोजन ही क्या है ?

६ शंका—यदि भूतबलि को गौतम न माना जाय तो मंगलको निवद्धपना कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान—क्योंकि भूतबलि के खडग्रयके प्रति कर्तापनेका अभाव है। कुछ दूसरे के द्वारा रचे गये श्राधिकाओंमेंसे एक देशका पूर्व प्रकारसे ही शब्दार्थ और सदर्थका प्ररूपण करनेवाला ग्रंथकर्ता नहीं हो सकता क्योंकि इससे तो अतिप्रसंग दोष अर्थात् एतद् ग्रयके अनेक कर्ता होनेका प्रसंग आ जायगा। अथवा, दोनोका एक ही अभिप्राय होनेसे भूतबलि गौतम ही है। इसप्रकार यहाँ निवद्ध मंगलत्व भी सिद्ध हो जाता है।

यहापर प्रथम शंका समाधानमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि वेदनाखंडके अन्तर्गत पूरा वेदना और वर्गणा-संज्ञोंकी महाकर्मपर्याडिपाण्डुका विषय नहीं है—वह उस पाण्डुका एक अवयव मात्र है, अर्थात् उसमें उक्त पाण्डुके चौबीसो अनुयोगद्वारोका अन्तर्भाव नहीं किया जा सकता। महाकर्मप्रकृतिपाण्डु अवयवी है और वेदनाखंड उसका एक अवयव।

दूसरे शंका समाधानसे यह सूचना मिलती है कि कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोमें अकेला वेदनाखंड नहीं फला है, वेदना आदि खंड ह अर्थात् वर्गणा और महावचना भी अन्तर्भाव वहीं है। तीसरे शंका समाधानमें कर्मप्रकृतिपाण्डु के कृति आदि अवयवोंमें भी एक दृष्टिसे पाण्डुपना स्थापित करके चौथेमें स्पष्ट निर्देश किया गया है कि वेदनाखंडमें गौतमस्यामीकृत बडे विस्तारवाले वेदना अधिकारका ही उपसहार अर्थात् संक्षेप है। यह वेदना धवलानी अ. प्रतिमें पृ. ७५६ पर प्रारम्भ होती है जहाँ कहा गया है—

कम्मवृजणियवेयण-उवहि-समुत्तिण्णए विणे णमिडं ।
वेयणमहादियारं विविहदियारं पल्लवेमो ॥

और वह उक्त प्रतिके ११०६ वें पत्रपर समाप्त होती है जहाँ लिखा मिलता है—

‘ एव वेयण-अण्णानहुगण्णिओगहरे समत्ते वेयणासड समत्ता ।

इसप्रकार इस पुष्पिकावाक्यमें अशुद्धि होते हुए भी वहाँ वेदनाखंडकी समाप्तिमें कोई शंका नहीं रह जाती।

पाचवें और छठवें शंका समाधानमें भूतबलि और गौतममें प्रयकर्ता व अभिप्रायकी अपेक्षा एकत्व स्थापित किया गया है जो सहज ही समझमें आजाता है। इसप्रकार उक्त मंगल निवद्ध भी सिद्ध करके बतला दिया गया है।

इसप्रकार उक्त शंका समाधानसे वेदनाखंडकी दोनों सीमार्थें निश्चित हो जाती है। इति तो वेदनाखंडके अन्तर्गत है ही क्योंकि उक्त शंका समाधानकी सूचनाके अनिश्चित मंगलाचरणसे साथ ही वेदनाखंडका प्रारंभ माना ही गया है।

वेदनाखंडके विस्तारना एक और प्रमाण उपलब्ध है। टीकाकारने उसका परिमाण सोलह हजार पद बतलाया है। यथा, 'खड्गय पडुच वेषणए सोलसपदसहस्रसाणि'। यह पद-संख्या भूतबलिष्ठ मूल-प्रयुक्त अपेक्षासे ही होना चाहिये। अतएव जबतक यह न ज्ञात हो जाये कि पदसे यहां धवलाकारका क्या तात्पर्य है तथा वेदनादि खंडोंके सूत्र अलग करके उन पर बट माप न लगाया जाये तबतक इस सूचनाका हम अपनी जाचमें विशेष उपयोग नहीं कर सकते। तो भी चूंकि टीकाकारने एक अन्य खंडकी भी इसप्रकार पद संख्या दी है और उस खंडकी सीमादिके विषयमें कोई विवाद नहीं है इसलिये हमें उनकी तुलनासे कुछ आपेक्षिक ज्ञान अग्रय हो जायगा। धवलाकारने जीवहाण खंडकी पद संख्या अठारह हजार बतलाई है—'पद पडुच अष्टारहपदसहस्र' (सत प पृ ६०) इससे यह ज्ञात हुआ कि वेदनाखंडका परिमाण जीवहाणसे नवमांश कम है। जीवहाण के ४७५ पत्रोंका नवमांश लगभग ५३ होता है, अतः साधारणतया वेदनाखंडकी पत्र संख्या ४७५-५३=४२२ के लगभग होना चाहिये। ऊपर निर्धारित सीमाके अनुसार वेदनाकी पत्र संख्या प्रत्यक्षमें ६६७ से ११०६ तक अर्थात् ४३८ है जो आपेक्षिक अनुमानके बहुत नजदीक पड़ती है। समस्त चौतीस अनुयोगद्वारोंको वेदनाके भीतर मान लेनेसे तो जीवहाणकी अपेक्षा वेदनाखंड धवला के तिगुनेसे भी अधिक बड़ा हो जाता है।

जब वेदनाखंडका उपसहार वेदानुयोगद्वारेके साथ हो गया तब प्रश्न उठता है कि वर्णा निर्णय उसके आगेके फास आदि अनुयोगद्वार किस खंडके अग रहे? ऊपर वेदनादि और उसके पश्चात् महावधकी रचना है। महावधकी सीमा निश्चितरूपसे निर्दिष्ट है क्योंकि धवलामें स्पष्ट कर दिया गया है कि बन्धन अनुयोगद्वारेके चौथे प्रभेद बन्धविधानके चार प्रकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशवधका विधान भूतबलि भट्टारकने महावधमें विस्तारसे लिखा है, इसलिये वह धवलाके भीतर नहीं लिखा गया। अतः यहाँतक वर्णाखंडकी सीमा समझना चाहिये। वहासे आगेके निबन्धनादि अठारह अधिकार टीकाकी सूचनानुसार चूल्का रूप हैं। वे टीकाकार कृत है भूतबलिकी रचना नहीं हैं।

उक्त खंड विभागको सर्वथा प्रामाणिक सिद्ध कालेके लिये अब केवल उस प्रकारके किसी प्राचीन विश्वसनीय स्पष्ट उल्लेखमात्रकी अपेक्षा और रह जाती है। सौभाग्यसे ऐसा एक

उल्लेख भी हमें प्राप्त हो गया है। मूडविद्दिके प. लोकनाथजी शास्त्रीने वीरवाणीविलास जैन सिद्धांतमवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में मूडविद्दिकी ताडपत्रीय प्रतिपरसे महावध (महावध) का कुछ परिचय अवतरणों सहित दिया है। इससे प्रथम बात तो यह जानी जाती है कि पंडितजीको उस प्रतिमें कोई मंगलाचरण देखनेको नहीं मिला। वे रिपोर्ट में लिखते हैं "इसमें मंगलाचरण श्लोक, ग्रथकी प्रशस्ति वगैरह कुछ भी नहीं है।" प लोकनाथजी की यह रिपोर्ट महत्वपूर्ण है क्योंकि पंडितजीने ग्रथको केवल ऊपर नीचे ही नहीं देखा—उन्होंने कोई चार वर्षतक परिश्रम करके पूरे महावध ग्रथकी नागरी प्रतिलिपि तैयार की है जैसा कि हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें बतला आये है। अतएव उस ग्रथका एक एक शब्द उनकी दृष्टि और कलमसे गुजर चुका है। उनके मतसे पूर्वोक्त 'मंगलाकरणादो' पदमे हमारे 'मंगलाकरणादो' रूप सुधार की पुष्टि होती है—

दूसरी बात जो महावधके अवतरणोंमें हमें मिलती है वह खडविभागसे सबध रखती है। महावधपर कोई पत्रिका भी उस प्रतिमें ग्रथित है जैसा कि अवतरणकी प्रथम पक्तिसे ज्ञात होता है—

'बोचामि सत त्ममे वचियरुणेण विवरण सुमहदध'

इसी पत्रिकाकारने आगे चलकर कहा है—

'मराकम्मपयडिपाहुडसस कदि-वेदणाओ(दि) चौव्वीसमणियोगद्वारेसु तथ कदि-वेदणा ति जणि अणियोगद्वाराणि वेदणाखडम्हि, पुणो पास (-कम्म पयडि-वधणणि) चत्तारि अणियोगद्वारेसु तथ वध बधणिज्जणामणियोमेहि सह वग्गणाखडम्हि, एणो वधविधानमणियोमो खुद्दावधम्मि सत्त्वचेण परुविद्दणि। एणो तेहितो सेसट्टारसणियोगद्वाराणि सत्तम्मसे सन्वाणि परुविद्दणि। तो वि तस्सद्दग्गभीरत्तादो अत्यन्तिसम-पदान्त्ये योरुद्धेण पचियसरुणेण भणित्ससामो' *।

इस अवतरणमें शब्दोंमें अछुद्धिया है। कोष्टकके भीतरके सुधार या जोड़े हुए पाठ भरे हैं। पर उसपरसे तथा इससे आगे जो कुछ कहा गया है उससे यह स्पष्ट जान पडा कि यहा निबधनादि अठारह अधिकारोंकी पत्रिका दी गई है। उन अठारह अधिकारोंका नाम 'सत्तकम्म' था, जिससे इन्द्रनन्दिके संस्कर्म्मसवधी उल्लेखकी पूरी पुष्टि होती है। प्राप्त अवतरण परसे महावधकी प्रति व उसके विषय आदिके संबंधमें अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं, और प्रतिकी परीक्षाकी बड़ी अभिलाषा उत्पन्न होती है, किन्तु उस सबका नियंत्रण करके प्रकृत विषय-पर आनेसे उक्त अवतरणमें प्रस्तुतोपयोगी यह बात स्पष्ट रूपसे माद्धम हो जाती है, कि कृति

* यह अवतरण स प जिल्द १ की भूमिका पृ ६८ पर दिया जा चुका है। 'पर वहां भूलसे 'पुणोते-हिंती' आदि वाक्य टूट गया है। अतः प्रकृतोपयोगी उस अवतरणकी यहाँ फिर पूरा दे दिया है।

और वेदना अनुयोगद्वारा वेदनापडके तथा फास, क्रम, पयडि और त्रयनके त्रय और त्रयनीय भेद वर्णानाटके भीतर हैं। इससे हमारे त्रिययका निर्विवादरूपसे निर्णय हो जाता है।

प्रथम निन्दनी भूमिकामें ठीक इसीप्रकार खंडविभागका परिचय कराया जा चुका है उस परिचयकी और पाठकोत्तरान् यान पुन आकर्षित किया जाता है।

४. णमोकार मंत्रके आदिकर्ता.

३

चा न्यायति और प्रचार हिन्दुओंमें गायत्री मन्त्रका है तथा बौद्धोंमें त्रिसरण मन्त्रका था, यही अंशियोंमें णमोकार मन्त्रका है। वार्तिक तथा सामाजिक सभी कुलों व विधानोंके आरम्भों में इस मन्त्रका उच्चारण करते हैं। यही उनका दैनिक जपमन्त्र है। इसकी प्रख्यातिका एक पद्य निम्न प्रकार है, जो निल पृजनविद्यान में उच्चारण किया जाता है—

णमो पत्र-णमोयसो सत्रयारण्यसणो । मंगलण च सत्रेसि पडम होइ मगल ॥

अर्थात् यह पंच नमस्कार मन्त्र सत्र पापों का नाश करने वाला है और सत्र मंगलोंमें प्रथम [श्रेष्ठ] मण्ड है।

इम मन्त्रका प्रचार ऐतिह्यिके तीनों सम्प्रदायों—दिगम्बर, श्वेताम्बर और त्यानकत्रासियोंमें समानरूपसे पाया जाता है। तीनों सम्प्रदायोंके प्राचीनतम साहित्यमें भी इसका उल्लेख मिलता है। किन्तु अभी तक यह निश्चय नहीं हुआ कि इस मन्त्रके आदिकर्ता कौन है। यथार्थतः यह प्रश्न ही अभी तक किसी ने नहीं उठाया और इस कारण इस मन्त्रको अनादि-निदान ऐसा पद प्राप्त हो गया है।

किन्तु पट्टपडागम और उसकी टीका धवलके अवलोकनसे इस णमोकार मन्त्रके कर्तव्यके सम्बन्धमें कुछ प्रकाश पड़ता है, और इसीका यहां परिचय कराया जाता है।

पट्टपडागमका प्रथम पण्ड जीवद्वण है और इस खंडके प्रारम्भमें यही सुप्रसिद्ध मन्त्र पाया जाता है। टीकाकार श्रीसेनाचार्यके अनुसार यही उक्त प्रत्यका सूत्रकारकृत मंगलाचरण है। वे लिखते हैं कि—

मगल-णिसिच-हेऊ-परिमाण णम तह य क्तार । तगरिय उण्णि पच्चा वक्खणउ सथमाइरियो ॥

अर्थात् णायमाइरिय-परंपरागत मणोगान्धारिय पुत्राइरियायारणुमरण तिरयण्हेउ ति पुक्कदत्ताइ-रियो मगलणीण उग्ग महरणण परुण्णट्ट सुत्तमाह—

णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आउरियाण, णमो उवज्जायाण, णमो लोणु सव्वसाहूण ॥

(स० प० १, पृ० ७)

अर्थात् 'मगल, निमित्त, हेतु परिमाण, नाम और कर्ता. इन छहों का प्ररूपण करके

पश्चात् आचार्यको शालका व्याख्यान करना चाहिये।' इस आचार्य परंपरागत न्याय को मनमें धारण करके पुनर्दत्ताचार्य मगलादि छहोंके सकारण प्ररूपणके लिये सूत्र कहते हैं, 'णमो अरिहताण' आदि।

इसके आगे धवलाकारने इसी मगलसूत्रको 'तालपल्लव' सूत्रके समान देशामर्षक वतलाकर पूर्वोक्त मगल, निमित्त आदि छहों का प्ररूपक सिद्ध किया है। तत्पश्चात् मंगल शब्दकी व्युत्पत्ति व अनेक दृष्टियोंसे भेद प्रभेद वतलते हुए मंगलके दो भेद इसप्रकार किये हैं—

तच्च मगल दुविह णिवद्धमणिवद्धमिदि । तच्च णिवद्ध णाम जो सुत्तसादीण सुत्तरुत्तारोण णिवद्ध-देवदा-णमोकारो त णिवद्ध-मगल । जो सुत्तसादीण सुत्तकत्तारोण क्यदेवदाणमोकारो तमणिवद्ध-मगल । इदं पुण जीवद्वणं णिवद्ध-मगल, यत्तो 'इमेसि चोइसण्ह जीवसमाण' इदि एदुदस्य सुत्तसादीण णिवद्ध-णमो अरिहताण' इच्चादिदेवदा-णमोकारदसणादो ।

(स० प० १, पृ० ४१)

अर्थात् मगल दो प्रकारका है, निवद्ध और अनिवद्ध। सूत्रके आदिमें सूत्रकर्ता द्वारा जो देवतानमस्कार निवद्ध किया जाय वह निवद्ध मगल है और जो सूत्रके आदिमें सूत्रकर्ता द्वारा देवताको नमस्कार किया जाता है (किन्तु वह नमस्कार लिपिवद्ध नहीं किया जाता) वह अनिवद्ध-मगल है। यह जीवद्वण निवद्ध मगल है, क्योंकि इसके 'इमेसि चोइसण्ह' आदिसूत्रके पूर्व 'णमो अरिहताण' इत्यादि देवतानमस्कार पाया जाता है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि जीवद्वणके आदिमें जो यह णमोकार मंत्र पाया जाता है वह सूत्रकार पुष्पदन्त आचार्य द्वारा ही वहा रखा गया है और इससे उस शालको निवद्ध-मगल सज्ञा प्राप्त हो जाती है। किन्तु इससे यह स्पष्ट ज्ञात नहीं होता कि यह मगलसूत्र स्वयं पुष्प-दत्ताचार्यने रचकर यहा निवद्ध किया है, या कहीं अन्यत्र से लेकर यहा रख दिया है। पर अन्यत्र धवलाकार ने इसका भी निर्णय किया है।

वेदनाखंडके आदिमें 'णमो जिणण' आदि मगलसूत्र पाये जाते हैं, जिनकी टीका करते हुए धवलाकारने उनके निवद्ध अनिवद्ध स्वरूप का विवेचन किया है। वे लिखते हैं—

तथेदं कि णिवद्धमाहो अणिवद्धमिदि ? ण ताव णिवद्ध-मंगलमिदि, महाकम्मपयडिपाहुइस्स कदियादि-चउवीस-अणियोगावयवस्स आदीणु गोदमसाणिणा पुरुविदस्स भूदवलिमडारणण वेयणावउस्स आदीणु मगलट्ट त्तो अणेदूण उविदस्स णिवद्धत्त-विरोहादो । ण च धेयणाउड महाकम्मपयडिपाहुउ अवयवस्स अत्रयत्त-विरोहादो । ण च भूदवली गोदमो, विगलसुउधारयस्स धरसेणाइरियसोस्सम भूदमल्लिस्स सयलसुउधारयवडुमण्णत्तेवासि गोदमत्त-विरोहादो । ण चाणो पयारो णिवद्धमगलत्तस्य हेतुभूदो अत्थि ।

अर्थात् यह मगल (णमो जिणण, आदि) निवद्ध है या अनिवद्ध ? यह निवद्ध-मगल तो नहीं है क्योंकि महाकर्मप्रकृतिपाहुडके कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंके आदिमें गीतमस्थामिने इस

मंगलका प्ररूपण किया है और भूतबलि भद्वारकने उसे वहासे उठाकर मंगलार्थ यथा वेदनाखडके आदिमें रख दिया है, इससे इसके निबद्ध-मंगल होनेमें विरोध आता है। न तो वेदनाखड महाकर्मप्रकृतिपाहुड है, क्योंकि अवयवको अवयवी माननेसे विरोध आता है। और न भूतबली ही गौतम है क्योंकि विकलश्रुतके धारक और धरसेनाचार्यके शिष्य भूतबलिको सकलश्रुतके धारक और वर्धमानस्वामीके शिष्य गौतम माननेसे विरोध उत्पन्न होता है। और कोई प्रकार निबद्ध मंगलवना हेतु हो नहीं सकता।

आगे टीकाकारने इस मंगलको निबद्धमंगल भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है, पर इसके लिये उन्हें प्रस्तुत प्रन्थका महाकर्मप्रकृतिपाहुडसे तथा भूतबलिस्वामीका गौतमस्वामीसे बड़ी खींचातानी द्वारा एकत्र स्थापित करना पडा है। इससे धवलाकारका यह मत त्रिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि दूसरेके बनये हुए मंगलको अपने प्रन्थमें जोड देनेसे वह शाल निबद्ध-मंगल नहीं कहला सकता, निबद्ध-मंगलवकी प्राप्तिके लिये मंगल प्रन्थकारकी ही मौलिक रचना होना चाहिये। अतएव जब कि धवलाकार जीवहाणको गणोकार मन्त्ररूप मंगलके होनेसे निबद्ध-मंगल मानते है तब वे स्पष्टत उस मंगलसूत्रको सूत्रकार पुष्पदन्तकी ही मौलिक रचना स्वीकार करते है, वे यह नहीं मानते कि उस मंगलको उन्होंने अन्यत्र कहीं से लिया है। इससे धवलाकार आचार्य वीरसेनका यह मत सिद्ध हुआ कि इस सुप्रसिद्ध गणोकार मंत्रके आदिकर्ता प्रातः स्पर्णीय आचार्य पुष्पदन्त ही है।

२

गणोकार मंत्रके संबन्धमें श्रैताम्बर सम्प्रदायकी क्या मान्यता है और उसका पूर्वोक्त मतसे कहा तक सामञ्जस्य या वैयम्य है, इस पर भी यहाँ कुछ विचार किया जाता है। श्रैताम्बर आगमके अन्तर्गत छह छेदसूत्रोंसे द्वितीय सूत्र 'महानिशीय' नामका है। इस सूत्रमें गणोकार मन्त्रके विषयमें निम्न वातां पायी जाती है—

पुत्र तु ज पचमगलमहासुयकखधसस वक्खाण त महया पत्रधेणं अणतगमपज्जेहि सुत्तस य पियथुयाहि गिञ्जुत्ति-भास-सुबोहि जहेव अणत्त-नाण-इ-मणधरेहि तित्थयेरहि वक्खाणिय तहेन समासओ वक्खाणिज्ज त आसि। अह-अजया कालपरिहाणिदोखेण ताओ गिञ्जुत्ति-भास-सुबोओ उच्छिट्ठाओ। इओ य वच्चतेण कालेण समएण महिद्धिपत्ते पयाणुमारी वइरस्वामी नाम दुवालसपसुअहरे समुपत्ते। तेण य पच-मगल-महासुयकखधसस उद्धारी मूलसुत्तस मउभे लिहियो। मूलसुत्त एण सुत्तराए गणहेरहि अथत्ताए अरिहेतेहि भगवतेहि धम्मत्तित्थयेरहि तिलोगमाहिपुहि वीरणिणदेहि पक्कविय त्ति एस बुद्धसपयाओ।

(महानिशीय सूत्र, अध्याय ५)

इसका अर्थ-यह है कि इस पचमगल महाश्रुतस्तकथका न्यायान महान प्रवधसे, अनन्त गम और पर्यायों सहित, सूत्रकी प्रियभूत निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णियों द्वारा जैसा अनन्त ज्ञान-दर्शनके

धारक तीर्थकरोने किया था उसीप्रकार सक्षेपमें व्याख्यान करने योग्य था। किन्तु आगे काल-परिहानिके दोषसे वे निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णिया विच्छिन्न हो गईं। फिर कुछ काल जानेपर यथासमय महाश्रुतिको प्राप्त पदाजुसारी वइस्वामी (वैरस्वामी या वज्रस्वामी) नामके द्वादशाग श्रुतके धारक उत्पन्न हुए। उन्होंने पचमगल महाश्रुतस्तकथका उद्धार मूलसूत्रके मध्य लिखा। यह मूलसूत्र सूत्रवकी अपेक्षा गणधरों द्वारा तथा अर्थकी अपेक्षासे अरहंत भगवान, धर्मतीर्थकार त्रिलोकमहित वीरजिनदके द्वारा प्रबोधित है, ऐसा दृढसम्प्रदाय है।

यद्यपि महानिशीयसूत्रकी रचना श्रैताम्बर सम्प्रदायमें बहुत कुछ पीछेकी अनुमान की जाती है, x तथापि उसके रचयिताने एक प्राचीन मान्यताका उल्लेख किया है जिसका अभिप्राय यह है कि इस पचमगलरूप श्रुतस्तकथके अर्थकर्ता भागवान् महावीर है और सूत्ररूप ग्रन्थकर्ता गौतमादि गणधर है। इसका तीर्थकार कथित जो व्याख्यान था वह कालदेपसे विच्छिन्न हो गया। तब द्वादशाग श्रुतधारी वइरस्वामीने इस श्रुतस्तकथका उद्धार करके उसे मूल सूत्रके मध्यमें लिख दिया। श्रैताम्बर आगममें चार मूल सूत्र माने गये है—आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन और पिंडनिर्युक्ति। इनमें से कोई भी सूत्र वज्रसूरिके नामसे सम्बद्ध नहीं है। उनकी चूर्णिया भद्रवद्वह्नुन कही जाती है। उन मूल सूत्रोंमें प्रथम सूत्र आवश्यकके मध्यमें गणोकार मंत्र पाया जाता है। अतएव उक्त मान्यताके अनुसार समभवत. यही वह मूलसूत्र है जिसमें वज्रसूरिने उक्त मंत्रको प्रक्षिप्त किया।

कल्पसूत्र स्थविरावलीमें ' वइर ' नामके दो आचार्योंका उल्लेख मिलता है जो एक दूसरेके गुरु-शिष्य थे। यथा—

थेरस्स ण अज्ज-सीहगिरिस्स जाइस्सरस्स कोसियगुत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगुवे। थेरस्स ण अज्जवइरस्स गोयमसगुत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जवइरस्सेणे उक्कोसियगुत्ते-।

अर्थात् कौशिक गोत्रीय स्थविर आर्य सिंहगिरिके शिष्य स्थविर आर्य वइर गौतम गोत्रीय हुए, तथा स्थविर आर्य वइर गौतम गोत्रीयके शिष्य स्थविर आर्य वइरसेन उक्कोसिय गोत्रीय हुए। चिन्तनसवत् १६४६ मे सगृहीत तपागच्छ पट्टावलीमें वइरस्वामीका कुछ विशेष परिचय पाया जाता है। यथा—

तेरसमो वयरसामि गुरु।

व्याख्या—तेरसमो त्ति श्रीसिंहगिरिपट्टे त्रयोदश श्रावज्जस्वामी यो वाटगदपि जातिस्सुत्तिभाग, नमोगमनविषया सघरक्षाकृत्, दक्षिणस्या बौद्धराज्ये जित्तेन्द्रपूजाभित्त पुण्याधानयकेन प्रवचनप्रभावनाकृत्,

ऋषिभारिणी ३३ पूर्वाभिषेकश्रीमन्त्रिणी वज्रशापोरक्षित्मूलम् । तथा न भगवान् पण्डित्यधिकृत्वु शत ४९६
नरुन्ने जाग मन् ३४० ८ वर्षाणि गृहे, चतुश्चर्याशिव ४४ वर्षाणि व्रते, पट्टवडा ३६ वर्षाणि युगप्र०
मार्ग्युपशांति ८८ वर्षाणि परिपात्य श्रीरितात् चतुरशीत्यधिकसन्वरात् ५८४ वर्षान्ते स्वर्गभाक् । श्रीवज्र-
मामिनो रमार्-चतुर्थ-महानसम्मानना व्युच्छेद ।

चतुःकुलमसु पतिपितामहसह विभुम् ।

दगपूर्वमिधि मन्दे वज्रस्वामिसुनीधरम् ॥ >

इस उल्लेखपरसे वइस्वामीके सबधमें हमें जो बातें ज्ञात होती हैं वे ये हैं कि उनका जन्म वीरनिर्वाण से ४९६ वर्ष पश्चात् हुआ था और स्वर्गवास ५८४ वर्ष पश्चात् । उन्होंने दक्षिण दिशाओं भी विहार किया था तथा वे दशषुर्विद्योमें अपश्चिम थे । वीरवशावलीमें भी उनके उत्तरदिशासे दक्षिणापयको विहार करनेका उल्लेख किया गया है, X और यह भी कहा गया है कि वहाने 'तुंगिया' नामक नगरमें उन्होंने चातुर्मास व्यतीत किया था । वहासे उन्होंने अपने एक शिष्यको सोपारक पत्तन (गुजरात) में विहार करनेकी भी आज्ञा दी थी । इन उल्लेखोंपरसे उनके पुण्यदत्ताचार्यकी विहारभूमिसे संबन्ध होनेकी सूचना मिलती है ।

तपागच्छ पट्टवलीमें नइस्वामीसे पूर्व आर्यमगुका उल्लेख आया है जिनका समय नि. सं ४१७ बतलाया गया है । यथा—

सात्पट्टवधिकृत्वु शतवप ४६७ आर्यमगुः ।

आर्यमगुका कुछ विशेष परिचय नन्दीसूत्र पट्टवलीमें इसप्रकार आया है :—

भगवा नरग सरग पभानग णाण इसण गुणण ।

वजमि अज्जमंगु सुयसागरपरग धीर ॥ २८ ॥

अर्थात् ज्ञान और दर्शन रूपी गुणोंके वाचक, कारक, वारक और प्रभावक, तथा भूतमागरेके पारगामी धीर आर्यमगुकी मैं बन्दना करता हूं । इसके अनन्तर अज्जमम और भग्नुत्तेके उल्लेखके पश्चात् अचय्यरका उल्लेख है । इन उल्लेखोंपरसे जान पडता है कि ये आर्यमगु अन्य कोई नहीं, धमला जयववलीमें उल्लिखित आर्यमलु ही हैं, जिनके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने ओर उनके सहपाठी नागहथीने गुणवराचार्य द्वारा पंचमपूर्व ज्ञानप्रवादसे उद्धार लिये हुए कसायपाहुडका अयन किया था और उसे जइवसह (यतिवृपभाचार्य) को सिखाया था । उक्त नन्दीसूत्र पट्टवलीमें अजाय्यरके अनन्तर अजरकिखअ और अज्ज नन्दिलखमणके पश्चात् अच नागहथी का भी उल्लेख इसप्रकार आया है—

* पट्टवली समुच्चय, पृ. ४७

५ नैन मार्जिन मसोवक १, २, परिक्षिप, पृ १४

६ पट्टवली समुच्चय, पृ १३.

वहुड वायगवसो जमवसो अज्ज-नागहददीण ।

वागरण-नरणभगिय-कम्मपयडी-पहाणण ॥ ३० ॥

अर्थात् व्याकरण, करणभगी व कर्मप्रकृतिमें प्रधान आर्य नागहस्तीका यशस्वी वाचक वंश वृद्धिशील होवे ।

इसमें सन्देहको स्थान नहीं कि ये ही वे नागहथी हैं जो धवलादि प्रथोमें आर्यमलु के सहपाठी कहे गये हैं । उनके व्याकरणादिके अतिरिक्त 'कम्मपयडी' में प्रधानताका उल्लेख तो बड़ा ही मार्मिक है । श्वेताम्बर साहित्यमें कम्मपयडी नामका एक ग्रंथ शिवशर्मसूरी कृन पाया जाता है जिसका रचनाकाल अनिश्चित है । एक अनुमान उसके वि स. ५०० के लगभगका लगाया जाता है । अतएव यह ग्रंथ तो नागहस्ती के अध्ययनका विषय हो नहीं सकता । फिर या तो यहाँ कम्मपयडीसे विषयसामान्य का तात्पर्य समझना चाहिये, अथवा, यदि किसी ग्रंथ-विशेष से ही उमका अभिप्राय हो तो वह उसी कम्मपयडी या महाकम्मपयडिपाहुड से हो सकता है जिसका उद्धार पुण्यदत्त और भूतबलि आचार्योंने पट्टवडागम रूपसे किया है ।

तपागच्छ पट्टवलीसे कोई सवा तीनसौ वर्ष पूर्व वि सं. १३२७ के लगभग श्री धर्मवोप सूरी द्वारा सगृहीत 'सिरी-दुसमाकाल-समणसंघ-थय' नामक पट्टवलीमें तो 'वइर' के पश्चात् ही नागहथीका उल्लेख किया गया है । यथा—

वीण तिवीस वइरं च नागहथिय च रेवडंमित्त ।

सीह नाग-जुग भूइदिसिय काल्य वडेX ॥ १३ ॥

ये वइर, वइर द्वितीय या कल्पसूत्र पट्टवलीके उक्कोसिय गोत्रीय वइरसेन है जिनका समय इसी पट्टवलीकी अवचूरीमें राजगणनासे तुलना करते हुए नि. सं ६१७ के पश्चात् बतलाया गया है । यथा—

पुणमिन्न (डुर्बलिका पुण्यमिन्न) २० ॥ तथा राजा नाहड ॥ १० ॥ (एव) ६०५ शाकसन्दसर ॥ अत्रा-

न्तरे वोटिमा निगंता । इति ६१७ ॥ प्रथमोदयः । वयरसेण ३ नागहस्ति ६९ रेयतिमिन्न ५९ वमदीपगमिह ७८ नागार्जुन ७८

पणसयरी सयाह तिमि सय-रमनिआह अट्टम्मऊ ।

विक्रमकालो तओ बहुली (बलभी) भगो समुन्नो ॥ १ ॥

इसके अनुसार वीरसवत्के ६१७ वर्ष पश्चात् वयरसेनका काल तीन वर्ष और उनके अनन्तर नागहस्तीका काल ६९ वर्ष पाया जाता है ।

पूर्वोक्त उल्लेखोंका मथितार्थ इस प्रकार निकलता है—श्वेताम्बर पट्टवलीमें 'वइर' नामके दो आचार्योंका उल्लेख पाया जाता है जिनके नाममें कहीं कहीं 'अज्ज वइर' और 'अज्ज वइरसेन'

इसप्रकार भेद किया गया है। कल्पसूत्र स्थिरावलीमें एकको गौतम और दूसरको उक्को-सिय गोत्रीय कहा है और उन्हें गुरु-शिष्य बतलाया है। किन्तु अन्य पीछेकी पद्यावलियोंमें उनके बीच कहीं कहीं एक दो नाम और जुड़े हुए पाये जाते हैं। प्रथम अज्जवइके समयका उल्लेख उनके वीरनिर्वाणके ५८४ वर्षतक जीवित रहनेका मिलता है व अज्ज वइसेनका उल्लेख वीर-निर्वाणसे ६१७ वर्ष पश्चात्का पाया जाता है। इन दोनों आचार्योंसे पूर्व अज्जमयुका उल्लेख है, तथा उनके अनन्तर नागहल्थिका। अतः इन चारों आचार्योंका समय निम्न प्रकार पडता है—

वीर निर्वाण संवत्

| | |
|---------------|---------|
| अज्ज मगु | ४६७ |
| अज्ज वइर | ४९६-५८४ |
| अज्ज वइसेन | ६१७-६२० |
| अज्ज नागहल्थी | ६२०-६८९ |

अज्ज वइर दक्षिणापथको गये, वे दशपूर्वोंने पाठी हुए और पदानुसारी ये तथा उन्होंने पंच णमोकार मंत्र का उद्धार किया। नागहल्थी कम्मपयडिमें प्रथम हुए।

दिग्गम्वर साहिलोछेखोंके अनुसार आचार्य पुण्यदन्तने पहले पहले 'कम्मपयडी' का उद्धार कर सूत्ररचना प्रारम्भ की और उसीके प्रारम्भमें णमोकार मंत्र रूपी मगल निवद्ध किया, जो धवलाटीकाके कर्त्ता वीरसेनाचार्यके मतानुसार उनकी मौलिक रचना प्रतीत होती है। अज्जमल्लु और नागहल्थि-दोनोंने गुणधराचार्य रचित कसायपाहुडको आचार्य परंपरासे प्राप्तकर यति-वृषभार्यको पढाया, और यतिवृषभार्यने उसपर चूर्णिसूत्र रचे, ऐसा उल्लेख धवलादि ग्रंथोंमें मिलता है। यतिवृषभकृत 'तिलोयपण्णत्ति' में 'वइरजस' नामके आचार्यका उल्लेख मिलता है जो ब्रह्माश्रमणोंमें अन्तिम कहे गये हैं। यथा—

पण्हसमणेसु चरिमो वइरजसो णाम । ×

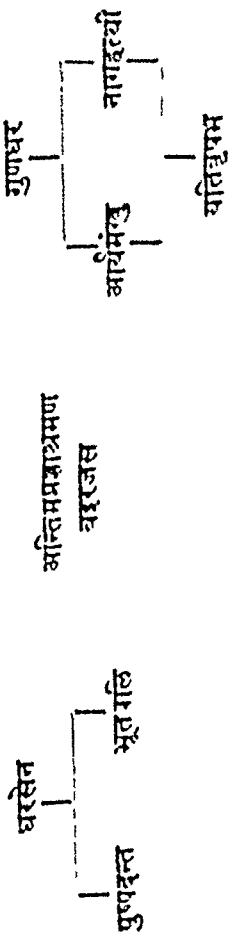
आश्चर्य नहीं जो ये अन्तिम ब्रह्माश्रमण वइरजस (वज्रयश) श्रेताम्बर पद्यावलियोंके पदानुसारी वइर (वज्रस्वामी) ही हों। पदानुसारिण और ब्रह्माश्रमण्य दोनों ऋद्धियोंके नाम हैं और ये दोनों ऋद्धिया एक ही बुद्धि ऋद्धिके उपभेद हैं*। धवलात्तर्गत वेदनाखडमें निवद्ध गौतम-स्वामीकृत मगलाचरणमें इन दोनों ऋद्धियोंके धाक आचार्योंको नामस्कार किया गया है, यथा—

णमो पदानुसारीण ॥ ८ ॥ णमो पण्हसमणण ॥ १८ ॥

× सतपण्हणा १, भूमिका पृ ३०, कुञ्जोद

* राजवातिक पृ १४३

इसप्रकार इन आचार्योंकी दिग्गम्वर मान्यताका काम निम्न प्रकार सूचित होता है—



वइरजसका नाम यतिवृषभसे पूर्व ठोक कहा जाता है इसका निश्चय नहीं। आर्यमल्लु और नागहल्थीके समकालीन होनेकी स्पष्ट सूचना पाई जाती है क्योंकि उन दोनोंने क्रमसे यतिवृषभको कसायपाहुड पढाया था। क्रमसे पदानुसे तथा आर्यमल्लुका नाम सँदर पहले लिये जानेसे इतना ही अनुमान होता है कि दोनोंमें आर्यमल्लु संभवत जेठे थे। ये दोनों नाम श्रेताम्बर पद्यावलियोंमें कोई १२० वर्षके अन्तरसे दूर पड़ जाते हैं जिससे उनका समकालीनत्व नहीं बनता। किन्तु यह बात विचारणीय है कि श्रेताम्बर पद्यावलियोंमें ये दोनों नाम कहीं पाये जाते हैं और कहीं छोड़ दिये जाते हैं, तथा कहीं उनमेंसे एकका नाम मिलता है दूसरेका नहीं। उदाहरणार्थ, सबसे प्राचीन 'कल्पसूत्र स्थिरावली' तथा 'पद्यावली सरोद्धार' में ये दोनों नाम नहीं हैं, और 'गुरु पद्यावली' में आर्यमल्लुका नाम है पर नागहल्थीका नहीं है*। फिर आर्यमल्लु और नागहल्थीने जिनका रचा दृआ कसायपाहुड आचार्य-परंपरासे प्राप्त किया था वे गुणधराचार्य दिग्गम्वर उल्लेखोंके अनुसार मद्यवीर स्वामीसे आचार्य-परंपराकी अद्यार्थस पांडी पश्चात् निर्वाण संनत्की सातवीं शताब्दिमें हुए सूचित होते हैं जब कि श्रेताम्बर पद्यावलियोंमें उन दोनोंमें से एक पांचवीं और दूसरे सातवीं शताब्दिमें पडते हैं। इसप्रकार इन सत्र उल्लेखों परसे निम्न प्रथ उपरिपत्त होते हैं—

१. स्या 'तिलोय-पण्णत्ति' में उल्लिखित 'वइरजस' और महानिशीयसूके पदानुसारी 'वइरसामो' तथा श्रेताम्बर पद्यावलियोंके 'अज्ज वइर' एक ही हैं ?
२. 'वइरस्वामीने मूलसूत्रके मय्य पचमगलश्रुतस्तथका उद्धार लिख दिया' इस महा-निशीयसूत्रकी सूचनाका तात्पर्य स्या है ? स्या उनकी दक्षिण यात्राका और उनके पचमगलसूत्रकी प्राप्तिका कोई सम्बन्ध है ? स्या धवलात्तर्कारा सूचित णमोकार मंत्रके कर्तृत्वका इतसे सामञ्जस्य बैठ सकता है ?
३. स्या धवलादिश्रुतमें उल्लिखित आर्यमंलु और नागहल्थी तथा श्रेताम्बर पद्यावलियोंके अज्जमगु और नागहल्थी एक ही हैं ? यदि एक ही हैं, तो एक जगह दोनोंको समसामयिकता

* देगो पद्यावली सपुच्य ।

प्रकृत धर्मों और दूसरी जगह उनके बीच एकसौ तीस वर्षका अन्तर पडनेका क्या कारण हो सकता है? पट्टावधियोंमें भी कहीं उनके नाम देने और कहीं छोड दिये जानेका भी कारण क्या है?

४. जिस कम्पयडिमें नागद्वयिनि प्रवानता प्राप्त की थी क्या वह पुण्यदन्त भूतबलि द्वारा उन्नतित रुग्णपयडियाहुड हो सकता है?

५. दिगम्बर और त्रैनाम्बर पट्टावधियों आदिमें उक्त आचार्योंके कालनिर्देशमें वैषम्य पडनेका कारण क्या है?

इन प्रश्नोंसे अनेकके उत्तर पूर्वोक्त विवेचनमें सूचित या व्वनित पाये जावेंगे, फिर भी उन साक्षात् प्रामाणिकतासे उत्तर देना विना और भी विशेष खोज और विचारके संभव नहीं है। इस जार्थके लिये जितने समयकी आवश्यकता है उसकी भी अभी गुजाइश नहीं है। अतः यहां इतना ही कहकर यह प्रसंग छोडा जाता है कि उक्त आचार्यों सबधी दोनों परम्पराओंके उल्लेखोंका भारी रहस्य अपम्य है, जिसके उद्घाटनसे दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन इतिहास और उनके बीच साहित्यिक आदान प्रदानके विषय पर विशेष प्रकाश पडनेकी आशा की जा सकती है।

इस प्रकरणको समाप्त करनेसे पूर्व यहां यह भी प्रकट कर देना उचित प्रतीत होता है कि धैतान्बर आगमके अन्तर्गत भगवतीसूत्रमें जो पच-नमोकार-मगल पाया जाता है उसमें पंचम पद अर्थात् ' गमो लोए सब्बसाहूण ' के स्थानपर ' गमो वभीए ल्वीए ' (ब्राह्मी लिपिको नगम्भार) ऐसा पद दिया गया है। उडीसानी हाथीगुफामें जो कलिंग नरेश खारवेलका सिखंडेन पाया जाता है और जिसका समय ईस्वी पूर्व अठ्ठमान किया जाता है, उसमें आदि मगल सम्प्रकार पाया जाता है—

गमो भरपण । गमो मग भियण ।

ये पाठभेद प्रासंगिक है या किसी परिपाटीको लिये हुए है, यह विषय विचारणीय है। त्रैनाम्बर सम्प्रदायमें किसी किसीके मतसे गमोकार सूत्र अनार्य है X ।

५ बारहवें श्रुताङ्ग दृष्टिवादका परिचय

हम सप्रस्तुपणा प्रथम भिन्दनी भूमिकामें कह आये हैं कि त्राहवा श्रुताग दृष्टिवाद त्रैनाम्बर गान्यताके अनुसार भी विच्छिन्न होगया, तथा दिगम्बर मान्यतानुसार उसके कुछ अशोक

X ' १ १ उरति नमस्काराव पत्र नार्हं

' इत्यादि । देखो अभिधानराजेन्द्र-गमोकार,

उद्धार पट्टदण्डगम और कपायप्राभृतमें पाया जाता है। किन्तु शेष भागोंके प्रकरणों व विषय आदिका सक्षिप्त परिचय दोनों सम्प्रदायोंके साहित्यमें थिखरा हुआ पाया जाता है। अतः लुप्त हुए श्रुतागके इस परिचयको हम दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन प्रमाणभूत ग्रन्थोंके आधारपर यहां तुलनात्मकरूपमें प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक इस महत्त्वपूर्ण विषयमें रुचि दिखला सकें और दोनों सम्प्रदायोंकी मान्यताओंमें समानता और विषमता तथा दोनोंकी परस्पर परिष्कृतताकी ओर ध्यान दे सकें। इस परिचयका मूलाधार श्रैतान्बर सम्प्रदायके नन्दीसूत्र और समवायागसूत्र हैं तथा दिगम्बर सम्प्रदायके धवल और जयधवल ग्रन्थ।

धवलामें दृष्टिवादका स्वरूप इसप्रकार बतलाया है—

तस्य दृष्टिवादस्य स्वरूप निरूप्यते । कौकल-तण्णेनिद्धि-कोशिक-हरिशमशु-नमाद्धपिम्-रोमना-रारीत-मुण्ड-अश्वलायनादीना क्रिगावावट्टीनामशीतिसत्तम्, मरीचि-कपिलोल्ह-गार्थ-इयाव्रभूति-नाहलि माडर-मौद्गल्यनादीनामक्रियावावट्टीना चतुरशीति, शारत-य-रत्त-कुथुमि-साल्यसुमि-नारायण-कण-म-मा-यदिन-मोद-वैष्यलाद-नादारथण-स्वैच्छक्रेदिकायन-वसु-जैमिन्यादीनामज्ञानिन्द्यादीना ससपष्टि, वशिष्ठ-पाराशर-जनु-कर्ण-वाल्मीकि-रोमहर्षणी-सत्यदत्त-व्यासैलापुत्रौपमन्यवैन्द्रवचायर-यूणादीना वैनगिन्द्यादीना द्वानिप्रात् । एषा दृष्टिशताना त्रयाणां त्रिपद्युत्तराणा प्ररूपण निग्रहश्च दृष्टिवादे क्रियते । (स प., पृ० १०७)

इसका अभिप्राय यह है कि दृष्टिवाद अगमें १८० क्रियावाद, ८४ अक्रियावाद, ६७ अज्ञानिकवाद और ३२ वैनयिकवाद, इसप्रकार कुल ३६३ दृष्टियोंका प्ररूपण और उनका निग्रह अर्थात् खंडन किया गया है। इन वादों और दृष्टियोंके कर्ताओंके जो नाम दिये गये हैं, उनमेंसे अनेक नाम वैदिक धर्मके भिन्न भिन्न साहित्योंसे सम्बद्ध पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, हारीत, वशिष्ठ, पाराशर सुप्रसिद्ध सृष्टिकारोंके नाम हैं। व्यासकृत स्मृति भी प्रसिद्ध है और वे महाभारत के कर्ता कहे जाते हैं। वाल्मीकि कृत रामायण सुविख्यात है, पर धर्मशास्त्रसंबधी उनका बनाया ग्रन्थ नहीं पाया जाता। आश्वलायन श्रौतसूत्र भी प्रसिद्ध है। गर्गका नाम एक ज्योतिषसंहितासे सम्बद्ध है। कण्व ऋषिका नाम भी वैदिकसाहित्यसे सम्बन्ध रखता है। माच्यदिन एक वैदिक शाखाका नाम है। वादरायण वेदान्तशास्त्रके और जैमिनि पूर्वमीमांसाके सुप्रसिद्ध संस्थापक हैं। किन्तु शेष अधिकांश नाम बहुत कुछ अपरिचितसे हैं। इन नामोंके साथ उन उन दृष्टियोंका संबंध किन्हीं ग्रंथोंपरसे चला है या उनकी चलाई कोई अलिखित विचारपरम्पराओंपरसे कहा गया है यह जानना कठिन है। पर तात्पर्य यह स्पष्ट है कि दृष्टिवादमें अनेक दार्शनिक मत-मतान्तरोंका परिचय और विवेक कराया गया था। दृष्टिवादके जो भेद आगे बतलाये गये हैं उनमें सूत्र और पूर्वोक्त मीतर ही इन वादोंके परिशीलनकी गुजाइश दिखाई देती है।

श्रेताम्बर मान्यता
दिद्विवाद' के ५ भेद

- १ परिकर्म
- २ सुत
- ३ पुत्रगण
- ४ अणुयोग
- ५ चूडिया

दोनों संप्रदायोंमें दृष्टिवादके इन पांच भेदोंके नामोंमें कोई भेद नहीं है, केवल अणियोगकी जगह दिगम्बर नाम पट्टमाणियोग पाया जाता है। इसका रहस्य आगे बताये हुए प्रभेदोंसे जाना जायगा। दूसरा कुछ अन्तर पुत्रगण और अणियोगके क्रममें है। श्रेताम्बर पुत्रगणकी पहले और अणियोगकी उसमें पश्चात् गिनते हैं, जबकि दिगम्बर पट्टमाणियोगकी पहले और पुत्रगणकी उसके अनन्तर रखते हैं। यह भेद या तो आकस्मिक हो, या दोनों संप्रदायोंके प्राचीन पठनक्रमके भेदका द्योतक हो। दिगम्बरीय क्रमकी सार्थकता आगे पूर्वोक्त विवेचनमें दिवायी जावेगी।

परिकर्मके ७ भेद

- १ सिद्धसेणिआ
- २ मणुससेणिआ
- ३ पुद्गसेणिआ
- ४ ओगाढसेणिआ
- ५ उवसपज्जणसेणिआ
- ६ विष्णवहणसेणिआ
- ७ चुआचुअसेणिआ

- १ अथ कोय दृष्टिवाद ? नटयो दर्शनाणि, वदन वादः। दृष्टीना नदो दृष्टिवाद । अथवा पतन पात, दृष्टीना पातो यत् स दृष्टिपात ।
(नदीसूत्र टीका)
- २ तत्र परिकर्म नाम योग्यतापादनम् । तद्वेत्तु सात्र-मपि परिकर्म । $X \times X$ तथा चोक्तं पूर्णा-परिकर्मे वि योग्यताकरण । जद् गणियस्स सोलस परिकम्मा तग्गहिय हसत्थो सेस गणियस्स जोग्गो मवद्, पूव गणियपरिकम्मसुत्थो सेस सुचार दिद्विवायस्स जोग्गो मवद् ति ।
(नदीसूत्र टीका)

दिगम्बर मान्यता
दिद्विवाद' के ५ भेद

- १ परिकर्म
- २ सुत
- ३ पट्टमाणियोग
- ४ पुत्रगण
- ५ चूडिया

परिकर्मके ५ भेद

- १ चदपणत्ती
- २ सूरपणत्ती
- ३ जवूदीवपणत्ती
- ४ दीवसायरणत्ती
- ५ त्रियाहपणत्ती

- १ दृष्टीना विषययुचरिषतगस्याना विष्णवर्णाना वादोऽनुवाद, तन्निरात्मण च यद्विभीक्ष्ण्ये तद् दृष्टिवाद नाम ।
- २ परित सर्वतं क्वचिण गणितकरणयूपाणि यस्मिन् तत् परिकर्म ।
(गोम्भटमार टीका)
- (गोम्भटमार टीका)

ये परिकर्मके भेद दोनों संप्रदायोंमें सत्या और नाम दोनों बातोंमें एक दूसरेसे मर्त्या भिन्न हैं। सिद्धश्रेणिकादि भेदोंका स्या रहस्य या, यह ज्ञात नहीं रहा। सम्प्रदायके टीकाकार कहते हैं—

‘पुत्रव मं मशुत्रोत्तरभेद म्प्रार्थतो न्यत्रिण्ण’

अर्थात् यह सत्र परिकर्मका अर्थ मूत्र और (आगे व्रतद्वये जानेंचोडे) उत्तर भेदोंसहित सूत्र और अर्थ दोनों प्रकारसे नष्ट होगया। किन्तु सूत्रकार व टीकाकारने इन सात भेदोंके सम्प्रथमें कुछ बातें ऐसी बतलायी हैं जो बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। परिकर्मके सात भेदोंके सम्प्रथमें ये लिखते हैं—

द्वयंनट ७ परिकर्माउ मयसत्तयाद, सत्त आजीरिगट, ७ उदय-णद्वयाद, मत्त तंगलिकाउ

। (यमयापांगमूर)

एत्यों च परिकर्मणा पद् गतिमानि परिकर्मणि मयसमरिसत्तयेय । गोजालर-प्रयतितार्जाविक-पाप, रिद्वर-विगमनत्तो पुन चुगाचुत्तश्रेणिसपरिकर्ममहितानि मस प्रजाअन्ते । इत्थी परिक्कन्तु ७-विन्ना । तत्र नेगो त्रिणिधः म्प्रार्थितोऽमाम्प्रादिस्र्थ । तत्र साम्प्रार्थि ममहम्रिदोऽवाम्प्रादिस्र्थ न्यहासम् । तस्मार्थगतो म्प्रारार क्तुसूत्रं दन्व्यायधेर म्प्रैयेय न्यारो न्ना । म्प्रैयशुभं च यद् न्यमानारिकानि परिकर्मणि विन्तन्ते, अतो भणित ‘ ७ चदक-णयाद् ’ ति भवति । त एव जार्जरिसाचगतिचा भणित । म्प्रमाद् १ द्दयत्तं, यस्मात्तं मं न्यप्यकमिच्छति, यथा जीवोऽपीवो गिवाजीव, न्निओऽओसो तोसल्लोफ, मत् अस्स म्प्रत्त उभयमादि । तयविन्तायामारि ते तिणिध न्यमिच्छति । तत्तया उच्चोभिद् प्पर्यायार्थिक उभयार्थिक । अतो भणित ‘सत्त तंगलिय’ ति । सत्त परिकर्माणि म्प्रार्थिसत्तयापि उच्चोभिधिपथया न्यविन्तया विन्तयन्तीक्यां । (यमयापांगम टीका)

इसका अभिप्राय यह है कि परिकर्मके जो सात भेद ऊपर गिनाये गये हैं उनमेंसे प्रथम छ भेद तो स्वसमय अर्थात् अपने विशान्तके अनुसार हैं, और सातवां भेद आजीविक सम्प्रदायकी मान्यताके अनुसार है। अनियोंके सात नयोंसे प्रथम अर्थात् नेगम नयका तो संप्रद और व्यवहारमें अन्तर्भाव हो जाता है, तथा अन्तिम दो अर्थात् समभिल्लुड और एवंभूत शब्दनयमें प्रविष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार मुख्यतासे उनके चार ही नय रहते हैं, संप्रद, व्यवहार, न्दुसूत्र और शब्द । इस अपेक्षासे ईनी चउकणइक अर्थात् चुथकनयिक कहलाते हैं। आजीविक सम्प्रदायवाले सत्र वस्तुओंको वि-आत्मन मानते हैं, जैसे जीव, अजीव और जीवाजीव; लोक, अलोक और लोकालोक, सत्, असत् और सदसत्, इत्यादि । नयना चिन्तन भी ये तीन प्रकारसे करते हैं—द्व्यार्थिक, पर्यायार्थिक और उभयार्थिक। अत आजीविक तेरासिय अर्थात् त्रैशिक भी कहलाते हैं। उन्हींकी मान्यतानुसार परिकर्मका मताना भेद ‘ चुआचुअसेणिआ ’ जोड़ा गया है।

इस सूत्रनासे जैन और आजीविक सम्प्रदायोंके परस्पर सर्परूपर बहुत प्रकाश पडता है। मयल्लिगोशाळ गद्यार्थरसामी य बुद्धरेरके समसागधिक धर्मोपदेशक थे। उनके द्वारा स्थापित

आजीविक सम्प्रदायके बहुत उल्लेख प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रंथोंमें पाये जाते हैं। प्रस्तुत सूचना पर से जाना जाता है कि उनका शाल और सिद्धान्त जैनियोंके शाल और सिद्धान्तके बहुत ही निकटवर्ती था, केवल कुछ कुछ भेद-प्रभेदों और दृष्टिकोणोंमें अन्तर था। भूमिका जैनियों और आजीविकोंकी प्रायः एक ही थी। आगे चलकर, जान पड़ता है, जैनियोंने आजीविकोंकी मान्यताओं को अपने शालमें भी समग्र कर लिया और इसप्रकार धीरे धीरे समस्त आजीविक पंथका अपने ही समाजमें अन्तर्भाव कर लिया। ऊपरकी सूचनामें यद्यपि टीकाकारने आजीविकोंको पाखंडी कहा है, पर उनकी मान्यताको वे अपने शालमें स्वीकार कर रहे हैं।

परिकर्मके पूर्वोक्त सात भेद दिग्म्बर मान्यतामें नहीं पाये जाते। पर इस मान्यताके जो पाच भेद चद्रपण्णत्ति आदि हैं, उनमें से प्रथम तीन तो श्वेताम्बर आगमके उपागोंमें गिनाये हुए मिलते हैं, तथा चौथा दीवसायरपण्णत्ती व जंबूदीवपण्णत्ती और चंद्रपण्णत्तीके नाम नंदीसूत्रमें अंगब्राह्म श्रुतके आवश्यकव्यतिरिक्त भेदके अन्तर्गत पाये जाते हैं। किन्तु पांचवां भेद वियाहपण्णत्तिका नाम पांचवें श्रुतागके अतिरिक्त और नहीं पाया जाता।

सिद्दसेणिया परिकर्मके १४ उपभेद

१. माउगापयाइं (३६०५०००) चदायु-परिवारिद्धि-गइ-विबुस्सेह-वण्णण कुणइ ।
२. एण्डिअपयाइ अट्ट या पादेह्ठ'पयाइ
४. पाढोआमास या आगामं पयाइ
५. केउभूअ
६. रासिअरं
७. एगयुण
८. दयुणं
९. निगुण
१०. केउभूअ
११. पडिगहो
१२. ससारणडिगहो
१३. नंदात्त
१४. सिद्धावत्त

मणुस्सेणिया परिकर्मके भी १४ भेद ४. दीवसायरपण्णत्ती- वावण्णलक्खल्लत्तीस- हे गिनंमं प्रथम १३ भेद उपर्युक्त ही हैं। १४

१. ये पाठभेद नदीपर और सम्भाषणके हैं।

वा भेद ' मणुस्सावत्त ' नामका है। पण्डसेणियादि शेष पाच परिकर्मोंमें प्रत्येक के ११ उपभेद हैं जो प्रथम तीनको छोड़ कर शेष पूर्वोक्तही है। अन्तिम भेदके स्थानमें स्वनामसूचक भेद है, जैसे पुट्टावत्त, ओगाढा-वत्त, उवसपज्जणावत्त, विप्पजहणावत्त और चुआञ्जावत्त । इसप्रकार ये सब मिलकर ८३ भेद होते हैं ।

परिकर्मके इन माउगापयाइं आदि उपभेदोंका कोई विवरण हमे उपलब्ध नहीं है। किन्तु मातृकापदसे जान पड़ता है उसमें लिपि विज्ञानका विवरण था। इसीप्रकार अन्य भेदोंमें शिक्षाके मूलविषय गणित, न्याय आदिका विवरण रहा जान पड़ता है।

सुत्तके ८८ भेद

१. उज्जुसुय या उजुग
२. परिणयापरिणय
३. बहुमागिअं
४. विजयचरिय, विप्पचइय या विनयचरिय
५. अणतर
६. परपर
७. मासाण (समाण-स. अ)
८. संजहं (मासाण-)
९. समिण्ण
१०. आहव्याय (अहाञ्चायं-स. अं.)
११. सोवथिअवत्त
१२. नंदावत्त
१३. बहुल
१४. पुट्टापुट्ट
१५. विआवत्त

सुत्तके अन्तर्गत विषय

सुत्त अट्टासीदिलक्खलपदेहि (८८०००००) अवंधओ, अवलवओ, अरुत्ता, अभोत्ता, गिरगुणो, सव्वगओ, अणुमेत्तो, गय्थि जीवो, जीवो चैव अरिय, पुट्टवियादीण समुदरण जीवो उपज्जहं, गिच्चेयणो, गाणेण विणा, संचेयणो, गिच्चो, अणिच्चो अप्पेत्ति वण्णेदि । तेरासिय, गियदिश्चाद, विण्णाणवाद, सद्दवाद, पहाणवाद, दव्व-वाद, पुरिसिवाद च वण्णेदि । उत्तं च-

अट्टासी अहियोरसु चउण्हमहियाराणमय्थि गिद्धेसो । पडमो अवधयाण, विदियो तेरासियाण बोद्धव्वो ॥ तदियो य गियइपक्खे हवइ चउत्थो ससमयम्मि । (धवळा सं. प., पृ. ११०)

१. सिद्धसेणिकादिपरिकर्म मूलभेदत मतविध, उवामेदतस्तु न्ययोतिविध मानुकापदादि ।

(ममवायाग टीका)

सुते अडासीदि अयाहियार, ण तेसि
णामाणि जाणिज्जति, संपहि निसिद्धुवएसा-
भावादी (जयधवला)

१६. एवभूअ
१७. दुयावत्तं
१८. वत्तमाणप्पय
१९. समभिरुद्ध
२०. सव्वओभद
२१. पत्सास (पणांस-स. अं.)
२२. दुप्पडिगह

ये ही २२ सूत्र चार प्रकारसे प्ररूपित है—

- १ छिण्णछेअ-णइयाणि
- २ अछिण्णछेअ-णइयाणि
- ३ तिक-णइयाणि
- ४ चउक्क-णइयाणि

इसप्रकार सूत्रोंकी संख्या $२२ \times ४ = ८८$

हो जाती है ।

अन्ताम्बर सम्प्रदायमें सूत्रके मुख्य भेद वाचीस है । उनके अठासी भेदोंकी सूचना समवायोंमें इस प्रकार दी गई है—

इच्चेयाह वाचीस सुत्ताह छिण्णछेअणइआह ससमय-सुत्तपरिवादीए, इच्चेआह वाचीस सुत्ताह अछिण्णछेअणइयाह आजीवियसुत्तपरिवादीए । इच्चेआह वाचीस सुत्ताह तिक-णइयाह तेरायियसुत्तपरिवादीए, इच्चेआह वाचीस सुत्ताह चउक्कणइयाह ससमयसुत्तपरिवादीए । पुनमेव म्पुञ्जावरणे अट्टासीदि सुत्ताह भवतीति मक्कयाह ।

यहां जिन चार नयोंकी अपेक्षासे वाचीस सूत्रोंके अठासी भेद हो जाते हैं, उनका स्पष्टीकरण टीकामें इसप्रकार पाया जाता है—

पुतानि किल ऋजुनादीनि द्वाविंशति सूत्राणि, तान्येव त्रिभागातोऽष्टातीतिर्भवन्ति । कथम् ? उच्यते—‘ इच्चेइयाह वाचीस सुत्ताह छिक्क्रेयनइयाह ससमयसुत्तपरिवादीए’ इति । इह यो नयः सूत्रं छिक्क्रेदेनेच्छति स छिक्क्रेद्वन्द्वयो, यथा ‘ धम्मो मगलसुक्किट्ठ’ इत्यादि श्लोक सूत्रार्थतः प्रत्येकछेदेन स्थितो न द्वितीयादिश्लोकमपेक्षते, प्रत्येककल्पितपर्यन्त इत्यर्थः । पुतान्येव द्वाविंशति ससमयसूत्रपरिपाठ्या सूत्राणि स्थितानि । तथा इत्येतानि द्वाविंशति सूत्राणि अछिक्क्रेद्वन्द्वनयान्याजीविनसूत्रपरिपाठ्या अयमर्थः — इह यो नयः सूत्रमच्छिक्क्रेदेनेच्छति सोऽछिक्क्रेद्वन्द्वयो यथा, ‘ धम्मो मगलसुक्किट्ठ’ इत्यादि श्लोक एवार्थतो द्वितीयादिश्लोकमपेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योऽन्यसापेक्षा इत्यर्थः । पुतानि द्वाविंशतिराजीविकगोशालकप्रवर्तितपाखटसूत्रपरिपाठ्या अक्षररचनाविभागास्थितान्यन्यार्थतोऽन्योन्मपेक्षमाणानि भवन्ति । ‘ इच्चेयाह’ इत्यादिसूत्रम् । तत्र तिकणइयाह ति नमत्रिकाभिप्रायतश्चिन्यन्त इत्यर्थः कैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति । तथा ‘ इच्चेयाह’ इत्यादिसूत्रम् । तत्र ‘ चउक्कणइयाह’ इति

नयचतुष्काभिप्रायतश्चिन्यन्त इति भावना, एवमेवेत्यादिसूत्रम् । एव चतनो द्वाविंशतयोऽष्टागतिः सूत्राणि भवन्ति ।

इस निवरणसे ज्ञात होता है कि उपर्युक्त वाचीस सूत्रोंका चार प्रकारसे अध्ययन या व्याख्यान किया जाता था । प्रथम परिपाटी छिक्क्रेद्वन्द्वनय कहलाती थी जिसमें सूत्रगत एक एक वाक्य, पद या श्लोकका स्वतंत्रतासे पूर्णपर अपेक्षारहित अर्थ लगाया जाता था । यह परिपाटी स्वसमय अर्थात् जैनियोंमें प्रचलित थी । दूसरी परिपाटी अछिक्क्रेद्वन्द्वनय थी जिसके अनुसार प्रत्येक वाक्य, पद या श्लोकका अर्थ आगे पीछेके वाक्योंसे संबंध लगाकर ब्रैठाया जाता था । यह परिपाटी आजीविक सम्प्रदायमें चलती थी । तीसरा प्रकार त्रिकूनय कहलाता था जिसमें द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक और उभयार्थिक व जीव, अजीव और जीवाजीव आदि उपर्युक्त त्रि-आत्मक व त्रिनय रूपसे वस्तुस्वरूपका चिन्तन किया जाता था । पूर्वोक्तानुसार यह परिपाटी आजीवकोंकी थी । तथा जो वस्तुचिन्तन पूर्वोक्तित चार नयोंकी अपेक्षासे चलता था यह चतुर्नय परिपाटी कहलाती थी और वह जैनियों की चीज थी । इस प्रकार निरपेक्ष शब्दार्थ और चतुर्नय चिन्तन, ये दो परिपाटियां जैनियोंकी और सापेक्ष शब्दार्थ तथा त्रिकूनय चिन्तन, ये दो परिपाटियां आजीविकोंकी मिलकर वाचीस सूत्रोंके अठासी भेद कर देती थीं । आजीविक ज्ञानशैलीकी जैनियोंने क्रिमप्रकार अपने ज्ञानभंडारमें अन्तर्भूत कर लिया यह यहां भी प्रकट हो रहा है ।

दिगम्बर सम्प्रदायमें सूत्रोंके भीतर प्रथम जीवका नामा दृष्टियोंसे अध्ययन और फिर दूसरे अनेक वादोंका अध्ययन किया जाता था, ऐसा कहा गया है । इन वादों में तेरासिय मतका उल्लेख सर्व प्रथम है जिससे तालपर्यं वैराशिक-आजीविक सिद्धान्तसे ही है, जो जैन सिद्धान्तके सबसे अधिक निकट होनेके कारण अपने सिद्धान्तके पश्चात् ही पड़ा जाता था । चतुर्नय सूत्रके ८८ अधिकारोंका उल्लेख है जिनमेंसे केवल चारके नाम दिये हैं । जयधवलमें स्पष्ट कहा दिया है कि उन ८८ अधिकारोंके अत्र नामोंका भी उपदेश नहीं पाया जाता । किन्तु जो कुछ वर्णन दिगम्बर सम्प्रदायमें शेष रहा है उसमें विशेषता यह है कि वह उन द्वा प्रयोगोंके विषयपर बहुत कुछ प्रकाश डालता है, अन्ताम्बर श्रुतमें केवल अधिकारोंके नाममात्र शेष हैं जिनसे प्रायः अत्र उनके विषयका अंदाज लगाना भी कठिन है ।

पुत्रवर्णनके १४ भेद तथा उनके अन्तर्गत चतुर्थ और चूलिका

१. उपाय (१० वचन + ४ चूलिका)
२. अगाणीय (१४ वचन + १२ चूलिका)
३. वीरिअ (८ ” + ८ ”)
४. अयिणयिपवाय (१८ + १०)

पुत्रवर्णनके १४ भेद तथा उनके अन्तर्गत चतुर्थ

१. उपाय (१० वचन)
२. अगाणीय (१४ वचन)
३. वीरियणुपवाद (८ ”)
४. अयिणयिपवाद (१८ ”)

| | | | |
|--------------------|------------|-----------------|------------|
| ५. नागपत्राय | (१२ वय्) | ५. गणपवाद् | (१२ वय्) |
| ६. मन्त्रपत्राय | (२ ") | ६. सच्यपवाद् | (१२ ") |
| ७. आगपत्राय | (१६ ") | ७. आदपवाद् | (१६ ") |
| ८. कर्मपत्राय | (३० ") | ८. क्रमपवाद् | (२० ") |
| ९. पञ्चसंवागपत्राय | (२० ") | ९. पञ्चकलाण | (३० ") |
| १०. विज्ञापपत्राय | (१५ ") | १०. विज्ञापवाद् | (१५ ") |
| ११. अग्न | (१२ ") | ११. कलाणवाद् | (१० ") |
| १२. पाणाक | (१३ ") | १२. पाणावायं | (१० ") |
| १३. किरियासिख | (२० ") | १३. किरियासिख | (१० ") |
| १४. लोकविदुसार | (२५ ") | १४. लोकविदुसार | (१० ") |

इष्टिवाद् के इस विभागका नाम पूर्व स्त्री पड़ा, इसका समाधान समवायाग व नन्दीसूत्रकी टीकाओंमें उपप्रकार किया गया है—

अथ कि तत् पूर्वगत ? उच्यते । अस्मात्तीर्थकर तीर्थप्रवर्तनाकाले गणधराणा सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्णपूर्वगत सूत्रां आपते तस्मान् पूर्वगीति मणितानि । गणधरा पुन श्रुतरचना विदधाना आचारादि-प्रयोग समन्ति स्थापयन्ति च । मतान्तरेण तु पूर्वगतसूत्रार्थे, पूर्वमहंता भाषितो गणधरेरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्व रथि, पञ्चाराचारादि । तन्नेव यदाचारान्युत्थयामिहित 'सर्वोसि आयारो परमो' इत्यादि, तत्कथम् ? उच्यते । तत्र स्थापनामाश्रित्य तथोक्तमित्थं तदक्षररचना प्रतीय मणित पूर्ण पूर्वगीणि कृतानीति ।

(समवायाग टीका)

इसका कारण यह है कि तीर्थप्रवर्तनके समय तीर्थकर अपने गणवर्षोंको सबसे प्रथम पूर्वगत न्यायता ही व्याख्यान करते हैं, इससे इन्हें पूर्वगत कहा जाता है । किन्तु गणधर जब श्रुती प्रारचना करते हैं तब वे आचारादिक्रमसे ही उनकी रचना व व्यवस्था करते हैं, और अभी स्थापनाकी रथिमें आचाराणकी निर्युक्तिमें यह बात कही गई है कि सब श्रुतागोंमें आचाराग प्रथम । यथापनः अक्षररचनानी इष्टिसे पूर्व ही पहले बनाने गये ।

एत आधुनिक मत यह भी है कि पूर्वोंमें महावीरस्वामिसि पूर्व और उनके समयमें प्रचलित मत-मनान्तरोंका वर्णन किया गया था, इस कारण वे पूर्व कहलये ।

चौदह पूर्वोंके नामोंमें दोनों सम्प्रदायोंमें कोई विवेग भेद नहीं है, केवल ग्याहवें पूर्वकी रचना 'अग्न' कहते हैं और दिगम्बर 'कलाणवाद्' । अतएव जो अर्थ टीकाकारने अवयव 'सफल' नतलागा है वह 'तन्प्राण' के शब्दार्थके निकट पहुंच जाता है, इससे समभवतः यह उनके विषयभेदका मोतक नहीं है । अतएव, आठवें, नवमें और ग्याहसे चौदहवें तक इस

प्रकार सात पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओंकी सख्यामें दोनों सम्प्रदायोंमें मतभेद है । शेष सात पूर्वोंकी वस्तु-सख्यामें कोई भेद नहीं है । श्रुताम्बर मान्यतामें प्रथम चार पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओंके अतिरिक्त चूलिकाओंकी सख्या भी दी गई है, और दृष्टिवादके पचमभेद चूलिकाके वर्णनमें कहा है कि वहा उन्ही चार पूर्वोंकी चूलिकाओंसे अभिप्राय है । यदि ये चूलिकाए पूर्वोंके अन्तर्गत थीं, तो यह समझमें नहीं आता कि उनका फिर एक स्वतंत्र विभाग क्यों रखा गया । दिगम्बरीय मान्यतामें पूर्वोंके भीतर कोई चूलिकाए नहीं गिनायी गई और चूलिका विभागके भीतर जो पाच चूलिकाए वतलायी है उनका प्रथम चार पूर्वोंसे कोई संबंध भी ज्ञात नहीं होता ।

समवायाग और नन्दीसूत्रमें पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओं और चूलिकाओंकी सख्या-पूचक निम्न तीन गथाए पाई जाती है—

दस चोहस अट्टारसेव वारस दुये य वय्युणि ।
सोलस तीसा वीसा पणगरस अणुपवायमि ॥ १ ॥
वारस पृक्कारसमे वारसमे तेरसेव वय्युणि ।
तीसा पुण तेरसमे चउदसमे पन्नवीसाओ ॥ २ ॥
चत्तारि दुवालस अट्ट चैव दस चैव चूलपय्युणि ।
आइहाण चउणह सेसाण चूलिया णथि ॥ ३ ॥

धवलमें (वेदनाखडके आदिमें) पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओं और वस्तुओंके अन्तर्गत पाहुडोंकी सख्याकी द्योतक निम्न तीन गथाए पाई जाती है—

दस चोहस अट्टारस (अट्टारस) वारस य दोसु कुओसु ।
सोलस वीस तीस दसममि य पणगरस वय्यु ॥ १ ॥
पुदेसि पुव्वाण पुवद्विओ वय्युसगहो भण्णिदो ।
सेसाण पुव्वाण दस दस वय्यु पणिवयामि ॥ २ ॥
पुदेकग्गिह य वय्यु वीस वीस च पाहुडा भण्णिदा ।
विमम-समा हि य वय्यु मओ पुण पाहुडेहि ममा ॥ ३ ॥

इनके अंक भी वलमें दिये हुए हैं जिन्हें हम निम्न तालिकाद्वारा अच्छीतरह प्रकट कर सकते हैं ।

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|
| पूर्व | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | कुल |
| वय्यु | १० | १४ | ८ | १८ | १२ | १० | १६ | २० | ३० | १५ | १० | १० | १० | १० | १९५ |
| पाहुड | २०० | २८० | १६० | ३६० | २४० | ३२० | ४०० | ३२० | ६०० | ३०० | २०० | २०० | २०० | २०० | ३९०० |

गन्व-वय्यु-समामो पवाणउट्टिमदमेत्तो १९५ ।

गन्व-पाहुड-समामो ति-सहस्र-गण-मट-मेत्तो ३९०० ।

जयधवलामे यह भी बतलाया गया है कि एक एक पाहुडके अन्तर्गत पुनः चौबीस अनुयोगद्वार थे । यथा—

पदेसु अथाहियारसु पुरेकस्स अथाहियारस्स वा पाहुडसण्णिदा वीस वीम अथाहियारा । वेमि पि अथाहियाराण पुरेकस्स अथाहियारस्स चउवीस चउवीस अणिओगद्वाराणि सण्णिदा अथाहियारा ।

इससे स्पष्ट है कि पूर्वोक्ते अन्तर्गत वस्तु अविकार थे, जिनकी सन्त्या किसी विशेष नियमने नहीं निश्चित थी । किन्तु प्रत्येक वस्तुके अवान्तर अविकार पाहुड कहलाते थे और उनको सख्या प्रत्येक वस्तुके भीतर नियमतः वीस वीस रहती थी और फिर एक एक पाहुडके भीतर चौबीस चौबीस अनुयोगद्वार थे । यह विभाग अब हमारे लिये केवल पूर्वोक्ती विशालता मात्रा जोतक है क्योंकि उन वस्तुओं और उनके अन्तर्गत पाहुडोंके अब नाम तक भी उपलब्ध नहीं है । पर इन्हीं ३९०० पाहुडोंसे केवल दो पाहुडोंका उद्धार पदखंडागम और कसायापाहुड (धवला और जयधवला) में पाया जाता है जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा । उनसे और उनकी उपलब्ध टीकाओंसे इस साहित्यकी रचनाशैली व कयनोपकयन पद्धतिका बहुत कुछ परिचय मिलता है ।

चौदह पूर्वोक्ता विषय व परिमाण

- १ उप्पादपुब्बं—तत्र च सर्वद्वयाणा पर्ययाणा चोत्पादभावमगीद्वल्य प्रज्ञापना कृता । (१०००००००)
 - २ अग्गेणीयं—तत्रापि सर्वेषा द्रव्याणा पर्य-वाणा जीवविशेषाणा चाप्र परिमाण वर्णते । (९६०००००)
 - ३ वीरियं—तत्रायज्जीवाना जीवाना च ससुं-तराणा वीर्यं प्रोच्यते । (७०००००००)
 - ४ अस्थिणत्थिपवादं—यद्यल्लोके ययास्ति यथा वा नास्ति, अथवा स्याद्वादाभिप्रायतः तदे-वास्ति तदेव नास्तीतिव प्रवदति । (६०००००००)
 - ५ गाणपवादं—तरिमम् मतिज्ञानादिपचकस्य भेदप्ररूपणा यस्माद्धता तस्मात् ज्ञानप्रवाद । (९९९९९९९९)
- १ चौदह पूर्वोक्ता विषय व पदसंख्या
 - २ उप्पादपुब्बं जीव-काल-योगलाणमुप्पाद-वय-धुवत्त वर्णेइ । (१०००००००)
 - ३ अग्गेणीयं अगाणमग वर्णेइ । अंगाणमग-पद वर्णेदि ति अग्गेणिय गुणणम । (९६०००००)
 - ४ वीरियाणुपवादं अप्परिय पपरिय उम-यविय खेतत्रिय भवविय तवत्रिय वर्णेइ । (७००००००)
 - ५ अस्थिणत्थिपवादं जीवाजीना अस्थि-णत्थित वर्णेदि । (६०००००००)
 - ६ गाणपवादं पंच गाणाणि तिणि अणा-णाणि वर्णेदि । (९९९९९९९९)

- ६ सच्चपवादं—सल मयम सलमचन वा तयत्र सभेद मप्रतिपन्न च वर्णते नसल-प्रवादम् । (१०००००००६)
- ७ आदपवादं—आमा अनेकवा वा नयदर्शन-वर्णते तदामप्रवाद । (२६०००००००)
- ८ कम्मपवादं—जानावरणादिकमथनिच ऊने प्रवृत्तिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभिर्भेदस्येश्रोत्तगे-त्तरभेदेयं वर्णते त कम्मप्रवादम् । (१८००००००)
- ९ पचसखाणं—तत्र सर्वे प्रयात्तानव्यस्य वर्णते । (८४००००००)
- १० विजाणुवादं—तत्रानेके विद्याविद्या नणिताः । (११०००००००)
- ११ अवंज्जे—वच्य नाम निष्कलम्, न वच्य-वच्य सकलमित्यर्थः । तत्र हि सर्वे ज्ञानतप-सयमयोगाः शुभफलेन समला वर्णन्ते, अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे अधुमफला वर्णन्ते, अतोऽवच्यम् । (२६०००००००)
- १२ पाणावायं—तत्राप्यायु-प्राणविमान सर्वे सभेदस्ये च प्राणा वर्णिताः । (१५६००००००)
- ६ सच्चपवादं—वागुनि- वासस्कारकारा-प्रयोगो द्वावसाम भाषामकारश्च अनेक-प्रकार मृताभिधान दशप्रकारश्च सय-नराभो न निरहितसमप्रवादम् । (१०००००००६)
- ७ आदपवादं आद जणेदि जेदि वा निष्क-त्ति वा भंलेत्ति वा दुदेनि वा इच्चादिसल-नेण । (२६००००००००)
- ८ कम्मपवादं अट्ठमिह कम्म जणेदि । (१८०००००००)
- ९ पचसखाणं दृग्म-भा-परिमिनापरिमि-व-पचसखाण उगात्तमिहि पच समिदीओ निणि गुत्तीओ च पहेवेदि । (८४००००००)
- १० विजाणुवादं अगुअसेनादीना अल्पविद्याना सशतानि रोहिष्यादीना महाविद्याना पञ्च-शतानि अन्तरिक्ष-भोगात्तस्वर-त्वाम-लक्षण-व्यजनछिन्नायथौ महानिमित्तानि च कथयति । (११०००००००)
- ११ कल्याणं रति-शशि-नञ्ज-ताराणाना चारोपपाद-गति-त्रिपर्ययफलाणि शकुन-व्याप्तमर्द्धलदेव-वासुदेव-चक्ररादीना गर्भान्तरणारिमहात्तस्याणानि च कथयति । (२६०००००००)
- १२ पाणावायं कायचिकित्सायद्यगमायुर्दे-भृत्कर्म जायुलिप्रकृत प्राणापानविभागं च विस्तरेण कथयति । (१३०००००००)

१३ किरियाविसालं-तल कायिस्यादय.क्रिया १३ किरियाविसालं लेखादिका द्वासततिकलाः
विशात्र नि सभेदा संयमक्रिया छन्दक्रिया-
निधानानि च वर्णन्ते ।
(९००००००००)

१४ लोकविंदुसारं-तथास्मिन् लोके श्रुतलोके १४ लोकविंदुसारं अष्टौ व्यवहारान् चत्वारि
वा विन्दुरिवाश्वरस्य सर्वोत्तममिति, सर्वाश्वर-
सन्निपातप्रतिष्ठितलेन च लोकविंदुसारं
भणितम् । (१२५०००००००)

पूर्वोक्ते अन्तर्गत विषयोंकी सूचना समवायाग व नन्दीसूत्रोंमें नहीं पायी जाती, वहां केवल नाम ही दिये गये हैं। विषयकी सूचना उनकी टीकाओंमें पायी जाती है। उपर्युक्त श्वेताश्वर मान्यताका विषय समवायाग टीकासे दिया गया है। उस परसे ऐसा ज्ञात होता है कि यहां विषयका अंदाज बहुत कुछ नामकी व्युत्पत्ति द्वारा लगाया गया है। ध्वलान्तर्गत विषय-सूचना कुछ विशेष है। पर विषयनिर्देशोंमें शब्दभेदकी छोड़ कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है। अन्य और कल्याणवादमें जो नामभेद है, उसीप्रकार विषयसूचनामें भी कुछ विशेष है। यन्त्रोंमें उससे अन्तर्गत फलित ज्योतिष और शकुनशास्त्रका स्पष्ट उल्लेख है जो अवश्यके विषयमें नहीं पाया जाता। उसी प्रकार वारहवें प्राणवायु पूर्वोक्ते भीतर धवलमें कायचिकित्सादि अष्टांगयुर्वेदकी सूचना स्पष्ट दी गई है, वैसी समवायाग टीकाओंमें नहीं पायी जाती। वहां केवल 'आयुषणविधान' कहकर छोड़ दिया गया है। तेरहवें क्रियाविशालमें भी धवलमें स्पष्ट कहा है कि उसके अन्तर्गत लेपादि बहुर अर्थों, चौसठ वी कलाओं और जिलोंका भी वर्णन है। यह समवायाग टीकाओंमें नहीं पाया जाता।

पदप्रमाण दोनों मान्यताओंमें तेरह पूर्वोक्ता तो ठीक एकसा ही पाया जाता है, केवल वारहवें पूर्व प्राणवायुकी पदसंख्या दोनोंमें भिन्न पाई जाती है। धवलके अनुसार उसका पदप्रमाण तेरह कोटि है वन कि समवायाग और नन्दीसूत्रकी टीकाओंमें एक कोटि छप्पन लाख (९५५ कोटी गट्पञ्चाशच्च परश्चाणि) पाया जाता है।

प्रथम नं प्राणोक्ता विषय तो अव्यात्मत्रिया और नीति-सदाचारसे सबंध रखता है किन्तु आगेके त्रियाद्युपादि प्राण पूर्वोमें मन्त्रत्र व कला कौशल शिष्य आदि लौकिक विद्यार्थोंका वर्णन था, ऐसा प्रतीत होता है। इसी विशेष भेदको लेकर दशपूर्वों और चौदहपूर्वों का अलग अलग प्रमाण प्राप्त है। नालोके वेदनाखंडके आदिमें जो मंगलाचरण है वह स्वयं इन्द्रभूति का मंगल रहस्य और महाकर्ममदिपाटुके आदिमें उनके द्वारा निबद्ध कहा गया है। वहींसे

उत्पाकर उसे भूतबलि आचार्यने जैसाका तैसा वेदनाखंडके आदिमें रख दिया है, ऐसी धवल-कारकी सूचना है। इस मंगलाचरणमें ४४ नमस्कारात्मक सूत्र या पद है। इनमें वारहवें और तेरहवें सूत्रोंमें क्रमसे दशपूर्वियों और चौदह पूर्वियोंको अलग अलग नमस्कार किया गया है, जिसके रहस्यका उद्घाटन धवलकारने इसप्रकार किया है—

गमो दसपुंब्बियाणं ॥ १२ ॥

एष्य दसपुंब्बिणो भिण्णाभिण्णेएण दुविहा होति । तथ्य एक्कारसगणि पडिज्जण पुणो परियम्म-सुत्तपडमाणियोएण्वंगयचूलयां ति पंचहियारणिबद्धदिट्ठिवादे पडिज्जमाणे उप्पयपुंब्बमादि कादूण पदत्तण दंसपुंब्बीविजापवादे समत्ते रोहिणी-आदिपचसयमहाविजाई अणुट्ठपेणदिसत्तसयदहरविजाहि अणुगयाओ कि भयव भाणववति उक्कति । एव उक्कण सव्वविजाण जो लोभो गच्छदि सो भिण्णदसपुंब्बी । जो पुण ण तासु लोभ करेदि कम्मकखथी होतो सो अभिण्णदसपुंब्बी नाम । तथ्य अभिण्णदसपुंब्बीविण्णण गमो-क्कार करेमि ति उत्त होदि । भिण्णदसपुंब्बीण कथ पडिणिगिविची ? जिणसदणुववचीदो, ण च तेसिं जिणत्तमथि, भंगमहव्वपुसु जिणत्ताणुववचीदो ।

गमो चौदसपुंब्बियाणं ॥ १३ ॥

जिणाणमिदि एथाणुवट्ठे । सयलसुदणणघारिणो चौदसपुंब्बिणो, तेसिं चौदसपुंब्बीण जिणाण गमो इदि उत्त होदि । सेसहेट्ठिमपुंब्बीण गमोक्कारो किण्ण कदो ? ण, तेसिं पि कदो चैव तेहि विणा चौदसपुंब्बी-णुववचीदो । चौदसपुंब्बस्सेव णामणिहेस कादूण किमट्ट गमोक्कारो करेदे ? विजाणुपवाटस्स समत्तीए इव चौदसपुंब्बसमत्तीए ति जिणवयणपचयदसणादो । चौदसपुंब्बसमत्तीए को पच्चओ ? चौदसपुंब्बीणि समा-णि रति काउत्सगणे ट्ठिट्ठस्स पहाट्समए भवणवासियवाणवेंतरजोदिसियकप्पवांसिययेवेहि कयमहापजा संखमाहलारखसकुला । होट्टु एट्ठेसु दोसु ट्ठणेषु जिणवयणपच्चओवलभो, जिणवयणत्त पडि सन्नपुंब्बीणि समाणाणि ति तेसिं सब्बेसि णामणिहेस काऊण गमोक्कारो किण्ण कदो ? ण, जिणवयणत्तणेण मव्वमपुंब्बवि-सरिसत्ते सत्ते ति विजाणुपवाटलोविंदुसारण महलत्तमथि, एष्येव देवपूजोवलभादो । चौदसपुंब्ब-मिच्छत्त ण गच्छदि तमिह भवे असज्जम च ण पडिक्कज्जदि, एसो एदस्स विस्सेमो ।

यहां धवलकारने दशपूर्वियों और चौदहपूर्वियोंको अलग अलग नामनिर्देशपूर्वक नमस्कार किये जानेका कारण यह बतलाया है, कि जब श्रुतपाठी आचारादि ग्यारह श्रुतोंको पट चुकता है और दृष्टिवादके पाच अधिकारोंका पाठ करते समय क्रमसे उत्पादादि पूर्व पटता हुआ दशम पूर्व विद्यानुवादको समाप्त कर चुकता है, तब उससे रोहिणी आदि पाच सौ महाविद्याएँ और अणुप्रसेणादि सात सौ अल्प विद्याएँ आकर पृथ्वी है 'हे भगवन्, क्या आज्ञा है' ? इसप्रकार सब विद्यार्थोंके प्राप्त हो जानेपर जो लोभसे पट जाता है वह तो भिन्नदशपूर्वी कहलाता है, और जो उनके लोभसे न पटकर कर्मक्षयार्थी बना रहता है वह अभिन्नदशपूर्वी होता है। ये अभिन्नदशपूर्वी ही 'जिन' सत्ताको प्राप्त करते हैं और उन्हींको यहां नमस्कार किया गया है। किन्तु जो महाव्रतोंका भग कर देनेसे जिनसत्ताको प्राप्त नहीं कर पाते उन्हें यहां नमस्कार नहीं किया गया।

आगे यह प्रश्न उठाया गया है कि जब दश और चौदह पूर्वियोंको अलग अलग नमस्कार किया तब बीचके ग्यारहपूर्वी, बारहपूर्वी और तेरहपूर्वियों को भी क्यों नहीं पृथक् नमस्कार किया। इसका उत्तर दिया गया है कि उनको नमस्कार तो चौदहपूर्वियोंके नमस्कारमें आ ही जाता है, पर जैसा जिनवचनप्रत्यय विद्यानुवादकी समाप्तिके समय देखा जाता है वैसा ही चौदहपूर्वियोंकी समाप्तिपर पाया जाता है। जब चौदहपूर्वियोंको समाप्त करके रात्रिमें श्रुत-केवली कायोत्सर्गसे विराजमान रहते हैं तब प्रभात समय भवनवासी, बाणव्यतर, ज्योतिषी, और कल्पवासी देव आकर उनकी शखर्दकी साय महापूजा करते हैं। इसप्रकार यद्यपि जिनवचनत्वकी अपेक्षासे सभी पूर्व समान है, तथापि विद्यानुप्रवाद और लोकाविन्दुसारका महत्त्व विशेष है, क्योंकि यहाँ देवोंद्वारा पूजा प्राप्त होती है। दोनों अवस्थाओंमें विशेषता केवल इतनी है कि चतुर्दशपूर्वधारी फिर मिथ्याचर्म नहीं जा सकता और उस भवमें असयमको भी प्राप्त नहीं होता।

इससे जाना जाता है कि श्रुतपाठियोंकी विधा एक प्रकारसे दशम पूर्वपर ही समाप्त हो जाती थी, वहीं वह देवपूजाको भी प्राप्त कर लेता था और यदि लोभमें आकर पथभ्रष्ट न हुआ तो 'जिन' सज्ञाका भी अविकारी रहता था। इससे दिगम्बर सम्प्रदायमें दृष्टिवादके प्रथमानुयोग नामक विभागको पूर्वगतसे पहले रखने की सार्थकता भी सिद्ध हो जाती है। यदि पूर्वगतके पश्चात् प्रथमानुयोग रहा तो उसका तात्पर्य यह होगा कि दशपूर्वियोंको उसका ज्ञान ही नहीं हो पायगा। अतएव इस दशपूर्वियोंकी मान्यताके अनुसार प्रथमानुयोगको पूर्वोंसे पहले रखना बहुत सार्थक है। आगेके शेष पूर्व और चूल्काए लौकिक और चमत्कारिक विधाओंसे ही संबन्ध रखती हैं, वे आत्मशुद्धि बढ़ानेमें उतनी कार्यकारी नहीं हैं, जितनी उसकी दृढताकी परीक्षा करानेमें है।

भिन्न और अभिन्न दशपूर्वियोंकी मान्यताका निर्देश नदीसूत्रमें भी है, यथा—

‘इहोत्तद् द्वादशाग गणित्पिडग चोत्सुपुन्रित्स सम्मसुअ अभिण्णदसुपुन्रित्स सम्मसुअ, तेष पर भिण्णसु भयणा से त सम्मसुअ’ (सू. ४१)

टीकाकारने भिन्न और अभिन्न दशपूर्वियोंका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है—

‘इहोत्तद् द्वादशाग गणित्पिडक यश्चतुर्दशपूर्वा तस्य सम्मसुअपि मामापिकादि त्रिन्दुगार-पर्यवसान नियमात् सम्यक् श्रुत। ततो अथोत्सुखपरिहास्या नियमत्। सर्वं सम्यक् श्रुत तावद् वक्तव्य यावदभिन्नदश-पूर्विण-सम्पूर्णदशपूर्वधरस्य। सम्पूर्णदशपूर्वधरत्वादिक हि नियमत सम्यग्दृष्टेरथ, न सिष्यादृष्टे, तथा स्वाभा-व्यात्। तथाहि, यथा अभव्यो ग्रथिदेवसुपागतोऽपि तथा स्वभावरयात् न ग्रथिदेवमाथातुमलम्, परं सिष्या-दृष्टिरपि शुक्तमवगाहमान. प्रकर्यतोऽपि तावदवगाहते यावद्विश्रन्त्यूनानि दशपूर्वाणि भवन्ति, परिपूर्णानि च तानि नावगाहं शक्नोति तथा स्वमात्रत्वादिति।’ इत्यादि

उसका तात्पर्य यह है कि जो सम्मदृष्टि होता है वह तो दश पूर्वोंका अग्रमन कर लेता है और आगे भी बढ़ता जाता है, किन्तु जो सिष्यादृष्टि होता है वह कुछ कम दश पूर्वोंतक तो बढ़ता जाता है, किन्तु वह दशमेंको भी पूरा नहीं कर पाता। इसका उदाहरण उन्हेनि एक अभव्यका दिया है जो किसी ग्रथि-देशपर आजानेसे उस ग्रथिका भेदन नहीं कर पाता। पर टीकाकारने यह नहीं बतलाया कि कुछ कम दशों पूर्वमें श्रुतपाठों कीनसी ग्रंथि पाकर रुक जाता है और उसका भेदन क्यों नहीं कर पाता।

अनुयोगके दो भेद

१. मूलपदमानुयोग

२. गणिआनुयोग

मूलप्रथमानुयोगका विषय

अरहंताण भगवताणं पुत्र्यभवा देवगमणाइ आउ-चवणाइ जम्माइ अभिसेआ रायरसिरीओ पन्न-ज्ञाओ तवा य उग्गा केवलनाणुपपयाओ तिप-पवत्तणाणि सीसा गणा गणहरा अन्नपमत्तिणोओ सवस्स चउच्चिहस्स ज च परिमाण विण मण पन्नव आहिनाणी सम्मत्त सुअनाणिणो वाई अणुत्तराई उच्चवेउच्चिणो मुणिणो जत्तिआ सिद्धा सिद्धावहो जह्देसिओ जच्चिरं च माल पाओनगया वे जेहिं जात्थियाइ भत्ताइ डेउत्ता अतगडे मुणिवरुत्तमे तमओषरिण्णमुक्के सुत्तल-सुहमणुत्तरं च पत्ते एवमने अ एवमाइभारा मूलपदमानुओमे कहिआ।

गंडिआनुयोग

गंडिआनुओगे कुल्लार-तिययर-चक्कट्टि-दसार-वलदेव-वासुदेव-गणधर-भद्रवाट्ट-तवोक्कम-हरिविस-उस्सप्पिणी-चित्तर अमर-नर-तिरिय-निरय-गद्ग-मण-विविहपरियट्टणेसु एवमाइआओ गडिआओ आषरिज्जति पण्णरिज्जति।

श्रेतान्तर सम्प्रदायमें दृष्टिवादके चौथे भेदका नाम अनुयोग है जिसके पुन दो प्रभेद होते हैं, मूलप्रथमानुयोग और गंडिआनुयोग। दिगम्बर सम्प्रदायमें प्रथमानुयोग ही दृष्टिवादका तीसरा भेद है। अनुयोगका अर्थ समन्यायों कीकामें इसप्रकार दिया है—

प्रथमानुयोगमा विषय
पडमणिओए चउच्चोस अयाहियारा तिययर-
पुराणेसु संबपुराणाणमनन्धामादो (नयधवला)
पडमणियोगो पच्च-सहस्सपदेहि (५०००)
पुराणं वल्लेदि। उत्तं च-

चारस्सिहं पुराण ज द्दिट्ठ जिणवरोहि सत्वेहि।
तं सच्चं वल्लेदि ह् जिणवसे-रायवसे य ॥ १ ॥
पडमो अरहताण निदियो पुण चक्कवट्टित्तो
दु। वि-ज्जाहराण तदियो चउत्तओ वासु-
देवाण ॥ २ ॥ चारणनमो तह पच्चमो दु ड्ढो य
पण्णसमणाण। सत्तमओ कुल्लवसो अट्टमओ तह
य हरित्तिसो ॥ ३ ॥ णवमो य इत्थक्काण दत्तमो त्रिय
कासियाण वोद्धव्यो। वाईणेकारत्तमो चारममो
णाहवसो दु ॥ ४ ॥

अनुसूचितानुष्ठानेन वा योगोऽनुयोग मृत्युमिज्जलाभिधेयं सार्वसमुत्पन्नं मृत्युमथ इत्यथ ।

अर्थात्—सूत्रद्वारा प्रतिपादित अर्थके अनुकूल सवयका नाम ही अनुयोग है । तात्पर्य यह कि विगमं सू। स्तुति सिद्धत या नियमोंके अनुकूल दृष्टान्त और उदाहरण पाये जायें वह अनुयोग है । उगैत दो भेद करनेका अभिप्राय नदीसूत्रकी टीकामें यह बतलाया गया है कि—

इह मूल धर्मप्रणयनात् तथैवमन्वेना प्रथमं मृत्युमथसिद्धक्षणपर्यन्तमादिगोचरोऽनुयोगो मूल-
गणमानुयोग । अत्रानेनात् प्रांशरसपरिचिन्तितो मृत्युमथो गण्डिका, गण्डिकेन गण्डिका, एकार्थधिकारा
प्रणयनपरिचयः । तस्या अनुयोगा गण्डिकानुयोग ।

इमंसा अभिप्राय यह है कि धर्मके प्रवर्तक होनेसे तीर्थकर ही मूल पुरुष हैं, अतएव उनका गणम अर्थात् सम्प्रदायप्रतिष्ठान पूर्वमेव आदिका वर्णन करनेवाला अनुयोग मूलप्रथमानुयोग है । और भेद गैके आदिकी गंडरी आज् नञ्जी गाँटोसे सीमित रहती है ऐसे ही जिसमें एक एक अविकार अलग अलग हो उसे गण्डिकानुयोग कहते हैं, जैसे कुलकरागण्डिका आदि । किन्तु यह विभाग कोई विशेष महत् नहीं रहता क्योंकि दोनोंमें विषयकी पुनरावृत्ति पायी जाती है । जैसे तीर्थकर और उनके गणशांता वर्णन दोनों विभागोंमें आता है । दिगम्बरोमें ऐसा कोई विभाग नहीं किया गया और साक सीधे तोलमे बतलाया गया है कि दृष्टिवादके प्रथमानुयोगमें चौबीस अत्रिहोद्वारा बाह्य विनयगाँ और राजसंज्ञा वर्णन किया गया है

गिम्बर सम्प्रदायमें प्रथमानुयोगता अर्थ इसप्रकार किया गया है—

प्रथम किन्वाद्यष्टिमतिमृत्युपन वा प्रतिपाद्यमात्रिय प्रवृत्तोऽनुयोगोऽधिकार प्रथमानुयोग
(गोमन्मट्टार टीका)

इसका अभिप्राय यह है कि 'प्रथम' का तात्पर्य अत्रती और अब्युपल मिथ्यादृष्टि विगसे है आर उसके त्रिंजिस अनुयोग की प्रवृत्ति होती है वह प्रथमानुयोग कहलाता है । इसीके भीतर सब पुराणाता अर्तभाप हो जाता है । किन्तु इसका पद-प्रमाण केवल पाच इतार बतलाया गया है । इससे जान पडता है कि दृष्टिवादके अन्तर्गत प्रथमानुयोगमें सर्व स्थापन मूल मन्त्रेणं किया गया था । पुराणवादका विस्तार पछे पछे किया गया होगा । नन्दिराकी टाकांमें गण्डिकानुयोगके अन्तर्गत चित्रान्तरगण्डिकाका बटा ही विचित्र आर विस्तृत परिचय दिया है । पहले उन्होंने बतलाया है कि—

' कुलस्यागा गण्डिका उदकरगण्डिका, नर उलकराणा विमलमाहनादीना पर्यन्तानन्मन्त्रीन
-अप्यजसुराण्यन्ते । एन तांशंरुमगिन्दिकादिनाभिधानयगतो भावनीय ' जान चित्ततरगण्डिकाउ ' चि ।

अर्थात् कुल सरगण्डिकांमि मृत्युवाहनादि कुलकरोंके पूर्वमेव जन्मादिका सविस्तर वर्णन किया गया है । उभीपक्षत तीर्थकरादि गण्डिकाओंमें उनके नामानुसार विषय वर्णन समझ लेना चाटिये

जहातक कि चित्रान्तरगण्डिका नहीं आती । फिर चित्रान्तरगण्डिकाका परिचय इस प्रकार प्रारम्भ किया गया है—

' चित्रा अनेकार्थी, अन्तरे ऋषभाजिततीर्थकरापान्तराले गण्डिकाः चित्रान्तरगण्डिका । एतदुक्त भवति—ऋषभाजिततीर्थरान्तराले ऋषभवशमसुदुभ्रुताभ्रुपतीना श्रेणगतिगमनव्युद्धानेन शिवागतिगमनानुत्त-
रोपपातप्रान्तिपादिना गण्डिकाश्रितान्तरगण्डिका । तासा च प्ररूपणा पूर्वाचारैरेवमकारि—इह सुबुद्धि-
नामा सगरचक्रवर्तिनो महामालोऽष्टापदपदवते सगरचक्रवर्तिसुतेभ्य आन्विलयश प्रवृत्तीना भगवत्प्रभयशजाना
भ्रुपतीनमेव सरयासात्यातुमपक्रमते स्म । आह च—

“ आङ्चनसाङ्गेण उसभस्स परपरान्तराङ्गेण ।

सयसुयाण सुबुद्धी इणमो सख परिकहेड ॥ १ ॥

आदित्यश प्रवृत्तयो भगवत्ताभेयवशजात्रिराण्डभरताद्वैमनुपाल्य पर्यन्ते पारसेश्वरी दीक्षामाभिवृत्त तत्रप्रभापन
यमलकर्मक्षय कृना चतुर्दश लक्षा निरन्तर सिद्धिमगमम् । तत एव सर्वार्थसिद्धौ, ततो भूयोऽपि चतुर्दश लक्षा
निरन्तर निर्वाणे, ततोऽप्येक सर्वार्थसिद्धे महाविमाने । एव चतुर्दशलक्षान्तरित सर्वार्थसिद्धावेकस्ताम-
कृत्यो यावत्तेऽप्येकका असत्येया भवन्ति । ततो भूयश्चतुर्दश लक्षा नरपतीना निरन्तर निर्वाणे, ततो दो
सर्वार्थसिद्धे । तत पुनरपि चतुर्दश लक्षा निरन्तर निर्वाणे । ततो भूयोऽपि दो सर्वार्थसिद्धे । एव चतुर्दश
लक्षा २ लक्षान्तरितो दो २ सर्वार्थसिद्धे तावद्वक्तव्यौ यावत्तेऽपि द्विक २ सत्येया असत्येया भवन्ति । एव
त्रिक २ सत्यादवगोऽपि प्रत्येकमसत्येयास्तावद्वक्तव्यौ यावत्निरन्तर चतुर्दश लक्षा निर्वाणे । तत पञ्चाशत्सर्वार्थ-
सिद्धे । ततो भूयोऽपि चतुर्दश लक्षा निर्वाणे । तत पुनरपि पञ्चाशत्सर्वार्थसिद्धे । एव पञ्चाशत्सत्येया अपि
चतुर्दश २ लक्षान्तरितास्तावद्वक्तव्यौ यावत्तेऽप्यसत्येया भवन्ति । उक्तं—

“ चोदय लस्या सिद्धा गिवड्ढेणो य होड सवाट्टे ।

एनेकेके ऋणे पुरिमजुगा होत्तिऽसरेऽजा ॥ १ ॥

पुनरपि चौदम लस्या सिद्धा निबड्ढेण दो नि सवट्टे ।

दुगठाणेऽपि अससा पुरिसजुगा होत्ति नायन्ना ॥ २ ॥

जान य लस्या चौदस सिद्धा पण्णाम होत्ति सवट्टे ।

पन्नामट्टणे वि उ पुरिमजुगा नेत्तिऽसरेऽजा ॥ ३ ॥

एगुत्तरा उ ऋणा सवट्टे चैत्र जान पन्नाया ।

एकेकत्तराणे पुरिमजुगा नेत्ति असरेऽजा ॥ ४ ॥

इत्यादि ।

इसका तात्पर्य यह है कि ऋषभ और अजित तीर्थकरोंके अन्तराल कालमें ऋषभ वशने जो राजा हुए उनकी और गतियोंको छोडकर केवल शिवगति और अनुत्तरोपपातकी प्राप्तिका प्रतिपादन करनेवाली गण्डिका चित्रान्तरगण्डिका कहलाती है । इसका पूर्वाचार्योंने ऐसा प्ररूपण किया है कि सगरचक्रवर्तीके सुबुद्धिनामक महामाल्यने अष्टापद पर्वतपर सगरचक्रकीके पुत्रोंको भगवान् ऋषभके वश आदित्यश आदि राजाओंकी संख्या इस प्रकार बताई—उक्त आदित्यश आदि नाभेयवशके राजा त्रिखड भर्तार्वका पालन करके अन्त समय पारसेश्वरी दीक्षा वारण कर उसके प्रभावसे सब कर्मोंका क्षय करके चौदह लाख निरन्तर क्रमसे सिद्धिको प्राप्त हुए और

अनन्तर एक सर्वार्थसिद्धिको गया। फिर चौदह लाख निरन्तर मोक्षको गये और पश्चात् एक फिर सर्वार्थसिद्धिको गया। इसीप्रकार क्रमसे वे मोक्ष और सर्वार्थसिद्धिको तबतक जाते रहे जबतक कि सर्वार्थसिद्धिमें एक एक करके असंख्य होगये। इसके पश्चात् पुनः निरन्तर चौदह चौदह लाख मोक्षको और दो दो सर्वार्थसिद्धिको तबतक गये जबतक कि ये दो भी सर्वार्थसिद्धिमें असंख्य होगये। इसीप्रकार क्रमसे फिर चौदह लाख मोक्षगामियोंके अनन्तर तीन तीन, फिर चार चार करके पचास तक सर्वार्थसिद्धिको गये और सभी असंख्य होते गये। इसके पश्चात् क्रम बढ़ल गया और चौदह लाख सर्वार्थसिद्धिको जाने के पश्चात् एक एक मोक्षको जाने लगा और पूर्वोक्त प्रकारसे दो दो फिर तीन तीन करके पचास तक गये और सब असंख्य होते गये। फिर दो लाख निर्वाणको, फिर दो लाख सर्वार्थसिद्धिको, फिर तीन तीन लाख। इस प्रकारसे दोनो ओर यह सत्या भी असंख्य तक पहुच गई। यह सब चित्रान्तरगण्डिकायें थीं—एकादिका एकोत्तरा, एकादिका द्बुत्तरा, आगे चार प्रकारकी और चित्रान्तरगण्डिकायें थीं—एकादिका एकोत्तरा, एकादिका द्बुत्तरा, एकादिका द्युत्तरा और त्र्यदिका द्ब्यादिविषयोत्तरा, जिनमें भी और और प्रकारसे मोक्ष और सर्वार्थसिद्धिको जानेवालोंकी सत्याएँ बतायीं गई थीं।

जान पड़ता है, इन सब संख्याओंका उपयोग अनुयोगके विषयकी अपेक्षा गणितकी भिन्न भिन्न धाराओंके समझानेमें ही अधिक होता होगा।

चूलिका

प्रथम चार पूर्वोकी चूलिकाएँ ही इसके अन्त-
र्गत है। उन चूलिकाओंकी संख्या ४+१+२+
८+१०=३३ है

पांच चूलिकाओंके अन्तर्गत विषय

- १ जलभाया—जलगमण—जलधमण—कारण-
मत—तत—तपच्छरणाणि वण्णेदि ।
- २ थलभाया—भूमिगमणकारण—मत—तत—तव-
च्छरणाणि वयुविज्ज भूमिसवधमणण पि सुहा-
सुहकारण वण्णेदि ।
- ३ मायाभाया—इदजाल वण्णेदि
- ४ रूवभाया—सीह—हय—हरिणादि—रूवायोरण
परिणमणहेदु—मत—तत—तवच्छरणाणि चित्त-
कट्ट—लेप्प—लेणकामादि लक्खण च वण्णेदि ।
- ५ आयासभाया— आगासमणणिमित्त—मत—
तत—तवच्छरणाणि वण्णेदि ।

श्रेताम्बर ग्रंथोंमें यद्यपि चूलिका नामका दृष्टिवादका पाचवा भेद गिना गया है, किन्तु उसके भीतर न तो कोई प्रथ वत्तये गये और न कोई विशेष, केवल इतना कह दिया गया है कि—

से कि त चूलिकाओ ? चूलिकाओ जाडह्माण चउण्ह पुग्माण चूलिका, मेयाड पुग्माण अचूलिकाड,
से त चूलिकाओ ।

अर्थात् प्रथम चार पूर्वोकी जो चूलिकाएँ बता आये हैं वे ही चूलिकाएँ, यहा गिन लेना चाहिये। किन्तु, यदि ऐसा है तो चूलिकाको पूर्वोका ही भेद रखना था, दृष्टिवादका एक अलग भेद बताकर उसका एक दूसरे भेदके अन्तर्गत निर्देश करनेसे क्या विशेषता आई ? फिर भी टीकाकार यह तो स्पष्ट बतलाते हैं कि दृष्टिवादका जो विषय परिकर्म, मूत्र, पूर्ण और अनुयोगमें अनुक्त रहा वह चूलिकाओंमें समग्र किया गया—

‘ इह चूला शिखरमुच्चते, यथा मेरो चूला । तत्र चूला उव चूला । दृष्टिवादे परिकर्म-मूत्र-पूर्वानुयोगेऽ
नुकार्थसग्रहपरा ग्रथपद्वयः । X X एताश्च सर्वस्यापि दृष्टिवादस्योपरि भिल स्थापितास्तथैव च पठ्यन्ते ।

(नन्दीस्मृत टीका)

इससे तो जान पड़ता है कि उन्हे पूर्वोके भीतर बतलानेमें कुछ गड़बड़ी हुई है।

दिग्म्बर मान्यतामें पूर्वोके भीतर कोई चूलिकाएँ नहीं दिखाई गईं। उसके जो पाच प्रभेद बतलाये गये हैं उनका प्रथम चार पूर्वोसे विषयका भी कोई सम्बन्ध नहीं है। वे जल, थल, माया, रूप और आकाश सम्बन्धी इन्द्रजाल और मन्त्र-तत्वामक चमकारका प्ररूपण करती हैं, तथा अन्तिम पांच पूर्वोके मन्त्रत्रात्मक विषयकी वाराको लिये हुए हैं। प्रत्येक चूलिकाकी पदसंख्या २०९८९२०० बतलाई है, जिससे उनके भारी विस्तारका पता चलता है।

अब यहा पूर्वोके उन अशोंका विशेष परिचय कराया जाता है जो धवला जयधवलाके भीतर प्रथित हैं और जिनकी तुलनाकी कोई सामग्री श्रेताम्बरीय उपर्युक्त आगमोंमें नहीं पायी जाती। इनकी रचना आदिका इतिहास संस्वरूपणा प्रथम जितदकी भूमिकामें दिया जा चुका है जिसका सारांश यह है कि भगवान् महावीरके पश्चात् क्रमशः अष्टाईस आचार्य हुए जिनका श्रुतज्ञान धीरे धीरे कम होता गया। ऐसे समयमें दो भिन्न भिन्न आचार्योंने दो भिन्न भिन्न पूर्वोके अन्तर्गत एक एक पाहुडका उद्धार किया। वरसेनाचार्यने पुण्यदंत और भूतवलिको जो श्रुत पढ़ाया उसपरसे उन्हेने द्वितीय पूर्व आयाणीके एक पाहुडका उद्धार सूत्ररूपसे किया। आप्रायणीपूर्वके अन्तर्गत निम्न चौदह ‘वस्तु’ नामक अविकार थे—पुन्वत, अवरत, बुध, अनुध, चयणलद्धी, अद्बुवम, पणिधिकप, अह, भौम्म, वयादिय, सव्वट्ट, कप्पणिजाण, अतीद-सिद्ध-वद्द और अणागय-सिद्ध-वद्द।

हम ऊपर बतला ही आये हैं कि पूर्वोकी प्रत्येक वस्तुमें नियमसे बीस बीस पाहुड रहते थे। आप्रायणी पूर्वोकी पचम वस्तु चयनलद्धिके बीस पाहुडोंमें चौथे पाहुडका नाम कम्मपयडी या महाकम्मपयडी अथवा वेयणकसिणपाहुड X था। इसीका उद्धार पुण्यदंत और भूतवलिके

X रम्माण पयाडिसव्व वण्णेदि, तेण कम्मपयडिपाहुडे चि शुणणाम । वेयणकसिणपाहुडे ति वि तस्म
बिदिय णाममथि । वयणा रम्माणमुदयो त कसिण णिरवसेम वण्णेदि अदो वेयणकसिणपाहुडमिदि एदमहि
शुणणाममेव (स. प १, पृ १२४, १२५)

सुगन्धस्य पद्मडागमके भन्तर किया । इम पाहुडके जो चात्रीस अवान्तर अविकार थे, उनके विषयका मयेप परिचय वात्राकास्ने वेदनाखडके आदिमें कराया है जो इस प्रकार है—

- १ कृति—कटीए ओगलिय-वेडखिय-वेजाहार-कमइयमरीराण संवाटण-परिमाटण-कडी-ओ भय-पट्यापटय-चरिमिमि डिदजीवाण कटि-गो-कृदि-अयत्तसगओ च परत्ति-नि ।
- २ वेदना—वेणाए कम्म-योगगयाणं वेदणा-मणियण वेदण-गिस्सेवादि-सोलसेहि अणि-योग-गेहि परत्तणा कीरे ।
- ३ फास—फामणिओग-शरमि कम्म-पोगलण जाणावरणादिभेण अइमेदमुवगयाण फास-गुणसन्धेण पत्त-फासणीमाण-फासिमले-यादि-गोलसेहि अणियोगररेहि परत्तणा कीरे ।
- ४ कम्म—कम्मसि अणियोगररे पोगलण जाणावरणादि-कम्मरुणस्वमसणेण पत्त-कम्ममग्गाण कम्मणिस्सेवात्तिसो-स्सेहि अणियोगररेहि परत्तणा कीरे ।
- ५ पयटि—पयटि नि अणियोगररदि-पोग-याण कटिदि-परत्ति-मयादाण वेदणाए पयटि-रयात्तिसि-मन्य-चयदीण फासिमि जिन्नि-वा-ताराणं पयडिणिस्सेवादि-सोलस-पणि-पेररेहि मारा-परत्तणा कीरे ।
- ६ वेदना—वेदना अर्थविकारमें वेदनासत्त्विक कर्मपुद्गलोंका वेदनानिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा वर्णन किया गया है ।
- ७ स्पर्श—स्पर्श अर्थविकारमें स्पर्श गुणके सन्धसे प्राप्त हुए स्पर्शनिर्माण, स्पर्श-निक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा ज्ञानावरणादिके भेदसे आठ भेदको प्राप्त हुए कर्मपुद्गलोंका वर्णन किया गया है ।
- ८ कर्म—कर्म अर्थविकारमें कर्मनिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा ज्ञानावरणादि कर्मकरणमें समर्थ होनेसे जिन्हे कर्मसज्ञा प्राप्त हो गई है, ऐसे पुद्गलोंका वर्णन किया गया है ।
- ९ प्रकृति—प्रकृति अर्थविकारमें कृति अधि-कारमें कहे गये स्वातन्त्र्य, वेदना अधि-कारमें कहे गये अन्त्याधिगेप प्रत्ययादि-रूप, स्पर्शमें कहे गये अन्त्याधिगेप प्रत्ययादि-ओर जीवके साथ सबद्ध होनेसे उत्पन्न हुए गुणके राग कर्म अधिकारमें कथित रत्तमें व्यापार करनेवाले पुद्गलोंके रत्तभाज

६ वंधण—ज ते वधण त चउत्विहं-वधो वंधगा वधणिज्ज वधनिघणमिदि । तथ वधो जीवकम्मपदेसाण सादियमणादिय च वंधं वण्णेदि । वधगाहियारो अहविहकम्म-बंधगे परूवेदि, सो च खुदावधे परत्तिदो । वंधणिज्ज वधपाओग-तदपाओग पोगल-दव्व परूवेदि । वधविहाण पयडिवध ठिदिवधं अणुमागवध पदेसवध च परूवेदि ।

७ णिवंधण—णिवंधणं मूलत्तरपयडीण निव-धण वण्णेदि । जहा चक्खिदियं रूवग्मि णिवद्ध, सोदिदिय सद्धमि णिवद्ध, वाणिदियं गवग्मि णिवद्धं, जिन्धिदिय रसमि णिवद्ध, फासिदिय कम्मलदादिफासेसु णिवद्धं, तहा इमाओ पयडीओ एदेसु अत्थेसु णिवद्धाओ ति णिवंधण परूवेदि, एतेो भावयो ।

८ पक्रम—पक्रमेत्ति अणियोगद्वार अकम्मसन्-धेण डिदण कम्मइयमगणाखवाण मूलत्तर-पयडिसरूवेण परिणममाणं पयटि-ट्टिदि-अणुमागविसेराण धिसिद्धाण पदेसपल्लव-

का निरूपण प्रकृतिनिक्षेप आदि सोलह अविकारोंके द्वारा किया गया है ।

६ वन्धन—वन्ध, वन्धक, वन्धनीय ओर वन्धविधान, इसप्रकार वन्धन अर्थविकारके चार भेद है । उनमेंसे वन्ध अधिकांश जीव ओर कर्मप्रदेओका सादि ओर अनादिरूप वन्धका वर्णन करता है । वन्धक अधिकांश आठ प्रकारके कर्मके वन्धकका प्रतिपादन करता है जिसका कथन छुल्लकवन्धमे किया जा चुका है । वन्धके योग्य पुद्गलवन्धका कथन वन्धनीय अधिकार करता है । वन्धविधान अधिकार प्रकृतिवन्ध, स्थितिवन्ध, अनुभाग-वन्ध ओर प्रदेवन्ध, इन चार वन्धके भेदोंका कथन करता है ।

७ निवन्धन—निवन्धन अधिकार मूलप्रकृति ओर उत्तरप्रकृतियोंके निवन्धनका कथन करता है । जैसे, चक्षुरिन्द्रिय रूपमें निवद्ध है । श्रोत्रिन्द्रिय शब्दमें निवद्ध है । जिह्वा श्रोत्रिन्द्रिय गन्धमें निवद्ध है । जिह्वा इन्द्रिय रसमें निवद्ध है ओर स्पर्शनिन्द्रिय कर्कश आदि रसमें निवद्ध है । उभो-प्रकार ये मूलप्रकृतियां ओर उत्तरप्रकृतियां इन विषयोंमें निवद्ध हैं, इसप्रकार निवन्धन अर्थविकार प्ररूपण करना है यह भावार्थ जानना चाहिये ।

८ प्रक्रम—प्रक्रम अर्थविकार जो वर्गणास्त्वन्व अभी कर्मस्वमे ग्थित नहीं है, किंतु जो मूलप्रकृति ओर उत्तरप्रकृतिरूपसे परिणमन करनेवाले है ओर जो प्रकृति, भिति ओर

कुण्दि ।

अनुभागकी विद्यपतासे त्रैशिष्ट्यको प्राप्त है ऐसे कर्मवर्णास्कास्कोके प्रदेशोका प्ररूपण करता है ।

९ उवक्कम-उवक्कमेत्ति अणियोगद्दारस्स चत्तारि अहियारा-वधणोवक्कमो उदीरणोवक्कमो उवसामणोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि । तथ बधोवक्कमो बधविदियसमयपहुडि अ-डुण कम्मण पयडि-डिदि-अणुभाग-पदेसाण वधवण्णण कुण्दि । उदीरणोवक्कमो पयडि-डिदि-अणुभागपदेसाणसुदीरण परूवेदि । उवसामणोवक्कमो पसत्योवसामणमपस-त्योवसामणण च पयडि-डिदि-अणुभाग-पदेसमेदभिण्ण परूवेदि । विपरिणामसुव-क्कमो पयडि-डिदि-अणुभाग-पदेसाण देस-णिज्जर सयलणिज्जर च परूवेदि ।

९ उपक्रम-उपक्रम अर्थाधिकारके चार अधिकार है बन्धनोपक्रम, उदीरणोपक्रम, उपशामनोपक्रम और विपरिणामोपक्रम । उनमेंसे बन्धनोपक्रम अधिकार बन्ध होनेके दूसरे समयसे लेकर प्रकृति, स्थिति, अनु-भाग और प्रदेशरूप ज्ञानावस्थादि आठों कर्मोंके बन्धका वर्णन करता है । उदीर-णोपक्रम अधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी उदीरणका कथन करता है । उपशामनोपक्रम अधिकार, प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे भेदको प्राप्त हुए प्रशस्तोपशमना और अप्रशस्तो-पशमनाका कथन करता है । विपरिणा-मोपक्रम अधिकार प्रकृति, स्थिति, अनु-भाग और प्रदेशोकी देशनिर्जरा और सकलनिर्जराका कथन करता है ।

१० उदय-उदयाणियोगद्दार पयडि-डिदि-अणुभाग-पदेसुदय परूवेदि ।

१० उदय-उदय अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोके उदयका कथन करता है ।

११ मोक्ख-मोक्खो पुण देस-सयलणिज्जराहि परपयडिसकमोकडुणुक्कण-अद्धिदिगल-णेहि पयडि-डिदि-अणुभाग-पदेसभिण्ण मोक्खं वण्णेदि ति अस्यभेदो ।

११ मोक्ष-मोक्ष अर्थाधिकार देशनिर्जरा और सकलनिर्जराकेद्वारा परप्रकृतिसंक्रमण, उत्क-र्षण अपकर्षण और स्थितिगलनसे प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्धका आत्मासे भिन्न होना मोक्ष है, इसका वर्णन करता है ।

१२ संकम-सक्केत्ति अणियोगद्दार पयडि-डिदि-अणुभाग-पदेसकमे परूवेदि ।

१२ संक्रम-संक्रम अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंके संक्रमणका प्ररूपण करता है ।

१३ लेस्सा-लेस्सेत्ति अणियोगद्दार छदव्वले-स्साथो परूवेदि ।

१३ लेस्या-लेस्या आनुयोगद्दार छद व्व्य लेस्याओंका प्रतिपादन करता है ।

१४ लेस्सायम्म-लेस्सापरिणामेत्ति अणियोग-द्दारमत्तरग-छेस्सा-परिणयजीवाण वज्ज-कज्जपरूपण कुण्दि ।

१४ लेस्याकर्म-लेस्याकर्म अर्थाधिकार अन्तरग छद लेस्याओसे परिणत जीवोंके बाह्य कार्योंका प्रतिपादन करता है ।

१५ लेस्सापरिणाम-लेस्सापरिणामेत्ति अणि-योगद्दार जीव-पोगलाण दव्व-भावलेस्साहि परिणमणविहाण वण्णेदि ।

१५ लेस्यापरिणाम-लेस्यापरिणाम अर्थाधिकार जीव और पुद्गलोंके द्रव्य और भावरूपसे परिणमन करनेके विधानका कथन करता है ।

१६ सादमसाद-सादमसादेत्ति अणियोगद्दारमे-यतसाद अणेततोदाण (?) गदियादि-मग्गणओ अस्सिदूण पररूपण कुण्दि ।

१६ सातासात-सातासात अर्थाधिकार एकान्त सात, अनेकान्त सात, एकान्त असात, अनेकान्त असातका गति आदि मार्गों-ओंके आश्रयसे वर्णन करता है ।

१७ दीहिरहस्स-दीहिरहस्सेत्ति अणियोगद्दार पयडि-डिदि-अणुभाग पदेसे दीहिरहस्सत्त परूवेदि ।

१७ दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंका आश्रय लेकर दीर्घता और ह्रस्वताका कथन करता है ।

१८ भवधारणीय-भवधारणीए त्ति अणियोग-द्दार केण कम्मण णेरइय-तिस्सिक्ख-मणुस-देवमवा वरिज्जति ति परूवेदि ।

१८ भवधारणीय-भवधारणीय अर्थाधिकार, किस कर्मसे नरकभव प्राप्त होता है, किससे तिर्यचभव, किससे मनुष्यभव और किससे देवभव प्राप्त होता है, इसका कथन करता है ।

१९ पोगलत्त-पोगलत्तयेत्ति अणियोगद्दार गट-णादो अत्ता पोगला परिणामदो अत्ता पोगला उवभोगदो अत्ता पोगला आहारदो अत्ता पोगला ममत्तीदो अत्ता पोगला परिगहदो अत्ता पोगला त्ति अप्पणिज्जणप्पणिज्ज-णोमलाण पोगलाण सबवेण पोगलत्त पत्तजीवाण च पररूपण कुण्दि ।

१९ पुद्गलत्त-पुद्गलत्त अणुयोगद्दार दण्डादिके ग्रहण करनेसे आत्त पुद्गलोंका, मित्या-त्वादि परिणामोंसे आत्त पुद्गलोंका, उपभोगसे आत्त पुद्गलोंका, आहारसे आत्त पुद्गलोंका, ममतासे आत्त पुद्गलोंका और परिग्रहसे आत्त पुद्गलोंका, इसप्रकार आत्मसात् किये हुए और नहीं किये हुए

२४ आपावहगु— अप्पावहगुणिओगहार २४ अल्पवहुत्व—अल्पवहुत्व अनुयोगद्वार
अदीदसन्वाणिओगदारेसु अप्पावहगु अतीत सपूर्ण अनुयोगद्वारोमें अरपवहुत्वका
परुवेदि । प्रतिपादन करता है ।

इन चौबीस अधिकारोंके विषयका प्रतिपादन पुष्पदन्त और भूतबलिने कुछ अपने स्वतंत्र विभाग से किया है जिसके कारण उनकी कृति पट्टखडागम कहलाती है । उक्त चौबीस अनिका-रोंमें पाचवा वंश्रम विषयकी दृष्टिसे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है । इसीके कुछ अवांतर अधिकारोंको लेकर प्रथम तीन खंडो अर्थात् जीवद्वान, बुद्धावय और वधसामित्तविचयकी रचना हुई है । इन तीन खंडोंमें समानता यह है कि उनमें जीवका वधककी प्रधानतासे प्रतिपादन किया गया है । उनका मगलाचरण भी एक है । इन्हीं तीन खंडोपर बुन्दबुन्दद्वारा परिकर्म नामक टीका लिखी कही गयी है । इन्हीं तीन खंडोंके पारगत होनेसे अनुमानत. त्रैविधेदेवकी उपाधि प्राप्त होती थी । इन्हीं तीन खंडोंका संक्षेप सिद्धान्तचक्रवर्ती नेभिचन्द्रकृत गोमटसारके प्रथम विभाग जीवकाडमें पाया जाता है ।

इन तीन खंडोंके पश्चात् उक्त चौबीस अधिकारोंका प्ररूपण कृति वेदनादि क्रमसे किया गया है और प्रथम छह अर्थात् वधन तन्त्रके प्ररूपणको अधिकार व अवांतर अधिकारकी प्रवानता-नुसार अगले तीन खंडो वेदना, व्रगणा और महावधमे विभाजित कर दिया गया है । इन तीन खंडोंके विषय-विचयनकी समानता यह है कि यहा वधनीय कर्मकी प्रधानतासे विचयन किया गया है । इनमें अन्तिम महाबंध सबसे बड़ा है और स्वतंत्र पुस्तकाखंड है । जो उपर्युक्त तीन खंडोंके अतिरिक्त इन तीनोंमें भी पारंगत हो जाते थे, वे सिद्धान्तचक्रवर्ती पदके अधिकारी होते थे । सि. च. नेभिचन्द्रने इनका संक्षेप गोमटसार कर्मकाडमे किया है ।

भूतबलि रचित सूत्रप्रथ छठवे वधन अधिकारके साथही समाप्त हो जाता है । शेष निवन्धनादि अठारह अधिकारोंका प्ररूपण बबला टीकाके रचयिता श्रीसेनार्चयर्षिकृत है, जिसे उन्होंने चूलिका कहकर पृथक् निर्देश कर दिया है ।

उपर्युक्त खडविभागादिका परिचय प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिये हुए मानचित्रोंसे स्पष्ट-तथा समझमे आजाता है । उन चित्रोंमें बतलायी हुई जीवद्वानकी नवमीं चूलिका गति-आगतिकी उपातिके विषयमें एक सूचना कर देना आवश्यक प्रतीत होता है । वह चूलिका बबलामें बियाह-पण्णति से उपपन्न हुई कही गयी है । मानचित्रमें व्याख्याप्रज्ञप्तिके आग (पांचवा अंग) ऐसा लिख दिया गया है, क्योंकि यह नाम पांचवें अंगका पाया जाता है । किन्तु दृष्टिवादके प्रथम विभाग परिकर्मके पांच भेदोंमें भी पाचवा भेद बियाहपण्णति नामका पाया जाता है । अतएव सभय है कि गति-आगति चूलिकाकी उपादक बियाहपण्णतिसे इसीका अभिप्राय हो ?

पुद्गर्बोका तथा पुद्गळके सन्धसे पुद्गळत्वको प्राप्त हुए जीवोंका वर्णन करता है ।

२० निवचानिधत्त—निवत्तानिधत्त अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति और अनुभागके निवच और अनिवचका प्रतिपादन करता है । जिसमें प्रदेशाप्र उदय अर्थात् उदीरणोंमें नहीं दिया जा सकता है और अन्य प्रकृतिरूप सक्रमणको भी प्राप्त नहीं कराय जा सकता है, उसे निवच कहते हैं । अनिवच इससे विपरीत होता है ।

२१ निकाचितानिकाचित—निकाचितानिका-चित्त अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति और अनु-भागके निकाचित और अनिकाचितका वर्णन करता है । जिसमें प्रदेशाप्रका उत्क-र्णण, अपकर्णण, परप्रकृतिसक्रमण नहीं हो सकता और न वह उदय अर्थात् उदीरण में ही दिया जा सकता है उसे निकाचित कहते हैं । अनिकाचित इससे विपरीत होता है ।

२२ कर्मस्थिति—कर्मस्थिति अनुयोगद्वार सपूर्ण कर्मोंकी गतिरूप कर्मस्थितिका और उत्कर्णण तथा अपकर्णणसे उपपन्न हुई कर्मस्थितिका वर्णन करता है ।

२३ परिचमस्कन्ध—परिचमस्कन्ध अर्थाधिकार दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरणरूप समुद्घातका, इस समुद्घातमें होनेवाले स्थितिकाडकवात और अनुभागकाण्डक-वातके विधानका, योगोंकी कृष्टि करके होनेवाले योगनिरोधके स्वरूपका और कर्मक्षपणके विधानका वर्णन करता है ।

२० निधत्तमणिधत्त— निधत्तमणिधत्तमिदि अणुयोगहार पयडि-द्विदि-अणुभागाग निधत्तमिदि त्तं च पन्वेदि । निधत्तमिदि कि ? ज पद्ममगं ण मस्कमुदए दादु अणुपयडि वा सकामंत्त नि त्तं णाम । तन्निरीयमणिधत्त ।

२१ निकाचितमणिकाचित—णिकाचितमणि-कानिधत्तमिदि अणुयोगहार पयडि-द्विदि-अणुभागाग निधत्तमिदि पन्वेदि । निकाच-णमिदि कि ? ज पद्ममग ण मस्कमोऊ-दिदुण्णपयडि सकामंत्तमुदए दादु वा तणिकाचित णाम । तन्निरीयमणिका-चित् ।

२२ कर्ममिदि—कर्ममिदि त्ति अणुयोगहार सन्तकमण सत्तिकम्मद्विदिसुकरुणोकरुण-णमिदिद्विच पन्वेदि ।

२३ पन्धिमस्कन्ध—पन्धिमस्त्वधेति अणुयोग-हार दड-कपाट-पद्द-लोगपूरणागि तय द्विदि-अणुभागाण्डकवातपिटाण जोग-किरीओ काजण जोगिरोहस्वरुव कर्म-मण्णमिदि च पन्वेदि ।

पाँचवें पूर्व गाणपवाद (ज्ञानप्रवाद) के एक पाहुडका उद्धार गुणधराचार्यद्वारा गायारूपमें किया गया । गाणपवादकी वारह वस्तुओंमेंसे दशम वस्तुके तीसरे पाहुडका नाम 'पेज' या 'पेजदेस' या 'कसाय' पाहुड था । इसीका गुणधराचार्यने १८० गायार्थों (और ५३ विवरण-गाथार्थोंमें) उद्धार किया, जिसका नाम कसायपाहुड है । इसका परिचय स्वयं सूत्रकार व टीकाकारके शब्दोंमें संक्षेपतः इसप्रकार है—

पुनमि पचममि दु दसमे वथुमि पाहुडे तदिथे ।

पेज ति पाहुडमि दु हवादि कसायाण पाहुडणाम ॥ १ ॥

*

गाहासदे असोदे अथे पणारसधा विहत्तमि ।

वोचमि सुत्तगाहा जह गाहा जमि अथमि ॥

टीका—सोलसपदसहस्रेहि वे नोडानोडिपुकसट्टिलकल-सत्तावणणसहस्र-वेसद-वाणडदिकोडि - वासट्टिलकल-अट्टसहस्रकल्पणोहि ज भणिद गणहरदेवेण इदभूद्विणा कसायपाहुड तमसीदि -सदगाहाहि चेव जाणामेमि ति गाहासदे असोदे ति पडमपइजा कदा । तथ्य अणेगेहि अथाहियरोहि परुविद कसाय-पाहुडमेथ्य पणारसेहि चेव अथाहियरोहि परुमेमि ति जाणावणट्ट अथे पणारसधा विहत्तमि ति निदियपइज्जा कदा । X X X ।

*

सपहि कसायपाहुडसस पणारस-अथाहियार-परुणट्ट गुणधरभडारओ दो सुत्तगाहाओ पठदि—

पेजदोस-विहत्तीद्वि-अणुभओ च अधमे चय ।

वेदगपुजजोगे वि य चउट्टण-वियजगे चे य ॥

सम्मत्त देसविरथी सजम-उउसामणा च खजणा च ।

दसण चरित्तमोहे अद्वापरिमणणिहेमो ॥

इसका तात्पर्य यह है कि यह कसायपाहुड पचम पूर्वकी दसम वस्तुके पेजनामक तृतीय पाहुडसे उत्पन्न हुआ है । इन्द्रभूति गौतमकृत उस मूलप्रयका परिमाण बहुत भारी था और अधिकार भी अनेक थे । प्रस्तुत कसायपाहुडमें १८० गायार्थ १५ अधिकारोंमें विभक्त है । गायार्थोंमें सूचित पन्द्रह अधिकार जयधवलाकारने तीन प्रकारसे वतलाये हैं । इनमेंसे जो विभाग उन्होंने चूर्णिकार यतिवृषभके आचारसे दिये हैं, वे निम्नप्रकार हैं—

- | | | |
|-------------------------|-----------------------|--------|
| १ पेजदेस | ५ उदय (कर्मोदय) | } वेदग |
| २ विहत्ती-द्विदि-अणुभाण | ६ उदीरणा (अकर्मोदय) | |
| ३ वधगा (अकर्मवध) | ७ उवजोग | } बंधग |
| ४ संकम (कर्मवध) | ८ चउट्टण | |

- | | | | | |
|------------------------|---------|---------------------------|--------|------|
| ९ वजण | } समत्त | १३ चरित्तमोहणीयसस उवसामणा | } संजम | |
| १० दसणमोहणीयसस उवसामणा | | १४ " " | | खवणा |
| ११ " " | | १५ अद्वापरिमणणिहेस । | | |
| १२ देसविरदी | | | | |

इस प्राकृतके आगे पीछेका इतिहास संक्षेपमें धवलाकारने इसप्रकार दिया है—

' एसो अथो विउल्लगिरिमथयथेण पच्चकखीरुय-तिक्कालगोवरउडणेण वडुमाणभउउरएण गोदम-अरसस कहिदो । पुणो सो अथो आइरियपरपराए आगत्तए गुणहरभडारय मपत्तो । पुणो तत्तो आइरिय-परपराए आगत्तए अज्जमंखु-नागहट्ठीण भउउरयाण मूल पत्तो । पुणो तेहि देहि वि त्तमेण जदिवसद्वभडा-रयसस वक्खणिदो । तेण वि X X सिस्साणुगगहट्ट चुण्णिणसुत्ते लिहिदो ' ।

अर्थात् इस कसायपाहुडका मूल विषय वर्धमान स्वामीने त्रिपुलाचलपर गौतम गणधरको कहा । वही आचार्य-परपरासे गुणधर भडारकको प्राप्त हुआ । उनसे आचार्य-परपराद्वारा वही आर्थमंखु और नागहस्ती आचार्योंके पास आया, जिन्होंने क्रमसे यतिवृषभ भडारकको उसका व्याख्यान किया । यतिवृषभने फिर उसपर चूर्णिसूत्र रचे ।

गुणधराचार्यकृत गायारूप कसायपाहुड और यतिवृषभकृत चूर्णिसूत्र वीरसेन और जिनसेना-चार्यकृत जयधवलोंमें प्रथित है जिसका परिमाण ६० हजार श्लोक है । इस टीकामें आर्थमंखु और नागहट्टियिके अलग अलग व्याख्यानके तथा उच्चारणाचार्यकृत वृत्तिसूत्रके भी अनेक उल्लेख पाये जाते हैं । यतिवृषभके चूर्णिसूत्रोंकी सख्या छह हजार और वृत्तिसूत्रोंकी वारह हजार बताई जाती है ।

नदीसूत्रमें पूर्वोक्त प्रभेदोंमें पाहुडों और पाहुडिकाओंका भी निम्नप्रकार उल्लेख है, किन्तु उनका विशेष परिचय कुछ नहीं पाया जाता—

' से ण अगट्टयाए वारससे अगे एगे सुअक्खधे चोइस पुग्गाह, सदेज्जा वथु, सखेज्जा चूलवथु, सखेज्जा पाहुउ, सखेज्जा पाहुउपाहुड, सखेज्जाओ पाहुडिआओ, सदेज्जाओ पाहुउपाहुडिआओ सखेज्जाह पयसहससाइ परयोगेण सखेज्जा अक्खरा, अणत्ता गमा अणत्ता पज्जजा ' आदि

६. ग्रंथका विषय

सम्प्ररूपणाके प्रथम भागमें आचार्य गुणस्थानों और मार्गिणस्थानोंका विवरण कर चुके हैं । अत्र इस भागमें पूर्वोक्त विवरणके आश्रयसे धवलाकार वीरसेन स्वामी उर्ह्वीका विशेष प्ररूपण करते हैं—

सपहि सससुत्तविवरणसमत्ताणत्तर तेसि परुत्तण भणिस्सामो । (पृ ४११)

किन्तु इस विशेष प्ररूपणमें उन्होंने गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति आदि वीस प्ररूपणाओं द्वारा जीवोंकी परीक्षा की है। यह वीस प्ररूपणाओंका विभाग पूर्वोक्त सवरूपणके सूत्रोंमें नहीं पाया जाता, और इसीलिये टीकाकारने एक शका उठाकर यह बतला दिया है कि सूत्रोंमें स्पष्टतः उल्लिखित न होने पर भी इन वीस प्ररूपणाओंका सूत्रकारकन गुणस्थान और मार्गणास्थानोंके भेदोंमें अन्तर्भाव हो जाता है, अतः ये प्ररूपणाएँ सूत्रोक्त नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता (पृ ४१४)।

‘सूत्रेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थं त्रिशतविधानेन प्ररूपणोच्यते’ । ‘न पौनःपुन्यमपि त्र्ययित्तेभ्यो भेदात्’ । (पृ ४१५)

इससे यह तो स्पष्ट है कि यह वीस प्ररूपणारूप विभाग पुण्यदत्तार्थकृत नहीं है। यह स्वयं बतलाकारकृत भी नहीं है, क्योंकि उन्होंने उन प्ररूपणाओंका नामनिर्देश करनेवाली एक प्राचीन गायत्री ‘उक्त च’ रूपसे उद्धृत किया है। इस विभागका प्राचीनतम निरूपण हमें यतिप्रभाचार्य कृत तिलोपण्णत्तिमें मिलता है। यथा—

गुण-वीना पञ्जती पाणा सण्णा च सरगगा कमसो ।

उज्जोगा ऋद्धिदग्गा पारइयारणं जहाजोग ॥२७३॥

~

गुण-वीना पञ्जती पाणा सण्णा च सरगगा कमसो ।

उज्जोगा ऋद्धिदग्गा पद्दाग कुमारदेवार्णं ॥१८३॥

आदि.

किन्तु यह अभी निश्चयतः नहीं कहा जा सकता कि इस वीस प्ररूपणारूप विभागका आदिकर्ता कौन है, यह विषय अन्वेषणीय है।

गुणस्थानों व मार्गणास्थानके अनेक भेद प्रभेदोंका विशिष्ट जीवोंकी अपेक्षासे सामान्य, पर्याप्त व अपर्याप्त रूप प्ररूपण करनेसे आलपोंकी सख्या कई सौ पर पहुँच जाती है। इस आजाप निभागत परिचय विषय-सूचीको देखनेसे मिल सकता है। अतः उस सन्वयमें यहाँ विशेष रूपनती आवश्यकता नहीं है। प्रथम भागकी भूमिकामें गुणस्थानों और मार्गणाओंका सामान्य परिचय देकर यह सूचित किया गया था कि अगले उडेमें विषयका विशेष विवेचन किया जाएगा। किन्तु इस भागका मलेवर अपेक्षासे अधिक बड गया है और प्रस्तावना भी अन्य उपयोगी विषयोंकी चर्चासे क्येष्ट विस्तृत हो चुकी है। अतः हम उक्त विषयके विशेष विवेचन करने को आकांक्षा अभी किन्तु भी नियन्त्रण करते हैं।

७. रचना और भाषाशैली

प्रस्तुत ग्रन्थविभागमें सूत्र नहीं है। सवरूपणका जो विषय ओव और आदेश अर्थात् गुणस्थान और मार्गणास्थानोंद्वारा प्रथम १७७ सूत्रोंमें प्रतिपादित हो चुका है उसीका यहाँ वीस प्ररूपणाओं द्वारा निर्देश किया गया है।

इस वीस प्रकारकी प्ररूपणोके आदिमें टीकाकारने ‘ओषेण अस्थि मिच्छाइडी० मिच्छा चेदि’ इस प्रकारसे सूत्र दिया है और उसे ओषसूत्र कहा है। हमारी ब प्रतिमें इसपर ७४, आ में १७४, तथा स में १७५ की सख्या पायी जाती है जो उन प्रतियों की पूर्व सूत्रगणनाके क्रमसे है। पर स्पष्टतः वह सूत्र पृथक् नहीं है, बतलाकारने पूर्वोक्त ९ से २३ तकके ओष सूत्रोंका प्रकृत विषयकी वहाँसे उत्पत्ति बतलाने के लिये समष्टिरूपसे उल्लेख मात्र किया है।

इस भागमें गथाएँ भी बहुत थोड़ी पायी जाती है, जिसका कारण यहाँ प्रतिपादित विषयकी विशेषता है। अवतरण गथाओंकी संख्या यहाँ केवल १३ है जिनमेंसे एक (न २२०) कुद-कुदके बोधपाहुडमे और दो (२२३, २२४) प्राकृत पचसग्रहमें* भी पायी जाती हैं। गथा न. (२२८) ‘उत्त च पिंडियाए’ ऐसा कहकर उद्धृत की गई है। हमने इस गथाकी खोज कराई, पर वीरसेवामदिरके प परमानन्दजी शालीने हमें सूचित किया कि यह गथा न तो प्राकृत पचसग्रह मे है न तिलोपण्णत्तिमे और न श्रैताम्बरीय कर्मप्रकृति, पचसग्रह, जीवसमास विशेषपावश्यक आदि ग्रन्थोंमे है। जान पडता है ‘पिंडिका’ नामका कोई प्राचीन ग्रन्थ रहा है जो अवतक अज्ञात है। इन तीन गथाओंको छोडकर शेष सब कहीं जैसी की तैसी और कहीं किञ्चित् पाठभेद को लिये हुए गोमटद्वारा जीवकाडमें भी सगृहीत है।

इस विभागमें सरकृत केवल प्रारंभमे थोड़ी सी पायी जाती है। शेष समस्त रचना प्राकृतमें ही है। पर यहाँ विषयकी विशेषता ऐसी है कि उसमें प्रतिपादन और विवेचनकी गुजा-इग कम है। अतएव जैसी साहित्यिक चाम्यशैली प्रथम विभागमें पायी जाती है वैसी यहाँ बहुत कम है। जहाँ कहीं शका-समाधानका प्रसंग आ गया है, वही साहित्यिक शैली पायी जाती है। ऐसे शका समाधान इस विभागमें ३३ पाये जाते हैं। शेष भागमें तो गुणस्थान और मार्गणास्थानकी अपेक्षा जीवविशेषोंमें गुणस्थान आदि वीस प्ररूपणाओंकी सख्या मात्र गिनायी गयी है, जिसमें वाक्य रचनाकी व्याकरणत्मक शुद्धिपर ध्यान नहीं दिया गया। पद कहीं सत्रि-भक्तिक है और कहीं विभक्ति-यहित अपनेप्राति पदिक रूपमें। समास-बधन भी शिथिलसा पाया जाता है, उदाहरणार्थ ‘आहारभयमेहुणसण्णा चेदि’ (पृ ४१३)। चेदि से पूर्वके पद समास-

* यह ग्रन्थ अभी अभी ‘वीरसेवा मन्दिर मरसावा’ द्वारा प्रकाशमें लाया जा रहा है। उसमें उक्त गथा-आके होनेकी सूचना हमें वहाँके प परमानन्दजी यात्री द्वारा मिली।

शुक्त समझे जाय, या अलग अलग ? यदि अलग अलग लें तो वे सब विभक्तिहीन रह जाते हैं, यदि समासरूप ले तो 'च' की कोई सार्थकता नहीं रह जाती। संशोधनमें यह प्रयत्न किया गया है कि यथाशक्ति प्रतियोंके पाठको सुशिक्षित रखते हुए जितने कम सुधारसे काम चल सके उतना कम सुधार करना। किंतु अविभक्तिक पदोंको जानबूझकर बिना यथेष्ट कारणके सविभक्तिक बनानेका प्रयत्न नहीं किया गया। इस कारण प्ररूपणाओंमें बहुतायतसे विभक्तिहीन पद पाये जायेंगे।

इन प्ररूपणाओंमें आलापोंके नामनिर्देश स्वभावतः पुनः पुनः आये हैं। प्रतियोंमें इन्हें प्रायः संक्षेपत आदिके अक्षर देकर बिन्दु रखकर ही सूचित किया है, जैसे 'गुणद्वण' के स्थानपर गुण०, 'पञ्चतौषो' के स्थानपर प० आदि। यदि सब प्रतियोंमें ये संक्षिप्त रूप एकसे होते, तो समझा जाता कि वे मूलदर्श प्रतिके अनुसार हैं, अतः मुद्रितरूपमें भी उन्हें वैसे ही रखना कदाचित् उपयुक्त होता। किन्तु किसी प्रतिमें एक अक्षर लिखकर, किसीमें दो अक्षर लिखकर आदि भिन्नरूपसे संक्षेप बनाये गये हैं और किसी प्रतिमें वे पूरे रूपमें भी लिखे हैं। इसप्रकार बिन्दुसहित संक्षिप्तरूप कारंजाकी प्रतिमें सबसे अधिक और आरंकी प्रतिमें सबसे कम है। इस अव्यवस्थाको देखते हुए आदर्श प्रतिमें बिन्दु है या नहीं, इस विषयमें शंका हो जानेके कारण हमने इन संक्षिप्त रूपोंका उपयोग न करके पूरे शब्द लिखना ही उचित समझा।

प्रत्येक आलापमें बीस बीस प्ररूपणाएँ हैं। पर कहीं कहीं प्रतियोंमें एक शब्दसे लगा-कर पूरे आलाप तक भी छूटे हुए पाये जाते हैं। इनकी पूर्ति एक दूसरी प्रतियोंसे हो गई है, किन्तु कहीं कहीं उपलब्ध सभी प्रतियोंमें पाठ छूटे हुए हैं जैसा कि पाठ-टिप्पण व प्रति-मिलान और छूटे हुए पाठोंकी तालिकासे ज्ञात हो सकेगा। इन पाठोंकी पूर्ति विषयको देख समझकर कर्ताकी शैलीमें ही उन्हींके अन्यत्र आये हुए शब्दोंद्वारा करदी गई है। जहाँ ऐसे जोड़े हुए पाठ एक दो शब्दोंसे अधिक बड़े हैं वहाँ वे कोष्ठके भीतर रख दिये गये हैं।

मूलमें जहाँ कोई विवाद नहीं है वहाँ प्ररूपणाओंकी प्रत्येक स्थानमें सख्या मात्र दी गई है। अनुवादमें सर्वत्र उन प्ररूपणाओंकी स्पष्ट सूचना कर देनेका प्रयत्न किया गया है और मूलका सावधानीसे अनुसरण करते हुए भी वाक्यरचना यथाशक्ति मुहावरोंके अनुसार और सरल रखी गई है।

मूलमें जो आलाप आये हैं उनको और भी स्पष्ट करने तथा दृष्टिगतमात्रसे ज्ञेय बनानेके लिये प्रत्येक आलापका नकशा भी बनाकर उसी पृष्ठपर नीचे दे दिया गया है। इनमें सख्याएँ अंकित करनेमें सावधानी तो पूरी रखी गई है, फिर भी समभव है दृष्टिदोषसे दो चार जगह एकाध अंक अशुद्ध छप गया हो। पर मूल और अनुवाद साम्हने होनेसे उनके कारण पाठकोंको कोई भ्रम न हो सकेगा। नकशोंका मिलान गोमटसारके प्रस्तुत प्रकरणसे भी कर लिया गया है।

सत्प्ररूपणा-आलापसूची

| विषय | नकशा नं | पृष्ठ नं | विषय | नकशा नं | पृष्ठ नं. |
|-------------------------|---------|----------|-----------------------|---------|-----------|
| ओष आलाप | | ४१५-४४८ | आदेश आलाप | | |
| सामान्य | १ | ४१५ | १ गतिमार्गणा | | |
| पर्याप्त | २ | ४२० | १ नरकगति | | ४४८ |
| अपर्याप्त | | ४२१ | सामान्य | २८ | ४४९ |
| १ मिथ्याद्वष्टि | ३ | ४२३ | पर्याप्त | २९ | ४५० |
| सामान्य | ४ | ४२४ | अपर्याप्त | | |
| पर्याप्त | | ४२५ | मिथ्याद्वष्टि | | |
| अपर्याप्त | ५ | ४२५ | सामान्य | ३१ | ४५१ |
| २ सासादनसम्प्यद्वष्टि | ६ | ४२६ | पर्याप्त | ३२ | ४५१ |
| सामान्य | | ४२६ | अपर्याप्त | ३३ | ४५२ |
| पर्याप्त | ७ | ४२६ | सासादनसम्प्यद्वष्टि | ३४ | ४५३ |
| अपर्याप्त | ८ | ४२७ | सम्प्यग्मिथ्याद्वष्टि | ३५ | ४५३ |
| ३ सम्प्यग्मिथ्याद्वष्टि | ९ | ४२८ | असंयतसम्प्यद्वष्टि | | |
| असंयतसम्प्यद्वष्टि | | | सामान्य | ३६ | ४५४ |
| सामान्य | १० | ४२८ | पर्याप्त | ३७ | ४५४ |
| पर्याप्त | ११ | ४२९ | अपर्याप्त | ३८ | ४५५ |
| अपर्याप्त | १२ | ४३० | प्रथमपृथिवी | | |
| ५ संयतासंयत | १३ | ४३१ | सामान्य | ३९ | ४५६ |
| ६ प्रमत्तसंयत | १४ | ४३२ | पर्याप्त | ४० | ४५७ |
| ७ अप्रमत्तसंयत | १५ | ४३३ | अपर्याप्त | ४१ | ४५८ |
| ८ अपूर्वकरण | १६ | ४३४ | मिथ्याद्वष्टि | | |
| ९ अनिद्वित्तिकरण | | | सामान्य | ४२ | ४५९ |
| प्रथम भाग | १७ | ४३५ | पर्याप्त | ४३ | ४५९ |
| द्वितीय " | १८ | ४३६ | अपर्याप्त | ४४ | ४६० |
| तृतीय " | १९ | ४३६ | सासादनसम्प्यद्वष्टि | ४५ | ४६१ |
| चतुर्थ " | २० | ४३७ | सम्प्यग्मिथ्याद्वष्टि | ४६ | ४६१ |
| पंचम " | २१ | ४३८ | असंयतसम्प्यद्वष्टि— | | |
| १० सूक्ष्मसाम्पराय | २२ | ४३८ | सामान्य | ४७ | ४६२ |
| ११ उपशान्तकपाय | २३ | ४३९ | पर्याप्त | ४८ | ४६३ |
| १२ क्षीणकपाय | २४ | ४४० | अपर्याप्त | ४९ | " |
| १३ सयोगिकेवली | २५ | ४४० | द्वितीयपृथिवी | | |
| १४ अयोगिकेवली | २६ | ४४५ | सामान्य | ५० | ४६४ |
| १५ सिद्ध | २७ | ४४७ | पर्याप्त | ५१ | ४६५ |

| विषय | नक्रशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नक्रशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नक्रशा नं. | पृष्ठ नं. |
|---------------------------|------------|-----------|---------------------------|------------|-----------|--------------------|------------|-----------|
| अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि | ५२ | " | पर्याप्त | ८० | " | सम्यग्मिथ्यादृष्टि | १०९ | ५०८ |
| सामान्य पर्याप्त | ५३ | ४८८ | अपर्याप्त | ८१ | ४८८ | असंयतसम्यग्दृष्टि | ११० | ५०९ |
| पर्याप्त | ५४ | ४८९ | सामान्य | ८२ | ४८९ | पर्याप्त | १११ | ५१० |
| अपर्याप्त | ५५ | " | असंयतसम्यग्दृष्टि | ८३ | " | अपर्याप्त | ११२ | ५१० |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | ५६ | ४९० | सामान्य | ८४ | ४९० | संयतासंयत | ११३ | ५११ |
| सम्यग्मिथ्यादृष्टि | ५७ | ४९१ | पर्याप्त | ८५ | ४९१ | प्रमत्तसंयतदि | ११४ | ५१२ |
| असंयतसम्यग्दृष्टि | ५८ | ४९२ | अपर्याप्त | ८६ | ४९२ | अनुप्यपर्याप्त | ११५ | ५१२ |
| तृतीयारि श्रुतियोगे | | | संयतासंयत | | | मनुष्यनी | | |
| आलाप | | | पंचेन्द्रियतिर्यचपर्याप्त | | | सामान्य | ११६ | ५१३ |
| २ तिर्यचगति— | | | पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिमती | | | पर्याप्त | ११७ | ५१३ |
| सामान्य | ५९ | ४७१ | सामान्य | ८७ | ४९३ | अपर्याप्त | ११८ | ५१७ |
| पर्याप्त | ६० | ४७२ | पर्याप्त | ८८ | ४९३ | अपर्याप्त | ११९ | " |
| अपर्याप्त | ६१ | ४७३ | अपर्याप्त | ८९ | ४९४ | मिथ्यादृष्टि | १२० | ५१८ |
| मिथ्यादृष्टि | | | सामान्य | ९० | ४९४ | सामान्य | १२१ | ५१९ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | पर्याप्त | ९१ | ४९५ | पर्याप्त | १२२ | ५१९ |
| सामान्य | ६५ | ४७६ | अपर्याप्त | ९२ | ४९६ | अपर्याप्त | १२३ | " |
| पर्याप्त | ६६ | ४७७ | सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सामान्य | १२४ | ५२३ |
| अपर्याप्त | ६७ | ४७८ | सामान्य | ९३ | ४९७ | पर्याप्त | १२५ | ५२४ |
| सम्यग्मिथ्यादृष्टि | ६८ | ४७८ | पर्याप्त | ९४ | ४९८ | अपर्याप्त | १२६ | " |
| असंयतसम्यग्दृष्टि | | | अपर्याप्त | ९५ | ४९८ | मिथ्यादृष्टि | १२७ | ५२४ |
| सामान्य | ६९ | ४७९ | सम्यग्मिथ्यादृष्टि | ९६ | ४९९ | सामान्य | १२८ | ५२४ |
| पर्याप्त | ७० | ४८० | असंयतसम्यग्दृष्टि | ९७ | ५०० | पर्याप्त | १२९ | ५२४ |
| अपर्याप्त | ७१ | ४८० | संयतासंयत | ९८ | ५०० | अप्रमत्तसंयत | १३० | ५२४ |
| संयतासंयत | ७२ | ४८१ | पंचेन्द्रियतिर्यचलब्ध- | ९९ | ५०० | अपूर्वकरण | १३१ | ५२४ |
| पंचेन्द्रियतिर्यच | | | पर्याप्तक | | | अनिवृत्तिप्रथमभाग | १३२ | ५२४ |
| सामान्य | ७३ | ४८२ | ३ मनुष्यगति | १०० | ५०१ | " द्वितीय भाग | १३३ | ५२४ |
| पर्याप्त | ७४ | ४८२ | सामान्य | १०१ | ५०२ | " तृतीय " | १३४ | ५२४ |
| अपर्याप्त | ७५ | ४८३ | पर्याप्त | १०२ | ५०३ | " चतुर्थ " | १३५ | ५२४ |
| मिथ्यादृष्टि | | | अपर्याप्त | १०३ | ५०४ | " पंचम " | १३६ | ५२४ |
| सामान्य | ७६ | ४८४ | सामान्य | १०४ | ५०५ | सूक्ष्मसांप्रदाय | १३७ | ५२४ |
| पर्याप्त | ७७ | ४८५ | पर्याप्त | १०५ | ५०५ | उपशान्तकपाय | १३८ | ५२४ |
| अपर्याप्त | ७८ | ४८६ | अपर्याप्त | १०६ | ५०६ | क्षीणकपाय | १३९ | ५२४ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सयौगिकेवली | १४० | ५२४ |
| सामान्य | ७९ | ४८७ | सामान्य | १०७ | ५०७ | अयौगिकेवली | १४१ | ५२४ |
| पर्याप्त | ८० | ४८७ | पर्याप्त | १०८ | ५०८ | लज्जपर्याप्तकमनुय | १४२ | ५२४ |
| अपर्याप्त | ८१ | ४८७ | अपर्याप्त | १०९ | ५०९ | | | |

| विषय | नक्रशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नक्रशा नं. | पृष्ठ नं. |
|---------------------|------------|-----------|---------------------|------------|-----------|
| ४ देवगति | १४० | ५०८ | सामान्य | १४१ | ५०९ |
| सामान्य | १४१ | ५०९ | अपर्याप्त | १४२ | ५१० |
| पर्याप्त | १४२ | ५१० | मिथ्यादृष्टि | १४३ | ५११ |
| अपर्याप्त | १४३ | ५११ | सामान्य | १४४ | ५१२ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | पर्याप्त | १४५ | ५१३ |
| सामान्य | १४६ | ५१३ | अपर्याप्त | १४६ | ५१४ |
| पर्याप्त | १४७ | ५१४ | सम्यग्मिथ्यादृष्टि | १४७ | ५१५ |
| अपर्याप्त | १४८ | ५१५ | असंयतसम्यग्दृष्टि | १४८ | ५१६ |
| सामान्य | १४९ | ५१६ | सामान्य | १४९ | ५१७ |
| पर्याप्त | १५० | ५१७ | अपर्याप्त | १५० | ५१८ |
| अपर्याप्त | १५१ | " | भवनत्रिक | १५१ | ५१९ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सामान्य | १५२ | ५२० |
| सामान्य | १५३ | ५१९ | पर्याप्त | १५३ | ५२० |
| पर्याप्त | १५४ | " | अपर्याप्त | १५४ | ५२० |
| मिथ्यादृष्टि | | | सामान्य | १५५ | ५२० |
| सामान्य | १५६ | ५२१ | पर्याप्त | १५६ | ५२१ |
| अपर्याप्त | १५७ | ५२२ | अपर्याप्त | १५७ | ५२२ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सासादनसम्यग्दृष्टि | १५८ | ५२२ |
| सामान्य | १५९ | ५२३ | सामान्य | १५९ | ५२३ |
| पर्याप्त | १६० | ५२४ | अपर्याप्त | १६० | ५२४ |
| अपर्याप्त | १६१ | ५२४ | सम्यग्मिथ्यादृष्टि | १६१ | ५२४ |
| असंयतसम्यग्दृष्टि | | | असंयतसम्यग्दृष्टि | १६२ | ५२४ |
| भवनत्रिक पुरुषवेदी | | | भवनत्रिक स्त्रीवेदी | | |
| भवनत्रिक स्त्रीवेदी | | | सौधर्म-पेशान | | |
| सौधर्म-पेशान | | | सामान्य | १६३ | ५२४ |
| सामान्य | १६४ | ५२५ | पर्याप्त | १६४ | ५२५ |
| पर्याप्त | १६५ | ५२५ | अपर्याप्त | १६५ | ५२५ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सासादनसम्यग्दृष्टि | १६६ | ५२६ |
| सामान्य | १६७ | ५२६ | सामान्य | १६७ | ५२६ |
| पर्याप्त | १६८ | ५२६ | अपर्याप्त | १६८ | ५२६ |
| अपर्याप्त | १६९ | ५२६ | मिथ्यादृष्टि | १६९ | ५२६ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सासादनसम्यग्दृष्टि | १७० | ५२६ |
| सामान्य | १७१ | ५२७ | सामान्य | १७१ | ५२७ |
| पर्याप्त | १७२ | ५२७ | अपर्याप्त | १७२ | ५२७ |
| अपर्याप्त | १७३ | ५२७ | मिथ्यादृष्टि | १७३ | ५२७ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सासादनसम्यग्दृष्टि | १७४ | ५२७ |
| सामान्य | १७५ | ५२८ | सामान्य | १७५ | ५२८ |
| पर्याप्त | १७६ | ५२८ | अपर्याप्त | १७६ | ५२८ |
| अपर्याप्त | १७७ | ५२८ | सासादनसम्यग्दृष्टि | १७७ | ५२८ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | | सामान्य | १७८ | ५२८ |
| सामान्य | १७९ | ५२९ | पर्याप्त | १७९ | ५२९ |
| पर्याप्त | १८० | ५२९ | अपर्याप्त | १८० | ५२९ |
| मिथ्यादृष्टि | | | सासादनसम्यग्दृष्टि | १८१ | ५२९ |
| सामान्य | १८२ | ५३० | सामान्य | १८२ | ५३० |
| पर्याप्त | १८३ | ५३० | अपर्याप्त | १८३ | ५३० |
| अपर्याप्त | १८४ | ५३० | | | |

आलापसूची

७६

| विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. |
|-------------------------------------|----------|-----------|-------------------------------|----------|-----------|
| बादरसाधारणवचनस्पति सामान्य पर्याप्त | २३१ | ५८९ | संक्षीपचेन्द्रिय " | २११ | ५८९ |
| पर्याप्त | २३२ | ५९० | असंक्षीपचेन्द्रिय " | २१२ | ५९० |
| अपर्याप्त | २३३ | ५९० | ६ अनिन्द्रिय | | |
| बादरसाधारणपर्याप्त | | ५९१ | ३ कायमार्गणा | | |
| " लब्धपर्याप्त | | ६०१ | सामान्य पर्याप्त | २१३ | ५९१ |
| सूक्ष्मसाधारण | | ६०२ | अपर्याप्त | २१४ | ६०२ |
| ६ वचकायिक | | ६०४ | मिथ्यादृष्ट्यादि | | |
| सामान्य पर्याप्त | २३४ | ६०४ | १ पृथिवीकायिक | | |
| पर्याप्त | २३५ | ६०४ | सामान्य पर्याप्त | २१६ | ६०४ |
| अपर्याप्त | २३६ | ६०५ | बादरपृथिवीकायिक | २१७ | ६०५ |
| मिथ्यादृष्टि | | ६०६ | अपर्याप्त | २१८ | ६०६ |
| सामान्य पर्याप्त | २३७ | ६०७ | बादरपृथिवीकायिक | २१९ | ६०७ |
| अपर्याप्त | २३८ | ६०८ | सामान्य पर्याप्त | २२० | ६०८ |
| सासादनादि | | " | अपर्याप्त | २२१ | " |
| ७ अकायिक | २४० | ६०९ | बादरपृथिवीकायिकपर्याप्त | | |
| वचकायिक पर्याप्त | | " | लब्धपर्याप्त | | |
| " लब्धपर्याप्त | २४१ | " | सूक्ष्मपृथिवीकायिक | | |
| योगमार्गणा | | ६०९ | २ अपकायिक | | |
| १ मनोयोगी | २४२ | ६१० | ३ अग्निकायिक | | |
| मिथ्यादृष्टि | २४३ | ६११ | ४ वायुकायिक | | |
| सासादन० | २४४ | | ५ वनस्पतिकायिक | | |
| सम्यग्मिथ्यादृष्टि | २४५ | ६१२ | सामान्य पर्याप्त | २२२ | ६१२ |
| असंयतसम्यग्दृष्टि | २४६ | ६१३ | अपर्याप्त | २२३ | ६१३ |
| संयतासंयत | २४७ | " | अपर्याप्त | २२४ | " |
| प्रमत्तसंयत | २४८ | ६१४ | प्रत्येकवनस्पतिकायिक | | |
| अप्रमत्तसंयतादि | | ६१४ | सामान्य पर्याप्त | २२५ | ६१४ |
| सत्यमनोयोगी | | ६१५ | अपर्याप्त | २२६ | ६१५ |
| असत्यसृष्ट्यामनोयोगी | | " | अपर्याप्त | २२७ | " |
| सृष्ट्यामनोयोगी | २४९ | ६१६ | प्रत्येकवनस्पतिकायिक पर्याप्त | | |
| मिथ्यादृष्ट्यादि | | " | " " लब्धपर्याप्त | | |
| २ वचनयोगी | २५० | " | बादरनिगोदप्रतिष्ठित | | |
| मिथ्यादृष्टि | २५१ | ६१६ | साधारणवनस्पतिकायिक | | |
| सासादनादि | | ६१६ | सामान्य पर्याप्त | २२८ | ६१६ |
| सत्यवचनयोगी | | ६१७ | अपर्याप्त | २२९ | ६१७ |
| सृष्ट्यावचनयोगी | | ६१८ | अपर्याप्त | २३० | ६१८ |

सप्रारूपणा

७५

| विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. |
|--------------------------|----------|-----------|-----------------------------|----------|-----------|
| मिथ्यादृष्टि | १६७ | ५५३ | सूक्ष्म एकेन्द्रिय | | |
| सामान्य पर्याप्त | १६८ | ५५४ | सामान्य पर्याप्त | १८९ | ५७३ |
| अपर्याप्त | १६९ | " | अपर्याप्त | १९० | ५७४ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | | " | सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त | १९१ | " |
| सामान्य पर्याप्त | १७० | ५५५ | " " लब्धपर्याप्त | | |
| अपर्याप्त | १७१ | ५५६ | २ द्वीन्द्रिय | | |
| सम्यग्मिथ्यादृष्टि | १७२ | " | सामान्य पर्याप्त | १९२ | ५७५ |
| असंयतसम्यग्दृष्टि | १७३ | ५५७ | अपर्याप्त | १९४ | ५७७ |
| सामान्य पर्याप्त | १७४ | ५५७ | द्वीन्द्रिय पर्याप्त | | |
| अपर्याप्त | १७५ | ५५८ | " लब्धपर्याप्त | | |
| अपर्याप्त | १७६ | ५५९ | ३ त्रीन्द्रिय | | |
| सौधर्म पेशान पुरुषवेदी | १७७ | ५६० | सामान्य पर्याप्त | १९५ | ५७७ |
| सौधर्म पेशान स्त्रीवेदी | १७८ | ५६० | अपर्याप्त | १९६ | ५७८ |
| सानलुमार माहेन्द्र | १७९ | ५६१ | त्रीन्द्रिय पर्याप्त | १९७ | ५७९ |
| सामान्य पर्याप्त | १७९ | ५६२ | " लब्धपर्याप्त | | |
| अपर्याप्त | १७९ | " | ४ चतुरिन्द्रिय | | |
| मिथ्यादृष्ट्यादि | | ५६३ | सामान्य पर्याप्त | १९८ | ५७९ |
| ब्रह्म से नौ त्रैवेयक | | ५६३ | अपर्याप्त | १९९ | ५८० |
| नौ अलुविश पात्र अनुत्तर | | ५६३ | अपर्याप्त | २०० | ५८१ |
| सामान्य पर्याप्त | १८० | ५६४ | चतुरिन्द्रियपर्याप्त | | |
| पर्याप्त | १८१ | ५६५ | " लब्धपर्याप्त | | |
| अपर्याप्त | १८२ | ५६६ | ५ पंचेन्द्रिय | | |
| ५ सिद्धगति | | ५६८ | सामान्य पर्याप्त | २०१ | ५८२ |
| २ इन्द्रियमार्गणा | | ५६८ | अपर्याप्त | २०२ | ५८३ |
| १ एकेन्द्रिय | | ५६८ | अपर्याप्त | २०३ | ५८४ |
| सामान्य पर्याप्त | १८३ | ५६९ | मिथ्यादृष्टि | | |
| अपर्याप्त | १८४ | ५७० | सामान्य पर्याप्त | २०४ | ५८४ |
| अपर्याप्त | १८५ | ५७१ | अपर्याप्त | २०५ | ५८५ |
| बादर एकेन्द्रिय | | ५७१ | अपर्याप्त | २०६ | ५८६ |
| सामान्य पर्याप्त | १८६ | ५७१ | सासादनादि | | |
| अपर्याप्त | १८७ | ५७२ | असंक्षीपचेन्द्रिय | | |
| बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त | १८८ | " | सामान्य पर्याप्त | २०७ | ५८७ |
| " " लब्धपर्याप्त | | ५७३ | अपर्याप्त | २०८ | ५८८ |
| | | | अपर्याप्त | २०९ | ५८९ |
| | | | पंचेन्द्रियलब्धपर्याप्त | २१० | ५८९ |

| विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. |
|------------------------|----------|-----------|----------------------|----------|-----------|
| सत्यश्रुत्यावचनयोगी | | " | सम्यग्मिथ्याहाट्टि | २८२ | ६६३ |
| असत्यश्रुत्यावचनयोगी | | " | असत्यतसम्यग्हाट्टि | २८३ | " |
| ३ काययोगी | २५२ | ६३७ | त्रैकिकमिथ्याकाययोगी | २८४ | ६६५ |
| सामान्य | २५३ | ६३८ | मिथ्याहाट्टि | २८५ | ६६५ |
| पर्याप्त | २५४ | ६३९ | सासादनसम्यग्हाट्टि | २८६ | ६६६ |
| अपर्याप्त | २५४ | ६३९ | असत्यरसम्यग्हाट्टि | २८७ | ६६६ |
| मिथ्याहाट्टि | | | आहारककाययोगी | २८८ | ६६७ |
| सामान्य | २५५ | ६४० | आहारकमिश्रकाययोगी | २८९ | ६६८ |
| पर्याप्त | २५६ | ६४१ | कार्मणकाययोगी | २९० | ६६८ |
| अपर्याप्त | २५७ | " | मिथ्याहाट्टि | २९१ | ६७० |
| सासादनसम्यग्हाट्टि | | | सासादनसम्यग्हाट्टि | २९२ | ६७० |
| नामान्य | २५८ | ६४२ | असत्यतसम्यग्हाट्टि | २९३ | ६७१ |
| पर्याप्त | २५९ | ६४३ | सयोगिकेवली | ३९४ | ६७२ |
| अपर्याप्त | २६० | " | ४ अयोगी | | ६७२ |
| सम्यग्मिथ्याहाट्टि | २६१ | ६४४ | ५ वेदमार्गणा | | |
| असत्यतसम्यग्हाट्टि | | | १ लीवेदी | | |
| नामान्य | २६२ | ६४४ | सामान्य | २९५ | ६७३ |
| पर्याप्त | २६३ | ६४५ | पर्याप्त | २९६ | ६७४ |
| अपर्याप्त | २६४ | ६४६ | अपर्याप्त | २९७ | " |
| संयतास्यत | २६५ | ६४६ | मिथ्याहाट्टि | | |
| प्रमत्तस्यत | २६६ | ६४७ | सामान्य | २९८ | ६७५ |
| अप्रमत्तस्यत | २६७ | ६४८ | पर्याप्त | २९९ | ६७६ |
| अपूर्वकरणदि | | | अपर्याप्त | ३०० | " |
| मयोगिकेवली | २६८ | ६४८ | सासादनसम्यग्हाट्टि | | |
| श्रीदत्तिककाययोगी | २६९ | ६४९ | सामान्य | ३०१ | ६७७ |
| मिथ्याहाट्टि | २७० | ६५० | पर्याप्त | ३०२ | ६७८ |
| सासादनसम्यग्हाट्टि | २७१ | ६५१ | अपर्याप्त | ३०३ | " |
| सम्यग्मिथ्याहाट्टि | २७२ | ६५१ | सम्यग्मिथ्याहाट्टि | ३०४ | ६७९ |
| असत्यतसम्यग्हाट्टि | २७३ | ६५२ | असत्यतसम्यग्हाट्टि | ३०५ | ६७९ |
| संयतास्यतदि | | | संयतास्यत | ३०६ | ६८० |
| श्रीदत्तिकमिश्रकाययोगी | २७४ | ६५३ | प्रमत्तस्यत | ३०७ | ६८१ |
| मिथ्याहाट्टि | २७५ | ६५५ | अप्रमत्तस्यत | ३०८ | ६८२ |
| सासादनसम्यग्हाट्टि | २७६ | ६५६ | अपूर्वकरण | ३०९ | ६८२ |
| असत्यतसम्यग्हाट्टि | २७७ | " | अनिवृत्तिकरण | ३१० | ६८३ |
| सयोगिकेवली | २७८ | ६५८ | २ पुट्यवेदी | | |
| त्रैकिककाययोगी | २७९ | ६६१ | सामान्य | ३११ | ६८४ |
| मिथ्याहाट्टि | २८० | ६६२ | पर्याप्त | ३१२ | ६८४ |
| सासादनसम्यग्हाट्टि | २८१ | ६६२ | | | |

| विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. |
|--------------------|----------|-----------|--------------------|----------|-----------|
| सासादनसम्यग्हाट्टि | ३३८ | ६८५ | अपर्याप्त | ३३३ | ६८५ |
| सामान्य | ३३९ | ६८६ | मिथ्याहाट्टि | | |
| पर्याप्त | ३४० | " | सामान्य | ३३४ | ६८६ |
| अपर्याप्त | ३४० | ६८७ | पर्याप्त | ३३५ | " |
| सम्यग्मिथ्याहाट्टि | ३४१ | ६८७ | अपर्याप्त | ३३६ | ६८७ |
| असत्यतसम्यग्हाट्टि | | | सासादनादि | | |
| सामान्य | ३४२ | ६८८ | ३ नपुसकवेदी | | |
| पर्याप्त | ३४३ | ६८८ | सामान्य | ३३७ | ६८८ |
| अपर्याप्त | ३४४ | ६८९ | पर्याप्त | ३३८ | ६८९ |
| संयतास्यत | ३४५ | ६९० | अपर्याप्त | ३३९ | ६९० |
| प्रमत्तस्यत | ३४६ | ६९० | मिथ्याहाट्टि | | |
| अप्रमत्तस्यत | ३४७ | ६९० | सामान्य | ३२० | ६९० |
| अपूर्वकरण | ३४८ | ६९१ | पर्याप्त | ३२१ | ६९१ |
| अनिवृत्तिकरण | | | अपर्याप्त | ३२२ | ६९२ |
| ५० भा० | ३४९ | ६९२ | सासादनसम्यग्हाट्टि | | |
| " द्वि० भा० | ३५० | ६९३ | सामान्य | ३२३ | ६९३ |
| मान, माया और | | " | पर्याप्त | ३२४ | " |
| लोभमन्वयायी | | ६९४ | अपर्याप्त | ३२५ | ६९४ |
| अरुपायी | ३५१ | ६९५ | सम्यग्मिथ्याहाट्टि | ३२६ | ६९५ |
| उपशान्तकपायादि | | | असत्यतसम्यग्हाट्टि | | |
| ७ ज्ञानमार्गणा | | | सामान्य | ३२७ | ६९५ |
| मतिश्रुत-अज्ञानी | | | पर्याप्त | ३२८ | ६९६ |
| सामान्य | ३५२ | ६९७ | अपर्याप्त | ३२९ | ६९७ |
| पर्याप्त | ३५३ | ६९८ | संयतास्यत | ३३० | ६९८ |
| अपर्याप्त | ३५४ | ६९८ | प्रमत्तस्यतादि | | |
| मिथ्याहाट्टि | | | ४ अपगतवेदी | | |
| सामान्य | ३५५ | ६९९ | अनिवृत्तिकरण | | |
| पर्याप्त | ३५६ | ६९९ | द्वितीय भागादि | | |
| अपर्याप्त | ३५७ | ६९९ | ६ कपायमार्गणा | | |
| सासादनसम्यग्हाट्टि | | | कोधरुपायी | | |
| सामान्य | ३५८ | ७०० | सामान्य | ३३२ | ७०० |
| पर्याप्त | ३५९ | ७०१ | पर्याप्त | ३३३ | ७०१ |
| अपर्याप्त | ३६० | " | अपर्याप्त | ३३४ | " |
| विषयज्ञानी | ३६१ | ७०१ | मिथ्याहाट्टि | | |
| मिथ्याहाट्टि | ३६२ | ७०२ | सामान्य | ३३५ | ७०२ |
| सासादनसम्यग्हाट्टि | ३६३ | ७०३ | पर्याप्त | ३३६ | ७०३ |
| मतिश्रुतज्ञानी | | | अपर्याप्त | ३३७ | ७०३ |

संक्षरूपणा

| विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. |
|--------------------|----------|-----------|-------------------|----------|-----------|
| सामान्य | ३६४ | ७२२ | अपर्याप्त | ३८६ | ७४२ |
| पर्याप्त | ३६५ | ७२३ | सासादनसम्पत्तद्वि | | ७४३ |
| अपर्याप्त | ३६६ | ७२४ | २ अचक्षुदर्शनी | | |
| असंयतसम्पत्तद्वि— | | | सामान्य | ३८७ | ७४३ |
| सामान्य | ३६७ | ७२४ | पर्याप्त | ३८८ | ७४४ |
| पर्याप्त | ३६८ | ७२५ | अपर्याप्त | ३८९ | " |
| अपर्याप्त | ३६९ | ७२६ | मिथ्याद्वि | | |
| संयतासंयतादि | | | सामान्य | ३९० | ७४५ |
| अवधिद्वान्नी | | | पर्याप्त | ३९१ | ७४६ |
| मनःपर्यायद्वान्नी | ३७० | ७२७ | अपर्याप्त | ३९२ | ७४७ |
| प्रमत्तसंयतादि | ३७१ | ७२९ | सासादनसम्पत्तद्वि | | ७४७ |
| केवलद्वान्नी | | | ३ अवाधिदर्शनी | | |
| स्योगी आदि | ३७२ | ७३० | सामान्य | ३९३ | ७४८ |
| सयममार्गणा | ३७३ | ७३० | पर्याप्त | ३९४ | ७४८ |
| प्रमत्तसंयत | ३७३ | ७३१ | अपर्याप्त | ३९५ | ७४९ |
| अप्रमत्तसंयत | ३७४ | ७३२ | असंयतसम्पत्तद्वि | | |
| अपूर्वकरणादि | | | ४ केवलदर्शनी | | |
| सामयिकशुद्धिसंयत | ३७५ | ७३३ | १० लेख्यामार्गणा | | ७५० |
| प्रमत्तसंयतादि | | | १ कृष्णलेख्या | | ७५० |
| छेद्योपस्थापनासंयत | ३७६ | ७३३ | सामान्य | ३९६ | ७५० |
| परिहारशुद्धिसंयत | | | पर्याप्त | ३९७ | ७५१ |
| प्रमत्तसंयतादि | ३७७ | ७३५ | अपर्याप्त | ३९८ | ७५२ |
| सूक्ष्मसाधारणसंयत | | | मिथ्याद्वि | | |
| यथाख्यातसंयत | ३७७ | ७३५ | सामान्य | ३९९ | ७५३ |
| उपशान्तकथायादि | | | पर्याप्त | ४०० | " |
| असंयत | | | अपर्याप्त | ४०१ | ७५४ |
| सामान्य | ३७८ | ७३६ | सासादनसम्पत्तद्वि | | |
| पर्याप्त | ३७९ | " | सामान्य | ४०२ | ७५५ |
| अपर्याप्त | ३८० | ७३७ | पर्याप्त | ४०३ | " |
| मिथ्याद्वि | | | अपर्याप्त | ४०४ | ७५६ |
| ९ दर्शनमार्गणा | | | सामयिमिथ्याद्वि | | ७५७ |
| १ चक्षुदर्शनी | | | असंयतसम्पत्तद्वि | | |
| सामान्य | ३८१ | ७३८ | सामान्य | ४०६ | ७५७ |
| पर्याप्त | ३८२ | ७३९ | पर्याप्त | ४०७ | ७५८ |
| अपर्याप्त | ३८३ | ७४० | अपर्याप्त | ४०८ | ७५९ |
| मिथ्याद्वि | | | २ नीलेख्या | | ७५९ |
| सामान्य | ३८४ | ७४१ | ३ कापोतलेख्या | | ७६० |
| पर्याप्त | ३८५ | " | सामान्य | ४०९ | ७६१ |

| विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. |
|-------------------|----------|-----------|-------------------|----------|-----------|
| अपर्याप्त | ४४० | ७६० | पर्याप्त | ४१० | ७६० |
| मिथ्याद्वि | | | अपर्याप्त | ४११ | ७६१ |
| सामान्य | ४४१ | ७६१ | मिथ्याद्वि | | |
| पर्याप्त | ४४२ | ७६२ | सामान्य | ४१२ | ७६२ |
| अपर्याप्त | ४४३ | ७६३ | पर्याप्त | ४१३ | ७६२ |
| सासादनसम्पत्तद्वि | | | अपर्याप्त | ४१४ | ७६३ |
| सामान्य | ४४४ | ७६३ | सासादनसम्पत्तद्वि | | |
| पर्याप्त | ४४५ | ७६४ | सामान्य | ४१५ | ७६४ |
| अपर्याप्त | ४४६ | " | पर्याप्त | ४१६ | " |
| सामयिमिथ्याद्वि | | | अपर्याप्त | ४१७ | ७६५ |
| असंयतसम्पत्तद्वि | | | मिथ्याद्वि | | |
| सामान्य | ४४७ | ७६६ | सामयिमिथ्याद्वि | | |
| पर्याप्त | ४४८ | ७६६ | असंयतसम्पत्तद्वि | | |
| अपर्याप्त | ४४९ | ७६६ | सामान्य | ४१८ | ७६६ |
| संयतासंयत | ४५० | ७६७ | पर्याप्त | ४१९ | ७६६ |
| प्रमत्तसंयत | ४५१ | ७६८ | अपर्याप्त | ४२० | ७६७ |
| अप्रमत्तसंयत | ४५२ | ७६८ | अपर्याप्त | ४२१ | ७६८ |
| ६ शुक्लेख्या | | | ४ तेजोलेख्या | | |
| सामान्य | ४५३ | ७६९ | सामान्य | ४२२ | ७६९ |
| पर्याप्त | ४५४ | ७७० | पर्याप्त | ४२३ | ७६९ |
| अपर्याप्त | ४५५ | ७७० | अपर्याप्त | ४२४ | ७७० |
| मिथ्याद्वि | | | मिथ्याद्वि | | |
| सामान्य | ४५६ | ७७१ | सामान्य | ४२५ | ७७१ |
| पर्याप्त | ४५७ | " | पर्याप्त | ४२६ | " |
| अपर्याप्त | ४५८ | ७७२ | अपर्याप्त | ४२७ | ७७२ |
| सासादनसम्पत्तद्वि | | | सासादनसम्पत्तद्वि | | |
| सामान्य | ४५९ | ७७३ | सामान्य | ४२८ | ७७३ |
| पर्याप्त | ४६० | " | पर्याप्त | ४२९ | " |
| अपर्याप्त | ४६१ | ७७४ | अपर्याप्त | ४३० | ७७४ |
| सामयिमिथ्याद्वि | | | सामयिमिथ्याद्वि | | |
| असंयतसम्पत्तद्वि | | | असंयतसम्पत्तद्वि | | |
| सामान्य | ४६२ | ७७६ | सामान्य | ४३१ | ७७६ |
| पर्याप्त | ४६३ | " | पर्याप्त | ४३२ | " |
| अपर्याप्त | ४६४ | ७७७ | पर्याप्त | ४३३ | ७७७ |
| संयतासंयत | ४६५ | ७७७ | अपर्याप्त | ४३४ | ७७७ |
| प्रमत्तसंयत | ४६६ | ७७८ | संयतासंयत | ४३५ | ७७८ |
| अप्रमत्तसंयत | ४६७ | ७७९ | प्रमत्तसंयत | ४३६ | ७७९ |
| अपूर्वकरणादि | | | अप्रमत्तसंयत | ४३७ | ७७९ |
| सामान्य | ४६८ | ७७९ | ५ पञ्चलेख्या | | |
| पर्याप्त | ४६९ | ७८० | सामान्य | ४३८ | ७८० |
| अपर्याप्त | ४७० | ७८० | पर्याप्त | ४३९ | ७८० |

| विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. | विषय | नकशा नं. | पृष्ठ नं. |
|-------------------------|----------|-----------|--------------------|----------|-----------|--------------------|----------|-----------|
| ७ अलेख | | ८०१ | अपर्याप्त | ४९४ | ८१२ | मिथ्याहृष्टि | | |
| ११ भाष्यमार्गणा | | " | सामान्य | ४९५ | ८२० | सामान्य | ५२० | ८४६ |
| भब्यसिद्धि | | " | पर्याप्त | ४९६ | " | पर्याप्त | ५२१ | ८४७ |
| अभ्युत्थानिक | | ८०१ | अपर्याप्त | ४९७ | ८२१ | सासादनसम्यग्दृष्टि | ५२३ | " |
| सामान्य | ४७० | ८०२ | संयतासंयत | ४९८ | ८२१ | सामान्य | ५२३ | ८४८ |
| पर्याप्त | ४७१ | ८०३ | प्रमत्तसंयत | ४९९ | ८२२ | पर्याप्त | ५२४ | " |
| अपर्याप्त | ४७२ | ८०३ | अप्रमत्तसंयत | ५०० | ८२३ | अपर्याप्त | ५२५ | ८५० |
| मन्यमन्य गिमुक्त | | ८०३ | अपूर्वकरणदि | | ८२५ | सम्यग्मिथ्याहृष्टि | ५२६ | ८५१ |
| १२ सामान्यमार्गणा | | ८०३ | मिथ्यात्वादि | | ८२५ | असंयतसम्यग्दृष्टि | | ८५२ |
| सामान्य | ४७३ | ८०३ | १३ सक्षिमार्गणा | | ८२५ | सामान्य | ५२७ | " |
| पर्याप्त | ४७४ | ८०४ | २ संगी | | ८२५ | पर्याप्त | ५२८ | ८५३ |
| अपर्याप्त | ४७५ | ८०५ | सामान्य | ५०१ | ८२५ | अपर्याप्त | ५२९ | ८५४ |
| असंयतसम्यग्दृष्ट्यादि | | ८०६ | पर्याप्त | ५०५ | ८२६ | संयतासंयत | ५३० | " |
| १ क्षात्रिकसम्यग्दृष्टि | | ८०६ | अपर्याप्त | ५०६ | ८२७ | प्रमत्तसंयत | ५३१ | ८५५ |
| सामान्य | ४७६ | ८०७ | मिथ्याहृष्टि | | | | | |
| पर्याप्त | ४७७ | ८०८ | सामान्य | ५०४ | ८२७ | | | |
| अपर्याप्त | ४७८ | " | पर्याप्त | ५०५ | ८२८ | | | |
| असंयतसम्यग्दृष्टि | | ८०९ | अपर्याप्त | ५०६ | ८२९ | | | |
| सामान्य | ४७९ | ८१० | सासादनसम्यग्दृष्टि | | | | | |
| पर्याप्त | ४८० | ८१० | सामान्य | ५०७ | ८२९ | | | |
| अपर्याप्त | ४८१ | ८११ | पर्याप्त | ५०८ | ८३० | | | |
| संयतासंयत | ४८२ | ८११ | अपर्याप्त | ५०९ | " | | | |
| प्रमत्तसंयतादि | | ८१२ | सम्यग्मिथ्याहृष्टि | ५१० | ८३१ | | | |
| २ वैरुक्तसम्यग्दृष्टि | | ८१२ | असंयतसम्यग्दृष्टि | | | | | |
| सामान्य | ४८३ | ८१२ | सामान्य | ५११ | ८३२ | | | |
| पर्याप्त | ४८४ | ८१३ | पर्याप्त | ५१२ | ८३२ | | | |
| अपर्याप्त | ४८५ | " | अपर्याप्त | ५१३ | ८३३ | | | |
| असंयतसम्यग्दृष्टि | | ८१४ | संयतासंयतादि | | ८३३ | | | |
| सामान्य | ४८६ | ८१४ | २ असंशी | | ८३३ | | | |
| पर्याप्त | ४८७ | ८१५ | सामान्य | ५१४ | ८३४ | | | |
| अपर्याप्त | ४८८ | " | पर्याप्त | ५१५ | " | | | |
| संयतासंयत | ४८९ | ८१६ | अपर्याप्त | ५१६ | ८३५ | | | |
| प्रमत्तसंयत | ४९० | ८१६ | १४ आहारमार्गणा | | | | | |
| अप्रमत्तसंयत | ४९१ | ८१७ | सामान्य | ५१७ | ८३६ | | | |
| २ उपशान्तसम्यग्दृष्टि | | ८१७ | पर्याप्त | ५१८ | ८३७ | | | |
| सामान्य | ४९२ | ८१८ | अपर्याप्त | ५१९ | ८३८ | | | |
| पर्याप्त | ४९३ | ८१८ | | | ८३८ | | | |

सत्प्ररूपणानि

आलापान्तर्गत विशेष विषयोंकी सूची

| क्रम नं. | विषय | पृष्ठ नं. | क्रम नं. | विषय | पृष्ठ नं. |
|----------|---------------------------------------------------------------------------|-----------|----------|---------------------------------------------------------------------------|-----------|
| १ | प्ररूपणाका स्वरूप और भेद-निरूपण | ४११ | ८ | अपर्याप्त कालमें तीनों सम्यक्त्वोंके होनेका कारण | ४३० |
| २ | प्राणका स्वरूप और प्राणोंका पृथक् निर्देश कथन | ४१२ | ९ | भावलेख्यके स्वरूपमें मतभेद और उसका निराकरण | ४३१ |
| ३ | संज्ञाके भेद और उनका पृथक् निर्देश | ४१३ | १० | अप्रमत्तसंयतके तीन संग्राहोंके होनेमें हेतु | ४३३ |
| ४ | उपयोगका स्वरूप और उसका पृथक् निर्देश | ४१४ | ११ | अपूर्वकरण गुणस्थानमें वचनयोग और काययोगके होनेका कारण | ४३४ |
| ५ | प्ररूपणाओंका सूत्रोक्तत्व-अनुक्तत्व-विचार और भेदाभेद निरूपण | ४१४ | १२ | उपशान्तकप्रयादि गुणस्थानोंमें शुद्धलेख्य हेतिका कारण | ४३९ |
| ६ | अपर्याप्तकालमें डब्यलेख्य कापोत और शुद्ध ही क्यों होती है, इस बातका विचार | ४२२ | १३ | कपाट, प्रतर और लोकप्रण समु-दातगत वैश्वलिके पर्याप्त-अप-र्याप्तत्वका विचार | ४३९ |
| ७ | अपर्याप्त कालमें छद्मों भावलेख्य-ओंके होनेका कारण | ४२२ | १४ | भवेन्निद्रयज्ञ लक्षण और केवलीके उसके अभावका समर्थन | ४३४ |

शुद्धि पत्र

| क्रम नं. | विषय | पृष्ठ नं. | क्रम नं. | विषय | पृष्ठ नं. |
|----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------|----------|-------------------------------------------------------------|-----------|
| १५ | अयोगिकबलीके एक आयुभ्रमका समर्थन | ४४५ | २७ | अशुद्ध पंक्ति [हि] पल्ले सरलो | ४२१ |
| १६ | कालाकालाभास द्रव्यलेखाका स्वरूप | ४४८ | ६८ | अशुद्ध पंक्ति [हि] ह्रम दोनो | ४२८ |
| १७ | तिर्थचौके अपर्याप्तकालमें शायिक और क्षायोपश्रमिक सम्यन्त्वका समर्थन | ४८१ | १०३ | अशुद्ध पंक्ति [हि] इन सबकी दशाका | ४३१ |
| १८ | संयतासंयत तिर्थचौके क्षायिक-सम्यन्त्वके अभावका कारण | ४८२ | ११० | अशुद्ध पंक्ति [हि] निर्गुण ही है | ४३३ |
| १९ | अयोगिकबलीके अनाहारकत्व-समर्थन | ५०३ | १३८ | अशुद्ध पंक्ति [हि.] नामकर्मका उदय | ४३६ |
| २० | असंयतसम्यन्त्वी मनुष्यके अपर्याप्त कालमें एक पुरुषवेद तथा भावलेखाओंके होनेका कारण | ५१० | १७५ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ४५० |
| २१ | मनुष्यनियोंके आहारकक्षरीर न होनेका कारण | ५१२ | १८२ | अशुद्ध पंक्ति [हि] ११ वीं पंक्तिसे आगे | ४५३ |
| २२ | देवोंके पर्याप्तकालमें लहों द्रव्य-लेखाओंका समर्थन | ५३२ | ३ | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ४५९ |
| २३ | देवोंके अपर्याप्तकालमें उपशम-सम्यन्त्वका सद्भाव समर्थन | ५५९ | १९५ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ५०६ |
| २४ | अनुदिशादि देवोंके पर्याप्तकालमें उपशमसम्यन्त्वके अभावका विशिष्ट समर्थन | ५६६ | १८२ | अशुद्ध पंक्ति [हि] ११ वीं पंक्तिसे आगे | ५०६ |
| २५ | जीवसमासोंके एकसे लगाकर ५७ भेदों तकका निरूपण | ५९१ | ३ | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ५६९ |
| २६ | बादर जलकायिक जीवोंके वर्णका विचार | ६०९ | ७ | अशुद्ध पंक्ति [हि.] अपेक्षा पर | ५७० |
| २७ | मनोयोगियोंके वचन और काय-प्राणके अस्तित्वका समर्थन | ६२८ | २३० | अशुद्ध पंक्ति [हि.] अपेक्षा पर | ५९२ |
| २८ | सयोगिकबलीके जीवसमासके अस्तित्वका समर्थन | ६५३ | २४० | अशुद्ध पंक्ति [मूल] -मिति | ७५२ |
| २९ | औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके द्रव्यसे एक कापोतलेखा अथवा लहों लेखाए और भावसे लहों लेखाओंके अस्तित्वका प्रतिपादन | ६५३ | १ | अशुद्ध पंक्ति [हि] चाहिये। | ७५२ |
| ३० | औदारिकमिश्रकाययोगी असंयत-विपक्षी भावोंके बतानेका कारण | ६५३ | ५ | अशुद्ध पंक्ति [हि.] पूर्ण होनेकी पूर्ण नहीं होनेकी | ७५२ |

(पुस्तक-१)

(पुस्तक-२)

| | | | | |
|-----|-------------------------------------------------------------|-----|-------------------------------------------------------------|-----|
| २७ | अशुद्ध पंक्ति [हि] पल्ले सरलो | ४२१ | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ४५९ |
| ६८ | अशुद्ध पंक्ति [हि] ह्रम दोनो | ४२८ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ५०६ |
| १०३ | अशुद्ध पंक्ति [हि] इन सबकी दशाका | ४३१ | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ५६९ |
| ११० | अशुद्ध पंक्ति [हि] निर्गुण ही है | ४३३ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ७०६ |
| १३८ | अशुद्ध पंक्ति [हि.] नामकर्मका उदय | ४३६ | अशुद्ध पंक्ति [हि] ११ वीं पंक्तिसे आगे | ७०६ |
| १७५ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ४५० | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ७५२ |
| १८२ | अशुद्ध पंक्ति [हि] ११ वीं पंक्तिसे आगे | ४५३ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ७५२ |
| ३ | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ४५९ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ७५२ |
| १९५ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ५०६ | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ७५२ |
| २३० | अशुद्ध पंक्ति [हि.] अपेक्षा पर | ५६९ | अशुद्ध पंक्ति [मूल] नान्यन्तरेण | ७५२ |
| २४० | अशुद्ध पंक्ति [मूल] -मिति | ५७० | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ७५२ |
| १ | अशुद्ध पंक्ति [हि] चाहिये। | ५९२ | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ७५२ |
| ५ | अशुद्ध पंक्ति [हि.] पूर्ण होनेकी पूर्ण नहीं होनेकी | ७५२ | अशुद्ध पंक्ति [हि] शंका-क्षपकश्रेणीमें होनेवाले परिणामोंमें | ७५२ |

७८८ (पिडिका ?)

संतपुरुषणा—आत्म



सिरि-भगवंत-गुफ्फदंत-सूदवाल-पुस्तकालय

छवखंडागमे

जीवद्वानं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइया टीका

धवल

संपदि संत-सुत्त-विवरण-समत्ताणंतरं तेसिं परूवणं भणिस्सामो । परूवणा गाम कि उचं होदि ? ओषादेसेहि गुणेषु जीवसमासेसु पञ्चचीसु पाणेषु सण्णासु गदीणु इंदिरसु काणसु जोगेषु वेदेसु कसाएसु गाणेषु संजमेसु दंसणेषु लेस्सासु भविएसु अभविएसु सम्मत्तेसु सण्णि-असण्णीसु आहारि-अणाहारीसु उवजोगेषु च पञ्चत्तापञ्च-विसेसणेहि विसेसिज्जाण जा जीव-परिक्खा सा परूवणा गाम । उचं च—

गुण जीवा पज्जती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य ।

उवजोगो वि य कमसो वीस तु परूवणा भणियाँ ॥२१७॥

सत्परूपणाके सूयोंका विवरण समाप्त हो जानेके अनन्तर अब उनकी प्ररूपणाका वर्णन करते हैं—

शंका—प्ररूपणा किसे कहते हैं ?

समाधान—सामान्य और विशेषकी अपेक्षा गुणस्थानोंमें, जीवसमासोंमें, पर्याप्तियोंमें, प्राणोंमें, संज्ञाओंमें, गतियोंमें, इन्द्रियोंमें, कार्योंमें, वेदोंमें, कर्मायोंमें, ज्ञानोंमें, संयमोंमें, कर्तव्योंमें, तेइयाओंमें, भव्योंमें, अभव्योंमें; सम्यक्त्वोंमें, संश्री-असंश्रियोंमें, आहारी-अनाहारियोंमें और उपयोगोंमें पर्याप्त और अपर्याप्त विशेषणोंसे विशेषित करके जो जीवोंकी परीक्षा की जाती है, उसे प्ररूपणा कहते हैं । कदा भी है—

गुणमन्यान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, चौवट मार्गणापं और उपयोग, इस प्रकार कमसे वीस प्ररूपणापं कही गई हैं ॥ २१७ ॥

१ गो. बी २

सेसाणं परूवणाणमत्थो बुचो । पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो बुचदे । प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्वलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः; चक्षुरादिक्रियोप-शमनिवन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात् । नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः; चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्ति-निमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात् । न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति; मनोवर्गणा-स्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मवलस्य चैकत्वविरोधात् । नापि वाग्वलं भाषा-पर्याप्तावन्तर्भवति; आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नायाः भाषावर्गणा-स्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात् । नापि कायबलं शरीर-पर्याप्तावन्तर्भवति; वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिवन्धनपुद्गल-प्रचयस्य चैकत्वाभावात् । तथोच्छ्वासनिश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरसामपुद्गलोपादा-

वीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं, अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं । जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं ।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान— पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास-निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं ।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति यदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति यदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है । उसीप्रकार उक्त पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तियमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है । उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तियमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है । तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तियमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्याप्तियसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है । तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तियमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल-रसभागकी निमित्त-भूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है । इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलोपा-

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति ।

सण्णा चउच्चिह्वा आहार-भय-मेहुण-परिगह-सण्णा वेदि । मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वात्तुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभैकत्वमास्कन्दति; लोभोदयसामान्यस्यालौकिकबोधार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधान्तौ भेदान् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः । न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति; ज्ञानह्रगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् ।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किञ्च सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति ? किं चालम् ? यदि नोक्ता, नयं प्ररूपणा भवति; सूत्रात्तुक्तप्रतिपादनात् । अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्यायाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये ।

संज्ञा चार प्रकारकी है; आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा । शंका—मैथुनसंज्ञाका चेदमें अन्तर्भाव हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय-विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है । इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषयके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषयके उदयरूप सामान्य लोभका भेद है । अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रहसंज्ञा कहते हैं, और लोभकषयके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं ।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञापं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त-गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है ।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं । वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणमें अन्तर्भूत नहीं होता है; क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग मानतेमें विरोध आता है ।

शंका—यह वीस प्रकारकी प्ररूपणा रही आओ, किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं ?

प्रतिशंका—इस प्रश्नसे स्या प्रयोजन है ?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कहीं गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है, क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है । और यदि सूत्रानुसार कही गई है, तो जीवसमास, प्राण, पर्याप्ति, उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें

प्त्युपयोगसंज्ञानां मार्गणासु यथान्तर्भावो भवति तथा वक्तव्यमिति । न द्वितीयपक्षोक्त-दोषोऽनभ्युपगमात् । प्रथमपक्षेऽन्तर्भावो वक्तव्यश्वेदुच्यते । पर्याप्तिजीवसमासाः कायेन्द्रियमार्गणयोर्निलीनाः; एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियशुम्बादरपर्याप्तापर्याप्तभेदानां तत्र प्रतिपादितत्वात् । उच्छ्वाससाधामनोबलप्राणाश्च तत्रैव निलीनाः; तेषां पर्याप्तिकार्यत्वात् । कायबलप्राणोऽपि योगमार्गणातो निर्गतः; बललक्षणत्वाद्योगस्य । आयुःप्राणो गतौ निलीनः; द्वयोरन्योन्याविनाभावित्वात् । इन्द्रियप्राणा ज्ञानमार्गणायां निलीनाः; भावेन्द्रियस्य ज्ञानावरणक्षयोपशमरूपत्वात् । आहारे या तृष्णा कांक्षा साहारसंज्ञा । सा च रतिरूपत्वान्मोहपर्यायः । रतिरपि रागरूपत्वान्मायालोभयोरन्तर्भवति । ततः कषायमार्गणाया-माहारसंज्ञा द्रष्टव्या । भयसंज्ञा भयात्मिका । भयञ्च क्रोधमानयोरन्तर्लीनसु; द्वेरूपत्वात् । ततो भयसंज्ञापि कषायमार्गणाप्रभवा । मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणाप्रभेदः; स्त्रीपुंनपुंसकवेदानां तीव्रोदयरूपत्वात् । परिग्रहसंज्ञापि कषायमार्गणोद्भूता; बाह्यार्थालीढलोभरूपत्वात् । साका-

जिसप्रकार अन्तर्भाव होता है उसप्रकार कथन करना चाहिये ?

समाधान—दूसरे पक्षमें दिया गया द्रूपण तो यहां पर आता नहीं है, क्योंकि, वैसा माना नहीं गया है । तथा प्रथम पक्षमें जो जीवसमास आदिके चौवह मार्गणाओंमें अन्तर्भाव करनेकी बात कही है, सो कहा जाता है । पर्याप्ति और जीवसमास प्ररूपणा काय और इन्द्रिय मार्गणोंमें अन्तर्भूत हो जाती हैं, क्योंकि, एकेन्द्रिय, डीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय, सूक्ष्म, वादर, पर्याप्त और अपर्याप्तरूप भेदोंका उक्त दोनों मार्गणाओंमें प्रतिपादन किया गया है । उच्छ्वासनिश्वास, वचनबल और मनोबल, इन तीन प्राणोंका भी उक्त दोनों मार्गणाओंमें अन्तर्भाव होता है, क्योंकि, ये तीनों प्राण पर्याप्तियोंके कार्य हैं । कायबलप्राण भी योगमार्गणासे निकला है, क्योंकि, योग काय, वचन और मनोबलस्वरूप होता है । आयुप्राण गतिमार्गणमें अन्तर्भूत है, क्योंकि, आयु और गति ये दोनों परस्पर अविनाभावी हैं । अर्थात् विवाक्षित गतिके उदय होने पर तज्जातीय आयुका उदय होता है और विवाक्षित आयुके उदय होने पर तज्जातीय गतिका उदय होता है । इन्द्रियप्राण ज्ञानमार्गणोंमें अन्तर्लीन हो जाते हैं, क्योंकि, भावेन्द्रियां ज्ञानावरणके क्षयोपशमरूप होती हैं । आहारके विषयमें जो तृष्णा या आकांक्षा होती है उसे आहारसंज्ञा कहते हैं । वह रतिस्थरूप होनेसे मोहकी पर्याय (भेद) है । रति भी रागरूप होनेके कारण माया और लोभमें अन्तर्भूत होती है । इसलिये कषायमार्गणोंमें आहारसंज्ञा समझना चाहिये । भयसंज्ञा भयरूप है, और भय द्वेरूप होनेके कारण क्रोध और मानमें अन्तर्भूत है, इसलिये भयसंज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई समझना चाहिये । मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणाका प्रभेद है, क्योंकि, वह मैथुनसंज्ञा स्त्रीविद, पुरुषवेद और नपुंसकवेदके तीव्र उदयरूप है । परिग्रहसंज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई है, क्योंकि, यह संज्ञा बाह्य पदार्थोंमें व्याप्त लोभरूप है । साकार उपयोग ज्ञानमार्गणोंमें और अनाकार उपयोग दर्शनमार्गणोंमें

१ इदियकएलीणा जीवापज्जति आयुमासमणो । जोगे काओ गणे अक्खा गदिपगणे आऊ ॥ गो. जी ५

२ मायालोहे रदियुक्काहार कोहमाणगभिद मय । वेदे मेहुणसण्णा लोहदि परिगहे मण्णा ॥ गो. जी ६

रोपयोगो ज्ञानमार्गणायामनाकारोपयोगो दर्शनमार्गणायाम् (अन्तर्भवति) तयोज्ञानदर्शनरूपत्वात् । न र्पानरुक्त्यमपि; कथञ्चित्तेभ्यो भेदात् । प्ररूपणायाम् किं प्रयोजनमिति चेदुच्यते, यद्वेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थं विंशतिविधानेन प्ररूपणोच्यते ।

तस्य 'ओषेण अत्यि मिच्छाद्वी सिद्धा० चेदि' एदस्स ओष-सुत्तस्स ताव परूपाण उचदे । ते जहा- *अत्यि चोद्दस गुणद्वानि चोद्दस-गुणद्वानादीद-गुणद्वानि पि अत्यि । अत्यि चोद्दस जीवसमासा । के ते ? एवंदिद्या दुविहा वादरा सुहुमा ।

अन्तर्भूत होते हैं, स्यात्कि, वे दोनों गान और दर्शनरूप ही हैं । ऐसा होते हुए भी उक्त प्ररूपणों के स्वरूप कथन करनेमें पुनरुक्ति दोष भी नहीं आता है; क्योंकि, मार्गणार्थसे उक्त प्ररूपणार्थं कथञ्चित् भिन्न है ।

शुंका—प्ररूपणा करनेमें क्या प्रयोजन है ?

समाधान—सूत्रके द्वारा सूचित पदार्थके स्पर्शकरण करनेके लिये वीस प्रकारसे प्ररूपणा कही जाती है ।

'सामान्यसे मिथ्यादृष्टि, सासादृतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, भयताभंयत, प्रमत्तसंयत, अमत्तसंयत, अपूर्वकरणप्रविष्ट शुद्धि संयतोमं उपशमक और क्षपक, अनित्यस्वरूप प्रविष्ट-शुद्धि संयतोमं उपशमक और क्षपक, सूक्ष्मसांप्रप्राय प्रविष्ट-शुद्धि संयतोमं उपशमक और क्षपक, उपशमकपाय-वीतराग-छमस्य, क्षीणरूपाय वीतराग छमस्य, संयोग-केरली और ज्योगकेवली जीव होते हैं । तथा सिद्ध भी होते हैं।' पहले इस सामान्य सूत्री प्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है—चौदहों गुणस्थान हैं और चौदह गुणस्थानोंसे अतीत-गुणस्थान भी है । चौदहों जीवसमास हैं ।

शुंका—वे चौदहों जीवसमास कौनसे हैं ?

१ मागतो उज्जोगो णणं मण्डिरं दत्तणे गणे । आगतो उज्जोगो लोणो वि जिणेहि णिदिठ्ठ ॥ गो वी ७
२ जी. ग. पृ. ९-२३

सामान्य जीवोंके सामान्य आलाप.

| प | प्रा | म | ग | म | ग | यो | वे | क | ता | स | द | ले | म | त | स | जा. | उ. |
|----|------|---|---|---|---|----|----|---|----|---|---|----|---|---|---|-----|----|
| १ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| २ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ४ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ७ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ८ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ९ | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १० | १० | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

वादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता । सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता । वीइदिद्या दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता । तीइदिद्या दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता । चउरिदिद्या दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता । पंचिदिद्या दुविहा सण्णणो असण्णणो । सण्णणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता । असण्णणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि' । एदे चोद्दस जीवसमासा अदीद-जीवसमासा वि अत्यि । अत्यि छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अदीद-पज्जत्ती वि अत्यि । आहारपज्जत्ती सरीरपज्जत्ती इंदियपज्जत्ती आणापाणपज्जत्ती मासापज्जत्ती मणपज्जत्ती चेदि । एदाओ छ पज्जत्तीओ सण्णपज्जत्ताणं । एदेसिं चैव अपज्जत्तकाले एदाओ चैव असमत्ताओ छ अपज्जत्तीओ भवंति । मणपज्जत्तीए विणा एदाओ चैव पंच पज्जत्तीओ असण्ण-पंचिदिय-पज्जत्तकाले जाव वीइदिय-पज्जत्ताणं भवंति । तेषिं चैव अपज्जत्ताणं एदाओ चैव अणिएपणाओ पंच अपज्जत्तीओ वुचंति । एदाओ चैव भासा मणपज्जत्तीहि विणा चत्तारि पज्जत्तीओ इंदिय-पज्जत्ताणं भवंति । एदेसिं चैव अपज्जत्तकाले एदाओ चैव असंपुणाओ चत्तारि अपज्जत्तीओ भवंति । एदासिं छण्हम-

समाधान—'एकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, वादर और सूक्ष्म । वादर जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त । सूक्ष्म जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त । त्रीन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त । त्रीन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त । चतुरिन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त । पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, सखी और असखी । सखी जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त । असखी जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त । इसप्रकार ये चौदह जीवसमास होते हैं ।

अतीत-जीवसमास भी जीव होते हैं । छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पात्र पर्याप्तियां, पात्र अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां और चार अपर्याप्तियां हैं । तथा अतीतपर्याप्ति भी है । आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, आनापात्रपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति और मनःपर्याप्ति ये छह पर्याप्तियां हैं । ये छहों पर्याप्तियां सखी-पर्याप्ति के होती हैं । इन्हीं सखी जीवोंके अपर्याप्त कालमें पूर्णताको प्राप्त नहीं हुईं थे ही छह अपर्याप्तियां होती हैं । मनःपर्याप्तिके विना उक्त पांचों ही पर्याप्तियां असंश्लेषेन्द्रिय-पर्याप्तोंके लेकर त्रीन्द्रिय-पर्याप्तक जीवोंतक होती हैं । अपर्याप्तक अवस्थाको प्राप्त उन्हीं जीवोंके अपूर्णताको प्राप्त वे ही पांच अपर्याप्तियां होती हैं । भाषापर्याप्ति और मनःपर्याप्तिके विना ये ही चार पर्याप्तियां एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके होती हैं । इन्हीं एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालमें अपूर्णताको प्राप्त ये ही चार अपर्याप्तियां होती हैं । तथा इन छह पर्याप्तियोंके अभावको अतीतपर्याप्ति

भावो अदीद-पञ्जची गाम । उत्तं च—

आहार-सरीरिन्द्रिय-पञ्जत्ती आणपाण-भास-मणो ।

चत्तारि पच छब्बि य एइन्द्रिय-विगल-सण्णीणं ॥२१८॥

जह पुण्णापुण्णाइ मिह-घड-वत्याइयाइ दब्बाइ ।

तह पुण्णापुण्णाओ पञ्जत्तिरा मुण्येयब्बां ॥ २१९ ॥

अत्थि दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अठ पाण छप्पाण सत्त पाण पंच पाण छप्पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दोण्णि पाण एक पाण अदीद-पाणो वि अत्थि । चक्खु-सोद-घाण-जिब्ब-म-फासमिदि पंचिन्द्रियाणि, मणबल वचिबल कायबल इदि तिण्णि बला, आणापाणो आऊ चेदि एदे दस पाणा । उत्तं च—

पंच वि इन्द्रिय-पाणा मण-वचि-क्काएण तिण्णि बलपाणा ।

आणपाणपाणा आउगपाणेण होत्ति दस पाणां ॥ २२० ॥

कहते हैं । कहा भी है—

आहार, शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मन ये छह पर्याप्तियां हैं । उनमेंसे एकैन्द्रिय जीवोंके चार, विकलत्रय और असंखी-पंचेन्द्रियोंके पांच और संखी जीवोंके छह पर्याप्तिया होती हैं ॥ २१८ ॥

जिसप्रकार गृह, घट और वस्त्र आदि द्रव्य पूर्ण और अपूर्ण दोनों प्रकारके होते हैं, उसीप्रकार जीव भी पूर्ण और अपूर्ण दो प्रकारके होते हैं उनमेंसे पूर्ण जीव पर्याप्तक और अपूर्ण जीव अपर्याप्तक कहलाते हैं ॥ २१९ ॥

दश प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण और एक प्राण होते हैं तथा मतीतप्राणस्थान भी है । चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय ये पांच इन्द्रियां; मनोबल, वचनबल, कायबल ये तीन बल, स्वासोच्छ्वास और आयु ये दश प्राण होते हैं । कहा भी है—

पांचौ इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल और कायबल स्वासोच्छ्वास और आयु ये दश प्राण हैं ॥ २२० ॥

१ गो. जी ११९

२ गो. जी ११८

३ गो. जी ११०

एदे दस पाणा पंचिन्द्रिय-सण्णिपञ्जत्ताणं । आणापाण-भासा-मणेहि विणा सण्णि-असण्णि-पंचिन्द्रिय-पञ्जत्ताणं भवंति । दसण्हं पाणाण मज्जे मणेण विणा णव पाणा पाणेहि विणा सत्त पाणा भवंति । पुब्बिच्छ-णव-पाणेसु सोदिन्द्रिय-पाणे अवणिदे चक्षुरिन्द्रिय-पञ्जत्तस्स अट्ट पाणा भवंति । एदेसिं चैव चक्षुरिन्द्रिय-अपञ्जत्ताणं आणावाण-भासाहि विणा छप्पाणा भवंति । पुब्बिल-अट्टण्हं पाणाणं मज्जे चक्खिदिदि ए अवणिदे तीइन्द्रिय-पञ्जत्तयस्स सत्त पाणा भवंति । तेसु सत्तसु आणावाण-भासापाणे अवणिदे तीइन्द्रिय-अपञ्जत्तयस्स पंच पाणा भवंति । तीइन्द्रियस्स बुत्त-सत्तण्हं पाणाण मज्जे घाणिदिदि ए अवणिदे बीइन्द्रिय-पञ्जत्तयस्स छप्पाणा भवंति । तेसु छसु आणावाण-भासाहि विणा बीइन्द्रिय-अपञ्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति । बीइन्द्रिय-पञ्जत्तयस्स बुत्त-छण्हं पाणाणं मज्जे जिडिभ्रिन्द्रियपाणे भासापाणे अवणिदे एइन्द्रिय-पञ्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति । तेसु आणावाणपाणे अवणिदे एइन्द्रिय-अपञ्जत्तयस्स तिण्णि पाणा भवंति । उत्तं च—

दस सण्णीण पाणा सेसेयूणंतिमस्स वे उणा ।

पञ्जत्तेसिदरेसु य सत्त दुगे सेसगेयूणां ॥ २२१ ॥

पूर्वोक्त दश प्राण पंचेन्द्रिय संखी-पर्याप्तकोंके होते हैं । आनापान, वचनबल और मनोबल इन तीन प्राणोंके विना शेष सात प्राण संखी पंचेन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । दश प्राणोंमेंसे मनोबलके विना शेष नौ प्राण असंखी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्तकोंके होते हैं । और अपर्याप्त अवस्थाको प्राप्त इन्ही जीवोंके वचनबल और आनापान प्राणके विना शेष सात प्राण होते हैं । पूर्वोक्त नौ प्राणोंमेंसे श्रोत्रेन्द्रिय प्राणको कम कर देने पर शेष आठ प्राण चक्षुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके होते हैं । इन्ही चक्षुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आनापान और वचनबलके विना शेष छह प्राण होते हैं । पूर्वोक्त आठ प्राणोंमेंसे चक्षु इन्द्रियके कम कर देने पर शेष सात प्राण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके होते हैं । उन सात प्राणोंमेंसे आनापान और वचनबल प्राणके कम कर देने पर शेष पांच प्राण त्रीन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । त्रीन्द्रिय जीवोंके कहे गये सात प्राणोंमेंसे घ्राणेन्द्रियके कम कर देने पर शेष छह प्राण द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके होते हैं । उन छह प्राणोंमेंसे आनापान और वचनबलके कम कर देने पर शेष चार प्राण द्वीन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । द्वीन्द्रिय-पर्याप्तकोंके कहे गये छह प्राणोंमेंसे रसनेन्द्रिय-प्राण और वचनबल-प्राणके कम कर देने पर शेष तीन प्राण एकेन्द्रिय-पर्याप्तकोंके होते हैं । उनमेंसे आनापान प्राणके कम कर देने पर शेष दो प्राण एकेन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । कहा भी है—

संखी जीवोंके दश प्राण होते हैं । शेष जीवोंके एक एक प्राण कम करना चाहिये ।

१ इन्द्रियकायाऊणि य पुण्णापुण्णह पुण्णे आणा । वीइन्द्रियादिपुण्णे वचीमणो सण्णिपुण्णं ॥ गो जी १२२

२ गो जी १२३

दृग्महं पाणामभावो अदीदमाणो नाम । अस्थि चत्तारि सण्णा, सीणसण्णा वि न्निथि । काओ चत्तारि सण्णाओ इति चे ? बुद्धे-आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिमहमण्णा चेदि । एदासिं चरण्हं सण्णणं अभावो सीणसण्णा नाम । अस्थि चत्तारि गदीओ, सिद्धगदी वि अस्थि । एइदियादी पंच जादीओ, अदीद-जादी नि अस्थि । अस्थि पुढाविक्कायादी छक्काया, अदीदकाओ वि अस्थि । अस्थि पण्णरह जोगा, अजोगो वि अस्थि । अस्थि तिण्णि नेदा, अवगदवेदो वि अस्थि । अस्थि चत्तारि क्रमाया, अक्रमाओ वि अस्थि । अस्थि अट्ट गाणाणि । अस्थि सत्त संजमा, णेव संजमो णेव संजमासंजमो णेव असंजमो वि अस्थि । अस्थि चत्तारि दंसणाणि । दब्ब-भावेहि छ लेससाओ, अलेस्सा नि अस्थि । भवसिद्धिया वि अस्थि, अभवसिद्धिया वि अस्थि, णा भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अस्थि । छ सम्मचाणि अस्थि । सण्णिणो नि अस्थि, असण्णिणो नि अस्थि, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो नि अस्थि । आहारिणो

किन्तु अन्तिम अर्थात् परेन्द्रिय जीवोंके दो प्राण क्रम होते हैं । यह क्रम पर्याप्तकोंका है । किन्तु उपर्याप्तक जीवोंमें सती और असती पचेन्द्रियोंके सात, सात प्राण होते हैं । तथा शेष जीवोंके उत्तरोत्तर एक एक क्रम प्राण होते हैं ॥ २२१ ॥

विशेषार्थ—केवली भगवायुके पांच इन्द्रियां और मनोबलको छोड़कर शेष चार प्राण होते हैं । तथा गोग त्रिरोधके नमग वचनलक्षा अभाव हो जाने पर कायबल आनापान और आयु ये तीन प्राण होने हैं और अन्तमं कायबल और आयु ये दो प्राण होते हैं । तथा चौदहवें गुणस्थानमें केवल एक आयुमण होता है ।

इन दशों प्राणोंके अभावको अतीत प्राण कहते हैं । चारों सजाएं होती हैं और क्षीण-सजा भी होती है ।

अंका—ये चार सजाएं कौनसी हैं ?

समाधान—आहारसंज्ञा, भयसजा, मैथुनसजा और परियहसजा ये चार सजाएं हैं । इन चारों संज्ञाओंके अभावको क्षीणसजा कहते हैं ।

चार गतिया होती हैं और सिन्धगति भी है । एकेन्द्रियादि पाच जातिया होती हैं और अतीत-जातिरूप स्थान भी है । पृथिवीकाय आदि छह काय होते हैं और अतीतकाय स्थान भी है । पण्ड्य योग होते हैं और अयोग स्थान भी है । तर्जिन वेद होते हैं और अपगतवेद स्थान भी है । चार रूपयें होती हैं और अरुणय स्थान भी है । आठ जान होते हैं । सात सयम होते हैं और सयम, सयमासयम और असंयम रहित भी स्थान है । चार दर्शन होते हैं । द्रव्य और भावके भेदमें छह लेख्याएं होती हैं और अलेख्यास्थान भी है । भव्यसिद्धिक जीव होते हैं, अभव्य-मिद्धिक जीव होते हैं और भव्यसिद्धिक तथा अभव्यसिद्धिक इन दोनों विरुपोंसे रहित भी स्थान होता है । उरु सम्पत्त्व होते हैं । संसी भी होते हैं, असंसी भी होते हैं और ससी तथा, असंसी

वि अस्थि, अणाहारिणो वि अस्थि । सागारुवजुत्ता वि अस्थि, अणागारुवजुत्ता वि अस्थि, सागर-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अस्थि ।

पञ्च-विसिद्धे ओघे भण्णमाणे अस्थि चोद्दस गुणद्वयाणि, अदीदगुणद्वयाणं गस्थि; पञ्चचेसु तस्स संभवाभावादो । सत्त जीवसमासा, अदीदजीवसमासो गस्थि; [छ पञ्चचीओ पंच पञ्चचीओ चत्तारि पञ्चचीओ, अदीदपञ्चची गस्थि; दस पाण णन पाण अट्ट पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, अदीदपाणो गस्थि; चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अस्थि; चत्तारि गदीओ, सिद्धगदी गस्थि; एइदियादी पंच जादीओ अस्थि, अदीदजादी गस्थि; पुढवीक्कायादी छक्काया अस्थि, अक्रमाओ गस्थि; ओरालिय-वेउविय-आहारमिस्स-क्रमइयक्कायजोगेहि निणा एहारह जोग, अजोगो वि अस्थि; तिण्णिण वेद, अवगदवेदो वि अस्थि; चत्तारि क्रमाय, अक्रमाओ वि अस्थि; अट्ट पाण, सत्त संजम, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो गस्थि; चत्तारि दंसण, दब्ब-भावेहि विकल्प रहित भी स्थान होता है । आहारक भी होते हैं और अनाहारक भी होते हैं । साकार उपयोगसे युक्त भी होते हैं अनाकार उपयोगसे भी युक्त होते हैं और साकार उपयोग तथा अनाकार उपयोग इन दोनोंसे युगपत् युक्त भी होते हैं ।

पर्याप्त अवस्थासे युक्त जीवोंके ओगलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान होते हैं । अतीत-गुणस्थानरूप स्थान नहीं होता है, क्योंकि, पर्याप्तकोंमें अतीत-गुणस्थान अर्थात् सिद्ध अवस्थाकी समावना नहीं है । पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास होते हैं, किन्तु अतीत जीव-समास (सिद्ध अवस्था) रूप स्थान नहीं है । संसी जीवोंके छहों पर्याप्तियां, असंसी और विरुल-त्रयोंके पांच पर्याप्तिया और एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां होती हैं; किन्तु अतीत-पर्याप्तिरूप स्थान नहीं होता है । सतीके दशों प्राण, असंसीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, और एकेन्द्रियके चार प्राण होते हैं, किन्तु अतीत प्राणरूप स्थान नहीं है । चारों सजाएं होती हैं और क्षीणसंज्ञारूप स्थान भी होता है । चारों गतियां होती हैं, किन्तु सिद्धगति नहीं होती है । एकेन्द्रियादि पांचों जातियां होती हैं, किन्तु अतीत-जातिरूप स्थान नहीं होता है । पृथिवीकाय आदि छहों काय होते हैं, किन्तु अक्राय-रूप स्थान नहीं होता है । औदारिकमिश्रकाययोग, वैकियक्रमिश्रकाययोग आहारकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोगके विना ग्यारह योग होते हैं और अयोग-स्थान भी होता है । तर्जिन वेद होते हैं और अपगतवेद-स्थान भी होता है । चारों रूपयें होती हैं और अरुणय-स्थान भी होता है । आठों जान होते हैं । सातों संयम होते हैं किन्तु संयम, सयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान नहीं होता है । चारों दर्शन होते हैं । द्रव्य और भावके भेदसे छहों लेख्याएं होती

छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि; दब्बेण छ लेस्सेत्ति भणिदे सरीरस्स छव्वण्णा घेत्तन्वा। भवेण छ लेस्सा ति भणिदे जोग-कसाया छब्बेदं डिदा घेत्तन्वा* । भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, जेव भवसिद्धिया जेव अभवसिद्धिया गत्थि; छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, जेव सण्णिणो जेव असण्णिणो वि अत्थि; आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता वा अणागारुजुत्ता वा, सागारणगरेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि ।

संपहि अणज्जत्ति-पज्जाय-विसिद्धे ओघे भण्णमाणे अत्थि भिच्छइट्ठी सासणसम्मा-इट्ठी अंसजदसम्माइट्ठी पमत्तंसंजदा सजोगिकेवलि ति पंच गुणद्वानाणि, सत्त जीव-समाप्सा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण हें और अलेस्सास्थान भी होता है । द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर शरीरसंबन्धी छह वर्णोंका ग्रहण करना चाहिये । भावसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर योग और कर्मायोंकी छह भेदोंको प्राप्त मिश्रित अवस्थाका ग्रहण करना चाहिये । भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक होते हैं, किन्तु भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों चिकल्पोंसे रहित स्थान नहीं होता है । छहों सम्यक्त्व होते हैं । सब्बी होते हैं, असंखी भी होते हैं, तथा तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानकी अपेक्षा सब्बी और असंखी विकल्प रहित भी जीव होते हैं । आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं । साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे शुगल उपयुक्त भी होते हैं ।

अब अपर्याप्त-पर्यायसे युक्त अपर्याप्तक जीवोंके, ओवालाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्पगदृष्टि, असयतसम्पगदृष्टि, प्रसत्तसयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान होते हैं । अपर्याप्तरूप सात जीवसमास होते हैं । अपर्याप्त सब्बीके छहों अपर्याप्तियां, अपर्याप्त असंखी और विकल्पयोंके पांच अपर्याप्तियां और अपर्याप्त एकेन्द्रिय जीवोंके चार अपर्याप्तियां होती हैं । संखी, असंखी, चतुरिन्द्रिय,

× वर्णोदयेण जणिदो सरीरवणो दु दव्वदो लेस्सा ॥ गो जी ४९४

* जोगपउत्ती लेस्सा कसायउदयाणुराजिया होई ॥ गो जी ४९०

न २ पर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप

| शु जी | प | प्रा | स ग | इ ग | स ग | इ ग | स ग | वे | क्र | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | स ज्जे | आ | उ | |
|-------|----|------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|----|----|----|----|--------|-------|------|--|
| १४ | ६५ | १०१९ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ४ | ४ | ७ | ४ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ | |
| १४ | ५५ | ८७ | | | | | | | ६ | | ६ | ६ | मा | म | म | स | आहा | साका | |
| | ४५ | ६४ | | | | | | | ६ | | ६ | मा | ६ | अम | अस | अना | अनाका | यु उ | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

छप्यण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, अदीदसण्णा वि अत्थि; चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, ओरालियमिस्स-वेउवियमिस्स-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेचि चत्तारि जोगा, तिण्णि वेद, अवगदेवेदो वि अत्थि; चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि; मणपज्जव-विभंगणोपेहि विणा छण्णण, चत्तारि संजम सामाइय-छेदोवट्टावण-जहाक्खादांसंभेहि, चत्तारि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्केस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; जम्हा सव्व-कम्मस्स विस्सेसोवचओ सुक्किलो भवदि तम्हा विग्गहर्दीए वट्टमाण-सव्व-जीवाणं सरीरस्स सुक्केस्सा भवदि । पुणो सरीरं घेत्तूण जाव पज्जत्तीओं समाणेदि ताव छव्वण-परमाणु-पुंज-णिपपज्जमाण-सरीरत्तादो तस्स सरीरस्स लेस्सा काउलेस्सेत्ति भण्णदे, एवं दो सरीर-लेस्साओ भवति । भावेण छ लेस्सेत्ति वुत्त णेरइय-तिरिक्ख-भवणनासिय-वाणेवेतर-जोइसियदेवाणमपज्जचकाले किण्ह-णील-काउलेस्साओ भवति । सोधम्मदि-उचरिम-

जीन्द्रिय, इन्द्रिय और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी अपेक्षा क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं । चारो सब्बाए होती हैं और अर्थात-सब्बाए स्थान भी होता है । चारों गलियां होती हैं । एकेन्द्रिय-जाति आदि पांचों जातियां होती हैं । पृथिवीकाय आदि छहों काय होते हैं । औदारिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र, आहारकमिश्र और कर्मणकाय इसप्रकार चार योग होते हैं । तीनों वेद होते हैं और अपगतवेदरूप भी स्थान होता है । चारों कर्मायें होती हैं और कर्णयारहित भी स्थान होता है । मनःपर्यय और विभंग-ज्ञानके विना छह ज्ञान होते हैं । सूक्ष्मांतराय, परिहार-विशुद्धि और संयमासंयमके विना सामायिक, छेदोपस्थापना, यथाव्यात और असंयम ये चार संयम होते हैं । चारों दर्शन होते हैं । द्रव्यलेश्याकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्या होती है और भावलेश्याकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं । अपर्याप्त अवस्थामें द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं ही क्यों होती हैं, आगे इसीका समाधान करते हैं कि जिस कारणसे संपूर्ण कर्मोंका विस्रसोपचय शुक्ल ही होता है, इसलिये विग्रहगतिमें विद्यमान संपूर्ण जीवोंके शरीरकी शुक्ललेश्या होती है । तदनन्तर शरीरको ग्रहण करके जबतक पर्याप्तियोंको पूर्ण करता है तबतक छह वर्णवाले परमाणुओंके पुंजोंसे शरीरकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उस शरीरकी कापोत लेश्या कही जाती है । इसप्रकार अपर्याप्त अवस्थामें शरीर-संबन्धी दो ही लेश्याएं होती हैं । भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर नारकी, तिर्यच, भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके अपर्याप्त कालमें कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं होती हैं । तथा सौधर्मादि ऊपरके देवोंके अपर्याप्त कालमें पीत, पद्म और

१ × सव्व विग्गहे सुत्ता । सव्वो मिस्सो देहो क्कवेदवण्णो ह्वे णियमा ॥ गो जी ४९८

देवाणमपञ्चत्तमाले तेऽपम्भ-सुकलेस्माओ भवति । भवमिद्विया अभवसिद्विया, सम्मा-मिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तानि, सण्णणो अमण्णणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा तदुभएण जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि ।

संपहि मिच्छइद्दीणं ओवालवे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, चोद्दस जीव-समासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अह पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छपाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णणओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्राया, आहार-दुगेण विणा तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णण,

शुक्रु लेश्याण होती है ऐसा जानना चाहिये। भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक भी होते हैं। सम्यग्भिमथ्यात्वके विना पांच सम्यस्व होते हैं। सब्बी होते है, असब्बी होते है और सब्बी, असब्बी इन दोनों विकृत्योंसे रहित भी होते हैं। आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और युगपत् उन दोनों उपयोगोंसे युक्त भी होते हैं।

अथ मिथ्यादृष्टि जीवोंके ओवालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, चौदहों जीवसमाम, सब्बीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां असब्बी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पात्र अपर्याप्तिया, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तिया, सब्बीके दश प्राण, सात प्राण, असब्बीके नौ प्राण, सात प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, छह प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, पांच प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, चार प्राण, एकेन्द्रियके चार प्राण, तीन प्राण: चारों सन्नानं, चारों गतिया, एकेन्द्रियजातिको व्यादि लेकर पाचों जातियां, पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, आहारकद्विक अर्थात् आहारकक्राययोग और आहारकमिथ्याकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कर्मायं, तीनों अन्नान, असंयम, चन्द्रु और अचक्षु ये दो दर्शन

नं. २

अपर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप

| शु | जी | प | पा | म | ग | ङ | का | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | मनि | आ | उ |
|----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|----|---|-----|------|---|----|---|---|-----|---|---|
| १ | ७ | ६ अप | ७ | ७ | ४ | ५ | ६ | ६ | ६ | ३ | ४ | ६ | ६ | ४ | ६ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | पप. | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | आ मि | ६ | ६ | सुन | सामा | ४ | का | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मा | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | ३ | ६ | ६ | ६ | ६ | ४ | ६ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| ओ | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | ३ | ६ | ६ | ६ | ६ | ४ | ६ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| प | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | ३ | ६ | ६ | ६ | ६ | ४ | ६ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मो | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | " " | ३ | ६ | ६ | ६ | ६ | ४ | ६ | २ | ५ | २ | २ | २ |

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छत्ते, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होति ।

तेसिं' चेव मिच्छइद्दीणं पञ्जत्तेवे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, सत्त जीव-समासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अह पाण सत्त पाण छपाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णणओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी द्रव्य और भावकी अपेक्षा छहों लेश्याण, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक और असंबिक, आहारक और अनाहारक, साकार (ज्ञान) उपयोगी और अनाकार (दर्शन) उपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त-कालसंबन्धी ओवालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमाम, सब्बीके छहों पर्याप्तियां, असब्बी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, सब्बीके दश प्राण, असब्बीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, एकेन्द्रियके चार प्राण, चारों

नं. ३

मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप

| शु | जी | प | पा | सं | ग | ङ | का | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | मनि | आ | उ |
|----|------|------|----|----|---|---|----|----|------|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| १ | १४ | ६ प | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | १३ | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| मि | ६ अप | ६ अप | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | आ | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| | ५ प | ५ अप | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | दि | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| | ५ अप | ५ अप | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | विना | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| | ४ प | ४ प | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | ४ | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| | ४ अप | ४ अप | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | ४ | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |

नं. ४

मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त-आलाप

| शु | जी | प | पा | सं | ग | ङ | का | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | मनि | आ | उ |
|----|-----|-----|----|----|---|---|----|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| १ | ७ | ६ प | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | १० | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| मि | पप. | ५ " | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | म | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| | " " | " " | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | व | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| | " " | " " | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | ओ | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| | " " | " " | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | व | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |
| | " " | " " | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | व | ३ | ४ | ६ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ | ० | २ |

पच जादीओ, पुढवीकायादी छकाय, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता अण्णाण वा होति ।

तेसिं चैव अपज्जत्तोवे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, सच जीवसमासा, छ अपज्जत्तोओ पच अपज्जत्तोओ चत्तारि अपज्जत्तोओ, सच पाण सच पाण छप्पण पंच पाण चत्तारि पाण तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाया, तिणिण जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, विभंग-पाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो

सहाए, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचो जातिया, ग्रुथिवीकाय-आदि छहों काय, आहारककिक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अन्नान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहो लेख्याए, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असाक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, सब्हीके छहों अपर्याप्तिया, असंखी और विकलत्र-योगके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संखीके सात प्राण, असंखीके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पाच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण, एकेन्द्रियोंके तीन प्राण, चारों सहाए, चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, ग्रुथिवीकायादि छहों काय, औदारिकमिथ, वैक्रियकमिथ और कार्मण ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंगावधि-ज्ञानके विना दो अन्नान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुम्भ लेख्या, भावकी अपेक्षा छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असाक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न. ५ मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त-आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|---|---|---|----|-------|-------|-------|-------|----|-------|----|----|-----|-----|-----|-------|
| ग | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सखि | आ | उ |
| १ | ६ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | अप | अ | अ | अ | अ | अ | ओ | ओ | कुस | कुस | अम | चक्षु | का | म | मि | स | ओहा | साका. |
| | ५ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | वे | कुशु. | कुशु. | कुशु. | अच | अच | मा | अम | अस. | अना | अना | आना |
| | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | कार्म | | | | | | | | | | | |

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होति ।

सासणसम्माइङ्गीणमोचे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पज्ज-त्तोओ छ अपज्जत्तोओ, दस पाण सच पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदिय-जादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वि अत्थि ।

तेसिं चैव सासणसम्माइङ्गीणं पज्जत्ताणभोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तोओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदिय-जादी, तसकाओ, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, सब्ही पर्याप्त और सब्ही अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों सहाए, चारों गतियां, एकेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारककिकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अन्नान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहो लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, एक संखी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सहाए, चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककिक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अन्नान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी

नं. ६ सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|---|---|---|----|------|------|-------|-------|----|-------|----|---|------|-----|-----|------|
| ग | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सखि | आ | उ |
| १ | ६ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| सा | अप | अ | अ | अ | अ | अ | ओ | ओ | अज्ञा | अज्ञा | अस | चक्षु | मा | म | मासा | स | आहा | साका |
| स | अ | अ | अ | अ | अ | अ | विना | विना | | | अच | अच | मा | म | अना | अना | अना | अना. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

वञ्जुता वि ह्यंति अणारुवञ्जुता वि ।

तेसं चेत अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, मत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गद्दी गिरयगद्दीए विणा, पंचिदियजादी तमकाओ, निण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विहंगणणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण ऋउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया, सासण-मम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवञ्जुता अणारुवञ्जुता वा ह्यंति ।

ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धी मासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, एक सन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और द्वासायोच्च्युत्सके विना सात प्राण, चारों सन्धाएं, नररूपतिके विना तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विके विना अपर्याप्त-संबन्धी तीन योग, तीनों वेद, चारों कर्मायें, विभंग-प्राप्तके विना दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्लेद्वया, भासे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक, नाकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ७ मासादन सम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

| गु. | जी. | प. | आ. | म. | ग. | ङ. | का. | या. | वे. | क. | हा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|-----|----|----|-------|----|----|
| १ | १ | ६ | १० | ६ | ६ | १ | १ | १ | १० | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| म. | मं | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ८ सासादन सम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | आ. | म. | ग. | ङ. | का. | या. | वे. | क. | हा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|-----|----|----|-------|----|----|
| १ | १ | ६ | १० | ६ | ६ | १ | १ | १ | १० | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| म. | मं | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

सम्प्राप्तमिच्छाद्वीक्षणमोघालवे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गद्दीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, अण्णाण-मिससणि तिण्णि पाणाणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्प्राप्तमिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवञ्जुता हेति अणारुवञ्जुता वां ।

असंजदसम्प्राप्तमिच्छीणमोघ-परवृत्त भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गद्दीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक तीसरा गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सन्धाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कर्मायें, अज्ञान-मिश्रित आदिके तीनों ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विशेष—मिश्रगुणस्थानवाले जीव पर्याप्तक ही होते हैं, इसलिये मिश्रगुणस्थानके उक्त सामान्यालाप ही पर्याप्तकके समझना चाहिये ।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुणस्थान, संधी-पर्याप्त और संधी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों सन्धाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कर्मायें, तीन ज्ञान, असंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन

नं. ९ सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | आ. | म. | ग. | ङ. | का. | या. | वे. | क. | हा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति | आ. | उ. |
|-------|-----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|-----|----|----|-------|----|----|
| १ | १ | ६ | १० | ६ | ६ | १ | १ | १ | १० | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| सम्य. | स | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

सम्मत्ताणि, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा हेति अणा-
गारुवजुत्ता वा" ।

असंजदसम्माड्डीणं पजत्ताणमोघालोवे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीव-
समासो, छ पजत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदिय-
जदी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजमो,
तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णियो,
आहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा" ।

सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुण-
स्थान, सब्धी-पर्याप्त एक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों सन्न्यास, चारों गतियां,
पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग,
तीनों वेद, चारों कर्पायें, तीन ज्ञान, असयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्य और भावरूप
छहों लेख्यायें, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व,
संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न १०

असंयतसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|-------|---|---|-----|----|------|------|----|------|----|------|----|--------|--------|-------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १३ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अति | स | प | ७ | | | पचे | तस | भा | विना | अ | अस | के | विना | | म | क्षा | आहा | अना | साका |
| | स | अ | | | | | | विना | | अव | अव | | | | क्षायो | क्षायो | अना | अना | अना |

नं. ११

असंयतसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|-------|---|---|------|----|----|----|----|------|----|------|----|--------|--------|-------|-----|-------|
| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अति | स | प | ७ | | | पचे, | तस | म | व. | अ | म | अस | विना | | म | क्षा. | आहा | अना | साका. |
| | स | अ | | | | | | व. | अ | अव | अव | | | | क्षायो | क्षायो | अना | अना | अना |

तेसिं चेत्र अपजत्ताणमोघपरुवणे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीव-
समासो, छ अपजत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदिय-
जदी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि
पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुकलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ;
णिरयादो आंगत्तूण मयुस्सेसुप्पण-असंजदसम्माड्डीणमपजत्तकाले क्रिह-णील-काउ-
लेस्साओ लभंति । भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, अणादिय-मिच्छाड्डी वा सादिय-
मिच्छाड्डी वा चदुसु वि गदसु उवससम्मत्तं घेत्तूण द्विदजीवा ण काल करेति ।
तं कथं णव्वदि ति वुत्ते आहरिय-वयणादो वक्खाणदो य णव्वदि । चारित्तमोह-उवसासया
मदा देवेषु उववज्जंति ते अस्सिदूण अपजत्तकाले उवससम्मत्तं लभदि । वेदगसम्मत्तं
गुण देव-मयुस्सेसु अपजत्तकाले लभदि, वेदगसम्मत्तेण सह गद-देव-मयुस्साणमणोणा-
गमणागमण-विरोहाभावादो । कदकराणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं तिरिक्ख-णेइयाणमपजत्त-
काले लभदि । खइयसम्मत्तं पि चदुसु वि गदीसु पुव्वायु-बंधं पडुच्च अपजत्तकाले

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक
चौथा गुणस्थान, एक सब्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और
आनापानके विना सात प्राण, चारों सन्न्यास, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदा-
रिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र और कर्मण ये तीन योग, खीवेदके विना दो वेद, चारों कर्पायें, मति,
शुत और अवाधि ये तीन ज्ञान, असयम, चक्षु, अचक्षु और अवाधि ये तीन दर्शन, द्रव्यसे
कापोत और शुल्लेख्या, भावसे छहों लेख्यायें होती हैं । छहों लेख्यायें होनेका यह कारण है
कि नरकगतिसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालमें
कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेख्यायें पायी जाती हैं । लेख्याओंके आगे भव्यसिद्धिक, तीनों
सम्यक्त्व होते हैं, क्योंकि, अनादि मिथ्यादृष्टि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि जीव चारों ही गतियोंमें
उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करके पाये जाते हैं, किन्तु मरणको प्राप्त नहीं होते हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है कि, उपशम-सम्यग्दृष्टि जीव मरण नहीं करते ?

समाधान—आचार्योंके वचनसे और (सूत्र) व्याख्यानसे जाना जाता है कि उपशम-
सम्यग्दृष्टि जीव मरते नहीं हैं । किन्तु चारित्रमोहके उपशम करने वाले जीव मरते हैं और देवोंमें
उत्पन्न होते हैं, अतः उनकी अपेक्षा अपर्याप्तकालमें उपशमसम्यक्त्व पाया जाता है । वेदक-
सम्यक्त्व तो देव और मनुष्योंके अपर्याप्तकालमें पाया ही जाता है, क्योंकि, वेदकसम्यक्त्वके
साथ मरणको प्राप्त हुए देव और मनुष्योंके परस्पर गमनागमनमें कोई विरोध नहीं पाया
जाता है । कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा तो वेदकसम्यक्त्व तिरिक्ख और नारकी जीवोंके अपर्याप्त
कालमें भी पाया जाता है । शायिक सम्यक्त्व भी सम्यग्दर्शनके पहले बांधी गई आयुके बंधकी
अपेक्षासे चारों ही गतियोंके अपर्याप्तकालमें पाया जाता है, इसलिये असंयतसम्यग्दृष्टि जीवके
अपर्याप्तकालमें तीनों ही सम्यक्त्व होते हैं ।

कम्भट्टि तेण तिण्णि सम्मत्ताणि अपज्जत्तकाले भवन्ति । मण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा” ।

संजदासंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणहणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुकुलेस्साओ; केइं सरि-णिब्बत्तणहमागद-परमाणु-वण्णं वेत्तूण संजदासंजदादीण भावलेस्सं परुरयंति । तण्ण वडदे, कुदो ? दब्ब-भावलेस्साणं भेदाभावादो ‘ लिम्पतीति लेस्सा ’ इति वचनव्याघाताच्च । कम्म-लेव-हेदुदो जोग-कसाया चव भाव-लेस्सा ति गेण्हदन्वं । भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि,

मम्यत्त्वके आणे सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होने हैं ।

संयतासंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक पाचवा गुणस्थान, एक सब्बी-पर्यान्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्थव और मनुष्य ये दो गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, तसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिकताय ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कर्मायं, आदिके तीन ज्ञान, संयमासयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेस्सापं, भावकी अपेक्षा तेज, पम और शुक्लेश्याए होती हैं ।

कितने ही आचार्य, शरीर-रचनाके लिये आये हुए परमाणुओंके वर्णको लेकर संयता-संयतादि गुणस्थानरतीं जीवोंके भावलेस्साका वर्णन करते हैं । किन्तु यह उनका कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, वैसा माननेपर द्रव्य और भावलेस्सायें फिर कोई भेद ही नहीं रह जाता है और ‘ जो लिम्पत करती है उसे लेस्सा कहते हैं ’ इस आगम वचनका व्याघात भी होता है । इसलिये ‘ कर्मलेपका कारण होनेसे योग और कर्मायसे अनुरजित प्रवृत्ति ही भावलेस्सा है ’ ऐसा अर्थ ग्रहण करना चाहिये ।

लेस्साओंके आणे भव्यसिद्धिक, तीनों मम्यस्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और

नं १२: असयतसम्यग्दृष्टिओंके अपर्यान्त आलाप.

| ग | जी | प | भा | सा | का | इ | ग | स | ग | द | ले | म | स | स | स | सा | उ | |
|---|----|---|----|----|----|---|---|---|---|---|----|---|---|---|---|----|---|---|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा हति अणागारुवजुत्ता वा” ।

पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणहणं, दो जीवसमासा, छपज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एक्कारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुकुलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा हति अणा-गारुवजुत्ता वा” ।

अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक गुणस्थान, दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दस प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कर्माय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना और परिद्वारविशुद्धि ये तिन संयम, आदिके तिन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्सापं, भावसे तेज, पम और शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विशेषार्थ—यद्यपि टीकाकारते प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ गुणस्थानके सामान्या-

नं १३

सयतासयतोके आलाप.

| ग | जी | प | भा | सा | का | इ | ग | स | ग | द | ले | म | स | स | सा | उ |
|---|----|---|----|----|----|---|---|---|---|---|----|---|---|---|----|---|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

नं. १४

प्रमत्तसयत-आलाप

| ग | जी | प | भा | सा | का | इ | ग | स | ग | द | ले | म | स | स | सा | उ |
|---|----|---|----|----|----|---|---|---|---|---|----|---|---|---|----|---|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

अप्यमत्तसंज्ञाणमोघालावे भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चनीओ, दस पाण, तिणिण सण्णाओ, असादावेदणीयस्स उदीरणाभावादो आहार-सण्णा अप्यमत्तसंज्ञदस्स गत्थि । कारणभूद-कम्मोदय-संभवादो उचयरेण भय-मेहुण-परिगहसण्णा अत्थि । मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिणिण वेद,

लापोंके अतिरिक्त उनके पर्याप्त और अपर्याप्त सबन्धी आलापोंका स्वतन्त्ररूपसे कथन किया है फिर भी छठे गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्त सबन्धी आलापोंका स्वतन्त्र कथन न करके केवल ओघालाप ही कहा गया है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि धवलाकारकी दृष्टि चित्रग्रह-गतिबंधनी गुणस्थानोंमें ही पृथक् रूपसे आलापोंके दिखानेकी रही है अन्य अपर्याप्त संबन्धी गुणस्थानोंमें नहीं । गोमटसार जीवकाण्डकी टीकामें भी अन्तमें आलापोंका कथन करते हुए टीकाकारने इसी सरणीको ग्रहण किया है । अतएव मूलमें छठे गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्त सबन्धी आलापोंका पृथक् रूपसे नहीं पाया जाना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है । फिर भी सर्व साधारण पाठकोंके परिज्ञानार्थ वे यहां लिखे जाते हैं ।

प्रमत्तसयतके पर्याप्तसबन्धी ओघालापके कहनेपर—एक छठा गुणस्थान, एक सब्नी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति-त्रसकाय, वैक्रियककाय और अपर्याप्तसंबन्धी चारों योंगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कपाय, केवल-ज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवल दर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ और भावसे पीत, पद्म और शुक्र, ये तीन लेख्याएँ, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहार्य, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपर्याप्त अवस्थाको प्राप्त उन्ही प्रमत्तसंयतोंके ओघालाप कहनेपर—एक छठा गुणस्थान, एक सब्नी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मन, वचनबल और स्वासो-च्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, एक आहार-मिश्रकाययोग, एक पुरुष वेद, चारों कपाय, मन-पर्यय और केवलज्ञानके विना तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना संयम, केवल दर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेख्या, भावसे पीत, पद्म और शुक्र लेख्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये दो सम्यग्दर्शन, सब्नी, आहार्य, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक सातवां गुणस्थान, एक संक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, आहार, भय आर मैथुन ये तीन संज्ञापं, होती हैं, क्योंकि, असातावेदनाय कर्मकी उदीरणाका अभाव हो जानेसे अप्रमत्तसयतके आहारसत्त्वा नहीं होती है । किन्तु भय आदि संज्ञाओंके कारणभूत कर्मोंका उदय संभव है, इसलिये उपचारसे भय, मैथुन और परिग्रहसंज्ञापं हैं । संज्ञाके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनो-योग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपायें, केवलज्ञानके

चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिणिण संजम, तिणिण दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा ।

अपुवकरणामोघालावे भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चनीओ, दस पाण, तिणिण सण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, ज्झाणीमपुवकरणं भवदु णाम वचिवलस्स अत्थित्तं भासापज्जित्ति-सण्णिणद-पोगलखंध-जणिद-सत्ति संभावादो । ण पुण वचिजोगो कायजोगो वा इदि ? न, अन्तर्जपप्रयत्तस्य कायगतसुक्ष्मप्रयत्तस्य च तत्र सत्त्वात् । तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, परिहारसुद्धिसंजमेण विणा दो संजम, तिणिण दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवल-दर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ और भावसे तेज पद्म और शुक्रलेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक आठवां गुणस्थान, एक संक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञापं-मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग, एक औदारिक, काययोग ये नौ योग होते हैं ।

शंका—ध्यानमें लीन अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंके वचनबलका सद्भाव भले ही रहा आवे, क्योंकि, भाषापर्याप्तनामक पौद्गलिक स्कन्धोंसे उत्पन्न हुई शक्तिका उनके सद्भाव पाया जाता है किन्तु उनके वचनयोग या काययोगका सद्भाव नहीं मानना चाहिए ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ध्यान-अवस्थामें भी अन्तर्जलपके लिये प्रयत्नरूप वचन-योग और कायगत-सुक्ष्म-प्रयत्नरूप काययोगका सत्त्व अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके पाया ही जाता है इसलिये वहां वचनयोग और काययोग भी संभव हैं ।

योगोंके आगे तीनों वेद, चारों कपायें, केवल ज्ञानके विना शेष चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ, भावसे

नं. १५.

अप्रमत्तसंयतोंके आलाप

| गु | जी | प | मा | स | ग | इ | का. | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | महि | आ | उ |
|------|----|---|------|---|---|---|------|------|------|------|------|-----|------|-----|----|--------|-----|------|-----|
| १ | १ | ६ | १० | ३ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ४ | ४ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अप्र | स | प | आहा. | म | म | प | तस | म. ४ | के. | के. | के. | सा. | के | द्र | म | स | स | साता | अना |
| | | | विना | | | | | व ४ | विना | विना | विना | डे | विना | ३ | भा | क्षाया | ह | ह | |
| | | | | | | | ओ. १ | ओ. १ | परि | | | | | शुभ | | | | | |

त्रिदिव-द्वण-द्विद-अणियद्वीणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, परिगहसण्णा, अंतरकरणं काळण पुणो अंतोसुहुत्तं गत्तूण वेदोदओ गड्डो तेण मेहुणसण्णा गस्थि । मणुमगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागार वजुत्ता हेति अणागारवजुत्ता वा ।

तदिय-द्वण-द्विद-अणियद्वीणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, परिगहसण्णा, मणुमगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, तिण्णि कसाय, वेदेषु खीणेषु पुणो अंतोसुहुत्तं गत्तूण कोधोदयो णस्सदि तेण कोधकसाओ गस्थि । चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि

अतिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्ती जीवोके ओवालाप कइने पर—एक नौवां गुणस्थान, एक संखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परियग्रहसला होती है । एक परिग्रह संज्ञाके होनेका यह कारण है कि अंतरकरण करनेके अनन्तर अन्तर्मुहूर्त जाकर वेदज्ञा उदय नष्ट हो जाता है, इसलिये द्वितीय भागवर्ती जीवके मधुसला नहीं रहती है । संज्ञा आलापके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतेवेद, चारों कपायें, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामाधिक, छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ और भावसे शुक्लेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और श्रायिक ये दो सम्यग्त्व, संज्ञी, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अतिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीयभागवर्ती जीवोके ओवालाप कइनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परियग्रहसला, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, क्रोधकपायके विना तीन कपायें होती हैं । तीन कपायोंके होनेका यह कारण है कि तीनों वेदोंके धय हो जाने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त जाकर क्रोधकपायका उदय नष्ट हो जाता है, इसलिये इस भागमें क्रोधकपाय नहीं है । आगे केवलज्ञानके निना चार ज्ञान, सामाधिक और

नं. १८ अनिवृत्तिकरण-द्वितीयभाग-आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|----|---|---|--------|------|-----|------|---|------|----|------|-----|---|---|-----|----|-----|
| यु | जी | प | मा | म | ग | इ | ना | यो | त्रे | क | जा | मय | द | ले | म | म | सति | जा | उ |
| १ | १ | ६ | १० | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ४ | ४ | २ | ३ | ६ | ७ | ७ | १ | २ | २ |
| अति | प | | | | | म, पंच | म | मे. | ४ | | के | मा | के | द्र | म | आ | म | आ | मा |
| द्वि | | | | | | | विना | ४ | ४ | | विना | के | विना | १ | आ | आ | २ | आ | अना |
| मा | | | | | | | | ओ | | | | | | मा | आ | आ | २ | | |

भवेण सुक्कलेस्सा: भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हेति अणागारवजुत्ता वा ।

पट्टम-अणियद्वीणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, दो मण्णा, अपुव्वरुणस्स चरिम-समए भयस्स उदीरणोदयो गड्डो तेण भयमण्णा गस्थि । मणुमगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि तसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हेति अणागारवजुत्ता वा ।

केवल शुक्लेख्या, भव्यांशदिक, औपशमिक और श्रायिक ये दो सम्यग्त्व, संज्ञिक, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अतिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्ती जीवोके ओवालाप कइनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मधुसला और परियग्रह ये दो मण्णा होती हैं । दो मण्णा होने का कारण यह है कि अपूर्वकरण गुणस्थानके अन्तिम समयमें भयकी उद्भरण तथा उदय नष्ट हो गया है, इसलिये यहाँपर भयमना नहीं है । उमरके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार तन्मयोग और आंदारिककायोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपायें, केवलज्ञानके निना चार ज्ञान, सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ, भावसे शुक्लेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और श्रायिक ये दो सम्यग्त्व, संज्ञिक, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १७ अपूर्वकरण-आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|----|---|---|---|----|----|------|---|----|----|---|----|---|---|-----|----|---|
| यु | जी | प | मा | म | ग | इ | ना | यो | त्रे | क | जा | मय | द | ले | म | म | सति | जा | उ |
| १ | १ | ६ | १० | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ४ | ४ | २ | ३ | ६ | ७ | ७ | १ | २ | २ |
| अति | प | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| द्वि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| मा | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. १७ अनिवृत्तिकरण-प्रथमभाग-आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|----|---|---|---|----|----|------|---|----|----|---|----|---|---|-----|----|---|
| यु | जी | प | मा | म | ग | इ | ना | यो | त्रे | क | जा | मय | द | ले | म | म | सति | जा | उ |
| १ | १ | ६ | १० | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ४ | ४ | २ | ३ | ६ | ७ | ७ | १ | २ | २ |
| अति | प | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| द्वि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| मा | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

पंचम-द्वान-द्विद-अणियद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, माणोदये विण्हे पुणो अंतोमुहुचं गंतूण माओदओ विणस्सदि तेण मायाकसाओ तत्थ गत्थि । चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

सुहुमसांपराइयाणमोवालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

अतिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यजाति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, लोभकपाय हेतिका यह कारण है कि मानकपायके उदयके नष्ट हो जाने पर पुनः एक अस्तमुहूर्त आगे जाकर माया-कपायका उदय भी नष्ट हो जाता है, इसलिए मायाकपाय इस भागमें नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो सयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे सुक्कलेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशामिक और क्षायिक ये दो सम्यस्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक दशां गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यजाति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारो मनोयोग, चारो वचनयोग और औदारिक काययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकपाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायविद्युद्धि सयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे सुक्कलेख्या, भव्यसिद्धिक,

नं. २१

अतिवृत्तिकरण-पंचमभाग-आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|------|----|------|------|------|------|------|----|---|----|--------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | म | ग | इ | का | गो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | संज्ञि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | १ | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ४ | २ | ३ | ६ | १ | २ | १ | १ | २ |
| अति | स | प | | | | | | | | | | सा | त्रे | ६ | म | ओ. | स | आहा | साका |
| पच | | | | | | | विना | छे | विना | विना | छे | विना | त्रे | ६ | म | ओ. | स | आहा | अना |
| मा | | | | | | | विना | छे | विना | विना | छे | विना | त्रे | ६ | म | ओ. | स | आहा | अना |

दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

चउ-द्वान-द्विद-अणियद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, माणोदये विण्हे पुणो अंतोमुहुचं गंतूण माओदओ विणस्सदि तेण माणकसाओ तत्थ गत्थि । चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

छेदोपस्थापना ये दो सयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे सुक्कलेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशामिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अतिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थभागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक नौवां गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्यजाति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कपायें होती हैं। दो कपायोंके होनेका यह कारण है कि क्रोधकपायके उदय नष्ट होने पर पुनः एक अस्तमुहूर्त आगे जाकर मानकपायका उदय भी नष्ट हो जाता है इसलिए मानकपाय इस भागवर्ती जीवोंके नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो सयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे सुक्कलेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशामिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९

अतिवृत्तिकरण-तृतीयभाग-आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|------|----|------|------|------|------|------|----|---|---|--------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | गो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | संज्ञि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | १ | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ४ | २ | ३ | ६ | १ | २ | १ | १ | २ |
| अति | स | प | | | | | | | | | | सा | के | ६ | म | ओ | स | आहा | साका |
| तु | | | | | | | विना | छे | विना | विना | छे | विना | त्रे | ६ | म | ओ | स | आहा | अना |
| मा | | | | | | | विना | छे | विना | विना | छे | विना | त्रे | ६ | म | ओ | स | आहा | अना |

नं. २०

अतिवृत्तिकरण चतुर्थभाग-आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|------|----|------|------|------|------|------|----|---|---|--------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | गो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | संज्ञि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | १ | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ४ | २ | ३ | ६ | १ | २ | १ | १ | २ |
| अति | स | प | | | | | | | | | | सा | के | ६ | म | ओ | स | आहा | साका |
| चतु | | | | | | | विना | छे | विना | विना | छे | विना | त्रे | ६ | म | ओ | स | आहा | अना |
| मा | | | | | | | विना | छे | विना | विना | छे | विना | त्रे | ६ | म | ओ | स | आहा | अना |

मणिणो, आहारिणो, सागारुचुत्ता हेति अणागारुचुत्ता वा ।

उचसंतरुसायाणमोघालवे भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, उचसंतरुसाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसक्काओ, णव जोग, अवगदेवेदो, उचसंतरुसाओ, चचारि णाण, जहाक्खादसुद्विसंजमो, तिणिण दंसण, दवेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; क्केण कारणेण सुक्कलेस्सा? क्कम्म-णोक्कम्म-लेव-णिमित्त-जोगां अत्थि चि । भवसिद्धिया, दो सम्मचं, सणिणो, आहारिणो, सागारु-ओपशमिक और धायिक ये दो सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

उपशान्तकपाय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक ग्यारहवां गुणस्थान, फ मत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तसंज्ञा होती है । संज्ञाके उपशान्त दान का यह कारण है कि यहाँपर मोहनीय कर्मका पूर्ण उपशम रहता है, इसलिये उसके निमित्तसे हेनेवाली सजाप भी उपशान्त ही रहती है, अतएव यहाँ उपशान्तसंज्ञा कही । आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और ओदारिककपाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तकपाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, यथाख्यातद्विसयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे शुक्ल-लेख्या होती हैं ।

शंका—जब कि इस गुणस्थानमें कपायोंका उदय नहीं पाया जाता है, तो फिर यथा शुक्लेश्या किस कारणसे कही ?

समाधान—यहाँ पर कर्म और नौ कर्मके लेपके निमित्तभूत योगका सद्भाव पाया जाना है, इसलिये शुक्लेश्या कही है ।

लेख्याके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक और आयिक ये दो सम्यक्त्व, सन्निक,

नं. २२

सूक्ष्मसाम्पराय-आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----------|-------|--------|-----|-----|----|-------|------|----|-----|----|----|--------|-----|----|
| गु. जी. | प. प्रा. | स. ग. | उ. वा. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सन्नि. | जा. | उ. |
| १ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| २ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ३ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ४ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| १० | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |

वचुत्ता हेति अणागारुचुत्ता वा ।

खीणकपायणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, खीणमण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसक्काओ, णव जोग, अवगदेवेदो, खीणकसाओ, चचारि णाण, जहाक्खादसुद्विसंजमो, तिणिण दंसण, दवेण छ लेस्साओ भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मचं, सणिणो, आहारिणो, सागारुचुत्ता हेति अणागारुचुत्ता वा ।

सजोगिकेवलीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

खीणकपाय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक बारहवां गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, खीणसंज्ञा होती है । खीणसंज्ञा होनेका यह कारण है कि कपायोंका यहाँ पर सर्वथा क्षय हो जाता है, इसलिये सज्ञाओंका खीण हो जाना स्वाभाविक ही है । आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककपाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, खीणकपाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, यथाख्यातद्विसयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, धायिक सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सजोगिकेवलीणके ओघालाप कहने पर—एक तेरहवां गुणस्थान, सत्री-पर्याप्त और संखी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां होती हैं ।

नं. २३

उपशान्तकपाय-आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----------|-------|--------|-----|-----|----|-------|------|----|-----|----|----|--------|-----|----|
| गु. जी. | प. प्रा. | स. ग. | उ. वा. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सन्नि. | जा. | उ. |
| १ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| २ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ३ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ४ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| १० | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |

नं. २४

खीणकपाय-आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----------|-------|--------|-----|-----|----|-------|------|----|-----|----|----|--------|-----|----|
| गु. जी. | प. प्रा. | स. ग. | उ. वा. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सन्नि. | जा. | उ. |
| १ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| २ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ३ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ४ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |
| १० | ६ | १० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ | २ |

[४११]
छ अपज्जचीओ, केवली क्वाड-पदर-लोगपूर्ण-गओ पज्जतो अपज्जतो वा ? ण ताव पज्जतो, 'ओरालियमिस्सकायजोओ अपज्जत्तणं' इच्चेदण सुत्तेण तस्स अपज्जत्तसिद्धीदो । सजोगिं मोत्तूण अण्णे ओरालियमिस्सकायजोगिणो अपज्जत्ता 'सम्ममिच्छाद्वि-संजद-संजद-संजदद्वणे णियमा पज्जत्ता' ति सुत्त-णिहेसदो । ण, आहारमिस्सकायजोग-पमतसंजदणं पि पज्जत्तयत्त-प्पसंगादो । ण च एवं, 'आहारमिस्सकायजोओ अपज्जत्तणं' ति सुत्तेण तस्स अपज्जत्तभाव-सिद्धीदो । अणवगासत्तादो' एदेण सुत्तेण

शंका—रूपदः, प्रतर और लोकपूर्ण समुद्रातको प्राप्त केवली पर्याप्त है या अपर्याप्त ?

समाधान—उन्हें पर्याप्त तो माना नहीं जा सकता, क्योंकि, 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे उनके अपर्याप्तपना सिद्ध है, इसलिये वे अपर्याप्तक ही हैं ।

शंका—'सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सयतासंयत और संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, इसप्रकार सूत्रनिर्देश होनेके कारण यही सिद्ध होता है कि सयोगीको छोड़कर अन्य औदारिकमिश्रकाययोगवाले जीव अपर्याप्तक हैं । यहाँ शंकाकारका यह अभिप्राय है कि औदारिकमिश्रयोगवाले जीव अपर्याप्तक होते हैं यह सामान्य विधि है और सम्यग्मिथ्यादृष्टि संयतासंयत और संयत जीव पर्याप्तक होते हैं यह विशेष विधि है और संयतोंमें सयोगियोंका अन्तर्भाव हो ही जाता है अतएव 'विशेषविधिना सामान्य-विधिर्बाध्यते' इस नियमके अनुसार उक्त विशेष विधिसे सामान्य-विधि बाधित हो जाती है जिससे कपाटादि समुद्रातगत केवलीको अपर्याप्त सिद्ध करना असंभव है ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, यदि 'विशेष-विधिसे सामान्य-विधि बाधित होती है' इस नियमके अनुसार 'औदारिकमिश्रकाययोगवाले जीव अपर्याप्तक होते हैं' यह सामान्य-विधि 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि पर्याप्तक होते हैं' इससे बाधी जाती है तो आहारमिश्रकाययोगवाले प्रमत्तसंयतोंको भी पर्याप्तक ही मानना पड़ेगा, क्योंकि, वे भी संयत हैं । किंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, 'आहारकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे वे अपर्याप्तक ही सिद्ध होते हैं ।

शंका—'आहारमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' यह सूत्र अनवकाश है,

१ जा स सू ७६, २ जी स सू १०, ३ जी म सू ७८

४ अतगादृष्ट्यपवादो क्लमिणात् । परि शे पृ ३५८ येन नाप्राप्ते यो विधिपारस्यते स तस्य बाधको भवति । येन नाप्राप्ते इत्यस्य यत्कर्तुं कामस्य कप्राप्त्याविलथो नन्द्यस्य प्रदृतार्थदादृशो धक्कत्तात् । एव च विशेषानोद्वेरविशेषधर्मावि-उक्कवृत्तिमानान्यधर्मावि-उोद्वेस्य क्कत्तात्स्य विशेषशानेण वाव । तद्व्यतिरिक्तो-उच्चरि-तार्थं गेतस्य नावक्कं गीजम् । परि शे ३५९, ३६८.

[१, १-
'संजदद्वणे णियमा पज्जत्ता' ति एदं सुत्तं वाहिज्जदि, 'ओरालियमिस्सकायजोओ अपज्जत्तणं' ति एदेण ण वाहिज्जदि सावगासत्तेण बलाभावादो' । ण, 'संजदद्वणे णियमा पज्जत्ता' ति एदस्स वि सुत्तस्स सावगासत्तदंसणदो । सजोगिद्वणं दोसु वि सुत्तेसु सावगासेसु जुगवं दुक्केसु 'संजदद्वणे णियमा पज्जत्ता' ति एदेण सुत्तेण ओरालियमिस्सकायजोओ अपज्जत्तणं' ति एदं सुत्तं वाहिज्जदि परत्तादो' । ण, परमदो इड्वाचओ' ति धेप्पमाणे पुब्बेण वाहिज्जदि ति अणेर्यतियादो । णियम-सदो

अर्थात् इस सूत्रकी प्रवृत्तिके लिये कोई दूसरा स्थल नहीं है, अतः इस सूत्रसे 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक ही होते हैं' यह सूत्र बाधा जाता है । किंतु औदारिक-मिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' इस सूत्रसे 'संयतोंके स्थानमें जीव पर्याप्तक ही होते हैं' यह सूत्र नहीं बाधा जाता, क्योंकि, 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र सावकाश होनेके कारण, अर्थात्, इस सूत्रकी प्रवृत्तिके लिये सयोगियोंको छोड़कर अन्य स्थल भी होनेके कारण, निर्बल है अतः आहारकसमुद्रातगत जीवोंके जिस-प्रकार अपर्याप्तपना सिद्ध किया जा सकता है उसप्रकार समुद्रातगत केवलियोंके नहीं किया जा सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होता है' यह सूत्र भी सावकाश देखा जाता है, अर्थात्, सयोगीको छोड़कर अन्य स्थलमें भी इस सूत्रकी प्रवृत्ति देखी जाती है, अतः निर्बल है और इसलिये 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' इस सूत्रकी प्रवृत्तिको नहीं रोका सकता है ।

शंका—पूर्वोक्त समाधानसे यद्यपि यह सिद्ध हो गया कि पूर्वोक्त दोनों सूत्र सावकाश होते हुए भी सयोगी गुणस्थानमें युगपत् प्राप्त हैं, फिर भी 'परो विधिर्बाधको भवति' अर्थात्, पर विधि बाधक होती है, इस नियमके अनुसार 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रके द्वारा 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' यह सूत्र बाधा जाता है, क्योंकि, यह सूत्र पर है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'परो विधिर्बाधको भवति' इस नियमसे पर शब्द इष्ट अर्थात् अभिप्रेत अर्थका वाचक है, पर शब्दका ऐसा अर्थ लेनेपर जिसप्रकार 'संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रसे 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता

१ जी स सू १० २ जी स. सू ७८

३ अपवादो यद्व्यन चरितार्थस्तदिः अन्तरेण वाध्यते निरवकाशत्वरूपस्य वावकव्वीजस्याभावात् । परि. शे पृ ३८६

४ पूर्वोपर क्लव्त्विमतिपेधगायात् (विप्रतिपेधे पर कार्यमिति सूनात्) पूर्वस्य पर वाचकमिति यावत् । परि शे पृ २३७

२ विप्रतिपेधवृत्तस्यप्रसङ्गस्येधनावित्त्वात् । परि शे पृ २४५

गणश्रोत्राणो निष्पश्रोत्राणो ? ग विद्रिय-पक्षसो, पुष्पयन्त-वयण-विणिग्गयस्स निष्फलत्त-मिरोहदो । ग चेटम्म सुत्तम्म निचत्त-पयासण-फलं, गियम-सह-वदिरित्त-मुत्ताणमणिच्चत्त-पयमादो । ग च एवं, 'ओरालियकायजोगो पञ्जत्ताणं' ति सुत्ते गियमाभावेण अपञ्जत्तेसु ति ओरालियकायजोगस्स अत्थित्त-पयमंभादो । तदो गियम-महो गावओ । अणगहा अणत्थयत्त-पयमंभादो । किमेडेण जाणाविज्जदि ? 'सम्माभिच्छाड्ढि-मंजदासंजद-मंजद-द्राणे गियमा पञ्जत्ता' ति एवं सुत्तमणिचमिदि तेण' उत्तरसरीसुद्धाविद-सम्माभिच्छाड्ढि-मंजदासंजद-संजदाण कवाड-पदर-लोगपूरण-गद-सजोगीण च सिद्धम-

दे' यह सूत्र थाथा जाता है. उद्योगकार पूर्व अर्थान् 'ओदारिकमिथक्राययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इरा सूत्रमे संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, यह सूत्र भी थाथा जाता है, अतः शास्त्रकारके पूर्वाक्त कथनमें अनैकान्त दोष आ जाता है ।

शंका—उप कि कपाट-समुदात्तगत केवलश्री-अवस्थामें अभिप्रेत होनेके कारण 'ओदारिक-मिथक्राययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र पर हे तो 'सयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होने हैं, इस सूत्रमें आये हुए नियम शब्दकी नया सार्थकता रह गई? और ऐसी अवस्थामें यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि उक्त सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द सप्रयोजन है कि निष्प्रयोजन ?

समाधान—इन दोनों विकल्पोंमेंसे दूसरा विकल्प तो माना नहीं जा सकता है, क्योंकि, पुराणतत्त्वे वचनसे निकले हुए तत्त्वमें निरर्थकताका होना विकरुह है । और सूत्रकी नित्यताका प्रकाशन करना भी नियम शब्दका फल नहीं हो सकता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर जिन सूत्रोंमें नियम शब्द नहीं पाया जाता है उन्हें अनित्यताका प्रसंग आ जायगा । परंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर 'ओदारिकक्राययोग पर्याप्तकोंके होता है', इस सूत्रमें नियम शब्दका अभाव होनेसे अपर्याप्तकोंमें भी ओदारिकक्राययोगके अस्तित्वका प्रसंग प्राप्त होगा, जो कि स्पष्ट नहीं है । अतः सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द शपक है नियामक नहीं । यदि ऐसा न माना जाय तो उसको अन्वर्थकयनेका प्रसंग आ जायगा ।

शंका—इस नियम शब्दके द्वारा क्या स्थापित होता है ?

समाधान—इससे यह स्थापित होता है कि 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि संयतासयत और सयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' यह सूत्र अनित्य है । अपने विषयमें सर्वत्र समान प्रयुक्तिका नाम नित्यता है और अपने विषयमें ही कहीं प्रवृत्ति हो और कहीं न हो इसका नाम अनित्यता है । इससे उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि, और संयतासंयतोंके तथा कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुदात्तको प्राप्त केवलियोंके अपर्याप्तपना

१ इताप्रयमंगी निप तश्चित्तमनिपय । परि शे पृ २५०

२ बी. नं पृ. ७६. ३ जी म पृ. ९०

४ प्रथियु 'मि वेग' इति पाठ. ।

पञ्जत्तं ।

अद्वारद्ध सरीरी अपञ्जत्तो गाम । ग च सजोगमिस सरीर-पट्टवर्णमत्थि, तदो ग तस्स अपञ्जत्तमिदि ग, छ-पञ्जत्ति-सत्ति-मज्जियस्स अपञ्जत्त-ववएसोदो । छहि ईदि-एहि विणा चचारि पाणा दो वा । दव्वेदियाणं निष्पत्तिं पडुच के वि दस पाणे भण्तिं । तण्ण वडदे । कुदो ? भाविंदियाभावादो । भाविंदियं गाम पंचणहमिंदियाणं राजोवससो । ग सो सीणावरणे अत्थि । अध दव्विंदियस्स जदि गहणं कीरदि तो सण्णीणमपञ्जत्त काले सत्त पाणा पिंडिट्ठण दो चव पाणा भवन्ति, पंचणहं दव्वेदियाणमभावादो । तम्हा सिद्ध हो जाता है ।

विशेषार्थ—'सम्माभिच्छाड्ढि-संजदासंजद सजद-द्राणे गियमा पञ्जत्ता' इस सूत्रको अनित्य वतलाकर उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतोंको भी जो अपर्याप्तक सिद्ध किया है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस कथनसे टीकान्तरका गह अभिप्राय होगा कि तीसरे गुणस्थानमें उत्तरवैक्रियिक और उत्तर-ओदारिक तथा पाचवें गुण-स्थानमें उत्तर-ओदारिकको उत्पन्न करनेवाले जीव जबतक उस उत्तर-शरीरकी पूर्णता नहीं कर लेते हैं तबतक अपर्याप्तक कहे गये हैं । जिसप्रकार तेरहवें गुणस्थानमें पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए और शरीरकी पूर्णता होते हुए भी योगकी अपूर्णतासे जीव अपर्याप्तक कहा जाता है, उसीप्रकार यहाँपर भी पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए, योगकी पूर्णता रहते हुए और मूल शरीरकी भी पूर्णता रहते हुए केवल उत्तर शरीरकी अपूर्णतासे अपर्याप्तक कहा गया है ।

शंका—जिसका आरंभ किया हुआ शरीर अर्थात् अपूर्ण है उसे अपर्याप्त कहते हैं । परंतु सयोगी-अवस्थामें शरीरका आरंभ तो होता नहीं, अतः सयोगीके अपर्याप्तपना नहीं बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कपाटादि समुदात्त-अवस्थामें सयोगी छह पर्याप्तिरूप शक्तिये रहित होते हैं, अतएव उन्हें अपर्याप्त कहा है ।

सयोगी जिनके पांच भावेन्द्रियां और भावमन नहीं रहता है, अतः इन छहके विना चार प्राण पाये जाते हैं । तथा समुदात्तकी अपर्याप्त अवस्थामें वचनवल और श्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, अथवा तेरहवें गुणस्थानके अन्तमें आयु और काय ये दो ही प्राण पाये जाते हैं । परंतु कितने ही आचार्य द्रव्येन्द्रियोंकी पूर्णताकी अपेक्षा दश प्राण कहते हैं, परंतु उनका ऐसा कहना यद्विद नहीं होता है, क्योंकि, सयोगी जिनके भावेन्द्रियां नहीं पाई जाती हैं । पांचों इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमको भावेन्द्रिय कहते हैं । परंतु जिनका आवरणकर्म समूल नष्ट हो गया है उनके वह क्षयोपशम नहीं होता है । और यदि प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका ही ग्रहण किया जावे तो संक्षी जीवोंके अपर्याप्त कालमें सात प्राणोंके स्थानपर कुल दो ही प्राण कहे जायगे, क्योंकि, उनके द्रव्येन्द्रियोंका अभाव होता है । अतः यह सिद्ध हुआ कि सयोगी जिनके चार

१ यत्थियु 'सरीरादव्वण' इति पाठ ।

२ यत्थियु 'दव्वेदियाणि

भवन्ति' इति पाठ ।

सजोगिकेवलिस्य चत्वारि पाणा दो पाणा वा । खीणसण्णा, मशुसगदी, पंचिन्द्रियजादी, तसकाजो, सच जोग, सचमणजोगो असचमणजोगो सचचचिजोगो असचच-मोसचचिजोगो ओरालियकायजोगो क्वाडगदस्स ओरालियमिस्सकायजोगो पदर-लोग-पूरणसु क्रम्मइयकायजोगो, इएवं सजोगिकेवलिस्य सच जोगा भवति । अवगदेवेदो, अकसाओ, केवलणण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदसण, दवेण छ लेम्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवमिद्धिया, सइयसम्मत्तं, नेत्र सण्णिणो गेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता होंति ।

अजोगिकेवलीणं भणमणो अस्थि एयं गुणङ्गणं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज-चीओ, पुच्चिल्ल-पज्जचीओ तथा चैव द्विदाओ चि छ पज्जचीओ भणिदाओ । ण पुण पज्जची-जणिद-कज्जसत्थि । आउअ-पाणो एक्को चैव । केण कारणेण ? ण ताव पाणा-

अथवा दो ही प्राण होते हैं । प्राण आलापके आगे क्षीण संज्ञा, मनुष्यजाति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, सात योग होते हैं । वे सात योग कौनसे हैं ? आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं—सत्यमनोयोग, अनुभवमनोयोग, सत्यवचनयोग, अनुभववचनयोग, औदारिककाययोग, कपाट-समुद्धतगत केवलीके औदारिकमित्रकाययोग और प्रतर तथा लोकपूर्ण समुद्धतगत केवलीके कार्मणकाययोग इस प्रकार सयोगिकेवलीके सात योग होते हैं । योग आलापके आगे अप-गतेवेद, अकपाय, केवलज्ञान, यथाव्यातशुद्धि सयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्याएं, और भावसे शुरुलेस्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, सब्बी और असब्बी विकल्पसे रहित, आहारी, अनाहारी, साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

अयोगिकेवली गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक चौदहवां गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां होती हैं । छहों पर्याप्तियोंके होनेका यह कारण है कि पूर्वसे आई हुई पर्याप्तिया तथैव स्थित रहती हैं, इसलिये यहापर छहो पर्याप्तियां कही गई हैं । किन्तु यहापर पर्याप्तजनित कोई कार्य नहीं होता है, अतः आयुनामक एक ही प्राण होता है । शंका—एक आयुप्राणके होनेका क्या कारण है ?

समाधान—ज्ञानावरण-कर्मके क्षयोपशमस्वरूप पांच इन्द्रिय प्राण तो अयोगकेवलीके

नं. २५ सयोगिकेवलीके आलाप.

| यु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | गो | वे | क | आ | मय | द. | ले | भ | स. | सति | अ. | उ. |
|--------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|---|----|----|----|---|----|-----|----|----|
| १, २ | ६ | ४ | ० | १ | १ | १ | ७ | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० | २ | २ |
| म प, प | म | प | म | प | म | प | म | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| म प, प | म | प | म | प | म | प | म | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अप | | | | | | | आ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

वरण-खओवसम-लक्खण-पंचिन्द्रियपाणा तत्थ संति, खीणावरणे खओवसमाभावादो । आणा-चाण-भासा-मणपाणा वि गत्थि, पज्जत्ति-जणिद-पाण-सण्णिद-सत्ति-अभावादो । ण सरीर-बलपाणो वि अत्थि, सरीरोदय-जणिद-रुम्म-गोक्कममागमाभावादो । तदो एक्को चैव पाणो । उवयारमसिस्सण एक्को वा छ वा सत्त वा पाणा भवति । एस पाणो पुण

हैं नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि कर्मके क्षय हो जानेपर क्षयोपशमका अभाव पाया जाता है । इसीप्रकार आनापान, भाषा, और मनःप्राण भी उनके नहीं हैं, क्योंकि, पर्याप्तजनित प्राण-संज्ञावाली शक्तिका उनके अभाव है । उसीप्रकार उनके कायबल नामका भी प्राण नहीं है, क्योंकि, उनके शरीर नामकर्मके उदय-जनित कर्म और नोकर्मके आगमनका अभाव है । इस-लिये अयोगकेवलीके एक आयुप्राण ही होता है ऐसा समझना चाहिये । किन्तु उपचारका आश्रय लेकर उनके एक प्राण, छह प्राण अथवा सात प्राण भी होते हैं ।

विशेषार्थ—वास्तवमें अयोगी जिनके एक आयु प्राण ही होता है फिर भी उपचारसे उनके यहां पर एक या छह या सात प्राण बतलाये हैं । 'जहां मुख्यका तो अभाव हो किन्तु उसके कथन करनेका प्रयोजन या निमित्त हो वहा पर उपचारकी प्रवृत्ति होती है' उपचारकी इस व्याख्याके अनुसार यहा चौदहवें गुणस्थानमें क्षयोपशमरूप मुख्य इन्द्रियोंका तो अभाव है । फिर भी अयोगी जिनके पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदय पाया जाता है और वह जीवविपाकी है, इस निमित्तसे उन्हें पंचेन्द्रिय कहना बन जाता है । इसलिये उनके पाच इन्द्रिय प्राणोंका कथन करना भी सप्रयोजन है । इसप्रकार पाच इन्द्रियोंमें आयुको मिला देने पर छह प्राण हो जाते हैं । यहां पर इन्द्रियोसे अभिप्राय उस शक्तिसे है जिससे अयोगी जिनमें पंचेन्द्रिय-पनेका व्यवहार होता है । परंतु उस शक्तिके सम्पादनका या पांच इन्द्रियोंका आधार शरीर है, अतः इस निमित्तसे अयोगी जिनके कायबलका कथन करना भी सप्रयोजन है । इसप्रकार पूर्वोक्त छह प्राणोंमें कायबलके और मिला देने पर सात प्राण हो जाते हैं । यद्यपि उनके पहलेकी छह पर्याप्तियां उसीप्रकारसे स्थित हैं, अतः वे पर्याप्तक कहे जाते हैं । तथा पर्याप्तक अवस्थामें मनःप्राण भी होता है, इसलिये उनके मन-प्राणका भी कथन करना चाहिये था । परंतु उसके कथन नहीं करनेका यह कारण प्रतीत होता है कि उनमें सबीव्यवहार लुप्त हो गया है । औप-चारिक सबीव्यवहार भी उनमें नहीं माना गया है, अतः अयोगियोंके मन-प्राण नहीं कहा । इसीप्रकार वचनबल और श्वासेच्छ्वासेके अभावका भी कारण समझ लेना चाहिये । ऊपर सयोगी जिनके जो पाच इन्द्रिया और एक मन इसप्रकार छह प्राणोंका नियेय करके केवल चार ही प्राण बतलाये हैं वह मुख्य कथन है । अतः जिस उपचारकी अपेक्षा यहा छह अथवा सात प्राण कहे हैं वही उपचार वहा भी लागू होता है । आयु प्राण तो अयोगियोंके मुख्य प्राण है फिर भी उसे भी उपचारमें ले लिया है, इसलिये इसे कथनका विवक्षित पर्यायमें रखना जो आयुका काम है उपचारका प्रयोजन ऐसा प्रतीत होता है कि विवक्षित पर्यायमें रखना जो आयुका काम है

आपपाणो । गीणसणा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अगदवेदो, अक्रमाओ, केवलणण, जहाप्रसादविहारमुद्रिमंजमो, केवलदंसण, दब्येण छ लेस्साओ, भाणेण अलेस्सा; लेन-कारण-जोग-कमायाभावादो । भवसिद्धिया, सडयसम्माड्डिणो, नेन सण्णिणो नेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा नैति ।

मिद्राणं ति भण्णमाणे अन्थि एयं अदीद-गुणद्वणं, अदीद-जीवसमामो, अदीद-पञ्चत्तीओ, अदीद पाणा, गीणसणा, मिद्रगदी, अण्णिदिया, अक्रमाया, अजोगिणो; अगदवेदा, गीणकमाया, केवलणणिणो, नेन संजदा नेव असंजदा नेव संजदासंजदा, केवलदंसण, दब्य-संवहिं अलेस्सिया, नेव भवसिद्धिया, सडयसम्माड्डिणो, नेव सण्णिणो

तद् यदा भी पाया जाता है, इसलिये तो वह मुख्य प्राण है। फिर भी जीवनका अवस्थान अल्प है। और अवस्थानके कारणभूत नये कर्माका आना, योगमृत्ति आदि भी नष्ट हो गये है, अतः आयु भी इस प्रपेक्षासे औपचारिक प्राण कहा जाता है। इसप्रकार अयोगियोंके उपचारसे एक या छद्म या सान प्राण कहे गये हैं।

प्राण आलापके आगे-शीणसजा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, अयोग, अपगत-वेद, अक्रमाय, केवलजान, यथारयातवितारयुद्धिसयस, केवलदर्शन, द्रव्यसे छोड़ा लेख्यायं, भास्से ले-नारदितस्तान होता है। लेख्याके नहीं होनेका यह कारण है कि कर्म लेपके कारण-भूत योग-गेर कमाय, इन दोनोंका ही उनके अभाव है। लेख्या आलापके आगे-भव्यसिद्धिक, क्षाथिकस्यगृष्टि, संजी और असजी विकल्पसे रहित, अनाहारक, साकारोपयोग तथा अना-कारोपयोग इन दोनों ही उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

सिनरपरसेष्टीके ओघालाप कहनेपर—एक अतीत-गुणस्थान, अतीत-जीवसमास, अतीत पर्याप्त, अतीत-प्राण, शीण, संजा, सिद्धगति, अनिन्द्रिय, अक्रमाय, अयोगी, अवेदी, क्षीणकमाय, केवलजानी, मयत, असंयत और सयतासंयत विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शनी, द्रव्य और भास्से अलेख्य, भव्यसिद्धिक निकरगतित, क्षाथिकस्यगृष्टि, संजी और असंजी इन दोनों

नं २६

अयोगिकेवलीके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु. | जी. | अ.सु | प. | मा. | सा. | स. | ग. | इ. | वा. | यो. | वे. | क. | सा. | सप. | द. | ले. | म. | म. | मा. | आ. | उ. |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु |

नेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा नैति ।

एव मूलेघालवा समत्ता ।

आदेसेण गदियायुनादेण गिरयगदीए गेरइयाणं भण्णमाणे अस्थि चत्तारि गुण-द्वणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-आहार-आहार-मिस्सेहिं विणा एगारह जोग, गणुंसयवेदो, गेरइया दब्य-भोविहिं गणुंसयवेदा चेव भवति च्ति । चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णिण दंसण, दब्येण कालाकालाभारा-काउ-सुक्कलेस्साओ, दब्वेलेस्सा कालाकालाभासा सुदुक्कहेत्ति जं वुत्तं हेदि । एसा गेरइयाणं

विकल्पसे मुक्त, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसप्रकार मूल ओघालाप समाप्त हुए।

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंके आलाप कहनेपर-आदिके चार गुणस्थान, सजी-पर्याप्त सजी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छोड़ो पर्याप्तिया, छोड़ो अपर्याप्तिया. पर्याप्तकालकी अपेक्षा दस प्राण और अपर्याप्तकालकी अपेक्षा सात प्राण, चारों संजाण, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकताययोग. औदारिकमिश्रकाययोग, आहार-रककाययोग, आहारकमिश्रकाययोग, इन चारों योगोंके बिना ग्यारह योग, नपुंसकवेद होता है। एक नपुंसकवेदके होनेका यह कारण है कि नारकी जीव द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षा नपुंसकवेदी होते हैं। वेद आलापके आगे चारों कर्मायें, तीनों अज्ञान और तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्तत्वकी अपेक्षा कालाकालाभास लेख्या, और अपर्याप्तत्वकी अपेक्षा नापोत और शुक्लेख्या होती है। पर्याप्त-अवस्थामें जो कालाकालाभास लेख्या कही है उसके कहनेका यह तात्पर्य है कि पर्याप्त अव-स्थामें कालाकालाभास अर्थात् अतिक्रमण लेख्या होती है। नारकियोंकी पर्याप्त-अवस्थामें यह

२ प्रतिपु ' क्रणत्ति ' इति पाठ ।

नं २७

सिद्धिके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु. | जी. | अ.सु | प. | मा. | सा. | स. | ग. | इ. | वा. | यो. | वे. | क. | सा. | सप. | द. | ले. | म. | म. | मा. | आ. | उ. |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु | अ.सु |

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवञ्जुत्ता वां ।
तेसि चैव अपज्जत्तारं भण्णमाणे अत्थि दो गुणद्वाणाणि, एथो जीवसमासो, छ
अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो
जोग, णवुंसयेवेदो, चत्तारि कसाय, विभंगणोणेण विणा पच णाण, असंजम, तिण्णि
दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया
अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं खइयसम्मत्तं भिच्छत्तं
च । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवञ्जुत्ता होति अणागारुवञ्जुत्ता वां ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नारकियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और असंयत-
सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों
संज्ञाय, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चैक्रियकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये
दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, विभंगज्ञानके विना कुमति और कुश्रुति ये दो अज्ञान
तथा मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके
तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्य-
सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व क्षायोपशमिक और क्षयिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं ।
इसमें वेदकसम्यक्त्व तो कृतसंख्येदककी अपेक्षा होता है और उसमें क्षयिक और मिथ्यात्वके
मिला देने पर नारकियोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन सम्यक्त्व होते हैं । सम्यक्त्व आलापके
आगे संबन्धिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

१ प्रथमार्थी पृथिव्यां पर्याप्तापर्याप्तमानां क्षायिक क्षायोपशमिक चास्ति । स. सि १, ७

ने २९

नारकसामान्य पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| मि | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ |
| सा | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| स | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ |
| अ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ |

ने ३०

नारकसामान्य अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| मि | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ |
| सा | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| स | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ |
| अ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ |

पज्जत्तकाले सररीलेस्सा भवदि । विग्गहगदीए पुण गेरइयादि-सव्व-जीवाणं दव्वलेस्सा
सुक्का चैव भवदि, कम्म-विस्ससोवचयस्स धवलवणं सोत्तूण अण्ण-वण्णाभावादो ।
सररी-गहिद-पटम-समय-प्यहुडि जाव अपज्जत्त-काल-चरिम-समओ त्ति ताव सररीस्स
काउलेस्सा चैव, संवलिद-सयल-वण्णादो । भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया
अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवञ्जुत्ता होति
अणागारुवञ्जुत्ता वां ।

तेसि चैव पज्जत्तारं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वाणाणि, एगो जीवसमासो,
छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव
जोग, णवुंसयेवेदो, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काला-
कालासासलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ

शरीरलेख्या होती है । किन्तु विग्रहगतिमें नारकीं आदि सभी जीवोंकी द्रव्यलेख्या शुक्ल ही होती
है, क्योंकि, कर्मोंके विस्त्रसोपचयका धवलवर्ण छोड़कर अन्यवर्ण नहीं होता है, तथा शरीर-
ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर अपर्याप्तकालके चरम समयतक शरीरकी कापोतलेख्या
ही होती है, क्योंकि, उस समय शरीर स्वलिप्त सकल वर्णवाला होता है । भावकी अपेक्षा तो
कृष्ण, नील और कापोतलेख्या होती है । लेख्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक,
छहों सम्यक्त्व, संबन्धिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नारकियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान,
एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञायें, नरकगति, पचेन्द्रिय-
जाति, त्रसकाय, नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, और आदिके तीन ज्ञान
रसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालकालाभास कृष्णलेख्या और
भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संबन्धिक,

ने २८

नारकसामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| मि | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ |
| सा | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| स | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ |
| अ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ |

मंपदि गेरडय-मिच्छादृष्टीर्णं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पञ्जीओ छ अपज्जत्तीओ, दम पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, एवारह जोग, णुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णण, अमंजमां, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवमिद्विया अभवमिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अण्णारुञ्जत्ता हंति अण्णारुञ्जत्ता वा ।

तेसिं चेम पज्जत्ताणं भण्णमाणं अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज-त्तीओ, दम पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकाला-

उत्तर नारत्ती मिथ्यादृष्टिजीवोके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सर्सी-पर्योम आरु सञ्जी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और मान प्राण, चारों सजाए, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों मननयोग, वैकल्पिककाययोग, वैकल्पिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कपायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थानी अपेक्षा कालाकालाभासलेइया और अपर्याप्त-अवस्थानी अपेक्षा कापोत और शुक्कलेइयाए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेइयाए, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व सन्निक, आहारक, सान्कारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नारत्ती मिथ्यादृष्टि जीवोके पर्याप्तकालसम्यन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्या-दृष्टि गुणस्थान, एक सञ्जी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाए, नरक-गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और कर्मणकाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कपायें, तीनों अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभासकृष्ण-

नं. ३२

नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि आलाप.

| शु | जा | म | प | सा | ग | द | क | सा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ. |
|-----|----|---|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |

भासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवमिद्विया अभवमिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सगारुञ्जत्ता हति अण्णारुञ्जत्ता वा ।

तेसिं चेम अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दोणिण अण्णण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवमिद्विया अभवमिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सगारुञ्जत्ता हति अण्णारुञ्जत्ता वा ।

लेइया, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेइया, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, सान्कारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नारत्ती मिथ्यादृष्टि जीवोके अपर्याप्तकालसम्यन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सञ्जी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाए, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकल्पिकमिश्र और कर्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपायें, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्कलेइयाए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेइयाए, भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाकारक, सान्कारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३२

नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप

| शु | जा | म | प | सा | ग | द | क | सा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ. |
|-----|----|---|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |

नं. ३३

नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप.

| शु | जा | म | प | सा | ग | द | क | सा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ. |
|-----|----|---|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| मि. | म | प | प | प | प | प | अ | अ | अ | अ | अ | म | मि | स | आ | उ. |

सासणसम्माइडीणं भणमणे अत्थि एयं गुणडाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दब्बेण कालाकालाभासलेस्सा, भवेण किण्हणील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वां ।

सम्माभिच्छाइडीणं भणमणे अत्थि एयं गुणडाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण तिहिं अण्णाणेहि भिसंसाणि, असंजम, दो दंसण, दब्बेण कालाकालाभासलेस्सा, भवेण किण्हणील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया,

नारकी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर—एक सासादन गुणस्थान, एक सती पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नडुंसकवेद, चारों कर्षणं, तीनों अन्नान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास लेख्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नडुंसकवेद, चारों कर्षणं, तीनों अन्नानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास लेख्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्या, भव्यसिद्धिक

नं. ३३

नारकसामान्य-सासादन आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|----|----|---|----|-----|---|----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द. | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | १ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | १ | २ | १ | २ |
| सा | स | प | | | | | | म | ४ | अ | अ | अ | च | क | म | सा | स | आ | सा |
| | | | | | | | | व | ४ | अ | अ | अ | व | मा | ३ | ३ | ३ | आ | सा |
| | | | | | | | | वे | १ | ३ | ३ | अ | अ | अ | ३ | ३ | ३ | आ | अ |
| | | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | अ | अ | अ | ३ | ३ | ३ | आ | अ |

सम्माभिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो सागारुवुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वां । असजदसम्माइडीणं भणमणे अत्थि एयं गुणडाणं, दो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण किण्हणील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वां ।

तेसिं चव पज्जत्ताणं भणमणे अत्थि एयं गुणडाणं, एओ जीवसमासो, छ

सम्यग्मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नारकी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अचिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सन्नो-पर्याप्त और सन्नो-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चारह योग, नडुंसकवेद, चारों कर्षणं, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेख्या तथा कापोत और शुक्ल लेख्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, धार्मिक और शायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं ३५

नारकसामान्य-सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|----|----|---|----|-----|---|----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द. | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | १ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | १ | २ | १ | २ |
| सा | स | प | | | | | | म | ४ | अ | अ | अ | च | क | म | सा | स | आ | सा |
| | | | | | | | | व | ४ | अ | अ | अ | व | मा | ३ | ३ | ३ | आ | सा |
| | | | | | | | | वे | १ | ३ | ३ | अ | अ | अ | ३ | ३ | ३ | आ | अ |
| | | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | अ | अ | अ | ३ | ३ | ३ | आ | अ |

नं ३६

नारकसामान्य-असयत सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|----|----|---|----|-----|---|----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द. | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | १ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | १ | २ | १ | २ |
| सा | स | प | | | | | | म | ४ | अ | अ | अ | च | क | म | सा | स | आ | सा |
| | | | | | | | | व | ४ | अ | अ | अ | व | मा | ३ | ३ | ३ | आ | सा |
| | | | | | | | | वे | १ | ३ | ३ | अ | अ | अ | ३ | ३ | ३ | आ | अ |
| | | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | अ | अ | अ | ३ | ३ | ३ | आ | अ |

छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहणिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण कालाकाला-भासलेस्सा, भावेण जहणिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

योग, नपुसकवेद, चारों कयायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृण्णलेइया तथा अपर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्क लेइयाए, भावसे जघन्य कापोतलेइया; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, अनाहारक, अनाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, वरों प्राण, चारों सन्धाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुसकवेद, चारों कयायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृण्णलेइया, भावसे जघन्य कापोतलेइया, भव्य-

नं. ३१.

प्रथमपृथिवी-नारकसामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|----|----|---|---|---|----|----|----|---|--------|-----|------|----|---|-----|-----|------|-----|
| गु. | जी | प. | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | साय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| ६ | २ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| मि | स | ७ | न | न | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | अस. | के | द | ३ | स. | आहा | २ | २ |
| सा. | स | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |
| सम्य | अ | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |
| अवि | | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |

सण्णो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहणिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, अनाहारक, अनाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्याहृष्टि और अचिरतसम्यहृष्टि ये दो गुणस्थान, एक सन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सन्धाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुसकवेद, चारों कयायें, कुमति, कुथुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्कलेइयाएं, भावसे जघन्य कापोतलेइया, भव्य-सिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, क्षयोपशमिक और क्षयिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, अनाहारक, अनाहारक, अनाकारोपयोगी अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४०

प्रथमपृथिवी-नारक पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|--------|-----|------|----|---|-----|-----|------|-----|
| गु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | साय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| ४ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| मि | स | ७ | न | न | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | अस. | के | द | ३ | स. | आहा | २ | २ |
| सा | स | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |
| स | अ | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |
| अ | | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |

नं ४१

प्रथमपृथिवी-नारक अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|--------|-----|------|----|---|-----|-----|------|-----|
| गु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | साय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| २ | २ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| मि | स | ७ | न | न | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | अस. | के | द | ३ | स. | आहा | २ | २ |
| सा | स | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |
| सम्य | अ | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |
| अवि | | | | | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | अज्ञा. | अस. | विना | का | ३ | अना | अना | साका | अना |

संपदि पडस-पुढवि-मिच्छाद्वीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवममसा, छ पञ्चचीओ छ अपञ्चचीओ, दस पाण मत्त पाण, चचारि मणाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, एगारह जोग, गणुंसयवेद, चचारि कसाय, तिणिण अण्णाण, अणंनम, दो दंसण, दन्वेण कालाकालामस-काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण जहणिया काउ-लेस्सा, मग्गिमिद्विया अममिद्विया, मिन्छत्तं, मणिणो, अहारिणो अणाहारिणो, सागार-जुत्ता हेति अणागरुजुत्ता वा' ।

तेमिं नेर पञ्चचाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, दस पाण, चचारि मणाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग. गणुंसयवेद, चचारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दन्वेण

अत्र प्रथम पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहते पर-एक मिथ्यादृष्टि गुण-दान, सवी-पर्याप्त ओर सवी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तियां, दशो प्राण, सात प्राणः चारों मदाण, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों यत्नयोग, वैकृतिकक्रमायोज, वैकृतिकमित्रक्रमायोज ओर कार्मणक्रमायोज ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, भवसे पर्याप्त भक्त्याकी अपेक्षा कालाकालामस लेख्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल-लेख्याण, भावसे जनन्य कापोत लेख्याः भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सबिक, आहा-रक, अनाहारक. साकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं प्रथम पृथिवी गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहते पर-एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाय, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैकृतिकक्रमायोज ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

न. ४२ प्रथमपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|----|---|---|---|---|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|
| यु | जी | प | प | रा | स | ग | द | क | वा | वे | क | ज्ञा | सय | द | ल | स | स | स | मि | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि | म | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

कालाकालामसलेस्सा, भवेण जहणिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिन्छत्तं, सण्णो, अहारिणो, सागरुजुत्ता हेति अणागरुजुत्ता वा' ।

तेमिं चैव अपञ्चचाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चचीओ, सत्त पाणा, चचारि सणाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, दो जोग, गणुंसयवेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दन्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण जहणिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिन्छत्तं, सण्णो, अहारिणो अणाहारिणो, सागरुजुत्ता हेति अणागरुजुत्ता वा' ।

द्वयसे कालाकालामस कृण्णलेख्या, भावसे जघन्य कापोतलेख्या, भव्यसिद्धिक अभव्य-सिद्धिक. मिथ्यात्व, सबिक, आहारक, साकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आटाप कहते पर-एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सखी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सज्ञाय, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकृतिकमित्रक्रमायोज ओर कार्मणक्रमायोज ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुयुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्वयसे कापोत और शुक्ललेख्या, भावसे जनन्य कापोतलेख्या, भव्य-सिद्धिक अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, सबिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

१ प्रतिपु 'अभवसिद्धिया' इति पाठो नास्ति

नं. ४३ प्रथमपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|----|---|---|---|---|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|
| यु | जी | प | प | रा | स | ग | द | क | वा | वे | क | ज्ञा | सय | द | ल | स | स | स | मि | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि | म | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

नं. ४३ प्रथमपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|----|---|---|---|---|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|
| यु | जी | प | प | रा | स | ग | द | क | वा | वे | क | ज्ञा | सय | द | ल | स | स | स | मि | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि | म | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| म | अ | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

सम्प्राप्तिसिद्धिं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, गणुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण जहणिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

सत्थिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं । प्रथम-पृथिवी गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक अविस्तरसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सब्बी पर्याप्त और संब्बी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दसो प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारो मनोयोग, चारो वचनयोग, वैकृतिककाययोग, वैकृतिकमिथकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुसकवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थकी अपेक्षा कालाकालाभास कृणलेइया तथा अपर्याप्त अवस्थकी अपेक्षा कापोत और शुक्लेइया, भावसे जघन्य कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सत्थिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

ने ४६ प्रथमपृथिवी-नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------|----------|------|------|------|-------|-------|-------|------|----------|-------|------|-------|------|------|----------|--------|---------|
| गु. जी. १ | प. ६ | प्रा. १० | स. ४ | ग. १ | इ. १ | का. २ | यो. १ | वे. ४ | क. ३ | ज्ञा. ३ | सय. १ | द. २ | ले. २ | म. १ | स. १ | सत्थि. १ | आ. २ | उ. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |

ने ४७ प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------|----------|------|------|------|-------|-------|-------|------|----------|-------|------|-------|------|------|----------|--------|---------|
| गु. जी. १ | प. ६ | प्रा. १० | स. ४ | ग. १ | इ. १ | का. २ | यो. १ | वे. ४ | क. ३ | ज्ञा. ३ | सय. १ | द. २ | ले. २ | म. १ | स. १ | सत्थि. १ | आ. २ | उ. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |

सासणसम्माइदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गव जोग, गणुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भवेण जहणिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, मासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

सम्प्राप्तिसिद्धिं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गव जोग, गणुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भवेण जहणिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया,

प्रथम-पृथिवी-गत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैकृतिककाययोग ये नौ योग, नपुसकवेद चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृणलेइया, भावसे जघन्य कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सत्थिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रथम-पृथिवी-गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैकृतिककाययोग ये नौ योग, नपुसकवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान-मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृणलेइया, भावसे जघन्य कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व,

ने ४८ प्रथमपृथिवी-नारक सासादनसम्यग्दृष्टि आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------|----------|------|------|------|-------|-------|-------|------|----------|-------|------|-------|------|------|----------|--------|---------|
| गु. जी. १ | प. ६ | प्रा. १० | स. ४ | ग. १ | इ. १ | का. २ | यो. १ | वे. ४ | क. ३ | ज्ञा. ३ | सय. १ | द. २ | ले. २ | म. १ | स. १ | सत्थि. १ | आ. २ | उ. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |
| स. प. ६ | द. ३ | १० | ४ | १ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ज्ञान. ३ | अस. १ | च. २ | द. २ | १ | १ | १ | आहा. २ | साहा. २ |

तेसिं चैव पञ्चत्वाणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं. एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, पात्र जोग, गांमुनयवेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, असंजम, तिणिण दंसण, दव्वेण काला-कालाभासेल्लमा, भावेण जहणिया काउलेस्सा; भवसिद्विया, तिणिण सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हेति अणारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्चत्वाणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, गांमुनयवेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, असंजम, तिणिण दंसण, दव्वेण काउ-गुम्कलेस्साओ, भावेण जहणिया काउलेस्सा; भवसिद्विया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो

उन्दी प्रथम-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अद्विगतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैज्ञानिककाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों क्रयाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णदेइया, तया अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्र लेइयाएं, भावसे जघन्य कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, शायिक और शायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, सजिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी दोले हैं ।

उन्दी प्रथम पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अद्विगतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सत्री-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, नात प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैज्ञानिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों क्रयाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्रलेइयाएं, भावसे जघन्य कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, उप-शामसम्यक्त्वे विना शायिक और शायोपशामिक ये दो सम्यक्त्व, संधिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ४८ प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|---|------|---|---|---|----|-------|----|----|-----|----|----|------|----|----|-----|----|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | वा | सय | द | ले | म | स | मति | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अग्नि | म | अ | अप | न | न | न | न | मि | न | ४ | मति | जम | के | विना | म | आ | म | आ | साका. |
| | | | | | | | | कार्म | | | अव. | | | | | | | | अना |

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुजुत्ता हेति अणारुजुत्ता वा । विदियाए पुढवीए णेरइयाणं भणमणे अत्थि चत्तारि गुणद्वानाणि, दो जीव-समासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरय-गदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, नपुंसकवेद, चत्तारि कथाय, छ गाण, असंजम, तिणिण दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुम्कलेस्साओ, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा; भवसिद्विया अभवसिद्विया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुजुत्ता हेति अणारुजुत्ता वा ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

द्वितीय-पृथिवी-गत नारकोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सत्री-पर्याप्त और सत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास. छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया. दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैज्ञानिककाययोग. वैज्ञानिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों क्रयाय. तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णदेइया तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्र लेइयाएं, भावसे जघन्य कापोतलेइया. भव्यसिद्धिक. अभव्यसिद्धिक. शायिक सम्यक्त्वे विना पांच सम्यक्त्व, सजिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४९ प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|---|------|---|---|---|----|-------|----|----|-----|----|----|------|----|----|-----|----|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | वा | सय | द | ले | म | स | मति | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अग्नि | म | अ | अप | न | न | न | न | मि | न | ४ | मति | जम | के | विना | म | आ | म | आ | साका. |
| | | | | | | | | कार्म | | | अव. | | | | | | | | अना |

नं. ५० द्वितीयपृथिवी-नारक सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|---|------|---|---|---|----|-------|----|----|-----|----|----|------|----|----|-----|----|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | वा | सय | द | ले | म | स | मति | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अग्नि | म | अ | अप | न | न | न | न | मि | न | ४ | मति | जम | के | विना | म | आ | म | आ | साका. |
| | | | | | | | | कार्म | | | अव. | | | | | | | | अना |

तेमि चैत्र पञ्चम्यां भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चमीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गव जोग, गण्डुसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणगारवजुत्ता वा ।

तेमि चैत्र अपञ्चम्यां भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चमीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, गण्डुसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

उत्था द्वितीय-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सती-पर्याप्त जीवसमान, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाण, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारो वचन-योग और वैकल्पिककाययोग ये नो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंजम, चार और अचक्षु ये दो दर्शन, उच्चसे कालाकालाभास कृष्णलेस्या, भावसे मध्यम कापोत-लेस्या; अभवसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उत्था द्वितीय-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सती-अपर्याप्त जीवसमान, छहों अपर्याप्तियां, मान प्राण, चारों सजाण, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकल्पिककाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, दो अज्ञान, असंजम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, उच्चसे कापोत और कृष्णलेस्या, भावसे मध्यम कापोतलेस्या, भव्य-

नं. ५३

द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-------|-----|-----|
| शु | जी | प | प्रा | म | ग | ङ | का | तो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |

आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणगारवजुत्ता वा ।

सासणसम्महड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चमीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गव जोग, गण्डुसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणगारवजुत्ता वा ।

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

द्वितीय-पृथिवी गत सासादनसम्यदृष्टि नारकोंके आलाप कहते पर—एक सासादन गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहो पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाण, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारो मनोयोग, चारो वचनयोग और वैकल्पिककाययोग ये नो योग, नपुंसकवेद, चारो कयाय, तीनों अज्ञान, असंजम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, उच्चसे कालाकालाभास कृष्णलेस्या, भावसे मध्यम कापोतलेस्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यस्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५५

द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-------|-----|-----|
| शु | जी | प | प्रा | म | ग | ङ | का | तो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |

नं. ५६

द्वितीयपृथिवी-नारक सासादनसम्यदृष्टि आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-------|-----|-----|
| शु | जी | प | प्रा | म | ग | ङ | का | तो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | १ | १० | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |

सम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं तदिय-पुढवि-आदि जाव सत्तम-पुढवि चि चदुहं गुणट्टाणमालावो वत्तवो । णवरि विसेसो तदियाए णवणं इंदयाणं मज्जे उवरिम-अट्टसु इदएसु उक्कस्सिया काउलेस्सा भवदि । हेट्टिमए णवसे इंदए केसिचि जीवाणमुक्कस्सिया काउलेस्सा केसिचि जहणिया णीलेस्सा । कुदो ? जहणुक्कस्स-णिल-काउलेस्साणं सत्त-सागरोवम-काल णिदेसादो । तेण तदिय-पुढवीए उक्कस्सिया काउलेस्सा जहणिया णीलेस्सा च वत्तव्वा । चउत्थीए पुढवीए मज्झिमा णीलेस्सा । पंचमीए पुढवीए चउणहुवरिम-इंदयाणं उक्कस्सिया णीलेस्सा च भवदि । पंचए उक्कस्सिया णीलेस्सा जहणा किणहेस्सा च भवदि । कुदो ? जहणुक्कस्स-किणह-णीलेस्साणं सत्त-सागरोवम-काल-णिदेसादो ।

क्षयिकसस्यत्वके विना औपशमिक और क्षयोपशमिक ये दो सम्यत्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसीप्रकार तृतीय-पृथिवीसे लेकर सातवी पृथिवी तक नारकियोंमे चारो गुणस्थानोंके आलाप कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि तृतीय पृथिवीके नौ इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके आठ इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट कापोतलेइया होती है और नत्रिके नौवें इन्द्रक बिलमें कितने ही नारकी जीवोंके उत्कृष्ट कापोतलेइया होती है, तथा कितने ही नारकोंके जघन्य नीलेइया होती है, क्योंकि, जघन्य नीलेइया और उत्कृष्ट कापोतलेइयाकी सात सागरोपम स्थितिका आगममें निर्देश है । अतएव तीसरी पृथिवीके नौवें इन्द्रक बिलमे ही उत्कृष्ट कापोत और जघन्य नीलेइया बन सकती है । इसप्रकार तृतीय पृथिवीमें उत्कृष्ट कापोतलेइया और जघन्य नीलेइया कहना चाहिए । चौथी पृथिवीमें मध्यम नीलेइया है । पांचवी पृथिवीके पाच इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके चार इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट नीलेइया ही है, और पांचवें इन्द्रक बिलमें उत्कृष्ट नीलेइया तथा जघन्य कृष्णलेइया है, क्योंकि, जघन्य कृष्णलेइया और उत्कृष्ट नीलेइयाका आगममें सबह सागरप्रमाण कालका निर्देश किया

नं. ५८ द्वितीयपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

सम्मामिच्छाइड्डीणं भणमाणे अस्थि एवं गुणट्टाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज-चीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसंसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिसंसाणि, असंजम, दो दंसण, दब्बेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

असजदसम्माइड्डीणं भणमाणे अस्थि एवं गुणट्टाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसंसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो

द्वितीय-पृथिवी गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहते पर-एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाए, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाय-योग ये नौ योग, नपुंसकवेद चारों कयाय, तीनों अन्नलमिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेइया, भावसे मध्यम कापोत-लेइया, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

द्वितीय-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहते पर-एक अविपत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारो संज्ञाए, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेइया, भावसे मध्यम कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक,

नं. ५७ द्वितीयपृथिवी-नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

एतयो दो लेम्माओ पंचम-पुडवी-गेरइयाणं भवंति। छट्टीए पुडवीए गेरइयाणं मड्डिम-
किण्हलेस्मा भवति। सचमीए पुडवीए गेरइयाणं उक्कस्मिया किण्हलेस्मा भवति।

तिरिसुगहंणं तिरिसुगहंणं भण्णमाणे तिरिसा पंचविधा भवंति, तिरिसा पंच-
दियतिरिसा पंचदियतिरिसापञ्चता पंचदियतिरिसजोणिणी पंचदियतिरिसखअपञ्चता
चेदि। तस्य निक्खियाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणहुणाणि, चेदस जीवसमासा, छ
पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ चत्तारि पञ्चत्तीओ चत्तारि
अपञ्चत्तीओ, दय पाण मत्त पाण णव पाण मत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच
पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी,
एण्डियजादि-आदी पंच जादीओ, पुडविकायादी छक्काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद,
चत्तारि क्रमाय, छ णाण, दो मंजम, तिण्णि दंमण, दव्व-भवेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया
अभमिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सासार-
गया हे। अतएव पाचवी पृथिवीके पाचवं इन्द्रक विलमं ही उरुए नील्लेइया और जघन्य
रुणलेइया वन सकन्ती हे। इसप्रकार ये दोनों ही लेइयाए पांचवी पृथिवीके नारसी जीवोंके
होती हे। छठी पृथिवीके नारकोके मध्यम रुणलेइया होती हे। सातवी पृथिवीके नारकोके
उरुए रुणलेइया होती हे।

इसप्रकार नरऋतिके आलाप समाप्त एए।

अत्र त्रिचगतिके आलापोंको कहते हे। त्रिच पात्र प्रकारके होते हे, १ त्रिच,
२ पंचेन्द्रिय त्रिच, ३ पंचेन्द्रिय पर्याप्त त्रिच ४ पंचेन्द्रिय योनिमती त्रिच, और ५ पंचेन्द्रिय
लक्ष्यपर्याप्त त्रिच, इनमें सामान्य त्रिचोंके आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान,
चोइहों जीवसमास, सत्रीके छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, असंखी और विकलत्रयोंके
पांच पर्याप्तिया, पांच अपर्याप्तिया पंचेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां,
सत्री पंचेन्द्रिय त्रिचोंके दसो प्राण, सात प्राण असंखी पंचेन्द्रिय त्रिचोंके नौ प्राण, सात
प्राणः चतुर्गिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, पांच प्राण,
द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, चार प्राण, और पंचेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण, तीन प्राण,
क्रमसः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हे। चारों सखाए, त्रिचगति, एकेन्द्रियजाति
आदि पांचों जानिया, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,
आहारिककाययोग, आहारिकमिश्रकाययोग और कामणकाययोग ये ग्यारह योग, तिनों
केर चारों क्रमाय, तिनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंख्य और देश-
संगम ये दो संयम आदिके तीन दर्शन, इन्द्र और भावसे छहों लेइयाए, भवसिद्धिक,
अध्यात्मिक छहों मर्याद, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी

वञ्चता होंति अणगारवञ्चता वा ।

तेसिं 'चेव पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणहुणाणि, सत्त जीवसमासा, छ
पञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ चत्तारि पञ्चत्तीओ, दय पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण
छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खसहं, एण्डियजादि-आदी पंच जादीओ,
पुडविकायादी छक्काया, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि क्रमाय, छगण, दो संजम,
और अनाकारोपयोगी होते हे।

उन्हीं सामान्य त्रिचोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके पांच गुण-
स्थान, पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, सत्री-पर्याप्त पंचेन्द्रिय त्रिचोंके छहों
पर्याप्तिया, असंखी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय त्रिचोंके पांच पर्याप्तिया, एकेन्द्रिय
पर्याप्त त्रिचोंके चार पर्याप्तिया, सत्री पंचेन्द्रियके दसों प्राण, असंखी पंचेन्द्रियके नौ प्राण,
चतुर्गिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण और
एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण होते हे। चारों सखाए, त्रिचगति, एकेन्द्रियादि पांचों जानिया,
पृथिवीकायादि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और आहारिककाययोग ये नौ
योग, तिनों वेद, चारों क्रमाय, तिनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंख्य
और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, इन्द्र और भावसे छहों लेइयाए, भव्य-

नं. ५९

सामान्य त्रिचोंके आलाप

| गु. जी. | प | प्रा | म | ग | इ | जा | गो | वे | क | जा | म | म | म | सा | उ. |
|---------|---|-------|---|---|---|----|----|----|---|----|---|---|---|----|----|
| ५ | ५ | १०, ७ | १ | १ | ५ | ६ | ११ | ३ | ४ | ६ | २ | ६ | २ | २ | ७ |
| मि. | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| मा | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| स | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| देग. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

नं. ६०

सामान्य त्रिचोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प | प्रा | म | ग | इ | जा | गो | वे | क | जा | म | म | सा | उ. |
|-----|----|----|------|---|---|---|----|----|----|---|----|---|---|----|----|
| ५ | ५ | १० | ७ | १ | ५ | ६ | ११ | ३ | ४ | ६ | २ | ६ | २ | २ | ७ |
| मि | ५ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| सा. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| संय | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अवि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| देश | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

तिष्णि दंसण, दन्व-भवेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता अणगारुवजुत्ता वा हेति ।

तेसिं चेन अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिष्णि गुणद्वयानि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिष्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काया, वे जोग, तिष्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंग-णाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिष्णि दंसण, दन्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भात्रेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्साओ । कि कारणं ? जेण तेउ-पम्मलेस्सिया वि देवा तिरिक्खे-सुप्पज्जमाणा णियमेण णट्ट लेस्सा भवंति त्ति । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं सुइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पइच्च वेदगसम्मत्तं एवं चत्तारि सम्मत्तं,

सिद्धिक, अभवसिद्धिक, सम्यक्त्व, सत्तिक, असत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही सामान्य तिर्यचोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यदृष्टि और अधिरतसम्यदृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तसंवन्धी सातों जीव-समास, सब्ही पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियों और विकलत्वयोंके पाच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, सब्ही पंचेन्द्रियोंके सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण होते हैं । चारों सज्ञाप, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, गृथिविकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, विभगावधिज्ञानके विना पाच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्लेश्यापं, भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्याप, होती हैं ।

शंका—सामान्य तिर्यचोंके अपर्याप्तकालमें तीनों अगुम लेश्याप ही क्यों होती है ?

समाधान—न्योंकि, तेजोलेख्या और पत्रलेख्यावाले भी देव यदि तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हैं तो नियमसे उनकी शुभलेश्याप नष्ट हो जाती है, इसलिये तिर्यचाकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन अगुम लेश्याप ही होती हैं ।

लेख्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, सायिकमम्यक्त्व और कृतकत्वकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व इस प्रकार चार सम्यक्त्व, सत्तिक,

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणगारुवजुत्ता वा ।
संपहि तिरिक्ख-मिच्छाद्विष्टाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, चेद्वस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ
चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिष्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काया, एगारह जोग, तिष्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिष्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दन्व-भवेहि छ

असत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अब तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, सब्ही पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियों और विकलत्वयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सब्ही पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण और सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण, एकेन्द्रियोंके चार प्राण और तीन प्राण क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं । चारों सज्ञाप, तिर्यचगति, एकेन्द्रिय जाति आदि पांचों जातियां, गृथिविकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

न ६१

सामान्य तिर्यचोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|-----|----|---|---|---|-------|-------|----|---|------|----|----|-----|---|-------|-------|-----|---|
| शु | जी | प | मा | स | ग | ङ | का | गो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | भ | स | सक्ति | आ | उ |
| ३ | ७ | ६अ, | ७ | ४ | १ | ५ | ६ | २ | ३ | ४ | ५ | १ | ३ | २ | २ | ४ | २ | २ | २ |
| मि | अ | प | ७ | ७ | ६ | ५ | ६ | औ.मि. | ३ | ४ | कुम | अस | के | द्र | २ | ४ | २ | २ | २ |
| सा | ५ | ४ | ६ | ५ | ५ | ५ | कार्म | | | | कुशु | | द | का | ५ | मि | स | आहा | |
| अवि | ४ | ४ | ५ | ४ | ४ | ४ | | | | | मति | | | गु | ६ | सा | अस | अना | |
| | | | | | | | | | | | शुत | | | मा | ६ | क्षा | | | |
| | | | | | | | | | | | अव | | | अनु | ६ | सायो, | | | |

न ६२

सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|---|---|---|----|------|----|---|-------|----|----|----|----|----|-------|-----|---|
| शु | जी | प | मा | स | ग | ङ | का | गो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | भ | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | १४ | ६प | १०,७ | ४ | २ | ५ | ६ | ११ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | ६अ | ६अ | ९,७ | ४ | २ | ५ | ६ | म ४ | ३ | ४ | अज्ञा | अस | २ | ६ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | ५प | ५अ | ८,६ | | | | | व ४ | | | | | व | मा | ६ | म | ६ | आहा | |
| | ४प | ४अ | ७,५ | | | | | औ २ | | | | | अव | | म | स | अस | अना | |
| | ४अ | ४अ | ६,४ | | | | | का < | | | | | | | अम | अस | | | |
| | | | ४,३ | | | | | | | | | | | | | | | | |

लेम्माओ, भवमिद्विया अभवमिद्विया, मिच्छत्, मणिणो अमणिणो, आहारिणो अणहारिणो, मगारुजुचा हति अणारुजुचा वा ।

तेमि चेम पञ्जचाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, सत्त जीवममासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अह पाण सत्त पाण छपाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, निरिक्खगदी, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविक्कायादी छक्काय, णा जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कमाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुत्तलेस्सा, भवसिद्विया अभवमिद्विया, मिच्छत्, मणिणो अमणिणो, आहारिणो, मगारुजुचा हति अणारुजुचा वा ।

तेमि चेम अपञ्जचाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, सत्त जीवममासा, छ

छां लेट्याण, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, मात्तारोपयोगी अर अनात्तारोपयोगी हेते हे ।

उरुही सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पर्याप्तसवन्धी सारों जीवसमास, सत्रीके छहों पर्याप्तियां, असत्री ओर पिकलस्योके पांच पर्याप्तिया एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तिया, सत्रीके दसों प्राण, असत्रीके नो प्राण, चतुर्मिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, छीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण ओर एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण चारों सदाण, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातिया, पृथिवीकायादि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण काय-योग ये नो योग; तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेट्याणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, मात्तारोपयोगी अर अनात्तारोपयोगी हेते हे ।

उरुही सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तसवन्धी सारों जीवसमास, सत्रीके छहों पर्याप्तियां,

नं. २३

सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छपाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविक्कायादी छक्काय, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, अमंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुत्तलेस्सा, भवण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्विया अभवमिद्विया, मिच्छत्, मणिणो असणिणो, आहारिणो अणहारिणो, मगारुजुचा हति अणारुजुचा वा ।

तिरिक्ख-सासणसम्मोहदीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वान, दो जीवममासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कमाय, तिण्णि अण्णाण,

असत्री और विकलवयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, सत्रीके सात प्राण, असत्रीके सात प्राण, चतुर्मिन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके पांच प्राण, छीन्द्रिय जीवोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण काय-योग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, कुमति और कुयुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुद्ध लेट्याणं, भावसे कृण, नीठ, और कापोत लेट्याणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, सात्तारोपयोगी और अनात्तारोपयोगी हेते हे ।

सामान्य तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक सासादन-गुणस्थान, सत्री-पर्याप्त और सत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दसों प्राण, सात प्राण चारों सदाणं, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, वसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये न्यारह योग तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और

नं. ६३

सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

असंजम, दो दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, अहाहरिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, भवसिद्धिया, असंजम, दो दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

अवच्यु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सात्त्विक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही सामान्य तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सन्नाप, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अन्नान, असयम, चञ्चु और अवच्यु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व सात्त्विक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ६५ सामान्य तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | सा | द. | सय | द | ले | म | स | सत्ति. | आ. | उ. |
|-----|----|----|------|---|----|------|----|------|------|-----|-----|----|----|----|-------|----|---|----|--------|-------|------|
| १ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | २ | २ |
| पा | स | प. | ६ | ७ | ति | पंचे | तस | म. ४ | म. ४ | जता | जता | म. | मा | अस | चञ्चु | मा | ६ | म. | सा | साका. | अना. |
| | | | | | | | | व. ४ | | | | | अव | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ओ | २ | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | का | १ | | | | | | | | | | | | |

नं ६६ सामान्य तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | सा | द. | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ. |
|-----|----|----|------|---|----|------|----|------|------|-----|-----|----|----|----|-------|----|---|----|-------|-----|-----|
| १ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | २ | २ |
| पा | स | प. | ६ | ७ | ति | पंचे | तस | म. ४ | म. ४ | जता | जता | म. | मा | अस | चञ्चु | मा | ६ | म. | साका | अना | अना |
| | | | | | | | | व. ४ | | | | | अव | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ओ | २ | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | का | १ | | | | | | | | | | | | |

४७८] सत-परुवणायुयोगदारे गदि-आलावण्णणं [१, १.

तेसिं चैव अपज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्ख-लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तिरिक्ख-सम्मामिच्छइह्णं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तीहिं अण्णाणेहिं भिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो,

उन्ही सामान्य तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सब्बी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सन्नाप, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, कुमति और कुभुत ये दो अन्नान, असंजम, चञ्चु और अवच्यु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सात्त्विक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सामान्य तिर्यच सम्यग्मिथ्यादाष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादाष्टि गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यच-गति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अन्नानसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असयम, चञ्चु और अवच्यु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व,

नं ६७ सामान्य तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु. | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | सा | द. | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ. |
|-----|----|---|-------|---|----|---|----|------|----|---|---------|---------|-----|-----|-------|-----|---|---|-------|-----|-----|
| १ | २ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | २ | २ |
| पा | स | अ | अप | ४ | ति | ४ | ४ | ओ | ३ | ४ | कुम | कुम | अस | अस | चञ्चु | मा | ३ | म | यासा | आहा | अना |
| | | | | | | | | कर्म | | | कुञ्जु. | कुञ्जु. | अव. | अव. | अव. | अव. | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुवकलेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं । केण कारणेण ? तिरिक्ख-संजदासंजदा दंसणमोहणीयं कम्मं ण खवेति, तत्थ जिणामभावादो । मणुस्सा पुव्वं वद्व-तिरिक्खायुगा खइयसम्माइड्डिणो कम्मभूमीसु ण उपज्जंति किंतु भोगभूमीसु । भोगभूमीसुपणणा वि ण संजमासंजमं पडिवज्जंति, तेण तिरिक्ख-संजदासंजदण्णे खइयसम्मत्तं गत्थि । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हंति अणागारुवजुत्ता वा^{३१} ।

पंचदिय-तिरिक्खाणं भणमाणे अत्थि पंच गुणह्माणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचदियजदी, तसकाओ, एगारह

धिना दो सम्यत्त्व होते हैं । क्षायिकसम्यत्त्वके नहीं होनेका कारण यह है कि सयतासंयत तिर्यच दर्शनमोहनीय कर्मका क्षपण नहीं करते हैं, क्योंकि, वहाँपर जिन अर्थों केवली या श्रुतकेवलीका अप्राव है । और पूर्वमें तिर्यच आयुको बाधकर पीछे क्षायिकसम्यदृष्टि होनेवाले मनुष्य कर्मभूमियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं, किन्तु भोगभूमियोंमें ही उत्पन्न होते हैं । परंतु भोगभूमियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच सयमासयमको प्राप्त नहीं होते हैं, इसलिये तिर्यचोके संयतासंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यत्त्व नहीं होता है । सम्यत्त्व आलापके अगे सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यचोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, सब्जी-अपर्याप्त, असन्धी-पर्याप्त और असन्धी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, सब्जी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असन्धी पंचेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सब्जी पंचेन्द्रियोंके दसों प्राण, सात प्राण, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, चारों सन्नाप, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद,

नं. ७२ सामान्य तिर्यच सयतासयत जीवोंके आलाप

| उ. जी. | प. प्रा. | सं. | ग. | क. | यो. | वे. | क. | शा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | मा. | आ. | उ. | |
|--------|----------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| दे. १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. |

सम्मत्तं । मणुस्सा पुव्ववद्व-तिरिक्खयुगा पच्छा सम्मत्तं वेत्तूण दंसणमोहणीयं खविण खइयसम्माइडी होदूण अमखेज्ज-वस्सायुगोसु तिरिक्खेसु उपपज्जंति ण अण्णत्थ, तेण भोगभूमि-तिरिक्खेसुपज्जमाणं पेक्खिउज्ज अंसंजदसम्माइड्डि-अपज्जत्तकाले खइयसम्मत्तं लभदि । तत्थ उपपज्जमाण-कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लभदि । एवं तिरिक्ख-अमजदत्तम्माइड्डिस्त अपज्जत्तकाले दो सम्मत्ताणि हवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हंति अणागारुवजुत्ता वा^{३१} ।

तिरिक्ख-संजदासंजदाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचदियजदी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण

पूर्वांक दो सम्यत्त्वोंके होनेका यह कारण है कि जिन मनुष्योंने सम्यदर्शन होनेके पहले तिर्यच आयुको बाध लिया है वे पीछे सम्यत्त्वको ग्रहण कर और दर्शनमोहनीयको क्षपण करके क्षायिकसम्यदृष्टि होकर असंख्यात वर्षकी आयुवाले भोगभूमिके तिर्यचोंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्यत्र नहीं । इस कारण भोगभूमिके तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षासे असयनसम्यदृष्टिके अपर्याप्तकालमें क्षायिकसम्यत्त्व पाया जाता है । और उन्हीं भोगभूमिके तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा वेदकसम्यत्त्व भी पाया जाता है । इसप्रकार तिर्यच असयतसम्यदृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालमें दो सम्यत्त्व होते हैं । सम्यत्त्व आलापके अगे सन्निक, आहारक, अनाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सामान्य तिर्यच सयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशाविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संनाप, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग तीनों वेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, सयमासयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्याप, भावसे पीत, पत्र और शुक्र लेस्याप, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यत्त्वके

१ मतिपु ' ढिण्टुडि ' इति पाठ ।

न. ७२ सामान्य तिर्यच असंयतसम्यदृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| उ. जी. | प. प्रा. | सं. | ग. | क. | यो. | वे. | क. | शा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | मा. | आ. | उ. |
|--------|----------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| म. १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. | कं. |

जोग, तिणिण वेद, चत्वारि क्रमाय, छ गण, दो संजम, तिणिण दंसण, द्रव्य-भोवेहिं छ केम्माओ, भवमिद्विया अभवसिद्विया, छ मम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, मागारुजुत्ता हेति अण्णमारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जचणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दम पाण गण पाण, चत्वारि सण्णा, तिखिसगदी, पंचदिय-जादी, तमकाओ, गण जोग, तिणिण वेद, चत्वारि क्रमाय, छ गण, दो संजम, तिणिण

चार्य क्रमाय, तीनों अजान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्य-मिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, मलिक, असंशिक आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके पर्याप्तकालवन्धी आलाप कहने पर—आदिके पाच गुण-ज्ञान, सती पर्याप्त और असती-पर्याप्त ये दो जीवसमास, सतीके छहों पर्याप्तियां, असतीके पांच पर्याप्तियां; सतीके दोषों प्राण और असतीके नौ प्राण, चारों सज्ञापं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रिय-ज्ञान, तमज्ञाय, चारों मत्तयोग, चारों वचनयोग और औदारिकमित्रकाययोग ये नौ योग तीनों वेद, चारों क्रमाय, तीनों अजान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम

न. ७३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके सामान्य आलाप.

| उ | ३ | २ | १ | प | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | आ | उ |
|----|----|------|-----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मि | सा | मम्य | परि | प | प | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | आ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |

न. ७४ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके पर्याप्त आलाप

| उ | ३ | २ | १ | प | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | आ | उ |
|----|----|------|-----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मि | सा | मम्य | परि | प | प | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | आ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |

दंसण, द्रव्य भोवेहिं छ लेस्ता, भवसिद्विया अभवसिद्विया, छ मम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हेति अण्णमारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जचणं भण्णमाणे अत्थि तिणिण गुणट्ठाणणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सच पाण सच पाण, चत्वारि सण्णा, तिखिसगदी, पंचदियजादी, तमकाओ, वे जोग, तिणिण वेद, चत्वारि क्रमाय, पंच गण, असंजम, तिणिण दंसण, द्रव्येण काउ-सुन-रुलेस्साओ, भाणेण क्रिह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्विया अभवसिद्विया, सम्माभिच्छत्तं उचसमसम्मत्तं णत्थि, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं सइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तमिदि चत्वारि सम्मत्तं । सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारुजुत्ता हेति अण्णमारुजुत्ता वा ।

ये दो संयम. आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सलिक, असंशिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालसंयन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविश्रतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सती-अपर्याप्त और असती-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजालि, वसकाय, औदारिकमित्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों क्रमाय, कुमति, कुथुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पाच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और गुरु लेख्याए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक होते हैं । इनके सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है, किन्तु मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकत्वकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व ये चार सम्यक्त्व होते हैं । सलिक, असलिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न. ७५ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| उ | ३ | २ | १ | प | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | आ | उ |
|----|----|------|-----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मि | सा | मम्य | परि | प | प | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | आ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |

पंचिन्द्रियतिरिक्तस-मिच्छाद्विष्टीणं भण्यमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, चचारि जीव-समासा, छ पञ्जतीओ छ अपञ्जतीओ पंच पञ्जतीओ पंच पञ्जतीओ, दस पाण सच पाण ण प पाण सच पाण, चचारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिन्द्रियजदी, तसकाओ, एणारह जोग, तिणि वेद, चचारि कसाय, असंजम, दो दंसण, दन्व-भोवेहि छ लेस्सा, भवमिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेमिं चैव पञ्जत्ताणं भण्यमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पञ्जतीओ पंच पञ्जतीओ, दस पाण ण प पाण, चचारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिन्द्रियजदी, तसकाओ, णव जोग, तिणि वेद, चचारि कसाय, तिणि अण्णाण,

पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त, सन्धी-अपर्याप्त, असन्धी-पर्याप्त और असन्धी-अपर्याप्त ये चार जीव-समास, सन्धीके छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, असन्धीके पांच पर्याप्तिया, पांच अपर्याप्तिया, सन्धीके दशों प्राण, सात प्राण: असन्धीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों सन्धाप, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिक-मिश्रकाययोग और नार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंजम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और असन्धी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, सन्निके छहों पर्याप्तिया, असन्निके पांच पर्याप्तिया, सन्निके दशों प्राण, असन्निके नौ प्राण, चारों सन्धाप, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंजम, चक्षु और अचक्षु ये दो

न ७६ पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| शु | जी | प | पा | स | ग | ह | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्धी | आ | उ |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|-------|----|----|-----|---|---|-------|-----|------|
| १ | ५ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | अज्ञा | १ | २ | द्र | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | स | प | अ | ७ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अज्ञा | अम | अच | मा | ६ | म | स | आहा | सासा |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

असंजम, दो दंसण, दन्व-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेमिं चैव अपञ्जत्ताणं भण्यमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ अपञ्जतीओ पंच अपञ्जतीओ, सच पाण सच पाण, चचारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिन्द्रियजदी, तसकाओ, वे जोग, तिणि वेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दन्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हणील-काउलेस्साओ, भवसिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सन्धी-अपर्याप्त और असन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, सन्निके छहों अपर्याप्तिया, असन्निके पांच अपर्याप्तिया, सन्निके सात प्राण और असन्निके सात प्राण, चारों सन्धाप, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और नार्मणकाय-योग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, दो अज्ञान, असंजम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ७७ पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | पा | स | ग | ह | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्धी | आ | उ |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|-------|----|----|-----|---|---|-------|-----|------|
| १ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | अज्ञा | अस | २ | द्र | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | स | प | अ | ७ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अज्ञा | अम | अच | मा | ६ | म | स | आहा | सासा |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं ७८ पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | पा | स | ग | ह | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्धी | आ | उ |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|------|----|--------|-----|---|---|-------|-----|------|
| १ | २ | ६ | ७ | ७ | ४ | १ | १ | २ | ३ | ४ | कुम. | अप | २ | द्र | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | स | अ | अ | ७ | ७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | कुम. | अप | अचक्षु | का | म | म | म | आहा | मासा |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

पंचिन्द्रियतिरिक्तसन्नामणमम्माइद्वीणं भणमाणे अत्थि एवं गुणद्वानं, दो जीव-
ममाला, छ पञ्चर्चाओ छ अपञ्जत्तणंओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्ख-
गदी. पंचिन्द्रियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि
अण्णाण, अमंजम, दो दंसण, दन्व-भोवेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,
सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवज्जुत्ता होति अणागारुवज्जुत्ता वा १ ।

तेसिं चेट पञ्जत्तणं भणमाणे अत्थि एवं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ
पञ्चर्चाओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिन्द्रियजादी, तसकाओ, णव
जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दन्व-भोवेहिं

पंचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासा-
दन गुणस्थान, सखी पर्याप्त और संजी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों
अपर्याप्तिया दशों प्राण, सात प्राण चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,
चारों मनोयोग. चारों वचनयोग. औदारिकभिक्षाकार्ययोग और कार्मण-
कार्ययोग ये ग्यारह योग. तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु और
अनञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए. भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व,
संज्ञिक आहारक, अनाहारक. साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने
पर—एक सामादन गुणस्थान, एक सखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण,
चारों सजाए, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति. त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और
औदारिककार्ययोग ये नौ योग तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु

न. ७२. पंचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | प | पा | म | ग | ड | वा | यो | वे | क | ला | मय | क | ले | म | मज्जि | जा | उ | | | |
| १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| मा | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति |
| | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो सागारुवज्जुत्ता होति
अणागारुवज्जुत्ता वा १ ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तणं भणमाणे अत्थि एवं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ
अपञ्जत्तणंओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिन्द्रियजादी, तसकाओ, दो
जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दन्वेण काउ-सुक्क-
लेस्साओ, भोवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो,
आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवज्जुत्ता होति अणागारुवज्जुत्ता वा १ ।

और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व,
संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने
पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सखी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात
प्राण, चारों सजाए, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकभिक्षाकार्ययोग और
कार्मणकार्ययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम,
द्रव्यसे कापोत और शुक्क लेख्याए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक,
सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न. ८० पंचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | प | पा | म | ग | ड | वा | यो | वे | क | ला | मय | क | ले | म | मज्जि | जा | उ | | | |
| १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| मा | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति |
| | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

न. ८१ पंचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | प | पा | म | ग | ड | वा | यो | वे | क | ला | मय | क | ले | म | मज्जि | जा | उ | | | |
| १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| मा | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति | ति |
| | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

सण्णियो, आहारिणो अणारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणारुवजुत्ता वा ।
 तेसि चैव पञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ
 पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग,
 तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्सा,
 भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणारु-
 वजुत्ता वा ।

और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और
 अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उद्धी पंचेन्द्रिय तिर्यच असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने
 पर—एक अविरतसम्यग्दष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां,
 दशों प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों
 वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान,
 असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक,
 क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और
 अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं ८३ पंचेन्द्रिय तिर्यच असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|-----|------|----|----|----|-----|------|----|---|----|---|--------|-------|-----|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | मज्ञि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | २ | २ |
| स | प | प | ७ | ति | पवे | त्रम | म | ४ | ४ | मति | अस | के | द | मा | ६ | म | औ | आहा | स |
| स | अ | ६ | अ | | | | व | ४ | | शुत | मिना | | | | | क्षा | अना | अना | |
| | | | | | | | ओ | २ | | अव. | | | | | | क्षायो | | | |
| | | | | | | | का | १ | | | | | | | | | | | |

न. ८३ पंचेन्द्रिय तिर्यच असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|-----|------|----|----|----|-----|------|----|---|----|---|--------|-------|-----|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | मज्ञि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | २ | २ |
| स | प | प | ७ | ति | पवे | त्रम | म | ४ | ४ | मति | अस | के | द | मा | ६ | म | औ | आहा | स |
| | | | | | | | व | ४ | | शुत | मिना | | | | | क्षा | अना | अना | |
| | | | | | | | ओ | २ | | अव. | | | | | | क्षायो | | | |
| | | | | | | | का | १ | | | | | | | | | | | |

पंचिदियतिरिक्ख-सम्मामिच्छाड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ
 जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी,
 तमकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणानि तीहिं अण्णाणेहि
 मिससणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छंछं,
 सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणारुवजुत्ता वा ।

पंचिदियतिरिक्ख-असंजदसम्मड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीव-
 समामा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्ख-
 गदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि
 णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,
 सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणारुवजुत्ता वा ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादष्टि
 गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यच-
 गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग
 ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम,
 चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व,
 सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरत-
 सम्यग्दष्टि गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और सन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां,
 छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस-
 काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और
 कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम,
 आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक
 और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ८२ पंचेन्द्रिय तिर्यच सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|-----|------|----|----|----|-----|------|----|---|----|---|--------|-------|-----|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | मज्ञि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | २ | २ |
| स | प | प | ७ | ति | पवे | त्रम | म | ४ | ४ | मति | अस | के | द | मा | ६ | म | औ | आहा | स |
| | | | | | | | व | ४ | | शुत | मिना | | | | | क्षा | अना | अना | |
| | | | | | | | ओ | २ | | अव. | | | | | | क्षायो | | | |
| | | | | | | | का | १ | | | | | | | | | | | |

तेषां चर अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अरिथे मयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, मच पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, दो जोग, पुरिमवेद, चत्तारि कमाय, तिण्णि गाण, असजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-मुक्कलेस्सा, भावेण जहणिया काउलेस्सा; भवयिद्धिया, उवसममम्मत्तेण विणा दो मम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवजुत्ता हंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिदियतिग्गम-मज्जमंजदाण भण्णमाणे अरिथे एयं गुणद्वानं, एओ जीव-ममासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, णम जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-मुक्कलेस्साओः भवयिद्धिया, सइयसम्मत्तेण

उन्ती पंचेन्द्रिय तिर्यच अमंयतस्यदृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अरिस्तस्यदृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, मात प्राण, चारों सजाण, तिर्यचगति पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएँ, भावसे जघन्य कापोतलेख्या; भव्य-भित्तिक, ओपशमिकस्यस्यके विना दो सस्यन्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच संयतासयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशचित्त गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, वरों प्राण, चारों सजाण, तिर्यचगति, पंचेन्द्रिय-जाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों येर, चार कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सयमासयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ, भावसे तेज, णम और शुक्रलेख्याएँ, भव्यसित्तिक, हारिकसस्यन्त्वके विना दो सस्यन्त्व,

नं. ८५ पंचेन्द्रिय तिर्यच अस्यतस्यदृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----------|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु. जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| विश. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प. प्रा. | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| सं. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| वे. क. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| शा. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मय. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| दे. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| ले. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| म. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| स. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| सति. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| जा. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| उ. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |

विणा दो सम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिदियतिरिक्खपञ्जत्तानं भण्णमाणे मिच्छाडडि-पहुडि जाव संजदासंजदा चि पंचिदियतिरिक्ख-अंगो । गवरि विम्वेसो पुरिस-णवुंसयवेदा दो चेर भवंति, इत्थिवेदो णरिथि । अथवा तिण्णि वेदा भवंति ।

पंचिदियतिरिक्खजोण्णिणं भण्णमाणे अरिथि पंच गुणद्वानाणि, चत्तारि जीव-समासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, छ गाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भविहि संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—मिथादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासयत गुणस्थान तक पंचेन्द्रिय तिर्यच सामान्यके आलापोंके समान ही आलाप समझना चाहिये। विशेष बात यह है कि इनके वेद स्थानपर पुरुष और नपुंसक ये दो ही वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है। अथवा तीनों ही वेद होते हैं।

त्रिशोपार्थ—पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तकोंके दो ही वेद वन ज्ञानका यह अभिप्राय है कि योनिमती जीवोंका पर्याप्तक भेदमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, योनिमतीयाका स्वतंत्र भेद गिनना है। अथवा पर्याप्त और योनिमती तिर्यच इन दोनों भेदोंको गौण करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सभी पर्याप्तकोंका ग्रहण किया जावे तो पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तकोंके आलापमें तीनों वेदोंका भी सद्भाव सिद्ध हो जाता है।

पंचेन्द्रिय-तिर्यच योनिमतीयोंके आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त ये चार जीवसमासः संज्ञिके छह पर्याप्तियां और छह अपर्याप्तियां, असंज्ञिके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, संज्ञिके वरों प्राण, सात प्राण, असंज्ञिके नौ प्राण, सात प्राण, चारों सजाण, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ८६ पंचेन्द्रिय तिर्यच संयतासयत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----------|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु. जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| विश. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प. प्रा. | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| सं. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| वे. क. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| शा. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मय. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| दे. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| ले. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| म. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| स. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| सति. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| जा. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| उ. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |

संज्ञिता अभिज्ञाना, अहोरात्रिणी, सागरवज्जुता ह्येति अणुवर्णनं वा ।

पंचदिवसितिरिक्खअयज्जतजोणिणीं भणमामणे अत्थि दो गुणद्वाराणि, दो जीव-
समासा, छ अपज्जत्तीओ, पच अपज्जत्तीओ, सच पाण सच पाण, चत्तारि सणाओ,
तिरिक्खगदी, पंचदिवसजदी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिदेव, चत्तारि कसाय, दो
अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दवंणेण काउ-सुक्कलेरसा, भवण क्किण्हणील-नाउलेस्सा;
भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्त सासणस्सम्मचमिदि दो सम्मत्तं, सणिणी अस-
णिणी, अहोरात्रिणी अणुवर्णनं, सागरवज्जुता ह्येति अणुवर्णनं वा ।

पंचदिवसितिरिक्खजोणिणी-मिच्छइदीणं भणमामणे अत्थि एयं गुणद्वाराणि, चत्तारि
आहारक, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उद्धृत पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—मिया-
द्वि और सासा.दतसस्यद्वि ये दो गुणस्थान, सबी-पर्याप्त और असबी-अपर्याप्त ये दो
जीवसमास, सबीके छहों अपर्याप्तियां, असबीके पांच अपर्याप्तियां, सबी और असबीके
सात सात प्राण, चारों सदाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकमिश्रकाय-
योग और कार्मणकाययोग ये दो योग, खविद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो
अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्कलेस्याएं, भावसे
कृष्ण, नील और कापोत लेस्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादन-
सम्यक्त्वं ये दो सम्यक्त्वं, सबिनी, असंज्ञिनी, अहोरात्रिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी
और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्याद्वि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्वि गुण-
स्थान, सबी-पर्याप्त, सबी-अपर्याप्त, असबी-पर्याप्त और असबी-अपर्याप्त ये चार जीव-

तं. ८९ पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतीके अपर्याप्त आलाप

| पु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | संय | द | ले | म | म | म | ले | आ | उ |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

छ लेसाओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, स्वयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सणिणीओ, सणिणीओ, अभिज्ञाना, अहोरात्रिणी, सागरवज्जुता ह्येति अणुवर्णनं वा ।

“तामिं चैव पञ्जतजोणिणीं भणमामणे अत्थि पंच गुणद्वाराणि, दो जीवसमासा,
छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सणाओ, तिरिक्खगदी,
पंचदिवसजदी, तसकाओ, पाव जोग, इत्थिदेव, चत्तारि कसाय, छ पाण, दो संजम,
निणिण दंसण, दवन्-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं,
छहों लेस्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षाथिक सम्मत्त्वेके विना पाच सम्यक्त्वं, सबिनी,
असंज्ञिनी, अहोरात्रक, अनाहारक, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उद्धृत पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—आदिके
पाच गुणस्थान, सबी-पर्याप्त और असबी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, सबीके छहों पर्या-
प्तियां, असबीके पांच पर्याप्तियां, सबीके दसो प्राण, असबीके नौ प्राण, चारो सदाएं,
तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग
ये दो योग, खविद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,
असंयम और देशसयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याएं,
भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षाथिकसम्मत्त्वेके विना पांच सम्यक्त्वं, सबिनी, असंज्ञिनी,

तं ८७ पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतीके सामान्य आलाप

| पु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | संय | द | ले | म | म | म | ले | आ | उ |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

तं. ८८ पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतीके पर्याप्त आलाप

| पु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | संय | द | ले | म | म | म | ले | आ | उ |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| वि | स | अ | इ | उ | उ | इ | इ | ओ | मी | कु | कु | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

मिच्छन्, मणिणीओ असणिणीओ, आहारिणी, सागरुवजुत्ता हेति अणागरुवजुत्ता वा ।
 ताभिमपञ्चत्तं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ अपज्ज-
 चीओ पंच अपज्जत्तीओ, रात्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, त्तिरिक्खग्दी,
 पंचिदियजदी, तसकाओ, वे जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो
 दंमण, दव्णेण काउ-सुक्खेस्सा, भावेण किण्हणील-झउलेस्सा, भवसिद्धिया अभव-
 सिद्धिया, मिच्छन्, सणिणी असणिणी, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागरुवजुत्ता
 हेति अणागरुवजुत्ता वा ।

मिथ्यात्व, सन्निनी, असन्निनी आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।
 उन्ही पनेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने
 पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सन्नि-अपर्याप्त और असन्नि-अपर्याप्त ये दो जीवसमास,
 सन्निनीके छहों अपर्याप्तियां, असंजिनिके पांच अपर्याप्तियां सन्निनी अपर्याप्तके सात प्राण,
 असंजिनी अपर्याप्तके सात प्राण चारों सत्तापं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,
 औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, खीवेद, चारों कपाय, कुमति
 और कुद्युत ये दो अज्ञान, असंजम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और
 शुक्लेस्थान, भावसे कृण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अथव्यसिद्धिक,
 मिथ्यात्व, सन्निनी, असन्निनी आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाका-
 रोपयोगिनी होती हैं ।

नं १२. पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टिके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|-----|---|---|---|---|---|---|
| शु | जी | प | प्रा | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | ४ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |

नं. १२. पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टिके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|-----|---|---|---|---|---|---|
| शु | जी | प | प्रा | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | ४ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |

जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पञ्चत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस
 पाण मत्त पाण णत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, त्तिरिक्खग्दी, पंचिदियजदी,
 तसकाओ, वे जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कपाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो
 दंमण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्, सणिणीओ
 अण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागरुवजुत्ता हेति अणागरुवजुत्ता वा ।
 पञ्चत्तयंचिन्द्रियतिरिसाजोणिणी-मिच्छादृष्टीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो
 जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ, दस पाण णत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ,
 त्तिरिक्खग्दी, पंचिदियजदी, तसकाओ, णत्त जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि
 अण्णाण, असंजम, दो दंमण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

समास, संजिनिके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां असंजिनिके पांच पर्याप्तियां, पांच
 अपर्याप्तियां सन्निनीके दसों प्राण, सत्त प्राण, असंजिनिके नो प्राण, सात प्राण चारों
 संज्ञा, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-
 काययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, खीवेद, चारों कपाय
 तीनों अज्ञान, असंजम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्य-
 सिद्धिक, अथव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, सन्निनी, असन्निनी आहारिणी, अनाहारिणी, साकारो-
 पयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्ही पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने
 पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संजि-पर्याप्त और असंजि-पर्याप्त ये दो जीवसमास,
 संजिनिके छहों पर्याप्तियां, और असंजिनिके पांच पर्याप्तियां संजिनिके दसों प्राण, और असंजिनिके
 नो प्राण चारों संज्ञा, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों
 वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंजम,
 चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अथव्यसिद्धिक,

नं. १०. पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टिके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|-----|---|---|---|---|---|---|
| १ | जी | प | प्रा | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | ४ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |
| | म | प | प | म | ग | द | का | या | वे | क | जा | सय | द | ले. | म | म | म | म | आ | उ |

जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, तिष्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंरण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

तासिमपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अप-जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिस्खिग्गदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंरण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भवेण किण्ण-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिदियतिस्खिजोणिणी-सम्माभिच्छाट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छपपजत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिस्खिग्गदी, पंचिदिय-

और औदारिककाययोग ये नौ योग, खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दष्टि योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, खीवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पचेन्द्रिय तिर्यच सम्यग्मिथ्यादष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्या-दष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं,

नं. १५: पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सासादनसम्यग्दष्टिके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|-------|----|----|---|----|-------|----|----|------|-----|-----|----|---|---|---|----|------|-------|
| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द. | ले | म | स | म | सि | जा | उ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | ४ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | १ | २ | २ |
| मा. | मा. | अ | अ | ति | ति | अ | अ | ओ | अ | मि | मी. | अम | वशु | का | म | म | म | म | आहा | साका. |
| | | | | | | | | कार्म | | | कृयु | अच. | शु | भा | ३ | | | | अना. | अनाका |
| | | | | | | | | | | | | अम | अच. | भा | ३ | | | | | |

पंचिदियतिस्खिजोणिणी-सासणसम्माट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिस्खिग्गदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, तिष्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंरण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

तासिं चेष पज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिस्खिग्गदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव

पंचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दष्टि योनिमतियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संबन्धी-पर्याप्त और संबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं १३ पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सासादन सम्यग्दष्टिके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|----|---|----|----|----|---|-------|----|-----|----|---|---|---|----|------|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द. | ले | म | स | म | सि | जा | उ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | ४ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | १ | २ | २ |
| मा | मा | अ | अ | ति | ति | अ | अ | म | म | अ | अ | अम | वशु | भा | म | म | म | म | आहा | साका. |
| | | | | | | | | ओ | ओ | | | अच | अच | अ | | | | | अना. | अना. |

नं १५ पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सासादन सम्यग्दष्टिके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|----|---|----|----|----|---|-------|-----|-----|----|---|---|---|----|------|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द. | ले | म | स | म | सि | जा | उ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | ४ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | १ | २ | २ |
| मा | मा | अ | अ | ति | ति | अ | अ | म | म | अ | अ | अम | वशु | का | म | म | म | म | आहा | साका. |
| | | | | | | | | ओ | ओ | | | अच. | अ | अ. | | | | | अना. | अना. |

जादी, तमकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाणाणि तीहि अण्णा-
णेहि मिसमाणे, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवमिद्वियाओ, सम्मा-
मिच्छत्तं, मण्णिणीओ, आहारिणीओ सागारुवजुत्ताओ हंति अणगारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिन्द्रिय-तिरिस्स-जोणिणी-असंजदसम्माहट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं,
एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दम पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्सगदी, पंचिन्द्रिय-
जादी, तमकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजम, तिण्णि
दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवमिद्वियाओ, सडयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं,
मण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता हंति अणगारुवजुत्ताओ वा ।

तिर्यङ्गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग
ये नो योग, नविद, चारों कयाय, तीनों अजानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु
और श्रवण ये दो दर्शन, द्रव्य चार भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सम्प्रगमिध्यात्व,
संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होती हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यङ्ग अस्मयतस्म्यगृष्टि योनिमित्तियोंके आलाप कहने पर—एक अचिरत-
स्मयत्पष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियों, दशों प्राण, चारों
संज्ञाए, तिर्यङ्गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-
काययोग ये नो योग, नविद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन,
द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, शायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी,
आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

नं. ९६ पंचेन्द्रिय तिर्यङ्ग योनिमती सम्प्रगिमव्याहृष्टियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|----|---|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|
| आ | १ | ग | ६ | का | १ | वे | १ | क | ३ | सा | १ | स | ३ | ले | ३ | म | ३ | स | ३ | जा | ३ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ९७ पंचेन्द्रिय तिर्यङ्ग योनिमती असंयतस्म्यगृष्टियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|----|---|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|
| आ | १ | ग | ६ | का | १ | वे | १ | क | ३ | सा | १ | स | ३ | ले | ३ | म | ३ | स | ३ | जा | ३ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

पंचिन्द्रिय-तिरिस्स-जोणिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं. एओ
जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ. दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्सगदी, पंचिन्द्रियजादी,
तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, संजमासंजमो, तिण्णि
दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण तेउ-पम्म-सुककलेस्साओ, भवमिद्वियाओ, सड्य-
सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा हेति
अणगारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिन्द्रिय तिरिस्स-लट्ठि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, वे जीव-
समासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सच पाण सच पाण, चत्तारि सण्णाओ,
तिरिस्सगदी, पंचिन्द्रियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुसयवेद, चत्तारि कसाय, दो
अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुककलेस्साओ, भानेण किण्ह-णील-काउ-

पंचेन्द्रिय-तिर्यङ्ग संयतासयत योनिमित्तियोंके आलाप कहने पर—एक देशाचिरत गुण-
स्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियों, दशों प्राण, चारों संज्ञाए, तिर्यङ्गति,
पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो
योग, नविद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे
छहों लेख्याए, भावसे तेज, पद्म और शुक्र लेख्याए, भव्यसिद्धिक, शायिकसम्यक्त्वके विना
दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पंचेन्द्रिय-तिर्यङ्ग लव्यपर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,
संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियों, असंज्ञीके
पांच अपर्याप्तियों, संज्ञी-अपर्याप्तके सात प्राण, असंज्ञी-अपर्याप्तके सात प्राण, चारों संज्ञाए,
तिर्यङ्गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग,
चपुसकवेद चारों कयाय, कुमति और कुथुत ये दो अजान, असंयम, चक्षु और श्रवण ये दो
दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याए, भावसे कृष्ण, नील, और कापोत लेख्याए, भव्य-

नं. ९८ पंचेन्द्रिय तिर्यङ्ग योनिमती संयतासयतोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|----|---|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|
| आ | १ | ग | ६ | का | १ | वे | १ | क | ३ | सा | १ | स | ३ | ले | ३ | म | ३ | स | ३ | जा | ३ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

सागारवजुत्ता ह्येति अणागारवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चैव पञ्जत्तानं भणमणे अत्थि चोद्दस गुणद्वाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, मणुरागदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग ओरालिय-आहार-मिस्म-कम्मइहिं विणा दस वा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णियो गेव सण्णियो गेव असण्णियो

पयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्ही सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, एक सबी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकाययोग वैक्रियिकमिश्र-काययोगके विना तेरह योग, अथवा पूर्वोक्त दो और औदारिकमिश्रकाययोग आहारकमिश्र-काययोग और कर्मणकाययोग इन पात्र योगोंके विना दशयोग तथा अयोग-स्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत-वेद-स्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपाय-स्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, तथा अलेख्या-स्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यस्त्व, संश्लिक तथा सन्निक और असंश्लिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित

नं. १०० सामान्य मनुष्योंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|-------|----|-------|------|----|---|------|-----|----|-----|----|-----|-----|-----|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द. | ले. | म | स | सति | आ | उ | |
| १४ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १३ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ | |
| | स | प | ७ | म. | पंचे. | तस | वि.दि | विना | ३ | ५ | ८ | ७ | ४ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ | |
| | स | अ | ६ | अ | | | अयो | | | | | | | अले | अ. | अनु | अना | अना | अना | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | यु उ |

लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सिच्छत्तं, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अणागारवजुत्ता वा^१ ।

एव तिरिखगदी समत्ता ।

मणुसा चउच्चिहा हवंति मणुस्सा मणुस-पञ्जत्ता मणुसिणीओ मणुस-अपञ्जत्ता चेदि । तत्थ मणुस्साणं भणमणे अत्थि चोद्दस गुणद्वाणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णियो गेव सण्णियो गेव असण्णियो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो,

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संश्लिक, असंश्लिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इस प्रकार तिर्यचगतिके आलाप समाप्त हुए ।

मनुष्य चार प्रकारके होते हैं—मनुष्य, मनुष्य-पर्याप्त, मनुष्यिनी और लक्ष्यपर्याप्त मनुष्य । उनमेंसे मनुष्यसामान्यके आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संश्लि-पर्याप्त, संश्लि-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाप, और क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तथा अयोग-स्थान भी होता है, तीनों वेद तथा अपगतवेद-स्थान भी होता है । चारों कपाय तथा अकपाय-स्थान भी होता है । आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं तथा अलेख्या-स्थान भी होता है । भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यस्त्व, संश्लिक, तथा सबी और असंश्लिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है । आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं. ९९ पंचेन्द्रिय तिर्यच लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|------|------|---|------|-----|---------|---------|----|----|-----|-----|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सति | आ | उ | |
| १ | २ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | ८ | ७ | २ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ | |
| | सि | म | अ | ५ | ७ | ७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अम | चक्षु | अचक्षु. | मि | अ | अम | अना | अना | |
| | | | | | | | | कर्म | कर्म | | | | अचक्षु. | शु | अ | अम | अना | अना | अना | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | अना |

नि अस्थि, आहारिणो अणाहारिणो, अजोगि-भयवंतस्य शरीर-णिमित्तमाल्छमाण-परमाणुभयं पेम्पिज्जण पज्जत्ताणमणाहारित्तं लब्भदि । सागारवजुत्ता ह्येति अणागारवजुत्ता वा सागार-अणागारोहिं जुगवद्वजुत्ता वा” ।

भी स्थान है, आहारक, और अनाहारक भी होते हैं। मनुष्योंके पर्याप्त अवस्थामें अनाहारक होनेका कारण यह है कि अयोगिकेवली भगवान्के शरीरके निमित्तभूत आनेवाले परमाणुओंका अभाव देगकर पर्याप्तक मनुष्योंके भी अनाहाररूपता बन जाता है। साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा स्कार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

वियोगार्थ—ऊपर योग आलापका कथन करते हुए वैकृतिककृदिक, आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कर्मणकाययोगके विना दश अथवा केवल वैकृतिककृदिकके विना तेरह योग यतलाये हैं । दश योग तो मनुष्योंकी पर्याप्त-अवस्थामें होते ही हैं, परन्तु अपर्याप्त-अवस्थामें होनेवाले औदारिकमिश्र आहारकमिश्र और कर्मणकाययोगको मनुष्योंकी पर्याप्त अवस्थामें बनानेका यह कारण है कि यद्यपि तेरहवें गुणस्थानमें समुदातके समय योगोंकी अपूर्णता रहती है फिर भी उन समय पर्याप्त नामकर्मका उदय विद्यमान रहता है और शरीरकी पूर्णता भी रहती है, इसलिये पर्याप्त नामकर्मके उदय और शरीरकी पूर्णताकी अपेक्षा कपाट, स्तर और लोकरूपणसमुदातगत केवली भी पर्याप्त है और इसप्रकार पर्याप्त अवस्थामें औदारिकमिश्र तथा कर्मणकाययोग बन जाते हैं । इसीप्रकार छठवें गुणस्थानमें आहारमिश्रकाययोगके समय भी पर्याप्त नामकर्मका उदय रहता है, इसलिये ऐसा निवृत्तिसे अपर्याप्त होता तथा भी जीन पर्याप्त-नामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त ही है अतः आहारमिश्रकाययोग भी पर्याप्त अवस्थामें बन जाता है । इसप्रकार उपर्युक्त तीनों योग त्रिवक्षा भेदसे पर्याप्त-अवस्थामें भी बन जाते हैं इसलिये मनुष्योंकी पर्याप्त-अवस्थामें तेरह योग भी गिनते हैं ।

नं. १०१ सामान्य मनुष्योंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|------|----|---|---|---|-----|-------|--------|-------|-------|-------|---|----|------|-----|-----|-------|--------|
| गु | जी | प | मा | म | ग | द | का. | यो | ने. | क | शा | संय | द | ले | म | ग. | महि | आ | उ |
| ५ | २ | ७ | ८ | २ | २ | ४ | १ | ३ | ३ | ४ | ६ | ४ | ६ | ४ | २ | ४ | १ | २ | २ |
| मि | स. | इ.अ. | ७ | ८ | २ | ४ | १ | ३ | ३ | ४ | ६ | ४ | ६ | ४ | २ | ४ | १ | २ | २ |
| सा. | अ. | | | | | | नम. | औ.मि. | कु.कु. | विम. | विम. | अस. | ६ | ४ | म | मि | स. | आहा. | सा.का. |
| अ. | म. | | | | | | | आ.मि. | कु.कु. | मन. | मन. | गण. | ६ | ४ | अ. | सा. | अनु | अना. | अना |
| म. | | | | | | | | कर्म. | कु.कु. | विना. | विना. | विना. | ६ | ४ | मा.६ | वा | वा | मु.उ. | मु.उ. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेसिं चैन अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अस्थि पंच गुणद्वयाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सच पाण, चत्तारि सण्णाओ अदीदसण्णा वि अस्थि, मणुसगदी, पंचि-दियजादी, तसकाओ, आहारमिसेण सह तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अस्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, पंच पाण केवलपाणेण छ पाण, असंजम सामाहय-छेदोवद्ववण-जहाकसादेहि चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुम्फलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त-उवसमसम्मत्तेण विणा चत्तारि सम्मत्तं, सण्णिणो अनुभओ वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अणागार-वजुत्ता वा तदुभया वा” ।

उर्ध्वी सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्पदृष्टि, अविगतसम्पदृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सदाएं तथा अतीतसज्ञा स्थान भी है, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारमिश्रकाययोगके साथ औदारिक-मिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेद-स्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपाय स्थान भी है, कुमति, कुद्रुत तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान और केवलज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, सामाधिक, छेदोपस्थापना और यथात्यान ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुद्ध लेख्याप, भावने छहों लेख्याप, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यगिमिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्यके विना चार सम्यक्त्य, सन्निक, और अनुभय अर्थात् सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अना-हारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

नं. १०२ सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|------|----|---|---|---|-----|-------|--------|-------|-------|-------|---|----|------|-----|-----|-------|--------|
| गु | जी | प | मा | म | ग | द | का. | यो | ने. | क | शा | संय | द | ले | म | ग. | महि | आ | उ |
| ५ | २ | ७ | ८ | २ | २ | ४ | १ | ३ | ३ | ४ | ६ | ४ | ६ | ४ | २ | ४ | १ | २ | २ |
| मि | स. | इ.अ. | ७ | ८ | २ | ४ | १ | ३ | ३ | ४ | ६ | ४ | ६ | ४ | २ | ४ | १ | २ | २ |
| सा. | अ. | | | | | | नम. | औ.मि. | कु.कु. | विम. | विम. | अस. | ६ | ४ | म | मि | स. | आहा. | सा.का. |
| अ. | म. | | | | | | | आ.मि. | कु.कु. | मन. | मन. | गण. | ६ | ४ | अ. | सा. | अनु | अना. | अना |
| म. | | | | | | | | कर्म. | कु.कु. | विना. | विना. | विना. | ६ | ४ | मा.६ | वा | वा | मु.उ. | मु.उ. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

मणुस-मिच्छद्विणीं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, त्तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, त्तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, और संज्ञी-अपर्याप्त, ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण चारों संबन्ध, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य ओर भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संबन्ध, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, आहारक, अना-

न १०३ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|---|------|---|----|---|----|----|----|---|-------|-----|---|----|----|---|-------|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | साय | द | ले | मं | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | अज्ञा | असं | २ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| मि | संज | ७ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |

हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्चत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुवन्-लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा हेति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संबन्ध, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १०४ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|---|------|---|----|---|----|----|----|---|-------|-----|---|----|----|---|-------|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | साय | द | ले | मं | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | अज्ञा | असं | २ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| मि | संज | ७ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |

नं. १०५ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|---|------|---|----|---|----|----|----|---|-------|-----|---|----|----|---|-------|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | साय | द | ले | मं | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | अज्ञा | असं | २ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| मि | संज | ७ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |
| | | ६ | ७ | ५ | मं | प | तस | म | ४ | व | वक्षु | अव | ३ | ६ | मा | ६ | म | आहा | सका |

अणारुवञुत्ता वा' ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तपकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हणील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया सातणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणारिणो, सागारुवञुत्ता होति अणारुवञुत्ता वा' ।

मणुस्स-सम्मामिच्छइद्वीणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सामादन गुणस्थान, एक सत्री-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमित्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असयम, चक्षु और भवसे ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएँ, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएँ भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक अनाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-

न १०७

सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|-----|---|------|-------|-----|---|
| गु | जी | प | प | प | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | मय | द | ले | म | ग | मक्ति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मा | म | प | म | म | म | प | म | म | म | ४ | अना. | जम | व | भा. | म | मासा | आहा | जना | उ |

नं. १०८

सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|-----|---|------|-------|-----|---|
| गु | जी | प | प | प | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | मय | द | ले | म | ग | मक्ति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मा | म | प | म | म | म | प | म | म | म | ४ | अना. | जम | व | भा. | म | मासा | आहा | जना | उ |

मणुस्स-मायणसम्ममद्वीणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दम पाण मत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदिय-जादी, तपकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्ब-भावहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सातणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणारिणो, सागारुवञुत्ता होति अणारुवञुत्ता वा' ।

तेसिं चैव पञ्जत्तानं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दम पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, तपकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्ब-भावहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सातणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवञुत्ता होति अणारुवञुत्ता वा' ।

सामादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, सत्री पर्याप्त और सत्री अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों जनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमित्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएँ, भव्यसिद्धिक, सामादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अना-हारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सामादन गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंजसो, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएँ, भव्यसिद्धिक, सामादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक,

न १०६ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|-----|---|------|-------|------|---|
| गु | जी | प | प | प | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | मय | द | ले | म | ग | मक्ति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मा | म | प | म | म | म | प | म | म | म | ४ | अना. | जम | व | भा. | म | मासा | आहा. | जना. | उ |

‘अवगदेवेदो वि अत्थि’ ति वयणादो । चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, मणपञ्च-गणेषु त्रिणा मत्त पाण, परिहार-संजमण विणा छ संजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेसाओ अलेसा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ मम्मत्तं, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी वि अत्थि, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता हत्ति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा” ।

तामिं चैव पञ्चत्तानं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणद्वुणाणि, एओ जीवममासो, छापञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, सीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग णव वा अजोगो वि अत्थि, इत्थिवेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त पाण, छ संजम, चत्तारि दंसण,

प्रयोजन होता तो अपगतवेदरूप स्थान नहीं बन सकता था, क्योंकि, द्रव्यवेद चोदद्वय गुण-स्थानके अन्ततक होता है। परन्तु ‘अपगतवेद भी होता है’ इस प्रकारका वचन निर्देश नौवें गुणस्थानके अवेदभागसे किया गया है, जिससे प्रतीत होता है कि यद्वा भाववेदसे ही प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं। वेद आलापके आगे चारों कपाय, तथा अकपाय स्थान भी होता है। मन-पर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना छह सयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लक्ष्याए, तथा अलक्ष्यारूप भी स्थान होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निकी तथा सन्निकी और असन्निकी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपरयोगिनी, अनाकारोपरयोगिनी, तथा साकार और अनाकार उपयोगसे शुगपत्त उपयुक्त भी होती है।

उन्हीं मनुष्यनियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—चौदहों गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संब्रणं, तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन चार योगोंके विना ग्यारह योग, अथवा, उपयुक्त चार और औदारिकमिश्रकाययोग तथा कार्मणकाययोग इन छह योगोंके विना नौ योग तथा अयोग स्थान भी होता है। स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। चारों कपाय, तथा अकपाय स्थान भी होता है। मन-पर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके

नं. ११४ मनुष्यनी स्त्रियोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी. | प | मा | सं. | ग | इ | का | यो. | वे | क | जा | मय | द. | के. | म. | ग. | महि. | आ. | उ |
|----|-----|----|----|-----|---|---|----|-----|----|---|----|----|----|-----|----|----|------|----|---|
| १४ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ७ | ६ | ६ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| | म | प | प | ७ | म | १ | १ | १ | १ | ४ | ७ | ६ | ६ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| | म | अ. | म | ६ | म | १ | १ | १ | १ | ४ | ७ | ६ | ६ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| | | | | अ | | | | | | | | | | | | | | | |

मनुषिणीं भण्णमाणं अत्थि चोद्दस गुणद्वुणाणि, दो जीवसमासा, छापञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण, मत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, एत्थ आहार-आहारमिस्सकायजोगा गत्थि । किं कारणं ? जेसि भावो इत्थिवेदो दब्बं पुण पुरिसवेदो, ते वि जीना मंजमं पडिवज्जंति । दब्बिन्थिवेदा मंजमं ण पडिवज्जंति, मंचेलत्तादो । माचिन्थिवेदाणं दब्बेण पुंवेदाणं पि मंजदाणं गाहारिदी ससुपुज्जदि दब्ब-भावेहि पुरिम-वेदाणमं मसुपुज्जदि तेगिन्थिवेदे पि गिरुद्धे आहारदुर्गं गत्थि, तेण एगारह जोगा भणिया । इत्थिवेदो अवगदेवेदो वि अत्थि, एत्थ भाववेदेण पयदं ण दब्बवेदेण । किं कारणं ?

गलोंका ग्रहण दो जाता है, अतः इस अपेक्षासे पर्याप्त मनुष्योंके आलाप सामान्य मनुष्योंके समान बतलाये गये हैं। परन्तु जब मनुष्योंके अवान्तर भेदोंमेंसे पर्याप्त मनुष्योंका ग्रहण किया जाता है तब पर्याप्त मनुष्योंसे पुरुष और नपुंसक वेदी मनुष्योंका ही ग्रहण होता है, क्योंकि स्त्रीवेदी मनुष्योंका स्वतंत्र भेद निनाया है। मनुष्यके अवान्तर भेदोंमें पर्याप्त शब्द पुरुष और नपुंसकवेदी मनुष्योंमें ही रूढ है, इसलिए इस अपेक्षासे पर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहते समय स्त्रीवेदको छोड़कर आलाप कहे हैं।

मनुष्यनी (योनिमती) स्त्रियोंके आलाप कहते पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों मन्त्राण तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान है। मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों चतनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तथा अयोगत्तप भी स्थान है। इन मनुष्यनियोंके आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये दो योग नहीं होते हैं।

शुंका—मनुष्य-स्त्रियोंके आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होनेका क्या कारण है ?

समाधान—यद्यपि जिनके भावकी अपेक्षा स्त्रीवेद और द्रव्यकी अपेक्षा पुरुषवेद होता है (भावज्ञी) जीव भी संयमको प्राप्त होते हैं। किन्तु द्रव्यकी अपेक्षा स्त्रीवेदवाले जीव संयमको नहीं प्राप्त करते हैं, क्योंकि, वे सकेल अर्थात् चरलसहित होते हैं। फिर भी भावकी अपेक्षा स्त्रीवेदी और द्रव्यकी अपेक्षा पुरुषवेदी संयमधारी जीवोंके आहारकक्राडि उत्पन्न नहीं होती है, किन्तु द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षासे पुरुषवेदवाले जीवोंके ही आहारकक्राडि उत्पन्न होती है। इसलिए स्त्रीवेदवाले मनुष्योंके आहारकक्राडिके विना ग्यारह योग कहे गए हैं। योग आलापके आगे स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। यहाँ भाववेदसे प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं। इसका कारण यह है कि यदि यहाँ द्रव्यवेदसे

केवलदमणेण तिणिणं दंसण, दवेण काउ-सुककेल्लेसा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्सा सुककेल्लेसाए चचारि वा; भवसिद्धियाओ अमवभिद्धियाओ, मिच्छत्ते, सासणमम्मचे राडयसम्मचेण तिणिणं सम्मत्ते, सण्णिणीओ अणुभयाओ वा, आहारिणीओ अणहारिणीओ, सगारुवजुत्ता हति अणगारुवजुत्ता वा तदुभएण वा” ।

“मणुसिणी-मिच्छाईणीं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसया, तिणिण अण्णाण,

इवसे कापोत और शुकुलेइया, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेइया, अथवा शुकुलेइयाके साथ उक्त तीनों लेइयाण मिलकर चार लेइयाण होती हैं। भव्यस्तिद्विक, अभव्यस्तिद्विक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और क्षयिकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व, सन्निली और अनु-भय अर्थात् सन्निली असन्निली विरुद्ध-रहित स्थान भी होता है। आहारिणि, अनाहारिणि, साकारोपरयोगिनी अनाकारोपरयोगिनी तथा उभय उपयोगेसे उपयुक्त होती है।

मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सही-पर्याप्त, और सही-अपर्याप्त, ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों सत्ताप, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, ब्रह्मकाय, चारों मनो-योग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकभिक्षकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, खीवेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो

ने ११६

मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|-------|---|---|---|----|----|---|---|----|---|---|---|---|
| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | द | क | आ | स | द | ले | म | स | आ | उ |
| ३ | १ | ६ | ७ | ४ | २ | १ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | ३ | २ | २ |
| मे | स.अ | अ | म | म | म | म | कु | कु | अ | च | कु | म | स | आ | उ |
| सा. | | | | | | | क | क | य | क | अ | म | स | आ | उ |
| म | | | | | | | क | क | य | क | अ | म | स | आ | उ |

ने. ११७

मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|-------|---|---|---|----|----|---|---|----|---|---|---|---|
| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | द | क | आ | स | द | ले | म | स | आ | उ |
| १ | २ | ६ | ७ | ४ | २ | १ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | ३ | २ | २ |
| मि | स | अ | म | म | म | म | कु | कु | अ | च | कु | म | स | आ | उ |
| | | | | | | | क | क | य | क | अ | म | स | आ | उ |
| | | | | | | | क | क | य | क | अ | म | स | आ | उ |

द्वय-भागां ह छ लेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवमिद्धिया, छ सम्मत्ते, मण्णिणीओ णव मण्णिणी णेव अमण्णिणी, आहारिणी, अणहारिणी, सगारुवजुत्ता हति अणगारुवजुत्ता वा सगार-अणगारिहि गुगवदुमजुत्ता वा” ।

तामिं चेत्त अपञ्चत्ताणं भणमाणे अत्थि तिणिणं गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचि-दियजादी, तमकाओ, दो जोग, इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसया अक-साओ वा, दो अण्णाण केवलणणेण तिणिणं गाण, असजमो जहामरादेण दोणिण संजम,

विना अह संयम, चारों दर्शन, उव्य ओर भावसे छहों लेइयाए तया अलेइया स्थान भी होता है। भव्यस्तिद्विक, अभव्यस्तिद्विक; छहों सम्यक्त्व, सन्निली, तथा सन्निली और असन्निली विरु-द्धते रत्तित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपरयोगिनी, अनाकारोपरयो-परयोगिनी तथा साकार अनाकार इत दोनों उपयोगेसे युगपत् उपयुक्त भी होती है।

त्रियोगार्थ—पर्याप्त सामान्य मनुष्योंके तेरह अथवा दस योगोंके होनेका स्पष्टीकरण ऊपर कर आये हैं, उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्यनियोंके ग्यारह अथवा नौ योगोंके संवन्धमे भी जान लेना चाहिये। यहा इतनी विशेषता है कि खीवेदियोंके आहारक ऋद्धि नहीं होती है, अतएव इनके आहार और आहारमिथ्र ये दो योग नहीं पाये जाते हैं। इसप्रकार खीवेदियोंके पर्याप्त आस्थामें ग्यारह अथवा नौ योग ही होते हैं।

उद्धा मनुष्यतियोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि और स्वयोगकेवली ये तीन गुणस्थान, एक सही-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्या-प्तिया, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, ब्रह्मकाय, औदारिकभिक्षकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, खीवेद, तथा अपगत-वेरस्थान भी है। चारों कयाय तथा अकयाय स्थान भी है। कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान तथा स्वयोगकेवली गुणस्थानकी अपेक्षा केवल ज्ञान, इसप्रकार तीन ज्ञान, असें यम अण्ण यथायातनिहासुत्ति ये दो संयम, चक्षु, अचक्षु और केवल ये तीन दर्शन,

ने. ११८

मनुष्यती स्त्रियोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|-------|---|---|---|----|----|---|---|----|---|---|---|---|
| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | द | क | आ | स | द | ले | म | स | आ | उ |
| ३ | १ | ६ | ७ | ४ | २ | १ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | ३ | २ | २ |
| मे | स.अ | अ | म | म | म | म | कु | कु | अ | च | कु | म | स | आ | उ |
| सा. | | | | | | | क | क | य | क | अ | म | स | आ | उ |
| म | | | | | | | क | क | य | क | अ | म | स | आ | उ |

काउ-सुक्कलेस्ता, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्ताओ; भवसिद्धिया अमवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ हेति अणागारु-वजुत्ताओ वा" ।

मणुमिणी-सासणसम्महङ्गीणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमात्ता, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एमारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्ताओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा" ।

द्रवसे कापोत और शुक्र लेस्याप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अणुभ-लेस्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती है ।

सासादनसम्यद्वष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुण-स्थान, संज्ञो-पर्याप्त और सत्ती-अपर्याप्त ये दो जीवसमास. छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्या-प्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कामंणकाययोग ये ग्यारह योग, खविद, चारों कणाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यत्त्व, सत्तिनी, आहा-रिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती है ।

नं. ११९ मिथ्याद्वष्टि मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|----|---|---|---|----|-----|-----|-----|------|-----|-------|-----|---|----|----|----|---|
| गु | जी | प | सा | स | ग | द | का | यो | वे. | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स. | सा | जा | उ |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | १ | १ | २ | ३.२ | २ | १ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | १ | १ | २ | ३.२ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि. | म. | अ | | | | | | जी | मि. | ती. | कुम. | अस | चक्षु | का | म | मि | स. | आ | उ |
| | | | | | | | | मि. | | | कुशु | अव | मा | अणु | | | | | |
| | | | | | | | | मि. | | | मा | अणु | | | | | | | |

नं. १२० सासादनसम्यद्वष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|----|---|---|---|----|-----|-----|-----|------|-----|-------|-----|---|----|----|----|---|
| गु | जी | प | सा | स | ग | द | का | यो | वे. | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स. | सा | जा | उ |
| १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | १ | १ | २ | ३.२ | २ | १ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | १ | १ | २ | ३.२ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि. | म. | अ | | | | | | जी | मि. | ती. | कुम. | अस | चक्षु | का | म | मि | स. | आ | उ |
| | | | | | | | | मि. | | | कुशु | अव | मा | अणु | | | | | |
| | | | | | | | | मि. | | | मा | अणु | | | | | | | |

असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्ताओ, भवसिद्धियाओ अमवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ हेति अणागारु-वजुत्ताओ वा ।

मिच्छाद्वष्टि-पज्जत्त-मणुमिणीणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एओ जीवसमात्तो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्ताओ. भवसिद्धियाओ अमवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारु-वजुत्ताओ हेति अणागारुवजुत्ताओ वा" ।

मिच्छाद्वष्टि-अपज्जत्त-मणुमिणीणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-मामो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी तथा अनाकारोपयोगिनी होती है ।

मिथ्याद्वष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्वष्टि गुणस्थान. एक सत्ती पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग तथा औदारिककाय-योग ये नौ योग; खविद, चारों कणाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती है ।

मिथ्याद्वष्टि अपर्याप्त मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्वष्टि गुणस्थान, एक सत्ती-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कामंणकाययोग ये दो योग, खविद, चारों कणाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

नं. ११८ मिथ्याद्वष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|----|---|---|---|----|-----|-----|-----|------|-----|-------|-----|---|----|----|----|---|
| गु | जी | प | सा | स | ग | द | का | यो | वे. | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स. | सा | जा | उ |
| १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | १ | १ | २ | ३.२ | २ | १ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | १ | १ | २ | ३.२ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि. | म. | अ | | | | | | जी | मि. | ती. | कुम. | अस | चक्षु | का | म | मि | स. | आ | उ |
| | | | | | | | | मि. | | | कुशु | अव | मा | अणु | | | | | |
| | | | | | | | | मि. | | | मा | अणु | | | | | | | |

पञ्चतन्मयुग्मिणी-नामणसम्माहृतीणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एयो जीवममो, छ पञ्चतीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तपक्राओ, णव जोग, इत्थियेद, चत्तारि क्रमाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्वियाओ, नामणसम्मत्तं, मणिणी, आहारिणी, सागार-वजुत्ताओ णंति अणगारुवजुत्ताओ वा' ।

अयज्जच-मणुमिणी-नामणसम्माहृतीणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एयो जीवममो, छ अपञ्चतीओ, मच पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तपक्राओ, दो जोग, इत्थियेद, चत्तारि क्रमाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दब्बेण साउ-मुक्कलेस्सा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवमिद्विया, सासणसम्मत्तं,

पर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहते पर—एक सासादन गुण-स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमाप्त, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाणं, मनुष्य-मति, पंचेन्द्रियजाति, तसक्राय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिकक्राययोग ये दो योग, खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यणं, मध्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सजिनी, आहारिणी, नाकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अपर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहते पर—एक सासादन गुण-स्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमाप्त, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सजाणं, मनुष्यमति, पंचेन्द्रियजाति, तसक्राय, औदारिकमिश्रक्राययोग और कार्मणक्राययोग ये दो योग, खीवेद, चारों क्रमाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्यणं, भावसे कृण, नील और कापोत ये तीन अणुप लेख्यणः भव्यसिद्धिक, नामादनसम्यक्त्व, सजिनी, आहारिणी, अनाकारिणी; साकारोप-

नं. १२२ सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | ड | का | यो. | वे | क. | सा | सप | द | ले | म | स | मि | आ. | उ |
|----|----|----|-------|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |

सणिणी, आहारिणी अणहारिणी, सागारुवजुत्ता णंति अणगारुवजुत्ता वा' ।

मणुसिणी-सम्मामिच्छाहृतीणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एयो जीवसममो, छ पञ्चतीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तपक्राओ, णव जोग, इत्थियेद, चत्तारि क्रमाय, तिणिण णाण तीहिं अणणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्वियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सणिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ णंति अणगारुवजुत्ताओ वा' ।

मणुसिणी-असंजदसम्माहृतीणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एयो जीवसममो,

योगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहते पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमाप्त, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाण, मनुष्यमति, पंचेन्द्रियजाति, तसक्राय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिकक्राययोग ये दो योग, खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यणं, मध्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सजिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहते पर—एक अधिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमाप्त, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाणं, मनु-

नं. १२२ सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | ड | का | यो. | वे | क. | सा | सप | द | ले | म | स | मि | आ | उ |
|----|----|----|-------|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |

नं. १२३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप

| गु | जी | प | प्रा. | स | ग | ड | का | यो. | वे | क. | सा | सप | द | ले | म | स | मि | आ | उ |
|----|----|----|-------|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म. | स. | ज. | प. | स. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. | क. | म. |

सागरुचुत्ताओ होति अणागरुचुत्ता वा ।

मणुसिणी-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेदो-णउसयवेदाणमुदए आहारदुगं मणपज्जवणं परिहारसुद्धिसंजमो च जोग, इत्थिवेदो-णउसयवेदाणमुदए आहारदुगं मणपज्जवणं परिहारसुद्धिसंजमो च णत्थि । इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागरुचुत्ता होति अणागरुचुत्ता वा^{१५५} ।

मणुसिणी-अपमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जचीओ, दस पाण, आहारसण्णाए विणा तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, ये तीन सम्यक्त्व, सन्नित्ती, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

प्रमत्तसयत मनुष्यनियोंके आलाप कहते पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, एक सबी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं । नौ योगोंके दोनिका कारण यह है कि खविद और नपुंसकवेदके उदय होने पर आहारक-काययोग, आहारकप्रकाययोग, मन-पर्याप्तान और परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होते हैं । योग आलापके आगे खविद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पसा और शुक्ल ये तीन शुभ लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व-सन्नित्ती, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अप्रमत्तसयत मनुष्यनियोंके आलाप कहते पर—एक अप्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार-संज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाप, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिक-

नं १२६ प्रमत्तसयत मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| शु.जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, अंसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागरुचुत्ता होति अणागरुचुत्ताओ वा^{१५६} ।

“ मणुसिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, प्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग. खविद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्नित्ती, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

संयतसयत मनुष्यनियोंके आलाप कहते पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक सबी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, खविद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पसा और शुक्ल लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| शु.जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| शु.जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

तमज्ञाओं, णव जोग, इत्थिवेद, चचारि क्रमाय, तिणिण णाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण नेउ-पम्म-युम्फलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिणिण गम्मचं, सणिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ हंति अणारुवजुत्ताओ वा” ।

“मणुसिणी-अपूर्वकरणं भणामाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमामो, छ पञ्जत्तीओ, दम पाण, तिणिण मण्णाओ, मणुमग्दी, पंचिदियजदी, तमज्ञाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चचारि क्रमाय, तिणिण णाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण युम्फलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मचं, सणिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ हंति अणारुवजुत्ताओ वा” ।

साध्याय ये नां योग; स्तोत्रे, चारं क्रमाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थाना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे तेज, पम और दुरु ये तीन द्रुम लेख्याण, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, श्वायिक और श्वायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निर्वा, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण स्थान, एक मन्त्री-पर्याप्त नीमसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना दोष तीन मन्त्राण, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो योग, स्वविद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे दुरु-लेख्याण; मन्त्राण, नेदकमम्यस्त्वके विना औपशमिक और श्वायिक ये दो सम्यक्त्व,

न १२७ अप्रमत्तमयत मनुष्यनियोंके आलाप

| गु. जी | प | मा | स | ग | इ | वो | क्र. | जा | सय | द | ले | म. | म. | स | साहि | आ | उ. |
|--------|---|----|----|---|---|----|------|------|----|----|----|----|----|----|------|------|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| अ. | म | प | मा | स | ग | इ | वो | क्र. | जा | सय | द | ले | म. | म. | स | साहि | आ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| मा | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. १२८ अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| गु. जी | प | मा | स | ग | इ | वो | क्र. | जा | सय | द | ले | म. | म. | स | साहि | आ | उ. |
|--------|---|----|----|---|---|----|------|------|----|----|----|----|----|----|------|------|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| अ. | म | प | मा | स | ग | इ | वो | क्र. | जा | सय | द | ले | म. | म. | स | साहि | आ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| मा | | | | | | | | | | | | | | | | | |

आहारिणी, सागारुवजुत्ता हंति अणारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी-पदम-अणियद्विणं भणामाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमामो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, आहार-भयसण्णाहि विणा दो सण्णाओ, मणुमग्दी, पंचिदियजदी, तमज्ञाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चचारि क्रमाय, तिणिण णाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण युम्फलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मचं, सणिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ताओ हंति अणारुवजुत्ताओ वा” ।

मणुसिणी-विदिय-अणियद्विणं भणामाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमामो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, परिगहसण्णा, मणुमग्दी, पंचिदियजदी, तमज्ञाओ, णव जोग, अमग्दवेदो, चचारि क्रमाय, तिणिण णाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण

सन्निर्वा, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सन्त्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, आहार और भयसज्ञाके विना दोष दो सज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो योग, स्वविद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे दुरु लेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और श्वायिक ये दो सम्यक्त्व, सन्निर्वा, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सन्त्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, परिग्रहसज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो योग, अपगतवेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे दुरुलेख्या,

नं. १२९ अनिवृत्तिकरण प्रथमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| गु. जी | प | मा | स | ग | इ | वो | क्र. | जा | सय | द | ले | म. | म. | स | साहि | आ | उ. |
|--------|---|----|----|---|---|----|------|------|----|----|----|----|----|----|------|------|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| अ. | म | प | मा | स | ग | इ | वो | क्र. | जा | सय | द | ले | म. | म. | स | साहि | आ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| मा | | | | | | | | | | | | | | | | | |

मणुसिणी-चउत्थ-अणियट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि-दद्ध-वीए अङ्कुरो व्व इत्थि णडुंसय-वेदोदय-इसिय-जीवे वेदोदए फिडे वि ण मणपज्जवणणमुप्पज्जदि । दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुम्फलेस्सा; भवसिदिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुञ्जुत्ता होति अणागारुञ्जुत्ता वा” ।

मणुसिणी पंचम-अणियट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थ भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कइने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सक्ती-पर्याप्त जीवसमास, छहो पर्याप्तिया, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अणगतवेद, माया और लोभ ये दो कपाय, आदिके तीन ज्ञान होने हैं । यहाँपर खीवेदके नष्ट हो जाने पर भी मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका कारण यह है कि जैसे अग्निसे दग्ध हुए बज्रमें अंकुर उत्पन्न नहीं हो सकता है, उसीप्रकार खी और नपुंसकवेदके उदयसे दूषित जीवमें, वेदोदयके नष्ट हो जाने पर भी, मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, इसलिये यहाँ पर भी तीन ज्ञान ही कहे गये हैं । ज्ञान आलापके आगे सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, भावसे शुक्लेस्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षापिक ये दो सम्भस्त्व, संखिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कइने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सक्ती पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं १३२ अनिवृत्तिकरणके चतुर्थभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|---|---|---|---|
| गु | जी | प | ना | म | ग | इ | ग | वे | यो | ना | इ | शा | मय | द | ले | म | स | म | स | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अ | म | प | प | प | प | प | प | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| च | प | प | प | प | प | प | प | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| सा | | | | | | | | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |

मुम्फलेस्सा; भवसिदिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुञ्जुत्ता होति अणागारुञ्जुत्ता वा” ।

मणुसिणी-तदिय-अणियट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवरदवेदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि-दद्ध-वीए अङ्कुरो व्व इत्थि णडुंसय-वेदोदय-इसिय-जीवे वेदोदए फिडे वि ण मणपज्जवणणमुप्पज्जदि । दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुम्फलेस्सा; भवसिदिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुञ्जुत्ता होति अणागारुञ्जुत्ता वा” ।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षापिक ये दो सम्भस्त्व, संखिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कइने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सक्ती-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अणगतवेद, माया और लोभ ये दो कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, भावसे शुक्लेस्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षापिक ये दो सम्भस्त्व, संखिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

न १३० अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|---|---|---|---|
| ग | जी | प | ना | म | ग | इ | ग | वे | यो | ना | इ | शा | मय | द | ले | म | स | म | स | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अ | म | प | प | प | प | प | प | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| च | प | प | प | प | प | प | प | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| सा | | | | | | | | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |

न १३१ अनिवृत्तिकरणके तृतीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|---|---|---|---|
| ग | जी | प | ना | म | ग | इ | ग | वे | यो | ना | इ | शा | मय | द | ले | म | स | म | स | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अ | म | प | प | प | प | प | प | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| च | प | प | प | प | प | प | प | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| सा | | | | | | | | ० | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |

त्रोग, अत्रगद्वेदो, लोभक्रमाओ, तिणिण गाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दव्वेण छ लेन्नाओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवञ्जुत्ता हेति अणगारुवञ्जुत्ता वा ।

'मणुसिणी-सुद्धमांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, सुद्धमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णत्र जोग, अत्रगद्वेदो, सुद्धमलोभक्रमाओ, तिणिण गाण, सुद्धमांपराइयसुद्धिसंजमो, तिणिण दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं,

ओर ओशकिकाययोग ये नो योग; अफगतवेद, लोभक्रमाय, आदिके तीन ज्ञान, सामा-यिक ओर छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे शुद्धलेश्या, भव्यविरिक, ओपशमिक ओर क्षायिक ये दो सम्यग्त्व, सखिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी ओर अनाकारोपयोगिनी हेती हे ।

सूद्धमान्तराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सूद्धमसा-मप्राय गुणस्थान, एक सबी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, मूद्धम परि-ग्रहना, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, ओर ओशकिकाययोग ये नो योग; अफगतवेद, सूद्धम लोभक्रमाय, आदिके तीन ज्ञान, सूद्धम-नाम्प्रायगुहिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे शुद्धलेश्या, भव्य-

नं १३३ अनि गृत्तिकरणके पंचमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-----|---|---|---|---|---|---|---|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| ग | न | व | प | प | प | ग | द | त | यो | वे | र | सा | मय | द | ले | म | स | मति | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| म | परि | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| प | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| आ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं १३४ सूद्धमांपराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-----|---|---|---|---|---|---|---|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| ग | न | व | प | प | प | ग | द | त | यो | वे | र | सा | मय | द | ले | म | स | मति | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| म | परि | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| प | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| आ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवञ्जुत्ताओ हेति अणगारुवञ्जुत्ताओ वा । मणुसिणीसु उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णत्र जोग, अत्रगद्वेदो, उवसंतकसाओ, तिणिण गाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिणिण दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवञ्जुत्ताओ हेति अणगारुवञ्जुत्ताओ वा ।

मणुसिणीसु खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, सीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णत्र जोग, अत्रगद्वेदो, खीणकसाओ, तिणिण गाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिणिण दंसण, सिद्धिक, ओपशमिक ओर क्षायिक ये दो सम्यग्त्व, सखिनी, आहारिणी, साकारोपयो-गिनी ओर अनाकारोपयोगिनी हेती हे ।

उपशात्तकप्राय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक उपशान्त-कप्राय गुणस्थान, एक सबी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, उपशान्त-सत्ता, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और ओश-किकाययोग ये नो योग, अफगतवेद, उपशान्तकप्राय, आदिके तीन ज्ञान, यथाश्यात-विहारगुहिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे शुद्धलेश्या, भव्यविरिक, ओपशमिक ओर क्षायिक ये दो सम्यग्त्व, सखिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी ओर अनाकारोपयोगिनी हेती हे ।

क्षीणकप्राय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक क्षीणकप्राय गुण-स्थान, एक संजी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसत्ता, मनुष्यगति, पचे-न्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो योग, अफगतवेद, क्षीणकप्राय, आदिके तीन ज्ञान, यथाश्यातविहारगुहिसंयम, आदिके

नं. १३५ उपशात्तकप्राय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-----|---|---|---|---|---|---|---|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| ग | न | व | प | प | प | ग | द | त | यो | वे | र | सा | मय | द | ले | म | स | मति | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| म | परि | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| प | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| आ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

दन्त्रेण छ लेस्माओ, भवेण सुकलेस्स; भवमिद्वियाओ, खइयसम्मत्तं, सण्णिणीओ, अण्णारिणीओ, मागारुञ्जुत्ता हँति अण्णारुञ्जुत्ता वा १ ।

११ मणुसिणी-अजोगिजिणणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्दणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो वा, सीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, मत्त जोग, अगदवेदो, अरुमाओ, केवलणणं, जहामसदाविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दन्त्रेण छ लेस्साओ, भवेण सुकलेस्सा; भवमिद्वियाओ, खइयसम्मत्तं, तीत दर्शत, द्रव्यसे छहों लेदयाण, भावसे शुह्लेदया, भव्यसिद्धिक, आयिकसस्यत्त्व, सन्निकिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

सयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सयोगि-केवली गुणस्थान, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; चवनबल, कायबल, आयु और द्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, तथा समुदा-तकी अपर्याप्त अवस्थामें, चवनबल और द्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, अथवा तेरहवें गुणस्थानके अन्तमें आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं । क्षीणसन्ना, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों चवनयोग, औदा-रिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये सात योग, अपगतवेदस्थान, अरुणायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयापं, भावसे शुह्लेदया; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसस्यत्त्व, सन्निकिनी और असन्निकिनी इन दोनों

न. १३६ क्षीणकाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | जी | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |

न १३७ सयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

गेव सण्णिणीओ गेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ अण्णारिणीओ, सागार-अण्णारोरेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा हँति ।

मणुसिणी-अजोगिजिणणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्दणं, एओ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, एओ पाणे, सीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दन्त्रेण छ लेस्साओ, भवेण अलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, गेव सण्णिणीओ गेव असण्णिणीओ, अण्णारिणीओ, सागार-अण्णारोरेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा हँति १ ।

लद्धि-अपज्जत्त-मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्दणं, एओ जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे विकल्पसे विमुक्त, आहारिणी, अण्णारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगसे युगपत् उपयुक्त होती हैं ।

अयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्य-गति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोगस्थान, अपगतवेदस्थान, अरुणायस्थान, केवल-ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयापं, भावसे अलेदयास्थान, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसस्यत्त्व, सन्निकिनी और असन्निकिनी इन दोनों विकल्पसे मुक्त, अण्णारि-णि, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगसे युगपत् उपयुक्त होती हैं ।

लघ्वपर्याप्तक मनुष्यके आलाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सन्नाए, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुसकवेद,

न १३८ अयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

जोग, गर्भमयवन्द, चत्वारि क्रमाय, दो अण्णाण, अंजम, दो दंस्वण, द्वेषण काड-सुक्क-
नेम्याओ, माण्ण अण्णह-णील-काउलेस्साओ; भममिद्विया अमवमिद्विया, मिच्छत्तं, मण्णिणो,
आह्रारिणो अण्णाहरिणो, सागारवजुत्ता होति अण्णागारवजुत्ता वा ।

एव मणुसगदी समत्ता ।

"देवगदीण देवानं मण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुण्णट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ
पज्जचीओ छ अपज्जचीओ, दम पाण सत्त पाण, चत्तारि मण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी,
तगकाओ, एग्गारह जोग, ण्णुंमयवेदंण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण,
चारं कसाय, कुमति ओर कुशुन ये दो अजान, अस्यम, च्चुओर अच्चु ये दो दर्शन,
अयंमं कपोत ओर शुक्क लेब्बयाण, भावसे रुण्ण, नील ओर कपोत ये तानि लेब्बयाण. भव्य-
मिद्धिक, अमव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक. साकारोपयोगी ओर
अकारोपयोगी दोते ह ।

इत्तमकार मणुयोंके आलाप समात्त २ण ।

रंगनिसं सामान्य देवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके चार गुणस्थान, सजी-
पर्यत ओर सजी उपर्यत ये दो जीवसमान्य, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण,
मान प्राण; चारों मनोयोग, चारों मनोयोग, चारों मनोयोग, चारों मनोयोग, चारों मनोयोग,
चौकियिकृत्कारयोग, वैकियिकृत्कारयोग और कामणकारयोग ये ग्यारह योग,
मणुसग वेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,

नं. १३० लक्ष्यपर्यात्तक मणुयोंके आलाप

| नं. १३० | प | प | म | ग | ग | द | द | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड |
|---------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ |
| | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ |
| | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ |

देवोंके सामान्य आलाप

| नं. १३० | प | प | म | ग | ग | द | द | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड | ड |
|---------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ |
| | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ |
| | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ |

असंजमो, तिण्णिण दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भममिद्विया अमवसिद्धिया, छ
सम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो अण्णाहरिणो, सागारवजुत्ता होति अण्णागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं मण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुण्णट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो,
छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गम
जोग, दो वेद, चत्तारि क्रमाय, छ पाण, असजमो, तिण्णिण दंसण, द्वेषण छ लेस्साओ
एत्थ सिस्सो मण्णिणो—देवान पज्जत्तकाले दव्वदो छ लेस्साओ हवति चि एंद् ण वडदं,
तेसिं पज्जत्तकाले भावदो छ-लेस्साभावदो । मा भवंतु देवानं भावदो छ लेस्साओ
दव्वदो पुण छ लेस्सा भवति चैव, दव्व-भावणमग्गत्ताभावदो । इदि एदमवि वयणं ण
वडदं, जम्हा जा भावलेस्सा तल्लेस्सा चैव ओरालिय-नेउब्बिय आहारसरिणोक्कम्म-
परमाणवो आगच्छंति । तं कथं णव्वदि चि मण्णिदे सोथम्मादिदेवानं भावलेस्साणुरुव-
दव्वलेस्सापरूवणदो गव्वदि । ण च देवानं पज्जत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ
मोत्तण्णलेस्साओ अत्थि, तम्हा देवानं पज्जत्तकाले दवादो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि
होदव्वमिदि । एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ—

अस्यम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेब्बयाण, (यहाँ तीन अणुम लेद्वाण
अपर्यात्तकालकी अपेक्षा जानना चाहिये ।) भव्यसिद्धिक, अमव्यसिद्धिक, छहों रस्यसत्व,
मत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अकारोपयोगी दोते ह ।

उन्हीं सामान्य देवोंके पर्यात्तकालसम्बन्धी आलाप कहते पर—आदिके चार गुणस्थान,
एक सर्वापर्यात्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संजाण, देवगति, पंचे-
न्द्रियजाति, असकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैकियिकृत्कारयोग ये नौ योग,
स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,
असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेब्बयाण होती ह ।

शुक्रा — यहाँपर शिष्य कहता है कि देवोंके पर्यात्तकालमें द्रव्यसे छहों लेब्बयाण होती
हैं यह वचन घडित नहीं होता है, क्योंकि, उनके पर्यात्तकालमें भावसे छहों लेब्बयाणोंका
अभाव है । यदि कहा जाय कि देवोंके भावसे छहों लेब्बयाण मत होवें, किन्तु द्रव्यसे छहों
लेब्बयाण होती ही है, क्योंकि द्रव्य और भावमें एकताका अभाव अर्थात् भेद है । सो ऐसा क्रयन
भी नहीं बनता है, क्योंकि, जो भावलेब्बया होती है उसी लेब्बयावाले ही औदारिक, वैकि-
यिक और आहारकशरीरसंबन्धी नोकर्म परमाणु आते है । यदि यह कहा जाय कि एक पान
कैसे जानी जाती है, तो उसका उत्तर यह है कि सोथर्म आदि कल्पवासी देवोंके भाव-
लेब्बयाके अत्रुकरूप ही द्रव्य लेब्बयाका प्ररूपण किये जानेसे एक बात जानी जाती है । तथा देवोंके
पर्यात्तकालमें तेज, पत्र और शुक्क इन तीन लेब्बयाओंको छोड़कर अन्य लेब्बयाएं होती नहीं है,
इसलिये देवोंके पर्यात्तकालमें द्रव्यकी अपेक्षा भी तेज, पत्र और शुक्क लेब्बयाण होना चाहिये ।
इस प्रकारमें निम्न गथाएं उपयुक्त हैं—

निष्ठा भ्रमरसम्पन्ना गीला पुष्प गीलगुलियसंकासा ।

काओ कओद्वयणा तेज तनगिज्जयणा य ॥ २२३ ॥

पम्मा पउमसयणा सुम्मा पुण कासकुसुमसकासा ।

निष्ठादि-द्रव्यलेस्सा-ज्जणविसेसो सुणेयवो' ॥ २२४ ॥

भावलेस्सा-लिंणं थोरुच्चाएण एसा गाहा जाणावेई—

णिग्गुल्लखंबसहस्रसाह शुच्चित्तु वाउ-पडिदाई ।

अब्भत्तलेस्साणं भिंदइ एदाई वयणाई' ॥ २२५ ॥

शुण्यलेदया भोरिके समान अत्यन्त काले वर्णकी होती है, नीललेदया नीलकी गोलीके समान नीलगुणकी होती है, कापोतलेदया कपोतवर्णवाली होती है, तेजलेदया सेनेके समान वर्णवाली होती है, पमलेदया पमके समान वर्णवाली होती है और शुक्लेदया कासके फूलके समान श्येतवर्णकी होती है । इसप्रकार कृष्णादि द्रव्यलेदयाओंके वर्ण-विशेष जानना चाहिये ॥ २२३, २२४ ॥

भावलेदयाओंके स्वरूपका योडेमें संग्रहरूपसे यह गाथा ज्ञान करा देती है—
जब मूलसे गुक्षको काटो, स्क्रन्धसे काटो, शाखाओंसे काटो, उपशाखाओंसे काटो फलोंको तोड़कर खाओ और वायुमें पतित फलोंको खाओ, इसप्रकारके ये वचन अभ्यन्तर अर्थात् भाष्येदयाओंके भेदको प्रकट करते हैं ॥ २२५ ॥

निर्णयार्थ—भोमटसार जीवकांडमें उक्त अर्थ इस प्रकारसे स्पष्ट किया गया है कि फलोंसे ल्ये हुए गुक्षको देवकर कृष्णलेदयावाला विचार करता है कि इस वृक्षको जड़-मूलसे उगनाइकर फलोंको खाना चाहिये । नीललेदयावाला विचार करता है कि इस वृक्षको स्क्रन्ध अर्थात् मूलसे ऊपरके भाग को काटकर फलोंको खाना चाहिये । कापोतलेदयावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी शाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये । तेजलेदयावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी उपशाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये । पमलेदयावाला विचार करता है कि इस वृक्षके फलोंको तोड़कर खाना चाहिये । शुक्लेदयावाला विचार करता है कि इस वृक्षके वायुमें भिरे हुए फलोंको खाना चाहिये । उक्त प्रकारके भावोंसे छहो लेदयाओंके आपत्त्यको जान लेना चाहिये ।

१ ' गिमा तु' इति स्थाने ' आ, क' द्रव्यो ' गीलाण' इति पाठ । ' ज' प्रता ' गीलाण' इति पाठ ।

२ ५२५ १, १८६ (दि स्तुलिमित्ति)

३ निष्ठा-पञ्चानुत्तरां मित्रु भित्तु पञ्चदर । गाउ फजार इदि ज म्मेण वणा इते कम्म ।
को जी. ५०८.

तेज तेज तेज पम्मा य पम्म-सुम्मा य ।

सुम्मा य परमसुम्मा लेस्ससमासो सुणेयवो' ॥ २२६ ॥

तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च ।

एत्तो य चोदसण्हं लेस्स भेदो सुणेयवो' ॥ २२७ ॥

एत्थ परिहारो उच्चदे—ण ताव एदाओ गाहाओ तो पक्खं सोहति, उभय-पक्ख-साधारणादो । ण तो उच्च-जुत्ती वि घडदे, ण ताव अपज्जत्तकालभावलेस्समणुहरइ दव्व-लेस्सा, उत्तमभोगभूमि-मणुस्साणमपज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साणं गउरवण्णाभावापत्तीदो । ण पज्जत्तकाले भावलेस्सं पि णियमेण अणुहरइ पज्जत्त दव्वलेस्सा, छविह-भावलेस्सासु परिपइत्त-तिरिख-मणुसपज्जत्ताणं दव्वलेस्साए अणियमपसंगादो । धवलवण्ण-वलायाए

तीनके तेजलेदयाका जघन्य अशा, दोके तेजलेदयाका मध्यम अशा, दोके तेजलेदयाका उत्कृष्ट एव पमलेदयाका जघन्य अशा, छहके पमलेदयाका मध्यम अशा, दो के पमलेदयाका उत्कृष्ट एवं शुक्ल लेदयाका जघन्य अशा, तेरहके शुक्लेदयाका मध्यम अशा तथा चौदहके परमशुक्लेदया होती है । इस प्रकार तीनों शुभ लेदयाओंका भेद जानना चाहिये ॥ २२६, २२७ ॥

विशेषार्थ—भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क इन तीन जातिके देवोंके जघन्य तेजलेदया होती है । सौधर्म और पेशान इन दो स्वर्गवाले देवोंके मध्यम तेजलेदया होती है । सानत्कुमार और माहेन्द्र इन दो स्वर्गवाले देवोंके उत्कृष्ट तेजलेदया और जघन्य पमलेदया होती है । ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र और महाशुक्र इन छह स्वर्गवालोंके मध्यम पमलेदया होती है । शतार और सहस्रार इन दो स्वर्गवालोंके उत्कृष्ट पमलेदया और जघन्य शुक्लेदया होती है । आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ त्रैवेयक इन तेरह विमानवालोंके मध्यम शुक्लेदया होती है । इसके ऊपर नौ अनुदिश और पांच अनुतर इन चौदह विमान-वालोंके उत्कृष्ट या परमशुक्लेदया होती है ।

समाधान—शंभाकारकी पूर्वोक्त शंकाका अब परिहार कहते हैं—उपर कही गई ये गाथाएं तो तुम्हारे पक्षको नहीं साधन करती हैं, क्योंकि, वे गाथाएँ उभय पक्षमें साधारण अर्थात् समान हैं । और न तुम्हारी कही गई युक्ति भी घटित होती है । जिसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—द्रव्येदया अपर्याप्तकालमें होनेवाली भावलेदयाका तो अनुकरण करती नहीं है, अन्यथा अपर्याप्तकालमें अशुभ तीनों लेदयावाले उत्तम भोगभूमिया मनुष्योंके गौर वर्णका अभाव प्राप्त हो जायगा । इसीप्रकार पर्याप्तकालमें भी पर्याप्त-जीवसंबन्धी द्रव्यलेदया भाव-लेदयाका नियमसे अनुकरण नहीं करती है, क्योंकि, वैसा मानने पर छह प्रकारकी भाव-लेदयाओंमें निरन्तर परिवर्तन करनेवाले पर्याप्त तिर्यच और मनुष्योंके द्रव्यलेदयाके अनियम-

१ गा जी. ५३५ पर तन चतुर्थवणल्लय्यम्—' सवणतिगा पुण्णेण अणुहा' । मणिपु प्रथमपत्तो ' तेउ तेउ तह तेज पम्म पम्मा य' इति पाठ

२ गो. जी ५३४. पर तन चतुर्थवणल्लय्यम्—' लेस्सा मयपादिदिताण' ।

भातदो मुक्कलेस्मत्पुंभादो । आहारमरीणं धवलपण्णानं विगहगादि-द्वियन्चजीवाणं धवलपण्णानं भातदो मुक्कलेस्मावचीदो चेत् । किं च, दब्बलेस्सा गाम वण्णणामकम्मो-दयादो भवति, ण भावलेस्सादो । ण च दोण्हमेत्तं गाम, वण्णणामं-मोहीणियाणं अगादि-गदीणं पोमगल-जीविनामीणं एगत्त-विरोहादो । विम्मसोवचयवणो भावलेस्सादो भवति, ओरालिय नेउदिय-आहारमरीणं वण्णणामकम्मोदो भवंति, अटो ण एत्त दोसो । उट्टि ण, 'चंडो ण मुयदि वेरं' इचादि-वाहिरकञ्जुपायणे ट्टिदिचंथे पंदसंबंधे च भावेस्सा वापार-दंसणोदो । अदो दब्बलेस्साए ण कारणं भावलेस्सा चि सिद्धं । तदो ण्णणामकम्मोदयदो भवण्णानिय-याणवेंतर-जोडसियाणं दब्बदो छ लेस्साओ भवति, उपरिमदेदानं नेउ-पम्म-मुक्कलेस्साओ भवंति । पंच-वण्ण-रस-कागस्सा कसण-वपरसो व्य एगण्ण-वाहार विरोहाभादो । भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया

पनेसाप्रण प्राप्त नो जायसा । और यदि दब्बलेस्साके अतुरूप ही भावलेस्सा मानी जाय, तो धवल-ण्णाले कमुलेके भी भासे शुक्कलेस्साका प्रसन्न प्राप्त होगा । तथा धवलवर्णवाले आहारक शरीराने और धवलवर्णवाले विप्ररुतितिमं वियमान सभी जीवोंके भावकी अपेक्षासे शुक्कलेस्साकी जायनि प्राय होती । दूसरी बात यह भी है कि दब्बलेस्सा वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होती है, भावलेस्साके नहीं । इसलिये देवों लेस्साओंको एक कह नहीं सकते क्योंकि, अद्यतिया और पुद्गलविषाती वर्णनामा नामकर्म, तथा घातिया और जीवविषाती (चारिज) मोहनीय कर्म इन दोनों परस्पर विरोध हैं । यदि कदा जाय कि कर्मके विन्वसोपचयका वर्ण तो भावलेस्साके होता है, और औपचारिक, वैकल्पिक, आहार-कृशरसिके वर्ण वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होते हैं, इसलिए हमारे कर्ममें यह उक्त रूप नहीं आता है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, 'कृष्णलेस्सायात्वा जीव चउकर्म्मो होता है, वेर नहीं छोटता है' इत्यादि रूपसे साहरी नामोंके उत्पत्त करवेमें, तथा श्रितिकत्व और प्रदेशान्धमें ही भावलेस्साका व्यापार होता जाता है, इसलिए यह बात सिद्ध होती है कि भावलेस्सा दब्बलेस्साके होनेमें कारण नहीं है । इसप्रकार उक्त विवेचनमें यह फलितार्थ निकला कि वर्णनामा नामकर्मके उदयसे भातगामी, चान्दरुत्तर और ज्योतिषी देवोंके दब्बनी अपेक्षा इहाँ लेस्साण होती है, तथा भातगामी ऊपरके देवोंके तेज, पग और शुद्ध लेस्साए होती है । जैसे पांचों वर्णों और पांचों रसयाने काकके अथवा पांचों वर्णवाले रसोंसे युक्त काकके रूप व्यपदेश देया जाता है, उसी प्रकार भयंकर शरीरमें दब्बसे इहाँ लेस्साओंके होने पर भी एक वर्णवाली लेस्साके व्यनहार रत्नमें कोई विशेष नहीं आता है ।

१ शिर 'वपणाम' इति पाठो नास्ति ।

अभवविद्धिया, छ राम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरत्वञ्जुत्ता होति अणगार-वञ्जुत्ता वा" ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्यि तिण्णि गुणद्धाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणणेण विणा पंच पाण, असंजसो, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भाणेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अवसिद्धिया, सम्मा-मिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागरत्वञ्जुत्ता होति अणगारवञ्जुत्ता वा" ।

दब्बलेस्सा आलापके ओगे भावसे तेज, पस और शुक्कलेस्साएं, भव्यसिद्धिक, अव्य-सिद्धिक, इहाँ सरयत्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उद्दी देवोंके अपर्याप्तकालसंवन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्प्रादृष्टि और अविरतसम्प्रादृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक सती-अपर्याप्त जीवरामार, इहाँ अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैकल्पिकमिश्र और कर्मण ये दो योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कपाय, विभंगजनके विना पात ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, दब्बसे कापोत और शुक्क लेस्साए, भावसे इहाँ लेस्साएं, भव्यसिद्धिक, अव्यसिद्धिक, सम्प्राग्मिथ्यात्वे विना पाच सम्यक्त्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. १४२

देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

सं. १४३

देवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

आहारिणो, सागारुवजुता ह्येति अणागारुवजुता वा^{११} ।
तेसि चैव अपज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो तपकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुता ह्येति अणागारुवजुता वा^{११} ।

देव सासणसम्मट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, छ

अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाए, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, कुमति और कुथुत ये दो अन्नान, असयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याए, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सासादनसम्पद्यष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान,

मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

न. १३३

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ता | सय | द | ले | भ | म | स | मि | आ | उ |
|-----|------|---|------|---|----|---|----|----|----|---|-------|-----|-------|----|----|----|----|----|------|------|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ३ | ३ | १ | १ | १ | ४ | ३ | २ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | म.प. | | | | दे | अ | प | म | नी | | अज्ञा | अम. | चञ्चु | मा | मि | मि | मि | मि | आहा. | साका |
| | | | | | | | पु | पु | पु | | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

न. १३४

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ता | सय | द | ले | भ | म | स | मि | आ | उ |
|-----|------|---|------|---|----|---|----|----|----|---|-------|-----|-------|----|----|----|----|----|-----|------|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | १ | १ | १ | ४ | ३ | २ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | म.प. | अ | | | दे | अ | प | म | नी | | अज्ञा | अम. | चञ्चु | मा | मि | मि | मि | मि | आहा | साका |
| | | | | | | | पु | पु | पु | | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

देव-मिच्छाट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तपकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुता ह्येति अणागारुवजुता वा^{११} ।

तेमिं चैव पज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सब्धी-पर्याप्त और सब्धी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाए, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों पवनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, तीनों अन्नान, असयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे तेज, पम और शुरु लेख्याए भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों पवनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, तीनों अन्नान, असयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पम और शुरु लेख्याए भव्यसिद्धिक,

न. १३३ मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ता | सय | द | ले | भ | म | स | मि | आ | उ |
|-----|------|---|------|---|----|---|----|----|----|---|-------|-----|-------|----|----|----|----|----|-----|------|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ३ | ३ | १ | १ | १ | ४ | ३ | २ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | म.प. | | | | दे | अ | प | म | नी | | अज्ञा | अम. | चञ्चु | मा | मि | मि | मि | मि | आहा | साका |
| | | | | | | | पु | पु | पु | | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

पञ्चमीओ छ अपञ्चमीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदिय-जदी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अप्पाण, असंजमो, दो दंण, दव्य-भोणेहि छ लेस्साओ. भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवुत्ता हँति अणागारुवुत्ता वा^{१५} ।

“तेसिं चैप पञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अप्पाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण

संभो पर्याप्त आंर सभी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, मान प्राण; चारों संज्ञाएं देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों स्वतंत्रयोग, वैकृतिककार्ययोग, वैकृतिकमित्रकार्ययोग और कार्मणकार्ययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संशिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सभी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, देव-गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैकृतिककार्ययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु और

नं. १४६ सासादनसम्यग्दष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

| प. | जी | प | मा | स | ग | ग | का | यो. | वे | क | सा | सय. | द. | ले | म | म | सति | आ | उ |
|----|----|----|----|---|---|---|----|-----|----|---|----|-----|----|----|---|---|-----|---|---|
| १ | २ | १५ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ |
| २ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

नं १४७

सासादनसम्यग्दष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

| प. | जी | प | मा | स | ग | ग | का | यो. | वे | क | सा | सय. | द. | ले | म | म | सति | आ | उ |
|----|----|----|----|---|---|---|----|-----|----|---|----|-----|----|----|---|---|-----|---|---|
| १ | २ | १५ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ |
| २ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

तेउ-पम्म-सुकलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो, सागारुवुत्ता हँति अणागारुवुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुकक लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो, अणा-हारिणो, सागारुवुत्ता हँति अणागारुवुत्ता वा^{१६} ।

देव-सम्मामिच्छाइङ्गीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिससाणि, असंजमो, दो अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पक्क और शुक्ललेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संशिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासा-दन गुणस्थान, एक सभी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, सत्त प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकृतिकमित्रकार्ययोग और कार्मणकार्ययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, कुमति और कुहुत ये दो अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संशिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्या-दष्टि गुणस्थान, एक सभी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैकृतिककार्ययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानसे मिश्रित आविके तीन दान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज,

नं. १४८ सासादनसम्यग्दष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| प. | जी | प | मा | स | ग | ग | का | यो. | वे | क | सा | सय. | द. | ले | म | म | सति | आ | उ |
|----|----|----|----|---|---|---|----|-----|----|---|----|-----|----|----|---|---|-----|---|---|
| १ | २ | १५ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ |
| २ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, मम्मामिच्छत्तं, मण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हँति अणाराखजुत्ता वा^{१०} ।

देव-असंजदममाइदीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दम पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदिय-जादी, तमकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हँति अणाराखजुत्ता वा^{११} ।

पम और शुक्ल लेख्याणं; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अस्यतसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुण-स्थान, सत्री-पर्याप्त और सत्री-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याणं, भावसे तेज, पत्र और शुक्ल लेख्याणं, भव्यसिद्धिक, औपनामिक, क्षयिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १४९

सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप.

| उ | जी. | पु | प्रा | स | ग | । | क | सा. | स्य | । | द | ले | म | स | । | मा | आ | उ | |
|---|-----|----|------|---|---|---|---|-----|-----|---|---|----|---|---|---|----|---|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | २ | ४ | ३ | १ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | ३ | १ | २ | ३ |
| प | १ | ६ | १० | ४ | १ | २ | ४ | ३ | १ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | ३ | १ | २ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. १५०

असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

| उ | जी. | पु | प्रा | स | ग | । | क | सा. | स्य | । | द | ले | म | स | । | मा | आ | उ | |
|---|-----|----|------|---|---|---|---|-----|-----|---|---|----|---|---|---|----|---|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | २ | ४ | ३ | १ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | ३ | १ | २ | ३ |
| प | १ | ६ | १० | ४ | १ | २ | ४ | ३ | १ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | ३ | १ | २ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हँति अणाराखजुत्ता वा^{१२} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, गुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं अस्यतसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालमबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याणं, भावसे तेज, पत्र और शुक्ल लेख्याणं, भव्यसिद्धिक, औप-शामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अस्यतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सत्री-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्या, भावसे तेज, पत्र और शुक्ल लेख्याणं, भव्यसिद्धिक, औप-शामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक,

नं. १५१

असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

| उ | जी. | पु | प्रा | स | ग | । | क | सा. | स्य | । | द | ले | म | स | । | मा | आ | उ | |
|---|-----|----|------|---|---|---|---|-----|-----|---|---|----|---|---|---|----|---|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | २ | ४ | ३ | १ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | ३ | १ | २ | ३ |
| प | १ | ६ | १० | ४ | १ | २ | ४ | ३ | १ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | ३ | १ | २ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

आहारिणो अणारुचुता इति अणारुचुता वा ।

भवनतामिय-गणवन्तर-जोडिसियाणं भण्णमाणे अस्थि चत्तारि गुणद्वुणाणि, दो जीवमामा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, ग्रमंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेम्मा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ जहण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खहयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो अणारुचुता इति अणारुचुता वा ।

साकारोपयोगी अंतर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

भवनतामसी, गणवन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सर्वोपर्याप्त और सशरी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया; दशों पाण, सत्त पाण, चारों समाणं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मतोयोग, चारों नचनयोग, वैक्रियिक्रमिथक्राययोग, वैक्रियिक्रमिथक्राययोग और क्राम्णक्राययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों अज्ञान, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याणं, भावसे अपर्याप्त-कारणकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेख्या. तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संधिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १५०

अव्ययतसम्पद्यद्वि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|
| १ | नी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |

नं. १५३

भवनत्रिक देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |

तेसिं चैव पञ्चत्तानं भण्णमाणे अस्थि चत्तारि गुणद्वुणाणि, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गण जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण जहणिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुचुता इति अणारुचुता वा ।

तेसिं चैव अपञ्चत्तानं भण्णमाणे अस्थि दो गुणद्वुणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

उर्द्धा भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक सर्वोपर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सक्षाण, देवगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिक्रमिथक्राययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों अज्ञान, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे जघन्य तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संधिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धा भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—सिध्याद्वि, और सासादनसम्पद्यद्वि ये दो गुणस्थान, एक संशरी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सक्षाण, देवगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियिक्रमिथक्राययोग और क्राम्णक्राययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, इमति और कृत्युत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और श्रुत लेख्याण, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्या. भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, भिन्नत्व और सासा-

नं. १५३

भवनत्रिक देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |

जोग, दो वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्क-
नेप्पमा, भावेण क्खिण्ण-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छंत्तं, मण्णिणो,
आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा ।

मण्णममिय चाणवत्तर-जोइसियदेव-सासणसम्मइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुण-
द्वानं, दो जीवममासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्वारि
मण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्वारि कसाय,
तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण क्खिण्ण-णील-काउलेस्सा
जइण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,
सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा ।

काययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो
अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुल्ल लेख्याएं,
भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिक,
आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सामान्यतन्त्रस्यगृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिक देवोंके सामान्य आलाप
कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, सही पर्याप्त और संकी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास,
छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, चारों सन्नाएं, देवगति, पंचे-
न्द्रियजाति, प्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्तियिकमिश्र-
काययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय,
तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे
अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं; तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा
अन्य तेजोलेख्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक;
साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ११९. भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | ग्रा. | स. | ग. | द. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|----|-----|-----|-------|-----|----|----|------|-----|------|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | २ | ४ | ३ | २ | २-६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ९ | ३ | ० | २ | ३ | ५ | अस. | चक्षु | मा | ४ | १ | १ | आहा | साका |
| ३ | ३ | ४ | ८ | २ | ९ | ३ | ४ | ५ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ४ | ४ | ३ | ७ | १ | ८ | ४ | ५ | ६ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ५ | ५ | २ | ६ | ० | ७ | ५ | ६ | ७ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ६ | ६ | १ | ५ | ९ | ६ | ६ | ७ | ८ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ७ | ७ | ० | ४ | ८ | ७ | ७ | ८ | ९ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ८ | ८ | ९ | ३ | ७ | ८ | ८ | ९ | १० | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ९ | ९ | ८ | २ | ६ | ९ | ९ | १० | ११ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ
पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, षव जोग,
दो वेद, चत्वारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ,
भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागार-
वजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ
अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्वारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग,
दो वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा,
भावेण क्खिण्ण-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणा-

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—
एक सासादन गुणस्थान, एक सही पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों
सन्नाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्ति-
यिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम,
चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेख्या, भव्य-
सिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-
पयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—
एक सासादन गुणस्थान, एक संकी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण,
चारों सन्नाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, वैक्तियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग
ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान,
असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुल्लेख्याएं, भावसे कृष्ण,
नील और कापोत लेख्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक,

नं. १६०. भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | ग्रा. | स. | ग. | द. | क. | सा. | सय. | द. | ल. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|----|-----|-----|-------|-----|----|----|------|-----|------|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | २ | ४ | ३ | २ | २-६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ९ | ३ | ० | २ | ३ | ५ | अस. | चक्षु | मा | ४ | १ | १ | आहा | साका |
| ३ | ३ | ४ | ८ | २ | ९ | ३ | ४ | ५ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ४ | ४ | ३ | ७ | १ | ८ | ४ | ५ | ६ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ५ | ५ | २ | ६ | ० | ७ | ५ | ६ | ७ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ६ | ६ | १ | ५ | ९ | ६ | ६ | ७ | ८ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ७ | ७ | ० | ४ | ८ | ७ | ७ | ८ | ९ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ८ | ८ | ९ | ३ | ७ | ८ | ८ | ९ | १० | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |
| ९ | ९ | ८ | २ | ६ | ९ | ९ | १० | ११ | अस. | अस. | अस. | ३ | ३ | म. | अना | अना. |

हृत्पिणो, सागारुञ्जुता ह्येति अणारुञ्जुता वा” ।

भरणवासिय-चाणवतर-जोहसियदेव-सम्मामिच्छाहृष्टिणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणिया तीहि अण्णाणेहि भिम्मणि, असजमो, दो दसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहणिया तेउ-लेस्सा; भग्गिद्विया, मम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुञ्जुता ह्येति अणारुञ्जुता वा” ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि भयनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और शैक्तिरुक्काययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अन्नानोंसे मिश्रित भादिके तीन ज्ञान, असयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं; भावसे जपय्य तेजोलेद्या; भयग्निसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं १६१ भवनत्रिक सासातनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | ह. | शा. | गो. | वे. | क. | क्रा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | स. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-------|-----|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. १६२

भवनत्रिक सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | ह. | शा. | गो. | वे. | क. | क्रा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | स. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-------|-----|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

भरणवासिय-चाणवतर-जोहसियदेव-असंजदसममाहृष्टिणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहणिया तेउलेस्सा; भग्गिद्विया, खइय-सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुञ्जुता ह्येति अणारुञ्जुता वा” ।

एसो इत्थि-पुरिसवेदानमोघालावो समत्तो । एवं चेत्र पुरिसवेदस्स वत्तव्वं । णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ पुरिसवेदो एकको चेत्र ठवेदव्वो । एवं चेत्र इत्थिवेदिणरंभणं काळण वत्तव्वं । णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ इत्थिवेदो चेत्र ठवेदव्वो ।

अस्यत्तसम्यग्दृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहने पर— एक अविरत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और शैक्तिरुक्काययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जपय्य तेजोलेद्या, भव्य-सिद्धिक, शायिकसम्यग्दृष्टिके विना दो सम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसप्रकार भवनत्रिक स्त्रीवेदी और पुरुषवेदीयोंके सम्युक्त सामान्य आलाप समाप्त हुए । इसीप्रकार भवनत्रिक देवोंमें पुरुषवेदके आलाप कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि ऊपर जहां भवनत्रिक देवोंके सामान्य आलापमें दो वेद स्थापित किये गये हैं, वहां एक पुरुषवेद ही स्थापित करना चाहिये । इसीप्रकार भवनत्रिक देवोंमें स्त्रीवेदका आश्रय करके आलाप कहना चाहिये । विशेष बात यह है कि पहले जहां सामान्य आलापमें दो वेद स्थापित किये गये हैं, वहां एक स्त्रीवेद ही स्थापित करना चाहिये ।

विशेषार्थ—ऊपर जो भवनत्रिक देवोंके आलाप कह आये हैं, वे सामान्यालाप हैं । उनमें पुरुषवेद और स्त्रीवेदका भेद नहीं किया गया है । परन्तु उन्हीं आलापोंमें दो वेदके

नं. १६३

भवनत्रिक असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके आलाप

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | ह. | शा. | गो. | वे. | क. | क्रा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | स. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-------|-----|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

तेसि चैव पञ्चत्तानं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मच्चिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हंति अणगारवजुत्ता वा^१ ।

तेसि चैव अपञ्चत्तानं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण मच्चिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो, आहारिणो

उद्धों मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संघाप, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों कर्मणकाययोग और वैक्यिक-काययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उद्धों मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संघाप, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्यिकामिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कयाय, कुमति और कुटुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और गुरु लेख्याप, भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं. १६८ मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|---|----|---|----|----|-----|-------|-------|------|-------|----|-----|--------|-------|------|
| गु | जी | प | मा | स | ग. | इ | का | यो | के. | क | सा. | द | ले | म. | स. | सन्नि. | आ. | उ. |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | २ | ४ | ३ | २ | ३ | २ | १ | १ | १ | २ |
| मि. | ग.प | प. | | | दे | अ | स | म. | मी | अज्ञा | अज्ञा | अज्ञ | चक्षु | मा | मि. | सं | भाहा. | साका |
| | | | | | | | | व | पु. | | | अच | नेज. | ज | | | अना. | |

जुत्ता हंति अणगारवजुत्ता वा^१ ।
 मोधस्मीसाणदेव-मिच्छाद्वीणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण मच्चिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारवजुत्ता हंति अणगारवजुत्ता वा^१ ।

सव्यस्व आलापके आते सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और सन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संघाप, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों कर्मणकाययोग, वैक्यिकामिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, गुरु और मध्यम तेजोलेख्या, भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १६९ सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|---|----|---|----|----|-----|-------|-------|------|-------|----|-----|--------|-------|------|
| गु | जी | प | मा | स | ग. | इ | का | यो | के. | क | सा. | द | ले | म. | स. | सन्नि. | आ. | उ. |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | २ | ४ | ३ | २ | ३ | २ | १ | १ | १ | २ |
| मि. | ग.प | प. | | | दे | अ | स | म. | मी | अज्ञा | अज्ञा | अज्ञ | चक्षु | मा | मि. | सं | भाहा. | साका |
| | | | | | | | | व | पु. | | | अच | नेज. | ज | | | अना. | |

^१ मीठण 'रथेण काउ पुरस्सेवा' इति पाठ ।

नं. १७० मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|---|----|---|----|----|-----|-------|-------|------|-------|----|-----|--------|-------|------|
| गु | जी | प | मा | स | ग. | इ | का | यो | के. | क | सा. | द | ले | म. | स. | सन्नि. | आ. | उ. |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | २ | ४ | ३ | २ | ३ | २ | १ | १ | १ | २ |
| मि. | ग.प | प. | | | दे | अ | स | म. | मी | अज्ञा | अज्ञा | अज्ञ | चक्षु | मा | मि. | सं | भाहा. | साका |
| | | | | | | | | व | पु. | | | अच | नेज. | ज | | | अना. | |

अणाहारिणो, सागारवजुचा ह्येति अणागारवजुचा वा" ।

सावर्मीमाण-मायणसम्पद्धीणं भणमाणे अत्यि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पञ्जतीओ छ अपञ्जतीओ, दस पाण, चचारि सणा, देवगदी, देवगदी, पंचिदियजादी, नमकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चचारि कसाय, तिणिण अण्णाण, पंचिदियजादी, दो दंसण, दव्जेण काउ-मुफरु-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; अंसजमो, दो दंसण, दव्जेण काउ-मुफरु-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भमभिद्धिया, सासणसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुचा ह्येति अणागारवजुचा वा" ।

पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सासादनसम्पद्धि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञो-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, चैक्रियिकभ्रश्रकाययोग और कर्मण-काययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, गुरु और मध्यम तेजोलेख्या, भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यनिरिक, सासादनसम्पत्त्व, मसिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १६२ मिल्याप्रष्टि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|-----|-----|----|
| गु. जी. | प. | म. | म. | ग. | ग. | स. | स. | स. | ले. | द. | स. | स. | स. | सि. | भा. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. १७० सासादनसम्पद्धि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|-----|-----|----|
| गु. जी. | प. | म. | म. | ग. | ग. | स. | स. | स. | ले. | द. | स. | स. | स. | सि. | भा. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

तेमिं चैव पञ्जत्तानं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जतीओ, दस पाण, चचारि सणा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गर जोग, दो वेद, चचारि कसाय, तिणिण अण्णाण, अंसजमो, दो दंसण, दव्जेण काउ-मुफरु-मज्झिमा तेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, सासणसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुचा ह्येति अणागारवजुचा वा" ।

तेमिं चैव अपञ्जत्तानं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जतीओ, सत्त पाण, चत्तारि सणाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, अंसजम, दो दंसण, दव्जेण काउ-मुफरु-मज्झिमा तेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, सासणसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुचा ह्येति अणागारवजुचा वा" ।

उन्हीं सासादनसम्पद्धि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और चैक्रियिकभ्रश्रकाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यनिरिक, सासादनसम्पत्त्व, मसिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्पद्धि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चैक्रियिकभ्रश्रकाययोग और कर्मण-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो

नं. १७१ सासादनसम्पद्धि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|-----|-----|----|
| गु. जी. | प. | म. | म. | ग. | ग. | स. | स. | स. | ले. | द. | स. | स. | स. | सि. | भा. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. १७२ सासादनसम्पद्धि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|-----|-----|----|
| गु. जी. | प. | म. | म. | ग. | ग. | स. | स. | स. | ले. | द. | स. | स. | स. | सि. | भा. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

भावेण मन्त्रिमा तेजलेसा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अणागारुजुत्ता वा ।

सोधमीसाण-सम्मामिच्छाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीव-ममाओ, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णर जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंमण, दब्ब-भवेहि मन्त्रिमा तेजलेसा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हति अणागारुजुत्ता वा ।

सोधमीसाण-असंजदसमाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, अज्जान, असयम, चन्नु और अचन्नु ये दो दर्शन, द्रव्यसे जापोत और गुरु लेख्याणं, भावसे मध्यम तेजलेस्या; भव्यसिद्धिक, सात्तारुतसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अणाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्निध्यायद्वि सौधर्म पेशान देवोंके आलाप करने पर—एक सम्यग्निध्यायद्वि गुण स्थान, एक सत्री पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संसाप, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, प्रत्यकाय, चारों मनोयोग, चारों यवनयोग और चैक्रियिकनाययोग ये नौ योग। न्युत्सक्येवके विना दो वेद, चारों कसाय, तीनों अक्षरालोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, अययम, चन्नु और अचन्नु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजलेस्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्निध्याय, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

असंयतसम्यग्द्वि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अचिरत-सम्यग्द्वि गुणस्थान, सत्री पर्याप्त और सत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्णाप्तियां, दशों प्राण, सात पाण; चारों संसाप, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों यवनयोग, चैक्रियिकनाययोग, चैक्रियिकमिन्ननाययोग और कार्मण-कापयोग ये ग्यारह योग; न्युत्सक्येवके विना दो वेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान,

नं. १७३

सम्यग्निध्यायद्वि सौधर्म पेशान देवोंके आलाप.

| प | प्रा | स | ग | इ | का | गो | वे | क | सा. | सम्य. | द | ले | म | स | महि | आ | उ |
|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-----|-------|---|----|---|---|-----|---|---|
| १ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| २ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| ३ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| ४ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |

तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्क-मन्त्रिमतेजलेसा, भावेण मन्त्रिमा तेजलेसा; भव-सिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अणागारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्ब-भवेहि मन्त्रिमा तेजलेसा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हति अणागारुजुत्ता वा ।

असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे जापोत, गुरु और मध्यम तेजलेस्या, भावसे मध्यम तेजलेस्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अणाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उद्धी असंयतसम्यग्द्वि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अचिरतसम्यग्द्वि गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संसाप, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों यवनयोग और चैक्रियिकनाययोग ये नौ योग, न्युत्सक्येवके विना दो वेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजलेस्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १७४ असंयतसम्यग्द्वि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप.

| प | प्रा | स | ग | इ | का | गो | वे | क | सा. | सम्य. | द | ले | म | स | महि | आ | उ |
|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-----|-------|---|----|---|---|-----|---|---|
| १ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| २ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| ३ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| ४ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |

नं. १७५

असंयतसम्यग्द्वि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

| प | प्रा | स | ग | इ | का | गो | वे | क | सा. | सम्य. | द | ले | म | स | महि | आ | उ |
|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-----|-------|---|----|---|---|-----|---|---|
| १ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| २ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| ३ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| ४ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |

तेमिं चैव अपञ्चचार्यं भण्णमाणे अत्थि एयं गुगट्टाण, एओ जीममासो, छ अपञ्चचीयो, सच पाण, चचारि मण्णा, देवगदी, पच्चिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, प्रुरिमोद, चचारि कयाय, तिण्णि गाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ सुक्क-केम्मा, भायेण मच्चिमा तेउलेस्सा; भमसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं । देवासंजदसम्मोइहोणं कयमयज्जकाले उयममयम्मत्तं लब्भति ? वुचंदि—वेदगसम्ममचमुत्तामिय उवसमसेडि-माल्हिय पुणो ओदरिय पमत्तापमत्तसंजद-असंजद-संजदासंजद-उवसमसम्मोइहोणं तिण्णि मच्चिमा-तेउलेस्सं परिणमिय कालं काज्जण सोधम्ममीमाण-देवेसुपण्णणं अपञ्चचकाले उयममयम्मत्तं लब्भति । अथ ते चैव उक्कसस-तेउलेस्सं वा जहण्ण-पम्मलेस्सं वा परिणमिय जदि कालं करंति तो उयममयम्मत्तं चैव सणककुमार-साहिंदि उण्जंति । अथ ते चैव उयममयम्मत्तं लब्भणो मच्चिमा-पम्मलेस्सं परिणमिय कालं करंति तो वल्ल वल्लोत्तर-लंताव-कामिट्ट मुक्क-महासुक्केसु उण्जंति । अथ उरक्कस-पम्मलेस्सं वा जहण्ण-सुक्कलेस्सं वा परिणमिय जदि ते कालं करंति तो उवसमसम्मत्तं चैव सदा-सहस्सरदेवेसु उण्जंति ।

उन्ही अयततस्यग्दृष्टि सोधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्तकालसन्धी आलाप कहते पर—एक अत्रितस्यग्दृष्टि गुणजान, एक सति-अपर्याप्त जितसमाप्त, छदों अपर्याप्तियों, सत शान, चारों संघर्ष, देवगदी, पच्चिदियजादी, तसकाओ, चैक्रियकिमिशनाययोग ओर शर्मणस्ययोग ये दो योग, पुनरवेद, चारों रूपय, आदि के तनि जान, असंयम, आदि के तीन र्जान, द्रव्यसे रूपोत्तर और शुक्ल लेख्याप, भावसे मध्यम तेजोलेख्या; भव्यसिद्धि, आपजगिक, धार्मिक ओर शयोपशमिक ये तीन सस्यस्व देते हैं ।

अंका — अस्यतस्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें अपर्याप्तकसस्यस्व कैसे पाया जाता है ?

ममागान—वेदकसस्यस्वतो उपशमा करके और उपशमश्रेणी पर चउत्तर फिर पदोरे उत्तर कर प्रमत्तयन, अममसस्यत, अस्यत और संयतासंयत उपशमस्यग्दृष्टि गुण-यागोंसे मध्यम तेजोलेख्याको परिणत होकर और मरण करके सौधर्म पेशान करप-यानी देवोंमें उत्पत्त होनेवाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें अपर्याप्तकसस्यस्व पाया जाता है । तथा, उपयुक्त गुणस्थानताली की जोन उत्कृष्ट तेजोलेख्याको अथवा जघन्य पमोलेख्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो अपर्याप्तकसस्यस्वके साथ सतकुमार और महेन्द्र रूपमें उत्पत्त होते हैं । तथा, ये ही उपशमस्यग्दृष्टि जीव मध्यम पमोलेख्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो जसक-ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिट्ट, शुक्र और महाशुक्र रूपोंमें उत्पत्त होते हैं । तथा, ये ही उपशमस्यग्दृष्टि जति उत्कृष्ट पमोलेख्याको अथवा जघन्य शुक्लेख्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो अपर्याप्तकसस्यस्वके साथ शतार,

अथ उवसमसेडि चडिय पुणोदिण्णा चैव मच्चिमा-सुक्कलेस्साए परिणदा संता जदि कालं करंति तो उवसमसम्मत्तं चैव आणद-पाणद-आरण-वुद-णवगेवज्जिसाणवासिय-देवेसुपजंति । पुणो ते चैव उक्कसस-सुक्कलेस्सं परिणमिय जदि कालं करंति तो उवसम-सम्मत्तं चैव णवाशुदिस-पाणुत्तरविसाणदेवेसुपजंति । तेण सोधम्मोइ-उत्तरिस सब-देवासंजदसम्मोइहोणमपञ्चकाले उवसमसम्मत्तं लब्भति चि । सण्णिगणो, आहारिणो अपणहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणगारुजुत्ता वा ^{१०} ।

एवमित्थिपुरिसवेदानमोवालावो समत्तो ।

एवं चैव पुरिसवेद-देवाणमालातो वत्तवो । णवरी जत्थ दो वेदा बुत्ता तत्थ पुरिसवेदो एकतो चैव वत्तवो । एवं सोधम्ममीसाणदेवीणं पि वत्तवो । णवरी जत्थ

सहस्यार कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं । तथा, उपशमश्रेणी पर चउ करके और पुनः उत्तर करके मध्यम शुक्लेख्यासे परिणत होते हुए यदि मरण करते हैं तो उपशमस्यग्दृष्टि के साथ अन्त, प्राणत, आरण, अच्युत और नो प्रैवियकविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं । तथा, पूर्वोक्त उपशमस्यग्दृष्टि जीव ही उत्कृष्ट शुक्लेख्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो उपशमस्यग्दृष्टि के साथ नो अच्युत और पांन अच्युत्तर-विमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं । इसकारण सोधर्म स्वर्गके लेकर ऊपरके सभी असंयतस्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें अपर्याप्तकसस्यस्व पाया जाता है ।

सस्यत्तव आलापके ओगे—सही, आहारक, अतादाक, सानारोपणेनी और अमा-कागेपयोगी होते हैं ।

इराप्रकार रविदेव और पुरुषवेदका भेद न करके सौधर्म और पेशान स्वर्गके देवोंके सामान्य आलाप समान्त हुए ।

सौधर्म पेशान करके देवोंके सामान्य आलापोंके समान ही पुरुषवेदी देवोंके आलाप कहना चाहिये । विशेषता यह है कि सामान्य आलाप कहते समय जहा पर पहले रविदेव और पुरुषवेद ये दो वेद कहे गये हैं, वहां पर केवल एक पुरुषवेद ही करना चाहिये । इसीप्रकार सौधर्म पेशान स्वर्गकी देवियोंके आलाप कहना चाहिये । विशेषता यह है कि

नं. १७६ असंयतस्यग्दृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|----|----|
| गु. | जी. | प. | मा. | स. | ग. | र. | ता. | यो. | वे. | क. | शा. | मय. | द. | ले. | म. | स. | गमि. | आ. | व. |
| १ | १ | ६ | ७ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ५ | २ | ३ | ६ | २ | २ |
| अवि. | न | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

पुरिमवेदो वृत्तो त्वय इत्थिवेदो चेव वृत्त्वो । असंजदसम्माद्विस्स इत्थिवेदमिह उप्पत्ती
णत्थि ति तस्स पञ्जत्तालो एक्को चेव वृत्त्वो । पञ्जत्तालवे उच्चमाणे वि खइयसम्पत्तं
णत्थि ति वृत्त्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस लवणाभावादो । एत्थिओ चेव विसेतो ।

सणकुमार-मार्हिदेवानं भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्टाणाणि, दो जीवसमासा,
छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, देवगदी,
पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिमवेद, चत्तारि कसाय, छ णण, असंजम,
तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ सुक्क-उक्कस्सतेउ-जहणपम्मलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-
जहणपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो
अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हँति अणागारुजुत्ता वा” ।

पुरुरवेदी देवोंके आलापोंमें जहां पुरुरवेद कहा गया है वहां केवल स्त्रीवेद ही कहना चाहिए।
यहां इतना और समझना चाहिए कि असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंकी स्त्रीवेदमें उत्पत्ति नहीं
होती है, इसलिये स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टिका एक पर्याप्त-आलाप ही कहना चाहिए। और
पर्याप्त-आलाप कहते समय भी क्षयिक सम्यक्त्व नहीं होता है, अर्थात् स्त्रीवेदी पर्याप्तोंके
(देवियोंके) दो ही सम्यक्त्व होते हैं, येना कहना चाहिए; क्योंकि, देवोंमें वर्तमानोहनीय कर्मके
संज्ञका अभाव है। सौधर्म और तेरातके पुरुरवेदी और स्त्रीवेदी आलापोंमें उनके सामान्य
आलापोंसे इतनी ही विशेषता है।

सनत्कुमार और मोहेन्द्र स्वर्गोंके देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार
गुणस्थान, मंत्री पर्याप्त और मंत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्या
प्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों
मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिकमित्रकाययोग, वैक्रियिकमित्रकाययोग और कामणकाययोग
ये ग्यारह योग; पुरुरवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,
असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्र लेश्यापं तथा पर्याप्त
कालमें उरुष्ट पीत और जघन्य पमलेश्या, भावसे उरुष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पमलेश्या;
भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी
और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ मंत्रि 'उक्कस्सतेउ' इति पाठो नास्ति

नं. १७७ सानत्कुमार मोहेन्द्र देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|-----|---|---|---|----|----|----|-------|----|------|------|----|---|---|-------|-----|-----|
| गु. | जी | प | प्र | म | ग | ङ | का | यो | वे | क | जा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | २ | २ | २ | ९ | २ | ६ | ५ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | ६ | १ | २ |
| मि | सा | प | प | | | | ५ | ५ | पु | ३ | ३ | अस | के | ३ | ३ | ३ | ३ | आश | २ |
| मा | | | | | | | ५ | ५ | ३ | अज्ञा | ३ | विना | विना | ३ | ३ | ३ | ३ | अना | अना |
| म | | | | | | | ५ | ५ | ३ | अज्ञा | ३ | विना | विना | ३ | ३ | ३ | ३ | अना | अना |
| म | | | | | | | ५ | ५ | ३ | अज्ञा | ३ | विना | विना | ३ | ३ | ३ | ३ | अना | अना |

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्टाणाणि, एओ जीवसमासो,
छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव
जोग, पुरिमवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावेहि उक्कस्स-
तेउ-जहणपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,
सागारुजुत्ता हँति अणागारुजुत्ता वा” ।

तेसिं चैव अपञ्जत्ताणं भणमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्टाणाणि, एओ जीवसमासो,
छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो
जोग, पुरिस वेद, चत्तारि कसाय, पंच णण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ-
सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सतेउ-जहणपम्मलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच

उन्ही सानत्कुमार मोहेन्द्र देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार
गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति,
पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ
योग, पुरुरवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम,
आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उरुष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पमलेश्या, भव्यसिद्धिक,
अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही सानत्कुमार मोहेन्द्र देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मित्र्या-
दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त
जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां; सात प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय,
वैक्रियिकमित्रकाययोग और कामणकाययोग ये दो योग, पुरुरवेद, चारों कपाय, कुमति
और कुथुत ये दो अज्ञान तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन
दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेश्यापं, भावसे उरुष्ट तेज और जघन्य पम लेश्यापं, भव्य-
सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मित्र्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, अना-

नं. १७८ सानत्कुमार मोहेन्द्र देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|-----|---|---|---|----|----|----|-------|----|------|------|----|---|---|-------|-----|-----|
| गु. | जी | प | प्र | म | ग | ङ | का | यो | वे | क | जा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | २ | २ | २ | ९ | २ | ६ | ५ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | ६ | १ | २ |
| मि | सा | प | प | | | | ५ | ५ | पु | ३ | ३ | अस | के | ३ | ३ | ३ | ३ | आश | २ |
| मा | | | | | | | ५ | ५ | ३ | अज्ञा | ३ | विना | विना | ३ | ३ | ३ | ३ | अना | अना |
| म | | | | | | | ५ | ५ | ३ | अज्ञा | ३ | विना | विना | ३ | ३ | ३ | ३ | अना | अना |
| म | | | | | | | ५ | ५ | ३ | अज्ञा | ३ | विना | विना | ३ | ३ | ३ | ३ | अना | अना |

गम्भसं, नणिगां, अहारिणो अणाहारिणो, गगारुप्रमुत्ता ह्येति अणागारुमुत्ता च।

भंगि मिञ्जिह्विपट्टि जात्र अमंजडममाह्वि चि ताव चटुहं गुणङ्गाणां भोग्यम-भंगो। गत्रि उत्रि मन्त्रथ इत्थिदो गत्थि, पुरिसवेदो चैव वत्तवो। ओषा- लो भगमाणे दवेणे काउ-सुक-उरु-रुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ वत्तवाओ। भवेण उरुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ वत्तवाओ। पज्जत्तकाले दव-भवेहि उरुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ। तेमिं चैव अपज्जत्तकाले दवेणे काउ-सुक-लेस्साओ, भवेण उरुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ चि चैव विसेमो।

वह-वन्त्र-चर-लांतव कापिट्ट सुक्क-महासुक्क-पदेवाणं सणक्कुमार-भंगो। गवरि गामणेण भगमाणे दवेणे काउ-सुक-रुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ, भवेहि मज्झिमा पम्म-लेस्सा। पज्जत्तकाले दव-भवेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा। अपज्जत्तकाले दवेणे

तार क। साहासरोपयोगी अंर अनाकारोपयोगी दोते है।

सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्पददृष्टि गुणस्थान तक चारों गुणस्थानोंके आलाप सोधमें देवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता केवल इतनी है कि ऊपर सभी रूपोंमें स्वीद नहीं है, अतः एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए उनमें भी ओगलाप रहते समय द्रव्यसे कापोत, शुरु, उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेख्याणं कहना चाहिए। भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेख्याणं कहना चाहिए। पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेख्याणं होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुरु लेख्याणं और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेख्याण होती है, इतनी विशेषता है।

त्रय त्रलोत्तर, लान्तव-कापिट्ट और शुरु-महाशुरु कल्पवासी देवोंके आलाप सानत्कु-मार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप करने पर—द्रव्यसे कापोत शुरु और मध्यम पद्म लेख्या होती है, तथा भावसे केवल मध्यम पद्मलेख्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम पद्मलेख्या होती है।

ने १७२.

सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

काउ-सुक-लेस्साओ, भवेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। एचियमेत्तो चैव विसेमो। सदार-सहस्सारकप्पदेवाणं वग्गुल्लो-भंगो। गवरि सामणेण भणमाणे दवेणे काउ-सुक-उरु-रुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ, भवेण उरु-रुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ। पज्जत्त-काले दव-भवेहि उरु-रुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ। अपज्जत्तकाले दवेणे काउ-सुक-लेस्सा, भवेण उरु-रुसमेउ-जहणपम्मलेस्साओ। आणद-पाणद-आरणच्छुद-सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर सुबुद्ध-सुविसाल-सुमण-उमणस-पीदिकरमिदि एदेसिं चतु-णव-कप्पाणं सदार-सहस्सार-भंगो। गत्रि सामणेण भणमाणे दवेणे काउ-सुक-रु-मज्झिमसुक-लेस्साओ, भवेण मज्झिमा सुक्क-लेस्सा। पज्जत्तकाले दव-भवेहि मज्झिमा सुक्क-लेस्सा। अपज्जत्तकाले दवेणे काउ-सुक-लेस्साओ, भवेण मज्झिमा सुक्क-लेस्सा।

‘अच्चि-अच्चिमालिणी-नइ-वइरोयण-सोम-सोमरूत्र-अंक-फलिह-आइच्च-विजय-उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुरु लेख्या तथा भावसे मध्यम पद्मलेख्या होती है। इतनीमात्र ही विशेषता है।

शतार और सहचार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुरु, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुरु लेख्या होती है, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुरु लेख्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुरु लेख्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुरु लेख्या होती है, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुरु लेख्या होती है।

आनत-प्राणत, आरण-अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुबुद्ध, सुविराल, सुमनस्, सौमनस और प्रीतिकर इन चार और नौ इस प्रकार तैरह कर्तव्योंके आलाप शतार-सह-चार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप करने पर—द्रव्यसे कापोत, शुरु और मध्यम शुरु लेख्या होती है, तथा भावसे मध्यम शुरुलेख्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुरुलेख्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुरु लेख्या तथा भावसे मध्यम शुरुलेख्या होती है।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन

१ ‘गम्द्र’ इति पाठ। त. रा. वा. पृ. १६७.

२ अर्ची य अर्चिमालिनि वदरे वइरोयणा अणुदिसणा। सोमो य सोमरूत्रे अके कलिके य आरेच ॥ नि सा. ४५६ तनावुदिसमिमानानि येवके एवाऽऽदियो नाम विमानप्रसार। तत्र दिशु त्रिदशु चत्वारि चत्वारि श्रेणिविमानानि। प्राच्या दिशि अर्चिमान, अपाच्यामर्चिमाली, प्रतीच्या वैरोचन, उर्चीच्या प्रयास, म ये आदि-त्यास्य। विदिसु पुण्यप्रकर्णकानि चत्वारि। पूर्वदिशि स्यामर्चिम। दक्षिणापारस्या अर्चिमन्त्र। अपरोत्तराणां अर्चिपार्वती। उत्तरपूर्वस्यामर्चिमिच्छिष्ट। त. रा. वा. पृ. १६७. इत्येतामप्येषु अत्रिदशविमानानामुद्देशो नास्ति।

चञ्जयंत-अपत अराइद-मव्यट्टसिद्धि ति एदेसि णत्र-पंच-अणुदिसाणुत्तराण भण्णमाणे अनिय एयं गुणट्टाणं दो जीमममासा, छ पञ्चतीथो छ अपञ्चतीओ, दस पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चचारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कसससुक्कलेस्साओ, भाणेण उक्कसिसया सुक्कलेस्सा, भत्तमिद्विया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो-अणाहारिणो, सागारुअुत्ता हेंति अणागारुअुत्ता वा” ।

तेसि चेत्त पञ्चत्तराणं भण्णमाणे अस्थि एयं गुणट्टाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चतीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णत्र जोग, पुरिसवेद, चचारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्क-

नां अनुदिसा निमागंके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वोर्वसिद्धि इन पांच भन्तुत्तर निमागोंके आन्त्राप कहने पर—एक अतिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सती-पर्याप्त और नी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छत्तां पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशो प्राण, सात प्राण; चारों सजाण, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैज्ञानिककारयोग, वैज्ञानिकमिश्रकारयोग और कामणकारयोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कसाय, जादिके तीन ज्ञान, अन्त्यम, जादिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेदयारं तथा पर्याप्तकालमें उरुष्ट शुक्लेदया, भावसे उरुष्ट शुक्लेदया, भव्यगतिभक्त, औपशामिक, क्षाधिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, सक्षिक, आन्तरिक, अनान्तरिक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अर्धो नो अनुदिसा और पांच अनुत्तर विमानवानी देवोंके पर्याप्तकालसंस्थी आलाप कहने पर—एक अतिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सती-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, और तीनोपिक्तकारयोग ये नो योग पुरुषवेद, चारों कसाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, जादिके तीन दर्शन, उरुष्ट और भावसे उरुष्ट शुक्लेदया, भव्यसिद्धिक, औपशामिक-

१. १८० नर अनुदिसा और पांच अनुत्तर विमानवानी देवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

स्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं । केण कारणेण उवसमसम्मत्तं गत्थि ? बुच्चदे—तत्थ डिदा देवा ण ताव उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, तत्थ मिच्छाहट्ठीणमभावादो । भवहु णाम मिच्छाहट्ठीणमभावो, उवसमसम्मत्तं पि तत्थ डिदा देवा पडिवज्जंति; को तत्थ विरोधो ? इदि ण, ‘अणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं’ इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो । ण तत्थ डिद-वेदगसम्महाड्ढिणो उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, मणुसगदि-वदिरित्तणगदीसु वेदगसम्महाड्ढिजीवाणं दंसणमोहुवसमणहेडुपरि-णामाभावादो । ण य वेदगसम्महाड्ढित्तं पडि मणुस्सेहेत्तो विसेसाभावादो मणुस्पाणं च

सम्यक्त्वके विना दो सम्पत्त्व होते हैं ।

शंका—नौ अनुदिसा और पांच अनुत्तर विमानोंके पर्याप्तकालमें औपशामिक सम्यक्त्व किस कारणसे नहीं होता है ?

समाधान—नौ अनुदिसा और पांच अनुत्तर विमानोंमें विद्यमान देव तो औपशामिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते नहीं हैं, क्योंकि वहां पर मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव है ।

शंका—भले ही वहां मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव रहा अवे, किन्तु यदि वहां रहने-वाले देव औपशामिक सम्यक्त्वको प्राप्त करें, तो इसमें क्या विरोध है ?

समाधान—ऐसा कहना भी शुक्ति-युक्त नहीं है, क्योंकि, औपशामिक सम्यक्त्वके अनन्तर ही औपशामिकसम्यक्त्वका पुनः ग्रहण करना स्वीकार करने पर ‘अनादि मिथ्यादृष्टि जीवोंके प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी प्राप्तिके अनन्तर-पश्चात् अवस्थामें ही मिथ्यात्वका उदय नियमसे होता है । किन्तु जिसके द्वितीय, तृतीयादि चार उपशमसम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई है, उसके औपशामिक सम्यक्त्वके अनन्तर-पश्चात् अवस्थामें मिथ्यात्वका उदय भाज्य है, अर्थात् कदाचित् मिथ्यादृष्टि होकरके वेदकसम्यक्त्व या उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है, कदाचित् सम्यग्मिथ्यादृष्टि होकरके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होता है इत्यादि’ । इस कथायथाश्रुतके माथासूत्रके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध आता है । यदि कदा जाय कि अनुदिसा और अनुत्तर विमानोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि देव औपशामिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, सो भी यात नहीं है, क्योंकि, मनुष्यगतिके सिवाय अन्य तीन गतियोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके दर्शनमोहनीयके उपशमन करनेके कारणभूत परिणामोंका अभाव है । यदि कदा जाय कि वेदकसम्यग्दृष्टिके प्रति मनुष्योंसे अनुदिसादि विमानवासी देवोंके कोई विशेषता नहीं है, अतएव जो दर्शनमोहनीयके उपशमन योग्य परिणाम मनुष्योंके पाये जाते हैं वे

१ सम्यक्त्वपदमलमसमागत पच्छदो य मिच्छत्तं । लभस्स अपदमस दु मजियन्तो पच्छदो होदि ॥ (मयाण-पाहुड) मन्मत्तस्य जो पदमलमो अणादियमिच्छादृष्टिणमो तस्याणतर पच्छदो अणमपच्छिमाव वाप मिच्छत्तमेव होह । उ-य जान पदमद्विचरिमतमो पि ताप मिच्छत्तदीद्व मोत्तुण पयातागामादो । लभस्स अपदमस दु जो खुटु अपदमो मन्मत्तपच्छिमावो तन्म पच्छदो मिच्छद्योदयो मजियन्तो होह । जयव व पृ १६१ ।

तेसि चैव पञ्जत्तणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पञ्चत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिखलगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, गणुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुंदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भोवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणारारुवजुत्ता वा^{१३} ।

तेसि चैव अपञ्जत्तणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपञ्चत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिखलगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, गणुंदसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुंदंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भोवेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,

उद्धां सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, वादर-पर्याप्त और सूक्ष्म-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छद्मों लेख्याप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, असंशिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उद्धां सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, वादर-अपर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुभल लेख्यापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंशिक, अनाकारोपयोगी और अना-

नं. १८३ सामान्य एकेन्द्रियोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----------|----|----|--------|------|---------|------|-----|-----|-----|------|----|-----|------|------|-------|
| गु. जी. | प. प्रा. | स. | ग. | इ. वा. | यो. | वे. क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | म. | स. | मति. | आ. | उ. |
| १ | २ | ६ | ४ | ६ | १ | १ | ४ | २ | २ | १ | ६ | २ | १ | १ | १ | २ |
| मि. | ना | प. | प. | ति | म. | मिदा. | कुम. | अग. | अन. | मा | ३ | म. | मि. | असा. | आहा. | साका. |
| | प. | | | विना | विना | कुश्रु. | | | | | अनु. | अ | | | | अना. |

इंदियायुवादेण अनुवादो मूलोषो । णवरि अत्थि अदीदगुणट्ठणणाणि, अदीद-जीवसमासा, अदीदपञ्चत्तीओ, अदीदपाणा, सिद्धगदी वि अत्थि, अणिंदिया वि अत्थि, गोव अकाया वि अत्थि, गेव संजदा गेव असंजदा गेव संदजासंजदा वि अत्थि, गेव भवसिद्धिया गेव अभवसिद्धिया अत्थि । एदे आलावा ण वत्तवा, सिद्धणमंडियिदि-जाइणाम कम्मस्सुदयाभामादो ।

सामणेइंदियाणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पञ्चत्तीओ चत्तारि अपञ्चत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिखल-गदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, गणुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुंदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, पुढवि-चण्णकई अस्सिदण सरीरस्स छ लेस्साओ हत्तति । भोवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणारारुवजुत्ता हँति अणारारुवजुत्ता वा^{१४} ।

इन्द्रियसर्माणके अनुयायसे आलाप मूल ओभालापके समान जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, सिद्धगति, भविसिद्धिय, अकाय, संयम, सयमांसंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक रहित स्थान इतने आलाप नहीं कहना चाहिए, क्योंकि, सिद्धजीवोंके एकेन्द्रियादि जाति नामकर्मका उदय नहीं पाया जाता है ।

सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, वादर-पर्याप्त, वादर-अपर्याप्त, सूक्ष्म-पर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, मन-पर्याप्ति और भागपर्याप्तिके विना चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें—स्मरनेन्द्रित, वायल, गायु और इवाभो-त्रयास ये चार प्राण, अपर्याप्तकालमें इवाभो-त्रयासके विना तीन प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावर काय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग. नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छद्मों लेख्यापं होती हैं, क्योंकि, पृथिवी और वनस्पतिकारिक जीवोंके शरीरकी अपेक्षा शरीरकी छद्मों लेख्यापं पायी जाती हैं । भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्यापं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंशिक, आहारक, अनाकारक. साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

नं. १८३ सामान्य एकेन्द्रियोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----------|----|----|--------|------|---------|------|-----|-----|-----|------|----|-----|------|------|-------|
| गु. जी. | प. प्रा. | स. | ग. | इ. वा. | यो. | वे. क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | म. | स. | मति. | आ. | उ. |
| १ | २ | ६ | ४ | ६ | १ | १ | ४ | २ | २ | १ | ६ | २ | १ | १ | १ | २ |
| मि. | ना | प. | प. | ति | म. | मिदा. | कुम. | अग. | अन. | मा | ३ | म. | मि. | असा. | आहा. | साका. |
| | प. | | | विना | विना | कुश्रु. | | | | | अनु. | अ | | | | अना. |

दक्षेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छन्, अग्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुञ्जुत्ता हति अणागारु-जुत्ता ता ।

एवं गदहेइदियपज्जत्तणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तवा । अपज्जत्तणामकम्मोदयाणं चदहेइदियलद्विअपज्जत्तणं भण्णमाणे चदहेइदियअपज्जत्त-त्ता-भंगो ।

“गुहमेइदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, वे जीवसमासा, चत्तारि पज्ज-त्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, गुहमेइदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, गणुसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्येण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्सा;

काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंजम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक लेइयाए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेइयाए, भव्यसिद्धिक, असन्निक, अनाहारक, असंजिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इवीप्रकारसे पर्याप्तनामकर्मके उदयगले बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये । अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले बादर एकेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिये ।

प्रथम एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, प्रथम पर्याप्त और प्रथम-अपर्याप्त ये दो जीवसमान, चार पर्याप्तियों, चार अपर्याप्तियों, चार प्राण, तीन प्राण; चारों सेक्काएँ, तिर्यचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पाँचों स्थावरकाय, पाँचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिथकाययोग और काम्यकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंजम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत,

१ गतिपु ' काउल्लस्सेवा ' इति पाठ ।

नं. १९९.

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ. | वा | गो | ने | क | प्रा. | मय | द | ले | म. | स | महि | आ. | उ. |
|-----|----|---|------|---|---|----|----|----|----|---|-------|----|---|----|----|---|-----|----|----|
| १ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| २ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ३ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ४ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| १० | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छन्, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुञ्जुत्ता हति अणागारुञ्जुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, गुहमेइदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, गणुसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्येण काउलेस्सा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छन्, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुञ्जुत्ता हति अणागारु-ञ्जुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, गुहमेइदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, गणुसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खु-

और शुक लेइयाए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेइयाए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियों, चार प्राण, चारों सेक्काएँ, तिर्यचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पाँचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंजम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोतलेइया, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेइयाए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्या-दृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियों, तीन प्राण, चारों सेक्काएँ, तिर्यचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पाँचों स्थावरकाय, औदारिकमिथकाययोग और काम्यकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान,

१ गतिपु ' काउल्लस्सेवा ' इति पाठ । त्वंतिं सुहमाग कापोदा गो. जी. ४९७.

नं. १९०

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ. | वा | गो | ने | क | प्रा. | मय | द | ले | म. | स | महि | आ. | उ. |
|-----|----|---|------|---|---|----|----|----|----|---|-------|----|---|----|----|---|-----|----|----|
| १ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| २ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ३ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ४ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| १० | १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |

द्वंमण, दब्बेण काउ-मुक्कलेस्सा, भाणेण क्रिह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभव-मिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहाग्गिो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हेति अणागार-वजुत्ता वा' ।

एवं पञ्चतणामकम्मोदय-सहियाणं सुहुमेहंदिगणिव्वत्तिपज्जत्ताणं तिणिण आलावा वत्तवा । सुहुमेहंदिगलट्टिअपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाण एओ अपज्जत्तालो ।

तेहंदिगणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, वे जीवसमासा, पंच पञ्चत्तीओ पंच अप-अत्तीओ, छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्सगदी, वेहंदिगजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओगलियमिस्स-कम्मइय-अमचमोसवचिजेणा इदि चत्तारि जोग, णडुंसयवेद,

पसयम, अचसुदर्शन, दब्बसे कापोत और शुकु लेदयाण, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाण; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असजिक, आहारक, अनाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हे ।

इसीकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयनाले सुक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले मध्यम एकेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तकोंके एक अपर्याप्त आलाप जानना चाहिए ।

ईन्द्रिय जीवके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, ईन्द्रिय-पर्याप्त और ईन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पाच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्थानेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, वचनवल, कायवल, आयु और द्यामोच्युत्तात ये छह प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त छह प्राणोंमेंसे वचनवल और द्यामो-च्युत्तातके विना चार प्राण, चारों सजाणं, तिर्यचगति, ईन्द्रियजाति, वसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कर्मणकाययोग और अमत्यसृगवचनयोग ये चार योग, नपुंसक

न १९१ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|----|----|-----|----|---|-----|----|----|----|---|----|-----|-----|------|
| गु | जी | प | म | ग | इ | वा | यो | वे | क | शा. | सय | द | ले | म | स | मलि | आ | उ |
| १ | १ | ५ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मि | दी | प | प | प | ति | नस | ओ.२ | फ | क | कम | अम | अच | मा | म | मि | अम | आहा | साका |
| | दी | ज | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण क्रिह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणा-हारिणो, सागारवजुत्तो हेति अणागारवजुत्ता वा' ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पञ्चत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्सगदी, वेहंदिगजादी, तसकाओ, वे जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण क्रिह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहा-रिणो, सागारवजुत्ता हेति अणागारवजुत्ता वा' ।

वेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, दब्बसे छहों लेदयाण, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंजिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हे ।

उर्द्धा ईन्द्रिय जीवके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण स्थान, एक ईन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पाच पर्याप्तिया, पूर्वोक्त छह प्राण, चारों सजाणं, तिर्यचगति, ईन्द्रियजाति, वसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिक-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, दब्बसे छहों लेदयाणं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाण, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंजिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हे ।

नं. १९२ ईन्द्रिय जीवके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|----|----|-----|----|---|-----|----|----|----|---|----|-----|-----|------|
| गु | जी | प | म | ग | इ | वा | यो | वे | क | शा. | सय | द | ले | म | म | मलि | आ | उ |
| १ | १ | ५ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मि | दी | प | प | प | ति | नस | ओ.२ | फ | क | कम | अम | अच | मा | म | मि | अम | आहा | साका |
| | दी | ज | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

नं १९३ ईन्द्रिय जीवके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|----|----|-----|----|---|-----|----|----|----|---|----|-----|-----|------|
| गु | जी | प | म | ग | इ | वा | यो | वे | क | शा. | सय | द | ले | म | म | मलि | आ | उ |
| १ | १ | ५ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मि | दी | प | प | प | ति | नस | ओ.२ | फ | क | कम | अम | अच | मा | म | मि | अम | आहा | साका |
| | दी | ज | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

तेमि चैन अपज्जत्तणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीविसमाओ, पंच अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्खगदी, वेइदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णंउंअपवेद, चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, असजम, अचअदुदंसण, दवेण काउ-सुक्खेस्साओ. भावेण क्रिण्हणील-काउलेस्साओ; भवमिदिया अभवसिदिया, सिच्छत्तं, अमण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागराजुत्ता हेंति अणागराजुत्ता वा” ।

एअं वेइदिय-पज्जत्तणमकम्मोदय-सहियाणं वेइदियपज्जत्तणं तिण्णि आलाग ताव्वा । वेइदिय-लत्तित्तापज्जत्तणामकम्मोदिय-सहिदाणं एगो आलावो वत्तव्वो ।

तेइदियाणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीविसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्खगदी, तीइदियजादी,

उन्ही त्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यावादि, गुणस्थान, एक त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां. स्पर्शनेन्द्रिय, रस्नेन्द्रिय, कायबल और आपु ये चार प्राण, चारों सदाप, तिर्यचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, भौतिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेद्रयाप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेद्रयाप; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मित्यात्व, साक्षिक, आहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

एतन्प्रकारसे त्रीन्द्रियजाति और पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले त्रीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । त्रीन्द्रियजाति और लब्धपर्याप्तक नामकर्मके उदयवाले त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप ही कहना चाहिए ।

त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक मिथ्यावादि गुणस्थान, त्रीन्द्रिय-पर्याप्त और त्रीन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन-पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां। पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रस्नेन्द्रिय प्राणेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, आयु, और इवालोच्छ्वास ये सात प्राण; अपर्याप्तकालमें उक्त सात प्राणोंमेंसे वचनबल और इवासो-

नं. १९३ त्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु. मि. जी. ती. प. प्रा. स. ग. इ. का. यो. वे. क. सा. मय. द. ले. म. स. सकि. आ. उ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|----------------------------------------------------------------------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु. मि. जी. ती. प. प्रा. स. ग. इ. का. यो. वे. क. सा. मय. द. ले. म. स. सकि. आ. उ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

५७८] संत परुवणाणुयोगद्वारे इंदिय-आलावण्यणं [१, १-

तसकाओ, चत्तारि जोग, णंउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचअदु-दंसण, दवेण छ लेस्सा, भावेण क्रिण्हणील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागराजुत्ता हेंति अणागराजुत्ता वा” ।

“तेसिं चैन पज्जत्तणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीविसमाओ, पंच पज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्खगदी, तीइदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णंउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचअदुदंसण, दवेण छ लेस्सा,

च्छ्वासके विना शेष पांच प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अचक्षु-वचनयोग, भौतिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेद्रयाप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेद्रयापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मित्यात्व, असक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यावादि गुण-स्थान, एक त्रीन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त सात प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अचक्षुदर्शनयोग और भौतिकमिश्रकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, अचक्षु-

नं. १९५ त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

| शु. मि. जी. ती. प. प्रा. स. ग. इ. का. यो. वे. क. सा. मय. द. ले. म. स. सकि. आ. उ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|----------------------------------------------------------------------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु. मि. जी. ती. प. प्रा. स. ग. इ. का. यो. वे. क. सा. मय. द. ले. म. स. सकि. आ. उ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

नं. १९६ त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| शु. मि. जी. ती. प. प्रा. स. ग. इ. का. यो. वे. क. सा. मय. द. ले. म. स. सकि. आ. उ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|----------------------------------------------------------------------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु. मि. जी. ती. प. प्रा. स. ग. इ. का. यो. वे. क. सा. मय. द. ले. म. स. सकि. आ. उ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

आहारिणो, सागारुचुता ह्यंति अणारुचुता वा" ।

तेषां चैव अपञ्चत्तानं भणमणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, पंच अपञ्चत्तीओ, उपाण, चत्तारि मण्णा, तिरिस्वगदी, चउरिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णंउसयेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अमंजम, दो दंसण, दब्बेण काउ-गुरकलेग्गा, भाणेण किण्ह-णील-काउलेग्गा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, अण्णिणो, आहारिणो अणारुचुता ह्यंति अणारुचुता वा" ।

कृतोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पंच अपर्याप्तिया, आदिकी चार इन्द्रियां, कायबल और आयु ये छह प्राण, चारों संज्ञापं, तिरिचगति, चतुरिन्द्रियजाति, तसकाय, भौतिकमिथ्याकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नयुसकवेद, चारों कलाय, इगति और कुशुत ये दो अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुफल लेस्यापं, भायसे रुष्ण, नील और कापोत लेस्यापं; भव्यसिद्धिक, अभव्य-मिद्धिका मिथ्यात्व, असिद्धिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९९

चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | मा. | क | सा. | वे | क | सा. | सय | द | ले. | म | म | म | गति | जा. | उ. |
|----|-----|----|-----|---|-----|----|---|-----|----|---|-----|---|---|---|-----|-----|----|
| १५ | ४ | ६५ | १०७ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| | म.प | ६अ | ११७ | १ | १ | १५ | ३ | ४ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| | म | अ | ५५ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | अम | प. | ५अ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | अम | अ | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. २००

चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| शु | जी | प | मा. | क | सा. | वे | क | सा. | सय | द | ले. | म | म | म | गति | जा. | उ. |
|----|-----|----|-----|---|-----|----|---|-----|----|---|-----|---|---|---|-----|-----|----|
| १५ | ४ | ६५ | १०७ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| | म.प | ६अ | ११७ | १ | १ | १५ | ३ | ४ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| | म | अ | ५५ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | अम | प. | ५अ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | अम | अ | | | | | | | | | | | | | | | |

एवं चउरिदियाणं पञ्चत्त-णामकम्मोदयाणं तिणिण आलावा वत्तवा । चउरिदि-याणमपञ्चत्त णामकम्मोदयाणं एओ आलावो वत्तवो ।

“पंचिदियाणं भणमणे अस्थि चोदस गुणद्वयाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, तसकाओ, पण्णारह जोग अजोगो वि अस्थि, पाण सत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण एय पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अस्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग अजोगो वि अस्थि, तिणिण वेद अवगदवेदो वि अस्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अस्थि, अट्ट णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दब्बे-भोपेहि छ लेग्गाओ अलेग्गा वि अस्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो पेव सण्णिणो पेव असण्णिणो वि

इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले पर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले लब्धपर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए ।

पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, सक्की-पर्याप्त, संक्की अपर्याप्त, असक्की-पर्याप्त और असक्की-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संक्की-पर्याप्त जीवोंके छहों पर्याप्तियां, संक्की-अपर्याप्त जीवोंके छहों अपर्याप्तियां; असक्की-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मन-पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, असक्की-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके पांच अपर्याप्तियां; संक्की-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके चारों प्राण, संक्की-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकाल-भावी सात प्राण, असक्की-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मनोबलके विना नौ प्राण, असक्की-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, सयोनिकेवली जिनके वचनबल, कायबल, आयु और स्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, केवलिसमुदातकी अपर्याप्त अवस्थामें आयु और कायबल ये दो प्राण, और अयोगिकेवली भगवान् के एक आयु प्राण होता है । चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, पंडहों योग तथा अयोगस्थान भी है । तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है । चारों कयाय तथा अकयायस्थान भी है । आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं तथा अलेस्यास्थान भी है । भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, सक्किक,

नं. २०१

पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

| शु | जी | प | मा. | क | सा. | वे | क | सा. | सय | द | ले. | म | म | म | गति | जा. | उ. |
|----|-----|----|-----|---|-----|----|---|-----|----|---|-----|---|---|---|-----|-----|----|
| १५ | ४ | ६५ | १०७ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| | म.प | ६अ | ११७ | १ | १ | १५ | ३ | ४ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| | म | अ | ५५ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | अम | प. | ५अ | ४ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | अम | अ | | | | | | | | | | | | | | | |

तेसि चैव अपज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणद्वाणणि, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीण-सण्णा वा, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजदी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छ गाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुमया वा, आहारिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा तदुमया वा^{११} ।

पंचिदिय-मिच्छाइद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणद्वाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आटाप कहने पर—मिथ्याइष्टि, सासादरसम्यग्दष्टि, अचिरतसम्यग्दष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, तथा सयोगकेवलि-समुद्भातेके अपर्याप्तकालमें दो प्राण, चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिक-मिश्रकाययोग, चैत्तिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कयाय तथा अकयायस्थान भी है। विभंगावधान और मतःपर्ययजनके बिना छह ज्ञान, असंयम, सामयिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेस्यापं, भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्प्रथ्यात्वके बिना पांच सम्यत्त्व, संशिक, असंशिक तथा अनुभवस्थान भी है। आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अना-कारोपयोगी और दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

पंचेन्द्रिय मिथ्याइष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्याइष्टि गुणस्थान, पूर्वोक्त चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचे

त २०३ पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-------|---|----|---|---|---|----|----|----|----|------|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| गु | जी | प | ना | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | मय | द | ले | म | स | सनि | आ | उ |
| ५ | २ | ६ | ७ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ६ | ४ | ४ | ४ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | म, अ | अ | अ | अ | ज | अ | प | जो | मि | मि | मि | अस | म | म | म | मि | म | म | म |
| गा | अम, अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| अ | | | | | | | | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| द | | | | | | | | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| म | | | | | | | | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |

अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारोरेहि जुगपदुवजुत्ता वा ।

तेसि चैव पज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि चोदस गुणद्वाणणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ वीणमण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजदी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट गाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवमिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारोरेहि जुगपदुवजुत्ता वा^{११} ।

असंशिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, अना-हारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चारों प्राण, नौ प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग, चैत्तिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कयाय तथा अकयायस्थान भी है। आर्डा ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याप तथा अलेस्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, संशिक, असंशिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. २०४ पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-------|---|----|---|---|---|----|----|----|----|------|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| गु | जी | प | ना | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | मय | द | ले | म | स | सनि | आ | उ |
| ५ | २ | ६ | ७ | ७ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ६ | ४ | ४ | ४ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | म, अ | अ | अ | अ | ज | अ | प | जो | मि | मि | मि | अस | म | म | म | मि | म | म | म |
| गा | अम, अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| अ | | | | | | | | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| द | | | | | | | | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| म | | | | | | | | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |

नामणमममाइष्टिपहुडि जात्र अजोगिकेवलि ति मूलोच-भंगो । एवं सण्णिपंचि-
दियाणं पजस-णामकम्मोदयाणं मिच्छाइष्टिपहुडि जात्र अजोगिकेवलि ति जाणिल्लण
मकालाणा वत्तव्या ।

असण्णि-पन्चिदियाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वणं, दो जीवसमासो, पंच
पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, णत्र पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्खगदी,
पंचिदियजादी, तमकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण,
असंयम, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया
अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति
अणागारुवजुत्ता वा ।

तेर्मि चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, पंच
पज्जत्तीओ, णत्र पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्खगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, दो

सामान्य पंचेन्द्रिय जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली
गुणस्थान तर्कके आलाप मूल औद्योगिके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पर्याप्त
नामकर्मके उदयवाले सभी पंचेन्द्रिय जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली
गुणस्थान तर्कके समस्त आलाप जानकर कहना चाहिये ।

असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,
असंखी पर्याप्त और असंखी पर्याप्त ये दो जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां;
नौ प्राण, सात प्राण, चारों सत्राप, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभवयवचनयोग,
औद्यारिककाययोग, औद्यारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद,
चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेक्ष्याप,
भ्राम्मे कृष्ण, नील और कापोत लेक्ष्याप; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंखिक,
आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्ध्वी असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तक लसवन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि
गुणस्थान, एक असंखी पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, नौ प्राण, चारों संबंघ, तिर्यचगति,

न. २०७ असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | वा. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|--------|----|----|
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ४ | ४ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ६ | ६ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ७ | ७ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ८ | ८ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ९ | ९ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| १० | १० | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा,
भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो,
आहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेर्सि चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, पंच
अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्खगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, वे
जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-
सुकलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,
असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभवयवचनयोग और औद्यारिककाययोग ये दो योग, तीनों
वेद, चारों कषाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,
द्रव्यसे छहों लेक्ष्यापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेक्ष्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक,
मिथ्यात्व, असंखिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्ध्वी असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक
मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंखी-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों
सत्रापं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औद्यारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये
दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु
ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेक्ष्याप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेक्ष्याप,
भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंखिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और
अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न. २०८

असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | वा. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|--------|----|----|
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ४ | ४ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ६ | ६ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ७ | ७ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ८ | ८ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ९ | ९ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| १० | १० | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

न. २०९

असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | वा. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|--------|----|----|
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ४ | ४ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ६ | ६ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ७ | ७ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ८ | ८ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ९ | ९ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| १० | १० | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा” ।

असण्णिपंचिदिय-लद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थिय एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खग्दी, पंचिदियज्जादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण क्रिण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा” ।

अणिदियाणं सिद्ध-भंगो ।

एवं विदियमगणा समता ।

सत्तिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपर्याप्त नामकर्मके उदयचाले असंखी पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कइने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंखी-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यग्गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुशुत ये दो अक्षत, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेदयाणं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनिन्द्रिय जीवोंके आलाप सिद्धीके आलापोंके समान समझना चाहिय ।

इसप्रकार दूसरी इन्द्रिय मार्गण समाप्त हुई ।

संखी पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-------|------|-----|------|------|-----|------|-------|-------|-------|------|------|------|-----|------|------|------|--------|------|------|
| शु. १ | जी. १ | मि १ | प १ | पा १ | सा १ | ग १ | ६. १ | का. १ | यो. १ | वे. १ | क. १ | शा १ | सय १ | द १ | ले १ | म. १ | स. १ | साभि १ | आ. १ | उ. १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. २१२ असंखी पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-------|------|-----|------|------|-----|------|-------|-------|-------|------|------|------|-----|------|------|------|--------|-----|------|
| शु. १ | जी. १ | मि १ | प १ | पा १ | सा १ | ग १ | ६. १ | का. १ | यो. १ | वे. १ | क. १ | शा १ | सय १ | द १ | ले १ | म. १ | स. १ | साभि १ | आ १ | उ. १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

संपदि पंचिदियलद्धिअपज्जत्ताणं अपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थिय एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदि-तिरिक्खग्दीओ त्ति दो गदीओ, पंचिदियज्जादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कयाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, माणण क्रिण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, सण्णिणो अमण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा” ।

गण्णिपंचिदिय-लद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थिय एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियज्जादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया

अपर्याप्त नामकर्मके उदयचाले पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कइने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संखी-अपर्याप्त और असंखी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पाच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति और तिर्यग्गति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुशुत ये दो अक्षत, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेदयाणं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिक, असत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपर्याप्त नामकर्मके उदयचाले संखी पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कइने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संखी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति और तिर्यग्गति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुशुत ये दो अक्षत, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेदयाणं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व,

नं. २१० पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-------|------|-----|------|------|-----|------|-------|-------|-------|------|------|------|-----|------|------|------|--------|-----|------|
| शु. १ | जी. १ | मि १ | प १ | पा १ | सा १ | ग १ | ६. १ | का. १ | यो. १ | वे. १ | क. १ | शा १ | सय १ | द १ | ले १ | म. १ | स. १ | साभि १ | आ १ | उ. १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

कायानुद्गारेण ओद्यमाने भण्यमाने' अथि चोदस गुणद्वयानि, दो वा तिणि वा, चचारि वा छब्बा, छब्बा णव वा, अट्ट वा चारह वा, दस वा पणारह वा, चारस वा अट्टारह वा, चोदस वा एकब्बीस वा, सोलस वा चउवीस वा, अट्टारह वा सत्तावीस वा, बीस वा तीस वा, चारवीस वा तेत्तीस वा, चउवीस वा छत्तीस वा, छब्बीस वा अट्टण्णचालीस वा, अट्टवीस वा चायालीस' वा, तीस वा पंचेतालीस वा, वत्तीस वा अट्टतालीस वा, चउतीस वा एकपंचास वा, छत्तीस वा चउपंचास वा, अट्टत्तीस वा सत्तपंचास वा जीवसमासा । दो जीवसमासेत्ति भणिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सब्बे जीवा दुविहा भवन्ति, अदो दो जीवसमासा बुवन्ति । तिणि जीवसमासेत्ति बुत्ते णिवत्तिपज्जत्ता णिवत्ति-अपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिणि जीवसमासा हवन्ति । चचारि वा इदि बुत्ते तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चचारि जीवसमासा । छब्बा इदि बुत्ते दो णिवत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो णिवत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं छ जीवसमासा । अथवा थावर-

कायमार्गणके अनुयायके ओवालाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान होते हैं । दो अथवा तीन, चार अथवा छह, छह अथवा नौ, आठ अथवा बारह, दश अथवा पन्द्रह, बारह अथवा अठारह, चौदह अथवा इत्तीस, सोलह अथवा चौबीस, अठारह अथवा सत्तावीस, बीस अथवा तीस, चारवीस अथवा तेत्तीस, चोवीस अथवा छत्तीस, छब्बीस अथवा उनचालीस, अट्टवीस अथवा स्यालीस, तीस अथवा पंचेतालीस, वत्तीस अथवा अट्टतालीस, चौतीस अथवा पचास, छत्तीस अथवा चौपन, अट्टवीस अथवा सत्तावन जीवसमास होते हैं । आगे इन्हींका स्वीकरण करते हैं—

दो जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे सभी जीव दो प्रकारके होते हैं, अतएव दो जीवसमास कहे जाते हैं । तीन जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर निर्वृत्तिपर्याप्तक, निर्वृत्त्यपर्याप्तक और लब्धपर्याप्तक इसप्रकार तीन जीवसमास होते हैं । चार जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार जीवसमास कहे जाते हैं । छह जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रस और स्थावरके दो निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दो निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और दो लब्धपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं । अथवा, स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके

- १ णिण ' णोकायो मग्गमाणे ' इति पाठो नास्ति । २ णिण ' वट्ठनीस वा ' इति पाठ ।
३ णिण ' भोत्तम वा भोत्तम वा ' इति पाठानुत्तम । अत ज्यो णिण ' वत्तीस वा ' इति पाठोऽधिक ।
४ णिण ' पचानोप ' इति पाठ ।

काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगल्लिदिया विगल्लिदिया, सगल्लि, दिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगल्लिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीव-समासा । तिणि णिवत्तिपज्जत्तजीवसमासा तिणि णिवत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिणि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीवसमासा हवन्ति । थावरकाइया दुविहा वादरा सुहुमा, चादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगल्लिदिया विगल्लिदिया चि, सगल्लिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगल्लिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं अट्ट जीवसमासा । चचारि णिवत्तिपज्जत्तजीवसमासा चचारि णिवत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चचारि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं चारस जीव-समासा हवन्ति । थावरकाइया दुविहा चादरा सुहुमा, वादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमाकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पंचिदिया अपंचिदिया, पंचिदिया दुविहा सण्णो असण्णो, सण्णो दुविहा पज्जत्ता अप-ज्जत्ता, असण्णो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं दस जीवसमासा हवन्ति । पंच णिवत्तिपज्जत्तजीवसमासा पंच णिवत्तिअपज्जत्त-

होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय । सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं । एकैन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियके तीन निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तीन निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और तीन लब्धपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार नौ जीवसमास होते हैं । स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, वादर और सुद्धम । वादर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । सुद्धम जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार आठ जीवसमास होते हैं । वादर स्थावर-कायिक, सुद्धम स्थावरकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके चार निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चार निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और चार लब्धपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं । स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, वादर और सुद्धम । वादरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । सुद्धमकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पंचेन्द्रिय और अपंचेन्द्रिय (विकलेन्द्रिय) । पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक । संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । अपंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार दश जीवसमास होते हैं । वादर स्थावरकायिक, सुद्धम स्थावरकायिक, संज्ञी

बादरगिगोदाद्विदित-पत्तेयरीरा दुविहा पञ्जता अपञ्जता, साधारण-मरीरा दुविहा पञ्जता अपञ्जता, तयकाइया दुविहा वियलिदिया सयलिदिया चेदि, मयलिदिया दुविहा पञ्जता अपञ्जता, वियलिदिया दुविहा पञ्जता अपञ्जता, एवमद्वारस जीवसमासा हंति। गत्र गिवाचिपञ्जतजीवसमासा गत्र गिवाचि-अपञ्जतजीवसमासा गा लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा' एदे मन्वे नि वेत्तूण मचावीस जीवसमासा हंति। पुथियल-अद्वारम-जीवसमासाभंतेरे साधारण वणफइपञ्जतापञ्जतजीवसमासे अवाणिय साधारणफइकाइया दुविहा गिवाचिगोदा चहुगादिगोदा चेदि। गिवाचिगोदा दुविहा पञ्जता अपञ्जता, चहुगादिगोदा दुविहा पञ्जता अपञ्जता चेदि एदे चचारि जीवसमासे पस्मिचे वीस जीवसमासा हंति। दस गिवाचिपञ्जतजीवसमासा दस गिवाचि-अपञ्जतजीवसमासा दस लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा एदे तीस जीवसमासा हंति। पुडनि काइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणफकाइया एदे सब्बे दुविहा

यादरनिगोदप्रतिष्ठितसे भिन अर्थान् यादरनिगोदप्रतिष्ठितप्रत्येकररीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वनकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय। मयकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार ये अठारह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक, अमृतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय इन नौ प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा नौ तिष्ठितपर्याप्तक जीवसमास, नौ तिष्ठितपर्याप्तक जीवसमास और नौ लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर सत्तावीस जीवसमास होते हैं। पूर्वमें कहे गये अठारह जीवसमासोंमेंसे साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर साधारणवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, नित्यनिगोर और चतुर्गतिनिगोर। नित्यनिगोर दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। चतुर्गतिनिगोर दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलने पर वीस जीवसमास होते हैं। पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार वायुकायिक, समतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अमृतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, नित्य-निगोर, चतुर्गतिनिगोर, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय इन दश प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा दस तिष्ठितपर्याप्तक जीवसमास, दस तिष्ठितपर्याप्तक जीवसमास और दश लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक ये पाँचों कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर

१ गीगु ' गत्रादे...मसासा ' एति पाठो नास्ति।

बादरा सुहुमा चि, सब्बे बादरा सब्बे च सुहुमा पञ्जता अपञ्जता इदि चउव्विहा हंति, तसकाइया दुविहा पञ्जता अपञ्जता चेदि एवमेदे वानीस जीवसमासा। गिवाचिपञ्जतजीवसमासा एकारह, गिवाचि-अपञ्जतजीवसमासा एकारह, लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा एकारह एवं तेत्तीस जीवसमासा हंति। वानीस-जीवसमासा-णमभंतेरे तसपञ्जतापञ्जतजीवसमासे अवाणिय तसकाइया दुविहा हंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पञ्जता अपञ्जता, अमणा दुविहा पञ्जता अपञ्जता एदे चचारि पस्मिचे चउवीस जीवसमासा हंति। वारस गिवाचिपञ्जतजीवसमासा वारस गिवाचि-अपञ्जतजीवसमासा वारस लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हंति। पुथियल-चउवीसण्हं मज्जे अमणणं पञ्जत-अपञ्जत-दो-जीवसमासे अवाणिय अमणा दुविहा सयलिदिया वियलिदिया चेदि, सयलिदिया दुविहा पञ्जता अपञ्जता, वियलिदिया दुविहा पञ्जता अपञ्जता चेदि एदे चचारि पस्मिचे छत्तीस जीवसमासा हंति। तेरस गिवाचिपञ्जतजीवसमासा तेरस गिवाचिअपञ्जतजीव-

और सूक्ष्म। ये सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं। इसप्रकार प्रत्येक एक एक कायिक जीव चार चार प्रकारके हो जाते हैं। वनकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार ये सब मिलाकर वानीस जीव समास हो जाते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक अशिकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदमे दश भेद होते हैं और वनकायिक इन ग्यारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा ग्यारह तिष्ठितपर्याप्तक जीवसमास, ग्यारह तिष्ठितपर्याप्तक जीवसमास और ग्यारह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार सब मिलाकर तेतीस जीवसमास होते हैं। पूर्वमें वानीस जीवसमासोंमेंसे वनकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर वनकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, समनस्क (संक्षी) और अमनस्क (असंक्षी)। समनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक, अपर्याप्तक। अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलने पर चौबीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदमे दश भेद और समनस्क वनकायिक तथा अमनस्क वनकायिक इन वारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा वारह तिष्ठितपर्याप्तक जीवसमास, वारह तिष्ठितपर्याप्तक जीवसमास और वारह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पूर्वमें चौबीस जीवसमासोंमेंसे अमनस्क जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इन चार जीवसमासोंको मिला देने पर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पाँचों स्वावरकायिक जीवोंके बादर और

समासा तेस लद्धिअपज्जतजीवसमासा एवमेदे सब्बे वेत्तूण एरण्णचालीस जीव-
समाणा हवन्ति । छन्धीसण्हं मज्जे णणफ्फइकाइयाणं चत्तारि जीवसमासे अवणिय
वणफ्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अप-
ज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे
छ त्रीणसमासे पक्खित्ते अट्टवीस जीवसमासा चोदस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा
चोदस णिन्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे चायालीस
जीवसमासा । अट्टवीसण्हं मज्जे पत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ता दो जीवसमासे अवाणिय
पत्तेयसरीरा-दुविहा चादरणिगोपज्जोणिणो तेसिमज्जोणिणो चेदि, तेवि सब्बे दुविहा
पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि एदे चत्तारि भग्गे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हवन्ति । णिन्वत्ति-
पज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिन्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, लद्धि-अपज्जत्तजीव-

सस्रमके भेदसे दश भेद तथा विरुद्धेन्द्रिय, असमनस्क पंचेन्द्रिय और समनस्क पंचेन्द्रिय
एतत्तेषु प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा तेरह निर्दृष्टिपर्याप्तक जीवसमास, तेरह निर्दृष्टिपर्याप्तक
जीवसमास और तेरह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब भिलाकर उन्ततालीस
जीवसमास होते हैं । छन्धीस जीवसमासोंमेंसे वनस्पतिकार्यिक जीवोंके चार जीवसमास
विकास कर वनस्पतिकार्यिक जीव हो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर ।
प्रत्येकशरीर वनस्पतिकार्यिक जीव हो प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक । साधारण-
शरीर वनस्पतिकार्यिक जीव हो प्रकारके होते हैं बादर और सूक्ष्म । ये दोनों प्रकारके जीव भी
हो हो प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक । ये छह जीवसमास भिला देने पर अट्टवीस
जीवसमास होते हैं । पृथिवीकार्यिक, जलकार्यिक, अश्रिकार्यिक, वायुकार्यिक और साधारण-
वनस्पतिकार्यिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद, प्रत्येकवनस्पतिकार्यिक, विक-
सेन्द्रिय, समनस्कपंचेन्द्रिय और असमनस्कपंचेन्द्रिय इन चौदहों प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा
चौदह निर्दृष्टिपर्याप्तक जीवसमास, चौदह निर्दृष्ट्यपर्याप्तक जीवसमास और चौदह लक्ष्य-
पर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब भिलाकर ज्वालित जीवसमास होते हैं । पूर्वेक्त
धनुर्धर जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकवनस्पतिकार्यिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो
जीवसमास विकास कर प्रत्येकशरीर जीव हो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक और
बादरनिगोदयोनिक । ये भी सब दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इस
बादर ये चार संग भिला देने पर तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकार्यिक, जलकार्यिक,
अश्रिकार्यिक, वायुकार्यिक और साधारणशरीर इनके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा
समभिक्षिय प्रत्येकवनस्पति और भ्रमतिष्ठित प्रत्येकवनस्पति, विकसेन्द्रिय, असमनस्कपंचेन्द्रिय
और समनस्कपंचेन्द्रिय इसप्रकार इन पन्द्रह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा पन्द्रह निर्दृष्टिपर्याप्तक
और सस्रमण, पन्द्रह निर्दृष्ट्यपर्याप्तक जीवसमास और पन्द्रह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास

समासा पण्णारस एवमेदे सब्बे वि पंचेदालीस जीवसमासा हवन्ति । पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-
साधारणसरीरवणफ्फइकाइया पत्तेयं बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेदेण चउव्विवा
हवन्ति, पत्तेयसरीरा वेदंदिद्य-तेह्दिद्य-चउउरिंदिद्य-असण्णिपंचिदिद्य-सण्णिपंचिदिद्या पत्तेयं
पत्तेयं पज्जत्ता अपज्जत्ता दुविहा हवन्ति एदे सब्बे भिलिदे वत्तीस जीवसमासा हवन्ति । सोलस
णिन्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा सोलम णिन्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा सोलस लद्धि-अपज्जत्त-
जीवसमासा च भेलिदे अट्टतालीस जीवसमासा हवन्ति । वत्तीस-जीवसमासेसु पत्तेयसरीर-
दो-जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा चादरणिगोदज्जोणिणो तेसिमज्जोणिणो चेदि,
ते च पत्तेयं पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा एदे चत्तारि पक्खित्ते चोत्तीस जीवसमासा हवन्ति ।
सत्तारस णिन्वत्तिपज्जत्ता सत्तारस णिन्वत्ति-अपज्जत्ता सत्तारस लद्धि-अपज्जत्ता एदे
सब्बे एकावण जीवसमासा हवन्ति । पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-णिचणिगोद-चउगदिणिगोदा चादरा

इसप्रकार ये सब भिलाकर पैतालीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकार्यिक, जलकार्यिक,
अश्रिकार्यिक, वायुकार्यिक और साधारणशरीरवनस्पतिकार्यिक ये पांच प्रकारके जीव
पृथक् पृथक् बादर, सूक्ष्म और उनमें भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार चार
प्रकारके होते हैं । प्रत्येकशरीरवनस्पतिकार्यिक, छीन्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंकी
पंचेन्द्रिय और संकी पंचेन्द्रिय ये छहों प्रत्येक प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो
प्रकारके होते हैं । इसप्रकार ये सब भिलाने पर वत्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकार्यिक
जलकार्यिक, अश्रिकार्यिक, वायुकार्यिक और साधारणशरीर-वनस्पतिकार्यिक जीवोंके बादर और
सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा प्रत्येकशरीर वनस्पतिकार्यिक, छीन्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय,
असंकी-पंचेन्द्रिय और संकी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सोलह निर्दृष्टिपर्याप्तक जीवसमास,
सोलह निर्दृष्ट्यपर्याप्तक जीवसमास और सोलह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब भिला
द्वेने पर अट्टतालीस जीवसमास होते हैं । पूर्वेक्त वत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी
पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीरवनस्पतिकार्यिक जीव दो
प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक (प्रतिष्ठित) और बादरनिगोद्व अप्रतिष्ठित । ये दोनों
पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । ये चार जीवसमास भिला
द्वेने पर चोत्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकार्यिक, जलकार्यिक, अश्रिकार्यिक, वायुकार्यिक,
और साधारणवनस्पतिकार्यिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा समप्रतिष्ठित
प्रत्येक-वनस्पतिकार्यिक, अप्रतिष्ठितप्रत्येक-वनस्पतिकार्यिक, छीन्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय,
असंकीपंचेन्द्रिय और सश्रिकपंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सत्रह निर्दृष्टिपर्याप्तक जीवसमास,
सत्रह निर्दृष्ट्यपर्याप्तक जीवसमास और सत्रह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब भिलाकर इकावन
जीवसमास होते हैं । पृथिवीकार्यिक, जलकार्यिक, अश्रिकार्यिक, वायुकार्यिक, नित्यनिगोद-

मुद्रमा च पञ्जत्तापञ्जत्तमेण दुविहा ह्वंति, पत्तेयवणफ्फदि-वेहंदि-नेहंदि-चउरिदिय-अन्णि-सण्णिपंदि-पञ्जत्तापञ्जत्तमेण एदे वि पत्तेयं दुविहा ह्वंति एदे सव्वे वि छत्तीस जीवममासा ह्वंति । अट्टारह्णि गिब्वत्तिपञ्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चैव गिब्वत्तिअपञ्जत्त जीवममासा वि अट्टारह्णि, लद्धि-अपञ्जत्तजीवसमासा वि अट्टारह्णि सव्वेदे एगडे कदे चउपण्ण जीवसमासा । पुणो पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे छत्तीस-जीवसमासेसु अवणिय पत्तेय-मरीच्यारणिगोद-पदिद्धिदापदिद्धिद'-पञ्जत्तापञ्जत्त-सण्णिद-चदुसु जीवसमासेसु पविब्व-त्तेसु अट्टतीस जीवसमासा ह्वंति । एत्थ एगुणवीस गिब्वत्तिपञ्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चैव गिब्वत्ति-अपञ्जत्तजीवसमासा ह्वंति, लद्धि-अपञ्जत्तजीवसमासा वि तेत्तिया

साधारणजनस्पतिकार्यिक और चतुर्गतिनिगोदसाधारणवनस्पतिकार्यिक ये छहों प्रकारके जीव बाहर और सक्रमके भेदसे बारह प्रकारके होते हैं । और ये प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । प्रत्येकवनस्पतिकार्यिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, जलमी पंचेन्द्रिय और सजी पंचेन्द्रिय जीव ये सभी पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । इन्प्रकार उक्त चौबीस और निम्न बारह ये सभी जीवसमास मिलकर प्रथम जीवसमास होते हैं । पृथिवीकार्यिक, जलकार्यिक, तैजस्कार्यिक, वायुकार्यिक, नित्य-निगोद साधारणवनस्पतिकार्यिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकार्यिकके बाहर और दूसरे भेद, प्रत्येकवनस्पतिकार्यिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंसी-पंचेन्द्रिय और संसी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी ओरका अठारह निर्गुतिपर्याप्तक जीवसमास, उतने ही अठारह निर्गुत्य-पर्याप्तक जीवसमास और अठारह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब इकट्ठे करते पर चौपन जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त छत्तीस जीवसमासमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीरसंबन्धी बाहरनिगोद प्रतिष्ठित और अग्रतिष्ठित इन दोनोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक इन चार जीवसमासोंके मिलाने पर अठ्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकार्यिक, जलकार्यिक, आशिकार्यिक, वायुकार्यिक, नित्यनिगोद साधा-रणशरीरवनस्पतिकार्यिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकार्यिक जीवोंके बाहर और दूसरे भेदसे तथा समतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकार्यिक, अग्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकार्यिक त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंसी-पंचेन्द्रिय और संसी-पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी उन्नीस निर्गुतिपर्याप्तक जीवसमास होते हैं, उन्नीस ही निर्गुत्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं और उन्नीस ही लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं । ये सब मिलकर सत्तावन जीवसमास होते

चैव सव्वेदे सत्तावण्ण जीवसमासा ह्वंति । एदे' जीवसमासभेयां सव्व-ओवेसु वत्तव्वा । छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण सत्त पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एहंदि-यजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भोवेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभावसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णो असण्णो णेव सण्णो णेव असण्णो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागरासुत्ता हंति अणागरुवसुत्ता वा सागर-अणागारेहि सुगव-

हैं । ये उपर्युक्त जीवसमासोंके भेद समस्त ओवालापोंमें कबूना चाहिए ।

जीवसमास आलापके आगे संबन्धी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालमें और अपर्याप्तकालमें छहों पर्याप्तियों, छहों अपर्याप्तियों, असंसी पंचेन्द्रिय और विकलत्रय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः पांच पर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों, एकैन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार पर्याप्तियों, चार अपर्याप्तियों, संक्षी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः दशों प्राण, सात प्राण; असंक्षी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः नौ प्राण, सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः आठ प्राण, छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः सात प्राण, पांच प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः छह प्राण, चार प्राण; एकैन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार प्राण, तीन प्राण, सयोगकेवली जिनोंके चार प्राण, तथा समुद्रात्तकी अपर्याप्त अवस्थामें दो प्राण और अयोगकेवली जिनोंके एक आयु प्राण होता है । चारों सक्षार तथा खीणसमास्थान भी है, चारों गतियों, एकैन्द्रियजाति आदि पाँचों जातियों, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत वेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए तथा अलेख्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिका छहों सम्यक्त्व, संक्षिक असक्षिक तथा सक्षिक और असक्षिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है,

१. गतिपु ' वीए ' इति पाठ ।

२. सामण्णज्जिव तस्यपारेछ इगिगिगणअयकचरिमदुगे । इदियनाये चरिसस य दुतिचदुपणमदेदुदे ॥ पण्डुगले तससहियं तरसम दुतिचदुपणमदेदुदे । छदुगपचेयइ य तसस तियचदुपणमदेदुदे ॥ सगकुगन्दि तसस य पणमगदुदेइ हंति उणवीसा । प्याइणवीसोत्ति य इगिगिगिगुणदे इहे ठाणा ॥ सामणेण तिपती पदमा विदिया अपुण्णे इदरे । पञ्चवे लद्धिअपञ्चवेइपदमा इहे पवी ॥ गो. जी ७५-७८.

रुचुता वा" ।

तेषु चैव पञ्चत्वारिंशत् भण्यमाणे अत्यि चोदस गुणद्वयानि, एकौ वा दो वा तिष्ठि वा चत्वारि वा पंच मा छव्या सत्त वा अष्ट वा षण् वा दस वा एकारह वा बारह वा तेरह वा चउदस वा षण्णारह वा सत्तारस वा अष्टारह वा एगुणवीस वा जीनसमासा, छ पञ्चत्वारिंशत् पञ्चत्वारि पञ्जत्वारिओ, दम पाण षण्ण पाण अष्ट पाण मत्त पाण छ पाण चत्वारि पाण चत्वारि पाण एक पाण, चत्वारि सण्णत्वारिओ मीणसण्णा नि अत्यि, चत्वारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पृथ्विकायादी छक्काया, एगारह जेण अजोसो नि अत्यि, तिष्ठि वेद अवगदेवेदो वि अत्यि, चत्वारि कस्राय अरुसाओ नि अत्यि, अष्ट पाण, सत्त संजम, चत्वारि दंसण, दृश्य-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा नि अत्यि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

आहारक, भनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंमें युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं पट्-कायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी एक, अथवा दो, अथवा तीन, अथवा चार, अथवा पांच, अथवा छह, अथवा सात, अथवा आठ, अथवा नौ, अथवा दश, अथवा ग्यारह, अथवा बारह, अथवा तेरह, अथवा चौदह, अथवा पन्द्रह, अथवा सोलह; अथवा सत्रह, अथवा अठारह, अथवा उन्नीस जीवसमास होते हैं, छहों पर्याप्तियों, पांच पर्याप्तियों और चार पर्याप्तियों; पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, बार प्राण और एक प्राण चारों संज्ञाएं तथा क्षीणलक्षस्थान भी है, चारों गतियों, एकैन्द्रिय-ज्ञानि भावि पावों ज्ञानियों, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों यवनयोग, भौतिककाययोग, वैकृतिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग और अयोग-स्थान भी है। नौनों वेद तथा अणाननेदस्थान भी है, चारों कुराय तथा अकुरायस्थान भी है, भाओं ज्ञान, सातों तन्म, चारों दूरान, उच्य और भायसे छहों लेदयारं तथा अलेदयस्थान भी है. भव्यभित्तिक. अभव्यभित्तिक. छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा सञ्ज्ञिक और

नं. २१३

पट्-कायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | क | का | यो | वे | क | मा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| १५ | १५ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ११ | ३ | ५ | ८ | ७ | ८ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| १५ | १५ | ५ | ९ | ८ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १५ | १५ | ४ | ७ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १५ | १५ | ३ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १५ | १५ | २ | ३ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १५ | १५ | १ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

सण्णित्तो असण्णित्तो णेव सण्णित्तो णेव असण्णित्तो, आहारित्तो अणाहारित्तो, सागार-वसुत्ता हंतित्त अणागारवसुत्ता वा सागार-अणागारेहिं सुगवदुवसुत्ता वा" ।

तेषु चैव अपञ्चत्वारिंशत् भण्यमाणे अत्यि पंच गुणद्वयानि, एगो वा दो वा, दोण्णि वा चत्वारि वा, तिष्ठि वा छव्या, चत्वारि वा अष्ट वा, पंच वा दस वा, छव्या बारस वा, सत्त वा चोदस वा, अष्ट वा सोलस वा, णव वा अष्टारह वा, दस वा वीस वा, एकारम वा चत्वारिंशत् वा, बारस वा चउवीस वा, तेरस वा छव्वीस वा, चोदस वा अट्टवीस वा, षण्णारस वा तीम वा, सोलस वा चत्तीस वा, सत्तारस वा चोत्तीस वा, अट्टारस वा छत्तीस वा, एगुणवीस वा अट्टत्तीस वा जीविसमासा; छ अपउज्जत्तीओ पंच

असञ्ज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

विशेषार्थ — उपर सत्तावन जीवसमास बतला आये हैं उनमें उन्नीस जीवसमास पर्याप्तसंबन्धी हैं और अट्टीस अपर्याप्तसंबन्धी । उनमेंसे यहां पर्याप्तसंबन्धी उन्नीसका ही प्रमाण करना चाहिये । जिनका प्रकृतमें ' एक अथवा दो ' इत्यादि रूपसे उल्लेख किया गया है ।

उन्हीं पट्-कायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्याद्यष्टि, सासावनसम्यग्द्यष्टि, अविरतसम्यग्द्यष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेयली ये पांच गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये अपर्याप्तक जीवोंसंबन्धी एक अथवा दो, दो अथवा चार, तीन अथवा छह, चार अथवा आठ, पांच अथवा दश, छह अथवा बारह, सात अथवा चौदह, आठ अथवा सोलह, नौ अथवा अठारह, दश अथवा बीस, ग्यारह अथवा बारस, बारह अथवा चौथीस, तेरह अथवा छव्वीस, चौदह अथवा अट्टीस, पन्द्रह अथवा तीस, सोलह अथवा पत्तीस, सत्रह अथवा चोत्तीस, अठारह अथवा छत्तीस, उन्नीस अथवा अट्टीस जीविसमास होते हैं । छहों अपर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों, चार अपर्याप्तियों; सात प्राण, सात प्राण, छह

१ प्रतिगु ' तिष्ठिण ' इति पाठ ।

नं. २१३

पट्-कायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | क | का | यो | वे | क | मा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| १५ | १५ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ११ | ३ | ५ | ८ | ७ | ८ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| १५ | १५ | ५ | ९ | ८ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १५ | १५ | ४ | ७ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १५ | १५ | ३ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १५ | १५ | २ | ३ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १५ | १५ | १ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

नेस्माओ; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छन्तं, असंख्यो, आहारिणो अणाहारिणो, गणाकरजुता इति अणागारजुता वा।

त्रेभि चैव पञ्चत्तणं भणमाणे अरिथ एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा चत्तारि वि जीवसमासा, चत्तारि पञ्चत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइदिय-जादी, पुट्टरिआओ, ओरालियकायजोगो, णडुंसयेवद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अणंजमो, णडुंसयेवद, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अमासिद्धिया, मिच्छन्तं, असंख्यो, आहारिणो, सागारजुता इति अणागार-जुता वा।

शून्य और कापोत केरपाण, भयसिद्धिक, अभयसिद्धिक, मिथ्यात्व, अन्वैतिक, आहारक, भनाहारक, साकारोपयोगी और भनाकारोपयोगी होते हैं।

उर्ध्वी पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर-एक सिव्याउट्टि गुण-रथाण, चारपृथिवीकायिक पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये दो जीवसमासा, अथवा गुण चारपृथिवीकायिक पर्याप्त गुण सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त, चार चारपृथिवीकायिक-पर्याप्त और चार सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये चार जीवसमासा चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, त्रिचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुयुत ये दो अन्नान, असंयम, अन्नसुखरीन, द्रव्यसे छर्वां लेस्याणं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत केरपाणं, भयसिद्धिक, अभयसिद्धिक, मिथ्यात्व, अन्वैतिक, आहारक, साकारोपयोगी और भनाकारोपयोगी होते हैं।

त्रियेपार्थे — उक्त पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप कहते समय दो अथवा चार जीवसमासा बतलाये हैं। उनमें दो जीवसमासा बतलानेका कारण तो स्पष्ट ही है। परंतु त्रिकरत्ने ओ चार जीवसमासा बतलाये गये हैं उसके दो कारण प्रतीत होते हैं एक तो यह कि गोम्मटसारकी जीवसमोधिनी टीकामें जीवसमासाका विशेष वर्णन करते समय पृथिवीके गुणपृथिवी और चारपृथिवी त्रेमे दो भेद किये हैं। ये दो भेद चार और सूक्ष्मके भेदसे दो दो प्रकारके हो जाते हैं। एवमार पर्याप्त भयस्या त्रिशाष्ट इन चारों भेदोंके प्रद्वय करने पर चार

भ. २.१ पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

तेभि चैव अपब्जत्तणं भणमाणे अरिथ एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपब्जत्तीओ, तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइदियजादी, पुडविकाओ, दो जोग, णडुंसयेवद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अणंजमो, अचक्खुदंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छन्तं,

जीवसमासा हो जाते हैं। दूसरा कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वीरसेनस्वामीने स्वयं चार और सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके अतिरिक्त चार और सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्द्वैतपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त एवप्रकार तीन प्रकारके आलाप और बतलाये हैं। इनमेंसे प्रथम सामान्यालापमें पर्याप्तक, निर्द्वैतपर्याप्तक और लक्ष्यपर्याप्तक इन तीनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव हो जाता है और निर्द्वैतपर्याप्तक जीवोंके सामान्यालापमें पर्याप्तक और निर्द्वैतपर्याप्तक इन दो प्रकारके जीवोंके आलापोंका ही अन्तर्भाव होता है। दूसरे पर्याप्तआलापकी अपेक्षा प्रथम और छितीय दोनों पर्याप्तआलापोंमें वास्तवमें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, निर्द्वैतपर्याप्तक जीव ही दोनों जगह पर्याप्तरूपसे ग्रहण किये गये हैं। अपर्याप्तआलापकी अपेक्षा प्रथम अपर्याप्तआलापमें निर्द्वैतपर्याप्तक और लक्ष्यपर्याप्तक इन दोनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव होता है। परंतु निर्द्वैतपर्याप्तक जीवोंके अपर्याप्तआलापमें केवल एक निर्द्वैतपर्याप्तक कालसंबन्धी आलापोंका ही ग्रहण होना है। इनमेंसे निर्द्वैतपर्याप्तककी अपर्याप्तआलापमें पर्याप्तक नामक उदय तो रहता है परंतु उसकी पर्याप्तियां पूर्ण न होनेके कारण यह अपर्याप्त कहा जाता है। इसप्रकार निर्द्वैतपर्याप्तक पर्याप्तनामकमेंके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त भी है। प्रतीत होता है कि इसी विवक्षाको ध्यानमें रखकर वीर-सेनस्वामीने यहां पर चार आलाप कहे हैं। यद्यपि प्रथम कारण गोम्मटसारकी जीवसमो-धिनी टीकाके आधारसे ही गई है परंतु उसकी यहां पर सुस्पष्टता प्रतीत नहीं होती है, क्योंकि, आगे जलकायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान बतलाये हैं। परंतु जल आदिके उर्वरी टीकामें शुद्ध आदि भेद नहीं किये हैं। अथवा इसी तलसो ध्यानमें रखकर उक्त टीकामें केवल पृथिवीके चार भेद किये गये हैं। इसप्रकार पृथिवीकायिक जीवोंके दो या चार जीवसमासा जान लेना चाहिये।

उर्ध्वी पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सिव्याउट्टि गुणस्थान, चारपृथिवीकायिक-अपर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये दो जीवसमासा, चारों अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, त्रिचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिकभिक्षकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुयुत ये दो अन्नान, असंयम, अन्नसुखरीन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल केरपाण, भावसे कृष्ण, नील और कापोत केरपाण; भयसिद्धिक, अभयसिद्धिक, मिथ्यात्व, अन्वैतिक,

अमण्डियो, आहारिणो अणारुजुता ह्येति अणारुजुता वा” ।

वादरपुढविकाइयणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, चत्तारि पञ्चत्तीओ चत्तारि अपञ्चत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइदियजादी, वादरपुढविकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कणाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्णेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवमिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणारुजुता ह्येति अणारुजुता वा” ।

आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वादरपुढविकाइयणं जीवोके सामान्य आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, वादर-पुढविकाइयण, औदारिकमित्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग; ननुसक्त्वेद, चारों कणाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छटौं लेश्याएं, भावसे कृण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, अचानिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २१८ पृथिवीकायिक जीवोके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|----|-----|----|-----|----|-------|-------|-------|-------|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|
| गु | जी | प | ग | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | जा. | प | ति | एके | पृ | एके | पृ | ओ | मि. | कर्म | कुमु. | अम | अच | का | गु | मा | अ | आहा | अना |
| | | | | | | | | कर्म. | कुमु. | कुमु. | अम | अच | अच | का | गु | मा | अ | आहा | अना |

नं. २१९ वादरपुढविकायिक जीवोके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|----|-----|----|-----|----|-------|-------|-------|-------|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|
| गु | जी | प | ग | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | जा. | प | ति | एके | पृ | एके | पृ | ओ | मि. | कर्म | कुमु. | अम | अच | का | गु | मा | अ | आहा | अना |
| | | | | | | | | कर्म. | कुमु. | कुमु. | अम | अच | अच | का | गु | मा | अ | आहा | अना |

तेसिं चैव पञ्चत्ताणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पञ्चत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइदियजादी, वादरपुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कणाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खु-दंसण, दव्णेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागरुजुता ह्येति अणारुजुता वा” ।

“तेसिं चैव अपञ्चत्ताणं भणमाणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपञ्चत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइदियजादी, वादरपुढवि-

उन्हों वादरपुढविकायिक जीवोके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक वादरपुढविकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, वादरपुढविकाय, औदारिककाययोग, ननुसक्त्वेद, चारों कणाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छटौं लेश्याएं, भावसे कृण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व; असंसिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हों वादरपुढविकायिक जीवोके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक वादरपुढविकायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, वादरपुढविकाय, औदारिकमित्रकाययोग

नं. २२० वादरपुढविकायिक जीवोके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|----|-----|----|-----|----|-------|-------|-------|-------|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|
| गु | जी | प | ग | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | जा. | प | ति | एके | पृ | एके | पृ | ओ | मि. | कर्म | कुमु. | अम | अच | का | गु | मा | अ | आहा | अना |
| | | | | | | | | कर्म. | कुमु. | कुमु. | अम | अच | अच | का | गु | मा | अ | आहा | अना |

नं. २२१ वादरपुढविकायिक जीवोके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|----|-----|----|-----|----|-------|-------|-------|-------|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|
| गु | जी | प | ग | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | जा. | प | ति | एके | पृ | एके | पृ | ओ | मि. | कर्म | कुमु. | अम | अच | का | गु | मा | अ | आहा | अना |
| | | | | | | | | कर्म. | कुमु. | कुमु. | अम | अच | अच | का | गु | मा | अ | आहा | अना |

काओ, दो जोग, गंधुमयवेद, चत्तारि क्रमाय, दो अण्णाण, असंजम, अचस्सुदंसण, दब्बेण काउ-भुक्केस्सा, भायेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, भिन्डत्तं, अगण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, ताराखवज्जत्ता हेति अणागारु-वज्जत्ता ता ।

एवं बादरपुडुतिणिब्वत्तिपज्जत्तस्स तिणि आलावा वत्तन्वा । बादरपुडुत्तिलिद्धि-अपज्जत्तस्स बादरेंदिय-अपज्जत्त-भंगो । सुहुमपुडुवीए सुहुमंडदिय-भंगो । णवरि सुहुम-पुट्टिकाओ ति तत्तन्वं ।

आउकाइयाणं पुट्टि-भंगो । णवरि मामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दब्बेण काउ-मुक्क-फल्लिण्ण-लेस्साओ तत्तन्वाओ । तेसिं चैव पज्जत्तकाले दब्बेण सुहुमआळणं काउलेस्सा ता । बादर-आळणं फलिहण्णलेस्सा । कुदो ? धणोदिधि-धणवलयागास-पट्टि-पार्णीराणं चालण्ण-दंसणगादो । धमल-किमण-णील-पीयल-त्ताअंन-पणीय-दंस-णादो ण धमलण्णमेव पणीयमिदि के पि भणंति, तण्ण वडडे । कुदो ? आयारभावे

ओर कामंणकारयोग ये दो योगः नपुसकयेत्त, चारों कराय, इमति ओर कुट्टुत्त ये दो अमान, गणयम, गवअइसीन, दुब्बसे कापोत्त ओर शुक्क लेदयाणं, भावये कृष्ण, नील ओर कापोत्त लेदयाण, अण्णमिद्धिक, अण्णमिद्धिक-मिथ्याल, अण्णमिद्धिक, आहारक, अनाहारक, साकारोप-योगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

रसमकार बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्यान्तक जीवोंके सामान्य, पर्यान्त ओर अपर्यान्त ये गान आलाप कहना चाहिये । बादर पृथिवीकायिक लक्ष्यपर्यान्तक जीवोंके आलाप बादर परेन्द्रिय अपर्यान्त जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिये । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिये । विशेषता यह है कि 'सूक्ष्म एकेन्द्रिय' के स्यात्पर 'सूक्ष्म पृथिवीकायिक' ऐसा आलाप कहना चाहिये ।

अन्वकायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिये । विशेष बात यह है कि सामान्य आलाप कहते समय 'पृथिवीकायिक' के स्यात्पर 'अन्वकायिक' और लेदया आलाप कहते समय द्रव्यसे अपर्यान्तकालमें कापोत्त और शुद्ध अण्णमं और पर्यान्तकालमें एकेन्द्रियकालमें द्रव्यसे कापोत्त कहना चाहिये । उन्हीं परम अन्वकायिक जीवोंके पर्यान्तकालमें द्रव्यसे कापोत्त लेदया कहना चाहिये । तथा बादरकायिक जीवोंके एकेन्द्रियकालमें शुद्ध लेदया कहना चाहिये । यतोक्ताधियात्त ओर धमलण्णयत्त द्वारा आहारमये गिरे हुए पानीका धमलण्ण लेदया जाता है । यथां पर क्तिन्ने ही आहार लेदया कहते हैं कि, धमल, कृष्ण, नील, पौत्त, एक और आलाप वर्णका पानी लेदया आहारमये पानी परकटत्तन्वं ही होता है, ऐसा कहना नहीं चलता है ? परंतु उनका यह

मद्धियाए संजोगेण जलस्स बहुवण्ण-ववहार-दंसणदो । आळणं सहाववण्णो पुण धवलो चैव ।

एवं चैव बादरआउकायस्स वि तिणि आलावा वत्तन्वा । णवरि पज्जत्तकाले दब्बेण फलिहलेस्सा एकत्ता चैव । णत्थि अणत्थ विससो । बादरआउकाइयाणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पि तिणि आलावा एवं चैव वत्तन्वा । बादरआउलद्धिअपज्जत्ताणं बादरआउलण्वत्ति-अपज्जत्त-भंगो । सुहुमआउकाइयाणं सुहुमपुडुविकाइय-भंगो । सुहुमआउकाइयाणिव्वत्ति-पज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च सुहुमपुडुविपज्जत्तापज्जत्त-भंगो ।

तेउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्ता-पज्जत्ताणं च पज्जत्त-णामकम्मोदयेउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादर-तेउलद्धिअपज्जत्ताणं च, आउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं पज्जत्तणामकम्मोदयआउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं

कहना युक्ति संगत नहीं है, क्योंकि, आधारके होने पर मट्टीके सयोगसे जल अनेक वर्णवाला हो जाता है ऐसा व्यवहार देखा जाता है । किन्तु जलका स्वाभाविक वर्ण धवला ही है ।

रसमकार बादर अन्वकायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्यान्त ओर अपर्यान्त ये तीन आलाप कहना चाहिये । विशेष बात यह है कि उनके पर्यान्तकालमें द्रव्यसे एक स्फटिक वर्णवाली शुद्ध लेदया ही होती है, इसके सिवाय अन्य पृथिवीकायिकके आलापोंसे अन्वकायिकके अन्य आलापोंमें और कोई विशेषता नहीं है । इसप्रकार बादर अन्वकायिक निर्वृत्तिपर्यान्तक जीवोंके उक्त तीन आलाप कहना चाहिये । बादर अन्वकायिक लक्ष्यपर्यान्तक जीवोंके आलाप अन्वकायिक निर्वृत्त्यपर्यान्तक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिये । सूक्ष्म अन्वकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । सूक्ष्म अन्वकायिक निर्वृत्तिपर्यान्तक, सूक्ष्म अन्वकायिक निर्वृत्त्यपर्यान्तक और सूक्ष्म अन्वकायिक लक्ष्यपर्यान्तक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके पर्यान्त ओर अपर्यान्त आलापोंके समान जानना चाहिये ।

तैजस्कायिक जीवोंके ओर उन्हीं पर्यान्तक अपर्यान्तक जीवोंके, बादरतैजस्कायिक जीवोंके ओर उन्हीं बादरतैजस्कायिक पर्यान्तक अपर्यान्तक जीवोंके, पर्यान्त नामकर्मके उदय-चाले तैजस्कायिक जीवोंके ओर उन्हींके पर्यान्त अपर्यान्त भेदोंके तथा बादर तैजस्कायिक लक्ष्यपर्यान्तक जीवोंके आलाप अन्वकायिक जीवोंके ओर उन्हींके पर्यान्तक अपर्यान्तक भेदोंके, बादर अन्वकायिक जीवोंके ओर उन्हींके पर्यान्तक अपर्यान्तक भेदोंके, पर्यान्त नामकर्मके उदय-चाले अन्वकायिक जीवोंके ओर उन्हींके पर्यान्तक अपर्यान्तक भेदोंके, तथा बादर अन्वकायिक

सुगवणलेस्साओ । एवं वादरवाळणं तेसि पज्जत्तणं च दव्वलेस्साओ हवंति । जदि वि मुग्गा अणेववण्णा, तो वि रुडिवसा सामलवण्णो मुग्गवण्णो चि धेप्पदि । सुहुम-वाळणं सुहुमतेउ-भंगो ।

*** वणफफहाइयाणं भणमाणे अरिथि एयं गुणद्वणं, वारस जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्ख-गदी, एइंदियजदी, वणफफहाइओ, तिण्णि जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो

और मूग के वर्णवाली लेख्याएं होती हैं । इसीप्रकार वादर वायुकायिक सामान्य जीवोंके और उन्हीं वादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंके द्रव्य लेख्याए होती हैं । यद्यपि मूग अनेक वर्णवाली होती है, तो भी रुडिके वरासे 'इयमलवर्ण' ही मूगका वर्ण प्रकृतमें ग्रहण किया गया है । सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए ।

वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, और वारह जीवसमास होते हैं, जिनमें समतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक पर्याप्त, समतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, इसप्रकार प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके चार जीवसमास होते हैं । वादरनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, वादरनित्यनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, वादरचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, वादरचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त आठ जीवसमास होते हैं । चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीनों प्राण, चारों सदागं, तिर्यच-गति, एकैन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तिन योग, नपुंसत्ववेद, चारों कयाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान,

नं. २२२ वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

| गु | जी. | प | प्रा | स. | ग | इ | का | यो. | वे | क | सा | सय | द | ले. | म | म | सिद्धि | आ. | उ. |
|----|--------|----|------|----|---|---|----|------|----|---|------|-----|-----|-----|----|----|--------|------|-------|
| १ | १२ | ४५ | ४ | ४ | २ | १ | १ | ३ | १ | ४ | २ | १ | १ | ६ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि | माधा. | ४अ | ३ | ति | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ४ | कुमु | अस | अच | मा | ३ | मि | अम | आहा | माका. |
| | प्रले. | | | | | | | का.१ | | | कुमु | अशु | अशु | अशु | अ. | | | अना. | अना. |
| | ४ | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

चादरथाउकाइयल्लिअपज्जत्तणं च जह्जारुणेण भंगो । णवरि तेउकाइयाणं दव्वेण काउ-मुक्क-चत्तणिल्लेस्साओ । तेसि चैव पज्जत्तणं दव्वेण काउ-तवणिल्लेस्साओ । एवं पज्जत्तणमकम्मोदयाणं दोण्हं पि चत्तव्वं । वादरकाइयाणं तेउ-भंगो । एवं चैव तेसि-पन्नत्तणं । णवरि दव्वेण तवणिल्लेस्साओ । एव पज्जत्तणमकम्मोदयाणं पि दव्व-केस्सा चत्तव्वना ।

मुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं मुहुम-भंगो । वाउकाइयाणं तेउ-भंगो । णवरि दव्वेण काउ-मुक्क-चत्तणिल्लेस्साओ । तेसि पज्जत्तणं काउ-गोमुक्क-

नस्पतगर्वात्मक जीवोंके आलापोंके समान यथाक्रमसे जानना चाहिए ।

त्रियोगार्थ—तैजस्कायिक जीवोंके आलाप अष्कायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं, इस बातके गति करनेके लिये मूलमें 'इव' या 'सदसा' ऐसा कोई पाठ नहीं किया है । परंतु पहले अष्कायिक जीवोंके संपूर्ण भेद प्रमेयोंके आलाप कह आये हैं और यहाँ तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके कथन करतेना प्रकरण है, इसलिये प्रकृतमें तैजस्कायिक जीवोंके भेद-प्रमेयोंके आलाप अष्कायिक जीवोंके भेद-प्रमेयोंके आलापोंके समान बतलाये हैं यही समझना चाहिए । मूलमें आये हुए 'जह्जारुणेण' परसे भी इसी कथनकी पुष्टि होती है ।

त्रियोग बात यह है कि तैजस्कायिक जीवोंके उच्यसे कापोत, शुक्र और तपनीय लेख्या होती है । तथा उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्मजीवोंके द्रव्यसे कापोतलेख्या और पर्याप्तक वादर-जीवोंके तपनीय लेख्या होती है । इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सामान्य और पर्याप्त इन दोनोंही प्रकारके तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यलेख्या कहना चाहिए । वादर तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सामान्य तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यलेख्या कहना चाहिए । इसीप्रकार वादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके आलाप भी होते हैं । विशेषतया यह है कि इनके द्रव्यसे तपनीय अर्थात् शुक्रलेख्या होती है । इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके भी द्रव्यलेख्या कहना चाहिए ।

सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म अष्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए । वायुकायिक जीवोंके आलाप तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए । त्रियोग बात यह है कि द्रव्यसे कापोत, शुक्र, गोमूत्र और मूगके वर्णवाली लेख्याएं होती हैं । उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्म जीवोंके कापोतलेख्या और वादर पर्याप्त जीवोंके गोमूत्र

१ वादरवाळणं वाका तेउ य. x. x । गा. जी. ६९७

२ वा पनीरुक्को वरुगदिमा, पनत्ता गोमूत्रवर्णा, अव्यवर्णोत्तनुमाता । त. ए. वा ३ १ ७
३ वा मुक्कवाण । गोमुक्कवाण कम्मो जन्मवर्णो य । गो. जी ६९७ गोमुक्कवाणवाण्णान पग्गुवण-
वत्त ३ । वासा कम्मवत्त इत्थस्स वा व डोण्ह ॥ पि. गा. १२३

अण्णाण, अंसंजमो, अचक्रुदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, भिच्छत्तं, भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

नेमि चैव पञ्चज्ञानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, छ जीवसमासा, चत्तारि पञ्चपीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एंडंदिजजादी, वणप्फदिकाओ, ओराल्लियकाययोग, णंसुमयेद, चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, अंसंजमो, अचक्रुदंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, भिच्छत्तं, अण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{११} ।

तस्मिं चैव अपञ्चज्ञानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, छ जीवसमासा, चत्तारि अपञ्चपीओ, तिणि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एंडंदिजजादी, वणप्फदिकाओ, दो योग, ननुसकयेद, चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, अंसंजम, अचक्रुदंसण, दब्बेण प्रसंयम, अचक्रुदंसंन, दब्बसे छहो लेदयाप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाप, भव्यसिद्धि, भव्यसिद्धिक, भिव्यात्त, असात्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी बोले है ।

उन्हीं वनस्पतिकारिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें बताये गये बारह जीवसमासोंमेंसे पर्याप्तकालसंबन्धी छह प्रीव्यसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संबन्ध, तिर्यक्वगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकार, औदारिककाययोग, ननुसकयेद, चारों कमाय, कुमति और कुशुत ये दो अन्नान, असंयम, अचक्रुदंसंन, दब्बसे छहो लेदयापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयापं; भव्यसिद्धिक, भव्यसिद्धिक, भिव्यात्त, असात्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी बोले है ।

उन्हीं वनस्पतिकारिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्या-दृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें कहे गये बारह जीवसमासोंमेंसे छह अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संबन्ध, तिर्यक्वगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकार, औदारिककाययोग और काम्यकाययोग ये दो योग, ननुसकयेद, चारों कमाय, कुमति

नं. २२३ वनस्पतिकारिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

काउ-मुक्केलेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१२} ।

पत्तेयसरीरवण्णकईणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, चत्तारि पञ्चपीओ चत्तारि अपञ्चपीओ, चत्तारि पाण तिणि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एंडंदिजजादी, पत्तेयवण्णफदिकाओ, तिणि जोग, णंसुमयेद, चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, अंसंजम, अचक्रुदंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१३} ।

ओर कुशुत ये दो अन्नान, असंयम, अचक्रुदंसंन, दब्बसे कापोत और शुक्र लेदयापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाप, भव्यसिद्धिक, भव्यसिद्धिक, भिव्यात्त, असात्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी बोले है ।

प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकारिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकारिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संबन्ध, तिर्यक्वगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकवनस्पतिकार, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और काम्यकाययोग ये तीन योग, ननुसकयेद, चारों कमाय, कुमति और कुशुत ये दो अन्नान, असंयम, अचक्रुदंसंन, दब्बसे छहो लेदयाप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयापं; भव्यसिद्धिक, भव्यसिद्धिक, भिव्यात्त, असात्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी बोले है ।

नं. २२४ वनस्पतिकारिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

नं. २२५ प्रत्येकवनस्पतिकारिक जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

तेमिं चेन पञ्जत्तणं भणमणो अत्थि एय गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, चचारि पञ्जत्तीओ, चचारि पाण, चचारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पचेयसरीर-वणफ्फडाओ, जोरालियकायजोगो, णडंसयवेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, व्रचमनुदमण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभासिद्धिया, मिच्छंत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, मासारुवजुत्ता होंति अणगारु-ननुत्ता त्ता ।

तेसिं चेन अपञ्जत्तणं भणमणो अत्थि एयं गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, चचारि अपञ्जत्तीओ, तिणिण पाण, चचारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पचेयसरीरवणफ्फडाओ, दो जोग, णडंसयवेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अनकमुदंसण, दब्बेण काउ-भुलेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभासिद्धिया, मिच्छंत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणगारुवजुत्ता होंति

उर्द्धीं प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धीआलाप कहने पर— एक भिन्नाष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियायक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पति-काय, औदारिककाययोग, नुप्तकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अदान, असंजम, नुप्तकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अदान, असंजम, अचक्षुदर्शन, डब्यसे छोड़ें लेख्याएं, भवसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, आहारक, साकारोपयोगी और अजा-कारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धीं प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक भिन्नाष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियायक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियाय, औदारिककाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नुप्तकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अदान, असंजम, अचक्षुदर्शन, डब्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंजिक,

नं. २२६ प्रत्येकवृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|---|---|-----|-----|----|------|------|----|-----|-----|----|-----|-----|---------|-------|---|---|
| उ. | अ. | म | म | म | ले. | द | सप | क. | सा | सप | द | ले. | म | स | स | सांक्षि | आ. | उ | |
| १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि. | म. | न | न | न | मि. | अव. | म | कुम. | कुम. | अस | अव. | का | म. | मि. | अस. | आहा | सांभा | उ | |
| | | | | | | | अ | कुथु | कुथु | | | अशु | अ | | | जम | जना. | | |

अणगारुवजुत्ता वा ।

एवं णिव्यचिपञ्जत्तस्स वि तिणिण आलावा वत्तन्वा । लद्धिअपञ्जत्तणं पि एगो आलावो पचेयवणफ्फड-अपञ्जत्तण जहा तथा वत्तन्वो । जहा पचेयसरीराणं, तथा वादरणिगोदपडिद्धिदाणं पि वत्तन्वं ।

साधारणवणफ्फडकाइयाण भणमणो अत्थि एयं गुणह्माणं, अड जीवसमास, चचारि पञ्जत्तीओ चचारि अपञ्जत्तीओ, चचारि पाण तिणिण पाण, चचारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणफ्फडाओ, तिणिण जोग, णडंसयवेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्षुदर्शन, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया असवासीद्धिया, मिच्छंत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणगारुवजुत्ता होंति

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं । इसीप्रकार निवृत्तिपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । लब्धपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंका एक अपर्याप्त आलाप प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियायक अपर्याप्त जीवोंके आलापके समान कहना चाहिए । तथा, जिसप्रकार अभी प्रत्येकशरीर-वृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंके आलाप कहे हैं, उसीप्रकारसे वादरनिगोद-प्रतिष्ठितवृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंके भी आलाप कहना चाहिए ।

साधारण वृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्याष्टि गुणस्थान, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद इन दोनोंके वादर और सूरस ये दो दो भेद तथा इन चारोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे आठ जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारण-वृत्तस्पतिक्रियाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, और कर्मणकाययोग ये तीन योग, नुप्तकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अदान, असंजम, अचक्षुदर्शन डब्यसे छोड़ें लेख्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक,

नं. २२७ प्रत्येकवृत्तस्पतिक्रियायक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|---|---|-----|-----|----|------|------|----|-----|-----|----|-----|-----|---------|-------|---|
| उ. | अ. | म | म | म | ले. | द | सप | क. | सा | सप | द | ले. | म | स | स | सांक्षि | आ. | उ |
| १ | १ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | म. | न | न | न | मि. | अव. | म | कुम. | कुम. | अस | अव. | का | म. | मि. | अस. | आहा | सांभा | उ |
| | | | | | | | अ | कुथु | कुथु | | | अशु | अ | | | जम | जना. | |

सागारवजुता होति अणागारवजुता वा" ।

तेसि चैव पञ्जत्तारणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पञ्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, मायणवणफइकाओ, ओरात्थियकायजोगो, णडुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अमंत्रमो, अचक्खुदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-फउलेस्साओ; भव-भिट्ठिया अमत्तिसिट्ठिया; भिच्छत्तं, अमण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुता होति अणा-गारवजुता वा" ।

मिथ्यात्व, अमत्तिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं साधारण वतस्पतिकारिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-पर्याप्त, बादरचतुर्गति-निगोद-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये चार जीवसमान, चार पर्याप्तिया, चार प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकार्य, औदारिककार्ययोग, मयूमकवेद, चारों कयाप, कुमति और कुश्रुत ये दो अन्नान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे एवो केदसाप। भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयापं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, अमत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अ ६२८ साधारण वतस्पतिकारिक जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|---|---|---|---|---|----|
| १. | ओ. | ५ | ७. | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ३. |
| २. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

अ ६२९ साधारण वतस्पतिकारिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ७. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

तेसि चैव अपज्जत्तारणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, चत्तारि जीवसमासा चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणफइकाओ, वे जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दब्बेण काउ-सुक्खलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-फउलेस्साओ; भवसिद्धिया उ-भवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुता होति अणागारवजुता वा" ।

बादरसाधारणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणपणफइकाओ, तिण्णि जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-

उन्हीं साधारण वतस्पतिकारिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-पर्याप्त, बादर-चतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकार्य, औदारिकप्रकार्ययोग और कार्मणकार्ययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाप, कुमति और कुश्रुत ये दो अन्नान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेदयापं. भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयापं; गव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, अमत्तिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

बादर साधारणवनस्पतिकारिक जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त बादर नित्यनिगोद-पर्याप्त बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त और बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पति-काय, औदारिककार्ययोग, औदारिकप्रकार्ययोग और कार्मणकार्ययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कयाप, कुमति और कुश्रुत ये दो अन्नान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे

नं. २३० साधारण वतस्पतिकारिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

गील-ताउलम्मा, भवसिद्धिया अभयसिद्धिया, मिच्छन्, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, नागरुजुत्ता हति अणागरुजुत्ता वा” ।

तेसि चैन पञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, चत्तारि पञ्चत्तणीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिस्खिखगदी, एइंदियजदी, वादरसाधारण-णफइकाओ, ओरालियकूपजोगो, णवुंसयेवद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अनसमुदंमण, दव्वेण छ लेस्सा, भाणेण किण्ह-गील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छन्, असण्णिणो, आहारिणो, नागरुजुत्ता हति अणागरुजुत्ता वा” ।

उदां लेइयाए, नायमे इच्छ, नील और ऋपोत लेइयाए; अभयसिद्धिक; मिथ्यात्व, अणभिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेतु हैं ।

उन्ही नार साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याऽपि गुणस्थान, वादर नित्यनिगोद-पर्याप्त और वादर चतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तिया, चार प्राण, चारों सगणं, तिर्यक्गति, कर्पेन्द्रिय-जाति, वादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों रूपाय, कुमति और कथुत ये दो अज्ञान, प्रमंयम, अन्वशुदर्शन, द्रव्यसे छदों लेइयाए, भावसे कृष्ण, नील और ऋपोत लेइयाए; अभयसिद्धिक, अभयसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंशिक, आहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी हेतु हैं ।

न २३१ वादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. जि. मि. | प. ग. ४ ३ ४ | स. ग. १ १ १ | क. १ १ १ | वे. क. ४ ४ ४ | यो. ३ ३ ३ | ल. १ १ १ | स. १ १ १ | ले. ३ ३ ३ | म. २ २ २ | स. १ १ १ | सा. १ १ १ | आ. २ २ २ | उ. २ २ २ |
|-------------|-------------|-------------|----------|--------------|-----------|----------|----------|-----------|----------|----------|-----------|----------|----------|
| | | | | | | | | | | | | | |

न. २३२ वादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु. जि. मि. | प. ग. ४ ३ ४ | स. ग. १ १ १ | क. १ १ १ | वे. क. ४ ४ ४ | यो. ३ ३ ३ | ल. १ १ १ | स. १ १ १ | ले. ३ ३ ३ | म. २ २ २ | स. १ १ १ | सा. १ १ १ | आ. २ २ २ | उ. २ २ २ |
|-------------|-------------|-------------|----------|--------------|-----------|----------|----------|-----------|----------|----------|-----------|----------|----------|
| | | | | | | | | | | | | | |

तेसि चैन अपञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपञ्चत्तणीओ, चत्तारि सण्णाओ, तिस्खिखगदी, एइंदियजदी, वादरनिगोद-णफइकाओ, वे जोग, णवुंसयेवद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अनकमु-दंसण, दव्वेण काउ-सुकुलेस्सा, भाणेण किण्ह-गील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छन्, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, नागरुजुत्ता हति अणागरु-जुत्ता वा” ।

एवं साधारणसरीरवादनणफइणं पञ्चत्तणमक्रमेदयाणं तिण्णि आलावा वत्तवा । लद्धि-अपञ्चत्तणं पि एगो अपञ्चत्तलावो वत्तवो । सव्वसाधारणसरीरसुहुमाणं सुहुम-पुढवि-भंगो । णवरि चत्तारि जीवसमासा, सुहुमसाधारणसरीरवणफइकाओ चि वत्तवो । चउमदिण्णिगोदाणं साधारणसरीरवणफइकाइय-भंगो । तेसि वादराणं वादरसाधारणसरीर-

उन्ही वादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याऽपि गुणस्थान, वादर नित्यनिगोद-अपर्याप्त और वादर चतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों सगणं, तिर्यक्गति, कर्पेन्द्रियजाति, वादर निगोद वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपु-सन्वेद, चारों रूपाय, कुमति और कथुत ये दो अज्ञान, अमंयम, अन्वशुदर्शन, द्रव्यसे ऋपोत और शुल्ल लेइयाए, भावसे कृष्ण, नील और ऋपोत लेइयाए, अभयसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंशिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी हेतु हैं ।

इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उद्भववाले साधारणसरीर वादर वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । लब्धपर्याप्तरु साधारणसरीर वनस्पतिकायिक जीवोंका भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए । सभी सूक्ष्म साधारणसरीर वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि जीवसमास आलाप कहते समय 'चार जीवसमास' और काय आलाप कहते समय 'सूक्ष्म साधारणसरीर वनस्पतिकाय' ऐसा कहना चाहिए । चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप साधारणसरीर वन-

न. २३३ वादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. जि. मि. | प. ग. ४ ३ ४ | स. ग. १ १ १ | क. १ १ १ | वे. क. ४ ४ ४ | यो. ३ ३ ३ | ल. १ १ १ | स. १ १ १ | ले. ३ ३ ३ | म. २ २ २ | स. १ १ १ | सा. १ १ १ | आ. २ २ २ | उ. २ २ २ |
|-------------|-------------|-------------|----------|--------------|-----------|----------|----------|-----------|----------|----------|-----------|----------|----------|
| | | | | | | | | | | | | | |

सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-मावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छत्तं, मण्णिणो अमण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हँति अणागारुजुत्ता वा ।

“तेसिं चैव पज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण ण पण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि गण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दव्व-मावेहि छ लेस्सा,

और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं त्रसकारिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अर्थात्कालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पचेन्द्रिय जीवसंबन्धी सबन्धी पांच अर्थात्त जीवसमास, सन्धी पंचेन्द्रियोंके छहों अर्थात्तियां, असंज्ञी पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच अर्थात्तियां; सन्धी पचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोत्पत्त क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रिय-जातिकी आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैकल्पिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कयाय, कुम्भति और कुशुत ये दो अन्नान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याए; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, अमंजम, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २३२ पंचमपरिचित मिथ्यादृष्टि जीवोंके अर्थात्त आलाप

| उ. | जा | प | ग | म | ग | द | पा | पो | वे | रु | मा | सा | स्य | र | छे | म | म | संज्ञि | म. | उ | |
|----|----|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|-----|---|----|---|---|--------|----|---|---|
| १ | ५ | ५ | ७ | ४ | ६ | ४ | ४ | १ | २ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |
| २ | ५ | ५ | ७ | ४ | ६ | ४ | ४ | १ | २ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |
| ३ | ५ | ५ | ७ | ४ | ६ | ४ | ४ | १ | २ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |
| ४ | ५ | ५ | ७ | ४ | ६ | ४ | ४ | १ | २ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ४ | ६ | ४ | ४ | १ | २ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |

नामगणममाहृष्टिपट्टि जात अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो ।

अक्राह्यणं भणमाणे अस्थि अदीदगुणट्टाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीद-
पञ्चतीओ, अदीदपाणा, मीणसम्प्या, चट्टगदिमदीदो, अणिदियो, अक्राओ, अजोगो,
अगदोदो, अक्राओ, केवलगणं, गेव मंजमो गेव असंजमो गेव संजमसंजमो,
केवलदंयण, दन्-गीदि अलेसम, गेव भनसिद्विया गेव अभसिद्विया, सडयसम्भनं,
गेव मणिणो गेव अमणिणो, अणाहारिणो, मागार-अणागारेहि जुगवदुवुत्तुचा
वा होति ।

पुं तमक्राह्यणिच्यपिपञ्जत्तस्म सिच्छाहृष्टिपट्टि जात अजोगिकेवलि त्ति
मूलोघ-भंगो ।

तसक्राह्य-लट्टि-अपञ्जत्तणं भणमाणे अस्थि एयं गुणट्टाणं, पंच जीवसमासा,
छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छपपाण पंच पाण चत्तारि पाण,

पसक्राह्यिक मासाएगमस्सएट्टि जीनोंसे लेकर अजोगिकेवली निन तक्रके आलाप मूल
ओचालापके समान जानता चाहिए ।

राहायिक जीनोंके आलाप कहते पर—अतीत गुणस्थान, अतीत जीवसमास, अतीत
पर्यापि, गतीत प्राण, क्षीणसजा, अतीत चतुर्गति, अतीन्द्रिय, अक्राय, अयोग, अपगतवेद,
अक्राय, केवलज्ञान, सपम, असयम और संयमासयम इन तीनों विकल्पोंसे निमुक्त,
केवलज्ञान, द्रव्य और भावसे अलेस्य, भव्यमित्तिक और अभव्यमित्तिक इन दोनों विकल्पोंसे
रहित, शायिकमस्सएट्ट, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक,
मासर और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

एसप्रकार पसक्राह्यिक निर्घृतिपर्याप्तक जीनोंके मिथ्याएट्टि गुणस्थानसे लेकर
अजोगिकेवली गुणस्थान त हके आलाप मूल ओचालापोंके समान जानना चाहिए ।

पसक्राह्यिक लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्याएट्टि गुणस्थान,
त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुर्न्द्रिय, सधी और अमन्त्री पचेन्द्रिय सबधी पांच अपर्याप्त जीव-
मासा, संधी पचेन्द्रियोंके छतों अपर्याप्तिया, अमन्त्री पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच
अपर्याप्तियां, सधी पचेन्द्रियसे लेकर त्रीन्द्रियतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण,

अक्राह्यिक जीवोंके आलाप.

| प. जी. | प. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. |
|--------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |

चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, वीहंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, वे
जोग, गंधंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अपणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्णेण काउ-
सुक्कलेस्साओ, भावण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छंत्तं,
सणिणो असणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागरुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा ।

एत कायमगणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण अणुवादो मूलोघ-भंगो । गवरि विसेसो तेरह गुणट्टाणाणि, अजोगि-
गुणट्टाणं अदीदगुणट्टाणं च गत्थि, तदो जाणिज्जग मलोघालाना वत्तव्वा ।

मणजोगीणं भणमाणे अस्थि तेरह गुणट्टाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पञ्ज-
त्तीओ, दस पाण । केहं वचि-कायपाणे अवणेंति, तण्ण वडदे; तेसि मचि-भंभादो ।

पाच प्राण और चार प्राण, चारों सशणं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, छिन्द्रियजातिको
आदि लेकर चार जातियां, वसकाय, औदारिकमित्प्रक्राययोग और कर्मण-क्राययोग ये दो योग
नहुंसकवेद, चारों कपय, आदिके दो अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और
शुल लेदयाप. भावसे कृपा, नील और कापोत लेदयाणं; भव्यमित्तिक, अभव्यमित्तिक; मिथ्यात्व,
सञ्ज्ञिक, असञ्ज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपरयोगी और असाकारोपरयोगी होते हैं ।

इसप्रकार कायमर्गणा समाप्त हुई ।

योगमर्गणोंके अनुचाहसे आलापोंका क्रम मूल ओच आलापोंके समान जानना
चाहिए । विशेष बात यह है कि यहां पर तेरह ही गुणस्थान होते हैं, अजोगिगुणस्थान
और अतीतगुणस्थान नहीं होता है सो आगमाधिरोधसे जानकर मूल ओचालाप कहना
चाहिए ।

मनोयोगी जीवोंके आलाप कहते पर—आदिके तेरह गुणस्थान, एक सली-पर्याप्त
जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, वरुं प्राण होते हैं । कितने ही आचार्य मनोयोगियोंके दस
प्राणोंसे वचन और काय प्राण कम करते हैं, किन्तु उनका धेगा करना घटित नहीं होता है,
म्योंकि, मनोयोगी जीवोंके वचनबल और कायबल इन दो प्राणोंकी शक्ति पाई जाती है,

असक्राह्यिक लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

| प. जी. | प. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. | ग. अ. |
|--------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |

वचि-कायवलिमिच-पुगल-संधस्स अत्थिचं पेक्खिअ पञ्चत्तीओ होति चि सरिर-वचि-पञ्चत्तीओ अत्थि । चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद अचगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट णाण, सच संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणगारुवजुत्ता वा सागार-अणगारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{२३} ।

मणजोगि-मिच्छइद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, इसलिये ये दो प्राण उनके वन जाते हैं । उसीप्रकार वचनबल और कायबल प्राणके निमित्तभूत पुद्गलस्कन्धका अस्तित्व देखा जानेसे उनके उक्त दोनों पर्याप्तिया भी पाई जाती हैं इसीलिये उक्त दोनों पर्याप्तिया भी उनके वन जाती हैं । प्राण आलापके आगे चारों सन्नप तथा क्षीणसन्नस्थान भी है । चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्यमनो-योग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ये चार मनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेक्स्थान भी है । चारों कषय तथा अकषयस्थान भी है । आठों ज्ञान, सातो सयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यां, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यग्त्व, सन्निक तथा सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है । आहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सन्न-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सन्नप, चारों गतिया, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो

नं. २४२

मनोयोगी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|-----|----|----|---|------|----|---|----|---|---|-------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | १ | १ | २ |
| मि. | स | प | | | | | मनो | | | | | | | | | | | आहा | साका |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | अव | अना |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | यु उ |

दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणगारुवजुत्ता वा^{२४} ।

मणजोगि-सासणसम्मइद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, (तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणगारुवजुत्ता वा^{२५} ।

मणजोगि-सम्मामिच्छइद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सन्न-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सन्नप, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,

नं २४३

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|-----|----|-----|----|---|-------|----|--------|----|---|---|-------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ४ | ३ | ४ | १ | २ | ४ | २ | ६ | १ | १ | २ |
| मि. | स | प | | | | पचे | नस | मनो | | | अज्ञा | अस | चक्षु. | भा | ६ | म | मि. | आहा | साका |
| | | | | | | | | | | | | | अच | अ | | | | | अना |

नं २४४

मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|------|----|----|---|-------|----|-------|----|---|---|-------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | ६ | १ | १ | २ |
| मि. | स | प | | | | | मनो. | | | | अज्ञा | अस | चक्षु | मा | ६ | म | सासा | आहा | साका |
| | | | | | | | | | | | | | अच | अच | | | | | अना |

छ पञ्चमीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तसकाओ, चत्वारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, चत्वारि सण्णाओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्वारि मिम्माणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्माभिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणगारवजुत्ता वा" ।

"मणजोगि-असंजदसम्माड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चमीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्वारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णि गण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता

एक संबी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संध्याएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कसाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्याह, संधिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी अस्यतसस्यदृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक अविरतसस्यदृष्टि गुण-स्थान, एक संबी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संध्याएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और शायोपशमिक ये तीन सम्यत्त्व, संधिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

१ कोइतासंनिपाठ प्रतिग नास्ति ।

नं २३५ मनोयोगी अस्यतसस्यदृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

नं २३६ मनोयोगी अस्यतसस्यदृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

हँति अणगारवजुत्ता वा ।

मणजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चमीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्वारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णि गण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणगारवजुत्ता वा" ।

मणजोगि-पसत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वण, एओ जीवसमासो, छ पञ्चमीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्वारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, चत्वारि गण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, पयोगी होते हैं ।

मनोयोगी सयतासंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संबी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संध्याएं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, सयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और शायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संधिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संबी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संध्याएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, तसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कसाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविद्युद्धि ये तीन सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और शायोपशमिक

नं २३७ मनोयोगी सयतासंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

सण्णणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता होति अणागारवजुत्ता वा^{१०८} ।

मणजोगि-अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लि त्ति ताव मूलोघ-भंगो ।
णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा । सजोगिकेवल्लिस्स सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो
इदि दो मणजोगा वत्तव्वा । सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लि त्ति
ताव मूलोघ-भंगो । णवरि सच्चमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो । एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि,
णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो ।

मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि वारह्ण गुणट्ठणाणि, एगो जीवसमासो, छ
पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णणओ खीणसण्णणा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ,
पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

ये तीन सम्यक्त्व, सत्थिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अप्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवल्ली गुणस्थानतक मनोयोगी जीवोंके
आलाप मूल ओघालापोंके समान ही हैं, विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय
वारह्वे गुणस्थानतक चारों ही मनोयोग कहना चाहिए । किन्तु सयोगिकेवल्लीके सत्यमनो-
योग और असत्यमृया अर्थात् अनुभय मनोयोग ये दो ही मनोयोग कहना चाहिए ।

सत्यमनोयोगीयोंके आलाप मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवल्ली गुणस्थानतक
मूल ओघालापोंके समान हैं । विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक सत्यमनो-
योग आलाप ही कहना चाहिए । इसीप्रकारसे असत्यमृया अर्थात् अनुभय मनोयोगीयोंके
भी आलाप होते हैं । विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक असत्यमृया
मनोयोग आलाप ही कहना चाहिए ।

मृयामनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके वारह्ण गुणस्थान, एक सब्बी-पर्यान्त
जीवसमास, छहों पर्यान्तियां, दशों प्राण, चारों सक्कएं तथा क्षीणसबास्थान भी है । चारो
गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, मृयामनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है ।

नं. २४८

मनोयोगी प्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|----|-------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|-----|---|---|-------|---|---|
| गु | जी, | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले. | म | स | सक्कि | आ | उ |
| १२ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ४ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| सयो | स.प | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ४ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अयो | विना | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| विना | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

कसाय अक्कसाओ वि अत्थि, केवल्लणणेण विणा सत्त गाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण,
दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णणो, आहारिणो,
सागारवजुत्ता होति अणागारवजुत्ता वा^{१०९} ।

मोसमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणसण्णणओ त्ति ताव मणजोगि-भंगो ।
एक्को चेव मोसमणजोगो वत्तव्वो । एवं सच्चमोसमणजोगीणं पि वत्तव्वं ।

वचिजोगीणं मण्णमाणे अत्थि तेरह्ण गुणट्ठणाणि, पंच जीवसमासा, छ
पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, मण-सरीर-
पज्जत्तीहितो उप्पणसत्तओ सररीर-मणबलपाणा उच्चत्ति । ताओ वि उप्पणसमयदो जाव
जीविदचरिससमओ त्ति ताव ण विणस्संति । जेण मण-वचि-कायजोगा पाणेषु ण गहिदा

चारों कयाय तथा अकयायस्थान भी है । केवल्लबानके चिन्ता सात ज्ञान, सातों संयम,
आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों
सम्यक्त्व संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मृयामनोयोगी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकयाय गुणस्थान तकके
आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान हैं । विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते
समय एक मृयामनोयोग आलाप ही कहना चाहिए । इसीप्रकार सत्यमृयामनोयोगीयोंके भी
आलाप कहना चाहिए ।

वचनयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह्ण गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,
चतुरिन्द्रिय, असब्बी और सब्बी पंचेन्द्रिय जीवसवन्धी पांच पर्यान्त जीवसमास, छहों
पर्यान्तियां, पांच पर्यान्तिया, सब्बी पचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः दशों प्राण,
नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण होते हैं । मनःपर्यान्ति और शरीरपर्यान्तिले
उत्पन्न हुई शक्तियोंको मनोबलप्राण और कायबलप्राण कहते हैं । ये शक्तियां भी उनके
उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जीवनके अन्तिम समयतक नष्ट नहीं होती हैं ।
और जिसकारणसे मनोयोग, वचनयोग और काययोग प्राणोंमें नहीं प्रद्वण क्रिये गये हैं,
इसलिये वचनयोगीयोंके वचनयोगसे निरुद्ध अर्थात् युक्त अवस्थके होने पर भी दशों

नं २४९

मृयामनोयोगी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|----|-------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|-----|---|---|-------|---|---|
| गु | जी, | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले. | म | स | सक्कि | आ | उ |
| १२ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ४ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| सयो | स.प | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ४ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अयो | विना | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| विना | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

भावहे छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

सासणसम्मिद्धिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लि त्ति ताव मणजोगीणं भंगो । णवरि चत्तारि वचिजोगा वत्तव्वा । सजोगिकेवल्लिस्स सवचिजोगो असवचिजोगो च भवदि । सवचिजोगस्स सवचिजोग-भंगो । णवरि जत्थ सवचिजोगो तत्थ ते अवणेज्जण सवचिजोगो वत्तव्वो । मोसवचिजोगस्स वि मोसमणजोग-भंगो । णवरि मोसवचिजोगो वत्तव्वो । एवं सवचिजोगस्स वि वत्तव्वं । असवचिजोगस्स वचिजोग-भंगो । णवरि असवचिजोगो एक्को चैव वत्तव्वो ।

और भावसे छहों लेश्याणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सजिक, असजिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सासादनसस्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके वचनयोगी जीवोंके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । विशेष वात यह है कि वचनयोग आलाप कहते समय चार वचनयोग कहना चाहिए । सयोगिकेवली जिनके सत्यवचनयोग और असत्यसृपावचनयोग ये दो ही वचनयोग होते हैं । सत्यवचनयोगके आलाप सत्यमनो-योगके आलापोंके समान होते हैं । विशेष वात यह है कि आलाप कहते समय जहाँ पहले सत्यमनोयोग कहा गया है वहा उसे निकाल करके उसके स्थानमें सत्यवचनयोग कहना चाहिए । सृपावचनयोगके आलाप भी सृपामनोयोगके आलापोंके समान होते हैं । विशेषता यह है कि सृपामनोयोगके स्थान पर सृपावचनयोग कहना चाहिए । इसीप्रकारसे सत्यसृपावचनयोगके भी आलाप कहना चाहिये, अर्थात् उभयवचनयोगके आलाप सत्यसृपा-मनोयोगके आलापोंके समान जानना चाहिए । असत्यसृपावचनयोगके आलाप वचनयोग-सामान्यके आलापोंके समान होते हैं । विशेषता यह है कि असत्यसृपावचनयोग आलाप कहते समय एक असत्यसृपावचनयोग ही कहना चाहिए ।

न. २५२ वचनयोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | सं | ग. | द | का | गो | वे | क | ग्रा | मय. | द | ले | म | स | सनि | आ | उ. |
|-----|--------|---|------|----|----|---|----|----|----|---|------|-----|---|----|---|---|-----|---|----|
| १ | पृथ्वी | ६ | २० | ६ | ४ | ४ | २ | ४ | ३ | ३ | ३ | ७ | २ | ३ | ६ | २ | २ | १ | २ |
| मि. | नी | ५ | ९ | ६ | ४ | ४ | २ | ४ | ३ | ३ | ३ | ७ | २ | ३ | ६ | २ | २ | १ | २ |
| | व | ५ | ९ | ६ | ४ | ४ | २ | ४ | ३ | ३ | ३ | ७ | २ | ३ | ६ | २ | २ | १ | २ |
| | अम. | ५ | ९ | ६ | ४ | ४ | २ | ४ | ३ | ३ | ३ | ७ | २ | ३ | ६ | २ | २ | १ | २ |
| | म | ५ | ९ | ६ | ४ | ४ | २ | ४ | ३ | ३ | ३ | ७ | २ | ३ | ६ | २ | २ | १ | २ |

नेण तच्चिजोग-णिरुद्धे वि दस पाणा हवन्ति । चत्तारि मण्णाओ सीणमण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेडंदिजजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिणि वेद अणदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अह पाण, सच भंजम, चत्तारि दंमण, दव्व-भानेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, तण्णिणो अण्णिणो णेव अण्णिणो णेव अण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा मागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

वचिजोगी-मिच्छाद्वृष्टिं भणमणो अत्थि एयं गुणद्व्याणं, पंच जीवसमासा, छ पञ्चओ पंच पञ्चत्तीओ, दस पाण णव पाण अह पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि मण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेडंदिजजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-

माण होने हैं । प्राण आलापक आगे चारों मद्यप तथा क्षीणसत्तास्थान भी हैं । चारों गतियां, छन्दियजातिको आदि लेकर चार जातियां, तसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद तथा अपमनोवस्थान भी हैं । चारों कसाय तथा अकसायस्थान भी हैं । आठों ज्ञान, सातों मगम, चारों रसनि, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों मस्रका, सजिक, असाधिक तथा सजिक और असजिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है : आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वचनयोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादष्टि गुणस्थान, छन्दिय जीवोंसे लगाकर सती पचेन्द्रिय तकके जीवोंकी अपेक्षा पात्र पर्यान्ति जीवसमास, चारों पर्यान्तियां, पात्र पर्यान्तियां; चारों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों मत्राण, चारों गतिया, छन्दियजातिको आदि लेकर चार जातियां, तसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद, चारों कसाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य

न. २५० वचनयोगी जीवोंके आलाप.

| म | सी | प | श | मे | ग | र | स | गो | र | क | सा | स | द | ले | म | स | सत्रि | आ | उ |
|----|----|---|---|----|---|---|---|----|---|---|----|---|---|----|---|---|-------|---|---|
| १२ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

कायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणद्वगणणि, चोइस जीवसमासा, छ पज्ज-
त्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि
अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच
पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि
सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ,
पुढवीकायादी छक्काय, सत्त कायजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि
कैसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दन्व-भोवेहि छ
लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवासिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो
णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागासुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा
सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा^१ ।

काययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास,
छहो पर्याप्तिया छहों अपर्याप्तिया, पांच पर्याप्तियां पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तिया चार
अपर्याप्तिया. दशों प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच
प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण तीन प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों सन्नप तथा
क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतिया, एकेन्द्रियजातिको आदि लेकर पांचों जातियां, पृथिवी-
कायको आदि लेकर छहों काय, सातों काययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों
कपाय तथा अक्रपायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे
छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक तथा सब्बी
और असब्बी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी,
अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

न २५२

काययोगी जीवोंके आलाप

| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ | |
|------|----|----|------|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|----|---|---|-------|---|---|---|
| २३ | १४ | ६प | १०,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| अयो- | ६अ | ५प | ९,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| विना | ५अ | ५प | ८,६ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | ४अ | ४प | ७,५ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | ४अ | ४प | ६,४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | ४अ | ४प | ५,३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | ४अ | ४प | ४,२ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ |
| | ४अ | ४प | ४,२ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ |

६३८]

संत-परुवणणुयोगदारे जोग-आलाववण्णण

[१, १-

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणद्वगणणि, सत्त जीवसमासा, छ
पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण
छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि
गदीओ, एइंदियादी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, वेउव्वियमिस्सेण विणा छ
जोग तिण्णि वा, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि,
अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दन्व-भोवेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,
छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो
आहारिणो चैव वा, सागासुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि
जुगवदुवजुत्ता वा^२ ।

उन्हीं काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह
गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां,
दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण, चारों
सन्नप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां,
पृथिवीकाय आदि छहों काय, वैक्रियकामिश्रकाययोगके विना छह काययोग अथवा औदारिक-
काययोग, वैक्रियककाययोग और आहारककाययोग ये तीन काययोग, तीनों वेद तथा अप-
गतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अक्रपायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों
दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक,
असन्निक तथा सब्बी और असब्बी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक
अथवा आहारक ही होते हैं, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार-अनाकार उप-
योगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालमें जो वैक्रियकामिश्रके विना छह
अथवा तीन योग बतलाये हैं। इसका कारण यह है कि छठवें और तेरहवें गुणस्थानमें
आहारकसमुदात और केवलिसमुदातके समय भी विवक्षाभेदसे जब पर्याप्तता स्वीकार कर

न २५३

काययोगी जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ |
|------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|----|---|---|-------|---|---|
| २३ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| अयो- | ७ | ५ | ९ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| विना | ७ | ५ | ८ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ७ | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ७ | ५ | ६ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ७ | ५ | ५ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ७ | ५ | ४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ७ | ५ | ४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |

' तेषां चैव अपञ्जत्तार्यं भण्णमाणे अत्थि पंच' गुणद्वानाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णायो खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अण्णत्तेदो वि, चत्तारि कसाय अरुसाओ वा, छण्णाण, चत्तारि संजम,

अज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा तत्र उसकी ओक्षा पर्याप्त अवस्थामें भी छहों योग बन जाते हैं और जब अपर्याप्तता मान ली जाती है तब पर्याप्त अवस्थामें औदारिक, आहारक और चैत्रियिक ये तीन योग भी बनते हैं। इन्हींपर आहारमार्गणाके कथनमें पहले आहारक और अनाहारक ये दो आलाप शब्दोंके अन्तर एक आहारक आलाप ही बतलाया है। इसका भी कारण यह है कि तेरहवें गुणस्थानमें कैवलिसमुदातेके समय भी पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेसे आहारक और अनाहारक दोनों आलाप बन जाते हैं। परंतु कपाट, प्रतर और लोकपूर्ण अवस्थामें केवल अपर्याप्तताके स्वीकार कर लेने पर अनाहारक आलाप नययोगियोंकी पर्याप्त अवस्थामें नहीं बनता है-इसका यह कारण हुआ कि जब काययोगियोंके पर्याप्त अवस्थामें छह योग ऋहे जावें, तब आहारक और अनाहारक ये दोनों ही आलाप रहना चाहिए और जब केवल तीन योग ही ऋहे जावें तब एक आहारक आलाप ही रहना चाहिए। सतों समयोंके सन्ध्यामें भी यही विवक्षा भेर जान लेना चाहिये।

उर्ध्वी काययोगी जीवोंके अपर्याप्त कालसन्ध्या आलाप कहने पर—मिव्यादृष्टि, सासा-रुतस्यस्यदृष्टि, अरिततस्यस्यदृष्टि, प्रमत्तस्यत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चार प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीण गजस्थान भी है। चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग चैत्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कर्मणकाय-योग ये चार योग; तीनों वेद तथा अण्णत्तेदस्थान भी है; चारों रुपाय तथा अरुपायस्थान भी हैं, विभंगादि और मन-पर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और

१. 'वि' 'त्तारि' इति पाठ ।

न २५३ काययोगी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु | जी | प. | प्रा | म. | ग. | ३ | का. | यो. | वे. | क. | सा | स्य. | द. | ले. | म. | संज्ञि | आ | उ. |
|----|----|----|------|----|----|---|-----|-----|-----|----|----|------|----|-----|----|--------|---|----|
| १ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| २ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ४ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवुत्ता होति अणागारवुत्ता वा तदुभएण वा ।

कायजोगि-मिच्छाहृष्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, चोद्दस जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण गव पाण सत्त पाण अह पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, पंच काय-जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवुत्ता होति अणागारवुत्ता वा ।

यथाव्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुकु लेख्यापं, भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सस्यमिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, साक्षिक, असाक्षिक तथा अनुस्यस्थान भी है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञापं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, साक्षिक, असाक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २५५ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| गु | जी | प. | प्रा | म. | ग. | ३ | का. | यो. | वे. | क. | सा | स्य. | द. | ले. | म. | संज्ञि | आ | उ. |
|----|----|----|------|----|----|---|-----|-----|-----|----|----|------|----|-----|----|--------|---|----|
| १ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| २ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ४ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवज्जुत्ता होति अणागारवज्जुत्ता वा ।

कायजोगि-सासणसम्माहट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सातणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवज्जुत्ता होति अणागारवज्जुत्ता वा ।

और शुद्ध लेश्याप, भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और सन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अन्नान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं २५७ काययोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क. | हा | सय | द | ले | म | स. | सक्ति | आ. | उ. |
|-----|--------|----|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|---|----|---|----|-------|----|----|
| १ | ७ | ६अ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि | अपर्या | ५अ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | | ४अ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. २५८ काययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क. | हा | सय | द | ले | म | स. | सक्ति | आ | उ |
|-----|----|----|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|---|----|---|----|-------|---|---|
| १ | ७ | ६अ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि | सा | स | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | सा | स | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेसिं चैर पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, सत्त जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण पव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पच जादीओ, पुढवीकायादी छत्रकाया, ते जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभावसिद्धिया, मिच्छन्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारवज्जुत्ता होति अणागारवज्जुत्ता वा ।

तेसिं चैर अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भोवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया

उन्हीं काययोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तिया, चार पर्याप्तिया; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति आदि पाचों जालिया, पृथिवीकाय आदि छहों काय, ओशरिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अन्नान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, ओशरिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अन्नान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत,

न. २५६ काययोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु. | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क. | हा | सय | द | ले | म | स. | सक्ति | आ | उ |
|-----|-------|----|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|---|----|---|----|-------|---|---|
| १ | ७ | ६अ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि | प्रा. | ५ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | प्रा. | ५ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेभि चैव पञ्चत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि मण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया सासणममत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हेति अण्णाणमजुत्ता वा ।

“ तेभि चैव अपज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, अण्णाणमजुत्ता वा ।”

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाए, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिक काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यत्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाए, नर-गतिरिक्ते रिक्ता तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग,

न. २९० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु | उ | प | व | स | ग | क | सा | वे | यो | का | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |

न. २९० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु | उ | प | व | स | ग | क | सा | वे | यो | का | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |

तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कपाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसमत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अण्णाणमजुत्ता हेति अण्णाणमजुत्ता वा ।

कायजोगि-समामिच्छाद्विणीं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गण्णाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता वा हेति अण्णाणमजुत्ता वा ।”

कायजोगि-असंजदसम्याद्विणीं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ,

वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुलु लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी असत्यतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविस्तरसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संक्षी-पर्याप्त और संक्षी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चारों पचेन्द्रियजाति,

नं. २६१ काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| गु | उ | प | व | स | ग | क | सा | वे | यो | का | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |

पंचिदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, असंजम, तिणिण दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१३} ।

^{१३}तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, असंजमो, तिणिण दंसण, दव्व-भावेहि

त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये पांच योग, तीनों वेद, चारों कयाय, आविके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षापिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके

नं २६२ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| शु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स्य | द | ले | म | स | सक्ति | जा | उ. |
|----|------|---|-------|---|---|---|----|----|-----|-----|----|-----|-------|-----|---|-----|-------|-----|-------|
| २ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र | ६ | २ | २ | २ | २ |
| १ | ५ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | के.द. | सा | ६ | ३ | ३ | आहा | साका. |
| ५ | स.अ. | अ | | | | | | | मति | शुत | अव | अस | विना | | | आपो | अना | अना | |

नं २६३ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स्य | द | ले | म | स | सक्ति | जा | उ. |
|----|------|---|-------|---|---|---|----|----|-----|-----|----|-----|-------|-----|---|-----|-------|-----|-------|
| २ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र | ६ | २ | २ | २ | २ |
| १ | ५ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | के.द. | सा | ६ | ३ | ३ | आहा | साका. |
| ५ | स.अ. | अ | | | | | | | मति | शुत | अव | अस | विना | | | आपो | अना | अना | |

छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिणिण जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, असंजम, तिणिण दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१४} ।

कायजोगि-संजदांसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरा-लियकायजोगो, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, संजमांसंजमो, तिणिण दंसण, तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षापिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्रु लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षापिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी संयतासयत जीवोंके आलाप कहने पर— एक देशसंयत गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्थचगति और मनुष्यगति ये दो गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, समयसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

न. २६४ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| शु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स्य | द | ले | म | स | सक्ति | जा | उ. |
|----|------|---|-------|---|---|---|----|----|-----|-----|----|-----|------|-----|---|-----|-------|-----|----|
| २ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र | ६ | २ | २ | २ | २ |
| ५ | स.अ. | अ | | | | | | | मति | शुत | अव | अस | विना | | | आपो | अना | अना | |
| ५ | स.अ. | अ | | | | | | | मति | शुत | अव | अस | विना | | | आपो | अना | अना | |

दन्वेण छ लेसमाओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वां ।

कायजोगि-पमतसंजदानं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमामा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दम पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचि-दियजादी, तसकाओ, ओरालिय-आहार-आहारमिस्सा इदि तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि' गाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दन्वेण छ लेसमाओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वां ।

तेज, पम और शुलु लेश्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यन्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, संबी-पर्याप्त और समी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों सजाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे तेज, पम और शुलु लेश्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यन्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

१ गतिपू ' तिण्णि ' उति पाठ ।

नं २६६: काययोगी सयतासयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------------|------------|------|------|------|-------|------|------|------|-------|------|-------|------|------|-------|------|------|-------|------|------|---|
| गु. जी. १ | प. प्रा. ६ | प. प्रा. ४ | म. २ | ग. १ | स. ३ | ले. ६ | म. ३ | स. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | ले. ६ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | उ. २ | |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

न. २६६

काययोगी प्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------------|------------|------|------|------|-------|------|------|------|-------|------|-------|------|------|-------|------|------|-------|------|------|
| गु. जी. १ | प. प्रा. ६ | प. प्रा. ४ | म. २ | ग. १ | स. ३ | ले. ६ | म. ३ | स. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | ले. ६ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | उ. २ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

कायजोगि-अपमत्तसंजदानं भणमाणे अत्थि एय गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दम पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि गाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दन्वेण छ लेसमाओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वां ।

अपुव्यरणपहुडि जाव खीणकसाओ चि ताव कायजोगिणं मूलोघ-भंगो । णवरि ओरालियकायजोगो चैव सव्वत्थ वत्तव्वो ।

कायजोगि-केवलीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो दो वा, छ पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-रुम्मइयकायजोगो इदि तिण्णि जोग, अवगदवेदो,

काययोगी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसयत गुणस्थान, एक संबी-पर्याप्त जीवसमास. छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञके विना दोष तीन संज्ञाय, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे तेज, पम और शुलु लेश्याए, भव्यसिद्धिक, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थानतक काययोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान है । विशेष बात यह है कि काययोग आलाप ऋते समय सर्वत्र केवल एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए ।

काययोगी केवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, अथवा समुदातकी अपेक्षा पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, चार प्राण और केवलिसमुदातकी अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा दो प्राण, क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाय-

नं. २६७ काययोगी अप्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------------|------------|------|------|------|-------|------|------|------|-------|------|-------|------|------|-------|------|------|-------|------|------|
| गु. जी. १ | प. प्रा. ६ | प. प्रा. ४ | म. २ | ग. १ | स. ३ | ले. ६ | म. ३ | स. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | ले. ६ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | म. ३ | उ. २ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

होति अणागारुजुत्ता चा सागार-अणागारेहि जुगवदुजुत्ता चा^{३३} ।

ओरालियकायजोगी-मिच्छादृष्टीं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, सत्त जीव-समासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दम पाण गव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगी, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णण, अमंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणागारुजुत्ता चा^{३३} ।

आहारक, साज्जरोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा सागर और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञापं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिक-काययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अदान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं. भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संब्रिक, असंब्रिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २६९ औदारिक काययोगी जीवोंके आलाप

| गु | जी. | प | प्रा. | सं. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सति. | जा. | उ. |
|------|-----|---|-------|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|-------|----|
| १३ | ७ | ६ | १० | ४ | २ | ५ | ६ | १ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ |
| अयो. | पयो | ५ | ९ | ६ | ति | म | ६ | ओ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | म. | स | आना. | गाना. | |
| विना | | ४ | ८ | ७ | ७ | ४ | | | ६ | ६ | | | | | ५ | स | अना. | गाना. | |

नं. २७० औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| गु | जी. | प | प्रा. | सं. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सति. | जा. | उ. |
|-----|-----|---|-------|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|-------|----|
| १ | ७ | ६ | १० | ४ | २ | ५ | ६ | १ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ |
| मि. | पयो | ५ | ९ | ६ | ति | म | ६ | ओ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | म. | स | आना. | गाना. | |
| | | ४ | ८ | ७ | ७ | ४ | | | ६ | ६ | | | | | ५ | स | अना. | गाना. | |

अकसाओ, केवलणण, जहाक्खादिविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दवेण छ लेस्सा, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खदयसम्मत्तं, नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुजुत्ता चा होति^{३४} ।

ओरालियकायजोगीं भणमणे अत्थि तेरह गुणद्वानि, सत्त जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दम पाण गव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगी, तिणिण वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सत्त संजम, सण्णिणो असण्णिणो नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता

योग और कामणकाययोग ये तीन योग; अपगतवेदस्थान, अकपायस्थान, केवलद्वान, यथाव्यथाविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्यापं, भावसे शुक्कलेदया, भव्य-सिद्धिक, शायिकसम्पत्त्व, सब्बी और असंझी इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक; साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

औदारिककाययोगी जीवोंके आलाप कहते पर—आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तक जीवोंके सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्पत्त्व, संब्रिक, असंब्रिक तथा सब्बी और असंझी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है;

नं. २६८ काययोगी केवली जिनके आलाप.

| गु | जी. | प | प्रा. | सं. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सति. | जा. | उ. |
|-----|-----|---|-------|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|-----|----|
| १ | ५ | ५ | ४ | ० | ३ | १ | १ | ३ | ० | ० | १ | १ | १ | ६ | १ | १ | ० | २ | २ |
| सयो | ५ | ५ | ४ | ० | ३ | १ | १ | ३ | ० | ० | १ | १ | १ | ६ | १ | १ | ० | २ | २ |
| प अ | २ | २ | ४ | ० | ३ | १ | १ | ३ | ० | ० | १ | १ | १ | ६ | १ | १ | ० | २ | २ |

ओरालियकायजोगि-मायणममाइड्रीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजदी, तसकाओ, ओरालियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, मासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, मायाकरुवुत्ता मा अणारावुत्ता मा^{११} ।

“ओरालियकायजोगि-सम्मामिच्छाड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजदी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विण्णि गाणाणि तीहि मायाकरुवुत्ता मा अणारावुत्ता मा^{१२} ।

औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सती-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सक्षपं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे त्रों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, नासादनसम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और यत्नाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक भती-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सक्षपं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतिया, पंचेन्द्रियजति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और यत्नाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २७१ औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| नं. | जी. | प. | मा. | म. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | हा. | मय. | द. | ले. | स. | सक्षि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|------|-----|-------|-------|----|--------|-------|----|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | १ | १ | २ |
| मा. | | | | | ती | | | ओ. | | | मति. | अस. | के.द. | मा.द. | स. | आहा. | साका. | |
| प. | | | | | स | | | | | | मृत | अन. | विना | | | | अना | |

नं. २७२ औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| नं. | जी. | प. | मा. | म. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | हा. | मय. | द. | ले. | स. | सक्षि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-----|----|-----|----|-----|-----|-----|----|------|------|--------|-------|----|--------|-------|----|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | १ | १ | २ |
| मा. | | | | | ति. | | | ओ. | | | मति. | अस. | चक्षु. | मा.द. | स. | आहा. | साका. | |
| प. | | | | | स | | | | | | अना | मिभ. | जव. | | | | अना. | |

अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होति अणारावुत्ता वा ।

ओरालियकायजोगि-असंजदसममाइड्रीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजदी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होति अणारावुत्ता वा^{१३} ।

संजदासंजदपहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ताव कायजोगि-भंगो । णवरि सम्भत्थ ओरालियकायजोगो एक्को चव वत्तवो । सजोगिकेवली च पञ्चत्ता आहारि ति भण्णिदव्वा ।

चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन दान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और यत्नाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सती-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सक्षपं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन दान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षाधिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और यत्नाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिककाययोगी जीवोंके संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप काययोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । विदोष वात यद्य द्वे कि सर्वत्र योग आलाप कहते समय एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए । और सयोगिकेवलीके जीवसमास कहते समय पर्याप्तक जीवसमास, तथा आहार आलाप कहते समय आहारक, इत्सप्रकार कहना चाहिए ।

नं. २७३ औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| नं. | जी. | प. | मा. | म. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | हा. | मय. | द. | ले. | स. | सक्षि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|------|-----|-------|-------|----|--------|-------|----|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | १ | १ | २ |
| मा. | | | | | ति | | | ओ. | | | मति. | अस. | के.द. | मा.द. | स. | आहा. | साका. | |
| प. | | | | | स | | | | | | मृत | अन. | विना | | | | अना | |

ओरालियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणह्णणाणि, सत्त जीव-समासा, सण्णि-असण्णीहिंतो सजोगिकेवली वदिरित्तो ति अदीदजीवसमासेण सजोगिणा होद्ववं ? ण, दब्बमाणस्स अत्थिचं भावगद-पुब्बगहं च अस्सिउण तस्स सण्णित्तब्बुधुवगमादो । पुढवी-आउ-तेउ-पाउ-पत्तेय-साहारणशरीर-तस-पज्जत्तापज्जत्त-चोदस-जीवसमासाणं सत्त-अपज्जत्तजीवसमासेसु सजोगि-सत्तब्बुधुवगमादो वा । एसो अत्थो सव्वत्थ वत्तवो । छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्स-कायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अक्काओ वि अत्थि, विमंग-गणपज्जवणणेहि विणा छ पाणाणि, जहाक्खादसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दब्बेण काउलेस्सा । कि कारणं ? मिच्छाइड्डि-सासण-असंजद-

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा सात अपर्याप्त जीवसमास होते हैं ।

शंका—जब कि सयोगिकेवली जितेन्द्र सक्षी और असक्षी इन दोनों ही व्यपदेशोंसे रहित हैं, इसलिए सयोगी जिनको अतीत जीवसमासवाला होना चाहिए ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्रव्यमनके अस्तित्व और भावमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके आश्रयसे सयोगिकेवलीके संबन्धीपना माना गया है । अथवा, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक, प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक और वसकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तसंबन्धी चौदह जीवसमासोंमेंसे सात अपर्याप्त जीवसमासोंमें कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्रातगत सयोगिकेवलीका सत्त्व माना जानेसे उन्हें अतीत जीवसमासवाला नहीं कहा जा सकता है । यही अर्थ सर्वत्र कहना चाहिए ।

जीवसमास आलापके आगे छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और सयोगिकेवलीके कपाटसमुद्रातके कालमें दो प्राण होते हैं । चारों सक्ष्मापं तथा क्षीणसक्ष्मास्थान भी हैं, तिर्यच-गति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकैन्द्रियजाति आदि पावों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हैं । चारों कबाय तथा अकबायस्थान भी हैं । विमगावधि और मनःपर्यय ज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, यथाव्यत-विहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो समय, चारों दर्शन और द्रव्यसे कापोतेलेख्या होती हैं ।

शंका—द्रव्यसे एक कापोतेलेख्या ही होनेका क्या कारण है ?

सम्माइड्डीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वड्डुताण शरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि; छव्वण्णोरा-लियपरसाण्णं धवल-विस्ससोपचय-सहिद-छव्वण्णकम्मपरसाण्णहि सह मिलिदाणं कायोद-वण्णुप्पचीदो । कवाडगद-सजोगिकेवल्लिस्स वि शरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि । एत्थ वि कारणं पुब्बं व वत्तवं । सजोगिकेवल्लिस्स पुब्बिल्ल-शरीरं छव्वण्णं जदि वि हवदि तो वि तण्ण वेप्पदि; कवाडगद-केवल्लिस्स अपज्जत्तजोगे वड्डुमाणस्स पुब्बिल्ल-शरीरेण सह संबंधाभावादो । अहत्ता पुब्बिल्ल-छव्वण्ण-शरीरमस्सिउण उवयाणेण दब्बदो सजोगि-केवल्लिस्स छ लेस्साओ हवति । भावेण छ लेस्साओ । कि कारणं ? मिच्छाइड्डि-सासण-सम्माइड्डीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वड्डुमाणं किण्ह-णील-काउलेस्सा चेव हवति, कवाडगद-सजोगिकेवल्लिस्स सुक्कलेस्सा चेव भवदि, किंतु देव-णेरइयसम्माइड्डीणं सणुसगदीए उप्पण्णणं ओरालियमिस्सकायजोगे वड्डुमाणं अविण्ह-पुब्बिल्ल-भाव-लेस्साणं भावेण छ लेस्साओ लब्धंति चि । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, उवसससम्मत्त-

समाधान—औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके शरीरकी कापोतेलेख्या ही होती है, क्योंकि, धवलविल्लसोपचय सहित छहों वर्णोंके कर्म-परमाणुओंके साथ मिले हुए छहों वर्णवाले औदारिकशरीरके परमाणुओंके कापोत वर्णकी उत्पत्ति बन जाती है, इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके द्रव्यसे एक कापोतेलेख्या ही होती है ।

कपाटसमुद्रातगत सयोगिकेवलीके शरीरकी भी कापोतेलेख्या ही होती है । यहां पर भी पूर्वके समान ही कारण कहना चाहिए । यद्यपि सयोगिकेवलीके पहलेका शरीर छहों वर्णवाला होता है, तथापि वह यहां नहीं ग्रहण किया गया है, क्योंकि अपर्याप्तयोगमें वर्तमान कपाट-समुद्रात-गत सयोगिकेवलीका पहलेके शरीरके साथ सम्बन्ध नहीं रहता है । अथवा, पहलेके पडवर्णवाले शरीरका आश्रय लेकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा सयोगिकेवलीके छहों लेख्याएं होती हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंके भावसे छहों लेख्याएं होती हैं ।

शंका—औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके भावसे छहों लेख्याएं होनेका क्या कारण है ?
समाधान—औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके भावसे कृष्ण, नील और कापोतेलेख्याए ही होती हैं । और कपाटसमुद्रातगत औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके एक शुक्कलेख्या ही होती है । किंतु जो देव और नारकी मनुष्यगतोंमें उत्पन्न हुए हैं, औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान हैं और जिनकी पूर्वभव-सम्बन्धी भावलेख्याए अभी तक नष्ट नहीं हुई हैं, ऐसे जीवोंके भावसे छहों लेख्याए पाई जाती हैं, इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके छहों लेख्याएं कही गई हैं ।

लेख्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्व और सम्य-

मम्ममिच्छच्छेदि विणा चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो अस्सण्णिणो णेव अस्सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणगारवजुत्ता वा सागार-अणगारोहि ज्जगद्वजुत्ता वा” ।

‘ओरालियमिस्सकायजोगि-मिच्छाहड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीममासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, मिथ्याल्लके विना शेष चार सम्यग्त्व, संब्रिक, असंब्रिक तथा संबी और असंबी इन दोनों विकल्पोंमें रहित भी स्थान है । आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादष्टि गुणस्थान, मान अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पाच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सान प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पाच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यक्वगति चोर मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अक्षान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेस्या, भावसे छहों लेस्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्य-

न २७३ औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |

नं. २७५; औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |

भावेण किण्ह-गील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणगारवजुत्ता वा ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सासणसम्माहड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचि-दियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण किण्ह-गील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणगारवजुत्ता वा” ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-असंजदसम्माहड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचि-दियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, जहा देव-मिच्छाइट्टि-

सिद्धिक, मिथ्यात्व, संब्रिक, असंब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं । औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सबी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यक्वगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अक्षान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेस्या, भावसे छहों लेस्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, संब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—अधिरतमस्य-दष्टि गुणस्थान, एक सबी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यक्वगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिक-मिश्रकाययोग, पुरुषवेद, चारों कपाय, आदिके तीन क्षान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेस्या और भावसे छहों लेस्याएं होती हैं । यहा पर भावसे छहों लेस्या-

नं. २७६ औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |

सासणसम्मदिट्ठिणो तेउ-पम्म-सुव-कलेस्सोसु वट्टमाणा णट्ट-लेस्सा होऊण तिरिकब-मणुस्सेसुप्पज्जमाणा उप्पण-पढम-समए चेव किरुह-णील-काउलेस्साहि सह परिणमंति सम्माइट्ठिणो तथा ण परिणमंति, अतोमुहुत्तं पुंत्विच्चल्ल-लेस्साहि सह अच्चिय अणुलेस्सं गच्छंति । किं कारणं ? सम्माइट्ठिणं बुद्धि-ट्टिय-परमेट्ठिणं मिच्छाइट्ठिणं मरणकाले संभिलेसाभावादे । नेरइय-सम्मइट्ठिणो पुण चिराण-लेस्साहि सह मणुस्सेसुप्पज्जंति ।

अंके होनका कारण यह है कि जिसप्रकार तेज, पद्म और शुक्ल लक्ष्याओंमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देव तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते समय मनुष्यलक्ष्या तोकरके अर्थात् अपनी अपनी पूर्व शुभ लक्ष्याओंको छोड़कर (तिर्यंच और मनुष्योंमें) उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही कृष्ण, नील और कापोत लक्ष्यरूपसे परिणत हो जाते हैं, उसप्रकारसे सम्यग्दृष्टि देव अशुभ लक्ष्यरूपसे नहीं परिणत होते हैं किन्तु तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके प्रथमसमयसे लगाकर अन्तर्मुहूर्ततक पूर्व भवकी लक्ष्याओंके साथ रह कर पछि अन्य लक्ष्याओंको प्राप्त होते हैं, अतएव यहांपर छहों लक्ष्याए वन जाती हैं ।

शंका--तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले सम्यग्दृष्टि देव अन्तर्मुहूर्ततक अपनी पहली लक्ष्याओंको नहीं छोड़ते हैं, इसका क्या कारण है ?

समाधान--इसका कारण यह है कि बुद्धिमें स्थित है परमेष्ठी जिनके अर्थात् परमेष्ठीके स्वरूप चिन्तनमें जिनकी बुद्धि लगी हुई है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंके मरणकालमें मिथ्यादृष्टि देवोंके समान संश्लेश नहीं पाया जाता है, इसलिये अपर्याप्तकालमें उनकी पहलेकी शुभ-लेस्साएं-योंकी ल्यो बनी रहती हैं ।

विशेषार्थ--'सम्माइट्ठिण बुद्धि-ट्टिय परमेट्ठिणं मिच्छाइट्ठिणं मरणकाले सकिलेसा-भावादे' इस वाक्यके दो अर्थ संभव हैं । एक तो यह कि मरणके समय मिथ्यादृष्टियोंको जिसप्रकार संश्लेश होता है उसप्रकार जिनकी बुद्धिमें परमेष्ठी स्थित है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंको मरणके समय संश्लेश नहीं होता है । तथा दूसरा अर्थ इसप्रकारसे होता है कि सम्यग्दृष्टि देवोंके और जिनकी बुद्धिमें परमेष्ठी स्थित है ऐसे मिथ्यादृष्टि देवोंके मरणके समय संश्लेश नहीं पाया जाता है । प्रथम अर्थ करते समय 'मिच्छाइट्ठिणं' पदके आगे 'इव' पदकी अपेक्षा है और दूसरा अर्थ करते समय 'च' पदकी । परतु 'मिच्छाइट्ठिणं' इस पदके आगे इन दोनों पदोंमेंसे कोई भी पद नहीं पाया जाता है और प्रकरणको देखते हुए पहला अर्थ संगत प्रतीत होता है, इसलिये ऊपर अर्थमें पहले अर्थका ही ग्रहण किया है ।

किन्तु नारकी सम्यग्दृष्टि तो अपनी पुरानी विरतन लक्ष्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं ।

कारण, जादिविसेण संकिलेसाहियादे । भवसिद्धिया, उवसमसम्मचेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सगारुभुत्ता हंति अणागारुभुत्ता वा^{३००} ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओं, आयु-कालत्रलपाणा दो चेव हति, पंचिदियपाणा णत्थि; खीणावरणे खओवसमाभावादे खओवसम-लक्ष्ण-भाविदियाभावादे । ण च दंविदिएण इह पओजणमत्थि, अपज्जत्तकाले पंचिदियपाणाणमत्थित्त-पदुष्पायण-संतभुत्त-दंसाणादे । मण-वचि-उस्सासपाणा वि तत्थ णत्थि, मण-वचि-उस्सासपज्जत्ती-सण्णिणद-पोग्गलखंय-

शंका--नारकी सम्यग्दृष्टि जीव मरते समय अपनी पुरानी कृष्णादि अशुभ लक्ष्याओंको क्यों नहीं छोड़ते हैं ?

समाधान--इसका कारण यह है कि नारकी जीवोंके जातिविशेषसे ही अर्थात् स्वभावतः संक्षेपकी अधिकता होती है, इसकारण मरणकालमें भी वे उन्हे नहीं छोड़ सकते हैं ।

लेस्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, साक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर--एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं । किन्तु पांच इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं, क्योंकि, जिनके ज्ञानावरणादि कर्म नष्ट हो गये हैं ऐसे क्षीणावरण सयोगिकेवलीमें आवरण कर्मोंका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है, और इसलिये उनके क्षयोपशम लक्ष्ण भवेन्द्रियां भी नहीं पाई जाती हैं । तथा इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंसे प्रयोजन है नहीं, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें पांचों इन्द्रिय प्राणोंके अस्तित्वका प्रतिपादन करेवाला सत्यरूपणाका सूत्र देखा जाता है । मनोबलप्राण, वचनबलप्राण और श्वासोच्छ्वासप्राण भी औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके नहीं होते हैं, क्योंकि, मनुः पर्याप्ति, वचन पर्याप्ति और आनापान पर्याप्ति साक्षिक पौंडलिक स्कन्धोंसे निर्मित

१ स. दू. ३७, ६१, ७६

न. २७७ औदारिकमिश्रकाययोगी अस्यतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|---|----|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| अवि | स | अ. | अ. | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

गिञ्चिन्दि-मपाणमज्जा-मञ्जुमत्तीणां क्वाडगद-केवलिग्घि अभावाद्दो । अहवा तेसि कारणभूद-पज्जत्तीओ अत्थि चि पुणो उरिम-उट्टममयपहुडि वचि-उत्सासपाणाणं समणा मदि नत्तारि वि पाणा इत्ति । खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ,

स्वप्न मंत्राओंमें अर्थात् मन, वचन और द्यासोच्छ्वास प्राणोंसे सयुक्त शक्तियोंका कपाट समुदागत-कैवल्यमें अभाव पाया जाता है। अथवा, समुदागत-कैवल्यके वचनबल और द्यासोच्छ्वास प्राणोंकी कारणभूत वचन और आनापान पर्याप्तियां पाई जाती हैं, इसलिये जो कारणसमुदागत अनन्तर होनेवाले मतरसमुदागतके पश्चात् उपरिम छेदे समयसे लेकर आगे वचनबल और द्यासोच्छ्वास प्राणोंका सद्भाव हो जाता है, इसलिये सयोगिकेवल्यके आहारमिश्रकाययोगमें चार प्राण भी होते हैं।

विशेषार्थ—समुदागत कैवल्यके अपर्याप्त अवस्थामें आयु और काय ये दो प्राण होते हैं और आठ प्राण नहीं होते हैं। उनमेंसे पाचों इन्द्रिय प्राण तो इसलिये नहीं होते हैं कि उनके मानावरण कर्मका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है। कदाचित् यह कहा जा सकता है कि कैवल्यके पांचों उच्छेदियों पाई जाती हैं इसलिये द्रव्येन्द्रियोंकी अपेक्षा उनके पांच प्राण मान लेना चाहिये। परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका उपचारसे ही ग्रहण किया है, मुख्यतासे नहीं। यदि इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका मुख्यतासे ग्रहण करना स्वीकार किया जावे तो अपर्याप्तकालमें पाच इन्द्रिय प्राणोंका सद्भाव नहीं बन सकता है। परन्तु अपर्याप्तकालमें पाचों इन्द्रियप्राण होते हैं ऐसा आगमवचन है, इसलिये यह मित हुआ कि इन्द्रिय प्राणोंमें मुख्यतासे पांच भव्येन्द्रियोंका ही ग्रहण किया गया है और ये भव्येन्द्रिया कैवल्यके होती नहीं हैं, इसलिये उनके पाचों इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं। उसीप्रकार कैवल्यके अपर्याप्त अवस्थामें मनोबल, वचनबल और द्यासोच्छ्वास ये तीन प्राण भी नहीं होते हैं, क्योंकि, इन तीनों प्राणोंकी कारणभूत मन, वचन और आनापान ये तीन पर्याप्तियां हैं। परन्तु अपर्याप्त अवस्थामें ये तीनों पर्याप्तिया होती नहीं हैं, इसलिये पर्याप्तियोंके अभावमें उनके उक्त तीनों प्राण भी नहीं पाये जाते हैं। इसप्रकार इन आठ प्राणोंके अतिरिक्त कैवल्यके अपर्याप्त अवस्थामें शेष दो प्राण पाये जाते हैं। अथवा, कैवल्यके धियमाल शरीरकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्राणोंकी कारणभूत पर्याप्तियां रहती ही हैं, इसलिये छेदे समयसे वचनबल और द्यासोच्छ्वास ये दो प्राण और माने जा सकते हैं। इसप्रकार पूर्वोक्त दोनों प्राणोंमें इन दोनों प्राणोंके मिला देने पर कैवल्यके औदारिकमिश्रकाययोगमें चार प्राण भी करे जा सकते हैं। मन-पर्याप्तिके रहने पर भी कैवल्यके मनःप्राण नहीं माना है, इनका कारण यह है कि मनःप्राणमें भावमन और मन-पर्याप्ति ये दोनों कारण हैं, इसलिये एतन्में जहां कैवल्य एक कारण होता है वहां मनःप्राण नहीं कहा गया है। कैवल्यके भावमन नहीं पाया जाता है, इसलिये मनःपर्याप्तिके रहने पर भी मनःप्राण नहीं कहा गया है और शेष सभी जीवोंके अपर्याप्त अवस्थामें भावमनका अस्तित्व होते हुए भी मनःपर्याप्ति

ओरालियमिससकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणणं, जहाक्खादविहारसुद्धि-संजमो, केवलदंसणं, दवणेण काउलेस्सा, मूलशरीरस्स छ लेस्साओ संति ताओ किण्ण उच्चंति चि मणिदे ण, चोहस-रज्जु-आयमेण सत्त-रज्जु-विथारेण एक-रज्जुमादि कादूण वड्ढि विथारेण वारिद-जीवि-पदेसाणं पुव्वसररेण संखेज्जंगुलोमाहेणेण संबधाभावाद्दो । भावे वा जीविपदेस-परिमाणं शरीरं होज्जा । ण च एवं, वंधहरस्सः शरीरस्स तेचियमेत्तद्वान-पसरण-सत्ति-अभावाद्दो, ओरालियमिससकायजोगणहाणुवत्तीदो वा । ण चिराण-सररेण क्वाडगद-केवलिस्स संबधो अत्थि । भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खड्डयसम्मत्तं, णेव नहीं पाई जाती है, इसलिये मनःप्राण नहीं माना गया है।

प्राण आलापके आगे क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, ब्रह्मकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, अपगतवेदस्थान, अरुपायस्थान, केवलज्ञान, यथाव्यातविद्यारज्जुसंयम, केवलदर्शन, और द्रव्यसे कापोत लेख्या होती है।

शंका—सयोगिकेवल्यके मूलशरीरकी तो छहों लेख्याएं होती हैं, फिर उन्हें यहाँ क्यों नहीं कहते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कपाटसमुदागतके समय चौदह राजु आयाम (लम्बाई) से और सात राजु विस्तारसे अथवा चौदह राजु आयामसे और एक राजुको आदि लेकर बड़े हुए विस्तारसे व्याप्त जीवके प्रदेशोंका संख्यात अंगुलकी अवगाहनावाले पूर्व शरीरके साथ संबन्ध नहीं हो सकता है। यदि संबन्ध माना जायगा, तो जीवके प्रदेशोंके परिमाणवाला ही औदारिक शरीरकी होना पड़ेगा। किन्तु ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि, विशिष्ट बंधको धारण करनेवाले शरीरके पूर्वोक्त प्रमाणरूपसे पसरने (फैलने) की शक्तिका अभाव है। अथवा, यदि मूलशरीरके कपाटसमुदागत प्रमाण प्रसरणशक्ति मानी जाय तो फिर उनकी औदारिकमिश्रकाययोगता नहीं बन सकती है। तथा कपाटसमुदागतकेवल्यका पुराने मूलशरीरके साथ संबन्ध है नहीं, अतएव यही निष्कर्ष निकलता है कि सयोगिकेवल्यके मूलशरीरकी छहों लेख्याएं होनेपर भी कपाटसमुदागतके समय उनका ग्रहण नहीं किया जा सकता है। किन्तु औदारिकमिश्रकाययोग होनेके कारण एक कापोतलेख्या ही कही गई है।

विशेषार्थ—पूर्वाभिमुख कैवल्यके समुदागत करने पर कपाटसमुदागतमें जीवके प्रदेश ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और उत्तर दक्षिण सात राजु फैल जाते हैं। तथा उत्तराभिमुख कैवल्यके कपाटसमुदागतके समय ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और पूर्व पश्चिम एक राजुको आदि लेकर बड़े हुए विस्तारके अजुलार फैल जाते हैं, परन्तु मूलशरीर संख्यात अंगुलकी अवगाहना प्रमाण ही होता है, इसलिये मूलशरीरकी लेख्या औदारिकमिश्रकाययोगमें नहीं ली जा सकती है। किन्तु उस समय जो नो-कर्मवर्णाएं आती हैं उन्हींकी लेख्या ली जायगी। अतः कैवल्यके औदारिकमिश्रकाययोगकी अवस्थामें द्रव्यसे कापोतलेख्या कही है।

सण्णियो नेव असण्णियो, आहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा^{१०८} ।

वेउव्वियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणह्णानि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, निरयगदी देवगदि चि दो गदीओ, पंचि-दियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१०९} ।

द्रव्यलेइया आलापके आगे भावसे शुक्कलेइया, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यस्त्व, साक्षिक और असंक्षिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे जुगपत् उपयुक्त होते हैं ।

चैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके चार गुणस्थान, एक सक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सत्तापं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेइयाप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यस्त्व, साक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २७८ औदारिकमिश्रकाययोगी सयोजिकेवलीके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|------|----|---|-----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | ज्ञा | सय | द | ले. | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | २ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| सयो | अप | अ | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह | ह |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं २७९ चैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|---|---|---|----|----|----|---|------|------|----|---|-----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | ज्ञा | सय | द | ले. | म | स | सति | आ | उ |
| ४ | १ | ८ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | १ | ४ | ६ | ६ | २ | ३ | ६ | २ | ६ | १ | १ | २ |
| मि | सा | सय | अवि | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

वेउव्वियकायजोगी-मिच्छाइह्णं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{११०} ।

^{११०}वेउव्वियकायजोगी-सासणसम्मह्णं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी,

चैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सत्ताप, नरकगति और देवगति ये दो गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेइयापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, साक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

चैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सत्तापं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चैक्रियिककाययोग, तीनों

नं. २८० चैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|------|----|---|-----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | ज्ञा | सय | द | ले. | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | १ | २ |
| मि | मप | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. २८१ चैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|------|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | १ | ४ | ४ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | १ | २ |
| सा. | सा.प | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

वेदविव्यमिस्सकायजोगि-मिच्छादृष्टीं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेदविव्यमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दब्बेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा^{२५} ।

“वेदविव्यमिस्सकायजोगि-सासणसम्महादृष्टीं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी,

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सबी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो दर्शन, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत-लेश्या, भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सबी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाए, देवगति,

१ ग सासणो गायपुण्णे । गो जी १२८

नं २८५ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|
| गु | जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | | |

न. २८६ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|
| गु | जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | | |

तसकाओ, वेदविव्यमिस्सकायजोगो, गबंधुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेदविव्यमिस्सकायजोगि-असंजदसम्महादृष्टीं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, वे गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेदविव्यमिस्सकायजोगो, पुरिस-गबंधुंसयवेदा चि दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउलेस्सा, भावेण जहणिया काउलेस्सा तेउ-पम्म-सुव-कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा^{२६} ।

पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, नपुसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सबी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद और नपुसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे जघन्य कापोत लेश्या और तेज, पद्म तथा शुक्र लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं २८७ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|
| गु | जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | | |

आहारकायजोगाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, त्म पाण, चचारि मण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, आहार-कायजोगो, पुरिमवेदो, इत्थि-णउंसवेदा णत्थि । किं कारणं ? अप्पसत्थवेदेहि सहा-हरिद्धी ण उप्पञ्जदि ति । चचारि कमाय, तिण्णि गाण, मणपञ्चवणाणं णत्थि । कारणं, आहार मणपञ्चवणाणाणं महाणद्वणलम्बणविरोहादो । दो संजम, परिहारसुद्धिअंजमो णत्थि; एदेण पि मह आहारसरीरस विरोहादो । तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, मांण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मचं, उवसमसम्मचं णत्थि; एदेण पि मह विरोहादो । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होंति अणागारुजुत्ता वा^१ ।

आहारकामिकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर--एक प्रसक्तसंयत गुणस्थान, एक सती पर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारकामिकाययोग, पुरुषवेद, चारों कणाय, आदिके तीन दान, सामाधिक नहीं होते हैं ।

शंका--आहारकामिकाययोगी जीवोंके रीतिवेद और नपुंसकवेदके नहीं होनेका क्या कारण है ?

समाधान--न्यायिक, अद्रव्यन्त वेदोंके साथ आहारककच्छि नहीं उत्पन्न होती है । वेद आलापके आगे चारों कणाय, आदिके तीन दान होते हैं । मनःपर्याप्तज्ञानके नहीं होनेका यह कारण है कि आहारककच्छि और मन पर्याप्तज्ञानका सहानवस्थानलक्षण विरोध है अर्थात् ये दोनों एक साथ एक जीवमें नहीं रहते हैं । ज्ञान आलापके आगे सामायिक और त्रेपोपत्तिकायना ये दो समय होते हैं परंतु परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है, न्यायिक, इसके साथ भी आहारकसरीरका विरोध है । संयम आलापके आगे आदिके तीनों दर्शन, द्रव्यसे शुरुलेश्या, भावसे तेज, पण और शुरु लेश्याए; भव्यसिद्धिक, क्षायिक और शायोपशमिक ये दो समय रहते हैं, परंतु उपशमसम्यक्च नहीं होता है, न्यायिक, इसके साथ भी आहारकसरीरका विरोध है । सम्यग्रत्वं आलापके आगे सन्निक, आहारक, मान्दरोपयोगी और यन्तारोपयोगी होते हैं ।

१ मापजपसिधो पदमुपस्यत दोष्णि आहापा । पदस एरुपगदे णत्थि ति जत्तेसय जाणे ॥

गो जी ७२८

नं २८८ आहारकामिकाययोगी जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|------|-----|----|----|-----|-------|-------|-------|------|------|-----|------|------|-------|
| गु. जी. | प. | मा. | स. | ग. | क. | सा. | सग. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | व. |
| १ | ६ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | २ | ३ | २ | १ | २ | १ | २ | २ |
| म. | स.अ. | ज. | प. | म. | पु. | मति. | मामा. | के.द. | मा.३ | म. | धा. | स. | आहा. | साका. |
| | | | | | | भुत | उदो | विना | शुम. | हायो | स. | स. | आहा | अना. |
| | | | | | | अत्र. | अत्र. | अत्र. | शुम. | हायो | स. | स. | आहा | अना. |

आहारमिस्रकायजोगाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चचीओ, सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्रकायजोगो, पुरिमवेदो, चचारि कमाय, तिण्णि गाण, दो संजमा, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होंति अणागारुजुत्ता वा^१ ।

कम्मइयकायजोगाणं भणमाणे अत्थि चचारि गुणद्वणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्चचीओ पंच अपञ्चचीओ चचारि अपञ्चचीओ, सजोगिकेवल्लि पडुच दो पाण, सेसाणं सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चचारि पाण तिण्णि पाण; चचारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चचारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो पि अत्थि, चचारि

आहारकामिकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर--एक प्रसक्तसंयत गुणस्थान, एक सती अपर्याप्त जीवसमास छहों अपर्याप्तियां, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारकामिकाययोग, पुरुषवेद, चारों कणाय, आदिके तीन दान, सामाधिक और छंदोपस्थापना ये दो समय, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे जापोतलेश्या, भावसे तेज, पण और शुरु लेश्याए, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और शायोपशमिक ये दो समय रहते हैं, आहारक, मान्दरोपयोगी और यन्तारोपयोगी होते हैं ।

कामिकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर--सिध्याद्वष्टि, सासादत्तसम्यग्द्वष्टि, अविदत्तसम्यग्द्वष्टि और सयोगिनेवली ये चार गुणस्थान, सत्री-पंचेन्द्रिय जीवोंसे लेकर पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पाच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां प्रतर और लोकपूरण समुदातगत सयोगिकेवलीकी अपेक्षा आयु और कायवल ये दो प्राण होते हैं तथा शेष जीवोंके क्रमशः सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं । चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी हैं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति आदि पावों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, कामिकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हैं, चारों कणाय तथा अरुणायस्थान भी

१ प्रतिपु ' माऽ सुक्कलस्सा ' इति पाठ ।

न २८९

आहारकामिकाययोगी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|------|-----|----|----|-----|-------|-------|-------|------|------|------|----|-----|-------|
| गु. जी. | प. | मा. | स. | ग. | क. | सा. | सग. | द. | ले. | म. | सति. | आ. | व. | |
| १ | ६ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | २ | ३ | २ | १ | २ | १ | २ | |
| म. | स.अ. | ज. | प. | म. | पु. | मति. | मामा. | के.द. | मा.३ | म. | धा. | स. | आहा | साका. |
| | | | | | | भुत | उदो. | विना | शुम. | हायो | स. | स. | आहा | अना. |
| | | | | | | अत्र. | अत्र. | अत्र. | शुम. | हायो | स. | स. | आहा | अना. |

कम्मइयकायजोग-भिच्छाहृष्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागरुवजुत्ता वा^{११} ।

कम्मइयकायजोग-सासणसम्महृष्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदीए विणा तिणिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया,

कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञायें, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाँचों जातियां, पृथिवीनाय आदि छहों काय, कार्मणकाययोग, तर्तनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अन्नान, असंयम, आदिके दो वर्शन, द्रव्यसे शुक्कलेस्या, भावसे छहों लेस्याएँ, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सांखिक, असंखिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कार्मणकाययोगी सासादत्तसम्पददृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक सासादत्त गुण-स्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां; सात प्राण; चारों संज्ञायें, नरकगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, तर्तनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अन्नान, असंयम, आदिके दो वर्शन, द्रव्यसे शुक्कलेस्या, भावसे छहों

नं. २९१ कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|----|----|---|---|----|--------|----|---|---------|-----|-------|-----|----|----|----|---|-----|------|
| गु. | जी | पा | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | सं | सं | म | सा. | उ. |
| १ | अप | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ४ | २ | अस | २ | ३ | २ | १ | २ | ३ | १ | २ |
| २ | मि | ६अ | ७ | ४ | ५ | ६ | कार्म. | ३ | ४ | २ | अस | २ | ३ | २ | १ | २ | ३ | १ | २ |
| | | ५अ | ७ | ४ | ५ | | | | | सुम | अस | चक्षु | द्र | ३ | मि | स | ३ | अना | साका |
| | | ४अ | ५ | ४ | ५ | | | | | कुक्षु. | अच. | मा | ६अ | अस | अस | | | अना | अना. |

कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जन्न-विभंगणोणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खाद-विहारसुद्धिसंजमो असजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, अहवा छहि पज्जत्तीहि पज्जत्त-गुव्वसरिं पेमिखज्जुवयोरेण दब्बेण छ लेस्साओ हवंति । भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो, अणाहारिणो, गोकम्मगहणाभावदो । कम्मगहणमत्थित्तं पडुच्च आहारित्तं किण्ण उच्चिदि चि भणिदे ण उच्चिदि; आहारसस तिणिण-ससय-विरहकालोव-लद्धीदो । सागारुवजुत्ता हँति अणागरुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवटु-वजुत्ता वा^{१२} ।

हे. मनःपर्यवन्नान और विभगावधिन्नानके विना छह ज्ञान, यथाव्ययत विद्वारशुद्धिसंयम और असंयमये दो सयम, चारों वर्शन, द्रव्यसे शुक्कलेस्याहोती है। अथवा, केवलीके छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त पूर्व शरीरको देखकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेस्याएँ होती हैं। भावसे छहों लेस्याएँ, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पाच, सम्यग्स्त्व, सांखिक, असंखिक तथा सांखिक और असंखिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। अनाहारक होते हैं। आहारक नहीं होनेका कारण यह है कि कार्मणकाययोगी जीव नोकर्मवर्णियोंको ग्रहण नहीं करते हैं।

शंका—कार्मणकाययोगी अवस्थामें भी कर्मवर्णियोंके ग्रहणका अस्तित्व पाया जाता है, इस अपेक्षा कार्मणकाययोगी जीवोंको आहारक क्यों नहीं कहा जाता ?

समाधान—ऐसा शंकाकारके कहने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि उन्हें आहारक नहीं कहा जाता है, क्योंकि, कार्मणकाययोगिके समय नोकर्मणियोंके आहारका अधिक से अधिक तीन समयतक विरहकाल पाया जाता है।

आहार आलापके आगे साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे गुणपत्त उपशुक्त भी होते हैं।

नं २९० कार्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|----|----|---|---|----|-------|----|---|------|------|---|----|---|----|----|----|---|-----|----|
| गु. | जी | पा | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | सं | सं | सं | म | सा. | उ. |
| ५ | अप. | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ४ | २ | अस | ४ | ३ | २ | ५ | ५ | ३ | ५ | ३ | २ |
| मि. | तासा | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | कार्म | ३ | ४ | २ | अस | ४ | ३ | २ | ५ | ५ | ३ | ५ | ३ | २ |
| अदि. | सयो | ५ | ४ | ४ | ५ | ६ | | | | मन | यथा | ४ | ३ | २ | ५ | ५ | ३ | ५ | ३ | २ |
| | | ५ | ४ | ४ | ५ | ६ | | | | विम | विना | ४ | ३ | २ | ५ | ५ | ३ | ५ | ३ | २ |
| | | ५ | ४ | ४ | ५ | ६ | | | | विना | विना | ४ | ३ | २ | ५ | ५ | ३ | ५ | ३ | २ |

मागसम्मत्तं, सण्णियो, अणाहारिणो, सागारुञ्जुत्ता हति अणागारुञ्जुत्ता वा^{११} ।

कम्मइयकायजोग-असंजदसम्मइट्ठीणं भणमणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जचीओ, सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गदीओ, पंचिदिय-जादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, दो वेद, इत्थिवेदो णत्थि; चचारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, अणाहारिणो, सागारुञ्जुत्ता हति अणागारुञ्जुत्ता वा^{१२} ।

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसस्यस्त्व, सन्निक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कर्मणकाययोगी असंततसस्यग्घट्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अचित्तसस्यग्घट्टि गुणस्थान, एक मंजी-अपर्याप्त जीवसमान, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञायें, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कर्मणकाययोग, पुरुष और नपुंसक ये दो वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है । चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन यज्ञान, द्रव्यसे शुक्लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सस्यस्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २१२ कर्मणकाययोगी सासादनसस्यग्घट्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|--------|-----|-----|-----|
| उ | जी. | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा. | सय | द | ले | स | सत्ति. | आ | उ | |
| १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| सा | अप. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. २१३ कर्मणकाययोगी असंततसस्यग्घट्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|--------|-----|-----|-----|
| उ | जी. | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा. | सय | द | ले | स | सत्ति. | आ | उ | |
| १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| सा | अप. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

कम्मइयकायजोग-सजोगिकेवलीणं भणमणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जचीओ, दो पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणणं, जहक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा चैव; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णियो णेव असण्णियो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुञ्जुत्ता वा^{१३} ।

सुगमसजोगीणं ।

एव जोगमगणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण अणुवादो जहा मूलोघो णीदो तथा णेदव्वो । णवरि णव गुणट्ठाणणि ति वत्तच्चं; वेदे णिरुद्धे उवरिसगुणट्ठाणामावादो । अत्थि खीणसण्णा, अवगदजोगो,

कर्मणकाययोगी सयोगिकेवलीयोंके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण, क्षीणसशा. मणुष्यजाति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कर्मणकाययोग, अपगतवेद, अक्रपाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्लेश्या, अथवा ओदारिकशरीरकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं, किन्तु भावसे शुक्लेश्या ही होती है । भव्यसिद्धिक, क्षायिकसस्यस्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

अयोगी जीवोंके आलाप सुगम ही है ।

इसप्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे कथन करने पर आलापोंका क्रथन जैसा मूल ओघालापमें लिया गया है वैसा यहां पर भी लेना चाहिये । विशेष बात यह है कि यहां आदिके नौ गुणस्थान होते हैं ऐसा कहना चाहिए; क्योंकि वेदनिरुद्ध अवस्थामें अर्थात् वेदोंसे युक्त रहने पर ऊपरके गुणस्थानोंका अभाव है । तथा यहां पर क्षीणसंज्ञा, अपगतयोग, अपगतवेद, अक्रपाय, अलेश्या,

१ अ प्रतो ' त जहा णेदव्वा ' क प्रतो ' ज जहा णेदव्वा ' आ प्रतो ' तम्हा णेद मा ' इति पाठ ।

नं. २१४ कर्मणकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|--------|-----|-----|-----|
| उ | जी. | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा. | सय | द | ले | स | सत्ति. | आ | उ | |
| १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| सा | अप. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. | पु. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

सिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारवजुचा इति अणागारवजुचा वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणद्वुण्णाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुचा इति अणागारवजुचा वा” ।

इत्थिवेद-अपञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि ते गुणद्वुण्णाणि, ते जीवसमासा, छ अपञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो,

संस्कार, असांस्कार, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं स्वैवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहते पर—आदिके नौ गुणस्थान, सबी पर्याप्त और सबी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां पांच पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औरिककामयोग और वैश्रिककामयोग ये दस योग स्ववेद, चारों कपाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छान, अक्षयम, देशसंगम, सामायिक और छेवोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन वर्शन, प्रथम और भावसे छहों लेख्याप, भव्यासिद्धिक, अभव्यासिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, सत्तिक, असत्तिक; आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्वैवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहते पर—मिथ्याउष्टि और सासारन-सम्यग्उष्टि ये दो गुणस्थान, सबी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, चारों संज्ञाप, चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, औरिककामिभ्रान्तायोग, वैश्रिककामिभ्रान्तायोग और कार्मणकामयोग ये तीन योग; स्ववेद, चारों कपाय, आदिके दो अक्षयम, असयम, आदिके

न. २१६

स्वैवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|----|------|---|----|---|----|-------|------|------|------|------|-------|------|------|------|-------|------|------|
| गु. जी | प | प्रा | स | ग. | इ | का | यो | व | क | सा. | संय | ले | म | म | सो | भा | उ | |
| १ | १० | ४ | ३ | ३ | १ | १ | १० | १ | ४ | ६ | ४ | २ | ६ | २ | ६ | १ | २ | |
| स प. | ५ | ९ | ३ | ३ | १ | १ | १० | १ | ४ | ६ | ४ | २ | ६ | २ | ६ | १ | २ | |
| अस प | | | | | | | ग. ४ | गी | मन | क. ६ | मन | के द. | म | अ | आहा. | साका. | | |
| | | | | | | | विना. | विना | विना | विना | विना | विना | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| | | | | | | | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना |

अवगद्वेदो, अकसाओ, अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहि जुगवद्वुजुचा वा इति चि एदे आलावा ण वत्तन्वा । केवलदंसणं, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो च अवणेदन्वा । अणीदिया वि अत्थि, अकाइया वि अत्थि, एदे वि आलावा ण वत्तन्वा ।

“इत्थिवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणद्वुण्णाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, आहार-आहारमिस्सकायजोगेहि विणा तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, मणपञ्च केवलणणेहि विणा छ णाण, परिहार-सुहुमसांपराइय-जहाक्खादविहारसुद्धि-संजमेहि विणा चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभव-भव्यासिद्धिक और अभव्यासिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, सत्तिक और असत्तिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त स्थान, इतने आलाप नहीं कहना चाहिए । तथा केवलज्ञान, केवलदर्शन, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयम, और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम इतने आलाप भी निकाल देना चाहिए । और अतिन्द्रिय भी होते हैं, अकार्यिक भी होते हैं, ये आलाप भी नहीं कहना चाहिए ।

स्वैवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके नौ गुणस्थान, सबी पर्याप्त, सबी-अपर्याप्त, असंज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, सबीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दसों प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, आहारककामयोग और आहारकमिश्रकामयोगके विना शेष तेरह योग, स्ववेद, चारों कपाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छान, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमके विना शेष चार संयम, आदिके तीन वर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यासिद्धिक, अभव्यासिद्धिक; छहों सम्यक्त्व,

नं २१५

स्वैवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|----|------|---|----|---|----|-------|------|------|------|------|-------|------|------|------|-------|------|
| गु. जी | प | प्रा | स | ग. | इ | का | यो | व | क | सा. | संय | ले | म | म | सो | भा | उ |
| १ | १० | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | १० | १ | ४ | ६ | ४ | २ | ६ | २ | ६ | १ | २ |
| स प. | ५ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | १० | १ | ४ | ६ | ४ | २ | ६ | २ | ६ | १ | २ |
| अस प | | | | | | | ग. ४ | गी | मन | क. ६ | मन | के द. | म | अ | आहा. | साका. | |
| | | | | | | | विना. | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना |
| | | | | | | | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना |

दो दंसण, दब्येण साउ-मुक्कलेस्सा, भावेण त्रिण्ह-णील-हाउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभममिद्धिया, मिन्दत्तं नामगसम्मचमिदि दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणागारवजुत्ता वा” ।

“इत्थिवेद-मिच्छाद्धीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पञ्चसीओ उ अयज्जचीओ पंच पञ्चसीओ पंच अपञ्चसीओ, दस पाण सत्त पाण गव पाण गत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह योग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्व-भवेहि छ

दो दर्शन, उब्यसं कापांत और जुलु लेस्याण, भाउसे कृष्ण, नील और कायेत लेस्याणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक: मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक, अन्त्रिच आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संश्री-पर्याप्त, सती अपर्याप्त, असंश्री-पर्याप्त और असंजी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, उर्द्धो पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण और मात प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्वीवेद, चारों कपाय, तीनों अमान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

न २२७ स्वीवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| शु | जी | सि. | प | प्रा | ग | ग | इ | का | यो | वे. | क | सा | सय | द | ले | म | स | सि | आ | उ |
|-----|-----|-----|---|------|---|---|---|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि. | ग | उप | प | ११ | ७ | ७ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| मा. | परि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

न. २२८ स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| शु | जी | सि. | प | प्रा | सं | ग | इ | का | यो | वे. | क | सा | सय | द | ले | म | स | सि | आ | उ |
|-----|-----|-----|---|------|----|---|---|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि. | ग | उप | प | ११ | ७ | ७ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| मा. | परि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्तणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चसीओ पंच पञ्चसीओ, दस पाण गव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणागारवजुत्ता वा” ।

तेसिं चैव अपञ्चत्तणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, वे जीवसमासा, छ अपञ्चसीओ पंच अपञ्चसीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, छहों लेस्याणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संक्षिक, असक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धो स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संश्री-पर्याप्त और असंश्री-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मचोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्वीवेद, चारों कपाय, तीनों अदान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याणं, मच्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संक्षिक, असंक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धो स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संश्री-अपर्याप्त और असंश्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और काम्रणकाययोग ये तीन योग स्वीवेद, चारों कपाय, आदिके दो अदान, असंयम, आदिके

नं. २२९ स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| शु | जी | सि. | प | प्रा | सं | ग | इ | का | यो | वे. | क | सा | सय | द | ले | म | स | सि | आ | उ |
|-----|-----|-----|---|------|----|---|---|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि. | ग | उप | प | ११ | ७ | ७ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| मा. | परि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

असंजमो, दो दसण, द्रव्येण काउ-सुकलेस्सा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भव-सिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छंत्ते, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार वजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१००} ।

इत्थिवेद-सासणसम्महडीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दसण, द्रव्य-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१०१} ।

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेस्यापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेस्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, साक्षिक, असक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

खीवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, संक्षी-पर्याप्त और सब्बी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों सन्नाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिथ्यकाययोगके विना शेष तेरह योग, खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

१ प्रतिपु 'तेउ' इत्यधिक पाठ समास्ति ।

नं ३००

खीवेदी मिथ्यादष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|----|-------|---|----|---|----|------|----|----|------|----|----|----|-------|----|--------|----|----|
| शु. | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | संक्षि | जा | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | स | अप | अ | अ | ति | म | प. | त्रस | ओ | मि | ओ | मि | वे | मि | कार्म | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ३०१

खीवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|------|-------|----|---|----|-----|-----|-----|------|--------|----|----|--------|----|----|--------|-----|-----|
| शु. | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | संक्षि | जा | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| सा. | स.प. | स.अ. | अ | ति | म | दे | पवे | आहा | दिक | विना | अज्ञा. | अस | अच | अज्ञा. | मा | दम | सा | आहा | अना |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दसण, द्रव्य भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१०२} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दसण, द्रव्येण काउ-सुकलेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो,

उन्मूलकान्तो सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, साक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्मूलकान्तो सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सन्नाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिक-मिथ्यकाययोग, वैक्रियिकमिथ्यकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; खीवेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेस्यापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, साक्षिक, आहारक,

१ प्रतिपु 'तेउ' इत्यधिक पाठ समास्ति ।

नं. ३०२

खीवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|------|------|----|---|----|-----|-----|-----|------|--------|----|----|--------|----|----|--------|-----|-----|
| शु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | संक्षि | जा | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| सा. | स.प. | स.अ. | अ | ति | म | दे | पवे | आहा | दिक | विना | अज्ञा. | अस | अच | अज्ञा. | मा | दम | सा | आहा | अना |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुचुत्ता ह्येति अणागारुचुत्ता वा° ।

इत्थियेद-सम्माभिच्छाद्वीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, उ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दम जोग, इत्थियेद, चचारि कसाय, तिण्णि पाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, अंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्माभिच्छं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुचुत्ता ह्येति अणागारुचुत्ता वा° ।

इत्थियेद-अंजदसम्माद्वीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो,

अनाहारकः साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक मशी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; छविद, चारों कपाय, तीनों अद्यानोंसे मिश्रित आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी अत्यंतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुण-

नं. ३०३ स्त्रीवेदी सासादतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-----|---|-----|----|---|----|-----|-----|-----|---|-----|----|---|----|---|---|----|---|----|
| ग | जो. | प | पा. | मं | ग | दं | का. | यो. | वे. | क | सा. | सय | द | ले | म | स | सि | आ | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

नं. ३०४ स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-----|---|-----|----|---|----|-----|-----|-----|---|-----|----|---|----|---|---|----|---|----|
| ग | जो. | प | पा. | मं | ग | दं | का. | यो. | वे. | क | सा. | सय | द | ले | म | स | सि | आ | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थियेद, चचारि कसाय, तिण्णि पाण, अंजमो, तिण्णि दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुचुत्ता ह्येति अणागारुचुत्ता वा° ।

इत्थियेद-संजदांसंजदाणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पाव

स्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; छविद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, श्रायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ३०५ स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-----|---|-----|----|---|----|-----|-----|-----|---|-----|----|---|----|---|---|----|---|----|
| ग | जो. | प | पा. | मं | ग | दं | का. | यो. | वे. | क | सा. | सय | द | ले | म | स | सि | आ | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

नं. ३०६ स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-----|---|-----|----|---|----|-----|-----|-----|---|-----|----|---|----|---|---|----|---|----|
| ग | जो. | प | पा. | मं | ग | दं | का. | यो. | वे. | क | सा. | सय | द | ले | म | स | सि | आ | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

लेम्माओ, भौण मुह्लेस्मा, भवभिमिद्विया, वेदेगेण विना दा मम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, मागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा ।

अन्धियेद-अनियद्वीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वयणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अन्धियेद, चचारि कसाय, तिण्णिण पाण, दो मंजम, तिण्णिण दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भौण गुमरुलेस्मा; भवसिद्विया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा ।

अन्धिये अत्तां लेदयाएं, भावसे शुद्धलेय्या; भव्यसिद्धिक, वेदरुसम्यस्त्वके विना औपश-मिक और क्षायिक ये दो सम्यस्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीपेदी अनियुत्तरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनियुत्तरण गुणस्थान, एक मनी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो मंयाप; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, वसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औद्वा-रिक्ततायोग ये नो योग, खविद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयाए, भावसे शुद्धलेय्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यत्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३०९. स्त्रीपेदी अनियुत्तरण जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १. | ३ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

नं. ३१०. स्त्रीपेदी अनियुत्तरण जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

पुरिसवेदाणं भणमणे अत्थि णव गुणद्वयाणि, चचारि जीवसमासा, छ पञ्ज-त्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, पुरिसवेद, चचारि कसाय, सत्त पाण, पंच संजम, तिण्णिण दंसण, दव्व-भावहेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो अमण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भणमणे अत्थि णव गुणद्वयाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चचारि सण्णा, तिण्णिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चचारि कसाय, सत्त पाण, पंच संजम, तिण्णिण दंसण, दव्व-भावहेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, सत्री पर्याप्त, सत्री-अपर्याप्त, असत्री-पर्याप्त और असत्री-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों अपर्याप्तियां, पंच पर्याप्तियां, पंच अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, चारों सहाय, नर-रुगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, नसकाय, पन्द्रहों योग, पुरुषवेद, चारों कयाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सुक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेदयाएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यत्त्व, सत्तिक, असत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, सत्री-पर्याप्त और सत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दसों प्राण, नौ प्राण, चारों सहाय, नर-रुगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, वसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औद्दारिकतायोग, वैकृतिकतायोग और आहारक-काययोग ये ग्याह योग, पुरुषवेद, चारों कयाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सुक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य

नं. ३११. पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

सर्पिणो असर्पिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अणगारवजुत्ता वा^{३३} ।

“तेसिं चैव अपञ्जत्तार्णं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वाणणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, पंच पाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुख-रुल्लेसा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सर्पिणो असर्पिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारवजुत्ता और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सब्बिक, असब्बिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्याद्यष्टि, सासा-दनसम्यग्द्यष्टि, अविरतसम्यग्द्यष्टि और प्रमत्तस्यत ये चार गुणस्थान, संबन्धी-अपर्याप्त और असंबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, सात प्राण, सात चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, चैक्रियकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमाति, कुशुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, सब्बिक, असब्बिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ३१२ पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|----|------|----|----|----|------|-----|----|----|----|----|----|----|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द. | ले | म | स | स | सि | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि | स | प | ति | स | ति | प | त्र. | व. | व. | व. | व. | व. | के | मा | भ | स. | अस | स. | आहा | साका |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

नं. ३१३ पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|----|------|----|----|----|------|-----|----|----|----|----|----|-----|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द. | ले | म | स | स | सि | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि | स | प | ति | स | ति | प | त्र. | व. | व. | व. | व. | के | मा | भ | स. | अस | स. | आहा | साका | अना. |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

ह्येति अणगारवजुत्ता वा ।

पुरिसवेद-मिच्छाद्द्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावोहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सर्पिणो असर्पिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अणगारवजुत्ता वा^{३४} ।

तेसिं चैव पञ्जत्तार्णं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पुरुषवेदी मिथ्याद्यष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्यष्टि गुणस्थान, संबन्धी-पर्याप्त, संबन्धी-अपर्याप्त और असंबन्धी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग. पुरुष-वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सब्बिक, असब्बिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्याद्यष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्यष्टि गुणस्थान, संबन्धी-पर्याप्त और असंबन्धी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां-पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और चैक्रियकाययोग ये दश योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो

नं ३१४

पुरुषवेदी मिथ्याद्यष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|----|------|----|----|----|------|-----|----|----|----|----|----|-----|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | स | सि | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| मि | स | प | ति | स | ति | प | त्र. | व. | व. | व. | व. | के | मा | भ | स. | अस | स. | आहा | साका | अना. |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

असंजमो, दो दंसण, दृष्य-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णो असण्णो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा^{११} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दृष्वेण काउ-सुककलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णो असण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा^{११} ।

दरीत, दृष्य और भावसे छहों लेस्याए. भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सांक्षिक, भयसिद्धिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संक्षी-अपर्याप्त और असंक्षी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां. पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संद्राएं, नर-रगतिके विना शेष तीन गतियां; पनेन्द्रियजाति, तसकाय, औद्यतिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कर्मण-काययोग ये तीन योग, पुरुषवेद. चारों कयाय, आदिके दो अन्नान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापात और शुरु लेस्याए, भावसे छहों लेस्याए; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सांक्षिक, असंक्षिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३१५: पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | शा. | ग. | सं. | ग. | द. | का. | यो. | दे। | क. | सा. | मय. | द. | ले. | म. | म. | स. | आ. | उ. | |
|-----|-----|----|-----|----|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|----|---|
| १ | २ | ५ | १० | ४ | ४ | ३ | २ | ३ | २० | २ | ४ | ३ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

नं. ३१६: पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | शा. | ग. | सं. | ग. | द. | का. | यो. | दे। | क. | सा. | मय. | द. | ले. | म. | म. | स. | आ. | उ. | |
|-----|-----|----|-----|----|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|----|---|
| १ | २ | ५ | १० | ४ | ४ | ३ | २ | ३ | २० | २ | ४ | ३ | ४ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

पुरिमवेद-भासणसम्माहट्ठिणहुडि जावं पढम-अणियट्ठि ति ताव मूलोष-भंगो । गवरि सव्वत्थ पुरिसवेदो चैव वत्तवो । सासण-सम्माभिच्छा-अंसजदसम्माइटीणं तिण्णि गदीओ वत्तवाओ ।

“गणुंमयवेदाणं भण्णमाणे अत्थि गव गुणद्वणाणि, चोइस जीवसमासा, छ पज्ज-त्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अप-ज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण गव पाण सत्त पाण अहु पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ देवगदी गत्थि, एंडियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीसायादी छक्कायां, तेरह जोग, गणुंमयवेद,

पुरुषवेदी जीवोंके सासादनसम्पदृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिशुचितकरण गुणस्थानके प्रथम भागत रुके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं । विशेष यात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए । तथा सासादनसम्पदृष्टि, सम्प-गिमथ्यादृष्टि और असंघतसम्पदृष्टि जीवोंके गति आलाप कहते समय नरकगतिके विना शेष तीन गतियां कहना चाहिए ।

नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नो गुणस्थान. चौदहों जीवसमास, संक्षी-पंचेन्द्रिय जीवोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंक्षी-पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संक्षी-पंचेन्द्रिय जीवोंसे लगाकर एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्त अपर्याप्तकालमें दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संद्राएं, नरकगति, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां होती हैं परंतु नपुंसकवेदी जीवोंके देवगति नहीं होती है । एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, श्रुतिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; नपुंसकवेद, चारों कयाय, मनःपर्ययदान

नं. ३१७

नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | शा. | ग. | सं. | ग. | द. | का. | यो. | दे। | क. | सा. | मय. | द. | ले. | म. | म. | स. | आ. | उ. | |
|-----|-----|----|-----|----|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|----|---|
| १ | २ | ५ | १० | ४ | ४ | ३ | २ | ३ | २० | २ | ४ | ३ | ४ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

चत्तारि कसाय, छण्णाण, चत्तारि सजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणहण्णाणि, सच्च जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{३८} ।

और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशस्यम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार समय, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—आदिके नौ गुण-स्थान, पर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और त्रैक्रियककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, साकारोप-योगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न ३१८

नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | स | स | सा | आ | व | |
| १ | ७ | ६ | १० | ४ | ३ | ५ | ६ | १० | १ | ४ | ६ | ४ | ३ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | २ | १ | २ | २ |
| ३ | ५ | ५ | ९ | ८ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अस. | के द | मा | मा | अ | अस | अस | आहा | साका | अना | अना |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना |

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणहण्णाणि, सच्च जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ-सुव-कलेस्सा, भवेण किण्ह-णील-ताउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छच्चं सासण-खइय-वेदगमिदि चत्तारि सम-चाणि, सण्णिणो अमण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारु-वजुत्ता वा^{३९} ।

णडुंसयवेद-मिच्छाइडीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणहणं, चेद्वस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ; दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छह पाण

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविपत्तसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिथ, त्रैक्रियकमिथ और कर्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्लेख्याएं, भावसे छण्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासा-दन, शायिक और वेदक इसप्रकार चार सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तिया, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तिया, चार अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण,

न ३१९

नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | स | स | सा | आ | व | |
| ३ | ७ | ६ | ७ | ४ | ३ | ५ | ६ | ३ | १ | ४ | ६ | ४ | ३ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अस | के द | मा | मा | अ | अस | अस | आहा | साका | अना | अना |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना |

नच प्राण पंच प्राण त्रय प्राण चत्वारि प्राण तिष्ठिण प्राण, चत्वारि सण्णाओ, तिष्ठिण गन्धीओ, एंड्रियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाया नेरद जोग, गण्डसयवेद, चत्वारि रुमाय, तिष्ठिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भोति छ लेम्माओ, भगिदिदिया अभवसिद्विया, मिच्छच्चं, मणिणो असणिणो, नाहरिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा^{३३} ।

नेसि चैन पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वणं, सत्त जीवसमाम्मा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्वारि पञ्जत्तीओ, दस प्राण णम प्राण अह प्राण सत्त प्राण छ प्राण चत्वारि प्राण, चत्वारि सण्णाओ, तिष्ठिण गन्धीओ, एंड्रियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, गण्डसयवेद, चत्वारि कसाय, तिष्ठिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्विया अभवसिद्विया,

सात प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, चार प्राण तीन प्राण, चारों संजापं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छदों काय, पाचाराकाययोगछिके विना शेष तेरह योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छदों लेइयाप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सिध्यात्त, सत्तिक, असत्तिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी जेने हैं ।

उन्हीं नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमान, छदों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण, चारों गतय, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छदों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग जे एसा योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छदों लेइयाप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सिध्यात्त, सत्तिक, असत्तिक,

नं. ३२० नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. जी. मि. | प. १ | प. २ | प. ३ | प. ४ | प. ५ | प. ६ | प. ७ | प. ८ | प. ९ | प. १० | प. ११ | प. १२ | प. १३ | प. १४ | प. १५ | प. १६ | प. १७ | प. १८ | प. १९ | प. २० |
|-------------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| २ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ३ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ४ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ५ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ६ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ७ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ८ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

मिच्छच्चं, सणिणो असणिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा^{३३} ।

तेसि चैन अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, सत्त जीवसमाम्मा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्वारि अपज्जत्तीओ, सत्त प्राण सत्त प्राण छ प्राण पंच प्राण चत्वारि प्राण तिष्ठिण प्राण, चत्वारि सण्णाओ, तिष्ठिण गन्धीओ, एंड्रियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाया, तिष्ठिण जोग, गण्डसयवेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुककलेस्साओ, भवेण किण्ह-शील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छच्चं, सणिणो असणिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा^{३३} ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमान, छदों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चारों प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों राजाण, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छदों काय, औदारिकमिथ, वैक्रियिकमिथ और कामंण जे तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्त लेइयाप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेइयाप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सिध्यात्त, सत्तिक, असत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३२१ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. जी. मि. | प. १ | प. २ | प. ३ | प. ४ | प. ५ | प. ६ | प. ७ | प. ८ | प. ९ | प. १० | प. ११ | प. १२ | प. १३ | प. १४ | प. १५ | प. १६ | प. १७ | प. १८ | प. १९ | प. २० |
|-------------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| २ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ३ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ४ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ५ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ६ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ७ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ८ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ३२२ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. जी. मि. | प. १ | प. २ | प. ३ | प. ४ | प. ५ | प. ६ | प. ७ | प. ८ | प. ९ | प. १० | प. ११ | प. १२ | प. १३ | प. १४ | प. १५ | प. १६ | प. १७ | प. १८ | प. १९ | प. २० |
|-------------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| २ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ३ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ४ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ५ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ६ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ७ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ८ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

भोवेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, सायगसम्मचं, नणिगो, आहारिओ, सागालसुचा होति जगालसुचा सा ।

तेसि चैत्र अपज्जाणं भणमाणे अत्थि एणं गुणद्वणं, एओ जीवममाणं, छ अपज्जाओ, दस पाण, चचारि मन्नाओ, दो गदीओ, देव-गिग्गदी गत्थि । पंचि-दियजादी, तसकाओ, वारह जोग, सासणगुणेण जीवा गिरयगदीए ण उपज्जति तेण वेडव्वियमिससकायजोगो गत्थि । गणुंअयवेद, चचारि कमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, सायगसम्मचं, गणिणो, आहारिओ अणाहारिणो, सागालसुचा होति अणागालसुचा सा ।

तेसि चैत्र पज्जताणं भणमाणे अत्थि एणं गुणद्वणं, एओ जीवममाणो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चचारि मण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, गणुंसयवेद, चचारि कमाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजसो, दो दंसण, दब्ब-

नुसकवेदी सासादतसम्यग्दृष्टि जीवोके सामान्य आहार कइने पर-एक सामान्य गुणस्थान, संबो-पर्याप्त और सती-अपर्याप्त ये दो जीवसमान, छहों पर्याप्तिया, उठों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचे-न्द्रियजाति, त्रसकाय, आहार-रुकाययोगिक, और वैकल्पिक-रुकाययोगके विना शेष चारव योग होते हैं। यहा पर वैकल्पिकमित्रके नहीं दोतेका कारण यह है कि सामान्य गुणस्थानमे मर कर जीव नरकगतिके नहीं उत्पन्न होते हैं, इन्तर्नि एहां पर वैकल्पिकमित्रस्ययोग नहीं है। नुसकवेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दसौन, उच्च और भावसे उठों लेश्याए, भव्यमिदिक, सासादतसम्यक्त्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नुसकवेदी सासादतसम्यग्दृष्टि जीवोके पर्याप्तकालसंख्यी आहार कइने पर-एक सासादत गुणस्थान, एक संबो-पर्याप्त जीवसमान, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मंगोयोग, चारों वचनयोग, औद्धारिककाययोग और वैकल्पिककाययोग ये दस योग। नुसकवेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दसौन, उच्च और भावसे उठों लेश्याएं, भव्यमिदिक,

नं. ३२३ नुसकवेदी सासादतसम्यग्दृष्टि जीवोके सामान्य आहार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|----|-----|----|-----|----|----|----|----|-----|----|
| गु. | जी. | प. | पा. | सा. | पा. | का. | यो | वे. | क. | का | सां | द. | के. | म | म | ग | म | भा. | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| सा | सप. | प | उ | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

भोवेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, सायगसम्मचं, नणिगो, आहारिओ, सागालसुचा होति जगालसुचा सा ।

तेसि चैत्र अपज्जाणं भणमाणे अत्थि एणं गुणद्वणं, एओ जीवममाणं, छ अपज्जाओ, दस पाण, चचारि मन्नाओ, दो गदीओ, देव-गिग्गदी गत्थि । पंचि-दियजादी, तसकाओ, वारह जोग, सासणगुणेण जीवा गिरयगदीए ण उपज्जति तेण वेडव्वियमिससकायजोगो गत्थि । गणुंअयवेद, चचारि कमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, सायगसम्मचं, गणिणो, आहारिओ अणाहारिणो, सागालसुचा होति अणागालसुचा सा ।

सायगसम्मचत्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी दोरे हैं। नुसकवेदी सासादतसम्यग्दृष्टि जीवोके पर्याप्तकालसंख्यी आहार कइने पर-एक सामान्य गुणस्थान, एक संबो-पर्याप्त जीवसमान, छहों पर्याप्तिया, उठों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचे-न्द्रियजाति, त्रसकाय, आहार-रुकाययोगिक, और वैकल्पिक-रुकाययोगके विना शेष चारव योग होते हैं। यहा पर वैकल्पिकमित्रस्ययोग नहीं दोतेका कारण यह है कि सामान्य गुणस्थानमे मर कर जीव नरकगतिके नहीं उत्पन्न होते हैं, इन्तर्नि एहां पर वैकल्पिकमित्रस्ययोग नहीं है। नुसकवेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दसौन, उच्च और भावसे उठों लेश्याए, भव्यमिदिक, सासादतसम्यक्त्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२४ नुसकवेदी सासादतसम्यग्दृष्टि जीवोके पर्याप्त आहार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|----|-----|----|-----|----|----|----|----|-----|----|
| गु. | जी. | प. | पा. | सा. | पा. | का. | यो | वे. | क. | का | सां | द. | के. | म | म | ग | म | भा. | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| सा | सप. | प | उ | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ३२५ नुसकवेदी सासादतसम्यग्दृष्टि जीवोके अपर्याप्त आहार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|----|-----|----|-----|----|----|----|----|-----|----|
| गु. | जी. | प. | पा. | सा. | पा. | का. | यो | वे. | क. | का | सां | द. | के. | म | म | ग | म | भा. | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| सा | सप. | प | उ | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

णतुंसयवेद-सम्मामिच्छाद्विणीं भणमाणे अत्थि एगं गुणद्वुणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णतुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिणि गाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, अरंजसो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वौति अणागारुवजुत्ता वा ३३ ।

णतुंसयवेद-असंजदसम्माद्विणीं भणमाणे अत्थि एगं गुणद्वुणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अयज्जत्तीओ, दस पाण सच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो गत्थि । णतुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिणि गाण, असंजसो, तिणि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

णतुंसकेवेदी सम्पत्तिमिच्छाद्विणी जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्पत्तिमिच्छाद्विणी गुणस्थान, एक संदी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिकाययोग ये दश योग, णतुंसकेवेद, चारों वचनयोग, औदारिक, सम्पत्तिमिच्छात्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

णतुंसकेवेदी असंयतसम्पत्ति जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविस्त-सम्पत्ति गुणस्थान, संदी-पर्याप्त और सदी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संघाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिकाययोग, वैक्रियिकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग होते हैं । किन्तु यहां पर जोरारिकमिश्रकाययोग नहीं होता । णतुंसकेवेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, क्षायिक

नं. ३२६ णतुंसकेवेदी सम्पत्तिमिच्छाद्विणी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|-----|---|---|---|----|----|----|---|-----|-----|---|----|-----|-----|-------|----|----|
| गु | जी | प | प्र | स | ग | ङ | का | यो | वे | क | सा. | सय. | द | ले | मं. | सं. | मत्ति | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | ३ | ३ | १ | ३ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

भवसिद्धिया, तिणि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वौति अणागारुवजुत्ता वा ३४ ।

तेसिं चेव पज्जत्तां भणमाणे अत्थि एगं गुणद्वुणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णतुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिणि गाण, असंजम, तिणि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वौति अणागारुवजुत्ता वा ३५ ।

और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं णतुंसकेवेदी असंयतसम्पत्ति जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविस्तसम्पत्ति गुणस्थान, एक संदी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संघाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिकाययोग ये दश योग, णतुंसकेवेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, मव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३२७ णतुंसकेवेदी असंयतसम्पत्ति जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|-----|---|---|---|----|----|----|---|-----|-----|---|----|-----|-----|-------|----|----|
| गु | जी | प | प्र | स | ग | ङ | का | यो | वे | क | सा. | सय. | द | ले | मं. | सं. | मत्ति | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | ३ | ३ | १ | ३ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ३२८ णतुंसकेवेदी असंयतसम्पत्ति जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|-----|---|---|---|----|----|----|---|-----|-----|---|----|-----|-----|-------|----|----|
| गु | जी | प | प्र | स | ग | ङ | का | यो | वे | क | सा. | सय. | द | ले | मं. | सं. | मत्ति | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | ३ | ३ | १ | ३ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेसिं चैव अपञ्जचाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जचीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, त्तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ-सुवक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिणया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लद्धं । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागरुवजुत्ता होत्ति अणागरुवजुत्ता वा^{३३} ।

णउंसयवेद-संजदांसंजदाणं भणमाणे अत्थि एगं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमांसंजम, त्तिण्णि दंसण, दब्बेण छ

ननुसक्केवी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहते पर—एक अचिरतसम्यग्दष्टि गुणस्थान, एक सञ्जी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सन्नाप, नरक्रगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चैतियिकमिथकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग. ननुसक्केवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याए, भावसे जघन्य कापोतलेख्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये दो सम्यक्त्व, होते हैं, यहाँ पर क्षायोपशामिक सम्यक्त्वके होनेका कारण यह है कि कृतकृत्यवेदकी अपेक्षासे यहाँ पर क्षायोपशामिकसम्यक्त्व पाया जाता है । संक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

ननुसक्केवी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संञ्जी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशो प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, ननुसक्केवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे तेज, पञ्च और शुक्ल लेख्याए, भव्यसिद्धिक,

ननुसक्केवी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | क | हा | स्य | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|-----|---|----|---|---|-------|---|---|
| १ | १ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ३ | ३ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ४ | ४ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | ६ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | ७ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | ८ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | ९ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १० | १० | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ११ | ११ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १२ | १२ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १३ | १३ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १४ | १४ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १५ | १५ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १६ | १६ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १७ | १७ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १८ | १८ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १९ | १९ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २० | २० | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २१ | २१ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २२ | २२ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २३ | २३ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २४ | २४ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २५ | २५ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २६ | २६ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २७ | २७ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २८ | २८ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २९ | २९ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ३० | ३० | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |

लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुवक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता होत्ति अणागरुवजुत्ता वा^{३३} ।

णउंसयवेद-पमत्तसंजदपहुडि जाव पढम-अणियद्धि त्ति ताव इत्थिवेद-भंगो । णवरि सवन्थ णउंसयवेदो वत्तव्वो ।

अवगदवेदणं भणमाणे अत्थि छ गुणद्वानाणि अदीदगुणद्वानं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पञ्जचीओ छ अपञ्जचीओ अदीदपञ्जची वि अत्थि, दस पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणो वि अत्थि, परिगह-सण्णा खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिदियजादी अण्णदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अक्रायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो,

औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

ननुसक्केवी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिच्छित्करण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप खंविदी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक ननुसक्केवेद ही कहना चाहिये ।

अपगतवेदी जीवोंके आलाप कहने पर—अनिच्छित्करणके अवेद भागसे लेकर अन्तके छह गुणस्थान और अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञा-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमास स्थान भी होता है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीत-पर्याप्तस्थान भी होता है, दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी होता है, परिग्रहसंज्ञा तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी होती है, पंचेन्द्रियजाति तथा अतिन्द्रियस्थान भी होता है, त्रसकाय तथा अक्रायस्थान भी होता है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिथकाययोग तथा कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी होता है, अपगतवेद, चारो कपाय

१ प्रतिशु ' पंचिदिय अण्णियत्त अत्थि ' इति पाठ ।

ननुसक्केवी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | क | हा | स्य | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|-----|---|----|---|---|-------|---|---|
| १ | १ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ३ | ३ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ४ | ४ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | ६ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | ७ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | ८ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | ९ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १० | १० | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ११ | ११ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १२ | १२ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १३ | १३ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १४ | १४ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १५ | १५ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १६ | १६ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १७ | १७ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १८ | १८ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| १९ | १९ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २० | २० | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २१ | २१ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २२ | २२ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २३ | २३ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २४ | २४ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २५ | २५ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २६ | २६ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २७ | २७ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २८ | २८ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| २९ | २९ | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |
| ३० | ३० | ५ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ |

चत्वारि क्रमाय अक्रमायो वि अत्थि, पंच गाण, चत्वारि संजम गेव संजमो गेव असंजमो गेव संजयमंजमो वि अत्थि, चत्वारि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया गेव भवसिद्धिया गेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, दो मम्मत्तं, सण्णियो गेव सण्णियो गेव असण्णियो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुअजुत्ता हेति अणागारुअजुत्ता वा मागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा^{११} ।

विदिय-अणियद्विप्पन्नुडे जम सिद्धा ति ताव मूलोच-भंगो ।

एव वेदसगण समत्ता ।

रुमायाणुपदेण ओघालावा मूलोच-भंगा । गवरि दस गुणट्ठाणाणि वचव्वाणि ।
अदीदगुणद्वयं, अदीदजीवसमासो, अदीदपञ्चत्तीओ, अदीदपाणा, सीणसण्णा, सिद्धगदी,

तथा अरुपायस्थान भी होता है, मतिमान आदि पांचों घान, नामायिक, छेत्तेपस्थापना, म् मससपराय ओर यथास्थान ये चार सयम तथा संयम, असंयम और संयमालंयम भिक्त्योंसे रहित भी स्थान होता है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, भावसे शुक्कलेस्या तथा अलेक्ष्यास्थान भी होता है; भव्यविस्तिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों भिक्त्योंसे रहित भी स्थान होता है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, साक्षिक तथा साक्षिक और अन्वसिक इन दोनों भिक्त्योंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

अपगतचेरी जीवोंके अनित्यरूपके द्वितीयभागसे लेकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक घानके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए ।

इन्द्रमार्ग वेदमार्गणा समाप्त हुई ।

करायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान हैं । विशेष बात यह है कि करायमार्गणमें र्ग गुणस्थान कइना चाहिए । यहाँ पर अतीतगुणस्थान, अतीत-जीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धगति, अनिन्द्रियत्व, अक्रायत्व,

नं. ३३१

अपगतचेरी जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | मा | सं | ग | इ | मा | गो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | स | साभि. | आ | उ | |
|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|---|-------|---|---|---|
| १ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | ११ | ११ | ११ | ११ | ० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| २ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | ११ | ११ | ११ | ११ | ० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | ११ | ११ | ११ | ११ | ० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ४ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | ११ | ११ | ११ | ११ | ० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | ११ | ११ | ११ | ११ | ० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

अणियत्तं अक्रायत्त, अजोगो, अक्रसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दब्ब-भावेहि अलेस्साओ, गेव भवसिद्धिया, गेव सण्णियो गेव असण्णियो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा चि णत्थि ।

कोधकसायाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, नोइस जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ चत्वारि पञ्चत्तीओ चत्वारि अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अहु पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्वारि पाण चत्वारि पाण तिण्णि पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गदीओ, इइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुडवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाय, सत्त गाण, पंच सजम सुहुम-जहाक्खादसंजमा णत्थि, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुअजुत्ता हेति अणागारुअजुत्ता वा^{११} ।

अयोग, अरुपाय, केवलज्ञान, यथास्थानविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेक्ष्यत्व, भव्यसिद्धिक चिक्त्योंसे रहित, साक्षिक और अन्वसिक इन दोनों चिक्त्योंसे रहित, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त इतने स्थान नहीं होते हैं ।

कोधकपायी जीवोंके सामान्य आलाप कइने पर—आदिके नौ गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, धृतिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, कोधकपाय, केवलज्ञानके विना शेष सात घान, पांच संयम होते हैं, किन्तु यहाँ पर सूक्ष्मसाम्पराय और यथास्थानसंयम नहीं होते हैं; आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेक्ष्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, साक्षिक, अन्वसिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ आ प्रती 'अणियद्वियत्त पि अत्थि' इति पाठ ।

नं. ३३२

कोधकपायी जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प | मा | सं | ग | इ | का | गो | वे | क | सा. | सय | द. | ले | म. | स. | साभि. | आ | उ | |
|----|----|----|-----|----|----|---|----|----|----|---|-----|----|----|----|----|----|-------|---|---|---|
| १ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | १५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| २ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | १५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | १५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ४ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | १५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | १५ | ६५ | १०५ | १५ | १५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{३३८} ।

तेसिं चैव पञ्जचाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, क्रोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{३३९} ।

तेसिं चैव अपज्जचाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सत्त्वापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और चैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों

नं. ३३८ क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|-----|------|------|-------|-------|-------|-----|----|---|---|-------|-----|------|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | १ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ३ | ५ | ५ | ७ | | | | आहा | विना | क्रो | अज्ञा | अस | चक्षु | अच. | मा | ६ | ६ | सा | आहा | साका |
| ५ | ५ | ५ | ५ | | | | | | | | | | | | | | | अना | अना. |

नं. ३३९ क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|-----|------|------|-------|-------|-------|-----|----|---|---|-------|-----|------|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | १ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ३ | ५ | ५ | ७ | | | | आहा | विना | क्रो | अज्ञा | अस | चक्षु | अच. | मा | ६ | ६ | सा | आहा | साका |
| ५ | ५ | ५ | ५ | | | | | | | | | | | | | | | अना | अना. |

अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, क्रोधकसाओ, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{३४०} ।

क्रोधकसाय-सम्मामिच्छाईहीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, क्रोधकसाय, तिण्णि पाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{३४१} ।

संज्ञाप, नरकगतिको छोड़ कर शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, चैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, क्रोधकपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेस्याप, भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

क्रोधकपायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सत्त्वापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और चैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकपाय, तीनों अज्ञानसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३४० क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|------|-------|------|------|-------|----|-------|----|----|------|-------|-----|------|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | १ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ३ | ५ | ५ | ७ | | | | कुम. | कुशु. | क्रो | कुम. | अस | अस | चक्षु | का | मा | सासा | स | आहा | साका |
| ५ | ५ | ५ | ५ | | | | | | | | | | | | | | | अना | अना. |

नं. ३४१ क्रोधकपायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|-----|------|------|-------|-------|-------|-----|----|---|---|-------|-----|------|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | १ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ३ | ५ | ५ | ७ | | | | आहा | विना | क्रो | अज्ञा | अस | चक्षु | अच. | मा | ६ | ६ | सा | आहा | साका |
| ५ | ५ | ५ | ५ | | | | | | | | | | | | | | | अना | अना. |

कोधकसाय-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि गाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, साण्णिणो, आहारिणो, सागारुञ्जुत्ता होति अणागारुञ्जुत्ता वा ।

कोधकसाय-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पञ्चचीओ छ अपञ्चचीओ दस पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, (मशुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारु जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ,) चचारि गाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भव-

कोधकयायी संयतासयत जीविके आलाप कइते पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संबो पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिथिचगति ओर मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, कोधकसाय, आविके तीन दान संयमासंयम, आविके तीन वर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पम और शुक्र लेख्याएं, भवसिद्धिक, औपशमिक आवि तीन सम्पत्त्व, संश्रिक, आहारक, साकारोपयोगी ओर अनाकारो-पयोगी होते हैं ।

कोधकयायी प्रमत्तसंयत जीविके आलाप कइते पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, संबो-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, कोधकसाय, आविके चार ज्ञान, सामायिक, छेत्रोपस्थापना ओर परिहारचिद्युद्धि ये तीन संयम, आविके तीन वर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पम और शुक्र लेख्याएं,

१ शक्ति कोष्ठ-तर्कपाठो नास्ति ।

न ३४५ कोधकयायी संयतासयत जीविके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | का | यो | वे | के | सा | तण | द | के | म | म | मा | आ | उ |
|----|----|----|------|---|---|----|----|----|----|----|----|---|----|---|---|----|---|---|
| १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

सिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो, सागारुञ्जुत्ता होति अणागारुञ्जुत्ता वा । कोधकसाय-अपमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मशुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, चचारि गाण, तिण्णि मंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, साण्णिणो, आहारिणो, सागारुञ्जुत्ता होति अणागारुञ्जुत्ता वा ।

भवसिद्धिक, औपशमिक आवि तीन सम्पत्त्व, संश्रिक, आहारक, साकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कोधकयायी अमत्तसंयत जीविके आलाप कइते पर—एक अमत्तसंयत गुणस्थान, एक संबो पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, आहारककाये सिना शेय तीन मज्ञाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, कोधकसाय, आविके चार ज्ञान, सामायिक, छेत्रोपस्थापना ओर परिहारचिद्युद्धि ये तीन संयम, आविके तीन वर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पम और शुक्र लेख्याएं, भवसिद्धिक, औपशमिक आवि तीन सम्पत्त्व, संश्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३४६ कोधकयायी प्रमत्तसंयत जीविके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | का | यो | वे | के | सा | तण | द | के | म | म | मा | आ | उ |
|----|----|----|------|---|---|----|----|----|----|----|----|---|----|---|---|----|---|---|
| १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

नं. ३४७ कोधकयायी अमत्तसयत जीविके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | का | यो | वे | के | सा | तण | द | के | म | म | मा | आ | उ |
|----|----|----|------|---|---|----|----|----|----|----|----|---|----|---|---|----|---|---|
| १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, दो अकसायाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वानाणि अदीदगुणद्वानं पि अत्थि, दो वि अत्थि, दस चत्तारि दो एणं पाण अदीदपाणो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिदियजादी अण्णियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एणारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अरुसाओ, पंच पाण, जहाकखादविहार-सुद्धिसंजमो गेव संजमो गेव असंजमो गेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण सुवकलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया गेव भवसिद्धिया गेव अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णियो गेव सण्णियो गेव असण्णियो, आहारिणो विना छह सयम और कपाय आलाप कहते समय लोभकपाय कहना चाहिये ।

अकपायी जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकपाय, क्षीणकपाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, सब्धी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तस्थान भी है, दशों प्राण, सयोगिकेवलीके समवित चार प्राण और दो प्राण, अयोगिकेवलीके समवित एक प्राण और सिद्ध जीवोंकी अपेक्षासे अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसत्ता, मत्तुयगति तथा सिद्धगति भी है, पचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्वस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाय-योग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकपाय, पाँचों सम्यग्ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम तथा सयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान भी है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्याणं, भावसे शुक्कलेहया तथा अलेहयास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक तथा

१ आ प्रती " एण १०-४-२-१ " इति पाठ ।

नं ३५२

अकपायी जीवोंके आलाप

| गु | जी. | प | प्रा | सं. | ग | इ | का | यो. | वे | क | ज्ञा | सा | द | ले | म | स | सखि | आ | उ. | |
|-----|-----|-----|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| ४ | २ | ६म. | १०,४ | ० | १ | १ | २ | ११ | ० | ० | ० | ० | १ | ४ | १ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अत | स प | ६अ. | २,१ | ५ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अती | स.अ | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती |
| ग. | अती | पयी | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण |
| | जीव | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

अणाहारिणो, सागारुवञ्जुत्ता हति अणागारुवञ्जुत्ता वा ('सागार-अणागारोहिं जुगवहु-वञ्जुत्ता वा ।)

उवसंतकसायपपहुडि जाव सिद्धा चि ओघ-भंगो ।

एवं कसायमगणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगा ।

मदि-सुदअण्णणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणद्वानाणि, चोदस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण गव पाण सत्त पाण अहु पाण छ पाण सत्त संक्षिक और असंक्षिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

अरुषयी जीवोंके उपशान्तकपाय गुणस्थानसे लगाकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप ओघालापके समान जानना चाहिये ।

इसप्रकार कषायमर्गणा समाप्त हुई ।

ज्ञानमर्गणके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिये ।

मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण,

१ प्रतिगु कोष्ठकार्गताठो नास्ति ।

नं. ३५२

मति श्रुत-अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सा | द | ले | म | स | सखि | आ | उ |
|----|----|----|------|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| २ | २ | ६प | २०,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | १ | २ | २ | २ | ६ | ६ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | ६अ | ५प | ९,७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| सा | ५अ | ४प | ७,५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ४अ | ४अ | ४,३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण तिणि पाण चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेह जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अण्णागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जचाणं भण्णमाणे अरिय दो गुणद्वयानि, सत्त जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सागारवजुत्ता ह्येति अण्णागारवजुत्ता वा ।

नारमाण तीन प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, प्रथिगकाय आदि त्रों काय, आहाररुक्काययोग और आहाररुक्मिथ्रकाययोगके विना तेह योग, तीनों पेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और नामान्तरसम्बन्ध ये दो सम्बन्ध, संबन्धिक, असंबन्धिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, प्रथिगकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों मनोयोग, और चारिक्काययोग और चैक्रियिक्काययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, अत्यम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्बन्ध ये दो सम्बन्ध, संबन्धिक, असंबन्धिक, अनाहारक, साकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३५३

मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| यु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो. | वे | क | सा. | सय | द | ले. | म | स | स | स | स | स | स | उ |
|-----|----|-----|-------|---|---|---|----|------|----|---|-------|----|------|-----|---|----|-----|-----|-----|-----|-------|-----|
| २ | ७ | ६७. | ७ | ४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ४ | २ | १ | २ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | अप | " | " | " | " | " | " | " | " | " | कुम. | अम | वधु. | का | म | मि | स | स | स | स | साहा. | उ |
| मा. | | | | | | | | ओ मि | | | कुशु. | अव | अव | गु. | अ | ग | अम. | अम. | अम. | अम. | अम. | अम. |

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अण्णागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्जचाणं भण्णमाणे अरिय दो गुणद्वयानि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिणि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिणि जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण क्काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अण्णागारवजुत्ता वा ।

मदि-सुदअण्णाण-मिच्छाइडीणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणद्वयं, चोहस जीव-समासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, प्रथिगकाय आदि छहों काय, और चारिक्काययोग, चैक्रियिक्काययोग और कार्धनकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे क्कापोत और शुक्क लेश्यापं, भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्बन्ध ये दो सम्बन्ध, संबन्धिक, असंबन्धिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों पर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात

नं. ३५३

मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| यु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो. | वे | क | सा. | सय | द | ले. | म | स | स | स | स | स | स | उ |
|-----|----|-----|-------|---|---|---|----|------|----|---|-------|----|------|-----|---|----|-----|-----|-----|-----|-------|-----|
| २ | ७ | ६७. | ७ | ४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ४ | २ | १ | २ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | अप | " | " | " | " | " | " | " | " | " | कुम. | अम | वधु. | का | म | मि | स | स | स | स | साहा. | उ |
| मा. | | | | | | | | ओ मि | | | कुशु. | अव | अव | गु. | अ | ग | अम. | अम. | अम. | अम. | अम. | अम. |

मदि मुदञ्जणाण-सासणसम्मद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानां, दो जीव-ममागा, उ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसि चैव पञ्जत्तानां भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानां, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ,

मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सामान्य गुणस्थान, सत्री-पर्याप्त और सत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों पर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों सजाप, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, आहारकरके चिना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, प्रसयग, आदिके दो दर्शन, उच्च ओर भावसे छहों लेख्यां, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, मत्तिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सामान्य गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाप, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

नं. ३१८ मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|--------|----|----|
| ग. | प. | म. | स. | ग. | क. | गो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ३१९ मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|--------|----|----|
| ग. | प. | म. | स. | ग. | क. | गो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसि चैव अपञ्जत्तानां भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानां, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचि-दियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०} ।

विभंगणाणां भण्णमाणे अत्थि दो गुणद्वानाणि, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, औदारिककाययोग ओर वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कपाय, कुमति ओर कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य ओर भावसे छहों लेख्यां, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं ।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सत्री अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सजाप, नरकगतिके चिना दोष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत ओर शुल्ल लेख्यां, भावसे छहों लेख्यां, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विभंगज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाप, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

नं. ३१० मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|--------|----|----|
| ग. | प. | म. | स. | ग. | क. | गो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणणं, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वा^{३३} ।

विभंगणणि-मिच्छाहदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वा^{३३} ।

त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैकिकिकाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, एक विभगावधिबान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विभंगण्णानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभगावधिबान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न. ३६१ विभंगण्णानी जीवोंके सामान्य आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|---|----|---|---|-------|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | १ | १ | २ | २ | ६ | २ | १ | १ | २ |
| २ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि | प | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| पा | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

न ३६२ विभंगण्णानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
|----|------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|---|----|---|---|-------|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | १ | १ | २ | २ | ६ | २ | १ | १ | २ |
| मि | स.प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

विभंगणणि-सासणसम्माहदीण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-वुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वा^{३३} ।

आभिणिबोहिय-सुदणणणं भण्णमाणे अत्थि तत्र गुणद्वानाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगद-वेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो पाण, सत्त सजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो

विभंगण्णानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभगावधिबान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आभिनिबोधिक और श्रुतब्रह्मानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविततसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और सन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं. ३६३ विभंगण्णानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
|------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|---|----|---|---|-------|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | १ | १ | २ | २ | ६ | २ | १ | १ | २ |
| सासा | स | प | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

चउहि वा गणोहि होद्व्यमिति सचमेदं, किंतु इयरेखु संतेखु वि ण विवक्खा कया, वेण विप्रक्खिय-णाण-वदिरित्त-णाणाणमवणयणं कयं ।

मणपञ्जवणाणीणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवत्तमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदिय-जादी, तसकाओ, आहारदुगेण विणा णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपञ्जवणाणं, परिहारसंजमेण विणा चत्तारि संजस, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुन-लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, वेदगसम्मत्त-पच्छायद-उत्तमत्तसम्मत्तसमाद्विस्सि पढमसमए वि मणपञ्जवणाणुवलंभादो । मिच्छत्त-

ओर मनःपर्ययज्ञान-निरुद्ध आलापोंके कहने पर तीन अथवा चार ज्ञान होना चाहिए ?

विशेषार्थ—शंकाकारके कहने का यह भाव है कि जब मतिज्ञान आदि चार ज्ञान शायोपशामिक होनेके कारण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानके साथ अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान हो सकते हैं, तत्र विचक्षित किसी भी ज्ञानमार्गणके आलाप कहते समय अपने सिचाय शेष ज्ञानोंको भी कहना चाहिए । अर्थात् छद्मस्थ जीवोंके कमसे कम मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान तो होते ही हैं; तथा इनके साथ अवधिज्ञान, अथवा मनःपर्ययज्ञान अथवा दोनों ही ज्ञान हो सकते हैं, इसलिये मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय मति और श्रुत ये दो अथवा मति, श्रुत और अवधि ये तीन अथवा, मति, श्रुत और मन पर्यय ये तीन अथवा, मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए । इसीप्रकार अवधि-ज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय—क्रमशः मति, श्रुत और अवधि ये तीन तथा मति, श्रुत और मनःपर्यय ये तीन ज्ञान अथवा मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए ।

सामानान — आपका यह कहना सत्य है, किन्तु विवक्षित ज्ञानके साथ इतर ज्ञानोंके होने पर भी उनकी विचक्षा नहीं कि गई है, इसलिये विवक्षित ज्ञानसे अतिरिक्त अन्य ज्ञानोंको नहीं गिनाया गया है ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत्तसे लेकर क्षीणकषाय तकके सात गुणस्थान, एक सदी-पर्याप्त जीवत्तमास, छहों पर्याप्तियां, वृशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसत्तास्थान भी हैं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकक्राययोग और आहारकामिप्रक्राययोगके विना नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी हैं, मनः-पर्ययज्ञान, परिहारियुक्तिसंयमके विना चार संयम, आदिके तीन वर्तन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, प्राणसे तेज, पद्म ओर शुकु लेस्यापं, भव्यसिद्धिरु, तीन सम्यक्त्व होते हैं; मनःपर्ययज्ञानिके ओपशामिकसम्यक्त्व कैसे होता है, इसका समाधान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि जो

१ वागमचरीगारिपुशो वेदगुणमो धा निजीविता । अतोपुदुत्तकाळ अथापमवो पमचो य ॥ तवो विपत्तरीरिना स्वचमो गम नु उचममरि । उ शं. २०३, २०४.

पच्छायद-उत्तमत्तसम्मत्तसमाद्विस्मि मणपञ्जवणाणं ण उवल्लभंभेदं; मिच्छत्तपच्छायदुक्कसुव-समत्तसम्मत्तकालादो वि गहियसंजमपढमसमयादो सव्वजहणमणपञ्जवणाणुपायाण-संजमकालरूप बहुजुवलभादो । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारु-

वेदकसम्यक्त्वसे पीछे द्वितीयोपशामसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उस उपशामसम्यग्दृष्टिके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है । किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशामसम्यग्दृष्टि जीवमें मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशामसम्यग्दृष्टिके उत्कृष्ट उपशामसम्यक्त्वके कालसे भी ग्रहण किये गये संयमके प्रथम समयसे लगाकर सर्व जघन्य मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेवाला संयमकाल बहुत बड़ा है ।

विशेषार्थ—ऊपर मनःपर्ययज्ञानिके तीनों सम्यक्त्व बतलाये गये हैं । क्षायिक और शायोपशामिकसम्यक्त्वके साथ तो मनःपर्ययज्ञान इसलिये होता है कि मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें जो विशेष संयम हेतु पड़ता है वह विशेष संयम इन दोनों सम्यक्त्वोंमें हो सकता है । अब रही औपशामिकसम्यग्दर्शनकी बात, जो उसके प्रथमोपशामसम्यक्त्व और द्वितीयो-पशामसम्यक्त्व ऐसे दो भेद हैं । उनमें प्रथमोपशामसम्यक्त्वको अनादि अथवा सादि मिथ्या-दृष्टि ही उत्पन्न करता है और उसके रहनेका जघन्य अथवा उत्कृष्टकाल अन्तर्मुहूर्त ही है । यह अन्तर्मुहूर्तकाल, संयमको ग्रहण करनेके पश्चात् मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेके योग्य संयममें विशेषता लानेके लिये जितना काल लगता है उससे छोटा है । इसलिये प्रथमोपशाम सम्यक्त्वके कालमें मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति न हो सकनेके कारण मनःपर्ययज्ञानके साथ उसके होनेका निषेध किया गया है । द्वितीयोपशामसम्यक्त्व उपशामश्रेणिके अभिसुप्त विशेष संयमके ही होता है, इसलिये यहाँपर आलमसे मनःपर्ययज्ञानके योग्य विशेष संयमको उत्पन्न करनेकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है और यही कारण है कि द्वितीयोपशाम-सम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञानकी प्राप्ति हो सकती है । अथवा जिस संयमनि पढले वेदकसम्यक्त्वके कालमें ही मनःपर्ययज्ञानको ग्रहण कर लिया है उसके भी उपशामश्रेणिके अभिसुख होनेपर द्वितीयोपशामसम्यक्त्वकी प्राप्ति हो जाती है, इसलिये भी द्वितीयोपशामसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें मनःपर्ययज्ञान पाया जा सकता है । ऊपर टीकामें 'पढमसमए वि' में जो अपि शब्द आया है उससे यह ध्वनित होता है कि द्वितीयोपशामसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके द्वितीयार्थिक समयमें चर्द्धमान चारित्र रहता है, इसलिये वहाँ तो मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न हो ही सकता है, किन्तु प्रथम समयमें भी संयममें इतनी विशेषता पाई जाती है कि वह मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें कारण हो सकता है । इस कथनका तात्पर्य यह हुआ कि प्रथमोपशामसम्यक्त्वके अनन्तर या उसके साथ संयमकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उसमें तो मनःपर्ययज्ञान नहीं उत्पन्न हो सकता है । परंतु द्वितीयो-पशामसम्यक्त्व संयमिके ही होता है, इसलिये उसमें मनःपर्ययज्ञानके उत्पन्न होनेमें कोई विशेष नहीं है । इसप्रकार मनःपर्ययज्ञानके साथ तीनों सम्यक्त्व तो देते हैं, किन्तु ओपग-

वजुता वा^{१२} ।

मणपञ्जवणान-पमतसंजददण्डुडि जाव खीणकसाओ ति ताव मूलोघ-मंगो ।
णवरि मणपञ्जवणानं एकं चैव वत्तव्वं । परिहारसुद्धिसंजसो वि गत्थि ति भाणिदव्वं ।

केवलणाणानं भणमाणे अत्थि वे गुणद्वणाणि अदीदगुणद्वानं पि अत्थि, दो जीवसमासा एगो वा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पञ्जचीओ छ अपञ्जचीओ अदीदपञ्जचीओ वि अत्थि, चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणा वि अत्थि, खीणसणाओ, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिदियजादी अणिदियं पि अत्थि, तसकाओ अकाओ वि अत्थि, सत्त जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेद, अकत्ताओ, केवलणानं, जहाक्सादसुद्धिसंजसो गेव संजसो गेव असंजसो गेव संजसांसंजसो वि

सिकसम्यक्त्वमं द्वितीयोपशमका ही ग्रहण करना चाहिए, प्रथमोपशमका नहीं । सम्यक्त्व आलापके आगे संक्षिप्त, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके आलाप मूल ओघालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय एक मनःपर्ययज्ञान ही कहना चाहिए । तथा संयम आलाप कहते समय परिहारशिशुद्धिसंयम नहीं होता है, ऐसा कहना चाहिए ।

केवलज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये दो गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो अथवा एक पर्याप्त जीवसमास है तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छोड़ों पर्याप्तियां, छोड़ों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तस्थान भी होता है, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासाच्छ्वास ये चार प्राण, अथवा सद्गुदातगत अपर्याप्तकालमें आयु आर कायबल ये दो प्राण और अयोगिकेवलीके एक आयु प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भा है, पंच-न्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, सत्य और अनुभव ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमित्रतायोग आर कामर्षण-काययोग ये सात योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकपाय, केवलज्ञान, यथाख्यात-

न. ३७०

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप

| गु. | जी. | प. | ग. | स. | ग. | द. | ले. | स. | स. | स. | स. | स. | स. | स. | स. |
|-------|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ७ | १ | ६ | १० | ४ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| प्रम | मं | प | २० | ४ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| से | मं | प | २० | ४ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| क्षीण | मं | प | २० | ४ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

अत्थि, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भव-सिद्धिया गेव भवसिद्धिया गेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{१३} ।

सजोगि-अजोगि-सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा ।

एव णाणमगणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदानं भणमाणे अत्थि णव गुणद्वणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्जचीओ छ अपञ्जचीओ, दस सत्त चत्तारि दो एक पाण, चत्तारि सणाओ खीणसणा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि

विहारशुद्धिसंयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, केवल-दर्शन, द्रव्यसे छोड़ों लेक्ष्यार्थ, भावसे शुक्कलेक्ष्या तथा अलेक्ष्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संक्षिप्त और असंक्षिप्तसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारो-पयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

केवलज्ञानकी अपेक्षा भी सयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान कहना चाहिए ।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छोड़ों पर्याप्तियां, छोड़ों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण, चारों संज्ञार्थ तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिक-काययोग और वैक्रियिकमित्रताययोग इन दो योगोंके विना शेष तेरह योग तथा अयोग-

नं ३७१ केवलज्ञानी जीवोंके आलाप

| गु. | जी. | प. | ग. | स. | ग. | द. | ले. | स. | स. | स. | स. | स. | स. | स. | स. |
|--------|------|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २ | २ | ६ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| सयी. | पयी. | अप | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| अयी | अप | अप | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| सिद्धि | अप | अप | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

अग्नि, तिष्ठि नेद अगद्वेदो वि अस्थि, चत्वारि क्रसाय अरुसाओ वि अस्थि, पंच
गाण, पंच मंजम, चत्वारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, मोवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ
अन्नेसा वि अस्थि; मन्मिद्विया, तिष्ठि सम्मच्चं, मग्णिणो णेव सग्णिणो णेव असग्णिणो,
आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं
जुगाद्वजुत्ता वा होति” ।

प्रमत्तमंजदाणं भणममाणे अस्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ
छ अपञ्जत्तीओ, दम पाण, चत्वारि सग्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, पंचिदियजादी,
तमकाओ, एगारुह जोग, निष्ठि नेद, चत्वारि क्रसाय, चत्वारि गाण, तिष्ठि संजम,
तिष्ठि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, मोवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भन्सिद्विया, तिष्ठि

म्यन भी हे, तीनों वेद तथा अगतवेदस्थान भी हे, चारों कथाय तथा अरुसायस्थान भी हे,
मत्तियानादि पांचों मुजान, सामायिकादि पांचां मयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयाए,ं,
भायमे तेज, पम और गुरु लेइयाए तथा अलेइयास्थान भी हे, भव्यसिद्धिक, औपशमि-
कादि तीन मय्यत्तर, चत्वारि तथा सन्निक और असंजिक इन दोनों विकरणोंसे रहित भी
स्थान हे, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार
उपयोगोंसे युगत उपयुक्त भी होते हैं ।

संयममार्णणां अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप करने पर—एक प्रमत्तसंयत
गुणस्थान, मन्मि-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां;
दशां प्राण, सात प्राण; चारों सजाप, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,
चारों वनतयोग, श्रोत्रारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये
व्यास्य योग, तीनों नेद, चारों कथाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, श्रेयोपस्थापना और
परिहारिशुद्धि ये तीन मयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयाए,ं, भावसे तेज, पम
और गुरु लेइयाए,ं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक,

नं. ३७२

संयमी जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|-----|----|----|----|---|----|----|----|-----|-----|-----|-----|----|----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इं. | का | यो | वे | क | सा | मय | द. | ले. | मं. | सं. | सति | आ. | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ३ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ३ | ३ | ३ | २ |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स |
| अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

सम्मच्चं, सग्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा” ।

अप्रमत्तसंजदाणं भणममाणे अस्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ
पञ्जत्तीओ, दस पाण, तिष्ठि सग्णाओ आहारसग्णा गस्थि, मणुसगदी, पंचिदियजादी,
तसकाओ, णव जोग, तिष्ठि नेद, चत्वारि क्रसाय, चत्वारि गाण, तिष्ठि संजम, तिष्ठि
दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, मोवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिष्ठि
सम्मच्चं, सग्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा” ।

अपुव्वयरणपहुडि जाव अजोगिकेजलि ति ताव मूलोघ-मंगो ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप करने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक सत्सि-
पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मय, मैथुन और परिशुद्ध ये तीन संज्ञाए
होती हैं किंतु यहां पर आहारसंज्ञा नहीं है । मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों
मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कथाय,
आदिके चार ज्ञान, सामायिकादि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयाए,ं,
भावसे तेज, पम और गुरु लेइयाए,ं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, सन्निक,
आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक संयमी जीवोंके आलाप
मूल औघालाओंके समान होते हैं ।

नं. ३७३

संयमकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|-----|----|----|----|---|----|----|----|-----|-----|-----|-----|----|----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इं. | का | यो | वे | क | सा | मय | द. | ले. | मं. | सं. | सति | आ. | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ३ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ३ | ३ | ३ | २ |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स |
| अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

नं. ३७४

संयमकी अपेक्षा अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|-----|----|----|----|---|----|----|----|-----|-----|-----|-----|----|----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इं. | का | यो | वे | क | सा | मय | द. | ले. | मं. | सं. | सति | आ. | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ३ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ३ | ३ | ३ | २ |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स | स |
| अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

सामाह्यसुद्धिसंज्ञदानं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वानि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदेवो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, चत्तारि पाण, सामाह्यसुद्धिसंज्ञमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा^{३३३} ।

पमत्तसंज्ञदपहुडि जाव अणियट्ठि ति ताव मूलोघ-भंगो । एवं छेदोवद्वावण-संज्ञमस्स वि वत्तन्नं ।

परिहारसुद्धिसंज्ञदानं भण्णमाणे अत्थि दो गुणद्वानि, एगो जीवसमासो, छ

सामायिकशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंज्ञत, अप्रमत्तसंज्ञत, अतिवृत्तिकरण ये चार गुणस्थान, सब्बी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों मनोयोग, औदारिककाययोग आहारकाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकशुद्धिसंज्ञत, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसंज्ञत गुणस्थानसे लेकर अतिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानधर्ती सामायिकशुद्धिसंज्ञतोंके आलाप मूल ओचालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि संज्ञत आलाप करते समय एक सामायिकशुद्धिसंज्ञत ही कहना चाहिए । इसप्रकार छेदोपस्थापना सयमके भी आलाप जानना चाहिए, किन्तु सयम आलाप करते समय एक छेदोपस्थापना-सयम ही कहना चाहिए ।

परिहारविशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंज्ञत और अप्रमत्तसंज्ञत ये

नं ३७५

सामायिकशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | ह. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | मं. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|--------|------|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-------|-----|----|-----|-----|----|---------|----|----|
| ४ प्र. | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ४ | १ | ३ | ३ | ६ | ३ | ३ | २ | २ |
| अप्र. | स.प. | प. | ७ | म | प | प | प | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| अप्र. | स.अ. | अ. | ६ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| अति. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग आहारहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण मणपज्जवण्णणं णत्थि, कारणं आहारदुगं मणपज्जवण्णणं परिहारसुद्धिसंज्ञमो एदं जुगवेदव ण उप्पज्जति । परिहारसुद्धिसंज्ञमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा^{३३५} ।

पमत्त-अप्पमत्त-परिहारसुद्धिसंज्ञदानं पुथ पुथ भण्णमाणे ओघ-भंगो । णवरि आहारदुग-मणपज्जवण्णण-उवसमसम्मत्त-सामाह्य-छेदोवद्वावणसुद्धिसंज्ञमा च णत्थि । परिहारसुद्धिसंज्ञमो एको चेव संज्ञमद्वाने । वेदद्वाने पुरिसवेदो चेव वत्तन्नो ।

दो गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहो पर्याप्तियां, दसो प्राण, चारो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं, किन्तु यहाँपर आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होते हैं । पुरुषवेद, चारो कपाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं, किन्तु यहाँपर मनःपर्ययज्ञान नहीं है, कर्षांकि, आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंज्ञत ये तीनों युगपत् नहीं उत्पन्न होते हैं । ज्ञान आलापके आगे परिहारविशुद्धिसंज्ञत, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसंज्ञत-परिहारविशुद्धिसंज्ञत और अप्रमत्तसंज्ञत-परिहारविशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप पृथक् पृथक् कहने पर उनके आलाप ओचालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि यहाँ पर आहारककाययोगद्विक, मनःपर्ययज्ञान, औपशमिकसम्यक्त्व, सामायिकशुद्धिसंज्ञत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंज्ञत इतने आलाप नहीं होते हैं । संज्ञमस्थान पर एक परिहार-विशुद्धिसंज्ञत ही होता है । तथा वेदस्थानपर एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए ।

१ प्रतिपु 'एदाओ' इति पाठ ।

नं. ३७६

परिहारविशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | ह. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | मं. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|------|------|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-------|-----|----|-----|-----|----|---------|----|----|
| २ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| प्र. | स.प. | प. | ७ | म | प | प | प | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| अ. | अ. | अ. | ६ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| अति. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

मुद्रममांपराइयमुद्रिमंजदाणं भणमाणे मूलोघ-भंगो ।

जडासनादमुद्रिमंजदाणं भणमाणे अस्थि चत्तारि गुणट्टाणाणि, दो जीवसमासा, दो पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दम चत्तारि दो एक पाण, सीणसणा, मणुसगदी, भंन्दिदियजादी, तमकाओ, एगारह जोग, अवगदवेदो, अरुसाओ, पंच पाण, जहाबसाद-मुद्रिमंजमो, चत्तारि दंसण, दन्वेण छ लेस्साओ, भवेण सुककलेस्सा अलेस्सा वि अस्थि; भागिदिया, नेदगमस्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, आहारिणो अणारुवजुत्ता होति अणारुवजुत्ता वा सागार-अणारगारेहिं जुगमदुवजुत्ता वा ।

उत्तंतकमायप्यद्विडि जाव अजेगिकेवलि चि मूलोघ-भंगो । संजदासंजदाण-

एहससांपराथिकमुद्रिसयत जीवोंके आलाप कहने पर उनके आलाप मूल ओघाला-पके समान ही जानना चाहिये ।

यथाश्यातविहारशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकपाय, क्षीणकपाय, मयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, सधी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण क्षीणत्वशा, मनुष्यजाति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन-योग, औरारिककाययोग, औरारिकमिथकाययोग और कामकाययोग ये ग्यारह योग, आपगतंघ, अकपाय, मतियानादि पाचों सुज्ञान, यथाश्यातविहारशुद्धिसंयम, चारों दर्शन, प्रथमे उहों लेस्याप, भाउसे शुद्धलेइया तथा अलेइयास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, वेदकस-म्यस्यके विना शेष दो मस्यात्व, संनिक तथा संनिक और अखेटिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

उपशान्तकपाय गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतकके यथाश्यातविहार-

नं. ३७७ यथाश्यात शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | का | यो | वे | क | पा | सय | द | ले | म | स | मति | आ | उ. |
|----|----|---|------|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|----|
| ४ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| १० | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |

मोघ-भंगो ।

असंजदाणं भणमाणे अस्थि चत्तारि गुणट्टाणाणि, चोइस जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दन्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणारुवजुत्ता होति अणारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भणमाणे अस्थि चत्तारि गुणट्टाणाणि, सत्त जीवसमासा,

शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

संयतासयत जीवोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं ।

असंयत जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, रात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग-द्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान-इसप्रकार छह ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों छेदप्राण, भव-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यग्भव, सन्निक, असंनिक, आहारक, अनाहारक, साकार-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान,

नं. ३७८

असंयत जीवोंके आलाप.

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | का | यो | वे | क | पा | सय | द | ले | म | स | मति | आ | उ. |
|----|----|---|------|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|----|
| ४ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ५ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ६ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ७ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ८ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| ९ | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |
| १० | २ | ६ | २० | ४ | ४ | ६ | १२ | ३ | ४ | ६ | २ | ४ | ४ | १ | २ | १ | २ | २ |

पंच पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०} ।

मिच्छाद्दिट्ठिण्हुडि जाव असंजदसम्महाड्ढि चि मूलोघ-भंगा ।

एवं सजममग्गा समत्ता ।

दंसणानुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगो ।

चक्खुदंसणीणं भणमणो अत्थि बारह गुणट्ठणाणि, छ जीवसमासा, छ पञ्ज-चीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ,

तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुद्ध लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संबिक, असंबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तकके असंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिए ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंखीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त, असंखीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त, संखी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संखीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त ये छह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है चारों गतियां,

नं. ३८०

असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | स्य | द | ले | म | स | सि | आ | उ |
| ३ | ७ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५ | ३ | १ | ३ | ३ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| मा | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भणमणो अत्थि तिण्णि गुणट्ठणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय,

सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तिया, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिकमाययोग और चैक्रियरुक्ताययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कसाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संबिक, असंबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्ध्वी असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—मिथ्यादृष्टि, सासा-दनसम्यग्दृष्टि और अविस्मृतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, चैक्रियकामिश्रकाययोग, और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कसाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके

न. ३७९ असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|------|------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | स्य | द | ले | म | स | सि | आ | उ |
| ४ | ६ | ५ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५ | ३ | १ | ३ | ३ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | प्रा | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| मा | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

चतुर्दशजाति-आदी वे जादीओ, तसकाओ, पणारह जोग, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अर्थि, चचारि कसाय अकसाओ वि अर्थि, सत्त पाण, सत्त संजम, चक्रुदंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणारहजुत्ता होंति अणारहजुत्ता वाँ^{६६} ।

तेमि चेव पञ्चाणं भण्णमाणे अर्थि वारह गुणट्टाणणि, तिण्णि जीवसमासा, छ पञ्चचीओ पंच पञ्चचीओ, दस पाण ण प पाण अट्ट पाण, चचारि सण्णाओ खीण-गणा नि अर्थि, चचारि गदीओ, चतुरिदियजादि-आदी दो जादीओ, तसकाओ, अणारह जोग, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अर्थि, चचारि कसाय अकसाओ वि अर्थि, सत्त पाण, सत्त संजम, चक्रुदंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागरहजुत्ता होंति अणारह-

चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातिया, वसकाय, पट्टहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हे, चारों कसाय तथा अकसायस्थान भी हे, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चतुर्दशन, दव्व और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्मत्तर, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुर्दशीनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके वारह गुण-स्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंजीपचेन्द्रिय-पर्याप्त और सद्दीपचेन्द्रिय-पर्याप्त ये तीन जीमसमान; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दसों प्राण, नो प्राण, आठ प्राण, चारों सजाय तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी हे, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, वसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हे, चारों कसाय तथा अकसायस्थान भी हे, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चतुर्दशन, दव्व और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्मत्त्व, संज्ञिक,

१. ३८१ चतुर्दशीनी जीवोंके सामान्य आलाप.

| पु. | जी | प | मा | सा | ग | क | वा. | गो | वे. | क. | ना | सय. | द. | ले. | म | स | सति. | आ | उ. |
|-----|----|---|----|----|---|---|-----|----|-----|----|----|-----|----|-----|---|---|------|---|----|
| १२ | ३ | ५ | ७ | ८ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| ३ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ | २ |

वजुत्ता वाँ^{६६} ।

तेमि चेव अपञ्चाणं भण्णमाणे अर्थि चचारि गुणट्टाणणि, तिण्णि जीवसमासा, छ अपञ्चचीओ पंच अपञ्चचीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गदीओ, चतुरिदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, चचारि जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, पंच पाण, तिण्णि संजम, चक्रुदंसण, दव्वेण काउ-सुकलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणारहजुत्ता होंति अणारहजुत्ता वाँ^{६६} ।

असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुर्दशीनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासा-वत्सस्यदृष्टि, अघिरतसस्यदृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंजीपचेन्द्रिय-अपर्याप्त और सद्दीपचेन्द्रिय-अपर्याप्त ये तीन जीवसमास, छहों अपर्या-प्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाए, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, वसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, तीनों वेद, चारों कपाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, चतुर्दशन, दव्वसे कापोत और शुक्ल लेख्याए, भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्मत्तरिण्यात्वेके विना पांच सम्मत्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३८२ चतुर्दशीनी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| पु. | जी | प | मा | सा | ग | क | वा. | गो | वे. | क. | सय. | द | ले. | म | स | सति. | आ | उ. |
|-----|----|---|----|----|---|---|-----|----|-----|----|-----|---|-----|---|---|------|---|----|
| १२ | ३ | ५ | ७ | ८ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |
| ३ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |

नं. ३८३

चतुर्दशीनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| पु. | जी | प | मा | सा | ग | क | वा. | गो | वे. | क. | सय. | द | ले. | म | स | सति. | आ | उ. |
|-----|----|---|----|----|---|---|-----|----|-----|----|-----|---|-----|---|---|------|---|----|
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ७ | ५ | ३ | ५ | २ | ४ | ५ | ७ | ७ | १ | ३ | ६ | ६ | २ | २ |

चक्षुदंसण-मिच्छाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, छ जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, तेह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि रुमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्षुदंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भम्मिदिया भम्ममिदिया, मिच्छत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुअुत्ता हंति अणागारुअुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं. तिण्णि जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ, दस पाण पाण अट्ट पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि

चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप करने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त, असंजीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त, सत्री-पंचेन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त ये छह जीवसमासा; उन्हीं पर्याप्तियों, उन्हीं अपर्याप्तियों, पांच पर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, चारों सत्तापं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, प्रमत्ताय, आहाररुकाययोगिकके विना तेरह योग, तिनों वेद, चारों कणाय, तिनों सजान, असंजय, चक्षुदर्यान, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यमिन्द्रिक, अमध्यमिन्द्रिक, मिथ्याय, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आशय करने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंजीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और सर्गिपंचेन्द्रिय पर्याप्त ये तीन जीवसमासा, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, चारों सत्तापं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, प्रमत्ताय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिकरुकाययोग और वैकल्पिकरुकाययोग ये दस योग तिनों वेद,

नं. ३८३ चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|----|-------|---|---|---|------|------|----|---|-----|----|---|----|-----|----|-----|-----|----|
| गु. | जी | प | पा | स | ग | ६ | का | यो | वे | क | का- | सण | द | ले | मं. | ग. | गु. | भा. | ६. |
| २ | ६ | ६ | १०,१० | ४ | ४ | २ | ६ | ३३ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| व | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| मि | अंत. | अ | १,१० | ५ | ५ | ५ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ |
| | अस | अ | ८,६ | ५ | ५ | ५ | विना | विना | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | स | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | स | अ. | | | | | | | | | | | | | | | | | |

रुमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्षुदंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भम्ममिदिया भम्ममिदिया, मिच्छत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो, सागारुअुत्ता हंति अणागारुअुत्ता वा ।

तेसिं चैव अण्णत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, तिण्णि जीवसमासा, छ अपञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, दस पाण पाण अट्ट पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, तेह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि रुमाय, दो अण्णाण, असंजमो, चक्षुदंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भम्ममिदिया, भम्ममिदिया, मिच्छत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो, सागारुअुत्ता हंति अणागारुअुत्ता वा ।

चारों कणाय, चारों गतियां, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंजीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त, सत्री-पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन जीवसमासा; छहों पर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, चारों सत्तापं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, प्रमत्ताय, आहाररुकाययोग, वैकल्पिकरुकाययोग और अनाकारोपयोग ये तीन योग; तिनों वेद, चारों कणाय, आदि के दो प्राण, असंजय, चक्षुदर्यान, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यमिन्द्रिक, अमध्यमिन्द्रिक, मिथ्याय, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आशय करने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंजीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और सर्गिपंचेन्द्रिय पर्याप्त ये तीन जीवसमासा; छहों पर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों, सात प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, चारों सत्तापं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, प्रमत्ताय, औदारिकरुकाययोग, वैकल्पिकरुकाययोग और अनाकारोपयोग ये तीन योग; तिनों वेद, चारों कणाय, आदि के दो प्राण, असंजय, चक्षुदर्यान, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यमिन्द्रिक, अमध्यमिन्द्रिक, मिथ्याय, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३८४ चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|----|-------|---|---|---|------|------|----|---|-----|----|---|----|-----|----|-----|-----|----|
| गु. | जी | प | पा | स | ग | ६ | का | यो | वे | क | का- | सण | द | ले | मं. | ग. | गु. | भा. | ६. |
| २ | ६ | ६ | १०,१० | ४ | ४ | २ | ६ | ३३ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| व | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| मि | अंत. | अ | १,१० | ५ | ५ | ५ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ |
| | अस | अ | ८,६ | ५ | ५ | ५ | विना | विना | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | स | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | स | अ. | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ३८६ चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|----|-------|---|---|---|------|------|----|---|-----|----|---|----|-----|----|-----|-----|----|
| गु. | जी | प | पा | स | ग | ६ | का | यो | वे | क | का- | सण | द | ले | मं. | ग. | गु. | भा. | ६. |
| २ | ६ | ६ | १०,१० | ४ | ४ | २ | ६ | ३३ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| व | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| मि | अंत. | अ | १,१० | ५ | ५ | ५ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ | आ |
| | अस | अ | ८,६ | ५ | ५ | ५ | विना | विना | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | स | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | स | अ. | | | | | | | | | | | | | | | | | |

यथाहारिणो, सागरुवजुचा वा ।

चक्षुदुदंशण-सायणसम्महाडि-पहुडि जाव सीणकसाओ ति मूलोत्र-भंगो, गवरि चक्षुदुदंशणं ति भाणिद्वं ।

“अक्षरदुदंशणं भणसाणे अत्थि वारह गुणट्टाणाणि, चोदस जीवसमासा, छ पञ्चनीओ छ अपञ्चनीओ पंच पञ्चनीओ पंच अपञ्चनीओ चत्तारि पञ्चनीओ चत्तारि अपञ्चनीओ, दस पाण सत्त पाण अह पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णा-सु जोग, तिणिण वेद अत्रगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकमाओ वि अत्थि, सत्त पाण, सत्त संजम, अत्र-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अत्रसिद्धिया,

तेज्याण; भव्यविद्धि, अभव्यसिद्धि, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

चक्षुदुदंशणी सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तकके आलाप मूल ओलापके समान होते हैं । विशेष यात यह है कि दर्शन आलापमें ‘चक्षुदर्शन’ पेसा रहना चाहिए ।

चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके वारह गुणस्थान, चौदहों जीवसमान, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दर्शो प्राण; नौ प्राण, सात प्राण, चार प्राण, आठ प्राण; उर प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों सहायं तथा सीणसंसारान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय पांचों प्राणों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात गान, सातों समय, अक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेदयाण, भव्यसिद्धि, अभव्यसिद्धि; छहों सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक,

नं. ३८७

अक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | नी. | प. | प्रा. | म. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | समि. | जा. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|-----|----|
| १ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| २ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ३ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ४ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ५ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ६ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ७ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ८ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ९ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |

छ सम्मत्तं, सण्णो असण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागरुवजुचा होति अणागरुवजुचा वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्तणं भणसाणे अत्थि वारह गुणट्टाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पञ्चनीओ पंच पञ्चनीओ चत्तारि पञ्चनीओ, दस पाण गव पाण अह पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एमारह जोग, तिणिण वेद अत्रगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकमाओ वि अत्थि, सत्त पाण, सत्त संजम, अत्र-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अत्रसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णो असण्णो, आहारिणो, सागरुवजुचा होति अणागरुवजुचा वा ।

तेसिं चैव अपञ्चत्तणं भणसाणे अत्थि चत्तारि गुणट्टाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्चनीओ पंच अपञ्चनीओ चत्तारि अपञ्चनीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके वारह गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमासा, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दर्शो प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों सहायं तथा क्षीण-संसारस्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय अकपायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात गान, सातों समय, अक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेदयाण, भव्यसिद्धि, अभव्यसिद्धि; छहों सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अचिरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमासा, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण,

नं. ३८८

अक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | नी. | प. | प्रा. | म. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | समि. | जा. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|-----|----|
| १ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| २ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ३ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ४ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ५ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ६ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ७ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ८ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ९ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणा-हरिणो, सागारवसुत्ता हति अणगारवसुत्ता वा^{३०} ।

“तेसिं चैव पज्जत्ताणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

असंयम, अचक्षुदर्शिन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संक्षिक, असाह्यक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पंच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारो संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैकिकिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अन्नान, असंयम, अचक्षुदर्शिन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

नं ३९०

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| शु | जी. | प | प्रा | स. | ग. | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय. | द. | ले. | म. | स. | सन्धि. | आ. | उ. | |
|-----|-----|-----|------|----|----|---|----|--------|----|---|-------|-----|----|--------|----|----|--------|-------|----|--|
| १ | १४ | ६प. | १०,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | अज्ञा | १ | १ | द्र. ६ | २ | २ | २ | २ | २ | |
| मि. | | ६अ. | ९,७ | | | | | आ द्वि | ३ | अ | | अस | अच | मा ६ | म. | स. | आहा | साका. | २ | |
| | | ५प. | ८,६ | | | | | विना | | | | | | | अ | अस | अना. | अना. | २ | |
| | | ५अ | ७,५ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४प | ६,४ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४अ | ४,३ | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं ३९१

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| शु | जी. | प | प्रा | स. | ग. | इ | का | यो. | वे | क | ज्ञा | सय. | द. | ले. | म. | स. | सन्धि. | आ | उ. |
|----|-----|---|------|----|----|---|----|-------|----|---|-------|-----|----|--------|----|----|--------|------|----|
| १ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | अज्ञा | १ | १ | द्र. ६ | २ | २ | २ | १ | २ |
| मि | | ५ | ९ | | | | | म ४ | ३ | अ | | अस. | अच | मा ६ | म | स. | आहा | साका | २ |
| | | ४ | ८ | | | | | व ४ | | | | | | | अ. | अस | अना | अना | २ |
| | | ४ | ७ | | | | | औ १ | | | | | | | | | | | |
| | | ४ | ६ | | | | | वे. १ | | | | | | | | | | | |

पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच गण, तिण्णि संजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहरिणो, सागारवसुत्ता हति अणगारवसुत्ता वा^{३०} ।

अचक्खुदंसण-मिच्छादृष्टिणं भणमणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोइस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहि छ

छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पाच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोप-स्थापना ये तीन संयम, अचक्षुदर्शिन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यगिमिथ्यात्वके विना पांच सम्यन्त्व, संक्षिक, असंक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अन्नान,

१ प्रतिपु ' चत्तारि गदीओ ' इति पाठो नास्ति ।

न ३९२

अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
|----|----|----|------|---|---|---|----|-------|----|---|------|------|-------|-------|---|------|-------|-----|------|
| ४ | ७ | ६अ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ४ | ३ | ४ | कुम | ३ | १ | द्र २ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | | ५अ | ७ | | | | | औ मि | ३ | अ | कुशु | अस | अच | का | म | सस्य | स | आहा | साका |
| | | ४अ | ६ | | | | | वे मि | | | मति | मामा | शु | शु | अ | अस | अना | अना | २ |
| | | ४ | ५ | | | | | आ मि | | | शुत | छेदो | मा. ६ | | | | | | |
| | | ४ | ४ | | | | | कामे | | | अव | | | | | | | | |

मिच्छन् मणिणो अमणिणो, आहारिणो, मातारुवजुता ह्येति अणागारुवजुता वा ।

नेमिं चैव त्रयञ्जचार्यं मणमणो अत्यि पर्यं गुणद्वयं, सत्त्व जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीत्रो पंच अपञ्जत्तीत्रो चत्तारि अपञ्जत्तीत्रो, सत्त्व पाण सत्त्व पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण निणि पाण, चत्तारि सणाओ, चत्तारि गर्गओ, एवंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढीत्तायादी छ काय, तिणि जोग, तिणि वेद, चत्तारि कमाय, दो अणण, अणंजमं, अणमणुदंमण, दव्णेण कउ-मुक्कलेसाओ, भाविण छ लेस्साओ; मवमिद्विया अमममिद्विया, मिच्छत्तं, सणिणो असणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मातारुवजुता ह्येति अणागारुवजुता वा” ।

माणसम्मार्शद्विपुडुडि जाप सीणकसाओ चि ताव मूलोघ-भंगो । गवरि अचरुदुदंमणं ति माणिदव्वं ।

भव्यमित्ठिक, अव्यमित्ठिक; मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अणुदर्शनी मिथ्याऽपि जीवोंके अपर्याप्तकालसंवन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्याऽपि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, और त्रिभुक्ति, वेक्तिपित्तमिद्वि और कर्मणकण्ययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कमाय, आदिके दो ज्ञान, अणयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएँ, भव्यमित्ठिक, अव्यमित्ठिक; मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मात्मानममणुद्वि गुणस्थानसे लेकर अणरुपाय गुणस्थान तकके अचक्षुदर्शनी जीवोंके आग्रह मूल ओषालापके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय अचक्षुदर्शन, ही कल्पना चाहिए ।

नं. ३९२ अचक्षुदर्शनी मिथ्याऽपि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

ओहिंदसणीणं सणमणो अत्यि गव गुणद्वयणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ अपञ्जत्तीओ, दस पाण मत्त पाण, चत्तारि सणाओ खीणसणा वि अत्यि, चत्तारि गर्गओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिणि वेद अणुदवेदो वि अत्यि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्यि, चत्तारि पाण, मत्त संजम, ओहिंदसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्विया, तिणि सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मातारुवजुता ह्येति अणागारुवजुता वा” ।

तेसिं चैव पञ्जचार्यं मणमणो अत्यि गव गुणद्वयणाणि, एगो जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सणाओ खीणसणा वि अत्यि, चत्तारि गर्गओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एणारह जोग, तिणि वेद अणुदवेदो वि अत्यि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्यि, चत्तारि पाण, मत्त संजम, ओहिंदसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्विया, तिणि सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो, मातारुवजुता ह्येति

अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्द्वि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, सक्षी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएँ तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवचिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यमित्ठिक, औपशमिक आदि तीन सम्यग्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंवन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्द्वि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय तकके नौ गुणस्थान, एक संक्षी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएँ तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंवन्धी ग्यारह योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवचिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएँ, भव्यमित्ठिक, औपशमिक आदि तीन सम्यग्त्व, सन्निक,

नं. ३९३ अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

अणागारवजुता वा ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तारं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, तिण्णि संजम, ओहिदंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुता हति अणागारवजुता वा ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतस्य-रुष्टि और प्रमत्तस्यत ये दो गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैकि-पिकमिश्र, आहारकमिश्र और कामणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोप-स्थापना ये तीन संयम, अवधिदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याप, भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यस्त्य, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं ३९४

अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सप. | द. | ले. | म. | स. | सन्धि. | आ. | उ. |
|-------|-----|----|-----|----|----|----|-----|-------|-----|----|-------|-----|-----|------|----|----|--------|------|-------|
| १ | १ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ५ | ७ | १ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अवि | सप | | | | | | | १२म.४ | ३ | ४ | के. | ७ | अव. | द्र. | ६ | १ | ३ | आहा. | साका. |
| से | | | | | | | | व.४ | ६ | ६ | विना | | | मा | ६ | म. | ३ | अना | अना |
| क्षीण | | | | | | | | ओ १ | ६ | ६ | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | वे १ | ६ | ६ | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | आ १ | ६ | ६ | | | | | | | | | |

नं ३९५

अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सप. | द. | ले. | म. | स. | सन्धि. | आ. | उ. |
|------|-----|----|-----|----|----|----|-----|----------|-----|----|-------|------|----|------|----|----|--------|------|-------|
| २ | १ | ६अ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ |
| अवि. | स | अ | | | | | | ओ मि पु. | ३ | ४ | मति | अस | अन | का | ३ | ३ | ३ | आहा. | साका. |
| प्रम | | | | | | | | वे मि. न | ३ | ४ | मुप. | सामा | शु | मा.व | ३ | ३ | ३ | अना | अना |
| | | | | | | | | आ मि | ३ | ४ | अव | छेदो | | | | | | | |
| | | | | | | | | कर्म. | ३ | ४ | | | | | | | | | |

असंजदसम्महिप्पहुडि जाव खीणकसाओ ति ताव ओहिणाण-भंगो । णवरि ओहिदंसणं ति भाणिदब्बं ।

केवलदंसणसस केवलणाण भंगो ।

एवं दसणमगणा समत्ता ।

लेस्सायुवादेण ओघालावो मूलोघ-भंगो । णवरि अजोगिगुणट्ठणेण विणा तेरह गुणट्ठणाणि अत्थि, तेण अजोगिजिण सिद्धे च पडुच्च जे आलावा ते ण भाणिदब्बा ।

“किण्हलेस्सालावे भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठणाणि, चोइस जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ,

अवधिदर्शनी जीवोंके असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके आलाप अवधिज्ञानके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि दर्शनी आलाप कहते समय अवधिज्ञानके स्थान पर अवधिदर्शनी कहना चाहिए ।

केवलदर्शनेके आलाप केवलज्ञानके समान होते हैं ।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई ।

लेख्यामार्गणके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि अयोगिकेवली गुणस्थानके विना तेरह गुणस्थान ही होते हैं, इसलिये अयोगि-केवलीजिन और सिद्धभगवान्की अपेक्षासे जो आलाप होते हैं, वे नही कहना चाहिए ।

कृष्णलेख्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञापं,

नं. ३९६

कृष्णलेख्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

| गु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सप. | द. | ले. | म. | स. | सन्धि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-----|----|----|----|-----|------|-----|----|-------|------|------|-------|----|----|--------|-----|------|
| ४ | ४ | १४ | ६प | ७ | ४ | ५ | ६ | २३ | ३ | ४ | ६ | १ | ३ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| मि | सा | अ | | | | | | आदि | ३ | ४ | अक्षा | अस | के द | मा | ३ | ३ | ३ | आहा | साका |
| | | | | | | | | विना | | | ३ | विना | | कृष्ण | अ | | | अना | अना |
| | | | | | | | | | | | ज्ञान | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | ३ | | | | | | | | |

सागारवञ्जुता ह्येति अणागारवञ्जुता वा ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणह्णणणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच पाण, असंजसो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं वेदगसम्मत्तं च भवदि; छट्ठीदो पुढवीदो किण्हलेस्सा-सम्माइड्ढिणो मणुसेसु जे आगच्छंति तेसिं वेदगसम्मत्तेण सह किण्हलेस्सा लब्भदि चि । सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवञ्जुता ह्येति अणागारवञ्जुता वा ।

सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों क्रपाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्यापं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और वेदकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व होते हैं । कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्व होनेका कारण यह है कि छठी पृथिवीसे जो दृष्णलेश्यावाले अविरतसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्योंमें आते हैं, उनके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्वके साथ कृष्णलेश्या पाई जाती है । सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, अनंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३९८ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| शु. ३ | जी ७ | प ७ | पा. ७ | स. ४ | ग. ४ | द. ५ | का. ५ | यो ३ | क ४ | सा ५ | माय १ | द. १ | ले २ | स ३ | म ३ | म ३ | सति २ | आ. १ | उ २ | |
| मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ |
| माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ |
| अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ |

चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, असंजसो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवञ्जुता ह्येति अणागारवञ्जुता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणह्णणणि, सत्त जीवसमासा छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण गव पाण अह पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि मण्णाओ, तिण्णि गईओ, देवगई णत्थि; देवानं पञ्जत्त-काले अमुह-ति-लेस्साभावादो । पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, असंजसो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, गों प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञापं, नरकगति तिर्यग्यगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां, यहापर देवगति नहीं है, स्पर्शिक, देवोंके पर्याप्तकालमें अद्भुत तीन लेश्याश्रोंका अभाव है । पांचों जातिया, छहों काय, चारों मनो-योग, चारों त्वनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों क्रपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे उहों लेश्यापं, भावसे कृष्णलेश्या भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों

नं. ३९७ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| शु. ३ | जी ७ | प ७ | पा. ७ | स. ४ | ग. ४ | द. ५ | का. ५ | यो ३ | क ४ | सा ५ | माय १ | द. १ | ले २ | स ३ | म ३ | म ३ | सति २ | आ. १ | उ २ |
| मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ | मि. ५ |
| माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ | माना ५ |
| अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ | अवि. ५ |

काउ-शुक्लेस्साओ, भावेण क्णहलेस्सा; भवसिद्धिया अमसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो अमण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अणागारुजुत्ता वा ।

क्णहलेस्सा-मासणमम्माड्डीणं भण्णमाणे अरिथ एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ छ अउज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियज्जादी, तमक्काओ, तेह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण क्णहलेस्सा; भवसिद्धिया, मासण-मममत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अणागारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अरिथ एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिदियज्जादी, तमक्काओ, दम जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजमो, दो

प्रादिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्यापं, भावसे कृष्णलेश्या; मयसिद्धिक, अमयगिरिक, मियार, संनिक, असनिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सभी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छदों पर्याप्तियां, छदों अपर्याप्तियां; यशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसक्काय, आहारकक्रमायोगिकके विना शेष तीन गतियां, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छदों लेश्याप, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, मान्दानसम्यगर, संनिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंनन्धी आलाप कहने पर—एक सामादन गुणस्थान, एक संनधी अपर्याप्त जीवसमास, छदों पर्याप्तियां, द्वादों प्राण, चारों संज्ञापं देवगतीके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसक्काय, चारों मनोयोग, चारों पवनयोग, गीगारिकक्रमायोग और वैक्रियिकक्रमायोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय,

१ श्रीय ' वलारि गदीओ ' इति पाठो नास्ति ।

नं. ४०२ कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|---|----|----|---|----|----|----|------|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | व | वे | क | सा | सय | द | ले | म. | म. | सति. | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मा | मं. | प | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण क्णहलेस्सा; भवसिद्धिया, मासणसममत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हति अणागारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अरिथ एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिदिय-जादी, तसक्काओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-शुक्लेस्साओ, भावेण क्णहलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसममत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अणागारुजुत्ता वा ।

तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छदों लेश्याप, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संनिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंनन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संनधी अपर्याप्त जीवसमास, छदों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसक्काय, ओदा-रिक्कमिअ, वैक्रियिकमिअ और कामणकक्रमायोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्यापं, भावसे कृष्ण-लेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संनिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४०३ कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|---|----|----|---|----|----|----|------|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | व | वे | क | सा | सय | द | ले | म. | म. | सति. | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मा | मं. | प | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ४०४ कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|---|----|----|----|----|----|----|------|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | व | वे | क | सा | मय | द. | ले | म. | म. | सति. | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मा | मं. | प | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

क्रिहलेस्त्रा-सम्प्रापिच्छाहृदीणं भण्णमाणे अरिथ एयं गुणद्वयं, एत्तो जीव-समाप्तो, छ पञ्चवीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देगदीए विगा तिलि गंडओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिलि वेद, चत्तारि रुमाय, तिलि पाजानि तीदि अण्णणेहि मिस्रमाणि, असंजसो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, माणेण किह्वेस्सा; भवसिद्धिया, मम्मामिच्छत्तं, मण्णिणे, आहारिणे, नागाकरुजा होलि 'पागाक-चयुत्ता वा' ।

क्रिह्वेस्त्रा-असंजदसम्माहृदीणं भण्णमाणे अरिथ एयं गुणद्वयं, दो जीवमामा, छ पञ्चवीओ छ अपञ्चवीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देगदीए रिला तिणिण गदीओ, पंचिदियजादी, तपसाओ, वेडवियमिम्मंण विगा साग्हु जोग, तिलि वेद, चत्तारि रुमाय, तिणिण णण, अमंसओ, तिणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, माणे

ठण्णेलेश्याले सम्यमिथ्यादृष्टि जीवोके भन्नाए क्खत्ते पर—एक वर्यामिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सत्री पर्याव्व जीवममास, उठो पर्याव्विया, दसो प्राण, चारो भंजाए, देवगतिके विना क्षेत्र तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारो मनोयोग, चारो पंचायोग, औदारिककाययोग और वेदिकियकाययोग ये दस योग; तीनां वेद, चारो रुमाय, तीओ अठानोसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, अमंसय, दो इरुम, उच्चमे उठो केस्साए, माउये ठण्णेलेश्या; मय्यमिद्धिक, मय्यमिथ्याए, मन्त्रिक, आहारक, नाकारोपयोगी और भवा-कारोपयोगी दोते है ।

ठण्णेलेश्याले अमयतस्यस्यदृष्टि जीवोके सामान्य भन्नाए क्खत्तेपर—एक अथिरक सम्यदृष्टि गुणस्थान, सत्री-पर्याव्व और सत्री-अपर्याव्व ये दो जीवममास, उठो पर्याव्विया, उठो अपर्याव्विया; दसो प्राण, सात प्राण; चारो सजाए, देगदिके विना क्षेत्र तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वेदिकियसिद्धकाययोग और आहारककाययोगदिके विगा क्षेत्र बाह्व योग, तीनां वेद, चारो रुमाय, आदिके तीन ज्ञान, अमंसय, आदिके तीन इरुम,

नं. ४०५:

ठण्णेलेश्याबाले सम्यमिथ्यादृष्टि जीवोके सामान्य.

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |

क्रिह्वेस्त्रा; मन्त्रमिद्धिया, तिनि मन्मं, मन्त्रिनो, आहारिणो आहारिणो, नागाक-चयुत्ता होलि अजागाकरुजा वा ।

तेरि चत्त पञ्चाओ मन्त्राने अरिथ एयं गुणद्वयं, एत्तो जीवममाप्तो, छ पञ्चवीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देगदीए विगा तिलि गंडओ, पंचिदियजादी, तपसाओ, दस जोग, तिलि वेद, चत्तारि रुमाय, तिनि ज्ञान, अमंसओ, तिनि इरुम, दब्बेण छ लेस्साओ, माणेण जिह्वेस्त्रा; मन्त्रमिद्धिया, तिनि मन्मं, मन्त्रिनो, आहारिणो, नागाकरुजा होलि अजागाकरुजा वा ।

इरुममे उठो मन्मं, माउये एरुममे उठो मन्त्रिनो, आहारिणो आहारिणो, नागाक-चयुत्ता होलि अजागाकरुजा वा ।

उठो मन्त्राने अजागाकरुजादृष्टि जीवोके मन्त्रिनो चत्त पञ्चाओ पर—एक अपर्याव्वियादृष्टि गुणस्थान, एक सत्री मन्त्राने अजागाकरुजा, उठो मन्त्रिनो, उठो मन्त्राने अजागाकरुजा, चत्तारि सण्णाओ, देगदीए विगा क्षेत्र तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारो मनोयोग, चारो पंचायोग, औदारिककाययोग और वेदिकियकाययोग ये दस योग; तीनां वेद, चारो रुमाय, अमंसय, दो इरुम, उच्चमे उठो केस्साए, माउये उठो मन्त्रिनो, मन्त्रमिद्धिक, मन्त्रमिथ्याए, मन्त्रिक, आहारक, नाकारोपयोगी और भवाकारोपयोगी दोते है ।

नं. ४०६: ठण्णेलेश्याले अमयतस्यस्यदृष्टि जीवोके सामान्य

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |

नं. ४०७: ठण्णेलेश्याबाले अमयतस्यस्यदृष्टि जीवोके पर्याव्व भन्नाए

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |

सण्णियो असण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणद्वयाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण काउ-लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, चत्तारि मिच्छत्तं, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{११} ।

असंबिकि, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही कापोतलेइयावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यक्त्व और अद्विगतसम्यक्त्व ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों सद्भाष, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, कुमति, कुथुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्लेश्यापं, भावसे कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये चार सम्यक्त्व, संबिक, असंबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं ४१० कापोतलेइयावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|------|-------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|------|------|---|---|-------|-----|---|
| ४ | ७ | ६ | १० | ४ | ३ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ६ | १ | ३ | ३ | ६ | २ | २ | १ | २ |
| मि | पर्यो | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |
| सासा | सम्य | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |
| अवि | | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |

न ४११ कापोतलेइयावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|------|-------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|------|------|---|---|-------|-----|---|
| ३ | ७ | ६ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५ | १ | ३ | ३ | २ | ४ | २ | २ | २ |
| मि | पर्यो | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |
| सासा | सम्य | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |
| अवि | | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |

काउलेस्सा-मिच्छाइदीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वयं, चोहस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णत्र पाण सत्त पाण अह पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{१२} ।

तेसिं चैव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णत्र पाण अह पाण सत्त पाण

कापोतलेइयावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, तीन प्राण चारों संज्ञापं, चारों गतिया, पांचों जातियां, छहों काय, आहाररुकाययोगद्विके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयापं, भावसे कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, असंबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही कापोतलेइयावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों

नं ४१२ कापोतलेइयावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|------|-------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|------|------|---|---|-------|-----|---|
| ३ | ७ | ६ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५ | १ | ३ | ३ | २ | ४ | २ | २ | २ |
| मि | पर्यो | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |
| सासा | सम्य | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |
| अवि | | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द | के द | २ | ६ | स | आहा | २ |

७ पाण चत्वारि पाण, चत्वारि सण्णाओ, देवगर्हणं विणा तिण्णि गईओ, पंच जादीओ, ७ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दो लेम्मा, मोयेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, सण्णिणो भ्रमणियो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हति अण्णागारुजुत्ता वा" ।

" तेमिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एणं गुणट्ठणं, मत्त जीमसमामा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्वारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्वारि पाण तिण्णि पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

मज्जाय, रेग्गन्तिके विना शेष तीन गतियां, पाचों जातिया. छहों काय, चारो मनोयोग, चारों न्यनयोग, ओरारिककाययोग और वैकियिककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्याएं, भावसे कापोत-लेस्या. भयन्तिक, अभयसिद्धिकः मिथ्यात्व, सत्तिक, असाहिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनात्मोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेस्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीमसमासः छहों अपर्याप्तियां, पाच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पंच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों सजाप, चारों गतियां, पाचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिथ्य, वैकियिकमिथ्य और काम्यन्ययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके

न. ४१३ कापोतलेस्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|------|----|---|---|---|----|----|----|---|-----|-----|---|----|---|----|----|---|----|
| गु. जी. | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा. | सय. | द | ले | म | स. | सा | आ | उ. |
| २ | १ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मा | स.प. | इअ | ७ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| संज | इअ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

न. ४१४ कापोतलेस्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|------|----|---|---|---|----|----|----|---|-----|-----|---|----|---|----|----|---|----|
| गु. जी. | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा. | सय. | द | ले | म | स. | सा | आ | उ. |
| २ | १ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मा | स.प. | इअ | ७ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| संज | इअ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अण्णागारुजुत्ता वा ।

काउलेस्सा-सासणसम्मइड्ढीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गईओ, पंचदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अण्णागारुजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एणं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, देवगर्हणं विणा तिण्णि गईओ, पंचदियजादी,

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेस्याएं, भावसे कापोतलेस्या, भयन्तिक, अभय-सिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिक, असहिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेस्यावाले सासादत्तसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादत्त गुणस्थान, सत्ती-पर्याप्त और सत्ती-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों सजाप, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकन्ययोग और आहारकमिथ्यन्ययोग इन दो योगोंके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्याएं, भावसे कापोतलेस्या, भव्यसिद्धिक, सासादत्तसम्यग्दृष्टि, सत्तिक, आहारक, अनाहारक; साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कापोतलेस्यावाले सासादत्तसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादत्त गुणस्थान, एक संशी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संक्षार, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

नं. ४१५ कापोतलेस्यावाले सासादत्तसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|------|----|---|---|---|----|----|----|---|-----|-----|---|----|---|----|----|---|----|
| गु. जी. | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा. | सय. | द | ले | म | स. | सा | आ | उ. |
| २ | १ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मा | स.प. | इअ | ७ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| संज | इअ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

तसकाओ, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दवेण छ लेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{११} ।

“तेसिं चैव अपज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णणओ, तिणिण गईओ, गिरयगई गत्थि । पंचिदियजादी, तसकाओ, तिणिण जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दवेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे कापोत-लेख्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यन्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हें कापोतलेख्यावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, त्रियंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां होती हैं, किन्तु नरकगति नहीं है । पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याएं, भावसे कापोतलेख्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यन्त्व, संक्षिक,

न ४१६ कापोतलेख्यावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ | |
|-------|---|------|---|----|---|----|----|----|---|--------|-----|-------|-------|---|------|-------|-----|------|------|
| १ | ६ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द्र ६ | १ | १ | १ | १ | २ | |
| सा | स | प | न | ति | म | प | म | ४ | ४ | अज्ञा. | अस. | चक्षु | मा १ | म | पासा | स | आहा | उ | |
| | | | | | | | | | | | | अच. | कापो | | | | | साका | अना. |

न ४१७ कापोतलेख्यावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ | |
|-------|---|------|---|----|----|----|----|----|------|------|-----|-------|-------|------|---|-------|-----|------|-----|
| १ | ६ | ७ | ४ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | द्र २ | १ | १ | १ | २ | २ | |
| सा | स | अ | म | ति | प. | न | ओ | मि | कुम | कुशु | अस | चक्षु | का | सासा | स | आहा | अना | साका | अना |
| | | | | | दे | | वै | मि | कुशु | कुशु | अच. | अच. | मा १ | का | | | | अना | अना |

सण्णणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा ।

काउलेस्सा-सम्मामिच्छाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णणओ, देवगदीए विणा तिणिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाणाणि तीहि अण्णणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दवेण छ लेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{१२} ।

काउलेस्सा-असंजदस्ममाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णणओ, देवगदीए विणा तिणिण गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेख्यावाले सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादष्टि गुणस्थान, एक संक्षी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे कापोतलेख्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेख्यावाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अचिरत-सम्यग्दष्टि गुणस्थान, संक्षी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारककाययोगदिके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके

नं. ४१८

कापोतलेख्यावाले सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप

| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|-------|----|------|---|----|----|----|----|----|---|--------|----|-------|-------|----|---|-------|-----|-------|
| १ | ६ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द्र ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| सम्य | स. | प | न | ति | म. | प. | म | ४ | ४ | अज्ञा. | अस | चक्षु | मा १ | म. | स | स | आहा | साका. |
| | | | | | | | | | | | | अच | का | | | | | अना. |

पञ्चत्वीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगईए विणा तिणिण गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, सत्त पाण, पंच संजम, तिणिण दंसण, दव्हेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणागारुजुत्ता वा^{५३३} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि ति दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, गणुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, पंच

गुणस्थान, एक संक्षी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारो संज्ञापं, नरक-गतिके विना शेष तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, पर्याप्तकालसम्बन्धी ग्यारह योग, तीनो वेद, चारों कपाय, केवल ज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसास्पगय और यथाव्ययत-संयमके विना शेष पाच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहो लेश्यापं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यासिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होति है ।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—भिव्यादृष्टि, सासादनसम्पदृष्टि, अतिरतसम्पदृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारो योग, नपुंसकवेदके विना शेष दो वेद, चारों कपाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पंच ज्ञान,

नं. ४२३

तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
|------|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|----|---|---|-------|---|---|
| ७ | १ | ६ | १० | ४ | ३ | ३ | १ | ११ | ४ | ४ | ७ | ५ | ३ | ६ | २ | ६ | १ | १ | २ |
| मि | सा | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
| से | सा | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
| अप्र | से | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |

नं ४२४

तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
|------|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|----|---|---|-------|---|---|
| ४ | १ | ६ | ७ | ४ | २ | ३ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | २ | २ |
| मि | सा | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
| से | सा | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
| अप्र | से | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |

छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणागारुजुत्ता वा^{५३३} ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विशेषार्थ—गोमट्टसार जीवकाण्डके अन्तमें आलाप अधिकारके ऊपर प दोइरमलजी ने जो सदृष्टियां दी हैं उनमें इन्द्रियमार्गणकी अपेक्षा असंक्षी पंचेन्द्रियके पर्याप्त अवस्थामें चार लेश्याप, तेजोलेश्याके आलाप बतलते हुए तेजोलेश्यामें संक्षी-पर्याप्त और अपर्याप्तके अतिरिक्त असंक्षीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास और सक्षीमार्गणके आलाप बतलते हुए असंक्षीयोंके चार लेश्याप बतलाई हैं । परंतु जिस आलाप अधिकारके अनुसार पंडितजीने ये सदृष्टिया सग्रहीत की हैं उसमें केवल सक्षीमार्गणके आलाप बतलते हुए असंक्षीयोंके तीन चार लेश्याप बतलाई हैं । किन्तु इन्द्रियमार्गणके आलाप बतलते हुए असंक्षीयोंके तीन अग्रिम लेश्याप और तेजोलेश्याके आलाप बतलते हुए संक्षी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो ही जीवसमास बतलाये हैं । किन्तु धवलायें सर्वत्र असंक्षीयोंके तेजोलेश्याका अभाव या तेजोलेश्यामें असंक्षीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमासका अभाव ही बतलाया है । इससे इतना तो निश्चित हो जाता है कि गोमट्टसार जीवकाण्डमें संक्षीमार्गणके आलाप बतलते हुए असंक्षीयोंके जो चार लेश्याप बतलाई हैं वह कथन धवलकी मान्यताके विरुद्ध है । परंतु गोमट्टसार जीव-काण्डके मूल आलाप अधिकारमें ही जो दो मान्यताएँ पाई जाती हैं उसका कारण क्या होगा, इसका ठीक निर्णय समझमें नहीं आता है । एक बात अवश्य है कि पंडित दोइर-मलजीने सर्वत्र एक ही मान्यता अर्थात् असंक्षीयोंके तेजोलेश्या या तेजोलेश्यामें असंक्षीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमासको स्वीकार कर लिया है, इसलिये उनके सामने सर्वत्र उक्त मान्य-ताका पोषक ही पाठ रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं । यदि पंडितजीने मूलमें दिये गये संक्षीमार्गणके निर्देशके अनुसार ही सर्वत्र सुधार किया होता तो कहीं न कहीं उन्होंने उसका संकेत अवश्य किया होता । जो कुछ भी हो, फिर भी यह प्रश्न विचारणीय है ।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके सात

नं. ४२२

तेजोलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
|------|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|------|----|---|----|---|---|-------|---|---|
| ७ | ५ | ६ | १० | ४ | ३ | ३ | १ | १५ | ३ | ४ | ७ | ५ | ३ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| मि | सा | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
| से | सा | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |
| अप्र | से | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | लं | म | स | सन्नि | आ | उ |

जोग, दो वेद, णडुसयवेदो णत्थि; चचारि क्कमाय, दो अण्णाण, अंतंजसो, दो रंजग, दब्बेण णडु-सुक्कलेस्साओ, भोपेण वेडलेस्सा; भवत्थिदिया अममत्थिदिया, भिन्डुओ, सण्णियो, अहारिणो अणाहारिणो, मागारुअहुत्ता हति अणागारुअहुत्ता स ।

तेडलेस्सा-सासणसम्माइटीणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वारणं, दो चीरममासो, उ पज्जचीओ छ अपज्जचीओ, दम पाण सच पाण, चचारि मत्थाओ, निरयणोए पिवा तिण्णि गइओ, पंचिदियजादी, तमसाओ, अंतरालियपिसेण पिवा चारु जोग, जिनि वेद, चचारि क्कमाय, तिण्णि अण्णाण, अंतंजसो, दो रंजग, दब्बेण छ लेस्साओ, मांज तेडलेस्सा; भवत्थिदिया, माण्णमम्मत्तं, मण्णियो, अहारिओ अणाहारिओ, मागारुअहुत्ता हति अणागारुअहुत्ता स" ।

तेमि चैव पज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वारणं, एओ चीरममांसो, उ पज्ज-दो योग; पुरुर थोर खी ये दो रेत्त होते है, किन्तु नपुमहंत्तं तहां होत है । चारों क्कमाय, आदिके दो अज्जल, अंतंजम, आदिके दो इत्तल, द्रयमं सणोर थोर गुलु अर्यायं, मात्तमे तेजोलेदया, भवत्थिमिदिक, अमत्थिमिदिक; मिथ्याय, मत्थिक, आसत्तक, अणागारुअ-साकारोपयोगी और अलाकारोपयोगी होते हैं ।

तेजोलेदयावाले साम्वादतस्यग्रहदि त्रिणिके सामान्य आत्माय रहते पर—एक सामा-दत्त गुणस्थान, सबी एयत्त और सबी-अप्योत्त ये दो जीरयममाय, उहो एयत्थियवा, उहो अपयत्थियां; दसों प्राण, स्वात माण, चारों म्हाय, तत्तकमत्थिके पिवा दोर भीन गरियां, पचेदियज्जाति, त्रयक्काय, भौत्तरिकमिथ्रकाययोग और आहारकफाययोगिकके पिवा दोर बाह्य योग, तीनों वेद, चारों क्कमाय, तीनों अज्जल, अंतंजम, आदिके दो दसों, दुब्बेणे उहो लेदयाएं, भावसे तेजोलेदया; भवत्थिमिदिक, साम्वादतस्यग्रह, मत्थिक, आहारक, अलाहारक साकारोपयोगी और अलाकारोपयोगी होते हैं ।

उहो तेजोलेदयावाले साम्वादतस्यग्रहदि त्रिणिके एयोत्तकाल्पवर्षी आश्रय रहते

ने ३२८ तेजोलेदयावाले साम्वादतस्यग्रहदि त्रिणिके सामान्य आत्माय.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|---------|-----|-----|
| पु | जी | पु | मा | म | ग | इ | का | यो | रे | क | भा. | गय | इ | ने | म. | म. | वत्थिक. | थ | ३ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ |
| ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ |
| ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ |
| ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | १०१ |

चीओ, दत्त पाण, चचारि मत्थाओ, जिनि चरीओ, पंचिदियज्जादी, तमसाओ, दोर जोग, जिनि वेद, चचारि क्कमाय, तिण्णि अण्णाण, अंतंजसो, दो रंजग, दुब्बेण उ लेस्साओ, मांज तेडलेस्सा; भवत्थिमिदिया, माण्णमम्मत्तं, मण्णियो, अहारिओ, अणाहारिओ, मागारुअहुत्ता स ।

तेमि चैव पज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वारणं, एओ चीरममांसो, उ पज्जत्तणीओ, मय पाण, चचारि मत्थाओ, देसणी, पंचिदियज्जादी, तमसाओ, दो पर—एक साम्वादत गुणस्थान, एक मयं मयंज अण्णममाय, उहो एयत्थियवा, उहो अज्जल, चारों क्कमाय, तत्तकमत्थिके पिवा दोर भीन गरियां, पचेदियज्जाति, त्रयक्काय, भौत्तरिकमिथ्रकाययोग और आहारकफाययोगिकके पिवा दोर भीन गरियां, पचेदियज्जाति, त्रयक्काय, तीनों अज्जल, अंतंजम, आदिके दो दसों, दुब्बेणे उहो लेदयाएं, भावसे तेजोलेदया; भवत्थिमिदिक, साम्वादतस्यग्रह, मत्थिक, आहारक, अलाहारक साकारोपयोगी और अलाकारोपयोगी होते हैं ।

उहो तेजोलेदयावाले साम्वादतस्यग्रहदि त्रिणिके सामान्य आत्माय रहते पर—एक साम्वादत गुणस्थान, एक मयं पयंज अण्णममाय, उहो एयत्थियवा, उहो अज्जल, चारों क्कमाय, तत्तकमत्थिके पिवा दोर भीन गरियां, पचेदियज्जाति, त्रयक्काय, भौत्तरिकमिथ्रकाययोग और आहारकफाययोगिकके पिवा दोर भीन गरियां, पचेदियज्जाति, त्रयक्काय, तीनों अज्जल, अंतंजम, आदिके दो दसों, दुब्बेणे उहो लेदयाएं, भावसे तेजोलेदया; भवत्थिमिदिक, साम्वादतस्यग्रह, मत्थिक, आहारक, अलाहारक साकारोपयोगी और अलाकारोपयोगी होते हैं ।

३. ३२९ तेजोलेदयावाले साम्वादतस्यग्रहदि त्रिणिके एयोत्त आत्माय.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|---------|-----|-----|
| पु | जी | पु | मा | म | ग | इ | का | यो | रे | क | भा. | गय | इ | ने | म. | म. | वत्थिक. | थ | ३ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ |
| ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ |
| ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ |
| ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | १०१ |

३ ३३० तेजोलेदयावाले साम्वादतस्यग्रहदि त्रिणिके एयोत्त आत्माय.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|---------|-----|-----|
| पु | जी | पु | मा | म | ग | इ | का | यो | रे | क | भा. | गय | इ | ने | म. | म. | वत्थिक. | थ | ३ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ |
| ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ |
| ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ |
| ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | १०१ |

बहुता होति अणापाकभुजा तां ॥

तेसि चैव अपञ्चत्तार्णं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वयं. एत्रो जीवमाणो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुमपादि पि दो गदीओ, पंचिदिय-जादी, तमहाओ, तिणि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि रुपाय, तिणि पाण, अंजवो, तिणि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भोवण तेउलेस्सा; मरविदिया तिणि मम्मनं, सण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, नागाकभुजा होति अणापाकभुजा ता ।

तेउलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वयं, एत्रो जीवमाणो, छ

आहारक, नाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं तेजोलेद्यावाले असंयतसम्पत्ति जियोके अर्थात् अल्पसंख्या आन्नाप कइते पर—एक अतिरतसम्पत्ति गुणद्वयान, एक मही-अपयोगी जीवसमाय, छहों अर्थात् जिनों सात प्राण, चारों संक्रां, देवगति और मनुच्यगति ये दो गतियां, त्वेन्द्रियजाति, स्वप्नाय, औद्यतिकमित्र, वैश्विकमित्र और कामेजकाययोग ये तीन योग; पुरादेव, चारों कलाय, आविके तीन ज्ञान, असंयत, आविके तीन दर्शन, दृश्यमे जापोत और मूळ लेदियायं, भाषणे तेजोलेस्या; भयविलिदिक, नोपनामिक आदि तीन सम्बन्धन, मक्षिक, गदाकार, अनाहारक-साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

तेजोलेद्यावाले संयत्तासंयत जियोके आन्नाप कइले पर—एक देवातिरत गुणद्वयान, एक

नं ४३३ तेजोलेद्यावाले असंयतसम्पत्ति जियोके एपांज मालाए.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|-----|-------|-----|-----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|
| गं. | जी | पं. | प्रा. | सं. | गं. | इ. | का. | गो. | वे. | क. | भा. | गण. | दं. | जे. | मं. | पं. | क. | ला. | रं |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अति | मं.प | ति. | व | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ४३४ तेजोलेद्यावाले असंयतसम्पत्ति जियोके अपपांज आन्नाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|-----|-------|-----|-----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|
| गं. | जी | पं. | प्रा. | सं. | गं. | इ. | का. | गो. | वे. | क. | भा. | गण. | दं. | जे. | मं. | पं. | क. | ला. | रं |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अति | मं.प | ति. | व | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि मण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तमहाओ, नर जोग, तिणि देव, चत्तारि रुपाय, तिणि पाण, मंजमांसजो, तिणि दंसण, दब्बेण छ केस्साओ, नांण वेउलेस्सा; मरविदिया, तिणि मम्मनं, मत्तिणो, आहारिणो, नागाक-भुजा होति अणापाकभुजा ता ।

वेउलेस्सा-मनसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वयं, दो जीवमाणो, छ पञ्चत्तीओ छ मण्णजोओ. दस पाण नराण, चत्तारि मण्णाओ, मणुमपादी, पंचि-दियजादी, तमहाओ, एगाह योग, तिणि देव, चत्तारि रुपाय, चत्तारि पाण, तिणि तिणि

धंजा एपांज पांणसमाय, छहों पत्तीणों, दसों ज्ञान, चारों संक्रां, देवगति और मनुच्य-गति ये दो गतियां, त्वेन्द्रियजाती, स्वप्नाय, चारों मनुच्यगति, चारों पञ्चकलेस और वैश्विक-मित्र अर्थात् ये भी योग; जिनो देव, चारों कलाय, आविके तीन ज्ञान, मन्वसंयत, मरविदिक तीन योग, दब्बेण छहो वेउलेस्सा, मरविदिया, तिणि मम्मनं, मत्तिणो, आहारिणो, नागाक-भुजा होति अणापाकभुजा ता ।

तेजोलेद्यावाले असंयत जियोके अन्नाप कइले पर—एक अतिरत गुणद्वयान, दो जीवमाण और अपपांज ये दो पत्तीणों, छहों पत्तीणों, छहों अर्थात् जिनों सात प्राण, चारों संक्रां, मणुमपादी, त्वेन्द्रियजाति, स्वप्नाय, चारों मनुच्यगति, चारों कलाय, वैश्विकमित्रयोग, आहारकमित्रयोग और आहारकमित्रयोग ये चार पांण जोला जिनो देव, चारों कलाय, आविके चार ज्ञान, मक्षिक, उशोस्सामना और पंचिदियविमुदिये

नं. ४३५ तेजोलेद्यावाले संयत्तासंयत जियोके मालाए.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|-----|-------|-----|-----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|
| गं. | जी | पं. | प्रा. | सं. | गं. | इ. | का. | गो. | वे. | क. | भा. | गण. | दं. | जे. | मं. | पं. | क. | ला. | रं |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अति | मं.प | ति. | व | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ४३६ तेजोलेद्यावाले संयत्तासंयत जियोके मालाए.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|-----|-------|-----|-----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|
| गं. | जी | पं. | प्रा. | सं. | गं. | इ. | का. | गो. | वे. | क. | भा. | गण. | दं. | जे. | मं. | पं. | क. | ला. | रं |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अति | मं.प | ति. | व | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

साकारजुचा हेंनि अणगारुजुचा वा ।

तेसि चैव उपज्जत्तानं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ उपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरियेओ, चत्तारि कसाय, दो अण्णण, दो दंसण, दव्वेण ताउ-सुम्फलेस्साओ, भावण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अपमसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणा-दरिणो, वागाकारुजुचा हेंति अणगारुजुचा वा^{११} ।

पम्मलेस्सा-वासणमम्मड्डीणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ उपज्जत्तीओ छ उपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, नारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णण, अयंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, पयोगी तेते हे ।

उद्धं पमलेश्यात्ते मिथ्यात्ति जीवोके अपर्याप्तकालसंवन्धी आलाप क्कहे पर—एक मिथ्यात्ति गुणस्थान, एक संधी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञां, देव्यानि, पंचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, वैक्रियिकाभिश्च और कामणकाययोग ये दो योग; पुनरपि चारों कपाय, आदिके दो दर्शन, असंयम, द्रव्यसे कापोत और शुद्ध लेश्यापं, भावने पमलेश्या; भव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सक्षिक, आहारक, प्लातारक; सासरोपयोगी और अनाकारुपयोगी हेते हे ।

पमलेश्यात्ते सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोके सामान्य आलाप क्कहे पर—एक सासादन गुणस्थान, मती पर्याप्त और स.सी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दस प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाए, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, औदारिकमिश्र और आदारककाययोगदिकके विना शेष वारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए,

नं. ४४३ पमलेश्यात्ते मिथ्यात्ति जीवोके अपर्याप्त आलाप.

| गु. जी. | प. | प्रा. | सा. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सप. | द. | ले. | म. | स. | मति. | आ. | उ. |
|---------|------|-------|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|------|----|----|------|----|----|
| १ | ५ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मा. | स.प. | ५ | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| स.अ. | ५ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

सण्णिणो, आहारिणो अणगारिणो, सागारुजुचा हेंति अणगारुजुचा वा^{११} ।

तेसि चैव पज्जत्तानं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णण, अयंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-जुचा हेंति अणगारुजुचा वा^{११} ।

भावसे पमलेश्या; भव्यसिद्धिक; सासादनसम्यग्त्व, सक्षिक, आहारक, अनाहारक; सासरो-पयोगी और अनाकारुपयोगी हेते हे ।

उद्धं पमलेश्यात्ते सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोके पर्याप्तकालसंवन्धी आलाप क्कहे पर—एक सासादन गुणस्थान, एक स.सी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दस प्राण, चारों संज्ञाए, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिकाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छह लेश्यापं, भावसे पम-लेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, सक्षिक, आहारक, सासरोपयोगी और अनाकारु-पोपयोगी हेते हे ।

नं. ४४३ पमलेश्यात्ते सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोके सामान्य आलाप.

| गु. जी. | प. | प्रा. | सा. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सप. | द. | ले. | म. | स. | मति. | आ. | उ. |
|---------|------|-------|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|------|----|----|------|----|----|
| १ | ५ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मा. | स.प. | ५ | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| स.अ. | ५ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ४४५ पमलेश्यात्ते सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोके पर्याप्त आलाप.

| गु. जी. | प. | प्रा. | सा. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सप. | द. | ले. | म. | स. | मति. | आ. | उ. |
|---------|------|-------|-----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|------|----|----|------|----|----|
| १ | ५ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मा. | स.प. | ५ | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| स.अ. | ५ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ४ | १ | २ | द. २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

रुद्रभीषो छ धराजभीषो, दस पाण मत्त पाण, चत्तारि मन्नाओ, मणुमगदी, पंचि-
 दिमरदी, मरुसाओ, एगारह जोग, तिणि देद, चत्तारि रुसाय, चत्तारि पाण, तिणि
 संसय, तिणि देस, दुवैगं छ देसाओ, भागेन पम्मेस्सा; मन्मिदिया, तिणि
 मरुसं, मन्विओ, आहारिओ, गगारुअनुचा होति अनागाकनुचा वा" ।

' पम्मेस्सा-अपमवचं पदं अलि प्यं गुणद्वानं, एओ जीममामो,
 छ पञ्चभीषो, दस पाण, तिणि मन्नाओ, मणुमगदी, पंचिदियजादी, मरुसाओ, पाण

मत्त मत्त, चारो संसय, मणुमगदी, पंचिदियजाति, मरुसाय, चारो मन्मोयोग, चारो पञ्चन-
 वोग, ओकारिककापयोग, आहारककापयोग और आहारकमिधक.पयोग ये एगारह योग, तीनों
 देद, चारो रुसाय, आदिके चार भाग, सामाधिक, ऐश्वर्यमाला और परिशरविजुस्वयंम ये
 र्दस मत्त, आदिके र्दस देस, दुवैगं छ देसाओ, भागदे पम्मेदया, मन्मिदिक,
 मन्मिदिक चारो मन्ममत्त, मन्मिदिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी
 होत है ।

पम्मेदयाओके म मममममम जीओके नामार इहो एर—एक मममममम गुणद्वान,
 एक मन्मिदियजी, मणुमगदी, छहो मन्मिदियां, दसो मत्त, आहारमन्मोके पिना जेप तीन
 मन्मम, मणुमगदी, पंचिदियजाति, मरुसाय, चारो मन्मोयोग, चारो पञ्चनयोग और ओसा-

१. ४५३ पम्मेदयाओके ममममममम जीओके नामार.

| | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १. | २. | ३. | ४. | ५. | ६. | ७. | ८. | ९. | १०. |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
| ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ |
| ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ |
| ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ |
| ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ |
| ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ |
| ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ |
| ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ |

१. ४५३ पम्मेदयाओके ममममममम जीओके नामार.

| | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १. | २. | ३. | ४. | ५. | ६. | ७. | ८. | ९. | १०. |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
| ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ |
| ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ |
| ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ |
| ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ |
| ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ |
| ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ |
| ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ |

जोग, तिणि देद, चत्तारि रुसाय, चत्तारि पाण, तिणि संसय, तिणि देस, दसोण
 छ लेस्साओ, भागेन पम्मेस्सा; मन्मिदिया, तिणि मममचं, मन्मिदियो, आहारिओ,
 गगारुअनुचा होति अनागाकनुचा वा ।

मुम्मेस्साणं भण्णमाणे अरिय अजोगि पिगा तेरह गुणद्वानाणि, दो जीवममामा,
 छ पञ्चभीषो छ अपञ्चभीषा, दस पाण मत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि
 सण्णाओ मीणमण्णा पि अरिय, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तरुसाओ, पण्णारह
 जोग, तिणि देद अमगदेदो पि आरथ, चत्तारि रुसाय अरुसाओ पि अरिय, अट्ट
 पाण, मत्त संसय, चत्तारि देस, दुवैगं छ लेस्साओ, भागेन मुम्मेस्सा; मन्मिदिया,
 अमममिदिया, छ मममचं, मन्मिदियो जेप मन्मिदियो वि अरिय, आहारिओ
 जणाहारिओ, गगारुअनुचा होति अनागाकनुचा वा गगार-अनागाओरिं गुणद्व-
 अनुचा वा" ।

रिक्ततायोग ये जो योग, तीनों देद, चारों रुसाय, आदिके चार भाग, सामाधिक, ऐश्वर्यमाला
 और परिशरविजुस्वियं ये तीन मत्त, आदिके तीन देस, दुवैगं छ देसाओ, भागदे
 पम्मेदया, मन्मिदिक, मन्मिदिक यदि तीन मममत्त, मन्मिदिक, आहारक, साकारोपयोगी
 और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मुम्मेदयाओके जीओके सामान्य आलाप कहें एर—अयोगिनेवन्ती गुणद्वानदे पिना
 आदिके तेरह गुणद्वान, मन्मि पर्वोप और मन्मि-अपर्वोप ये दो जीवममाम, छहो मन्मिदियां,
 छहो अपर्वोपियां, दसो पाण, मत्त पाण तथा मन्मिदियजाती अपेक्षा चार पाण और दो पाण
 चारों ममाएं तथा शीणमंममयान भी होत है, नरकगतिके पिना जेप तीन मन्मियां, पन्ने-
 दिव्यजाति, मरुसाय, पञ्चहो योग, तीनों देद तथा अपगतियेवन्थान भी होत है, चारों
 रुसाय तथा अरुसायस्थान भी है । अठहो मत्त, चारों मत्त, चारों देस, दुवैगं छहो
 देसाएं, भागदे मुम्मेदया, मन्मिदिक, अमममिदिक, छहो मममत्त, मन्मिदिक तथा
 मन्मिदिक और मन्मिदिक इन दोनों मन्मिदियो रहित भी स्थान होत है, आहारक, अनाकारक
 साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा नाकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंदे गुणद्व-
 उपयुक्त भी होते हैं ।

नं. ४५३ मुम्मेदयाओके जीओके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १. | २. | ३. | ४. | ५. | ६. | ७. | ८. | ९. | १०. |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
| ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ |
| ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ |
| ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ |
| ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ |
| ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ |
| ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ |
| ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ |

भावेण मुक्कलेस्मा; भवमिदिया अभवमिदिया, मिच्छन्, सण्णिणो, आहारिणो अणाहा-
रिणो, सागाकरवुत्ता होति अणागाकरवुत्ता वा ।

मुक्कलेस्सा-सातणसम्माइटीणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणद्वानं, दो जीरतमात्ता,
छ पञ्चसीओ छ अपज्जतीओ, दस पाण मत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ,
पंचिदियजादी, तमकाओ, चारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो गरिय । सारणं, देव-
मिच्छाइट्टि-सातणसम्माइटीणं तिरिकय-मणुस्सेमुपज्जमाणानं अमुणिय-परमत्थानं तिब्ब-
लोहाणं भंक्किलेण तंड-परम-मुक्कलेस्साओ फिच्छिण्ण किण्ह-गील-काउलेस्माणं एगदमा
भवदि । मम्माइटीणं पुण मणुस्सेमु चेर उपपज्जमाणानं मंदलोहाणं समुणिएपरमत्थानं
अरहंतभयंतप्पिह छिण्ण-जाइत्तरा-परणप्पिह दिण्णबुद्धीणं तेउ-पम्म-मुक्कलेस्साओ चिरंत-

शुक्र देस्याप, भावसे शुक्रलेस्या: भव्यमिच्छिक, अमज्जमिच्छि: मिच्छ्यात्थ, संबिक, माहारक.
मनाहारक: साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।
शुक्रदेस्याले सावायगवय्यरुट्टि जीवोंके सामान्य आजाप कहने पर--एक पापान
गुणस्यान, सबी पर्याप्त और सबी अपर्याप्त ये दो जीवसमान, छहों पर्याप्तियों, छहों अणुओं-
भियों: इसी ज्ञान, सात पाण: चारों संज्ञाय, तरकगतिक विना दोय तीन गतियों, पंचेन्द्रिय-
जाति, चरकाय, भौतिकमिश्र और आहारककार्ययोगिकके शिवा दोय बारह योग होते हैं।
किन्तु यहाँ पर औद्यारिकमिश्रकाययोग नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, तिरिब्ब और
मनुष्योंमें उत्पन्न होवेवाले, परमाणुके भ्रजालकार और तीन जीवककार्यवाले ऐसे मिच्छात्तपि
और सावायगवय्यरुट्टि श्रेयोंके मरते समय मञ्जेश उत्पन्न हो जानेसे तेज, पच और शुक्र
देस्याएं नष्ट होकर द्रव्य, नील और कायेत देस्यामें यथ:संग करि एक देस्या हो जाती है।
किन्तु ओ मनुष्योंमें ही उत्पन्न होवेवाले हैं, मंत्रजीवककार्यवाले हैं, परमाणुके भ्रजालकार हैं, और
त्रिन्दोहे जन्म, जरा और मरणके तन्त्र करनेवाले अस्तंत अणुजन्में अपनी बुद्धिको जगाया
है येवे सम्यरुट्टि श्रेयोंके विनिज (पुरस्ती) तेज, पच और शुक्र देस्याएं मरण करनेके

1 अध्याय ' विष्णुवर्तन ' की १४८-

२. ५२९ शुक्रदेस्याले विष्णुशक्ति श्रेयोंके अर्पण भाषाण.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| शु. | दी | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

चत्तारि कयाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजसो, दो दंसण, दब्बेण छ छेस्साओ, भावेण
मुक्कलेस्सा; भवमिदिया भवमिदिया, मिच्छन्, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,
सागाकरवुत्ता होति अणागाकरवुत्ता वा ।

तेवि चेर वत्तणत्तं मज्जमाणे अरिय एयं गुणद्वानं, एओ जीरतमात्तो, छ पञ्च-
सीओ, दस पाण, चत्तारि गण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तमकाओ, दस
जोग, तिण्णि देद, चत्तारि कयाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजसो, दो दंसण, दब्बेण छ
जेस्साओ, भावेण मुक्कलेस्सा; भवमिदिया भवमिदिया, मिच्छन्, सण्णिणो, आहारिणो,
सागाकरवुत्ता होति अणागाकरवुत्ता वा ।

अंमि चेर अरुज्जणत्तं मज्जमाणे अरिय एय गुणद्वानं, एओ जीरतमात्तो, छ
अरुज्जतीओ, दस पाण, चत्तारि गण्णाओ, देसगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, ते जोग,
पुमिदेसो, चत्तारि कयाय, दो अण्णाण, अमंजसो, दो दंसण, दब्बेण काउ-मुक्कलेस्साओ,
चत्तारि कयाय, तीनों अण्णाण, अमंजस, आरिक्के दो दंसण, अण्णसे एहो देस्याप, भावसे
शुक्रलेस्या: मज्जमिच्छिक, अमज्जमिच्छि: मिच्छ्यात्थ, संबिक, माहारक, मनाहारक: साकारो-
पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।
इसी शुक्र देस्याके विष्णुशक्ति श्रेयोंके अर्पणकायमशुष्की भाषाण कहने पर--एक
अणुजन्में गुणस्यान, एक गंधो-अणुज अणुसमान, छहों पर्याप्तियों, इसी ज्ञान, चारों संज्ञाय,
अणुजन्में विना त्रिब्ब तीन गतियों, पंचेन्द्रियभक्ति, चरकाय, चारों मनोयोग, चारों यकत्वयोग,
औद्यारिककार्ययोग और भौतिकककार्ययोग ये दस योग, तीनों चेर, चारों कयाय, तीनों अण्णाण,
अण्णसे, आरिक्के दो दंसण, अण्णसे एहो देस्याप, भावसे शुक्रलेस्या: मज्जमिच्छिक, अमज्ज-
मिच्छि: मिच्छ्यात्थ, संबिक, माहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।
इसी शुक्रदेस्याके विष्णुशक्ति श्रेयोंके अर्पणकायमशुष्की भाषाण कहने पर--
एक विष्णुशक्ति गुणस्यान, एक गंधो-अणुज अणुसमान, छहों पर्याप्तियों, सात ज्ञान, चारों
अण्णसे, देसगदी, पंचेन्द्रियभक्ति, चरकाय, भौतिकमिश्र और अमंजककार्ययोग ये दो योग,
पुण्यत्त, चत्तारि कयाय, आरिक्के दो अण्णाण, अमंजस, आरिक्के दो दंसण, अण्णसे कयायेत और

२. ५२९ शुक्रदेस्याले विष्णुशक्ति श्रेयोंके अर्पण भाषाण.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| शु. | दी | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

आत्मा च त्रयोपद्रुतं नाम ण शम्भन्ति । तिष्ठिण वेद, चत्वारि क्रमाय, तिष्ठिण अप्णान, असंजमो, दो दंसण, द्रव्येण छ लेस्साओ, भोनेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासण-सम्मनं, मण्णिणो, आहारिणो अणाहारजुत्ता वेति अणागारवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चेन पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणङ्गणं, एओ जीनसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, चत्वारि मण्णाओ, तिष्ठिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिष्ठिण वेद, चत्वारि क्रमाय, तिष्ठिण अण्णण, असंजमो, दो दंसण, द्रव्येण छ

आत्मार पन्नामुत्तं तत्त नत्त नयीं होन्ती हं, इसत्थिए शुक्कलेस्सावाले मिथ्यादृष्टि और सात्तादन-सम्पदृष्टि जीवोंके आहारिकमित्रकाययोग नहीं होता है । योग आत्मापके आगे तीनों वेद, चारों क्रमाय, तीनों अजान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्सायं, भावसे शुक्कलेस्सा. अत्यविविक्त, सात्तादनसम्पत्त्य, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, सात्तारोपयोगी और पनात्तारोपयोगी जेतें हैं ।

उन्हीं शुक्कलेस्सावाले सात्तादनसम्पदृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहते पर—एक सात्तादन गुणस्थान, एक सजी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सजाण, नरकगतिके बिना श्रेय तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैकल्पिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों क्रमाय, तीनों अजान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्सायं, भावसे शुक्कलेस्सा,

१. ४६० शुक्कलेस्सावाले सात्तादनसम्पदृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|---|-------|---|---|---|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | जी | प | प्रा. | म | ग | द | ना | यो | वे | क | सा. | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ. |
| २ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| ३ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| ४ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |

२. ४६१ शुक्कलेस्सावाले सात्तादनसम्पदृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|---|-------|---|---|---|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | जी | प | प्रा. | म | ग | द | ना | यो | वे | क | सा. | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ. |
| २ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| ३ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| ४ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |

लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता होति अणागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चेन अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणङ्गणं, एओ जीनसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्वारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्वारि क्रमाय, दो अण्णण, असंजमो, दो दंसण, द्रव्येण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता होति अणागारवजुत्ता वा^{११} ।

सुक्कलेस्सा-सम्प्राप्तिच्छाद्दीर्णं मण्णमाणे अरिय एयं गुणङ्गणं, एओ जीन-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, तिष्ठिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिष्ठिण वेद, चत्वारि क्रमाय, तिष्ठिण मण्णाणि तीर्हि अण्णणोहि भिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, द्रव्येण छ लेस्साओ, भोनेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया,

भवसिद्धिक, सात्तादनसम्पत्त्य, सत्तिक, आहारक, सात्तारोपयोगी और अनात्तारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं शुक्कलेस्सावाले सात्तादनसम्पदृष्टि जीवोंके अपर्थात्कालसम्बन्धी आलाप कहते पर—एक सात्तादन गुणस्थान, एक सजी-पर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्थाप्तिया, सात प्राण, चारों सजाण, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकल्पिकमित्र और त्रार्थनत्रययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों क्रमाय, आदिके दो अजान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्कलेस्सायं, भावसे शुक्कलेस्सा, भव्यसिद्धिक, सात्तादनसम्पत्त्य, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, सात्तारोपयोगी और अनात्तारोपयोगी जेतें हैं ।

शुक्कलेस्सावाले सम्पत्तिमथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक सम्पत्तिमथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सजी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सजाणं, नरक-गतिके बिना श्रेय तीन गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैकल्पिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों क्रमाय, तीनों अजानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्सायं, भावसे

३. ४६२ शुक्कलेस्सावाले सात्तादनसम्पदृष्टि जीवोंके अपर्थात्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|---|-------|---|---|---|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | जी | प | प्रा. | म | ग | द | ना | यो | वे | क | सा. | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ. |
| २ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| ३ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| ४ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |

सम्मामिच्छन्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणाराखुवजुत्ता वा" ।

शुक्लेस्सा-असजदसम्माहृणीं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवममात्ता, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगं, तिण्णि वेद, चत्तारि रुसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण सुम्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणाराखुवजुत्ता वा" ।

शुक्लेस्या, भव्यसिद्धिक, सस्यमिथ्यात्त, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

शुक्लेस्यावाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक अविस्त-सम्यग्दष्टि गुणस्थान, संजी-पर्याप्त और संजी-अपर्याप्त ये दो जीवममात्त, छदों पर्याप्तियां, छदों अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण; चारों सन्नपं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसन्नाय, आहाररुजाययोगिकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कयाय, आदिके तीन धान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छदों लेदयापं, भागसे शुक्लेस्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४६३ शुक्लेस्यावाले सम्यग्मिथ्यात्तदि जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| १ | १ | ५ | १० | ३ | ३ | ३ | ३ | १० | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ३ | ६ | ३ | १ | ३ | ३ |
| स्य | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
| स्य | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
| स्य | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
| स्य | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |

नं. ४६४ शुक्लेस्यावाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| १ | २ | ५ | १० | ३ | ३ | ३ | ३ | १० | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ३ | ६ | ३ | १ | ३ | ३ |
| अवि | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
| अवि | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
| अवि | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
| अवि | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |

वेमिं चेत्त पज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवममात्तो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तयकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि रुसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण सुम्कलेस्सा; भवमिद्धिया. तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणाराखुवजुत्ता वा" ।

वेमिं चेत्त अपज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवममात्तो, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देस-भणुमगादि चि दो गदीओ, पंचिदियजादी, तयकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसेवदो, चत्तारि रुसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण ऊउ सुम्कलेस्साओ, भावेण सुम्कलेस्सा; भवमिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

उन्ही शुक्लेस्यावाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्तसालम्बकी आलाप करने पर—एक अविस्तसम्यग्दष्टि गुणस्थान, एक संजी-पर्याप्त जीवममात्त, छदों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों सन्नपं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसन्नाय, चारों सन्नपयोग, आहाररुजाययोग और वेत्तिरुजाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कयाय, आदिके तीन धान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छदों लेदयापं, भागसे शुक्लेस्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होने हैं ।

उन्ही शुक्लेस्यावाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्तसालम्बकी आलाप करने पर—एक अविस्तसम्यग्दष्टि गुणस्थान, एक संजी-अपर्याप्त जीवममात्त, छदों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सन्नपं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसन्नाय, औपशमिक, वेत्तिरुजाय और कर्त्तारुजाययोग ये तीन योग; शुक्लेस्सा, चारों कयाय, आदिके तीन धान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे सप्तोत्तर और शुक्लेस्सा, भागसे शुक्लेस्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाकारक;

नं. ४६५ शुक्लेस्यावाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति | आ | उ |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|---------------------------|---|---|
| १ | २ | ५ | १० | ३ | ३ | ३ | ३ | १० | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ३ | ६ | ३ | १ | ३ | ३ |
| अवि | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति <td>आ</td> <td>उ</td> | आ | उ |
| अवि | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति <td>आ</td> <td>उ</td> | आ | उ |
| अवि | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति <td>आ</td> <td>उ</td> | आ | उ |
| अवि | स | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | अय | द | हे | म | ग | गति <td>आ</td> <td>उ</td> | आ | उ |

मणिणो, आहारिणो अणारुजुता ह्येति अणारुजुता वा" ।

सुक्लेस्मान्जदांजदाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कमाय, संजमांजसो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्माओ, भावेण सुक्लेस्सा; मवसिद्धिया, तिण्णि सम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, अणारुजुता ह्येति अणारुजुता वा" ।

सुक्लेस्मान्पमत्तसंजदाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ

माकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सुक्लेस्यागले सयतासंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक वेशसंयत गुणस्थान, एक संधी पर्याप्त जीवममान, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संतापं, तिर्यचगति और मनुष्य-गति ये ती गणियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये नो योग, तीनों वेद, चारों कमाय, आदिके तीन पान, सयमांसंयम, आदिके तीन परीन, इत्यसे छहों लेदयाप, भावसे सुक्लेस्या; भयसिद्धिया; भयसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संभ्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी देते हैं ।

सुक्लेस्यागले प्रमत्तसंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक प्रमत्तसंयत गुण-

नं. ४६६ सुक्लेस्यागले असंयतसम्यग्गति जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | म. | आ. | स. | क. | गो. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|----|----|------|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ४६७ सुक्लेस्यागले संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | म. | आ. | स. | क. | गो. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|----|----|------|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

पञ्चचीओ छ अपञ्चचीओ, दस पाण सत् पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचि-दियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कमाय, चत्तारि पाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्लेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, अणारुजुता ह्येति अणारुजुता वा" ।

"सुक्लेस्सा-अपमत्तसंजदाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव

स्थान, संधी-पर्याप्त और संधी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कमाय, आदिके चार ज्ञान, सामाजिक, छेदोपस्थापना और परिहार-विशुद्धि ये तीन सयम, आदिके तीन दर्शन, इत्यसे छहों लेदयाप, भावसे सुक्लेस्या; भय-सिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संभ्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी देते हैं ।

सुक्लेस्यागले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक अप्रमत्तसंयत गुण-स्थान, एक संधी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं. ४६८ सुक्लेस्यागले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | म. | आ. | स. | क. | गो. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|----|----|------|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ४६९ सुक्लेस्यागले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | म. | आ. | स. | क. | गो. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|----|----|------|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो अस-
ण्णिणो, आहारिणो अणाहारुवुत्ता होति अणागारुवुत्ता वा^{१००} ।

तेसिं चैव पज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठानं, सत्त जीवसमासा, छ
पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण
छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस
जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दा दंसण, दव्व-भवेहिं
छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता
होति अणागारुवुत्ता वा^{१०१} ।

छहों लेश्यापं, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साका-
रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्यन्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि
गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दसों
प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों सत्तापं, चारों गतियां, दसों
पाचों जातियां, छहों काय, चारों मन्तयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और
वैक्रियिककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो
दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याप, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संशिक, असन्निक, आहारक,
साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४७० अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | सं | ग | ह | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | महि | आ | उ | |
|----|----|----|------|----|---|---|----|------|----|-------|-------|----|----|-----|---|----|-----|-----|------|--|
| १ | १४ | ६५ | १०,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र | १ | १ | २ | २ | २ | |
| मि | | ६अ | ९,७ | | | | | आ.दि | | अज्ञा | अज्ञा | अस | अच | मा | अ | मि | स | आहा | साका | |
| | | ५प | ८,६ | | | | | विना | | | | | अच | | | अस | अना | अना | | |
| | | ५अ | ७,५ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४प | ६,४ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४अ | ४,३ | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ४७१ अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | प्रा | सं | ग | ह | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | महि | आ | उ | |
|----|----|----|------|----|---|---|----|----|----|-------|-------|----|----|-----|---|----|-----|-----|------|--|
| १ | ७ | ५ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र | १ | १ | २ | २ | २ | |
| मि | | ५प | ९ | | | | | म | | अज्ञा | अज्ञा | अम | अच | मा | अ | मि | म | आहा | माहा | |
| | | ४ | ८ | | | | | व | | | | | अच | | | अम | अम | अना | अना | |
| | | | ७ | | | | | ओ | | | | | | | | | | | | |
| | | | ६ | | | | | वे | | | | | | | | | | | | |

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि गाण, तिण्णि संजस, तिण्णि दंसण, दव्वेण
छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,
सागारुवुत्ता होति अणागारुवुत्ता वा ।

अपुव्ययरणपहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओघ-भंगो; तेसु सुक्कलेस्सा-वदि-
रिचण्णलेस्साभावादो । अलेस्साणं अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो चैव ।

एव लेस्सागणणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणं भण्णमाणे मिच्छाहट्टिपहुडि जाव अजोगिकेवलि
ति ओघ-भंगो । णवरि भवसिद्धिया ति वत्तन्वं ।

अभवमिद्धियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठानं, चोइस जीवसमासा, छ पज्ज-
त्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि
अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण
पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि
गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,
ओर औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान, सामा-
यिक, छेत्रोपस्थापना और परिहारविमुद्धि ये तीन सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों
लेश्याप, भावसे सुक्कलेस्सा, भव्यसिद्धिक, औपसमिक आदि तीन सयस्कव, सन्निक,
आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके सुक्कलेस्सावाले
जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान ही होते हैं, यद्यपि, इन गुणस्थानोंमें सुक्कलेस्साको
चोइकर अन्य लेश्याओंका अभाव है ।

लेश्यारहित अयोगिकेवली ओर सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापोंके ही
समान होते हैं ।

इन प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भयमार्गणके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंके आलाप कहने पर मिथ्यादृष्टि गुण-
स्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं । विशेष
तान यह वे कि भव्य आलाप कहते समय एक भव्यसिद्धिक आलाप ही कहना चाहिए ।

अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,
नौदों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अयर्थ्यतिया, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां,
चार पर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण,
छ प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छ प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों
सत्तापं, चारों गतियां, पाचों जातियां, छहों काय, आहार-रूकाययोगिकेके विना शेष तेरह
योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

चत्वारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेउवियमिस्सेण विणा चोदह जोग अहवा एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच गण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-मोवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो पेउ सण्णिणो पेउ असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुअजुत्ता होति अणागारुअजुत्ता वा सागार-अणागारोहिं जुगवहुअजुत्ता वा” ।

तेसिं चेउ अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणद्वयानि, एगो जीउममामो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा नि अत्थि, चत्तारि

गतियां. पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियिकमिथकाययोगके चिना चौदह योग अथवा तीनों मिथ्र योग और कार्मणकाययोगके चिना दोष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी हे; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हे, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी हे, पांचों प्रान, नारों मयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेदयाएं तथा अलेदयास्थान भी हे, भव्यमित्तिक, आपदासिक आदि तीन सम्यन्व, सीबक तथा सक्षिक और असक्षिक इन दोनों त्रिकुण्योमे रक्षित भी स्थान हे, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा मात्तार और अनात्तार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हे ।

विशेषार्थ— छठवें गुणस्थानकी आहारकसमुदात अवस्थामें और तेरहवें गुणस्थानकी केवलिसमुदात अवस्थामें पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर आदारकमिथ्र, ओयारकमिथ्र और कार्मणकाय ये तीन योग पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं। इसीप्रकार स्योणिकेजलीके दो प्राणोंके सबन्धमें भी समझ लेना चाहिए ।

उर्ध्वो सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसङ्घी आलाप कहते पर—अधिरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और स्योणिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संभ्री-अपर्याप्त जीवसमाय, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण दो प्राण, चारों संभ्राए तथा क्षीणसमास्थान भी हे, चारों गतिया, पचेन्द्रिय-

नं. ४७४ सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | के | क. | भा. | माय | दे. | म | म. | मि. | आ. | उ |
|-------|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|-----|-----|-----|---|----|-----|----|---|
| १२ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १४ | ३ | ४ | ५ | ७ | ४ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ |
| अक्षि | म | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| अयो. | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

मदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदेवेदो नि अत्थि, चत्तारि कसाय त्रकसाओ नि अत्थि, चत्तारि गण, चत्तारि नंजम, चत्तारि दंसण, दब्बेग ऋउ-मुक्खेस्साओ, मोक्खे छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो अणुमया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुअजुत्ता होति अणागारुअजुत्ता वा तदुमाएण वा” ।

उत्तरि अनंजदमम्मार्द्धिपट्टि वाप त्तोमिंकादि चि वाप मुलोअ-अंगो; तेसिं सव्भेभिं सम्मत्तंसंभवतो ।

जाति, प्रनसार, ओयारिकमिथ्र, वेक्रियेस्समिथ्र, आहारकमिथ्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्योणिके त्रिण दोष तथा अयगतवेदस्थान भी हे, चारों कपाय तथा अकपाय-स्थान भी हे, मति, पुन, ज्यसि और रे-अण्णा ये चार प्रान, प्रनंजम, मामासिक, छेदो-अण्णा और यथाण्णाणिद्वारमुद्धिमंजम ये चार मंजम चारों दर्शन, द्रव्यमे स्योत और शुक्र लेदयाए, भायमे छहों लेदयाएं, भव्यमित्तिक, औपममित्त चत्तारि तीन सम्यत्त्व, सक्षिक तथा सक्षिक और अनक्षिक इन दोनों त्रिकुण्योमे रक्षित, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा सात्तार और असात्तार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हे ।

विशेषार्थ— यहांपर सम्यत्तयशांजाले अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए भारतमे छहों लेदयाए बतलाई गई हे, और गोनटवार जीरुण्णके आगारकमिथ्रमें सम्यक्स्थानो-पाके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए एक एणोत और तीन शुभ एवप्रकार चार लेदयाएं ही बतलाई हे । परंतु गोनटवारमें लेया कलन स्यो किया यह कुछ समझमें नहीं आता, स्योकि, आपे उनीमं वेदकमम्याप्तके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए छहों लेदयाए कही गई हे । संभव हे यह लिपिकारकी मूल हे जो परापर यहा तक चली आई हे । प्रस्तु, प्रयत्नाका फल ठीक प्रतीत होना हे ।

कार अंत्यगसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमे लेकर अयोणिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूठ ओपालाएके समान होते हे; स्योकि उन सभी गुणस्थानवर्ती जीवोंके सम्यक्स्थ पया जाता हे ।

नं. ४७५

सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | के | क. | भा. | माय | दे. | म | म. | मि. | आ. | उ |
|-------|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|-----|-----|-----|---|----|-----|----|---|
| १२ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १४ | ३ | ४ | ५ | ७ | ४ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ |
| अक्षि | म | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| अयो. | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

गहयमममाहृद्रीणं भणमणे अथि एगारह गुणद्वयगुणानि अदीदगुणद्वयानि पि अथि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अथि, छ पञ्चमीओ छ अपञ्चमीओ अदीदपञ्चमी वि अथि, दम पाण सत्त पाण चत्तारि दो एक पाण अदीदपाणो वि अथि, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अथि, चत्तारि गईओ सिद्धगई वि अथि, पंचिदियजादी अणिदियत्तं वि अथि, तसकाओ अक्रायत्तं पि अथि, पण्णारह जोग अजोमो पि अथि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अथि, सत्त संजम गेन संजमो गेन संजमासंजमो वि अथि, चत्तारि दंरण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अथि, भवसिद्धिया गेन भव-मिद्धिया गेन अभवमिद्धिया वि अथि, सइयसम्मत्तं, सण्णिणो गेव अस-णिणो पि अथि, आहारिणो अणाहारिणो, सागरुवजुत्ता हौति अणमारुवजुत्ता चा सागार-अणमारोहिं जुगनदुवजुत्ता वा^{३३} ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे वेरुत योयिगिकेवली गुणस्थानक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी होता है, संक्षी-पर्याप्त अट संजी अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तस्थान भी है, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पंचदशों योग तथा अनिन्द्रियस्थान भी है, बस-पाय तथा अक्रायस्थान भी है, पंचदशों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत-स्थान भी है, चारों क्रयय तथा अक्रययस्थान भी है, पंचों ज्ञान, सातों संयम तथा संयम, अंयम और संयमसंयमये रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए तथा अलेख्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों गिहन्ती गति भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक तथा सन्निक और अनाकारो-पेनों गिहन्ती गति भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

नं. ५७६

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके सामान्य आलाप.

| गु | नी | प | प्रा | स | ग | क | का | यो. | वे | रु. | भा | मय | द. | ले. | म. | म. | गति | जा. | उ. |
|------|----|----|------|---|---|---|----|------|----|-----|----|----|----|-----|----|----|-----|-----|----|
| ११ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ११म४ | ३ | ४ | ५ | ७ | ४ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| वि | स | प. | | | | | | ५ | ४ | ५ | ७ | ७ | ४ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| से | | | | | | | | ५ | ४ | ५ | ७ | ७ | ४ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ज्यो | | | | | | | | ५ | ४ | ५ | ७ | ७ | ४ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |

तेसिं चैव पञ्चत्तारं भणमणे अथि एगारह गुणद्वयगुणानि, एओ जीवसमासो, छ पञ्चमीओ, दस चत्तारि एग पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अथि, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोमो पि अथि, तिण्णि वेद अवगद-वेदो वि अथि, चत्तारि कसाय अक्रमाओ वि अथि, पंच पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंरण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अथि, भवसिद्धिया, सइयसम्मत्तं, सण्णिणो गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो वि अथि, आहारिणो अणाहारिणो, सागरुवजुत्ता हौति अणमारुवजुत्ता वा सागार-अणमारोहिं जुगनदुवजुत्ता वा^{३३} ।

तेसिं चैव अपञ्चत्तारं भणमणे अथि तिण्णि गुणद्वयगुणानि, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चमीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अथि, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदवेदो वि अथि,

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक ग्यारह गुणस्थान, एक संजी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसवन्धी ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों क्रयय तथा अक्रययस्थान भी है, पंचों सम्यग्ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए तथा अलेख्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक तथा सन्निक और अनाकारो-प-इन दोनों गिहन्ती गति भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-प-योगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—अविरत-सम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संजी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है चारों गतियां, पंचे-न्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसवन्धी चारों योग, खोविके विना शेष दो वेद तथा

नं. ५७७

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके पर्याप्त आलाप.

| गु | नी | प | प्रा | स | ग | क | का | यो. | वे | रु. | भा | मय | द. | ले. | म. | म. | गति | जा. | उ. |
|------|----|----|------|---|---|---|----|------|----|-----|----|----|----|-----|----|----|-----|-----|----|
| ११ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ११म४ | ३ | ४ | ५ | ७ | ४ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| वि | स | प. | | | | | | ५ | ४ | ५ | ७ | ७ | ४ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| से | | | | | | | | ५ | ४ | ५ | ७ | ७ | ४ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ज्यो | | | | | | | | ५ | ४ | ५ | ७ | ७ | ४ | ६ | १ | १ | १ | २ | २ |

चत्वारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्वारि णाण, चत्वारि संजम, चत्वारि दंसण, दव्वेण काउ-खुक्कलेसाओ, भावेण जहणणकाउ तेउ-पम्म-सुक्कलेसाओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मचं, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा^{१०८} ।

^{१०९} खइयसम्माहट्ठीणं असंजदानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्ताओ छ अपज्जत्ताओ, दस पाण सत्त पाण, चत्वारि संण्णाओ, चत्वारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णि णाण, असं-

अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, मति, श्रुत, अद्यधि और केवल-ज्ञान ये चार ज्ञान; असयम, सामाधिक छेदोपस्थापना और यथास्थितविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक तथा अनुभयस्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संबन्धी-पर्याप्त और संबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अप-र्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,

न ४७८

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|----|---|---|----|---------|---------|-------|-----|------|-------|-------|-------|---|-------|-----|------|------|
| शु | जी | प | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म. | स | सक्ति | आ | उ | |
| ३ | २ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | |
| अवि. | प्रम | स्यो | ७ | ४ | ४ | ४ | ओ मि पु | ओ मि पु | मति | मति | अस | अस | शु | का. | म | का | आहा | साका | |
| | | | | | | | वे मि न | वे मि न | श्रुत | अव | तेदो | का. | तेज | पद्म. | म | मनु | अना | तथा | |
| | | | | | | | आ मि | आ मि | केव | केव | परि | शुक्ल | शुक्ल | शुक्ल | | | | | पु उ |

नं. ४७९

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|----|---|---|----|---------|---------|-------|-----|-----|-------|-------|-------|---|-------|-----|------|------|
| शु | जी | प | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म. | स | सक्ति | आ | उ | |
| ३ | २ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | |
| अवि. | प्रम | स्यो | ७ | ४ | ४ | ४ | ओ मि पु | ओ मि पु | मति | मति | अस | अस | शु | का. | म | का | आहा | साका | |
| | | | | | | | वे मि न | वे मि न | श्रुत | अव. | तेज | का | तेज | पद्म. | म | मनु | अना | तथा | |
| | | | | | | | आ मि | आ मि | केव | केव | परि | शुक्ल | शुक्ल | शुक्ल | | | | | पु उ |

जमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेसाओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज-त्ताओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेसाओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा^{१०९} ।

आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आविके तीन ज्ञान, असंयम, आविके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंवन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैकिकिकाययोग ये दश योग, तीनों चैव चारों कपाय, आविके तीन ज्ञान, असंयम, आविके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४८०

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|-----|---|----|---|---|----|---------|---------|------|-------|------|------|------|-------|----|-------|------|-----|
| शु | जी | प | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म. | स. | सक्ति | आ. | उ |
| ३ | २ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अवि. | स.प | | ७ | ४ | ४ | ४ | ओ मि पु | ओ मि पु | मति. | श्रुत | अस | अस | विना | का. | स | आहा | साका | अना |
| | | | | | | | वे मि न | वे मि न | अव | अव | विना | विना | विना | शुक्ल | | | | |

नं. ४८१

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|----|---|---|----|---------|---------|------|-------|------|------|------|-------|----|-------|-----|------|
| शु | जी | प | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म. | स | सक्ति | आ | उ |
| ३ | २ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अवि. | प्रम | स्यो | ७ | ४ | ४ | ४ | ओ मि पु | ओ मि पु | मति. | श्रुत | अस | अस | विना | का | म. | का. | आहा | साका |
| | | | | | | | वे मि न | वे मि न | अव | अव | विना | विना | विना | शुक्ल | | | | |

सपिण्णो, आहारिणो, सागारवञ्चता ह्येति अणागारवञ्चता वा^{११} ।

सइयसम्मसङ्कीर्णं पमत्तंसजदप्पहुडि सिद्धावसाणणं मूलोघ-भंगो । णवरि सव्वत्थ सइयसम्मत्तं चैव वत्तव्वं ।

वेदगसम्माहट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि चचारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गण, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, चचारि गण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेदि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हैं ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सिद्ध जीवों तकके प्रत्येक स्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापके समान होते हैं । विशेष वात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र परु क्षायिकसम्यक्त्व ही कहना चाहिए ।

वेदरूसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अग्रमत्तसंयत गुणस्थानतक चार गुणस्थान, सशी-पर्याप्त और संशी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार प्राण, असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पाच सयम, आदिके

नं ४८२ क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

नं ४८२

| गु | जी | पू | मा | स | ग | द | का | यो | वे | क | मा | साय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|------|----|----|----|----|---|---|----|----|----|---|----|-----|---|----|---|---|-----|---|---|
| ४ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | २ |
| अधि | स | प | ६अ | ६अ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| से | स | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| अग्र | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं ४८३

| गु | जी | पू | मा | स | ग | द | का | यो | वे | क | मा | साय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|------|----|----|----|----|---|---|----|----|----|---|----|-----|---|----|---|---|-----|---|---|
| ४ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | २ |
| अधि | स | प | ६अ | ६अ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| से | स | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| अग्र | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नेमि चैव अरञ्जसाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ प्रपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थियेदेण विणा दो वेद, चचारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण जहण्णकाउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, सइयसम्मत्त, सपिण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवञ्चता ह्येति अणागारवञ्चता वा^{११} ।

सइयसम्मसङ्कीर्णं सजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एओ जीव समासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गण जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, तिण्णि पाण, संजमासजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, सइयसम्मत्तं, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हैं ।

उच्चों क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संशी-अपयात जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सजाप, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, चैत्रिकमिश्र और त्रार्गणकाययोग ये तीन योग, रविवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, आदिके तीन प्राण, पसयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुरु लेस्यापं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पम और शुरु लेस्यापं, भव्यविद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हैं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक सनी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं मनुष्यगति, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन प्राण, सयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, भावसे तेज, पम और शुरु लेस्यापं, भव्यविद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक,

नं ४८३ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु | जी | पू | मा | स | ग | द | का | यो | वे | क | मा | साय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|------|----|----|----|----|---|---|----|----|----|---|----|-----|---|----|---|---|-----|---|---|
| ४ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | २ |
| अधि | स | प | ६अ | ६अ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| से | स | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| अग्र | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

मण्डणों, आहारिणों अणाहारिणों, सागारालुचुचा होंनि जगागालुचुचा मा ।

तेमिं चेर पञ्जत्तारणं भण्णामणे अनिय चचारि गुणद्वण्णानि, एओ चीरममांओ, छ पञ्जत्तीओ, दम पाण, चचारि मण्णान्ओ, चचारि गद्दंओ, पंचिदियज्जादी, नमत्ताओ, एगारह जोग, तिण्णि देद, चचारि रुपाय, चचारि नाण, पंच मंसम, निगि इंसन, दब्ब-भापेहिं छ लेस्साओ, भन्निदित्रिया, वेदग्गममंणं, मण्णिणों, अहारिणों, मागालुचुचा होंनि अणागालुचुचा मा ।

तेमिं चेर अपज्जत्तारणं मण्णामणे अनिय दो गुणद्वण्णानि, एओ चीरममांओ, उ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चचारि मण्णान्ओ, चचारि गद्दंओ; देमग्गदि-मण्णमग्गदी । रुद्ध-रुण्णिज्जे वेदग्गमममाड्ढिं पड्डुअ णिरय-निरिकग्गग्गद्दंओ लज्जंणि । पंचिदियज्जादी, नमत्ताओ, तीत वर्रांन, उय और भायवे छहों लेदयापं, भव्यनिदिरु, वेदग्गममसत्तर, मन्निक, आहारक, अनाहारक; माकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होने हैं ।

उन्हीं वेदकसम्बन्धित जीवोंके कर्णान्तालसंबन्धी आलाप करने पर—अपिरल मय-वृष्टि गुणस्थानमे लेकर अग्रमत्तस्यंत गुणस्थान तकके चार गुणस्थान, एक मंडी स्थान-जीवत्तमान, छहों पर्याप्तिया, दसों प्राण, चारों सहाय, चारों गतिओ, पंचेदित्रियगति, नमस्काय, पर्यान्तकालमयी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों नवाय, आदिके चार प्राण, अग्रंमस, देवसंयमा, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पात्र संयमा आदिके त्रिंन इर्रांन, दूय और भायसे छहों लेदयापं, भव्यनिदिरु, वेदकसम्बन्धित, मन्निक, आहारक, माकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वेदकसम्बन्धित जीवोंके मरणोत्पन्नकालसंबन्धी आलाप करने पर—अपिरलमय-वृष्टि और प्रमत्तस्यंत ये दो गुणस्थान, एक मंडी-अपर्यान्त जीवत्तमान, छहों भयव्योत्पत्तियो, सात प्राण, चारों संभ्रापं, चारों गतिया होती हैं, स्थायिक, वेदकसम्बन्धितके अर्णोत्पन्नकालमें देवगति और मनुष्यगति तो पाई ही जाती हैं, किन्तु इनहल्य वेदकसम्बन्धितकी अनेकाने नरकगति और तिर्यचगति भी पाई जाती हैं । पंचेदित्रियज्जाति, त्वक्काय, अपर्यान्तकालकाएगी चार

नं. ४८३

वेदकसम्बन्धित जीवोंके कर्णोत्पन्न आलाप.

| गु. | जी. | प. | मा. | मं. | ग. | ह. | का. | मो. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
|------|-----|----|-----|-----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अधि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अग्र | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

चचारि जोग, इन्द्रियोदय विना दो देद, चचारि रुपाय, निगि नाण, निगि मंसम, निगि इंसन, दसों कठ मुक्कसंभ्रापों, सांता उ लेस्साओ; भन्निदिय, वेदग्ग-ममंणं, मण्णिणों, आहारिणों अणाहारिणों, मागालुचुचा होंनि जगागालुचुचा मा ।

वेदग्गममग्गदि-अंतर्गतों अन्तर्गतों अनिय कं गुणद्वारं, दो चीरममांओ, पञ्जत्तीओ छ ममत्तगीओ, दम पाण मय पाण, चचारि मण्णान्ओ, चचारि नग्गंओ, पंचिदियज्जादी, त्वक्काय, वेदग्ग जोग, निगि देद, चचारि रुपाय, निगि नाण, नग्गंओ, निगि इंसन, दब्ब-भापेहिं छ लेस्साओ, भन्निदिय, वेदग्गममंणं, मण्णिणों, आहारिणों अणाहारिणों, मागालुचुचा होंनि जगागालुचुचा मा ।

जोग, स्थायिके पिना मंत्र दो देद, चारों सहाय, आदिके त्रिंन पात्र, अग्रंमस, स्वाभाविक और छेदोपस्थापना ये त्रिंन संभ्रापं आदिके त्रिंन इर्रांन, उयवे मण्णो जे मुक्क लेदयापं, भायसे छहों वेदयापं भव्यनिदिरु, वेदकसंबन्धित, मन्निक, आहारक, अनाहारक; माकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वेदकसम्बन्धित मरणपर जीवोंके मरणपर आलाप करने पर—अपर मण्णामग्गवृष्टि गुणस्थान, मंडी-अपर्यान्त और मंडी-अपर्यान्त ये दो जीवत्तमान, छहों पर्याप्तियां, उन्हीं अन्तर्गतों अन्तर्गतों मान, पात्र मान, चारों संभ्रापं, चारों गतिओ, पंचेदित्रियज्जाति, त्वक्काय, अनाहारक-वायसे मंडी-अपर्यान्त विना उय वेदग्ग जोग, तीनों वेद, चारों सहाय, आदिके त्रिंन पात्र, अग्रंमस, आदिके त्रिंन इर्रांन, दूय और भायसे छहों वेदयापं, भव्यनिदिरु, वेदकसम्बन्धित, मन्निक, आहारक, अनाहारक; माकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४८४

वेदकसम्बन्धित जीवोंके अन्तर्गत आलाप.

| गु. | जी. | प. | मा. | मं. | ग. | ह. | का. | मो. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
|------|-----|----|-----|-----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अधि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अग्र | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

नं. ४८५

वेदकसम्बन्धित अन्तर्गत जीवोंके मरणपर आलाप.

| गु. | जी. | प. | मा. | मं. | ग. | ह. | का. | मो. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
|------|-----|----|-----|-----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अधि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अग्र | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

तिष्णि संजम, तिष्णि दंसण, दवेण छ लेस्सा, भवेण तिष्णि सुहेस्साओ; भवसिदिया, वदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा” ।

वेदगसम्महाड्डि-अप्पमत्तंसजदानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीव-समासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, तिष्णि सण्णाओ, मणुसरदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिष्णि वेद, चचारि कसाय, चचारि णाण, तिष्णि मंजम, तिष्णि दंसण, दवेण छ लेस्साओ, भवेण तिष्णि सुहेस्साओ; भवसिदिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा” ।

तीनों वेद, चारों कसाय, आदिके चार ब्रान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्याप, भावसे तीन शुभ लेस्यापं; भव्यमिदिक, वेदकसव्यस्त्व, मन्धिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुण-स्थान, एक सबी-पर्याप्त जीवसमान, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, आहारसंक्रान्ति पिना दोर तीन संक्रांपं, मनुष्यजाति, पंचेन्द्रियजाति, त्रयकाय, चारों मलोयोग, चारों यन्त्रयोग और औद्यारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कसाय, आदिके चार ब्रान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, भावसे तीन शुभ लेस्यापं, भव्यमिदिक, वेदकसव्यस्त्व, संधिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४९० वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|----|----|----|---|-----|----|----|---|----|----|---|-----|---|---|----|-----|----|
| पु. | जी. | प. | आ | स. | ग. | इ | जा. | यो | ने | ह | भा | भा | द | हे. | म | म | की | भा. | उ. |
| २ | २ | ६५ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ६ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| सं | प | ६ज. | ७ | म | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| स | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ४९१ वेदकसव्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|----|----|----|---|-----|----|----|---|----|----|---|-----|---|---|----|-----|----|
| पु. | जी. | प. | आ | स. | ग. | इ | जा. | यो | ने | ह | भा | भा | द | हे. | म | म | की | भा. | उ. |
| २ | २ | ६५ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ६ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| सं | प | ६ज. | ७ | म | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| स | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

उपममममादृष्टीणं मन्त्रमाणे अत्थि अष्ट गुणद्वानाणि, दो जीवममाना, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण मत्त पाण, चचारि मन्त्राओ उपमंतपरिगहमन्त्रा नि अत्थि, चचारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्स-आहार-आहार-मिस्सेहि विणा आरु जोग, तिष्णि वेद अगददेओ नि अत्थि, चचारि कसाय उपमंत-कसाओ नि अत्थि, चचारि णाण, परिहारसंजमेग विना छ मंजम, तिष्णि दंसण, दव्य-मोदि छ लेस्साओ, भवमिदिया, उपममममत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा” ।

तेषि चैव पञ्चानं मन्त्रमाणे अत्थि अष्ट गुणद्वानाणि, एओ जीवममानो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चचारि मन्त्राओ उपमंतपरिगहमन्त्रा नि अत्थि, चचारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिष्णि वेद अगददेओ नि अत्थि, चचारि

उपमममममग्दृष्टि चैरोंके सामान्य आलाप कहने पर—अधिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमे लेकर उपशालकपाय गुणस्थानक आठ गुणस्थान, मंजो पर्याप्त और मंजो-अपर्याप्त ये दो त्रियसमान, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, मात्र प्राण, चारों संक्रांपं तथा उपशालपरिमदसंबंध भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रयकाय, आहारक-त्रयकाययोग आहारक-काययोग और आहारक-विक्रकाययोग इन तीन योगोंके पिना दोर आरु जोग, तीनों वेद तथा अपगतवेद-ग्यात भी है, चारों कसाय तथा उपशालकपाययोग भी है, आदिके चार ब्रान, परिहारपरिगहममके पिना दोर छ मंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यमिदिक, अपगतोपयोगी और अनाकारोपयोगी भी है, आहारक, अनाकारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं उपमममममग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अधिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमे लेकर उपशालकपाय गुणस्थानक आठ गुणस्थान, एक मंजो पर्याप्त अति सामान्य, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संक्रांपं तथा उपशालपरिमदसंबंध भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रयकाय, चारों मलोयोग, चारों यन्त्रयोग, औद्यारिककाययोग और वैकृतिककाययोग ये दस योग। तीनों वेद तथा अपगतवेद-ग्यात भी है, चारों कसाय तथा

नं. ४९२

उपमममममग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|----|----|----|---|-----|----|----|---|----|----|---|-----|---|---|----|-----|----|
| पु. | जी. | प. | आ | स. | ग. | इ | जा. | यो | ने | ह | भा | भा | द | हे. | म | म | की | भा. | उ. |
| २ | २ | ६५ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ६ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| सं | प | ६ज. | ७ | म | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| स | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

जोग, तिष्णि वेद, चत्तारि कसाय, असंजसो, तिष्णि णाण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, वसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिष्णि णाण, असंजसो, तिष्णि दंसण, दब्बेण ऋउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण तिष्णि सुहेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणारुवजुत्ता होति अणारुवजुत्ता वा” ।

उवसमसम्माइडि-संजदांसंजदाणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणद्वणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी,

काययोग और वैकिकिककाययोग ये दोस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन इरान, इय्ये उहों लेइयाए, भवसिद्धिक, औपशमित्क-सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उहों उपशमसम्यग्दष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर-एक अधिरत्तसम्यग्दष्टि गुणस्थान, एक सबी अपर्याप्त जीवसमास, छहों सपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकिकिकसिद्धिकाययोग और कार्यण-काययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन इरान, इय्येसे कापोत और शुक्ल लेइयाए, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेइयाए; मध्य-सिद्धिक, औपशमित्कसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

उपशमसम्यग्दष्टि संयतासयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक वेदासंयत गुणस्थान, एक सबी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, त्रियचगति और मनुष्यगति ये दो गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों पचनयोग और

न ४९७ उपशमसम्यग्दष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | भा. | साय. | इ. | ले. | स. | स. | सति. | आ. | उ. | |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|-----|----|----|------|----|----|---|
| १ | १ | ६ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | २ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ५ | ५ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ८ | ८ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ९ | ९ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १० | १० | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ११ | ११ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १२ | १२ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १३ | १३ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १४ | १४ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १५ | १५ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १६ | १६ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १७ | १७ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १८ | १८ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १९ | १९ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २० | २० | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

वसकाओ, णव जोग, तिष्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिष्णि णाण, मंजमासंजसो, तिष्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणारुवजुत्ता वा” ।

उवसमसम्माइडि-पमचमंजदाणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणद्वणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुमगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, णव जोग, तिष्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, मणपज्जणणेण सह उवसम-सेदीदो ओयरिय पमचगुणं पडिण्णस्स उवसममचणेण सह मणपज्जणणं लब्भदि, ण भिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइडि-पमचमंजदस्स; तप्युपत्ति-संभवाभावादो । दो संजम, परिहारसंजसो गतिय । कारणं, ण ताम भिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइडि-मंजदा

औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमानयम, आदिके तीन इरान, इय्ये उहों लेइयाए, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेइयाए; मध्यसिद्धिक, औपशमित्कसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उपशमसम्यग्दष्टि प्रसन्नसंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक प्रसन्नसंयत गुणस्थान, एक सबी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों पचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान होते हैं । उपशमसम्यग्दष्टिके मत-पर्यवसान होता है इसका कारण यह है कि मन-पर्यवसानके साथ उपशमशैलीमें उतरकर प्रसन्नसंयत गुणस्था-नको प्राप्त हुए जीवके औपशमित्कसम्यक्त्वके साथ मन-पर्यवसान पाया जाता है । किन्तु, भिष्यातरसे पंछिं अये हुए उपशमसम्यग्दष्टि प्रसन्नसंयत जीवके मन-पर्यवसान नहीं पाया जाता है; क्योंकि, प्रयगोशमसम्यग्दष्टि प्रसन्नसंयतके मत-पर्यवसानकी उरतानि संभव नहीं है। ज्ञान आलापके अगे सांगारिक, और श्रेयोपस्थाना ये दो संयम होने हैं; किन्तु परिहार-श्रुत्सिंयम नहीं होता है । इसका कारण यह है कि, भिष्यातरसे पंछिं अये हुए प्रयगोशमस-म्यग्दष्टि संयत जीव तो परिहारश्रुत्सिंयमको प्राप्त होते नहीं हैं, क्योंकि, सर्वोत्कृष्ट नौ

नं. ४९८ उपशमसम्यग्दष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | भा. | साय. | इ. | ले. | स. | स. | सति. | आ. | उ. | |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|-----|----|----|------|----|----|---|
| १ | १ | ६ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | २ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ५ | ५ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ८ | ८ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ९ | ९ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १० | १० | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ११ | ११ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १२ | १२ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १३ | १३ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १४ | १४ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १५ | १५ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १६ | १६ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १७ | १७ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १८ | १८ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| १९ | १९ | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २० | २० | ७ | ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

णत्थि । उत्तं च—

मणपञ्चपरिहारा उवसमसम्मत्त दोणि आहारा ।

एदेसु एककपपदे णत्थि ति य सेसय जाणे' ॥ २२९ ॥

तिणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तिणिण सुहेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुञ्जुत्ता होंति अणगारुञ्जुत्ता वा^{०००} ।

कहा भी है—

मन-पर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम, प्रथमोपशमसम्यक्त्व, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इनमेंसे किसी एकके प्रकृत होनेपर शेषके आलाप नहीं होते हैं; ऐसा जानना चाहिए ॥ २२९ ॥

विशेषार्थ — गोमट्टसार जीवकाण्डमें भी यही गाथा पाई जाती है, परंतु उसमें 'उवसमसम्मत्त' के स्थानमें 'पढमुवसम्मत्त' पाठ पाया जाता है जो समत प्रतीत होता है; क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम और आहारद्विक इन सबके होनेका विरोध है औपशमिकसम्यक्त्वके साथ नहीं। यद्यपि औपशमिकसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयम और आहारद्विक नहीं होते हैं फिर भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकी अपेक्षा औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञानका होना संभव है, इसलिये गाथामें 'उवसमसम्मत्त' ऐसा सामान्य पद रखनेसे औपशमिकसम्यक्त्वके साथ भी मनःपर्ययज्ञानके होनेका निषेध हो जाता है जो आगम विरुद्ध है। तो भी 'उवसमसम्मत्त' पदका अर्थ प्रथमोपशमसम्यक्त्व कर लेने पर कोई दोष नहीं आता है यही समग्रकर पाठमें परिवर्तन नहीं किया है।

संयम आलापके आगे आदिके तीन वर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे तीन शुभ लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मणपञ्च परिहारी पदपुत्रममत्त दोणि आहारा । एदेसु एककपपदे णत्थि ति अहेतय जाणे ॥

गो जी ७२९.

नं. ५००

उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | प्रा. | सय | द. | ल. | म. | स | सति | आ | उ |
|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

परिशारंगं त्रमं पडिवज्जंति; अद्द-उवसमसम्मत्तकालं मंतरे तदुत्पत्तिणिमित्तगुणानं संभवा-
मात्तादो । गो उवसमसम्मत्तं चढमाणो; तस्य पुव्वमेवमंतोमुहुत्तमतिय ति उवसंहरिद-
त्रिशारादो । ण ततो ओदिण्णाणं पि तस्स संभवो; णडे उवसमसम्मत्तेण विहारस्सा-
संभवदो । तिणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तिणिण सुहेस्साओ; भवसिद्धिया,
उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुञ्जुत्ता होंति अणगारुञ्जुत्ता वा^{०००} ।

उवसमसम्मत्तद्वि-अप्यमत्तसंज्ञाणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीव-
गमामो, छ पज्जचीओ, दस पाण, तिणिण सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजदी, तस-
काओ, णन जोग, तिणिण वेद, चत्तारि क्कमाय, चत्तारि णाण, दो संजम, परिहारसंजमो

प्रथमोपशमसम्यक्त्वकालके भीतर परिहारविशुद्धिसंयमकी उत्पत्तिके निमित्तभूत विशिष्टसंयम,
तीर्थकर-चरणमूल यसात्ति, प्रत्यास्थानपूर्व मदारणवपटन आदि गुणोंके होनेकी संभावनाका अभाव
है। और न उपशमश्रेणीपर चढनेवाले द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके भी परिहारविशुद्धि-
सम्यक्त्वकी संभावना है। क्योंकि, उपशमश्रेणीपर चढनेके पूर्व ही जब अन्तर्मुहूर्तकाल शेष
रहता है तभी परिहारविशुद्धिसंयमकी अपने गमनागमनदि विहारको उपसंहरित अर्थात्
संग्रहित या बन्द कर लेता है। और उपशमश्रेणीसे उतरे हुए भी द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि
संयत जीवोंके परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना नहीं है। क्योंकि, श्रेणि चढनेके पूर्व ही
परिहारविशुद्धिसंयमके नष्ट हो जानेपर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयमका
निवार संभव नहीं है। संयम आलापके आगे आदिके तीन वर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं,
भावसे तीन शुभ लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी
और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कदने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुण-
स्थान, एक संकी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, आहारसंज्ञाके चिन्ता
शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग
और भौतिकरूपाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों क्कमाय, आदिके चार ज्ञान, सामाधिक
और हेतुपस्थापना ये दस संयम होते हैं। किन्तु, परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है।

नं. ४२९. उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | प्रा. | सय | द. | ल. | म. | स | सति | आ | उ |
|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|----|----|----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

अध्वयरणपहुडि जाव उवसंतकसाओ ति ताव ओष-भंगो । जपरि गव्यन्य उवससम्मत्तं भाणियच्चं ।

मिच्छत्त-सासणसम्मत्त-मम्मामिच्छत्तानं ओष मिच्छद्दि-सासणसम्मद्दि-मम्मामिच्छद्दि-भंगो ।

एव सम्बलणणा मत्ता ।

पाथणपदे अवलंबिज्जमाणे सब्बाणुपादानं मूलोप-भंगो होदि; कथ मव्य-वियप संभवादो । गुणणमि अवलंबिज्जमाणे ण होदि । पावध्वपदे अमालंबिज्जमाणे अमंजमादीणं कथं गहणं ? ण; वदिरेगमुहेण मंजमादि-पट्टापट्टं तथरूपादो । नेण दोणि नि वक्कजाणणि अविळुद्धानि । एसत्थो मव्यस्य वत्तवो ।

सणियाणुपादेण सण्णीणं भण्यमाणे अरिय वारु गुणट्टात्तानि, दो अविममाना, छ पवजतीओ छ अपवजतीओ, दम पाण सच पाण, चत्तारि मत्ताओ मीरपणा नि

उपशममव्ययथि जीविके अपूरं करण गुणस्थानं केहर उवसान्नायाप गुणस्थानाह प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीविके आलाप ओर आलापके चमल होतं हैं । विवेक सच यह है कि मस्यस्य आलाप कबूते समर संप उपासमवस्तर ही रहना चतिय ।

मित्यास्य, सान्नाजमव्यस्तर ओत मरुगविधयापके अत्ता कम्मता निव्यासथि, सात्तावमव्ययथि ओर मय्यमिथ्यायथि गुणस्थानके आलापके समार जाना चतिय ।

इसप्रकार मन्वन्तमार्गणा ममात्त छुदे ।

प्राधान्य पदके अवलंबन रस्तेपर सभी अनुपादके आलापर मूल बोधालापके समान होते हैं, क्योंकि, मूल बोधालापमें विधि प्रतिलिख्य सभी लिख्य संस्तर है । किन्तु गौलमान-पदके अवलंबन करनेपर सभी लिख्य समर नहीं हैं; क्योंकि, इस नामपर सभी लिख्ये गुल-नामोंके भंगोंके ही आलाप कबूे जायेंगे, दूसरोंके नहीं ।

अंता—तो फिर प्राधान्यपदके अलंबन नहीं करनेपर मंयमादि के प्रीपत्तो अल्प-साधिका गहण कैसे किया जा सकता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, ब्यतिरेकप्रकारसे मंयमादि विरहसौकी प्रकृत्यलके त्रिर ही अमंयमादि विपक्षी विरहसौकी प्रकृत्यणा की जाती है; तस्ये विरहित मार्गानुपारा मरुत्त जीविका मार्गण हो सकता है, अन्यथा नहीं । इन्तिये मंयमादि अल्पपरूप और अमंयमादि व्यतिरेकरूप दोनों ही व्याख्यात अधिच्छु है । यही अर्थ सभी मार्गालापोंके विषयमें कहना चाहिये ।

संबी मार्गणके अनुयायसे सबों जीविके आलाप करने पर—भादिके वारु गुणस्थान, संबी-पर्याप्त ओर संबी-अपर्याप्त ये दो जीव्यसमान, छहों पर्याप्तियों, छहों अपर्याप्तियों, एतौ प्राण, सात प्राण; चारों संब्रापं तथा शीणसंब्रास्थान भी है, चारों गलियों, एवेदिद्रव्यजाति,

अनिय, चत्तारि गंदओ, पंचिदिरजादी, तगताओ, एवमारु जोग, विविनि रेद उमगदोयो नि अनिय, चत्तारि कलाप अरुमाओ नि अनिय, मच जाण, मच मंजव, विविनि रंमण, दव-मोवेदि छ केम्मओ, मणिभिरुया मयसिगिटिया, छ मम्मचं, मनिजो, आत्तरिजो अनाशरिजो, मागाकरउपा होति अनागाकरउपा स ।

वेनि चेर पत्तयानं मय्यमो अथि वारु गुणुत्तानि, एते जीवममंमो, ए पवजतीओ, दम पाण, चत्तारि मत्ताओ मीरपणा नि अरि. चत्तारि मंभीओ, पंचिदिरजादी, गामाओ, एमारु जोग, विविनि रेद अमरुओओ नि चत्ति, चत्तारि एवाप अरुमाओ नि अनिय, मच पाण, मच मंजव, विविनि रंमण, दव-मोवेदि छ

एवमारु, ए-उठो जोग, अंती रंमणया पणानं उवका भी है चारो हजारा मया एकवत्तरम्यन भी है, एवमारु रेडि रिण देर मया मया, एते मंजव, विविनि रंमण, उच्यं चोत्तं चत्तारे छहों केम्मओ, एवेदिदिर अरुमाओ रेदर, छहों मरुत्तय, मरुत्त, अरुत्त, एमारु, एमारु मत्ताओओ ओर अनाशरिजो रेदो है ।

इतरी संबी जीविके रथानाकत्तमरुत्तौ अत्ता एतौ पर—एदिह वारु गुणस्थान, एव संबी पर्याप्त अविममान, एते रथानिका, एतौ मया, मया अंताव मया शीण अत्ताओ भी है, चारो मंभीओ, पंचिदिरजाति, एवमारु, एवेदिद्रव्यस्यो एमारु जोग, अंती येन मया अनाशरिद्रव्ययत्त भी है, चारो मया मया एवमारुअज भी है, वे एवमारुके विविना देर मया मया, मया मंजव, एदिहे जोग एतौ, उच्यं ओर भाग्ये एते केम्मओ, एवमनियिक,

॥ ५०१ संबी जीविके साधान आलाप.

| | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १. | २. | ३. | ४. | ५. | ६. | ७. | ८. | ९. | १०. |
| १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ |
| ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० |
| ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |

॥ ५०२ संबी जीविके पर्याप्त साधान.

| | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १. | २. | ३. | ४. | ५. | ६. | ७. | ८. | ९. | १०. |
| १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ |
| ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० |
| ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया भवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०६} ।

^{१०७}(सण्णिणं-) सासणसम्मद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

उन्हीं सब्बी सिध्दादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सिध्दादृष्टि गुणस्थान, एक सब्बी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापेत और शुद्ध लेख्यापं, भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, चारों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहार-क्रकाययोग-

१ प्रतिचक्रान्यत्र कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्तीति हेयम् ।

नं. ५०६ सब्बी सिध्दादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-------|-----|------|---|---|---|----|-------|----|---|------|----|--------|----|---|----|--------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | संज्ञि | आ | उ |
| २ | २ | २ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| भि. | संज्ञ | इअ. | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| | | | | | | | | ओ मि | | | कुम. | अस | वज्जु. | का | म | मि | स | आहा | साका |
| | | | | | | | | वै मि | | | कुशु | अस | अच | शु | अ | | अना | अना | अना |
| | | | | | | | | कर्म | | | | | मा | इ | | | | | |

नं. ५०७ सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-------|----|------|---|---|---|----|--------|----|---|-------|----|-------|----|------|------|--------|-----|------|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द | ले | म | स. | संज्ञि | आ | उ |
| २ | २ | २ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| सा. | संज्ञ | इअ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| | | | | | | | | आ द्वि | | | अहा | अस | वज्जु | मा | सासा | सासा | स | आहा | साका |
| | | | | | | | | विना | | | | अच | अच | मा | मा | मा | स | अना | अना |

८२०] सत-परुवणाणुयोगद्वारे सण्णिण-आलाववण्णणं [१, १.

असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०६} ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान,

नं. ५०८ सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|-------|----|------|------|--------|-----|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | संज्ञि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| सा. | सं.प | | ४ | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | अहा | अस. | वज्जु | मा | मासा | मासा | स | आहा | साका |
| | | | | | | | | ४ | | | | अच | अच | मा | मा | मा | स | अना | अना |

दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गण, असंजमो, तिणिण दंसण, दब्बेण भोवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागरुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेष अपज्जत्ताणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासां, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिणिण जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गण, असंजमो, तिणिण दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भोवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागरुवजुत्ता वा^{१३} ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ चि ताव मूलोघ-भंगो ।

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सबी असंयतसम्यक्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अवरितसम्यक्दृष्टि गुणस्थान, एक सबी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सन्न्याप, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुद्ध लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके सबी जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापोंके समान होते हैं ।

नं. ५१३ सबी असंयतसम्यक्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|----|---|---|---|------|---|---|---|---|---|---|---|----|---|----|---|----|---|---|---|------|---|----|---|----|---|----|---|----|---|--------|---|---|---|---|---|---|---|
| गु | १ | जी | १ | प | ६ | प्रा | ७ | स | ४ | ग | ४ | ङ | १ | का | १ | यो | ३ | वे | २ | क | ४ | क्रा | ३ | मय | १ | द. | ३ | ले | २ | स. | ३ | साक्षि | १ | आ | २ | उ | २ | | |
| अत्रि | स | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

असण्णीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, बारह जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादीओ, छ काय, चत्तारि जोग असच्चमोसवचि-जोगो ओरालिय-ओरालियमिस्सन्नायजोगा कम्मइयकायजोगो चेदि, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भोवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हेति अणागरुवजुत्ता वा^{१४} ।

तेसिं चेष पज्जत्ताणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, छ जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादी, छ काय, दो जोग, तिणिण वेद, चत्तारि

असब्वी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सबी पर्याप्त और सबी-अपर्याप्तके विना शेष बारह जीवसमास, पंच पर्याप्तियां, पंच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तिया, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों सन्न्याप, तिर्यचगति, पांचों जातियां, छहों काय, असत्पुरुषावचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगवाचिज्ञानके विना शेष दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असब्वी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमासोंमेंसे एक सब्वी-पर्याप्तके विना शेष छह पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तिया, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों सन्न्याप, तिर्यचगति, पांचों जातियां, छहों काय, अनुभववचनयोग, और औदारिककाययोग ये

नं. ५१४ असब्वी जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|---|---|-----|------|---|---|---|---|---|---|---|----|---|----|---|----|---|---|---|------|---|----|---|----|---|----|---|----|---|--------|---|---|---|---|---|---|---|
| गु | १ | जी | १ | प | ९,७ | प्रा | ४ | स | ४ | ग | १ | ङ | ५ | का | ४ | यो | ४ | वे | ३ | क | ४ | क्रा | २ | मय | १ | द. | २ | ले | १ | स. | १ | साक्षि | १ | आ | २ | उ | २ | | |
| मि | सं | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

रुणाय, दो अण्णाण, अमंजसो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भात्रेण फिण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; मत्तमिदिया अभवमिदिया, मिच्छत्तं, अमण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता होति अण्णाणकवजुत्ता वा ।

तेमि चेत्त अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्धाणं, छ जीवममासा, पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि मण्णाओ, तिस्सिमगई, पंचिदियजदी, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि हमाय, दो अण्णाण, अमंजसो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण फिण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवमिदिया अभवमिदिया, मिच्छत्तं, अमण्णिणो, आहारिणो अण्णाणकवजुत्ता होति अण्णाणकवजुत्ता वा ।

दो योग तीनों वेद, चारों कयाय, कुमति और इत्थुत्त ये दो अदान, असंयम, आरिक्के दो दर्शन, इयमे य्थो लेइयाप, भावणे इण्ण, नीत्त अंर कापोत्त लेइयाप; भव्याविद्धिक, अभव्यविद्धिक मिग्गाल, अपत्तिक, भात्तरक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी देते हैं।

उन्हां भवनी जीयोंके अपर्याप्तकालमन्त्री आलाप कहने पर—एत्त मिद्व्याइठि गुण-अदान, संजी अपर्याप्तके पिना देण छत्त अपर्याप्त जिनसमाप्त, पाच अपर्याप्तिया, चार अपर्या-पिया; सात प्राण, अट्ट प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों सत्ताए, तिर्थचमति, परोदियप्रजाति, छहों काय, जोदारकमिअ और कामंणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कयाय, पारिक्के दो अदान, असंयम, आदिक्के दो दर्शन, इयमे सापोत्त और शुक्क लेइयाप, भावेमे कृष्ण, नीत्त और कापोत्त लेइयाप; भव्याविद्धिक, अभव्यविद्धिक; मिथ्यात्व, असत्तिक, भात्तरक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी देते हैं।

नं. ५१५ असनी जीयोंके अपर्याप्त आलाप

| गु | मी | से | स्यो | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | स्य | द | ले | म | स | मि | आ | उ |
|----|----|----|------|------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |

नं. ५१६ असनी जीयोंके अपर्याप्त आलाप

| गु | मी | से | स्यो | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | स्य | द | ले | म | स | मि | आ | उ |
|----|----|----|------|------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |

णेव सण्णिण-णेव-असणीणं सजोगि-अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो ।
एवं सण्णिणमण्णा समत्ता ।

आहारणुमादेण आहारीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणद्धाणाणि, चोदस जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्ज-त्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (गव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, चोदम जोग कम्मइयकायजोगो णत्थि, तिण्णि वेद अवगद्वेदो वि अत्थि, चत्तारि कयाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारवजुत्ता होति अण्णाणकवजुत्ता वा सागार-अण्णाणरिहिं जुगवदुवजुत्ता वा ।

सत्तिक और असत्तिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित सयोगिकेवली, अयोगिकेवली और सिद्ध भगवानके आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं।

इसप्रकार संक्षी मार्गण समाप्त हुई।

आहार मार्गणके अनुवादसे आहारक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, अठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण, सयोगिकेवलीके चार प्राण और दो प्राण; चारों सत्ताए तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चौदह योग होते हैं; न्यौंके, यद्वांपर कामंणकाययोग नर्ती होता है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कयाय तथा अकपायस्थान भी है, अठों अदान, सातों संयम, चारों दर्शन, इयमे और भावसे छहों लेइयाप, भव्याविद्धिक, अभव्य-विद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सत्तिक, असत्तिक तथा संत्तिक और असत्तिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अना-कार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

१ प्रतिपु कोट्टकत्तंगंपाठो नास्त ।

नं. ५१७

आहारक जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | मी | से | स्यो | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | स्य | द | ले | म | स | मि | आ | उ |
|----|----|----|------|------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ |

तेसिं चैव पञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि तेरह् गुणद्वानाणि, सत्त जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, एगारह जोग, ओरालिय-वेउविय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगा णत्थि । तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट णत्थि । तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट णत्थि, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावोहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णो असण्णो णेव सण्णो णेव असण्णो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा सागार-अणगारोहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{५५} ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणद्वानाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

उन्हीं आहारक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--आदिके तेरह गुण-स्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञा-स्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग होते हैं; क्योंकि, यद्वापर औदारिकमिश्र, चैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग नहीं होते हैं । तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों कर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभ्यसिद्धिक, छहों सम्यग्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा सक्षिक और असक्षिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं आहारक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--मिथ्यादृष्टि, सासा-द्वन्द्वसम्यग्दृष्टि, अद्विगतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, सात अप-यास जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, दो प्राण, चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी

नं. ५१८ आहारक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु. | जी. | प. | प्रा. | ग. | का. | यो. | वे. | क्र. | ज्ञा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सक्षि. | आ. | उ. |
|-----|--------|----|-------|----|-----|-----|-----|------|-------|------|----|-----|----|----|--------|----|----|
| १२ | ७ | ६ | १० | ४ | ५ | ६ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ६ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| मि. | पर्यां | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | स्यो. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ पाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णो असण्णो अणुभया वि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा (सागार-अणगारोहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{५६}) ।

आहारि-मिच्छाद्विहणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, चोदस जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, वारह जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि । तिण्णि

है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, चैक्रियिकमिश्र और आहारकमिश्र-काययोग ये तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय-स्थान भी है, विभगावधि और मतःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेवोपस्थापना और यथाव्यतविद्वारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों कर्शन, द्रव्यसे कापोत लेख्या, भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभ्यसिद्धिक, सस्यमिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यग्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर--एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, छौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, दो प्राण, चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों कषाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोगद्विक और चैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग होते हैं; किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है । तीनों

१ कोष्ठकान्तर्गतपठो नास्ति ।

आहारक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

नं. ५१९

| गु. | जी. | प. | प्रा. | ग. | का. | यो. | वे. | क्र. | ज्ञा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सक्षि. | आ. | उ. |
|-----|--------|----|-------|----|-----|-----|-----|------|-------|------|----|-----|----|----|--------|----|----|
| २ | ७ | ६ | १० | ४ | ५ | ६ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ६ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| मि. | पर्यां | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | स्यो. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

१, १.] पंचदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिणिण कसाय, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणिण गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैकिकिकाययोगद्विक ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेक्ष्याप, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्दृष्टि, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक, काययोग और वैकिकिकाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेक्ष्याप, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, नररुगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और

असंजम, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

न ५२४ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-------|----|-------|----|---|---|-------|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ |
| सा. | स.प | ५ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अज्ञा | अस | चक्षु | सा | ६ | म | स | आहा | अना |
| | | | | | | | | ओ | १ | | | | अच | | | | | | |
| | | | | | | | | वे | १ | | | | | | | | | | |

जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागार-वजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

आहारि-सम्मामिच्छाईड्ढिणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण पाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

वैकिकिकमिश्रकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेक्ष्या, भावसे छहों लेक्ष्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैकिकिका-काययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेक्ष्यापं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ५२५ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|-----|---|----|----|----|------|----|----|-------|----|---|------|-------|------|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| सा | क | अ | ति | प | त्र | ५ | ५ | ५ | ५ | कुम. | ५ | अस | चक्षु | का | म | सासा | स | आहा | साका. |
| | | | | | | | | | | कुशु | | | अच. | भा | ३ | | | अना. | |
| | | | | | | | | वे | ५ | | | | | | | | | | |

नं. ५२६ आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|-----|---|------|---|---|---|----|----|----|-------|----|----|-------|----|---|---|-------|-----|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १० | ३ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| सम्य | स.प | ५ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अज्ञा | अस | अस | चक्षु | भा | ६ | म | स | आहा | साका. |
| | | | | | | | | ओ | १ | | | | अच. | | | | | | |
| | | | | | | | | वे | १ | | | | | | | | | | |

आहारि-असंजदमम्महृणीं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासो, दो पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दम पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तमकाओ, चारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजदमो, तिण्णि दंसण, दवन्-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

'तेसिं चेम पञ्चत्ताणं भणमाणे अत्थि एय गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दम पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ,

आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अचिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और सजी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात पाण, चारों सजाप, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों गतियां, ओदारिककाययोगिक और चैक्रियिककाययोगिक ये चारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और मानने छहों लेश्यापं, भव्यमित्रिक, औपशामिक, आहारक, माननेपरयोगी और अनाकारोपरयोगी होते हैं ।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अचिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सजी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण,

नं. ५२७ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| शु | जी | प्रा | स | ग | इं. | का | यो. | वे. | क | मा. | द | ले | म. | स | सति | जा | व. |
|------|----|------|---|---|-----|----|-----|-----|-----|-----|-------|-------|----|-----|-----|------|-----|
| २ | १ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | २ | २ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| जति. | म | ज | ज | | प. | १ | जो | वे | मि. | पु. | विना. | विना. | म | ओप. | सा. | आहा. | अना |

नं. ५२८ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| शु | जी | प्रा | स | ग | इं. | का | यो. | वे. | क | मा. | द | ले | म. | स | सति | जा | व. |
|------|----|------|---|---|-----|----|-----|-----|-----|-----|-------|-------|----|-----|-----|------|-----|
| १ | १ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | २ | २ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| जति. | म | ज | ज | | प. | १ | जो | वे | मि. | पु. | विना. | विना. | म | ओप. | सा. | आहा. | अना |

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दवन्-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेम अपञ्चत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्हेण काउलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारि-संजदांसंजदाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव चारों सजापं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और चैक्रियिककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान; असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक-सम्यग्दृष्टि आदि तीन सम्यग्दृष्टि, आहारक, साकारोपरयोगी और अनाकारोपरयोगी होते हैं ।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अचिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और चैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशामिकसम्यग्दृष्टि आदि तीन सम्यग्दृष्टि, आहारक, साकारोपरयोगी और अनाकारोपरयोगी होते हैं ।

आहारक सयतासयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति और मनुष्य-

नं. ५२९ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| शु | जी | प्रा | स | ग | इं. | का | यो. | वे. | क | मा. | द | ले | म. | स | सति | जा | व. |
|------|----|------|---|---|-----|----|-----|-----|-----|-----|-------|-------|----|-----|-----|------|-----|
| २ | १ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | २ | २ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| जति. | म | ज | ज | | प. | १ | जो | वे | मि. | पु. | विना. | विना. | म | ओप. | सा. | आहा. | अना |

अंसजसो, दो दंसण, दव्नेण सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा ।

अणाहारि-अंसजदसम्माहृदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, इत्थिवेदेण विणा दोणि वेदा, चत्तारि कसाय, तिण्णिण गाण, अंसजसो, तिण्णिण दंसण, दव्नेण सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णिण सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{५३} ।

अणाहारि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दोणि पाण, मण-वचि-उत्सासपाणा गत्थि; खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदेवेदो, अकसाओ, केवलगाणं,

कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अन्नान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्कलेस्सा, भावसे छहों लेस्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनाहारक असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक अविस्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, स्त्रीवैदके विना दो वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शुक्कलेस्सा, भावसे छहों लेस्याएं, भव्यसिद्धिक, औपकामिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप कहते पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं, किंतु यहाँपर मनोबल, वचनबल और स्वासोच्छ्वास प्राण नहीं हैं। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकपाय, केवलज्ञान, यथास्थतविहारशुद्धि-

नं. ५४२ अनाहारक असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|------|---|---|---|----|-----|----|---|-------|-----|----|-----|----|----|--------|-----|----|
| यु. | जी | प | प्रा | ग | ग | इ | का | यो. | वे | क | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सन्नि. | वा. | उ. |
| १ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| अवि. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| अवि. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| अवि. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |

जहाक्खादविहारसुद्धिसंसजसो, केवलदंसण, दव्नेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वां, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, सरिणिण्णाय-णत्थं गोकम्मयोगलाभावादो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा हँति^{५४} ।

^{५४} अणाहारि-अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एक पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदेवेदो, अकसाओ, केवलगाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंसजसो, केवलदंसण, दव्नेण संयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्क अथवा छहों लेस्याएं, भावसे शुक्कलेस्सा, भव्यसिद्धिक, क्षाधिकसम्यक्त्व, सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, शरीर-निष्पादनके लिये आने वाली नोकर्म पुद्गलवर्णाओंके अभाव हो जानेसे अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युग्मत्त उपयुक्त होते हैं ।

विशेषाथ—ऊपर अनाहारक सयोगिकेवलीयोंके लेस्या आलापका कथन करते समय सभी प्रतियामें ' दव्नेण छ लेस्साओ ' इतना ही पाठ पाया जाता है परतु पूर्वमें कार्मण-काययोगी सयोगिकेवलीके आलाप बतलाते समय द्रव्यसे शुक्कलेस्सा अथवा छहों लेस्याएं कहाँ गई हैं, इसलिये यहाँपर भी उसीके अनुसार सुधार कर दिया गया है ।

अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप कहते पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोग, अपगतवेद, अकपाय, केवलज्ञान, यथास्थतविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन,

१ प्रतिपु ' दव्नेण छ लेस्साओ ' इति पाठ ।

नं. ५४३ अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-------|----|---|-----|----|----|-------|-----|----|
| यु. | जी | प | प्रा | ग | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द | ले. | म. | स. | सन्नि | वा. | उ. |
| १ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| सयो. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| सयो. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| सयो. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |

नं. ५४४ अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-------|----|---|-----|----|----|--------|-----|----|
| यु. | जी | प | प्रा | ग | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द | ले. | म. | स. | सन्नि. | वा. | उ. |
| १ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| अयो. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| अयो. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| अयो. | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |

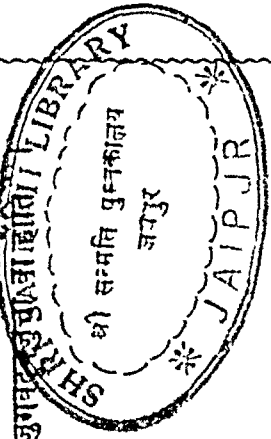
छ लेस्माओ, भावेण अलेस्सा; भवमिद्विया, खइयसम्मत्तं, नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारोहि जुगपडवजुत्ता वा ।

अणाहारि-सिद्धानं भण्णमाणे अत्थि अदीदयुणद्धाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीदपञ्चत्तीओ, अदीदपणा, सीणसण्णा, सिद्धगदी, अदीदजादी, अकाओ, अजोओ, अजोओ, अजोओ, अरुमाओ, केवलमाणं, नेव संजमो नेव असंजमो नेव संजमासंजमो, केवल-दमण, दव्व-भावेहि अलेस्सा, नेव भवसिद्धिया नेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारोहि जुगपडवजुत्ता ।

एवं आहारसगणा समत्ता ।

तदेव च

संत-परुवणा समत्ता ।



दृश्यमे छां लेस्यां, भावसे अलेस्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसस्यत्त्व, संक्षिक और असंक्षिक ज्ञा शैनों विक्तव्योसे रहित, अन्तद्वारक, साकार और अन्तकार इत दोनों उपयोगोसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

अणाहारी भिन्न जीवोंके आलाप करने पर--अतीतयुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतार्थान्ति, अतीतप्रण, श्रीणवक्ष, मिद्धगति, अतीतजाति, अकाय, अयोग, अणतवेद, अकाय, केवलगत, संयम, असयम और सयमासंयम विकल्पोंसे विमुक्त, केवलवर्तन, द्रव्य और भावसे अलेस्या, भव्यमिद्विक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित, क्षायिकसस्यत्त्व, संक्षिक और असंक्षिक विक्तव्योसे अतीत, अन्तद्वारक, साकार और अन्तकार इत दोनों उपयोगोसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

इसप्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई । और इसीप्रकार उसके साथ

सत्प्ररूपणा भी समाप्त हुई ।

नं. ५४५

अणाहारी सिद्ध जीवोंके आलाप.

| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |



| | | | | | | | | |
|---|-----------------------|-------------------------|---------------------|--------------------|--------------------|---------------|------------------|----------|
| च | चतुर्वर्गानि | ३७९, ३८२ | वर्गानि | १४५, १४६, १४७, १४८ | परिशुद्धसंज्ञा | ४१५ | बाह्यानिवृत्ति | २३४ |
| | चतुरिन्द्रिय | २६४ | देव | २०३ | परिष्ठा | २५४, २६७ | भक्तप्रत्याख्यान | २४ |
| | चतुर्विधातिस्त्व | २४४, २४८ | देवगति | २०३ | पर्याप्ति | २५७ | भव्य | १५० |
| | चन्द्रप्रज्ञासि | ९६ | देवासत्य | ११८ | पर्यायार्थिक | ८४ | भव्यनोऽगामद्रव्य | २६ |
| | चयनलाञ्छि | १०९ | द्रव्य | ८३, ३८६ | परस्वावाप्तुपूर्वी | ७३ | भव्यसिद्ध | ३९२, ३९४ |
| | च्यवित | १२४ | द्रव्यमन | २५९ | पाणिमुक्तागति | ३०० | भाव | २९ |
| | च्युत | २२ | द्रव्यमल | ३२ | पारिणामिक | १६१ | भावमन | २५९ |
| | चेतत्य | २२ | द्रव्यमंगल | २०, ३२ | पुद्गल | ११९ | भावमल | ३२ |
| | | १४५ | द्रव्यार्थिक | ८३ | पुरुष | ३४१ | भावमगल | २९, ३३ |
| छ | छात्र | १८८, १९० | द्रव्यानुयोग | १५८ | पूर्वगत | ११२ | भावलेख्या | ४३१ |
| | छेदोपस्थापक | ३७२ | द्रव्येन्द्रिय | २३२ | पूर्वाप्तुपूर्वी | ७३ | भावसत्य | ११८ |
| | छेदोपस्थापनशुद्धिसंयम | ३७० | द्वीन्द्रिय | २४१, २४८, २६४ | पैशुन्य | ११७ | भावानुयोग | १५८ |
| ज | जानपद्वत्स्य | ११८ | द्वीपसागरप्रज्ञप्ति | ११० | पंचेन्द्रिय | २६४, २४८, २६४ | भावोन्द्रिय | २३६ |
| | जन्तु | १२० | धारणा | ३५४ | पंचेन्द्रियजाति | २६४ | भाषापर्याप्ति | २५५ |
| | जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति | ११० | ध्रुवावग्रह | ३५७ | पुंवेद | ३४१ | भोक्ता | ११९ |
| | जलगता | ११३ | नपुंसक | ३४१, ३४२ | पुण्डरीक | ९८ | भक्तिज्ञान | ३५४ |
| | जाति | ११७ | नय | ८३ | प्रतिक्रमण | ९८ | भक्त्यज्ञान | ३५८ |
| | जीव | ११९ | नरकगति | २०१, ३०२ | प्रतिपक्षपद | ७६ | भक्त्युक्त्य | ३०८ |
| | जीवसमास | १३१ | नारकगति | २०१ | प्रतीच्यार | ३३६ | भक्त्युक्त्य | ३३९ |
| | जीवस्थान | ७९ | नाथधर्मकथा | १०१ | प्रतीत्यसत्य | १२१ | भक्त्युक्त्य | २०३ |
| | ज्ञान | ३५३, ३६३, ३८४ | नामपद | ७७ | प्रत्याख्यान | २७३ | भक्त्युक्त्य | २०२ |
| | ज्ञानप्रवाद | १४२, १४३, १४६, १४७, ३६४ | नाममगल | १७, १९ | प्रत्येकअन्तत्काय | २६८ | भक्त्युक्त्य | २७९, ३०८ |
| त | तदुभयवक्तव्यता | ८२ | नामसत्य | ११७ | प्रत्येकशरीर | ११२ | महाकलय | ९८ |
| | तियोगति | २०२ | निकातिवाक् | १२७ | प्रथमानुयोग | १७६ | महापुण्डरीक | ९८ |
| | तीर्थकर | ५८ | निक्षेप | १० | प्रमत्तस्यत | ७७ | महामडलीक | ५८ |
| | तेजोलेश्या | ३८९ | निरतगति | २०१ | प्रमाणपद | ४११ | महाराज | ५७ |
| | तेजस्काय | २७३ | निर्वदनी | २०५ | प्ररूपणा | १०४ | मान | ३५० |
| | त्यक | २६ | निषिद्धिका | ९८ | प्रशनव्याकरण | २५६, ४१२ | मानकवाय | ३४२ |
| | त्रसकाय | २७४ | नीललेश्या | ३८९ | प्राण | १२२ | मानकवाय | १२० |
| | त्रिखण्डधरणीश | ५८ | नैगमनय | ८४ | प्राणावाय | ११९ | माननी | ३५० |
| | त्रीन्द्रिय | २४२, २४८, २६४ | नैगोण्यपद | ७४ | प्राणान्यपद | ७६ | माया | ३४९ |
| द | दशवैकालिक | ९७ | परमलेश्या | ३९० | प्रायोपगमन | २३ | मायाकवाय | १२३ |
| | | | परसमयवक्तव्यता | ८२ | वाद्य | २४९, २६७ | मायागता | १२० |
| | | | परिणाम | १८० | वाद्यरकर्म | २५३ | मार्गण | १३१ |

| | | | | | |
|---|------------------|---------------|---|--------------|--------------|
| म | महाहानिवृत्ति | ४१५ | म | मतिज्ञान | ३५४ |
| | भक्तप्रत्याख्यान | २५४, २६७ | | मत्यज्ञान | ३५८ |
| | भव्य | २५७ | | मनस् | ३०८ |
| | भव्यनोऽगामद्रव्य | ८४ | | मनःपर्याय | ९४, ३५८, ३६० |
| | भव्यसिद्ध | ७३ | | मनःपर्याप्ति | २५५ |
| | भाव | ३०० | | मनःप्रवीचार | ३३९ |
| | भावमन | १६१ | | मनुष्य | २०३ |
| | भावमल | ११९ | | मनुष्यगति | २०२ |
| | भावमगल | ३४१ | | मनोयोग | २७९, ३०८ |
| | भावलेख्या | ११२ | | महाकलय | ९८ |
| | भावसत्य | ७३ | | महापुण्डरीक | ९८ |
| | भावानुयोग | ११७ | | महामडलीक | ५८ |
| | भावोन्द्रिय | २६४, २४८, २६४ | | महाराज | ५७ |
| | भाषापर्याप्ति | २६४ | | मान | ३५० |
| | भोक्ता | ३४१ | | मानकवाय | ३४२ |
| | | ९८ | | माननी | १२० |
| | | ९७ | | माया | ३५० |
| | | ३३६ | | मायाकवाय | ३४९ |
| | | १२१ | | मायागता | १२३ |
| | | २७३ | | मायी | १२० |
| | | २६८ | | मार्गण | १३१ |
| | | ११२ | | | |
| | | १७६ | | | |
| | | ४११ | | | |
| | | १०४ | | | |
| | | २५६, ४१२ | | | |
| | | १२२ | | | |
| | | ११९ | | | |
| | | ७६ | | | |
| | | २३ | | | |
| | | २४९, २६७ | | | |
| | | २५३ | | | |

(५)

| | | | |
|------------------------|--------------------|---------------------|---------------|
| मिथ्यादर्शनवाक् | ११७ | विद्यानुवाद | १२१ |
| मिथ्यादृष्टि | १६३, २६२, २७३ | विपाकसूत्र | १०७ |
| मि प्रसंगल | ३८ | विभंगज्ञान | ३५८ |
| मैयुतनञ्जा | ४१५ | धिष्णु | ११९ |
| मोपमनोयोग | २८०, २८१ | वीर्यनुप्रवाद | ११५ |
| मंग | ३३ | द्वाले | १३७, १४८ |
| मंगल | ३२, ३३, ३४ | वेद | ११९, १४०, १४१ |
| मंडलीक | ५७ | वेदक | ३९८ |
| यथायतविद्यारशुद्धिसंयत | ३७१ | वेदकसम्प्रदाष्टि | १७१ |
| यथाख्यातसंयत | ३७३ | वेदकसम्बन्ध | ३९५ |
| यथातथानुपूर्वी | ७३ | वेदनाद्वरत्नमाश्रुत | १२५ |
| योग | १४०, २९९ | वैकृतिक | २९१ |
| योगी | १२० | वैकृतिककाययोग | २९१ |
| रतिवाक् | ११७ | व्यवहार | २९१, २९२ |
| रसननिर्वृत्ति | २३५ | व्याख्याप्रज्ञप्ति | ८४ |
| राजा | ५७ | व्यजननय | १०१, ११० |
| रूपगता | ११३ | व्यंजनावप्रद | ८६ |
| रूपप्रतीचार | ३३९ | | ३५५ |
| रूपसत्य | ११७ | शब्दनय | ८७ |
| लज्जि | २३६ | शब्दप्रतीचार | २३९ |
| लिंगलिङ्गा | २०० | शरीरपर्याप्ति | २५५ |
| लेन्या | १४९, १५०, ३८६, ४३१ | शरीरी | १२० |
| लोत्तान्दुस्वार | १२२ | शुक्लेदया | ३९० |
| लोभ | ३५० | शुतमान | ९३, ३५७, ३५९ |
| लला | ११९ | श्रुताज्ञान | ३५८ |
| लनस | ३०८ | श्राव | २४७ |
| लन्या | ९७ | सन्नित्तमंगल | २८ |
| लसु | १७४ | सत्ता | १२० |
| लसुत्ति | ११६ | सत्यप्रवाद | ११६ |
| लस्योग | २७९, ३०८ | सत्यमन | २८१ |
| लसुगणिक | २७३ | सत्यमनोयोग | २८०, २८१ |
| लसुत्पनी | १०५ | सत्यमोपमनोयोग | २८०, २८१ |
| लसुत्पति | २२१ | ससुयोग | १५८ |
| लसुत्पति | २९९ | सद्भावस्यापना | २० |
| लसुत्पति | २९९ | समभिरुत् | ८२ |
| लसुत्पति | २९९ | समयसत्य | ११८ |

(६)

| | | | |
|------------------------|----------|-----------------|---------------|
| समवाय | १०१ | सुत्रकृत | ९९ |
| समवायद्रव्य | १८ | सुत्रप्रज्ञप्ति | ११० |
| सम्यक्त्व | १५१, ३९५ | संरुट | १२० |
| सम्यग्दर्शन | १५१ | संश्रव | ८४ |
| सम्यग्दर्शनवाक् | ११७ | संश्र | १५२ |
| सम्यग्मिथ्यादृष्टि | १६६ | सजी | १५२, २५९ |
| सयोग | १९१, १९२ | संयतासंयत | १७३ |
| सयोगकेवली | १९१ | सयम | १४४, १७६, ३७४ |
| साधारणशरीर | २६९ | सयोगद्रव्य | १८ |
| साधु | ५१ | संयोजनासत्य | ११८ |
| सामायिक | ९६ | संश्रुतिसत्य | ११८ |
| सामायिकशुद्धिसंयम | ३६९, ३७० | संवेदनी | १०५ |
| सामायिकशुद्धिसंयत | ३७३ | स्त्री | ३४० |
| सासादन | १६३ | स्त्रीवेद | ३४०, ३४१ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | १६६ | स्थलगता | ११३ |
| सिद्ध | ४६ | स्थानांग | १०० |
| सिद्धिगति | २०३ | स्थापनामंगल | १९ |
| सुचक्रधर | ५८ | स्थापनासत्य | ११८ |
| सुद्धम | २५०, २६७ | स्पर्शन | २३७ |
| सुद्धमन्त्र | २५३ | स्पर्शानासुगम | १५८ |
| सुद्धमसापराय | ३७३ | स्पर्शप्रतीचार | ३३८ |
| सुद्धमसापरायशुद्धिसंयत | १८६, ३७१ | स्वयंभू | १२० |
| सूत्र | ११० | स्वसमयवक्तव्यता | ८२ |

२ अवतरण-गाथा-सूची

| | | | | | | | | | |
|---------|---------------------|----------|-------------|----------|---------------|-----------------|-----------------|-------------|---------------|
| क्रम स. | गाथा | पृ. | अन्यत्र कहा | क्रम स | गाथा | पृ. | अन्यत्र कहा | | |
| २१८ | आहार-सरीरिदिय- | ४१७ | गो जी | ११९, २२७ | तिण्हं दोण्हं | ५३४ | गो. जी. ५३४ | | |
| २२२ | काक काक | ४५६ | गो जी | ५२९, २२६ | तेज तेज | ५३४ | गो. जी. ५३५ | | |
| २२३ | क्रिष्ण भ्रमरसवण्णा | ५३३ | पञ्चसं १, | १८३ | २२१ | दस सण्णीणे | पाणा ४१८ | गो. जी. १३३ | |
| २१७ | गुण जीवा | पञ्चत्ती | ४१२ | गो जी, | २ | २२४ | पम्मा पजमसवण्णा | ५३३ | पञ्चसं १, १८४ |
| २१९ | जह पुण्णापुण्णाइ | ४१७ | गो जी. | ११८ | २२० | पंच वि ईवियपाणा | ४१७ | गो. जी. १३० | |
| २२५ | णिम्मूलगंघसाधुव- | ५३३ | गो. जी | ५०८ | २२९ | मणपञ्चव परिघारा | ८२४ | गो. जी. ७२९ | |
| | | | | | | (अर्थसमता) | | | |

३ प्रतियोगिके पाठ-भेद

| पृष्ठ | पंक्ति | अ | आ | क | स | मुद्रित |
|-------|--------|--------------------|-----------------------|--------|------------|---------------------|
| ४११ | ४ | सणि-असणीसु | सणीसु | असणीसु | सणि-असणीसु | सणि-असणीसु |
| ४११ | ६ | पणती | पजती | | | |
| ४१२ | ५ | -मापेक्षया | -मापेक्ष्य | | | -मापेक्षया |
| ४१२ | ११ | -यस्यैकत्वाभावाच्च | यस्य चैकत्वाभावात् | | | -यस्य चैकत्वाभावात् |
| ४१३ | ३ | -संज्ञायां | | | | -संज्ञाया |
| ४१३ | ४ | लोभोदय | लोभोदय | | | लोभोदय- |
| ४१३ | ७ | संज्ञान- | संज्ञान- | | | संज्ञान- |
| ४१४ | १ | -संज्ञानां | | | | -संज्ञानां |
| ४१४ | ८ | मायाभेदयो- | मायाभेदयो- | | | मायाभेदयो- |
| ४१४ | १० | -प्रभावा | | | | -प्रभावा |
| ४१५ | ६ | इदिया | इदिया | | | इदिया |
| ४१६ | ४ | ए | ए | | | ए |
| ४१७ | ३ | -गत- | -गत- | | | -गत- |
| ४१७ | ४ | -घट- | -घट- | | | -घट- |
| ४१८ | ३ | -आणापणेहि | -आणापणेहि | | | -आणापणेहि |
| ४१८ | ८ | पज- | पज- | | | पज- |
| ४१८ | ११ | -पजत्तस्स | | | | -पजत्तस्स |
| ४१९ | ३ | एवासि | एवासि | | | एवासि |
| ४२० | ३ | -विसिद्धे | -विसिद्धे | | | -विसिद्धे |
| ४२० | ११ | -भावेण | | | | -भावेहि |
| ४२१ | २ | छणं भेवं | छलेस्साभेवं छ-भेवं | | | छभेवं |
| ४२१ | ८ | सत्त पाण | सत्त पाण २ | | | सत्त पाण |
| ४२२ | ९ | भणदि | भणदि | | | भणदि |
| ४२५ | ४ | -त्तणे | -त्तणे | | | -त्तणे |
| ४२६ | ६ | -जुत्ता | जुत्ता वि होति | | | -जुत्ता वि अरिथि |
| ४२६ | ७ | वि अरिथि | | | | |
| ४२६ | ७ | -णमोघालोवे | -णं भणमाणे -णमोघालोवे | | | -णमोघालोवे |
| ४२६ | ८ | भणमाणे | मोघालोवे | | | भणमाणे |
| ४२६ | ८ | अपज- | | | | अपज- |
| ४२८ | ४ | अणाहारिणो | | | | अणाहारिणो |
| ४३० | २ | पजत्तीओ | | | | पजत्तीओ |
| ४३० | ७ | -जीवाणं | जीवा ण | | | -जीवा ण |
| ४३३ | १ | X | | | | X |

| | | | | | | |
|-----|----|------------------|--------------------|--|--|------------------------|
| ४३३ | २ | दंसण | | | | सण्णाओ |
| ४३६ | ३ | अरिथि | | | | गरिथि |
| ४३६ | १० | -दयाणं सदि | | | | -दयो णस्सदि |
| ४३८ | ४ | -माण- | | | | -माया- |
| ४४३ | २ | णिव्वत्त- | णिव्वत्त | | | |
| ४४४ | ४ | भवति | भवति | | | भवति |
| ४४४ | ७ | अरिथि | अरिथि | | | अरिथि |
| ४४६ | २ | लेव- | लेव- | | | लेव- |
| ४४७ | ३ | करणेत्ति | | | | करणेत्ति |
| ४४८ | ८ | णाण | | | | सण्णेत्ति |
| ४५३ | ३ | पज्जं | अपजत्तीओ | | | |
| ४५८ | ३ | काउसुक्क- | | | | काउ- |
| ४५९ | ४ | काउसुक्क- | | | | काउ- |
| ४६० | १ | पज्जं | | | | अपजत्तीओ |
| ४६० | ४ | तदिय- | | | | |
| ४७० | २ | इंदियाणं | | | | इंदयाणं |
| ४७० | ३ | एवो ओदो | एवाओ दो | | | |
| ४७१ | १ | पचिविय-अपजत्ता | | | | पंचिवियतिरिक्ख-अपजत्ता |
| ४७१ | ४ | अणाहारिणो | | | | आहारिणो |
| ४७५ | ८ | सत्त पाण | | | | दस पाण सत्त पाण |
| ४७६ | ८ | पजत्तीओ | | | | अपजत्तीओ |
| ४७८ | २ | समामित्याइट्ठीणं | सम्माइट्ठीणं | | | सम्माभिच्छाइट्ठीणं |
| ४७८ | ६ | -ज्जमाणं | -ज्जमाणं | | | -ज्जमाणं |
| ४८१ | ३ | पचिवियतिरिक्खाणं | पचिवियतिरिक्खं | | | पचिविय-तिरिक्खाणं |
| ४८२ | ७ | रिक्खअपजत्ताणं | | | | |
| ४८४ | ७ | X | | | | X |
| ४८८ | ७ | आहारिणो | | | | आहारिणो अणाहारिणो, |
| ४९२ | ७ | णव पाण | | | | णव पाण सत्त पाण |
| ४९७ | ४ | दव्वभावेहि | दव्वभावेहि | | | |
| ४९८ | २ | असण्णिणीओ | सण्णिणीओ | | | |
| ४९८ | ७ | -काउसुकलेस्सावि | -काउसुकलेस्साओ | | | काउलेस्साओ |
| ५०० | ८ | सत्त पाण | | | | सत्त पाण सत्त पाण |
| ५०२ | ५ | अजोगी | अजोगो | | | |
| ५०२ | ७ | असण्णिणो | असण्णिणो | | | असण्णिणो णव |
| | | वि अरिथि | अणुभया या वि अरिथि | | | असण्णिणो वि अरिथि |

| | | | | | |
|-----|----|------------------------|---|----------------------|----------------------|
| ६०० | १ | वीप | " | पदे | दोषिण |
| ६०२ | ३ | तिणिण | " | " | " |
| ६०३ | ४ | अकसावा | " | " | " |
| ६०४ | २ | मूलोघमुत्तजीव- | " | अपज्जत्तीओ | मूलोघमुत्तजीव- |
| ६०६ | २ | पज्जत्तीओ | " | तिरिक्कगदी | तिरिक्कगदी |
| ६०६ | " | तिणिणगदी | " | आहारिणो | आहारिणो |
| ६०९ | ३ | आहारिणो | " | अणाहारिणो, | अणाहारिणो, |
| ६०९ | १२ | -मुवसाणिय- | " | " | " |
| ६१० | ३ | पद | " | " | " |
| ६१० | ६ | -काइयणिव्वत्ति- | " | काइयणिव्वत्ति- | काइयणिव्वत्ति- |
| ६१० | " | पज्जत्ता- | " | पज्जत्तापज्जत्ताणं | पज्जत्तापज्जत्ताणं |
| ६१० | ९ | पज्जत्तापज्जत्ताण- | " | पज्जत्ताणमकम्मोदय- | पज्जत्ताणमकम्मोदय- |
| ६११ | २ | मकम्मोदयाण | " | तेउकाइयाणं | तेउकाइयाणं |
| ६११ | " | वणिज्ज- | " | " | " |
| ६११ | " | पज्जत्ताणं | " | पज्जत्ताणं | पज्जत्ताणं |
| ६१२ | २ | अण्णेयवण्णालावे | " | " | " |
| ६१४ | ७ | गुलिवसा । | " | अण्णेयवण्णा | अण्णेयवण्णा |
| ६१४ | " | भवसिद्धिया | " | तोवि रुद्धिवसा | तोवि रुद्धिवसा |
| ६१५ | ८ | पज्जत्तीओ | " | भवसिद्धिया अमव- | भवसिद्धिया अमव- |
| ६२० | १० | तेसि २ | " | सिद्धिया, | सिद्धिया, |
| ६२१ | १ | वण्णक्काओ वण्णक्क-भंगो | " | तेसि | तेसि |
| ६२२ | ३ | सत्त पाण | " | " | " |
| ६२७ | १ | -इट्ठिण्णहुडि | " | सत्त पाण २ | सत्त पाण २ |
| ६२७ | ३ | चउगदिगदीओ | " | चउगदिगदीओ | चउगदिगदीओ |
| ६२७ | ५ | द्व्व-भावेहि | " | द्व्व-भावेहि अलेस्सा | द्व्व-भावेहि अलेस्सा |
| ६२७ | " | छ लेस्साओ | " | " | " |
| ६३३ | ४ | इदिओ | " | इदि ओ | इदि ओ |
| ६३४ | ४ | -जोगीभगो | " | ताओ वि | ताओ वि |
| ६३४ | ८ | ताओवि | " | " | " |
| ६५३ | ३ | सण्णित्तिभु | " | सण्णित्तभु | सण्णित्तभु |
| ६५४ | १ | जोगेव उत्ताणं | " | जोगेव उत्ताणं | जोगेव उत्ताणं |
| ६५४ | १ | उज्जत्ताणं | " | उज्जत्ताणं | उज्जत्ताणं |
| ६५४ | १ | छव्वण्णकालिय- | " | छव्वण्णोरालिय | छव्वण्णोरालिय |
| ६५४ | २ | परमाणाण | " | परमाणुणं | परमाणुणं |
| ६५४ | २ | परमाणादि | " | परमाणुहि सह | परमाणुहि सह |
| ६५४ | " | सद्दामिलिक्काण | " | मिलिक्काण | मिलिक्काण |

| | | | | | |
|-----|----|-----------------------------------------------------------|---|--------------------------------|---|
| ६५४ | ७ | कालोद- | " | काचोद- | " |
| ६५८ | ४ | -केवलि | " | " | " |
| ६५९ | २ | अयोग- | " | समणो | " |
| ६६० | ५ | समणा | " | समणो | " |
| ६६० | " | पबंध- | " | बंध- | " |
| ६६९ | ६ | विरहाकालाव- | " | विरहकालोव- | " |
| ६७२ | ८ | तंजहा गेदव्वा तम्हा गेदव्वा जं जहा गेदव्वा जं जहा गेदव्वा | " | जहा मूलोघो गीदो तं जहा गेदव्वा | " |
| ६८४ | ८ | सण्णियो | " | " | " |
| ७०० | १ | अणियत्तं अणियत्तं अणियत्तं अणियत्तं | " | अणियत्तं | " |
| ७०० | २ | छ लेस्साओ | " | अलेस्साओ | " |
| ७०५ | ५ | आहारिणो | " | " | " |
| ७१२ | १० | अणाहारिणो | " | " | " |
| ७१२ | ३ | मुणं मए | " | माण-माया- | " |
| ७१३ | ३ | X १० ४ २-१ | " | " | " |
| ७२६ | ७ | -णाणाणं | " | -णाणाणि वत्तव्वाणि | " |
| ७२६ | " | वत्तव्वाणं | " | " | " |
| ७२६ | ८ | तिणिण | " | तेण | " |
| ७२७ | १ | इयकेसु सत्तीसु | " | इयरेसु सत्तेसु | " |
| ७२७ | २ | -विवक्खियाणाण- | " | " | " |
| ७२७ | ७ | -तं पिच्छायद- | " | -तं पिच्छायद- | " |
| ७३० | ४ | मूलोघोव्व मूलोघोव्व मूलोघो | " | मूलोघो व्व | " |
| ७३३ | ७ | विवट्ठिओ | " | " | " |
| ७५० | १ | वट्टावण- | " | एवं छेदोवट्टावण- | " |
| ७५१ | २ | खीणत्तणाविओ | " | खीणत्तणाविओ | " |
| ७५१ | २ | किण्ह-णील किण्हलेस्साओ किण्ह-णील | " | किण्हलेस्सा | " |
| ७५४ | २ | काउलेस्साओ | " | " | " |
| ७५४ | २ | भावेण भावेण छ लेस्साओ | " | भावेण किण्हलेस्सा | " |
| ७६३ | ७ | वि एवं | " | " | " |
| ७७८ | ४ | पविदियजादि | " | पंच जादीओ | " |
| ७९४ | ६ | X तिन्व लाहाणं | " | पिडियाणं | " |
| ८०१ | ४ | अजोगि-केवलि | " | तिव्वलोहानं | " |
| ८०१ | ५ | अण्णलेस्साणं | " | अजोगिकेवलि X | " |
| ८१६ | ८ | वेवगत्तस्मादि- | " | अलेस्साणं | " |
| ८१६ | " | एण्हि | " | वेवगत्तस्मादि- | " |
| ८१६ | " | " | " | एमत्त- | " |

जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंमण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

तासिमपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अप-ज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंमण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण किण्ण-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-सम्मामिच्छाद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पजत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदिय-ओर औदारिककाययोग ये नो योग, खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संस्किनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दष्टि योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, खीवेद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संस्किनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पचेन्द्रिय तिर्यच सम्यग्मिथ्यादष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्या-दष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सासादनसम्यग्दष्टिके अपर्याप्त आलाप

नं. १५: पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सासादनसम्यग्दष्टिके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|----|----|----|-------|-------|----|------|-----|-----|----|----|----|------|------|-------|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द. | ले | म | स | म | सि | जा | उ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ |
| मा. | मा. | अ | अ | अ | ति | ति | अ | ओ | ओ | मि | मि | अम | वशु | का | म | म | म | आ | साका. | |
| | | | | | | | | कार्म | कार्म | | कृयु | अच. | अच. | शु | भा | भा | अना. | अना. | अना. | |

पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-सासणसम्मामिच्छाद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंमण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

तासिं चेष पज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव

पंचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दष्टि योनिमतियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संबन्धी-पर्याप्त और संबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तिया; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग खीवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संस्किनी, आहारिणी, अनाहारिणी साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यच सासादनसम्यग्दष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं १३ पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सासादन सम्यग्दष्टिके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|----|----|----|----|----|----|-------|----|-----|------|------|------|------|------|-------|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय | द. | ले | म | स | म | सि | जा | उ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ |
| मा | मा | अ | अ | अ | ति | ति | अ | ओ | ओ | मि | मि | अम | वशु | मा | म | म | म | आ | साका. | |
| | | | | | | | | ओ | ओ | | | अच | अच | अना. | अना. | अना. | अना. | अना. | अना. | |

नं १४ पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सासादन सम्यग्दष्टिके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|----|----|----|----|----|----|------|----|-----|------|------|------|------|------|-------|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द. | ले | म | स | म | सि | जा | उ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ |
| मा | मा | अ | अ | अ | ति | ति | अ | ओ | ओ | मि | मि | अम | वशु | मा | म | म | म | आ | साका. | |
| | | | | | | | | ओ | ओ | | | अच | अच | अना. | अना. | अना. | अना. | अना. | अना. | |

सागारवजुत्ता हेंति अणागारवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भणमणे अत्थि चोदस गुणहणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, मणुरागदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग ओरालिय-आहार-मिस्म-कम्मइहिं विणा दस वा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो

पयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्ही सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, एक सबी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकाययोग वैक्रियिकमिश्र-काययोगके विना तेरह योग, अथवा पूर्वोक्त दो और औदारिकमिश्रकाययोग आहारकमिश्र-काययोग और कर्मणकाययोग इन पात्र योगोंके विना दशयोग तथा अयोग-स्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत-वेद-स्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपाय-स्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, तथा अलेख्या-स्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यस्त्व, संश्लिक तथा सन्निक और असंश्लिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित

नं. १०० सामान्य मनुष्योंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|-------|----|----|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द. | ले. | म | स | सति | आ | उ | | |
| १४ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १३ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ | | |
| | स | प | ७ | म. | पंचे. | नस | तस | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ | ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ७८, ८१, ८४, ८७, ९०, ९३, ९६, ९९ |

लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हेंति अणागारवजुत्ता वा^१ ।

एव तिस्खिगदी समत्ता ।

मणुसा चउच्चिहा हवंति मणुस्सा मणुस-पज्जत्ता मणुसिणीओ मणुस-अपज्जत्ता चेदि । तत्थ मणुस्साणं भणमणे अत्थि चोदस गुणहणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो गेव असण्णिणो अणाहारिणो,

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संश्लिक, असंश्लिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इस प्रकार तिर्यचगतिके आलाप समाप्त हुए ।

मनुष्य चार प्रकारके होते हैं—मनुष्य, मनुष्य-पर्याप्त, मनुष्यिनी और लक्ष्यपर्याप्त मनुष्य । उनमेंसे मनुष्यसामान्यके आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संश्लि-पर्याप्त, संश्लि-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाप, और क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तथा अयोग-स्थान भी होता है, तीनों वेद तथा अपगतवेद-स्थान भी होता है । चारों कपाय तथा अकपाय-स्थान भी होता है । आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं तथा अलेख्या-स्थान भी होता है । भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यस्त्व, संश्लिक, तथा सबी और असंश्लिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है । आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं. ९९ पंचेन्द्रिय तिर्यच लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|---|----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | ४ | ८ | ७ | २ | ६ | २ | ६ | १ | २ | २ |
| | सि | म | अ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| | मि | म | अ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |

मनुस-मिच्छाद्वीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासो, छ पञ्जतीओ छ अपञ्जतीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दन्व-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता वा हति अणागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्तानं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जतीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दन्व-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता वा हति अणागारवजुत्ता वा ।

सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, और संज्ञी-अपर्याप्त, ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिथकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अन्नान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अन्नान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संबिक,

न १०३ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|----|-------|-------|----|-------|-------|---|----|-------|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि | स | प | म | प | प | प | प | म | व | व | अज्ञा | अज्ञा | अम | चक्षु | मा | अ | मि | स | आहा | अना |
| | | | | | | | | आ | आ | का | का | का | | अव | अज्ञा | अ | | | अना | अना |

हति अणागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जतीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दन्वेष काल-सुदरु-लेस्साओ, भावेष किण्हणील-कालेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता वा हति अणागारवजुत्ता वा ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिथकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अन्नान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याए, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १०४ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|----|-------|-------|----|-------|-------|---|----|-------|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | ३ | १ | २ | ६ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि | स | प | म | प | प | प | प | म | व | व | अज्ञा | अज्ञा | अम | चक्षु | मा | अ | मि | स | आहा | अना |
| | | | | | | | | आ | आ | का | का | का | | अव | अज्ञा | अ | | | अना | अना |

नं. १०५ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|------|----|------|--------|--------|----|----|-------|---|----|-------|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | २ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | २ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि | स | अ | अ | म | म | प | त | ओ | मि | कर्म | कुश्रु | कुश्रु | अम | अव | का | अ | मि | म | आहा | अना |
| | | | | | | | | कर्म | | | कुश्रु | अव | | | अज्ञा | अ | | | अना | अना |

अणारालवजुत्ता वा' ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तप्तकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हणील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया सातणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारवजुत्ता होति अणारालवजुत्ता वा' ।

मणुस्स-सम्मामिच्छइद्वीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सामादन गुणस्थान, एक सत्री-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, ओदारिकमित्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असयम, चक्षु और भ्रवसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक अनाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-

न २०७

सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|----|---|
| गु | जी | प | सा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | सय | द | ले | म | म | मा | उ |
| १ | १ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | २ |
| मा | म | प | म | म | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. १०८

सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|----|---|
| गु | जी | प | सा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | सय | द | ले | म | म | मा | उ |
| १ | १ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | २ |
| मा | म | प | म | म | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

मणुस्स-मासणसम्मइद्वीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अजत्तीओ, दम पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदिय-जादी, तप्तकाओ, एमारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सातणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारवजुत्ता होति अणारालवजुत्ता वा' ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दम पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तप्तकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सातणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता होति

सामादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, सत्री पर्याप्त और सत्री अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों जनयोग, ओदारिककाययोग, ओदारिकमित्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और भ्रवसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सामादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अना-हारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सामादन गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और ओदारिक-काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंजसो, चक्षु और भ्रवसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सामादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक,

न २०६ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|---|----|----|---|----|---|---|----|---|
| गु | जी | प | सा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | सय | द | ले | म | म | मा | उ |
| १ | १ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | २ |
| मा | म | प | म | म | म | प | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

दृष्ट-भारोहं च लेस्सा प्रलेस्सा वि अस्थि, भवसिद्धियाओ अश्वमिद्धिया, छ सम्मत्तं, मणिणीओ गंध मणिणी योम अमणिणी, आहारिणी, अणाहारिणी, माराखवुत्ता हेति अणामारुवुत्ता ता मारा-अणामारांहे जुगवदुवुत्ता वा” ।

तामि चंम अय्यत्तणं भण्णमाणे अस्थि तिण्णि गुणद्वणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि मणाओ सीणसण्णा वि अस्थि, मणुसगदी, पंचि-दियजादी, तमकाओ, दो जोग, उन्थिवेदो अवगदेवदो वि अस्थि, चत्तारि कसाय अक-साओ म, दो अण्णाण केवलणणेण तिण्णि गाण, असजमो जहास्सोदेण दोणिण संजम,

निना अह संयम, चारों दर्शन, उब्य ओर भावसे छहों लेख्याएं तथा अलेख्या स्थान भी होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिका छहों सम्यस्त्व, सक्षिनी, तथा सक्षिनी ओर असक्षिनी विक-ल्पने रक्षित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयो-पयोगिनी तथा साकार अनाकार इत दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होती है।

नियोगार्थ—पर्याप्त सामान्य मनुष्योंके तेरह अथवा दश योगोंके होनेका स्पष्टीकरण ऊपर हर पाये है, उमीप्रकार पर्याप्त मनुष्यनियोंके ग्यारह अथवा नौ योगोंके संबन्धमें भी जितनेना चाहिये। यहा इतनी विशेषता है कि स्त्रीविकोंके आहारक ऋद्धि नहीं होती है, अतएव इतके आहार और आहारमिथ्र ये दो योग नहीं पाये जाते हैं। इसप्रकार स्त्रीविकोंके पर्याप्त आत्म्यामें ग्यारह अथवा नौ योग ही होते हैं।

उन्हीं मनुष्यनियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली ये तीन गुणस्थान, एक सजी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्या-द्विया, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, वसकाय, आंतरिकमिथ्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, तथा अपगत-वेस्थान भी है। चारों कसाय तथा अकसाय स्थान भी है। कुमति और कुशुत ये दो ज्ञान तथा सयोगकेवली गुणस्थानकी अपेक्षा केवल ज्ञान, इसप्रकार तीन ज्ञान, असें यस ओर यथा-यतविहारशुद्धि ये दो संयम, चक्षु, अचक्षु और केवल ये तीन दर्शन,

नं. ११५ मनुष्यती स्त्रियोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु | जी | प | मा | स | ग | द | श | यो | वे | क | आ | स | य | द | ले | म | स | स | सि | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि | स | प | १० | ११ | १२ | १३ | | | | | | | | | | | | | | | |

काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-कालेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ हेति अणागारुवजुत्ताओ वा" ।

मणुमिणी-सासनसमाइड्ढिणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासनसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता हेति अणागारुवजुत्ता वा" ।

इधसे कापोत और शुक्र लेख्याए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अष्टम-लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुण-स्थान, संज्ञो-पर्याप्त और सब्बी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास. छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, खविद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, इव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सत्तिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

नं. ११९

मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|------|------|-----|-------|----|----|----|-------|-----|---|
| शु | जी | प | मा | स | ग | द | का | यो | वे | क | ज्ञा | साय | द | ले | म | स. | सक्षि | जा | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि. | म. | अ | प. | प. | प. | प. | म. | जो | मि | कुम. | कुम. | अस | चक्षु | द. | म | मि | ग. | आहा | उ |
| | | | | | | | मि | मि | | कृशु | कृशु | अच | अच | अ. | अ. | | अना | अना | |

नं. १२०

सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|--------|--------|-----|----|----|----|----|-------|-----|---|
| शु | जी | प | मा | स | ग | द | का | यो | वे | क | ज्ञा | साय | द | ले | म | स. | सक्षि | जा | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि | म | प | प | प | प | प | म | म | मि | अज्ञा. | अज्ञा. | अच | अच | अ. | अ. | | अना | अना | |
| | | | | | | | मि | मि | | अज्ञा. | अज्ञा. | अच | अच | अ. | अ. | | अना | अना | |

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ हेति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

मिच्छाइड्ढि-पज्जत्त-मणुसिणीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कपाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ. भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ हेति अणागारुवजुत्ताओ वा" ।

मिच्छाइड्ढि-अपज्जत्त-मणुसिणीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण दर्शन, इव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी तथा अनाकारोपयोगिनी होती है ।

मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्तमालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान. एक सब्बी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञाए, मनुष्यगति. पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग तथा औदारिककाययोग ये नौ योग; खविद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन. इव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सब्बी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, खविद, चारों कपाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

नं. १२८ मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|---|---|---|----|----|----|--------|--------|-----|----|----|----|----|-------|-----|---|
| शु | मा | प | मा | स | ग | द | का | यो | वे | क | ज्ञा | साय | द | ले | म | स. | सक्षि | जा | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि | म | प | प | प | प | प | म | म | मि | अज्ञा. | अज्ञा. | अच | अच | अ. | अ. | | अना | अना | |
| | | | | | | | मि | मि | | अज्ञा. | अज्ञा. | अच | अच | अ. | अ. | | अना | अना | |

तपसाओं, पर जोग, इत्थिवेद, चचारि कसाय, तिणिण गाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दवंण छ लेस्साओं, भोग नेउ-पम्म-गुम्फलेस्साओं; भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवुत्ताओ होंति अणागारुवुत्ताओ वा” ।

“मणुसिणी-अपुञ्चरुग्गाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गाणं, एओ जीवससामो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिणिण यणाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चचारि कसाय, तिणिण गाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दवंण छ लेस्साओं, भोगेण गुम्फलेस्सा; भवसिद्धिया, वेदगम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सणिणी, अहारिणी, सागारुवुत्ताओ होंति अणागारुवुत्ताओ वा” ।

साययोग ये नां योग; गोपेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोप-स्थानता ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे तेज, पर और गुरु ये तीन गुण लेख्याण, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सजिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुण-स्थान, एक मन्वी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, वगों प्राण, आहारसंयोंके विना जोग तीन मज्जाण, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्वविद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे गुरु-लेख्या; भव्यसिद्धिक, वेदकल्प्यत्वके विना औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व,

न १२७ अप्रगतसमयत मनुष्यनियोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु. १ | १० | ३ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-------|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

नं. १२८ अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु. १ | १० | ३ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-------|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

आहारिणी, सागारुवुत्ता होंति अणागारुवुत्ता वा ।

मणुसिणी-पडम-अणियङ्गिणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गाणं, एओ जीवससामो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहार-भयसण्णाहि विणा दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चचारि कसाय, तिणिण गाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दवंण छ लेस्साओं, भोगेण गुम्फलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सणिणीओ, आहारिणी, सागारुवुत्ताओ होंति अणागारुवुत्ताओ वा” ।

मणुसिणी-विदिय-अणियङ्गिणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गाणं, एओ जीवससामो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, णव जोग, अमग्गवेदो, चचारि कसाय, तिणिण गाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दवंण छ लेस्सा, भवेण सजिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सन्वी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, आहार और भयसजाके विना शेष दो सजाणं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनो-योग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्वविद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे गुरु लेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, सजिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सन्वी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, परियहसजा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे गुरुलेख्या,

नं. १२९ अनिवृत्तिकरण प्रथमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु. १ | १० | ३ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-------|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

मणुसिणी-चउत्थ-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदेवदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि-दद्ध-दीए अंकुरो व्व इत्थि णवुंसय-वेदोदय-दूसिय-जिवि वेदोदए फिडे वि ण मणपज्जवणणमुपज्जदि । दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुजुत्ता होति अणागारुजुत्ता वा^{३३} ।

मणुसिणी पंचम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थ भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सर्वी-पर्याप्त जीवसमास, छहो पर्याप्तिया, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कपाय, आदिके तीन ज्ञान होतें हैं । यहाँपर छांवेदके नष्ट हो जाने पर भी मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका कारण यह है कि जैसे अश्लेषे दग्ध हुए बीजमें अंकुर उत्पन्न नहीं हो सकता है, उसीप्रकार स्त्री और नपुंसकवेदके उदयसे दूषित जीवमें, वेदोदयके नष्ट हो जाने पर भी, मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, इसलिये यहाँ पर भी तीन ज्ञान ही कहे गये हैं । ज्ञान आलापके आगे सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशामिक और क्षाधिक ये दो सम्पत्त्व, सांक्षिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सभी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परियहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं १३२ अनिवृत्तिकरणके चतुर्थभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----------|-------|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| गु. जी. | प. प्रा. | म. ग. | द. | क. | जा. | यो. | वे. | क. | जा. | साय. | द. | ले. | म. | ग. | म. | स. | आ. | उ. |
| १ | ६ | १० | १ | १ | १ | ९ | ० | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ३ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ८ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ९ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

१, १.] छम्बंडागमे जीवट्ठण
सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, मण्णिणी, आहारिणी, सागारुजुत्ता होति अणागारुजुत्ता वा ।

मणुसिणी-तदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदेवदो, दो कसाय, तिण्णि कमाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुजुत्ता होति अणागारुजुत्ता वा ।

भव्यसिद्धिक, औपशामिक और क्षाधिक ये दो सम्पत्त्व, सांक्षिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक सर्वी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, कोधकपायके विना शेष तीन कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशामिक और क्षाधिक ये दो सम्पत्त्व, सांक्षिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

न १३० अनिवृत्तिकरणके तृतीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----------|-------|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| गु. जी. | प. प्रा. | म. ग. | द. | क. | जा. | यो. | वे. | क. | जा. | साय. | द. | ले. | म. | ग. | म. | स. | आ. | उ. |
| १ | ६ | १० | १ | १ | १ | ९ | ० | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ३ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ८ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ९ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

नं १३१ अनिवृत्तिकरणके तृतीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----------|-------|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| गु. जी. | प. प्रा. | म. ग. | द. | क. | जा. | यो. | वे. | क. | जा. | साय. | द. | ले. | म. | ग. | म. | स. | आ. | उ. |
| १ | ६ | १० | १ | १ | १ | ९ | ० | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ३ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ७ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ८ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ९ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

त्रोग, अत्रगद्वेदो, लोभकसाओ, तिणिण गाण, दो संजम, तिणिण दंसण, दव्णेण छ लेन्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सणिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

'मणुसिणी-सुद्धमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुद्धमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णम जोग, अत्रगद्वेदो, सुद्धमलोभकसाओ, तिणिण गाण, सुद्धमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिणिण दंसण, दव्णेण छ लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं,

ओर ओपशमिककाययोग ये नो योग; अफगतवेद, लोभककाय, आदिके तीन ज्ञान, सामा-यिक ओर छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे शुक्लेश्या, भव्यविरिक, ओपशमिक ओर क्षायिक ये दो सम्यमत्व, सखिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी ओर अनाकारोपयोगिनी होती है ।

सूद्धमसांपराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सूद्धमसा-मपय गुणस्थान, एक सखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, मूद्धम परि-ग्रहज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, ओर ओपशमिककाययोग ये नो योग; अफगतवेद, सूद्धम लोभककाय, आदिके तीन ज्ञान, सूद्धम-सांपरायशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे शुक्लेश्या, भव्य-

नं १३३ अनि गुत्तिकरणके पंचमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|
| ग | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | |

नं १३४ सूद्धमसांपराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|
| ग | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | |

सणिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होति अणागारुवजुत्ताओ वा । मणुसिणीसु उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अत्रगद्वेदो, उवसंतकसाओ, तिणिण गाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिणिण दंसण, दव्णेण छ लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं, सणिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

मणुसिणीसु खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणह्माणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अत्रगद्वेदो, खीणकसाओ, तिणिण गाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिणिण दंसण, सिद्धिक, ओपशमिक ओर क्षायिक ये दो सम्यमत्व, सखिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी ओर अनाकारोपयोगिनी होती है ।

उपशान्तकपाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक उपशान्त-कपाय गुणस्थान, एक सखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, उपशान्त-सज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदा-रिककाययोग ये नो योग, अफगतवेद, उपशान्तकपाय, आदिके तीन ज्ञान, यथाव्यात-विहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, ओपशमिक ओर क्षायिक ये दो सम्यमत्व, सखिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी ओर अनाकारोपयोगिनी होती है ।

क्षीणकपाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक क्षीणकपाय गुण-स्थान, एक संजी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसज्ञा, मनुष्यगति, पचे-न्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो योग, अफगतवेद, क्षीणकपाय, आदिके तीन ज्ञान, यथाव्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके

नं. १३५ उपशान्तकपाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|
| ग | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | |

द्वयं च लेप्साओ, भवेण सुकलेस्मा; भवमिद्वियाओ, सइयसम्मत्तं, सण्णिणीओ, अणाहारिणीओ, मागारुवुत्ता हतिं अणागारुवुत्ता वा ।

“ मणुसिणी-अजोगिजिणणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवमसासा, छ पज्जतीओ छ अपज्जतीओ, चत्तारि पाण दो वा, सीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तमसाओ, सत्त जोग, अगद्वेदो, अरुगओ, केवलणणं, जहासदाविहारसुद्विसंजमो, केवलदंसण, दन्नेण छ लेस्साओ, भवेण सुमकलेस्सा; भवमिद्वियाओ, सइयसम्मत्तं,

तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयाण, भावसे शुहलेदया, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्पत्त्व, सन्नित्ती, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

सयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सयोगि-केवली गुणस्थान, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; वचनबल, कायबल, आयु और द्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, तथा समुदा-तकी अपर्याप्त अवस्थामें, वचनबल और द्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, अथवा तेरहवें गुणस्थानके अन्तमें आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं । क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्य और अनुभव ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदा-रिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये सात योग, अपगतवेदस्थान, अकरायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयाएं, भावसे शुहलेदया; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्पत्त्व, सन्नित्ती और असन्नित्ती इन दोनों

न. १३६ क्षीणकराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| उ | जी | प | पा | म | ग | इ | सा | यो | वे | के | सा | स्य | द | ले | म | स | म | म | नि | आ | उ |
|---|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|-----|---|----|---|---|---|---|----|---|---|
| १ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| २ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| ३ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |

नं १३७ सयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| उ | जी | प | पा | म | ग | इ | सा | यो | वे | के | सा | स्य | द | ले | म | स | म | म | नि | आ | उ |
|---|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|-----|---|----|---|---|---|---|----|---|---|
| १ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| २ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| ३ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |

णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगधदुवुत्ताओ वा हतिं ।

मणुसिणी-अजोगिजिणणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जतीओ, एओ पाणो, सीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगद्वेदो, अकसाओ, केवलणण, जहासदाविहारसुद्विसंजमो, केवलदंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण अलेस्सा; भवसिद्धियाओ, सइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगधदुवुत्ताओ वा हतिं ।

लद्धि-अपज्जत्त-मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जतीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे विकल्पसे विमुक्त, आहारिणी, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगसे शुगपत् उपयुक्त होती हैं ।

अयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्य-गति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोगस्थान, अपगतवेदस्थान, अकरायस्थान, केवल-ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयाएं, भावसे अलेदयास्थान, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्पत्त्व, सन्नित्ती और असन्नित्ती इन दोनों विकल्पसे मुक्त, अनाहा-रिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगसे शुगपत् उपयुक्त होती हैं ।

लब्धपर्याप्तक मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुसकवेद,

नं १३८ अयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

| उ | जी | प | पा | म | ग | इ | सा | यो | वे | के | सा | स्य | द | ले | म | स | म | म | नि | आ | उ |
|---|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|-----|---|----|---|---|---|---|----|---|---|
| १ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| २ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |
| ३ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ |

जोग, गुरुंमयदं, चत्तारि क्रमाय, दो अण्णाण, अंजम, दो दंसण, दवेण काउ-सुक्क-
नेम्माओ, भाण किरुह-णील-कालेस्साओ; भममिद्विया अभवमिद्विया, मिच्छत्तं, मण्णिणो,
आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

ण मयुसगदी सप्ता ।

“देवगदीण देवानं भणमणो अत्थि चत्तारि गुणहणाणि, दो जीवसमासा, छ
पञ्चचीओ छ अपज्जत्तीओ, दम पाण सत्त पाण, चत्तारि मण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी,
तमकाओ, एगारह जोग, णुंमयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण,
चारं कसाय, कुमति ओर कुशुन ये दो अजान, अस्यम, चद्रु ओर अचछु ये दो दर्शन,
अयं कपोत ओर शुरु लेट्याण, भावसे कृष्ण, नील ओर कपोत ये तीन लेट्याण. भव्य-
मिन्निक, अभव्यसिन्निक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक. साकारोपयोगी ओर
अकारोपयोगी दोते हे ।

इसप्रकार मनुष्योंके आलाप समाप्त हुए ।

रंगनिर्भ सामान्य देवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके चार गुणस्थान, सजी-
पर्याप्त ओर सजी अपर्याप्त ये दो जीवमाम्, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण,
मान प्राण; चारों मनुष्य, पंचन्द्रियजाति. त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन-
योग, वैकल्पिककार्ययोग, वैकल्पिकमिश्रकार्ययोग और काम्यकार्ययोग ये ग्यारह योग,
मनुष्यक वेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,

नं. १३० लक्ष्यपर्याप्तक मनुष्यके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|------|------|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|
| प | वी | प | प्रा | म | ग | द | रा | गो | गो | म | स | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| म | प | प्रा | म | ग | द | रा | गो | गो | म | स | आ | उ | |
| | | | | | | | | | | | | | |

नं. १३० देवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| प | प्रा | म | ग | द | रा | गो | गो | म | स | आ | उ | | |
| | | | | | | | | | | | | | |

असंजमो, तिण्णिण दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भममिद्विया अभवसिद्विया, छ
सम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्तानं भणमणो अत्थि चत्तारि गुणहणाणि, एओ जीवसमासो,
छ पञ्चचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णम
जोग, दो वेद, चत्तारि क्रमाय, छ णाण, असजमो, तिण्णिण दंसण, दवेण छ लेस्साओ
एत्थ सिस्सो भणदि—देवाण पञ्चत्तकाले दव्वदो छ लेस्साओ इवति ति एदं ण यडडे,
तेसिं पञ्चत्तकाले भावदो छ-लेस्साभावदो । मा भवंतु देवाणं भावदो छ लेस्साओ
दव्वदो पुण छ लेस्सा भवंति चैव, दव्व-भावणमेगत्ताभावदो । इदि एदमवि वयणं ण
यडडे, जम्हा जा भावलेस्सा तल्लेस्सा चैव ओरालिय-नेउविजय आहारसरिणोक्कम्म-
परमाणवो आगच्छंति । तं कथं णवदि ति भणिदे सोथम्मादिदेवाणं भावलेस्साणुरुव-
दव्वलेस्सापरुवणादो णव्विदि । ण च देवाणं पञ्चत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ
मोत्तण्णलेस्साओ अत्थि, तम्हा देवाणं पञ्चत्तकाले दवादो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि
होदव्वमिदि । एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ—

अस्यम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेट्याण, (यहाँ तीन अणुम लेट्याण
अपर्याप्तकालकी अपेक्षा जानना चाहिये ।) भव्यसिन्निक, अभव्यसिन्निक, छहों रम्यस्त्व,
मत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अकारोपयोगी दोते हे ।

उन्हीं सामान्य देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहते पर—आदिके चार गुणस्थान,
एक सर्वोपर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संजाण, देवगति, पंचे-
न्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैकल्पिककार्ययोग ये नौ योग,
स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,
असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेट्याण होती हैं ।

शुंका — यहाँपर शिष्य कहता है कि देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे छहों लेट्याण होती
हैं यह वचन घडित नहीं होता है, क्योंकि, उनके पर्याप्तकालमें भावसे छहों लेट्याणोंका
उभाव है । यदि कहा जाय कि देवोंके भावसे छहों लेट्याण मत होवें, किन्तु द्रव्यसे छहों
लेट्याण होती ही है, क्योंकि द्रव्य और भावमें एकताका अभाव अर्थात् भेद है । सो ऐसा कथन
भी नहीं बनता है, क्योंकि, जो भावलेट्याण होती है उसी लेट्याणवाले ही औदारिक, वैकल्-
पिक और आहारकरगरीरसंबन्धी नोकर्म परमाणु आते हैं । यदि यह कहा जाय कि एक यान
कैसे जानी जाती है, तो उसका उत्तर यह है कि सोथर्म आदि कल्पवासी देवोंके भाव-
लेट्याणके अरुपर ही द्रव्य लेट्याणका प्ररूपण किये जानेसे एक यान जानी जाती है । तथा देवोंके
पर्याप्तकालमें तेज, पद्म और शुरु इन तीन लेट्याणोंको छोड़कर अन्य लेट्याणं होती नहीं है,
इसलिये देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यकी अपेक्षा भी तेज, पद्म और शुरु लेट्याण होना चाहिये ।
इस प्रकारमें निम्न गथाएं उपयुक्त हैं—

निष्ठा भ्रमरसमन्ना नीला पुंण नीलगुलियसंकासा ।

काओ कओदवण्णा तेऊ तवणिज्जमण्णा य ॥ २२२ ॥

पम्मा पउमसण्णा सुम्मा पुण कासकुसुमसकासा ।

निष्ठादिद्व्यलेस्सा-ग्णविसेसो मुणेयव्भो' ॥ २२४ ॥

भावलेस्सा-लिं' धोरुवण्ण एसा गाहा जाणवेई —

णिम्मल्लवसाह्वमसाह शुचिनु वाउ-पडिदाई ।

अवमतलेस्साणं मिद्ध एदाई वयणाई' ॥ २२५ ॥

शुक्लेश्या भौरके समान अत्यन्त काले वर्णकी होती है, नीलेश्या नीलकी गोलीके समान नीलगुणकी होती है, कापोतेश्या कापोतवर्णवाली होती है, तेजोलेश्या सेनेके समान वर्णवाली होती है, पमलेश्या पमके समान वर्णवाली होती है और शुक्लेश्या कासके फूलके समान श्वेतवर्णकी होती है । इसप्रकार कृष्णादि द्रव्येश्याओंके वर्ण-विशेष जानना चाहिए ॥ २२३, २२४ ॥

भावलेश्याओंके स्वरूपका योडेमें संग्रहरूपसे यह गाथा ज्ञान करा देती है—
जह मूलसे वृक्षको काटो, स्कन्धसे काटो, शाखाओंसे काटो, उपशाखाओंसे काटो फलोंको तोड़कर खाओ और वायुमें पतित फलोंको खाओ, इसप्रकारके ये वचन अभ्यन्तर अर्थात् मायेश्याओंके भेदको प्रकट करते हैं ॥ २२५ ॥

निर्णयार्थ—गोमटसार जीवकांडमें उक्त अर्थ इस प्रकारसे स्पष्ट किया गया है कि फलोंसे लूने हुए वृक्षको देवदर कृष्णलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको जड़-मूलसे उगड़कर फलोंको खाना चाहिये । नीलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको स्कन्ध अर्थात् मूलसे ऊपरके भाग को काटकर फलोंको खाना चाहिये । कापोतेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी शाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये । तेजोलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी उपशाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये । पमलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके फलोंको तोड़कर खाना चाहिये । शुक्लेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके वायुमें गिरे हुए फलोंको खाना चाहिये । उक्त प्रकारके भावोंसे छोड़ो लेश्याओंके आपत्तको जान लेना चाहिये ।

१ 'गिन्ना पुन' इति स्थाने 'आ, ऋ' प्रथो 'गोलापन' इति पाठ । 'ज' प्रता 'गोलापण' इति पाठ ।

२ ५२५ १, १८६, १८६ (दि स्मल्लिनि)

३ निष्ठा-अनुपुण विभु भित्तु पडिदाई । पाउ क्काइ इदि ज मनेण वण इवे वम्म ॥
को गो. ५०८.

तेऊ तेऊ तेऊ पम्मा य पम्म-सुक्का य ।

सुक्का य परमसुक्का लेस्ससमासो मुणेयव्भो' ॥ २२६ ॥

तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं च तेरसण्ह च ।

एत्तो य चोइसण्हं लेस्स भेदो मुणेयव्भो' ॥ २२७ ॥

एश्व परिहारो उच्यते—ण ताव एदाओ गाहाओ तो पक्खं सोहंति, उभय-पक्ख-साधारणादो । ण तो उच्च-जुत्ती वि घडेदे, ण ताव अपज्जत्तकालभावलेस्समणुहरइ दव्व-लेस्सा, उत्तमभोगभूमि-मणुस्साणमपज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साणं गल्लवण्णाभावापत्तीदो । ण पज्जत्तकाले भावलेस्सं पि णियसेण अणुहरइ पज्जत्त दव्वलेस्सा, छव्विह-भावलेस्सासु परियइत्त-तिरिख-मणुसपज्जत्ताणं दव्वलेस्साए अणियमपसंगादो । धवलवण्ण-वलायाए

तीनके तेजोलेश्याका जघन्य अंश, दोके तेजोलेश्याका मध्यम अंश, दोके तेजोलेश्याका उत्कृष्ट एव पमलेश्याका जघन्य अंश, छहके पमलेश्याका मध्यम अंश, दो के पमलेश्याका उत्कृष्ट एवं शुक्लेश्याका जघन्य अंश, तेरहके शुक्लेश्याका मध्यम अंश तथा चौदहके परमशुक्लेश्या होती है । इस प्रकार तीनों शुभ लेश्याओंका भेद जानना चाहिये ॥ २२६, २२७ ॥

विशेषार्थ—भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क इन तीन जातिके देवोंके जघन्य तेजोलेश्या होती है । सौधर्म और पेशान इन दो स्वर्गवाले देवोंके मध्यम तेजोलेश्या होती है । सानत्कुमार और माहेन्द्र इन दो स्वर्गवाले देवोंके उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पमलेश्या होती है । ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र और महाशुक्र इन छह स्वर्गवालोंके मध्यम पमलेश्या होती है । शतार और सहस्रार इन दो स्वर्गवालोंके उत्कृष्ट पमलेश्या और जघन्य शुक्लेश्या होती है । आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ त्रैवेयक इन तेरह विमानवालोंके मध्यम शुक्लेश्या होती है । इसके ऊपर नौ अनुदिश और पांच अनुतर इन चौदह विमान-वालोंके उत्कृष्ट या परमशुक्लेश्या होती है ।

समाधान—शंभकारकी पूर्वोक्त शंकाका अब परिहार कहते हैं—उपर कही गई ये गाथाएं तो तुम्हारे पक्षको नहीं साधन करती हैं, क्योंकि, वे गाथाएं उभय पक्षमें साधारण अर्थात् समान हैं । और न तुम्हारी कही गई युक्ति भी घटित होती है । जिसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—द्रव्येश्या अपर्याप्तकालमें होनेवाली भावलेश्याका तो अनुकरण करती नहीं है, अन्यथा अपर्याप्तकालमें अशुभ तीनों लेश्यावाले उत्तम भोगभूमिया मनुष्योंके गौर वर्णका अभाव प्राप्त हो जायगा । इसीप्रकार पर्याप्तकालमें भी पर्याप्त-जीवसंबन्धी द्रव्येश्या भाव-लेश्याका नियमसे अनुकरण नहीं करती है, क्योंकि, वैसा मानने पर छह प्रकारकी भाव-लेश्याओंमें निरन्तर परिवर्तन करनेवाले पर्याप्त तिर्यच और मनुष्योंके द्रव्येश्याके अनियम-

१ गा जी. ५३५ पर तन वतुर्धवणस्त्वयम्—' मवणत्तिपा पुण्णगे अहुरा' । मत्तिपु प्रथमपत्तो ' तेउ तेउ तह तेऊ पम्म पम्मा य' इति पाठ

२ गो. जी. ५३४. पर तन वतुर्धवणस्त्वयम्—' लेस्सा मयप्पादिस्साण' ।

भातदो मुक्कलेस्मपस्यंभादो । आहारमरीगणं धवलवण्णाणं विग्गहमादि-डिय-यव्वजीवाणं धवलवण्णाणं भातदो मुक्कलेस्मवचीदो चेत् । किं च, दव्वलेस्सा पापं वण्णाणामरुम्मो-दयादो भवति, ण भावलेस्सादो । ण च दोण्हमेगत्तं पापं, वण्णाणामं-मोहीयाणं अयादि-पादीणं पोगल-जीविवासीणं एगत्त-विरोहादो । विम्मसोवचयवण्णो भावलेस्सादो भवति, ओरालिय नेउच्चिय-आहारमरीगणं वण्णा वण्णाणामरुम्मोदो भवति, अंदो ण एम दोगो । उट्ठि ण, 'चंडो ण मुयदि वेरं' इच्चदि-वाहिरकज्जुप्पायणे ट्ठिदिचेत्रे पंदसबंधे च भातलेस्सा वापार-इंशणादो । अंदो दव्वलेस्साए ण कारणं भावलेस्सा चि सिद्धं । तदो वण्णाणामरुम्मोदयादो भवणात्तामिय-वाणवत्त-जोडसियाणं दव्वदो छ लेस्साओ भवति, उवरिमेटाणं तेउ-पम्म-मुक्कलेस्साओ भवति । पंच-वण्ण-रस-कागस्स कसण-वमग्गो व्य एगवण्ण-वाहार विरोहाभातदो । भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया

पले का प्रत्या प्राप्ता हो जायगा । और यदि द्रव्यलेखाके अनुरूप ही भावलेख्या मानी जाय, तो धवल-वर्णवाले मुक्कलेके भी भावसे शुद्धलेख्याका प्रसंग प्राप्त होगा । तथा धवलवर्णवाले आहारक मरीगणों के और 'पल्लवर्णवाले विग्रहगणितं वियमान सभी जीवोंके भावकी अपेक्षासे शुद्धलेख्याकी प्राप्ति प्रायः होगी । दूसरी बात यह भी है कि द्रव्यलेख्या वर्णनामा नामकर्मके उदयसे उत्पत्ती नामलेख्यासे नहीं । इसलिये देवोंके लेख्याओंको एक कह नहीं सकते क्योंकि, अद्यावतिया और पुनर्विपत्ती वर्णनामा नामकर्म, तथा ध्यातिया और जीवविपत्ती (चारित्र्य) मोहनीय कर्म इन दोनोंकी परतारमें विरोध है । यदि कहा जाय कि कर्मके विन्मसोपचयका वर्ण तो भावलेख्यासे होता है, और औपचारिक, वैकल्पिक, आहारकमरीगणोंके वर्ण वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होते हैं, इसलिये हमारे कथनमें यह उक्त शेष नहीं आता है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, 'कृण्वेच्छ्यानात्त जीव चउकर्मो होता है, वेर नहीं छोटता है' इत्यादि रूपसे देखा जाता है, इसलिये यह बात विद्वद्दो की है कि भावलेख्या द्रव्यलेख्याके होनेमें कारण नहीं है । इसप्रकार उक्त विरोधमें यह फलितार्थ निकला कि वर्णनामा नामकर्मके उदयसे भावनामी, वाच्यवत्तर और ज्योतिषी देवोंके द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेख्याएँ होती हैं, तथा भावनाकर्मके उदयसे देवोंके तेज, एग और शुद्ध लेख्याएँ होती हैं । जैसे पांचा वर्ण और पांचों रसवाले फलके अथवा पांचों वर्णवाले रसोंसे युक्त फलके कृष्ण व्यापदेश देखा जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक मरीगणमें द्रव्यसे छहों लेख्याओंके होने पर भी एक वर्णवाली लेख्याके व्यक्तहार कर्ममें कोई विशेष नहीं आता है ।

१ अर्थात् 'वर्णनामा' इति पाठो नास्ति ।

अभवसिद्धिया, छ राममत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरवज्जुत्ता होति अणागारु-वज्जुत्ता वा" ।

तेसिं चैव अपञ्चत्तानं भण्णमाणे अरिय तिण्णिण गुणङ्काणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवपदी, पंचिदियजादी, तनकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणणेण विणा पंच गाण, असंजसो, तिण्णिण दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भाणेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अवसिद्धिया, सम्मा-मिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागरवज्जुत्ता होति अणागारुवज्जुत्ता वा" ।

द्रव्यलेख्या आलापके आगे भावसे तेज, पञ और शुद्धलेख्याएँ, भव्यलिटिक, अव्यव-सिद्धिक, छहों रसवत्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्ध्वी देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्पादृष्टि और अविस्तसम्पादृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक सती-अपर्याप्त जीवरासाय, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सजाए, देवगति, पचेन्द्रियजाति, वसकाय, वैकल्पिकानिग्रि और कर्मण ये दो योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कपाय, विश्रगजातके विना पान जल, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुद्ध लेख्याएँ, भावसे छहों लेख्याएँ, भव्यसिद्धिक, अव्यवसिद्धिक, सम्पागिमथ्यात्वेके विना पान सम्यक्त्व, जैतिक, आहारक, अनाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ११२ देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ग | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | ने | क | हा | मय | द | ले | म | म | ग | मि | आ | उ |
| ६ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | २ | ४ | ६ | २ | ३ | ७ | ६ | ७ | ६ | १ | १ | २ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज |

नं. ११३ देवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ग | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | ने | क | हा | मय | द | ले | म | म | ग | मि | आ | उ |
| ६ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | २ | ४ | ६ | २ | ३ | ७ | ६ | ७ | ६ | १ | १ | २ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा |
| म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज | ज |

देव-मिच्छाद्वीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजदी, तमसाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारवजुत्ता हंति अण्णागारवजुत्ता वा^१ ।

तेमिं चेव पञ्चत्तार्णं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सब्धी-पर्याप्त और सब्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण; चारों संप्राण, वेगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों पवनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, तीनों अन्नान, असंजम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो द्रव्य, द्रव्यसे छहों लेस्याप, भावसे तेज, पम और शुक्र लेस्याप भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक; मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सब्धी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संप्राण, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, तीनों अन्नान, असंजम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो द्रव्य, द्रव्यसे छहों लेस्याप, भावसे तेज, पम और शुक्र लेस्याप भव्यसिद्धिक,

नं. १३३ मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| स | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| इ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| उ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

आहारिणो, सागारवजुत्ता हंति अण्णागारवजुत्ता वा^१ ।
तेमिं चेव अपञ्चत्तार्णं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजदी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारवजुत्ता हंति अण्णागारवजुत्ता वा^१ ।

देव सासणसम्महाडीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सब्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संप्राण, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, कुमति और कुथुत ये दो अन्नान, असंजम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो द्रव्य, द्रव्यसे सापोत और शुक्र लेस्याप, भावसे छहों लेस्याप, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सासादनसम्म्यदृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादत्त गुणस्थान,

नं. १३४ मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| स | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| इ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| उ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

नं. १३५ मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| स | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| इ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| उ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

तेसिं चैव पञ्चत्वारिंशत् भण्णमाणे अस्थि चत्वारि गुणद्वयाणि, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्वारिंशत्, दस पाण, चत्वारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गन जोग, दो वेद, चत्वारि कसाय, छ पाण, असंजम, तिणि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहणिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता हति अणारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्तारं भण्णमाणे अस्थि दो गुणद्वयाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्वारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

उर्द्धा भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुण स्थान, एक सर्वापर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दसों प्राण, चारों सज्ञा, देवगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिकक्राययोग ये नौ योग, नपुसकवेदके विना दो वेद, चारों कसाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान थे छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याण, भावसे जघन्य तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संधिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धा भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, और सासादनसम्पदृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संशी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सज्ञाएँ, देवगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियिकक्राययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुसकवेदके विना दो वेद, चारों कसाय, कुमति और कृत्यत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और श्रवण ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुलु लेख्याएँ, भावसे कृण, नील और कापोत लेख्या. भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासा-

नं. १५३ भवनत्रिक देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| नी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

अहारिणो अणारुवजुत्ता हति अणारुवजुत्ता वा ।
भवणतामिय-वाणवत्तर-जोइसियाणं भण्णमाणे अस्थि चत्वारि गुणद्वयाणि, दो जीवसमासो, छ पञ्चत्वारिंशत्, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एमारुह जोग, दो वेद, चत्वारि कसाय, छ पाण, असंजम, तिणि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहणिया तेउलेस्साओ जहण्णा आहारिणो अणारुवजुत्ता हति अणारुवजुत्ता वा ।

साकारोपयोगी अंतर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

भवनगासी, ज्ञानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सर्वापर्याप्त और संशी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया; दसों प्राण, सात प्राण, चारों समाणं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिकक्राययोग, वैक्रियिकक्राययोग और कार्मणकाययोग ये नौ योग, नपुसकवेदके विना दो वेद, चारों कसाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान थे छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ, भावसे अपर्याप्त-कालकी अपेक्षा कृण, नील और कापोत लेख्या. तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संधिक, आहारक, अनाकारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १५२ अनयतसम्पदृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| नी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

नं. १५३ भवनत्रिक देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| नी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

भवणमासिय-चाणवेत्तर-जोइसियदेवमिच्छाइहीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णानं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि देवगणी, असलमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्हणील-काउलेस्सा जहण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

एन ये दो सम्मत्त, संत्तिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिथ्यादृष्टि भयनवासी, वातव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सत्ती-पर्याप्त और सत्ती-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छद्मों पर्याप्तियां, छद्मों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैश्विककाययोग, वैश्विकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग नपुंसकवैके विना दो वेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चन्द्रु और अचन्द्रु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छद्मों लेस्यापं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा दृग्ग, नील और कापोतेलेस्या, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा जघन्य तेजोलेस्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं १५५ भवन्त्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| यु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | रु | यो | वे | क. | जा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | स. | स. | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

नं. १५६ भवन्त्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| यु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | रु | यो | वे | क. | जा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | स. | स. | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहणिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

'तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णानं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो

अन्दी भवन्त्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सत्ती-पर्याप्त जीवसमास, छद्मों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैश्विक काययोग ये नौ योग, नपुंसकवैके विना दो वेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चन्द्रु और अचन्द्रु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छद्मों लेस्यापं, भावसे जघन्य तेजोलेस्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्दी भवन्त्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सत्ती-अपर्याप्त जीवसमास, छद्मों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैश्विकमिश्रकाययोग और कार्मण-

नं १५७ भवन्त्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| यु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | रु | यो | वे | क. | जा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | स. | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

नं. १५८ भवन्त्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| यु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | रु | यो | वे | क. | जा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | स. | स. | आ. | उ. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

ज्ञान, दो वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-
नेम्मा, भावेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, मण्णिणो,
आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अण्णागारुवजुत्ता वा ।

भण्णमभिय वाणवंतर-जोइसियेदेव-सासणसम्महाड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुण-
द्वानं, दो जीमममासा, छ पत्तचीओ छ अपज्जतीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्वारि
मण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्वारि कसाय,
तिण्णिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्सा
जइण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो,
सागारुवजुत्ता हति अण्णागारुवजुत्ता वा ।

काययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो
अज्ञान, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुल्ल लेश्यापं,
भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्यापं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक,
आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मासादनसम्यग्दष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिक देवोंके सामान्य आलाप
कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, सब्ही पर्याप्त और सब्ही-अपर्याप्त ये दो जीवसमास,
छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों सन्नापं, देवगति, पंचे-
न्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिकमिश्र-
काययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय,
तीनों भ्रान्त, असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्यापं, भावसे
अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेश्यापं; तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा
अल्प तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक;
साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १५२. भवनत्रिक सासादनसम्यग्दष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|-----|----|----|-------|------|---|---|-----|-----|-------|
| शु | जी | प | ना | सा | ग | ३ | का | यो | वे | क | मा | सय | द | ले | म | स | सति | आ. | उ. |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | २ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ
पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, षव जोग,
दो वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ,
भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-
वजुत्ता हति अण्णागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ
अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्वारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग,
दो वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा,
भावेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणा-

उन्हीं सासादनसम्यग्दष्टि भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—
एक सासादन गुणस्थान, एक सब्ही पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों
सन्नापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रि-
यिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम,
चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्यापं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या, भव्य-
सिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-
पयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दष्टि भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—
एक सासादन गुणस्थान, एक सब्ही-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण,
चारों सन्नापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग
ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान,
असंयम, चञ्चु और अचञ्चु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुल्लेश्यापं, भावसे कृष्ण,
नील और कापोत लेश्यापं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक,

नं. १६०. भवनत्रिक सासादनसम्यग्दष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|-----|----|----|-------|------|---|---|-----|-----|-------|
| शु | जी | प | ना | सा | ग | ३ | का | यो | वे | क | मा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | २ | ४ | ३ | १ | २ | २ | २ | १ | १ | २ | २ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |
| स | प | ५ | ७ | २ | २ | २ | ५ | ५ | ५ | असा | अस | अस | चञ्चु | अ. ५ | ४ | २ | १ | आहा | साज्ञ |

हृत्पिणो, सागारुञ्जुता ह्येति अणारुञ्जुता वा” ।

भगवन्नासिय-नाणवतर-जोहसियदेव-सम्मामिच्छाहृत्पिणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणिया तीहि अण्णाणेहि भिम्मणि, असजमो, दो दसण, दव्णेण छ लेस्सा, भावेण जहणिया तेउ-लेस्सा; भग्निद्विया, मम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुञ्जुता ह्येति अणारुञ्जुता वा” ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि भगवन्वासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और शैक्तिरुक्काययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अन्नानोंसे मिश्रित भादिके तीन ज्ञान, असयम, चतु और अचतु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेइया; भयसिद्धिक, सत्यग्निय्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं १६१ भवनात्रिक सासादृतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु. जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प. मा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| व. जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| व. सा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

नं. १६२

भवनात्रिक सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु. जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प. मा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| व. जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| व. सा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

भगवन्नासिय-नाणवतर-जोहसियदेव-असंजदसम्महृत्पिणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्णेण छ लेस्सा, भावेण जहणिया तेउलेस्सा; भग्निद्विया, खइय-सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुञ्जुता ह्येति अणारुञ्जुता वा” ।

एसो इत्थि-पुरिसवेदानमोघालावो समत्तो । एवं चैव पुरिसवेदस्स वत्तवं । णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ पुरिसवेदो एकको चैव ठवेदव्वो । एवं चैव इत्थिवेदिणं भणं काळण वत्तवं । णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ इत्थिवेदो चैव ठवेदव्वो ।

अस्यत्तसम्यग्दृष्टि भगवन्वासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहने पर— एक अविरत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और शैक्तिरुक्काययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेइया, भव्य-सिद्धिक, शैक्तिरुक्काययोगके विना दो सम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसप्रकार भवनात्रिक स्त्रीवेदी और पुरुषवेदीयोंके सम्युक्त सामान्य आलाप समाप्त हुए । इसीप्रकार भवनात्रिक देवोंमें पुरुषवेदके आलाप कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि ऊपर जहाँ भवनात्रिक देवोंके सामान्य आलापमें दो वेद स्थापित किये गये हैं, वहाँ एक पुरुषवेद ही स्थापित करना चाहिये । इसीप्रकार भवनात्रिक देवोंमें स्त्रीवेदका आश्रय करके आलाप कहना चाहिये । विशेष बात यह है कि पहले जहाँ सामान्य आलापमें दो वेद स्थापित किये गये हैं, वहाँ एक स्त्रीवेद ही स्थापित करना चाहिये ।

विशेषार्थ—ऊपर जो भवनात्रिक देवोंके आलाप कह आये हैं, वे सामान्यालाप हैं । उनमें पुरुषवेद और स्त्रीवेदका भेद नहीं किया गया है । परन्तु उन्हीं आलापोंमें दो वेदके

नं. १६३

भवनात्रिक असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु. जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प. मा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| व. जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| व. सा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

मोघमीमाण्डेवर्णं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वयाणि, दो जीवसमासा, छ पत्तीओं उ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एसाह जोग, दो वेद, चत्तारि कमाय, छण्णण, असंजम, तिण्णि दंसण, दवेण काउ-मुक्क-मड्डिसमतेउलेस्सा, भवेण मड्डिसमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, छ सम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो, अणहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणगारु-तुत्ता मा" ।

तेपि नेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वयाणि, एओ जीवसमासो, छ पत्तीओं. दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, स्थानम केवल पुणवेद या केवल स्त्रीवे इत्येव प्रकार एक वेदके स्थापित कर देने पर वे आलाप पुकरेयी और रविदेरी भवनत्रिकके हो जाते हैं । भवनत्रिकके सामान्य आलापसे विशेष गानाओंमें इससे अधिक और जोई विशेषता नहीं है ।

सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सर्वा पर्याप्त और मन्त्री अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, वशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैकृतिककाययोग, वैकृतिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसक-वेदके विना दो वेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्र और मध्यम तेजोलेख्या, भावसे मध्यम तेजोलेख्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक; नाकारोपयोगी और अनात्तोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुण-स्थान, एक मन्त्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकृतिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कमाय, कुमाते, कुशुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मित्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व होते हैं । यहां पर औपशमिकसम्यगत्य होनेका कारण यह है कि औपशमिकसम्यग्त्वके साथ उपशम श्रेणीमें मरे हुए संयतोफी अपेक्षा सौधर्म आदि ऊपरके देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यगत्य पाया जाता है ।

१ गिप ' २५५ काउ-मुक्क-मडा गडिजमा तेउलेस्सा भाणेण ' इति पाठ ।

नं. १६३ सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---------|---------|------|-------|------|---|---|---|----|-----|-------|
| गु | जी | प | प्रा | म | ग | १ | का | यो | वे | क | गा | सप | द | ले | म | म | ग | मि | जा | उ |
| ४ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | ४ | ६ | १ | ३ | ३ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | ८ | | | | | | ६ | ४ | ४ | ४ | गान.३ | अस.३ | के.द. | का. | म | स | २ | २ | आहा | साका. |
| मा. | ८ | | | | | | ६ | ४ | ४ | अप्रा ३ | अप्रा ३ | विना | विना | तेज. | अ | | | | अना | अना |
| म | | | | | | | | ३ | ३ | | | | | | | | | | | |
| उ. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

दो वेद, चत्तारि कमाय, छण्णण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-मवेहि मड्डिसमा तेउ-लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणगारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणद्वयाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कमाय, पंच पाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दवेण काउ-मुक्क-लेस्सा, भवेण मड्डिसमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं । उवसमसम्मत्तेण सह उवसमसेडिस्सिह मद्-संजदे पडुच्च सोधम्मादि-उवरिम-देवाणमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लभदि । सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारु-

योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे और भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिद्व्याहृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक सर्वा-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकृतिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कमाय, कुमाते, कुशुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मित्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व होते हैं । यहां पर औपशमिकसम्यगत्य होनेका कारण यह है कि औपशमिकसम्यग्त्वके साथ उपशम श्रेणीमें मरे हुए संयतोफी अपेक्षा सौधर्म आदि ऊपरके देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यगत्य पाया जाता है ।

नं. १६४ सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---------|---------|------|-------|------|---|---|---|----|-----|-------|
| गु | जी | प | प्रा | म | ग | १ | का | यो | वे | क | गा | सप | द | ले | म | म | ग | मि | जा | उ |
| ४ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | ४ | ६ | १ | ३ | ३ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| मि. | ८ | | | | | | ६ | ४ | ४ | ४ | गान.३ | अस.३ | के.द. | का. | म | स | २ | २ | आहा | साका. |
| मा. | ८ | | | | | | ६ | ४ | ४ | अप्रा ३ | अप्रा ३ | विना | विना | तेज. | अ | | | | अना | अना |
| म | | | | | | | | ३ | ३ | | | | | | | | | | | |
| उ. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेसि चैव पञ्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हंति अण्णागारुवजुत्ता वा^१ ।

तेसि चैव अपञ्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुद्धमलेस्सा, भवेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो, आहारिणो

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संघाएँ, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों कर्मणकाययोग और वैकियिक-काययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संघाएँ, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कषय, कुमति और कुयुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और गुरु लेख्याएँ, भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं. १६८ मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|---|----|---|----|----|-----|----|-------|----|--------|----|----|-----|----|------|
| गु | जी | प | मा | स | ग. | इ | का | यो | के. | क | सा. | द | ले | म. | स. | सि. | आ. | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि. | म.प | प. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | अज्ञा | अप | चक्षु. | मा | म | मि. | सं | साका |
| | | | | | | | | | | | | अच | तेज. | अ | | | | अना. |

उत्तुत्ता हंति अण्णागारुवजुत्ता वा^१ ।
 मोधम्मिमाणदेव-मिच्छादृष्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुद्धमलेस्सा, भवेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारुवजुत्ता हंति अण्णागारुवजुत्ता वा^१ ।

सव्यक्त्य आलापके भागे सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और सन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संघाएँ, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों मननयोग, वैकियिककाययोग, वैकियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कषय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, गुरु और मध्यम तेजोलेख्या, भावसे मध्यम तेजोलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १६९ सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|---|----|---|----|----|-----|-------|-----|--------|------|----|-----|-----|------|----|
| गु | जी | प | मा | स | ग. | इ | का | यो | के. | क | सा. | द | ले | म. | स. | सि. | आ. | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि. | म.प | प. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | अज्ञा | अप | चक्षु. | मा | म | मि. | सं | साका | |
| | | | | | | | | | | | | अच | तेज. | अ | | | अना. | |

^१ मीठुण ' इत्थेण काउ सुद्धेस्सा ' इति पाठ ।

नं. १७० मिथ्यादृष्टि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|---|----|---|----|----|-----|-------|-----|--------|------|----|-----|-----|------|----|
| गु | जी | प | मा | स | ग. | इ | का | यो | के. | क | सा. | द | ले | म. | स. | सि. | आ. | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| मि. | म.प | प. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | अज्ञा | अप | चक्षु. | मा | म | मि. | सं | साका | |
| | | | | | | | | | | | | अच | तेज. | अ | | | अना. | |

अणाहारिणो, सागारभुजा इति अणागारभुजा वा" ।

सौचमीमाण-नामणसम्मद्वीणं भणमणो अत्थि एयं गुणट्टाणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सच पाण, चचारि सणा, देवगदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चचारि कसाय, तिणिण अण्णाण, अंसंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कमतेउलेस्सा, भावण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारभुजा इति अणागारभुजा वा" ।

पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सासादनसम्पद्वष्टि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संकी पर्याप्त और संकी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैकिक्रियक्रियायोग और कार्मण-काययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुल और मध्यम तेजोलेस्या, भावसे मध्यम तेजोलेस्या; भव्यवित्तिक, सासादनसम्पत्त्व, मत्तिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १६२

मिथ्याद्वष्टि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | |
|------------|-------------|-------|--------|--------|---------|--------|-------|----------|-------|
| गु. जी. प. | प. प्रा. म. | ग. उ. | का. यो | वे. क. | सा. सय. | द. ले. | म. स. | सति. भा. | स. उ. |
| १. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |
| २. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |
| ३. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |

नं. १७०

सासादनसम्पद्वष्टि सौधर्म पेशान देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | |
|------------|-------------|-------|--------|--------|---------|--------|-------|----------|-------|
| गु. जी. प. | प. प्रा. म. | ग. उ. | का. यो | वे. क. | सा. सय. | द. ले. | म. स. | सति. भा. | स. उ. |
| १. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |
| २. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |
| ३. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |

तेमिं चैव पज्जत्ताणं भणमणो अत्थि एयं गुणट्टाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चचारि सणा, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णर जोग, दो वेद, चचारि कसाय, तिणिण अण्णाण, अंसंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारभुजा इति अणागारभुजा वा" ।

"तेमिं चैव अपज्जत्ताणं भणमणो अत्थि एयं गुणट्टाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सच पाण, चचारि सणाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, अंसंजम, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्केस्सा,

उन्हीं सासादनसम्पद्वष्टि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संकी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैकिक्रियक्रियायोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेस्या, भव्यवित्तिक, सासादनसम्पत्त्व, मत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्पद्वष्टि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संकी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकिक्रियक्रियायोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, कुमति और कुद्रुत ये दो

नं. १७२ सासादनसम्पद्वष्टि सौधर्म पेशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | |
|------------|-------------|-------|--------|--------|---------|--------|-------|----------|-------|
| गु. जी. प. | प. प्रा. म. | ग. उ. | का. यो | वे. क. | सा. सय. | द. ले. | म. स. | सति. भा. | स. उ. |
| १. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |
| २. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |
| ३. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |

नं. १७२ सासादनसम्पद्वष्टि सौधर्म पेशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | |
|------------|-------------|-------|--------|--------|---------|--------|-------|----------|-------|
| गु. जी. प. | प. प्रा. म. | ग. उ. | का. यो | वे. क. | सा. सय. | द. ले. | म. स. | सति. भा. | स. उ. |
| १. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |
| २. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |
| ३. १. ५ | १०. ४ | १ | १. १ | २. ४ | ३. १ | २. १ | २. १ | १. १ | २. २ |

पुरिमवेदो बुद्धो त्वय इत्थिवेदो चेव वत्त्वो । असंजदसम्माद्विस्स इत्थिवेदमिह उप्पत्ती
णत्थि ति तस्स पञ्चत्तालो एक्को चेव वत्त्वो । पञ्चत्तालवे उच्चमाणे वि खइयसम्पत्तं
णत्थि ति वत्त्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस लवणाभावो । एत्थिओ चेव विसेतो ।

सप्तकुमार-मार्हिदेवानं भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वणाणि, दो जीवसमासा,
छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, देवगदी,
पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिमवेद, चत्तारि कसाय, छ णण, असंजम,
तिणिण दंसण, दब्बेण काउ सुक्क-उक्कस्सतेउ-जहणपम्मलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-
जहणपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो
अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हँति अणागारुजुत्ता वा” ।

पुरुरवेदी देवोंके आलापोंमें जहां पुरुरवेद कहा गया है वहां केवल स्त्रीवेद ही कहना चाहिए।
यहां इतना और समझना चाहिए कि असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंकी स्त्रीवेदमें उत्पत्ति नहीं
होती है, इसलिये स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टिका एक पर्याप्त-आलाप ही कहना चाहिए। और
पर्याप्त-आलाप कहते समय भी क्षयिक सम्यक्त्व नहीं होता है, अर्थात् स्त्रीवेदी पर्याप्तोंके
(देवियोंके) दो ही सम्यक्त्व होते हैं, येना कहना चाहिए; क्योंकि, देवोंमें दर्शनमोहनीय कर्मके
संज्ञका अभाव है। सौधर्म और तेरातके पुरुरवेदी और स्त्रीवेदी आलापोंमें उनके सामान्य
आलापोंसे इतनी ही विशेषता है।

सनत्कुमार और मोहेन्द्र स्वर्गोंके देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार
गुणस्थान, मंत्री पर्याप्त और मंत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्या
प्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों
मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिकमित्रकाययोग, वैक्रियिकमित्रकाययोग और कामणकाययोग
ये ग्यारह योग; पुरुरवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,
असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्र लेश्यापं तथा पर्याप्त
कालमें उरुष्ट पीत और जघन्य पमलेश्या, भावसे उरुष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पमलेश्या;
भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी
और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ मंत्रि ' उक्कस्सतेउ ' इति पाठो नास्ति

नं. १७७ सानत्कुमार मोहेन्द्र देवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|----|----|---|---|-------|---|----|
| गु. | जी | प | प्रा | म | ग | ङ | का | यो | वे | क | जा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | २ | २ | २ | ९ | २ | ६ | ५ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | १ | २ |
| मि | सा | प | प | | | | | म | पु | अ | अ | अ | के | के | अ | म | स | आ | सा |
| मा | | | | | | | | क. | ५ | अ | अ | अ | वि | वि | अ | अ | अ | अ | अ |
| स. | | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| प्र | | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

तेसिं चैव पञ्चत्ताणं भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वणाणि, एओ जीवसमासो,
छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव
जोग, पुरिमवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिणिण दंसण, दब्ब-भावेहि उक्कस्स-
तेउ-जहणपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,
सागारुजुत्ता हँति अणागारुजुत्ता वा” ।

तेसिं चैव अपञ्चत्ताणं भणमाणे अत्थि तिणिण गुणद्वणाणि, एओ जीवसमासो,
छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो
जोग, पुरिस वेद, चत्तारि कसाय, पंच णण, असंजमो, तिणिण दंसण, दब्बेण काउ-
सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सतेउ-जहणपम्मलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच

उन्ही सानत्कुमार मोहेन्द्र देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार
गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति,
पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ
योग, पुरुरवेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम,
आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उरुष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पमलेश्या, भव्यसिद्धिक,
अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही सानत्कुमार मोहेन्द्र देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मित्र्या-
दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त
जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां; सात प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय,
वैक्रियिकमित्रकाययोग और कामणकाययोग ये दो योग, पुरुरवेद, चारों कपाय, कुमति
और कुथुत ये दो अज्ञान तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन
दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेश्यापं, भावसे उरुष्ट तेज और जघन्य पम लेश्यापं, भव्य-
सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मित्र्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, अना-

नं. १७८ सानत्कुमार मोहेन्द्र देवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|----|----|---|---|-------|---|----|
| गु. | जी | प | प्रा | म | ग | ङ | का | यो | वे | क | जा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | २ | २ | २ | ९ | २ | ६ | ५ | १ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | १ | २ |
| मि | सा | प | प | | | | | म | पु | अ | अ | अ | के | के | अ | म | स | आ | सा |
| मा | | | | | | | | क. | ५ | अ | अ | अ | वि | वि | अ | अ | अ | अ | अ |
| स. | | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| प्र | | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

मम्मत्तं, गणिकां, अहागिणो अगाहुरिणो, गगारुजुत्ता ह्येति अणगारुजुत्ता वा” ।

संपदि मिञ्जडडिपपट्टि जात्र अमंजडमम्माडिडि ति ताव चटुहं गुणह्णानं सोधम्म-भंगो । गपरि उरि मच्चरथ इत्थिनेदो णत्थि, पुरिसवेदो चेव वत्तवो । ओधा-लो भण्णमाणं दब्बेण काउ-सुक्क-उत्तमत्तेउ-जहणपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ । भावेण उत्तमत्तेउ-जहणपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ । पज्जत्तकाले दब्ब-भवेहि उत्तमत्तेउ-जहणपम्मलेस्साओ । तेमिं चेप अपज्जत्तकाले दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उत्तमत्तेउ-जहणपम्मलेस्साओ ति चेन विसेयो ।

बम्ह-बम्हत्तर-लत्तंत्तं कापिट्ट सुक्क-महासुक्क-त्तक-पदेवाणं सणक्कुमार-भंगो । गपरि माग्गणेण भण्णमाणे दब्बेण काउ-सुक्क-मच्चिमपम्मलेस्साओ, भवेहि मच्चिममा पम्म-लेस्सा । पज्जत्तकाले दब्ब-भवेहि मच्चिममा पम्मलेस्सा । अपज्जत्तकाले दब्बेण

त्तक-सात्तरोपयोगी आंर अत्तात्तारोपयोगी दोते हैं ।

सातकुमार माटेन्ट देवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्पददृष्टि गुणस्थान तक चारों गुणस्थानोंके आलाप सोधमें देवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए । विशेषता केवल इतनी है कि ऊपर सभी रूपोंमें स्विदे नहीं है, अतः एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए उनमें भी ओयालाप करते समय द्रव्यसे कापोत, शुरु, उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेख्यां करना चाहिए । भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेख्यां कठना चाहिए । पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेख्यां होती हैं । उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुरु लेख्यां और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेख्यां होती हैं, इतनी विशेषता है ।

ग्राम श्लोत्तर, लान्तव-कापिट्ट और शुरु-महाशुरु कल्पवासी देवोंके आलाप सान्तक-दुग्धर देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए । विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप करने पर—द्रव्यसे कापोत शुरु और मध्यम पद्म लेख्या होती है, तथा भावसे केवल मध्यम पद्मलेख्या होती है । उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम पद्मलेख्या होती है ।

नें २७९. सातकुमार माटेन्ट देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मच्चिममा पम्मलेस्सा । एत्थियसेत्तां चेव विसेयो । सदार-सहस्सत्तरकप्पदेवाणं वम्हलोय-भंगो । गपरि सामणेण भण्णमाणे दब्बेण काउ-सुक्क-उत्तमत्तेउ-जहणपम्मलेस्साओ, भावेण उत्तमत्तेउ-जहणपम्मलेस्साओ । पज्जत्तकाले दब्ब-भवेहि उत्तमत्तेउ-जहणपम्मलेस्साओ । अपज्जत्तकाले दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उत्तमत्तेउ-जहणपम्मलेस्साओ । आणद-पाणद-आरणच्चुद-सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर सुबुद्ध-सुविसाल-सुमण-मउमणस-पीदिकरिमिदि एदेसिं चटु-णव-कप्पणं सदार-सहस्सत्तर-भंगो । गपरि सामणेण भण्णमाणे दब्बेण काउ-सुक्क-मच्चिममा सुक्कलेस्साओ, भावेण मच्चिममा सुक्कलेस्सा । पज्जत्तकाले दब्ब-भवेहि मच्चिममा सुक्कलेस्सा । अपज्जत्तकाले दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मच्चिममा सुक्कलेस्सा ।

‘अच्चि-अच्चिमालिणी-नइ-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च-विजय-उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुरु लेख्या तथा भावसे मध्यम पद्मलेख्या होती है । इतनीमात्र ही विशेषता है ।

शतार और सहचार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए । विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुरु, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुरु लेख्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुरु लेख्याएं होती हैं । उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुरु लेख्याएं होती हैं । उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुरु लेख्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुरु लेख्याएं होती हैं ।

आनत-प्राणत, आरण-अच्युत तथा सुदुर्दान, अमोघ, सुबुद्ध, यशोधर, सुविक्र, सुविराल, सुमनस और प्रीतिकर इन चार और नौ इस प्रकार तैरह कर्तव्योंके आलाप शतार-सह-चार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए । विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुरु और मध्यम शुरु लेख्याएं होती हैं, तथा भावसे मध्यम शुरुलेख्या होती है । उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुरुलेख्या होती है । उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुरु लेख्याएं तथा भावसे मध्यम शुरुलेख्या होती है ।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन १ ‘गमद’ इति पाठ । त रा वा. पु. १६७.

२ अर्चा य अर्चिमालिणि बहरे वइरोयणा अणुदिसणा । सोमो य सोमल्ले उके फलिके य आरेवे ॥ नि सा. ४५६ तनाशुदिसमिमानानि येचेक पुमाडदिलो नाम विमानस्तार । तत्र दिक्षु विदधु चत्वारि चत्वारि श्रेणविमानानि । प्राच्या दिशि अर्चिमान, अपाच्यामर्चिमाळी, प्रतीच्या वैरोचन, उदीच्या प्रमात, म ये शादि-त्यास्य । विदधु पुच्यकर्णकानि चत्वारि । पूर्वदिक्षुस्यामर्चिम । दक्षिणपस्या अर्चिर्मेध । अपरोत्तरां अर्चिर्वावर्त । उत्तरपूर्वस्यामर्चिर्निधिष्ठ । त. रा. वा पु. १६७. इति तन्त्रप्रथमेषु जनुदिसमिमानानामुत्पत्तौ नास्ति ।

दंशमोन्वयमणजोगपरिणामेति तस्य नियमेण होद्वयं, मणुस्स-संज्ञम-उत्रसमसेडिसमा-
द्वयजोगचेणेहि भेददंसणादौ । उवयमसेडिमिह कालं कालजुवसमसमत्तेण सह देवे-
सुपणजीता ण उवयमसमत्तेण सह छ पञ्चतीओ समणेति, तथतणुवसमसमत्ते-
कालादौ छ-पञ्चत्तीणं ममाणकालस्स चहुवुलंभादौ । तस्मा पञ्चत्तकाले ण एदेषु
द्वोगु उवयमसमत्तेण चि मिदं । मणिणो, आहारिणो, सागारुवजुता हँति

अनुविग आ अनुत्तर विमानवासी देवोंमें नियमने दोना चाहिए । जो भी कहना युक्ति-सगत
नहीं है, क्योंकि, मयमजो वारण करते ही तथा उपशमप्रेणीके समारोहण आदिकी योग्यता मनु-
ष्योंके ही होनेके कारण अनुविग और अनुत्तर विमानवासी देवोंमें और मनुष्योंमें भेद देखा जाता
है । तथा उपशमप्रेणीमें मरण करके औपशमिक सस्यत्वके साथ देवोंमें उत्पन्न होतेवाले जीव
औपशमिक सस्यत्वके साथ उद्द पर्याप्तियोंको समाप्त नहीं करते हैं, क्योंकि, अपर्याप्त
प्रस्यत्वमें तेनेवाले औपशमिक सस्यत्वके जालवे छहों पर्याप्तियोंके समाप्त होनेका काल
अधिक पाया जाता है, इसलिए यह बात सिद्ध हुई कि अनुविग और अनुत्तर विमानवासी
देवोंके पर्याप्तकालमें औपशमिक सस्यत्व नहीं होता है ।

विशेषार्थ—उपशमसस्यगृष्टि जीव औपशमिक सस्यत्वसे पुन. औपशमिक सस्य-
त्वको मान नहीं होता है किन्तु यदि उसके मिथ्यात्वका उदय हो जावे तो मियादृष्टि हो
जाता है, यदि सशमिगय्यात्तका उदय हो जाने तो सस्यमिगय्यादृष्टि हो जाता है, यदि
सस्यप्रवृत्ति का उदय हो जाने तो वेदकसस्यगृष्टि दो जाता है और यदि अनन्तानुबन्धोंमेंसे
किमी एक प्रवृत्ति का उदय हो जावे तो सासादनसस्यगृष्टि हो जाता है । इस नियमके
नुसार जो अनुविग और पांच अनुत्तरोंमें उत्पन्न हुआ उपशमसस्यगृष्टि जीव फिरसे उप-
शमसस्यगृष्टि तो नष्ट कर नहीं सकता है और मिथ्यात्व गुणस्थान उसके होता नहीं है,
क्योंकि, अत्रितसस्यगृष्टि गुणस्थानको छोड़कर उसके दूसरे कोई गुणस्थान नहीं पाये
जाते हैं, इसलिए मिथ्यात्वसे भी पुनः वह उपशमसस्यत्वको ग्रहण नहीं कर सकता है । वेदक-
सस्यत्वमें कश्चित् उनके उपशमसस्यत्व माना जाय सो ऐसा मानना भी ठीक नहीं है,
क्योंकि, वेदकसस्यत्वसे उपशमप्रेणीके सन्तुन मनुष्योंके ही उपशम (द्वितीयोपशम)
सस्यत्व होता है अन्य गतियोंमें नहीं । तथा पूर्व पर्यायसे आया हुआ उपशमसस्यत्व
अपर्याप्त अवस्थामें ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि, उपशमसस्यत्वके कालसे छह
पर्याप्तियोंके पूरा करनेका काल अधिक होता है । इसप्रकार इतने कथनसे यह निष्कर्ष
निकल कि जो अनुविग और पांच अनुत्तरोंमें उत्पन्न हुआ उपशमसस्यगृष्टि जीव नियमसे
वेदकसस्यगृष्टि ही तो जाता है और जो वेदकसस्यगृष्टि उत्पन्न होता है वह भी अन्त तक

१ शरीर ' उपपत्तीओ ' इति पाठ ।

२ उपशमसस्यगृष्टि मयमेपी चि । अतिष्ठे आमाणो अणअणदकदयदो होदि ॥

३ औपशमिक सस्यत्वके उदये मरणो भवति । तेषां उदयो अणअणदकदयदो होदि ॥

छ स १००, १०२

अणगारुवजुता वा" ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भणममाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ
अपज्जत्तीओ, सच पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचदियजदी, तसकाओ, दो
जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दच्येण काउ-
सुवकलेस्सा, भावेण उक्कस्सिया सुकलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो,
आहारिणो अणगारुवजुता हेति अणगारुवजुता वा" । एवं देवगदी
सिद्धगदीए सिद्ध-भंगो ।

एव गइसगणा समत्ता ।

वेदकसस्यगृष्टि ही रहता है ।

सस्यत्व आलापके अणो ससिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी
होते हैं ।

उन्हीं अनुविग और अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्तकालसेबन्धी आलाप कहने
पर—एक अत्रितसस्यगृष्टि गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवस्थान, छहों अपर्याप्तिया,
सात प्राण, चारों सहाय, देवगति, पचेन्द्रियजाति, तसनाय, चैक्रियकमिश्रतययोग और
कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों काय, आदिके तीन प्राण, असंयम, आदिके
तीन दर्शन, इत्यसे कापोत और शुक्र लेस्यां, भावसे उत्कृष्ट शुक्र लेद्या, भव्यसिद्धिक,
औपशमिक, शायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सस्यत्व, ससिक, आहारक, अनाहारक,
साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं । इसप्रकार देवगतिके आलाप समाप्त हुए ।
सिद्ध गतिके आलाप सिद्धोंके ओघालापके समान जानना चाहिये ।

इसप्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई ।

नं १८१ नव अनुविग और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | शा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | शा | स्य | द | ले | म | म | सा | आ | उ |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं १८२ नव अनुविग और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु | जी | प | शा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | शा | स्य | द | ले | म | म | सा | आ | उ |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

तेसिं चैव पञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पञ्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भोवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अण्णाणारवजुत्ता वा^{२३} ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपञ्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दब्बेण काउ-खुक्कलेस्सा, भोवेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं,

उन्हां सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, वादर-पर्याप्त और सूक्ष्म-पर्याप्त ये दो जीवसमासा, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंभिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हां सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, वादर-अपर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये दो जीवसमासा, चार अपर्याप्तिया, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्यापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याप. भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंभिक,

नं. १८३ सामान्य एकेन्द्रियोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | |
|---------|--------|-------|--------|-----|--------|-----|---------|---------|-----|-------|------|-----|------|
| गु. ति. | प. मा. | म. ग. | इ. मा. | गो. | वे. क. | मा. | स्य. | द. | ले. | म. स. | मति. | आ. | उ. |
| २ | २ | १६ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | २ | १ | १ | २ |
| मि. | मा | प. प. | ति | म. | मि. | मि. | कुम. | अग | म | म. | मि. | अस. | आहा. |
| वृ. प. | | | | | | | कुश्रु. | कुश्रु. | म. | म. | मि. | अस. | आहा. |
| | | | | | | | | | | | | | मना. |

इंदियाणुवादेण अणुवादो मूलोपो । णव्वरि अत्थि अदीदगुणट्ठणानि, अदीद-जीवसमासा, अदीदपञ्जत्तीओ, अदीदपाणा, सिद्धगदी वि अत्थि, अर्णिदिया वि अत्थि, गेव अकाया वि अत्थि, गेव संजदा गेव असंजदा गेव संदजसंजदा वि अत्थि, गेव भवपिद्धिया गेव अभवसिद्धिया अत्थि । एदे आलावा ण वत्तन्वा, सिद्धाणमेइंदियादि-जाइणाम कम्मस्सुदयाभामादो ।

सामण्हेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्ख-गदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, पुडविचण्णकई अस्सिदूण सरीस्स छ लेस्साओ इत्थि । भोवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अण्णाणारवजुत्ता हँति अण्णाणारवजुत्ता वा^{२४} ।

एन्द्रियमार्गणके अनुवादसे आलाप मूल ओत्रालापके समान जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमासा, अतीतपर्याप्त, अतीतप्राण, सिद्धगति, अनिन्द्रिय, अकाय, सयम, सयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक रहित स्थान इतने आलाप नहीं कहना चाहिए, क्योंकि, सिद्धजीवोंके एकेन्द्रियजाति जाति नामकर्मका उदय नहीं पाया जाता है ।

सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, वादर-पर्याप्त, वादर-अपर्याप्त, सूक्ष्म-पर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये चार जीवसमासा, मन-पर्याप्त और भावापर्याप्तिके बिना चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्तनिद्रित, वातपल, वायु और स्वाभोचत्रयास ये चार प्राण, अपर्याप्तकालमें स्वाभो-चत्रयासके बिना तीन प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावर काय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग. नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं होती हैं, क्योंकि, पृथिवी और वनस्पतिकारिक जीवोंके शरीरकी अपेक्षा शरीरकी छहों लेख्यापं पानी जाती हैं । भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्यापं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंभिक, आहारक, अनाहारक. साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

नं. १८३ सामान्य एकेन्द्रियोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | |
|---------|--------|-------|--------|-----|--------|-----|---------|---------|-----|-------|------|-----|------|
| गु. ति. | प. मा. | म. ग. | इ. मा. | गो. | वे. क. | मा. | स्य. | द. | ले. | म. स. | मति. | आ. | उ. |
| १ | १ | ४ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | २ | १ | १ | २ |
| मि. | मा | प. प. | ति | म. | मि. | मि. | कुम. | अग | म | म. | मि. | अस. | आहा. |
| वृ. प. | | | | | | | कुश्रु. | कुश्रु. | म. | म. | मि. | अस. | आहा. |
| | | | | | | | | | | | | | मना. |

अमण्डिणो, आहारिणो अणारुजुत्ता हांति अणारुजुत्ता वा' ।

नादरेइंदियाणं भणमणे अरिथ एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, चचारि पञ्जनीओ चचारि अपञ्जनीओ, चचारि पाण तिण्णि पाण, चचारि सण्णाओ, तिरिक्सगदी, नादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, गणुंसयवेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, अचक्खुदंसण, अचक्खुदंसण, दव्णेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हणील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अणमण्डिया, मिच्छत्तं, अमण्णिणो, आहारिणो अणारुजुत्ता हांति अणारुजुत्ता वा' ।

आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वाटर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिय्यादृष्टि गुणस्थान, वाटर पर्याप्त और वाटर-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाए, त्रिचंगति, वाटर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकहाययोग, औदारिकमिथ्याचारयोग और नार्मणकाययोग ने तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कसाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, मानसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिय्यात्व, असजिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १८५ सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | जी | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |

नं. १८६ वाटर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | जी | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |

तेसिं चैव पञ्जचार्णं भणमणे अरिथ एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, चचारि पञ्जचीओ, चचारि पाण, चचारि सण्णाओ, तिरिक्सगदी, नादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, गणुंसयवेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्णेण छ लेस्सा, भावेण किण्हणील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हांति अणारुजुत्ता वा' ।

“तेसिं चैव अपञ्जचार्णं भणमणे अरिथ एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, चचारि अपञ्जचीओ, तिण्णि पाण, चचारि सण्णाओ, तिरिक्सगदी, नादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, गणुंसयवेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण,

उन्ही वाटर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिय्यादृष्टि गुणस्थान, एक वाटर-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाए, त्रिचंगति, वाटर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकहाययोग, नपुंसकवेद, चारों कसाय, कुमति और कुथुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, मानसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिय्यात्व, असजिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही वाटर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिय्यादृष्टि गुणस्थान, एक वाटर-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाए, त्रिचंगति, वाटर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिथ्याचारयोग और नार्मण

नं. १८७ वाटर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | जी | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |

नं. १८८ वाटर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | जी | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| मि. | सा. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. | प. |

दक्षेण ऋतु-सुक्कलेस्सा, भवेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता वजुत्ता वा ।

एवं यदेहंदियलपज्जत्ताणं पज्जत्तणामरुमोदयाणं तिणिण आलाना वत्तन्वा । अपज्जत्तणामरुमोदयाणं चादेहंदियलदिअपज्जत्ताणं भण्णमाणे चादेहंदियअपज्जत्ता-नाप-भंगो ।

“गुरुमेहंदियाणं भण्णमाणे अस्थि एयं गुणद्वानं, वे जीवसमासा, चत्तारि पज्ज-त्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, गुरुमेहंदियजादी, पंच थावरकाय, तिणिण जोग, गणुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अंसंजम, अचस्सुदंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्सा;

काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचञ्चुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और गुरु लेदयाप, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयापं, भव्यसिद्धिक, असन्निक, आहारक, असाक्षिक, मिथ्यात्व, असाक्षिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसीप्रकारसे पर्याप्तनामकर्मके उदयमले बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये । अपर्याप्त नामकर्मके उदयमले बादर एकेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिये ।

पदम एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पदम पर्याप्त और पदम-अपर्याप्त ये दो जीवसमान, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, नील प्राण, चारों सद्भापं, तिर्यचगति, पंचों स्थावरकाय, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिथ्यकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचञ्चुदर्शन, द्रव्यसे कापोत,

१ गतिरु ' काउलेस्सा ' इति पाठ । तत्रंति सुहमाग कापोदा गो. जी. ४९७.

नं. १९८.

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी | प | मा | स | ग | इ. | वा | गो | वे | क | भा. | माय | द | ले | म. | स | मति | आ | उ. |
|-----|----|---|----|---|---|----|----|----|----|---|-----|-----|---|----|----|---|-----|---|----|
| १ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ३ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ४ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ५ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ६ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ७ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ८ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ९ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १० | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ११ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १२ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १३ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १४ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १५ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १६ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १७ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १८ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १९ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २० | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २१ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २२ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २३ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २४ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २५ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २६ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २७ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २८ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २९ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ३० | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता वजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अस्थि एय गुणद्वानं, एथो जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, गुरुमेहंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, गणुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अंसंजम, अचस्सुदंसण, दब्बेण काउलेस्सा, भवेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वजुत्ता वजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अस्थि एयं गुणद्वानं, एथो जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, गुरुमेहंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, गणुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अंसंजम, अचस्सु-और गुरु लेदयापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असाक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों सद्भापं, तिर्यचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचञ्चुदर्शन, द्रव्यसे कापोतलेदया, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असाक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्या-दृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों सद्भापं, तिर्यचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिथ्यकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान,

१ गतिरु ' काउलेस्सा ' इति पाठ । तत्रंति सुहमाग कापोदा गो. जी. ४९७.

नं. १९७.

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प | मा | स | ग | इ. | वा | गो | वे | क | भा. | माय | द | ले | म. | स | मति | आ | उ. |
|-----|----|---|----|---|---|----|----|----|----|---|-----|-----|---|----|----|---|-----|---|----|
| १ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ३ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ४ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ५ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ६ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ७ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ८ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ९ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १० | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| ११ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १२ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १३ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १४ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १५ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १६ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १७ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १८ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| १९ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २० | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २१ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २२ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २३ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २४ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २५ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | २ | १ | १ | १ | २ |
| २६ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | | | | | | | | | | | | | | |

द्वयण, दब्धेण काउ-मुक्कलेस्सा, भोणेण क्रिह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभव-मिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहाग्गिो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हेति अणागार-वजुत्ता वा' ।

एवं पञ्चतणामकम्मोदय-सहियाणं सुहुमेहंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं तिणिण आलावा वत्तवा । सुहुमेहंदियलट्ठिअपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाण एओ अपज्जत्तालो ।

हेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, वे जीवसमासा, पंच पञ्चत्तीओ पंच अप-अत्तीओ, छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्सगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओगलियमिस्स-कम्मइय-अमचमोसवचिजेणा इदि चत्तारि जोग, णडुंसयवेद,

पसयम, अचसुदर्शन, दब्धसे कापोत और कुशु लेदयाण, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाणं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असजिक, आहारक, अनाहारक, साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हे ।

इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयनाले सुक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले मध्यम एकेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तकोंके एक अपर्याप्त आलाप जानना चाहिए ।

ईन्द्रिय जीवके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, ईन्द्रिय-पर्याप्त और ईन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पाच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्थितेन्द्रिय, रमनेन्द्रिय, वचनवल, कायवल, आयु और स्वामी-प्राण ये छह प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त छह प्राणोंमेंसे वचनवल और स्वासो-च्छ्वासके विना चार प्राण, चारों समां, तिर्यचगति, ईन्द्रियजाति, वसकाय, औदारिककाययोग, भौशरिकभिन्नकाययोग, कर्मणकाययोग और अमत्यमृगवचनयोग ये चार योग, नपुंसक

न १९१ मृक्षम एकेन्द्रिय जीवके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|----|----|----|---|-----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | म | ग | इ | वा | यो | वे | क | शा. | सय | द | ले | म | स | मति | आ | उ |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दब्धेण छ लेस्सा, भवेण क्रिह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणा-हारिणो, सागारवजुत्तो हेति अणागारवजुत्ता वा' ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पञ्चत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्सगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दब्धेण छ लेस्सा, भवेण क्रिह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, असण्णिणो, आहा-रिणो, सागारवजुत्ता हेति अणागारवजुत्ता वा' ।

वेद, चारों कमाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, दब्धसे छहों लेदयाण, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हे ।

उर्द्धा ईन्द्रिय जीवके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण स्थान, एक ईन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पाच पर्याप्तिया, पूर्वोक्त छह प्राण, चारों समां, तिर्यचगति, ईन्द्रियजाति, वसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिक-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कमाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, दब्धसे छहों लेदयाणं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाण, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हे ।

नं. १९२ ईन्द्रिय जीवके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|----|----|----|---|-----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | म | ग | इ | वा | यो | वे | क | शा. | सय | द | ले | म | म | मति | आ | उ |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

नं १९३ ईन्द्रिय जीवके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|----|----|----|---|-----|----|---|----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | म | ग | इ | वा | यो | वे | क | शा. | सय | द | ले | म | म | मति | आ | उ |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १ | १ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| मि | दी | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

भाषण क्रिह-शील-काउलेस्मा, भवमिन्द्रिया अभवसिन्द्रिया, मिच्छन्तं, असिण्णो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा ।

तेसि चैव अपञ्जत्तानं भणमाणे अत्थि एवं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, पंच अपञ्जत्तीओ, पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्सगदी, तीहंदिजदी, तसकाओ, दो जोग, गुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-गुस्सलेस्मा, भाषेण क्रिह-शील-काउलेस्साओ; भवमिन्द्रिया अभवसिन्द्रिया, मिच्छन्तं, असिण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा” ।

एवं तीहंदिजनिचत्तिपञ्चानं पञ्चत्त-णामकम्मोदियाणं तिण्णि आलावा वत्तव्या । तत्रि-अपञ्जत्तानं पि अपञ्जत्त-णामकम्मोदियाणं एवो आलावो वत्तव्यो ।

चउरिंदियाणं भणमाणे अत्थि एवं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, पंच पञ्जत्तीओ र्शान, उव्वसे य्तां लेदयाए, भावसे रुणा, नील और कापोत लेदयाए, भव्यसिद्धिक, अभयसिद्धिक; मियात्त, असत्तिक, आहारक, नाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धी नीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक नीन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तिया, आदिनी तीन इन्द्रियां, नायवल और आयु ये पांच प्राण, चारों कसाय, तिर्यचगति, नीन्द्रियजाति, तसकाय, औवा-रि तमिथ्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कृतुत ये दो अदान, असंजम, अचक्खुदंसण, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेदयाए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाए, भव्यसिद्धिक, अभयसिद्धिक; मिथ्यात्व, असत्तिक, आहारक, अनाहारक, नाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

रत्नीवकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले नीन्द्रिय निवृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले नीन्द्रिय लक्षणपर्याप्तकोंके भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए ।

चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरि-

नं. ११७ श्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-------|------|------|------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|------|------|-----------|------|------|---|
| शु. १ | जी. १ | प. ५ | म. ५ | ग. ५ | द. ५ | को. ५ | यो. ५ | वे. ५ | क. ५ | सा. ५ | सय. ५ | द. ५ | ले. ५ | म. ५ | स. ५ | संज्ञे. ५ | आ. ५ | उ. ५ | |
| १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

पंच अपञ्जत्तीओ, अह पाण छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, गुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भाषेण क्रिह-शील-काउलेस्साओ; भवसिन्द्रिया अभवसिन्द्रिया, मिच्छन्तं, असिण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा” ।

तेसि चैव पञ्चत्तानं भणमाणे अत्थि एवं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, पंच पञ्जत्तीओ, अह पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, गुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भाषेण क्रिह-शील काउलेस्साओ; भवसिन्द्रिया अभवसिन्द्रिया, मिच्छन्तं, असिण्णो,

न्द्रिय-पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मत्त-पर्याप्तिके विना पांच पर्या-प्तियां, पांच अपर्याप्तिया, पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, द्रव्यनेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, कायवल, वचनवल, आयु और स्वासोच्छ्वास ये आठ प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त आठ प्राणोंमेंसे वचनवल और स्वासोच्छ्वासके विना शेष छह प्राण; चारों सदाए, तिर्यचगति, चतुरिन्द्रियजाति, तसकाय, अनुभवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारि तमिथ्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कृतुत ये दो अदान, असंजम, चक्खु और अचक्खु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयाए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाए, भव्यसिद्धिक, अभयसिद्धिक, मिथ्यात्व, असत्तिक, आहारक, अनाहारक, नाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धी चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त आठ प्राण, चारों सदाए, तिर्यचगति, चतुरिन्द्रियजाति, तसकाय, अनुभवचनयोग और औदारिक-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, कुमति और कृतुत ये दो अदान, असंजम, चक्खु और अचक्खु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयाए, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेदयाए, भव्यसिद्धिक, अभयसिद्धिक, मिथ्यात्व, असत्तिक, आहारक, नाकारोपयोगी और अना-

न ११८ चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-------|------|------|------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|------|------|-----------|------|------|---|
| शु. १ | जी. १ | प. ५ | म. ५ | ग. ५ | द. ५ | को. ५ | यो. ५ | वे. ५ | क. ५ | सा. ५ | सय. ५ | द. ५ | ले. ५ | म. ५ | स. ५ | संज्ञे. ५ | आ. ५ | उ. ५ | |
| १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

नामनाममाहृष्टिपहुडि जात्र अजोगिकेचलि ति मूलोच-भंगो । एवं सण्णिपंचि-
दियाणं पञ्चस-णामकम्मोदयाणं मिच्छाहाहृष्टिपहुडि जात्र अजोगिकेचलि ति जाणिल्लण
मकालाया वत्तव्या ।

असण्णि-पंचिदियाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वणं, दो जीवसमासो, पंच
पञ्चत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, णत्र पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्सग्गदी,
पंचिदियजादी, तमकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण,
असंयम, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया
अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारवुत्ता होति
अणागारवुत्ता वा ।

तेर्मि चैव पञ्चत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, पंच
पञ्चत्तीओ, णत्र पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिस्सग्गदी, पंचिदियजादी, तमकाओ, दो

सामान्य पंचेन्द्रिय जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेचली
गुणस्थान तर्कके आलाप मूल ओद्यालापके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पर्याप्त
नामकर्मके उदयवाले सभी पंचेन्द्रिय जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेचली
गुणस्थान तर्कके समस्त आलाप जानकर कहना चाहिये ।

असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,
असंखी पर्याप्त और असंखी पर्याप्त ये दो जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां;
नौ प्राण, सात प्राण, चारों सत्राप, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभववचनयोग,
आहारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद,
चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेक्ष्याए,
भ्राम्भे कृष्ण, नील और कापोत लेक्ष्याए; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंखिक,
आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तक लसवन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि
गुणस्थान, एक असंखी पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, नौ प्राण, चारों संबाएं, तिर्यचगति,

न. २०३ असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-------|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|--------|----|----|
| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | वा. | यो. | वे. | क. | सा. | मय. | द. | ले. | म. | स. | सन्नि. | आ. | उ. |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | १ | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | असंखी | ५ | ९ | ४ | १ | १ | ५ | ५ | | | | | | | | | | | | |

कायानुद्गारेण ओद्यालने भण्णमाणे' अरिथे चोदस गुणद्वयाणि, दो वा तिण्णि वा, चचारि वा छब्बा, छब्बा णव वा, अट्ठ वा चारह वा, दस वा पण्णारह वा, चारस वा अट्ठारह वा, चोदस वा एकब्बीस वा, सोलस वा चउवीस वा, अट्ठारह वा सत्तावीस वा, बीस वा तीस वा, चारवीस वा तेत्तीस वा, चउवीस वा छत्तीस वा, छब्बीस वा अट्ठण्णचालीस वा, अट्ठवीस वा चायालीस' वा, तीस वा पंचेतालीस वा, चत्तीस वा अट्ठतालीस वा, चउतीस वा एकपंचास वा, छत्तीस वा चउपंचास वा, अट्ठत्तीस वा सत्तपंचास वा जीवसमासा । दो जीवसमासेत्ति भण्णिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सब्बे जीवा दुविहा भवन्ति, अदो दो जीवसमासा भवन्ति । तिण्णि जीवसमासेत्ति बुत्ते णिव्वत्तिपज्जत्ता णिव्वत्ति-अपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिण्णि जीवसमासा भवन्ति । चचारि वा इदि बुत्ते तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चचारि जीवसमासा । छब्बा इदि बुत्ते दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं छ जीवसमासा । अथवा थावर-

कायमार्गणाके अनुवायसे ओद्यालपे कहने पर—चौदहों गुणस्थान होते हैं । दो अथवा तीन, चार अथवा छह, छह अथवा नौ, आठ अथवा बारह, दश अथवा पन्द्रह, बारह अथवा अठारह, चौदह अथवा इत्तीस, सोलह अथवा चौबीस, अठारह अथवा सत्तावीस, बीस अथवा तीस, चत्तीस अथवा तेत्तीस, चोर्वीस अथवा छत्तीस, छब्बीस अथवा उनचालीस, अट्ठवीस अथवा पचालीस, तीस अथवा पंचेतालीस, चत्तीस अथवा अट्ठतालीस, चौत्तीस अथवा पचास, छत्तीस अथवा चौपन, अट्ठवीस अथवा सत्तावन जीवसमास होते हैं । आगे इन्हींका स्फुटिकरण करते हैं—

दो जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे सभी जीव दो प्रकारके होते हैं, अतएव दो जीवसमास कहे जाते हैं । तीन जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर निर्वृत्तिपर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्धपर्याप्तक इसप्रकार तीन जीवसमास होते हैं । चार जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार जीवसमास कहे जाते हैं । छह जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रस और स्थावरके दो निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दो निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दो लब्धपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं । अथवा, स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके

- १ णिण्ण ' णोकावाणो गणमाणे ' इति पाठो नास्ति । २ णिण्ण ' उट्ठविह वा ' इति पाठ ।
३ णिण्ण ' षोडश वा तेत्तीस वा ' इति पाठानुगतम् । अत उपरि णिण्ण ' चत्तीस वा ' इति पाठोऽधिकः ।
४ णिण्ण ' पचान्णस ' इति पाठ ।

काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगल्लिदिया विगल्लिदिया, सगल्लि, दिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगल्लिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीव-समासा । तिण्णि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीवसमासा भवन्ति । थावरकाइया दुविहा वादरा सुहुमा, चादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगल्लिदिया विगल्लिदिया चि, सगल्लिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगल्लिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं अट्ठ जीवसमासा । चचारि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चचारि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चचारि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं चारस जीव-समासा भवन्ति । थावरकाइया दुविहा चादरा सुहुमा, चादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पंचिदिया अपंचिदिया, पंचिदिया सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अप-ज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं दस जीवसमासा भवन्ति । पंच णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पंच णिव्वत्तिअपज्जत्त-

होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय । सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं । एकैन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियके तीन निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तीन निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तीन लब्धपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार नौ जीवसमास होते हैं । स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, वादर और सुहुम । वादर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । सुहुम जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय । सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार आठ जीवसमास होते हैं । वादर स्थावर-कायिक, सुहुम स्थावरकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके चार निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चार निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चार लब्धपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं । स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, वादर और सुहुम । वादरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । सुहुमकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक । और अपंचेन्द्रिय (विकलेन्द्रिय) । पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक । संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । अपंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार दश जीवसमास होते हैं । वादर स्थावरकायिक, सुहुम स्थावरकायिक, संज्ञी

बादरनिगोदप्रतिद्विदिशित-पत्तेयमरीरा दुविहा पञ्जता अपञ्जता, साधारण-मरीरा दुविहा पञ्जता अपञ्जता, तयकाइया दुविहा त्रियलिंदिया सयलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पञ्जता अपञ्जता, त्रियलिंदिया दुविहा पञ्जता अपञ्जता, एवमद्वारस जीवसमासा हंति । नत्र निवत्तिपञ्जतजीवसमासा नत्र निवत्तिपञ्जतजीवसमासा नत्र लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा' एदे मन्वे नि वेचूण मत्तवीस जीवसमासा हंति । पुष्टिअद्वारम-जीवसमासाभंतेरे साधारण वणफक्षपञ्जतापञ्जतजीवसमासे अवनिय साधारणफक्षकाइया दुविहा निचनिगोदा चदुगदिनिगोदा चेदि । निचनिगोदा दुविहा पञ्जता अपञ्जता, चदुगदिनिगोदा दुविहा पञ्जता अपञ्जता चेदि एदे चत्तारि जीवसमासे पस्सिचे वीस जीवसमासा हंति । दस निवत्तिपञ्जतजीवसमासा दस निवत्ति-अपञ्जतजीवसमासा दस लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा एदे तीस जीवसमासा हंति । पुडनिगाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणफक्षकाइया एदे सब्बे दुविहा

बादरनिगोदप्रतिद्विदिशितसे भिन अर्थान् बादरनिगोदप्रतिद्विदिशितप्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । प्रत्येकजीव जीव दो प्रकारके होते हैं, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय । प्रत्येकजीव जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इमप्रकार ये अठारह जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय इन नो प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा नौ निवृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, नौ निवृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और नौ लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये नव मिलाकर सत्तावीस जीवसमास होते हैं । पूर्वमें कहे गये अठारह जीवसमासोंमेंसे साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर साधारणवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद । नित्यनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । चतुर्गतिनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । नतुर्गतिनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । ये चार जीवसमास मिलाने पर वीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, नित्य-निगोद, चतुर्गतिनिगोद, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय इन दश प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा दस निवृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दस निवृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और दश लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक ये पांचों कायिके जीव दो दो प्रकारके होते हैं, बादर

१ शीत ' पत्तान्...ममासा ' इति पाठो नास्ति ।

बादरा सुहुमा ति, सब्बे बादरा सब्बे च सुहुमा पञ्जता अपञ्जता इदि चउव्विहा हंति, तसकाइया दुविहा पञ्जता अपञ्जता चेदि एवमेदे वानीस जीवसमासा । निवत्तिपञ्जतजीवसमासा एकारह, निवत्ति-अपञ्जतजीवसमासा एकारह, लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा एकारह एवं तेत्तीस जीवसमासा हंति । वानीस-जीवसमासा-णमभंतेरे तसपञ्जतापञ्जतजीवसमासे अवनिय तसकाइया दुविहा हंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पञ्जता अपञ्जता, अमणा दुविहा पञ्जता अपञ्जता एदे चत्तारि पस्सिचे चउवीस जीवसमासा हंति । वारस निवत्तिपञ्जतजीवसमासा वारस निवत्ति-अपञ्जतजीवसमासा वारस लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हंति । पुष्टिअद्वारम-जीवसमासा वारस लद्धि-अपञ्जतजीवसमासा एवमेदे छत्तीस अवनिय अमणा दुविहा सयलिंदिया त्रियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पञ्जता अपञ्जता, त्रियलिंदिया दुविहा पञ्जता अपञ्जता चेदि एदे चत्तारि पस्सिचे छत्तीस जीवसमासा हंति । तेरस निवत्तिपञ्जतजीवसमासा तेरस निवत्ति-अपञ्जतजीव-

और सूक्ष्म । ये सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं । इसप्रकार प्रत्येक एक एक कायिके जीव चार चार प्रकारके हो जाते हैं । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार ये सब मिलाकर वानीस जीव समास हो जाते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक अशिकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदमे दश भेद होते हैं और त्रसकायिक इन ग्यारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा ग्यारह निवृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, ग्यारह निवृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और ग्यारह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार सब मिलाकर तेतीस जीवसमास होते हैं । पूर्वमें वानीस जीवसमासोंमेंसे त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, समनस्क (संक्षी) और असनस्क (असंक्षी) । समनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक, अपर्याप्तक । असनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । ये चार जीवसमास मिलाने पर चौबीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदमे दश भेद और समनस्क त्रसकायिक तथा असनस्क त्रसकायिक इन वारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा वारह निवृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, वारह निवृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और वारह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं । पूर्वमें चौबीस जीवसमासोंमेंसे असनस्क जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर असनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय । सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इन चार जीवसमासोंको मिला देने पर छत्तीस जीवसमास होते हैं । पांचो स्यावरकायिक जीवोंके बादर और

समासा तेषां लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे सन्वे घेचूण एरण्णचालीस जीव-
समासा हन्ति । छन्वीसण्हं मज्जे णणफ्फइकाइयाणं चत्तारि जीवसमासे अवणिय
वणफ्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अप-
ज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे
छ जीवसमासे पक्खित्ते अट्टावीस जीवसमासा हन्ति । चोइस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा
चोइस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा चोइस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे चायालीस
जीवसमासा । अट्टावीसण्हं मज्जे पत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ता दो जीवसमासे अवाणिय
पत्तेयसरीरा-दुविहा चादरणिगोपज्जोणिणो तेसिमज्जोणिणो चेदि, तेवि सन्वे दुविहा
पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि एदे चत्तारि भग्गे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हन्ति । णिव्वत्ति-
पज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, लद्धि-अपज्जत्तजीव-

सस्रमके भेदसे दश भेद तथा विक्खेन्द्रिय, असमनस्क पंचेन्द्रिय और समनस्क पंचेन्द्रिय
एत तेषां प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा तेरह निर्भूतिपर्याप्तक जीवसमास, तेरह निर्भूतिपर्याप्तक
जीवसमास और तेरह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सय भिलाकर उततालीस
जीवसमास होते हैं । छन्वीस जीवसमासोंमेंसे वनस्पतिकारिक जीवोंके चार जीवसमास
विकल्प कर वनस्पतिकारिक जीव से प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर ।
प्रत्येकशरीर वनस्पतिकारिक जीव से प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक । साधारण-
शरीर वनस्पतिकारिक जीव से प्रकारके होते हैं बादर और सूक्ष्म । ये दोनों प्रकारके जीव भी
दो से प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक । ये छह जीवसमास भिला देने पर अट्टावीस
जीवसमास होते हैं । पृथिवीकारिक, जलकारिक, अश्रिकारिक, वायुकारिक और साधारण-
वनस्पतिकारिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद, प्रत्येकवनस्पतिकारिक, विक-
भेन्द्रिय, समनस्कपंचेन्द्रिय और असमनस्कपंचेन्द्रिय इन चौदहों प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा
चौदह निर्भूतिपर्याप्तक जीवसमास, चौदह निर्भूतिपर्याप्तक जीवसमास और चौदह लक्ष्य-
पर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सय भिलाकर इयालीस जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त
धनुर्बाण अश्रिकारिकजीवोंमेंसे प्रत्येकशरीर जीव से प्रकारके जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो
जीवसमास विकल्प कर प्रत्येकशरीर जीव से प्रकारके जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक और
बादरनिगोपज्जोतिक । ये भी सब दो दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर जीव से प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा
बादर ये चार भंग भिन्ना देने पर तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकारिक, जलकारिक,
अश्रिकारिक, वायुकारिक और साधारणशरीर इनके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा
अश्रिकारिक प्रत्येकशरीरस्थिति और भगतिष्ठित प्रत्येकवनस्पती, विक्खेन्द्रिय, असमनस्कपंचेन्द्रिय
और समनस्कपंचेन्द्रिय इसप्रकार इन पन्द्रह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा पन्द्रह निर्भूतिपर्याप्तक
और सयभंग पन्द्रह निर्भूतिपर्याप्तक जीवसमास और पन्द्रह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास

समासा पण्णारस एवमेदे सन्वे वि पंचेदालीस जीवसमासा हन्ति । पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-
साधारणसरीरवणफ्फइकाइया पत्तेयं बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेदेण चउव्विहा
हन्ति, पत्तेयसरीरा वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिदिय-सण्णिपंचिदिया पत्तेयं
पत्तेयं पज्जत्ता अपज्जत्ता दुविहा हन्ति एदे सन्वे भिलिदे वत्तीस जीवसमासा हन्ति । सोलस
णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा सोलस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा सोलस लद्धि-अपज्जत्त-
जीवसमासा च भेलिदे अट्टावीस जीवसमासा हन्ति । वत्तीस-जीवसमासेसु पत्तेयसरीर-
दो-जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा चादरणिगोदज्जोणिणो तेसिमज्जोणिणो चेदि,
ते च पत्तेयं पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा एदे चत्तारि पक्खित्ते चोत्तीस जीवसमासा हन्ति ।
सत्तारस णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्तारस णिव्वत्ति-अपज्जत्ता सत्तारस लद्धि-अपज्जत्ता एदे
सन्वे एकावण जीवसमासा हन्ति । पुढावि-आउ-तेउ-वाउ-णिच्चाणिगोद-चउगदिणिगोदा चादरा

इसप्रकार ये सय भिलाकर पैतालीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकारिक, जलकारिक,
अश्रिकारिक, वायुकारिक और साधारणशरीरवनस्पतिकारिक ये पांच प्रकारके जीव
पृथक् पृथक् बादर, सूक्ष्म और उनमें भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार चार
प्रकारके होते हैं । प्रत्येकशरीरवनस्पतिकारिक, छीन्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंसी
पंचेन्द्रिय और संसी पंचेन्द्रिय ये छहों प्रत्येक प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो
प्रकारके होते हैं । इसप्रकार ये सय भिलाने पर वत्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकारिक
जलकारिक, अश्रिकारिक, वायुकारिक और साधारणशरीर-वनस्पतिकारिक जीवोंके बादर और
सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा प्रत्येकशरीर वनस्पतिकारिक, छीन्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय,
असंसी-पंचेन्द्रिय और संसी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सोलह निर्भूतिपर्याप्तक जीवसमास,
सोलह निर्भूतिपर्याप्तक जीवसमास और सोलह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सय भिला
द्वेने पर अट्टावीस जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त वत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी
पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीरवनस्पतिकारिक जीव से
प्रकारके होते हैं, बादरनिगोपज्जोतिक (प्रतिष्ठित) और बादरनिगोव अग्रतिष्ठित । ये दोनों
पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । ये चार जीवसमास भिला
द्वेने पर चोत्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकारिक, जलकारिक, अश्रिकारिक, वायुकारिक,
और साधारणवनस्पतिकारिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित
प्रत्येक-वनस्पतिकारिक, अग्रतिष्ठितप्रत्येक-वनस्पतिकारिक, छीन्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय,
असंक्षिकपंचेन्द्रिय और संक्षिकपंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सत्रह निर्भूतिपर्याप्तक जीवसमास,
सत्रह निर्भूतिपर्याप्तक जीवसमास और सत्रह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सय भिलाकर इकावत
जीवसमास होते हैं । पृथिवीकारिक, जलकारिक, अश्रिकारिक, वायुकारिक, विरयनिगोव-

चेव सन्वेदे सत्तावण्य जीवसमासा हन्ति । एदे' जीवसमासमेयां सव्व-ओवेसु वत्तव्या । छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ चत्तारि पञ्चत्तीओ चत्तारि अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण सत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविक्कायादी छक्काया, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अरुसाओ वि अत्थि, अट्ट गाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भोवेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागराजुत्ता हँति अणागराजुत्ता वा सागर-अणागारेहि जुगव-

है । ये उपर्युक्त जीवसमासोंके भेद समस्त ओवालोंमें कहना चाहिए ।

जीवसमास आलापके आगे संबन्धी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालमें और अपर्याप्तकालमें छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, अक्षरी पंचेन्द्रिय और विकलत्रय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संक्षी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः दोषों प्राण, सात प्राण; अक्षरी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः नौ प्राण, सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः आठ प्राण, छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः सात प्राण, पांच प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः छह प्राण, चार प्राण; एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार प्राण, तीन प्राण, सयोगकेवली जिनोंके चार प्राण, तथा समुदातकी अपर्याप्त अवस्थामें दो प्राण और अयोगकेवली जिनोंके एक आयु प्राण होता है । चारों सज्ञाप तथा क्षीणसज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत वेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, आठों घान, सातों संयम, चारों वरान, ड्रव्य और भावसे छहों लेट्याए तथा अलेट्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सव्यसव्व, संक्षिक असंक्षिक तथा सक्षिक और असंक्षिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है,

१ श्रितियु 'वीए' इति पाठ ।

२ सामण्यजाव तस्यारोह इगियिगलमयकचिमुने । इदियन्तो चरिसस य इतियदुपणममेदुदुदे । पण्डुले तससिदिये तसस इतिचदुपणममेदुदुदे । छदुपणचेयिदि य तसस तियचदुपणममेदुदुदे ॥ सगजुगन्धि तसस य पणमगदुदेउ हँति उणव्वीसा । एयाइणव्वीसोत्ति य इगियिगिगुण्णिदे इवे ठाणा ॥ सामण्येण तिपती परमा विदिया अपुण्णे इदो । पञ्चवे लद्धिअपञ्चवेडपदमा इवे पठी ॥ गो. जी ७५-७८.

मुहमा च पञ्चत्तापञ्चत्तमेण दुविहा हन्ति, पत्तेयवणफ्फदि-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-अन्णिसण्णिपंचदिय-पञ्चत्तापञ्चत्तमेण एदे वि पत्तेयं दुविहा हन्ति एदे सव्वे वि छत्तीस जीवममासा हन्ति । अट्टारह णिव्वत्तिपञ्चत्तजीवसमासा, तेत्तिया चव णिव्वत्तिअपञ्चत्तजीवसमासा वि अट्टारह, लद्धि-अपञ्चत्तजीवसमासा वि अट्टारह सन्वेदे एगडे कदे चउपण्य जीवसमासा । पुणो पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे छत्तीस-जीवसमासेसु अवणिय पत्तेय-मरीन्वाद्दरणिगोद-पदिद्धिदापदिद्धिदं-पञ्चत्तापञ्चत्त-सण्णिद-चदुसु जीवसमासेसु पविख-त्तेसु अट्टत्तीस जीवसमासा हन्ति । एत्थ एगुणवीस णिव्वत्तिपञ्चत्तजीवसमासा, तेत्तिया चव णिव्वत्ति-अपञ्चत्तजीवसमासा हन्ति, लद्धि-अपञ्चत्तजीवसमासा वि तेत्तिया

साधारणनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोदसाधारणवनस्पतिकायिक ये छहों प्रकारके जीव वादर और सस्यके भेदसे चारह प्रकारके होते हैं । और ये प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, जलमी पंचेन्द्रिय और सजी पंचेन्द्रिय जीव ये सभी पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । इसप्रकार उक्त चौबीस और निम्न वारह ये सभी जीवसमास मिलकर प्रतीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक, नित्य-निगोद साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिकके वादर और सस्य भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंक्षी-पंचेन्द्रिय और संक्षी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी ओपक्ष निर्गुणत्वनिर्गुणत्व पर अट्टारह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सप्त इकट्ठे करते पर चौपन जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त छत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीरसंबन्धी वादरनिगोद प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित इन दोनोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक इन चार जीवसमासोंके मिलाने पर अट्टत्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, आशिकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके वादर और सस्य भेदरूप तथा समप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक त्रीन्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंक्षी-पंचेन्द्रिय और संक्षी-पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी उन्नत निर्गुणत्वपर्याप्तक जीवसमास होते हैं, उन्नत ही निर्गुणत्वपर्याप्तक जीवसमास होते हैं और उन्नत ही लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं । ये सब मिलकर सत्तावन जीवसमास होते

' वीए ' त्रिद्वि-पञ्च- ' इति पठ ।

अपञ्जतीओं चत्वारि अपञ्जतीओं, मत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्वारि पाण तिणि पाण दो पाण, चत्वारि मण्णाओ मणीमण्णा वा, चत्वारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढेनिकायादी छम्काय, चत्वारि जोग, तिणि वेद अवगदवेदो वा, चत्वारि क्रमाय गरुमाओ वा, छ पाण, चत्वारि सजम, चत्वारि दंसण, दब्बेण काउ-मुम्भलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, मण्णिणो अमण्णिणो अनुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवजुत्ता होंति अणारुवजुत्ता वा तदुभया वा” ।

पाण, पाञ्च पाण, चार पाण, तीन पाण, दो प्राण, चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञस्थान भी हैं, चारों गतिया, ग्फेडियजाति आदि पांचो जानियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदा-रिकाग्रि, धैरिणिक्रमिअ, आहारक्रमिअ और कर्मण ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हैं, चारों क्रमाय तथा अक्रमायस्थान भी हैं, विभगावधि और मन-पायजातके विना नइ जान, असंयम, सामायिक, त्रेयोपस्थापना और यथाख्यात ये चार मयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुलु लेदियापं, भावसे छहों लेदियापं, भव्यसिद्धिक, भव्यसिद्धिक; मय्यमिथ्यात्वके विना पांच सम्यमत्व, सन्निक, असन्निक तथा अनुभयस्थान भी हैं; आहारक, अनाहारक. साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और उभय उपयोगीसे युगपत् उक्त्युक्त भी होने हैं ।

त्रिंशत्पर्यं — ऊपर जो सत्तावन जीवसमास कहे हैं उनमें अपर्याप्त सामान्यकं उन्नीस हैं तिनका यहाँ पर ‘एक अथवा दो, दो अथवा चार, इत्यादि संख्याओंके कथनमें आई हुई पूर्णवर्ती संख्याओंका एक, दो, तीन इत्यादि संख्याओंसे निर्देश किया है । अपर्याप्तके निर्द्वय-पर्याप्त और लज्यपर्याप्त फेर दो भेद कर लेने पर उनका निर्देश दो, चार, छह इत्यादि संख्या-ओंके द्वारा किया गया है । यहाँ पर इतना और समझ लेना चाहिये कि पूर्ण पूर्ववर्ती संख्यापं जीवसमासोंको सामान्यरूपसे और उत्तर उत्तरवर्ती संख्याप उनको विशेषरूपसे बतलाती हैं । इसका यह अधिकार हुआ कि किसी भी संख्याके द्वारा संपूर्ण अपर्याप्त जीव संग्रहित कर लिये गये हैं । फिर भिन्न संख्याए केवल उनके भेद-प्रभेदोंको सूचित करनेके लिये ही दी गई

ने २१५

पट्टकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|-------|----|---|---|---|-----|----|-----|---|----|----|---|----|---|----|-----|---|----|
| गु. जी. | प | शा | म | ग | व | का. | यो | वे. | क | शा | मय | द | ले | म | स. | मति | आ | उ. |
| ५ | १२ | ६ | ७ | ७ | ७ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | वा.प. | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

मिच्छाइडिपहुडि जाव अकाया ति मूलोव-भंगो । णत्रि मिच्छाइडिस्स तिधि-हस्स वि कायाणुवाद्-मूलोवभुत्तजीवसमासा वत्त्वा । णत्थि अणत्थ विभेसो ।

“पुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्वारि जीवसमासा, चत्वारि पञ्जतीओ चत्वारि अपञ्जतीओ, चत्वारि पाण तिणि पाण, चत्वारि सण्णाओ, तिरिकसगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, तिणि जोग, णवुमयवेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, अरंसमो, अचक्खुदंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-

हैं । पर्याप्त जीवसमासके उन्नीस विकल्पोंमें भी यही क्रम जान लेना चाहिये । गोमटसर जीवकाण्डमें जीवसमासोंको बतलाने हुए तीन पक्तियां कर दी हैं । पहली पंक्तिमें एक, दो, आदि उन्नीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन सामान्यकी अपेक्षा किया है । दूसरी पंक्तिमें दो, चार आदि अइतीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त और अपर्याप्त इन दो भेदोंकी अपेक्षा किया है । तथा तीसरी पंक्तिमें तीन, छह आदि सत्तावनतक जीव-समास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त, निर्द्वयपर्याप्त और लज्यपर्याप्त इन तीन भेदोंकी अपेक्षा किया है ।

सामान्य पट्टकायिक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अक्रायिक अर्थात् सिद्ध जीवों तकके आलाप मूल औघालापके समान ही जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इन तीनों ही प्रकारके मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते समय कायाणुवाद्के मूलोघालापमें कहे गये सभी जीवसमास कहना चाहिए । इनके अनिश्चित अन्यत्र अन्य कोई विशेषता नहीं है ।

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त, वादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यक्वगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाय-योग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, नपुमकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुथुन ये दो अन्नान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेदियापं, भावसे छ पाण

ने २१६

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|-------|----|---|---|---|-----|----|-----|---|----|----|---|----|---|----|-----|----|---|
| गु. जी. | प | शा | म | ग | व | का. | यो | वे. | क | शा | मय | द | ले | म | स. | मति | आ. | उ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| मि. | वा.प. | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

तेमि चैव अपञ्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपञ्जत्तीओ, तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एहंदिजदी, पुडविकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अंगंजमो, अचक्खुदंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवमिद्विया अमवसिद्विया, मिच्छत्तं,

जीवसमास हो जाते हैं। दूसरा कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वीरसेनस्वामीने स्वयं शब्द और सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके अतिरिक्त शब्द और सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्धृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त रूपप्रकार तीन प्रकारके आलाप और बतलाये हैं। इतमसे प्रथम सामान्यालापमें पर्याप्तक, निर्धृत्यपर्याप्तक और लक्ष्यपर्याप्तक इन तीनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव हो जाता है और निर्धृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्यालापमें पर्याप्तक और निर्धृत्यपर्याप्तक इन दो प्रकारके जीवोंके आलापोंका ही अन्तर्भाव होता है। दूसरे पर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम और द्वितीय दोनों पर्याप्तालापमें वास्तवमें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, निर्धृत्तिस पर्याप्तक जीव ही दोनों जगह पर्याप्तक रूपसे ग्रहण किये गये हैं। अपर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम अपर्याप्तालापमें निर्धृत्यपर्याप्तक और लक्ष्यपर्याप्तक इन दोनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव होता है। परंतु निर्धृत्तिपर्याप्तक जीवोंके अपर्याप्तालापमें केवल एक निर्धृत्यपर्याप्तक कालसंबन्धी आलापोंका ही ग्रहण होना है। इनमेंसे निर्धृत्तिपर्याप्तककी अपर्याप्तावस्थामें पर्याप्ततामकर्मका उदय तो रहता है परंतु उसकी पर्याप्तियां पूर्ण न होनेके कारण वह अपर्याप्त कहा जाता है। इसप्रकार निर्धृत्यपर्याप्तक पर्याप्ततामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त भी है। प्रतीत होता है कि इसी विवक्षाको ध्यानमें रखकर वीरसेनस्वामीने यहां पर चार आलाप कहे हैं। यद्यपि प्रथम कारणना गोममडसारकी जीवप्रयोधिनी टीकाके आधारसे वी गई है परंतु उसकी यहां पर मुख्यता प्रतीत नहीं होती है, क्योंकि, आगे जलकायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान बतलाये हैं। परंतु जल आदिके उर्वी टीकामें शुद्ध आवि भेद नहीं किये हैं। अथवा इसी बातसे ध्यानमें रखकर उक्त टीकामें केवल पृथिवीके चार भेद किये गये हैं। इसप्रकार पृथिवीकायिक जीवोंके दो या चार जीवसमास जान लेना चाहिये।

उर्त्वा पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्याऽपि गुणस्थान, शारपृथिवीकायिक-अपर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चारों अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञायं, तिर्यचगति, एकैन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमानि और कुशुत ये दो ज्ञान, असंयम, अक्षरुदर्शन, द्रव्यसे कायोल और शुक्ल लेख्याप, मासने कृष्ण, नील और कायोल लेख्याप; भव्यमिदिक; भव्यमिदिक; मिथ्यात्व, असौमिक,

केसाओ; भवसिद्विया अमवसिद्विया, मिच्छत्तं, असण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, गगागरजुता हेति अणागरजुता वा।

तेमि चैव पञ्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा चत्तारि वि जीवसमासा, चत्तारि पञ्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एहंदिज-जादी, पुट्टीकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अंगंजमो, अनक्खुदंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्विया अमवसिद्विया, मिच्छत्तं, असण्णो, आहारिणो, गगागरजुता हेति अणागार-जुता वा”।

शोल और कायोल लेख्याप; भव्यमिदिक, भव्यमिदिक; मिथ्यात्व, अमिदिक, आहारक, अणाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उर्त्वा पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक मिथ्याऽपि गुणस्थान, शारपृथिवीकायिक पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये दो जीवसमास, अथवा शुद्ध शारपृथिवीकायिक पर्याप्त शुद्ध सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त, शर शब्दपृथिवीकायिक-पर्याप्त और शर सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये चार जीवसमासा-चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञायं, तिर्यचगति, एकैन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमानि और कुशुत ये दो ज्ञान, असंयम, अक्षरुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे कृष्ण, नील और कायोल लेख्याप; भव्यमिदिक, भव्यमिदिक; मिथ्यात्व, अमिदिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ— ऊपर पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप कहते समय दो अथवा चार प्रथमनाप बतलाये हैं। उनमें दो जीवसमास बतलानेका कारण तो स्पष्ट ही है। परंतु फिरसे जो चार जीवसमास बतलाये गये हैं उसके दो कारण प्रतीत होते हैं एक तो यह कि गोममडसारकी जीवप्रयोधिनी टीकामें जीवसमासोंका विशेष वर्णन करते समय पृथिवीके शुद्धपृथिवी और शरपृथिवी के दो भेद किये हैं। ये दो भेद शब्द और सूक्ष्मके भेदसे दो दो प्रकारके हो जाते हैं। इसप्रकार पर्याप्त अथवा मिश्राप इन चारों भेदोंके प्रदूषण करने पर चार

अ. २.३ पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

अमण्डिगो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवजुत्ता वीति अणागारुवजुत्ता वा^{१८} ।

वादरपुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्काणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजदी, वादरपुढविकाओ, तिण्णि जोग, णडुंसयवेद, चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्णेण छ लेस्सा, भावेण किण्हणील-काउलेस्साओ; भवमिद्विया अभवसिद्विया, मिच्छत्तं, असाण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुवजुत्ता वीति अणागारुवजुत्ता वा^{१९} ।

आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, वादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, वादर-पृथिवीकाय, औदारिकक्रमाययोग, औदारिकक्रमाययोग और कार्मणक्रमाययोग ये तीन योग; नडुंसयवेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छदों लेश्याएं; भावसे कृण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्याय, अमन्निक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न. २१८

पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|----|---|---|-----|----|--------|-----|---------|----|----|----|-----|----|---|-------|-----|------|-----|
| गु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | मत्ति | आ | उ | |
| १ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि. | जा. | प | | | | एके | पृ | भो.मि. | मि. | कुम. | अम | अम | अच | का | मा | अ | | आहा | साका | अना |
| | | | | | | | | कार्म | मि. | कुश्रु. | | | | अणु | | | | अना | अना | |

नं. २१९

वादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|----|---|---|-----|----|--------|-----|---------|----|----|----|-----|----|---|-------|-----|------|-----|
| गु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | मत्ति | आ | उ | |
| १ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि. | जा. | प | | | | एके | पृ | भो.मि. | मि. | कुम. | अम | अम | अच | का | मा | अ | | आहा | साका | अना |
| | | | | | | | | कार्म | मि. | कुश्रु. | | | | अणु | | | | अना | अना | |

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्काणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइंदियजदी, वादरपुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णडुंसयवेद, चत्तारि कमाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खु-दंसण, दव्णेण छ लेस्सा, भावेण किण्हणील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असाण्णिणो, आहारिणो, मागारुवजुत्ता वीति अणागारुवजुत्ता वा^{२०} ।

“तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्काणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजदी, वादरपुढवि-

उन्हीं वादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक वादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, वादरपृथिवीकाय, औदारिकक्रमाययोग, नडुंसयवेद, चारों कपाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छदों लेश्याएं; भावसे कृण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्याय; असंसिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक वादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, वादरपृथिवीकाय, औदारिकक्रमाययोग

नं. २२०

वादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|----|---|---|-----|----|-------|------|---------|----|----|----|-----|---|---|-------|-----|------|-----|
| गु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | मत्ति | आ | उ | |
| १ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | |
| मि. | जा. | प | | | | एके | पृ | औदा. | नपु. | कुम | अम | अच | मा | अणु | अ | | | आहा | साका | अना |
| | | | | | | | | कार्म | मि. | कुश्रु. | | | | अणु | | | | अना | अना | |

नं. २२१

वादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|----|---|---|-----|----|-------|------|---------|----|----|----|-----|---|---|-------|-----|------|-----|
| गु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | मत्ति | आ | उ | |
| १ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | १ | १ | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | १ | २ | २ | |
| मि. | जा. | प | | | | एके | पृ | औदा. | नपु. | कुम. | अम | अच | मा | अणु | अ | | | आहा | साका | अना |
| | | | | | | | | कार्म | मि. | कुश्रु. | | | | अणु | | | | अना | अना | |

काओ, दो जोग, गंधुमयवेद, चत्तारि क्रमाय, दो अण्णाण, असंजम, अचस्सुदंसण, दब्बेण काउ-भुक्केस्सा, भायेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, मिन्डत्तं, अगण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, ताराखवजुत्ता हेति अणागारु-वजुत्ता ता ।

एवं बादरपुट्टनिणिव्वत्तपज्जत्तस्स तिण्णि आलावा वत्तन्वा । बादरपुट्टविलिद्धि-अपज्जत्तस्स बादरेंदिय-अपज्जत्त-भंगो । सुहुमपुट्टवीए सुहुमंडदिय-भंगो । णवरि सुहुम-पुट्टिकाओ ति तत्तन्वं ।

आउकाइयाणं पुट्टनि-भंगो । णवरि मामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दब्बेण काउ-मुक्क-फल्लिण्ण-लेस्साओ तत्तन्वाओ । तेसिं चेम पज्जत्तकाले दब्बेण सुहुमआळणं काउलेस्सा ता । बादर-आळणं फलिहण्णलेस्सा । कुदो ? धणोदिधि-धणवलयागास-पट्टि-पार्णीराणं चाल्लण्ण-दंसणगादो । धमल-किमण-णील-पीयल-त्ताअंन-पणीय-दंस-णादो ण धमलण्णमेव पणीयमिदि के नि भणंति, तण्ण वडडे । कुदो ? आयारमावे

ओर कामंणकारयोग ये दो योगः नपुसकयेत्त, चारों कराय, इमति ओर कुट्टुत्त ये दो अमान, गणयम, गवअइसीन, दुब्बसे कापोत्त ओर शुक्क लेदयाणं, भावये कृष्ण, नील ओर कापोत्त लेदयाण, अण्णमिद्धिक, अण्णमिद्धिक-मिथ्याल, अण्णमिद्धिक, आहारक, अनाहारक, साकारोप-योगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

रसमकार बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्यान्तक जीवोंके सामान्य, पर्यान्त ओर अपर्यान्त ये गान आलाप कहना चाहिये । बादर पृथिवीकायिक लक्ष्यपर्यान्तक जीवोंके आलाप बादर परेन्द्रिय अपर्यान्त जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिये । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिये । विशेषता यह है कि 'सूक्ष्म एकेन्द्रिय' के स्यात्पर 'सूक्ष्म पृथिवीकायिक' ऐसा आलाप कहना चाहिये ।

अन्वकायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिये । विशेष बात यह है कि सामान्य आलाप कहते समय 'पृथिवीकायिक' के स्यात्पर 'अन्वकायिक' और लेदया आलाप कहते समय द्रव्यसे अपर्यान्तकालमें कापोत्त और शुद्ध अण्णम और पर्यान्तकालमें एकेन्द्रियवाली अण्णम शुक्क लेदया कहना चाहिये । उन्हीं परम अन्वकायिक जीवोंके पर्यान्तकालमें द्रव्यसे कापोत्त लेदया कहना चाहिये । तथा बादरकायिक जीवोंके एकेन्द्रियवाली शुक्क लेदया कहना चाहिये, मनोवोधियात्त ओर धमलण्णयत्त द्वारा आहारमये गिरे हुए पानीका धरलजल देखा जाता है । यहाँ पर कितने ही आहार देखा कहते हैं कि, धरल, कृष्ण, नील, पत, एक और आलाप वर्णका पानी देखा आहारमये पानी परलजल ही होता है, ऐसा कहना नहीं चलता है ? परंतु उनका यह

मद्धियाए संजोगेण जलस्स बहुवण्ण-ववहार-दंसणदो । आळणं सहाववण्णो पुण धवलो चेव ।

एवं चैव बादरआउकायस्स वि तिण्णि आलावा वत्तन्वा । णवरि पज्जत्तकाले दब्बेण फलिहलेस्सा एकत्ता चैव । णत्थि अण्णत्थ विससो । बादरआउकाइयाणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पि तिण्णि आलावा एवं चैव वत्तन्वा । बादरआउलद्धिअपज्जत्ताणं बादरआउलण्वत्तिअपज्जत्त-भंगो । सुहुमआउकाइयाणं सुहुमपुट्टविकाइय-भंगो । सुहुमआउकाइयाणिव्वत्ति-पज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च सुहुमपुट्टविपज्जत्तापज्जत्त-भंगो ।

तेउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्ता-पज्जत्ताणं च पज्जत्त-णामकम्मोदयेउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादर-तेउलद्धिअपज्जत्ताणं च, आउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं पज्जत्ताणामकम्मोदयआउकाइयाणं तेसिं चैव पज्जत्तापज्जत्ताणं

कहना युक्ति संगत नहीं है, क्योंकि, आधारके होने पर मट्टीके सयोगसे जल अनेक वर्णवाला हो जाता है ऐसा व्यवहार देखा जाता है । किन्तु जलका स्वाभाविक वर्ण धवल ही है ।

रसमकार बादर अन्वकायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्यान्त ओर अपर्यान्त ये तीन आलाप कहना चाहिये । विशेष बात यह है कि उनके पर्यान्तकालमें द्रव्यसे एक स्फटिक वर्णवाली शुक्क लेदया ही होती है, इसके सिवाय अन्य पृथिवीकायिकके आलापोंसे अन्वकायिकके अन्य आलापोंमें और कोई विशेषता नहीं है । इसीप्रकार बादर अन्वकायिक निर्वृत्तिपर्यान्तक जीवोंके उक्त तीन आलाप कहना चाहिये । बादर अन्वकायिक लक्ष्यपर्यान्तक जीवोंके आलाप अन्वकायिक निर्वृत्त्यपर्यान्तक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिये । सूक्ष्म अन्वकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । सूक्ष्म अन्वकायिक निर्वृत्तिपर्यान्तक, सूक्ष्म अन्वकायिक निर्वृत्त्यपर्यान्तक और सूक्ष्म अन्वकायिक लक्ष्यपर्यान्तक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके पर्यान्त और अपर्यान्त आलापोंके समान जानना चाहिये ।

तैजस्कायिक जीवोंके ओर उन्हीं पर्यान्तक अपर्यान्तक जीवोंके, बादरतैजस्कायिक जीवोंके ओर उन्हीं बादरतैजस्कायिक पर्यान्तक अपर्यान्तक जीवोंके, पर्यान्त नामकर्मके उदय-चाले तैजस्कायिक जीवोंके ओर उन्हींके पर्यान्त अपर्यान्त भेदोंके तथा बादर तैजस्कायिक लक्ष्यपर्यान्तक जीवोंके आलाप अन्वकायिक जीवोंके ओर उन्हींके पर्यान्तक अपर्यान्तक भेदोंके, बादर अन्वकायिक जीवोंके ओर उन्हींके पर्यान्तक अपर्यान्तक भेदोंके, पर्यान्त नामकर्मके उदय-चाले अन्वकायिक जीवोंके ओर उन्हींके पर्यान्तक अपर्यान्तक भेदोंके, तथा बादर अन्वकायिक

चादरथाउकाइयलद्विअपञ्चत्तानं च जन्नाक्रमेण भंगो । गत्ररि तेउकाइयाणं दब्बेण काउ-
मुक्कत्तगणिल्लेस्साओ । तेसिं चैव पञ्चत्तानं दब्बेण काउ-तवणिल्लेस्साओ । एवं
पञ्चत्तानामकम्मोदयाणं दोणहं पि वत्तव्वं । चादरकाइयाणं तेउ-भंगो । एवं चैव तेसिं-
पञ्चत्तानं । गत्ररि दब्बेण तवणिल्लेस्साओ । एव पञ्चत्तानामकम्मोदयाणं पि दब्ब
लेस्सा वत्तव्वना ।

मुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं मुहुम-भंगो । वाउकाइयाणं तेउ-भंगो ।
गत्ररि दब्बेण काउ-मुक्क-नोमुक्क-मुगवणिल्लेस्साओ । तेसिं पञ्चत्तानं काउ-नोमुक्क-
नत्तगणिल्लेस्साओ जीवोंके आलापोंके समान यथाक्रमसे जानना चाहिए ।

विशेषार्थ—तैजस्कायिक जीवोंके आलाप शक्त्तायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं,
इस बातके गतिरि करेनेके लिये मूलमें 'इव' या 'सख्खा' ऐसा कोई पाठ नहीं दिया है । परंतु
पहले शक्त्तायिक जीवोंके संगुण भेद प्रमेयोंके आलाप कइ भाये हैं और यहाँ तैजस्कायिक
जीवोंके आलापोंके कथन करनेका प्रकरण है, इसलिये प्रकृतमें तैजस्कायिक जीवोंके भेद-प्रमेयोंके
आलाप शक्त्तायिक जीवोंके भेद-प्रमेयोंके आलापोंके समान बतलाये हैं यही समझना
चाहिए । मूलमें भाये हुए 'जन्नाक्रमेण' परसे भी इसी कथनकी पुष्टि होती है ।

विशेष बात यह है कि तैजस्कायिक जीवोंके उद्भवे कपोल, शुक्र और तपनीय लक्ष्या
होती है । तथा उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्मजीवोंके द्रव्यसे कापोलेश्या और पर्याप्तक चादर-
जीवोंक तपनीय लक्ष्या होती है । इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उद्भववाले सामान्य और
पर्याप्त इग रोनोंकी प्रकारके तैजस्कायिक जीवोंके उद्भवलक्ष्या कहना चाहिए । चादर तैजस्कायिक
जीवोंके आलाप सामान्य तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए । इसीप्रकार चादर
तैजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके आलाप भी होते हैं । विशेषता यह है कि इनके द्रव्यसे तपनीय
अर्थात् शुक्रलक्ष्या होती है । इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उद्भववाले तैजस्कायिक जीवोंके भी
द्रव्यलक्ष्या कहना चाहिए ।

सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म अन्त्रायिक जीवोंके आलापोंके समान
जानना चाहिए । प्रायुक्तायिक जीवोंके आलाप तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना
चाहिए । विशेष बात यह है कि द्रव्यसे कापोल, शुक्र, गोमूत्र और मूंगके वर्णवाली लक्ष्याएं
होती हैं । उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्म जीवोंके कापोलेश्या और चादर पर्याप्त जीवोंके गोमूत्र

१ चादरकाइयउ सुक्का तेउ य X X । गा. जी. ६९७

२ उप पत्तोइरवो सुग्गदिमा, पत्तवाता गोमूत्रवर्णा, अव्यवर्णरित्तुवाता । त. र. गा ३ १ ७
३ य सुक्कवाता । गोमूत्रसुक्कवाता कम्मो अव्यवर्णणी य । गो. जी ६९७ गोमूत्रपुण्णामपण्णानं यगुक्कव-
पत्त ३३ । चादरा कइयाणं इत्थत्तं ता व ठोणत्स ॥ पि. ना. १२३

सुगवणिल्लेस्साओ । एवं चादरवाउजं तेसिं पञ्चत्तानं च दब्बेलेस्साओ हवंति । जदि
वि सुग्गा अणेयवण्णा, तो वि रूडिवसा सामलवण्णो पुग्गवण्णो ति धेप्पदि । सुहुम-
वाउजं सुहुमतेउ-भंगो ।

वणफ्हकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, वारस जीवसमासा, चत्तारि
पञ्चत्तीओ चत्तारि अपञ्चत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्ख-
गदी, एइंदियजादी, वणफ्हकाओ, तिण्णि जोग, णंउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो

और मूंगके वर्णवाली लक्ष्याएं होती हैं । इसीप्रकार चादर वायुक्तायिक सामान्य जीवोंके
और उन्हीं चादर वायुक्तायिक पर्याप्त जीवोंके द्रव्य लक्ष्याएं होती हैं । यद्यपि मूंग अनेक
वर्णवाली होती है, तो भी रुडिके वरासे 'इयमलवर्ण' ही मूंगका वर्ण प्रकृतमें द्रवण किया
गया है । सूक्ष्म वायुक्तायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान
जानना चाहिए ।

वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,
और वारह जीवसमास होते हैं, जिनमें समतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक पर्याप्त, समति-
ष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, अप्रति-
ष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, इसप्रकार प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके चार
जीवसमास होते हैं । चादरनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, चादरनित्य-
निगोद साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-
पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, चादरचतुर्गतिनिगोद-साधारण-
वनस्पतिकायिक-पर्याप्त, चादरचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्म-
चतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-साधारण-वन-
स्पतिकायिक-अपर्याप्त, इसप्रकार साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके आठ जीवसमास
होते हैं । चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्रण, तीन प्राण, चारों सद्भाग, तिर्यच-
गति, पकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और
कर्मणकाययोग ये तिन योग, नपुंसत्ववेद, चारों कयाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान,

नं. २२२ वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

| शु | जी. | प | प्रा | स. | ग | इ | का | यो. | वे | क | सा | सय | द | ले. | म | म | सति | आ. | उ. |
|----|-------|----|------|----|---|---|----|-----|----|---|------|----|----|-----|----|---|-----|------|-------|
| १ | १२ | ४५ | ४ | ४ | २ | १ | १ | ३ | १ | ४ | २ | १ | १ | ६ | २ | १ | १ | २ | २ |
| मि | माधा. | ४अ | ३ | ति | ६ | ६ | ६ | ओ. | २ | ६ | कुम | अस | अव | मा | ३ | म | अम | आहा | माका. |
| | ८ | | | | | | | का. | १ | | कुमु | | | अशु | अ. | | | अना. | अना. |
| | ४ | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेषां चैव पञ्चत्वारिंशत् भण्णमाणे अस्थि एव गुणद्वयं, एतौ जीवसमासो, चत्वारि पञ्चत्वारिंशत्, चत्वारि सण्णायो, तिरिक्खगदी, एइंदियजदी, पत्तेयसरीर-वणफडकाओ, ओरालियकायजोगो, णडंसयवेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, वचमडुमण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभासिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, मागारुवजुत्ता हँति अणारु-वजुत्ता वा ।

तेषां चैव अपञ्चत्वारिंशत् भण्णमाणे अस्थि एव गुणद्वयं, एतौ जीवसमासो, चत्वारि अपञ्चत्वारिंशत्, तिण्णिण पाण, चत्वारि सण्णायो, तिरिक्खगदी, एइंदियजदी, पत्तेयसरीरवणफडकाओ, दो जोग, णडंसयवेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अनकडुंसण, दब्बेण काउ-मुहलेस्साओ, भवेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभासिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, मागारुवजुत्ता हँति

उर्ध्वी प्रत्येकशरीर-वतस्पतिक्रायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्याष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिक्रायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पति-काय, ओशरिक्काययोग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुथुत ये दो अस्मान, असंयम, नपुंसकवेद, इव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं अभ्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक. मिथ्यात्व, अस्त्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

उर्ध्वी प्रत्येकशरीर-वनस्पतिक्रायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्याष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिक्रायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिक्राय, पौमारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुथुत ये दो अस्मान, असंयम, अचञ्चुदर्शन, इव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, अस्त्निक,

नं. २२६ प्रत्येकवनस्पतिक्रायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|---|------|---|---|----|-----|----|----|----|------|------|-----|-----|----|----|--------|-----|------|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | जा. | यो | वे | क. | प्रा | सप | द | ले. | म | स | संज्ञि | आ. | उ |
| १ | १ | ४ | ३ | ४ | १ | ति | ३ | ३ | १ | ४ | २ | २ | १ | ३ | २ | २ | १ | १ | २ |
| मि. | प्र. | अ | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | कुम. | अस | अच. | ३ | म. | मि | अस. | आहा | साहा |
| | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | कुथु | कुथु | अनु | अनु | अ. | अ. | अ. | अना | जना. |

अणारुवजुत्ता वा ।

एवं णिव्यचिपञ्चत्तस्स वि तिण्णिण आलावा वचन्वा । लद्धिअपञ्चत्ताणं पि एगो आलावो पत्तेयवणफड-अपञ्चत्ताण जहा तथा वचन्वो । जहा पत्तेयसरीराणं, तथा वादरणिगोदपडिद्धिदानं पि वचन्वं ।

साधारणवणफडकाइयाण भण्णमाणे अस्थि एव गुणद्वयं, अह जीवसमासा, चत्वारि पञ्चत्वारिंशत् चत्वारि अपञ्चत्वारिंशत्, चत्वारि पाण तिण्णिण पाण, चत्वारि सण्णायो, तिरिक्खगदी, एइंदियजदी, साधारणवणफडकाओ, तिण्णिण जोग, णडंसयवेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचकडुंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण क्रिण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया असवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणारुवजुत्ता वा ।

इसीप्रकार निवृत्तिपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिक्रायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । लब्धपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिक्रायिक जीवोंका एक अपर्याप्त आलाप प्रत्येकशरीर-वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीवोंके आलापके समान कहना चाहिए । तथा, जिसप्रकार अभी प्रत्येकशरीर-वनस्पतिक्रायिक जीवोंके आलाप कहे हैं, उसीप्रकारसे वादरनिगोद-प्रतिष्ठितवनस्पतिक्रायिक जीवोंके भी आलाप कहना चाहिए ।

साधारण वनस्पतिक्रायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर— एक मिथ्याष्टि गुणस्थान, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद इन दोनोंके वादर और सूक्ष्म ये दो दो भेद तथा इन चारोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे आठ जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारण-वनस्पतिक्राय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, और कर्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कयाय, कुमति और कुथुत ये दो अस्मान, असंयम, अचञ्चुदर्शन इव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक,

नं. २२७ प्रत्येकवनस्पतिक्रायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|---|------|---|---|----|-----|----|----|----|------|------|-----|-----|----|----|--------|-----|------|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | जा. | यो | वे | क. | प्रा | सप | द | ले. | म | स | संज्ञि | आ. | उ |
| १ | १ | ४ | ३ | ४ | १ | ति | ३ | ३ | १ | ४ | २ | २ | १ | ३ | २ | २ | १ | १ | २ |
| मि. | प्र. | अ | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | कुम. | अस | अच. | ३ | म. | मि | अस. | आहा | साहा |
| | | | | | | | ३ | ३ | ३ | ३ | कुथु | कुथु | अनु | अनु | अ. | अ. | अ. | अना | जना. |

गणक-मंगो । तेति चेत्त मुद्रमणं साधारणसरीसुद्रमणकइकाइय-मंगो ।
पति चउद्विगिगोदो ति नन्व । मं गिचणिगोदणं पि, णत्ति एत्थ गिचणि-
गोदो ति नन्व ।

'नमहाद्याणं भणमणे अत्थि चोहम गुणद्वयाणि, दम जीवसमासा, छ पञ्ज-
नीओ उ अपञ्जनीओ पंच पञ्जनीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण
सत्त पाण षट् पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण दो
पाण एस पाण, चत्तारि सणाओ सीणसणा ति अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादी चत्तारि
चाओ, नमहाओ, पणारु जोग अजोगो ति अत्थि, तिणि वेद अमगदेवो वि
अत्थि, चत्तारि रुपाय अरुसाओ ति अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण,

अतिव्याधिक जीवके गालाणके समान होते हैं । उन्हां मरर चतुर्गति निगोद वनस्पतिक्रियाक
गोते पाप मरर साधारणशरीर नन्वति मरके आलाणके समान होते हैं । सामान्य
पानेन 'पर्याप्त' भेदबद्धित उन्हां सुद्ध चतुर्गति निगोद जीवके आलाप साधारणशरीर सुद्ध
पानेन 'पर्याप्त' जीवके गालाणके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि साधारण शरीरके
पाप 'चतुर्गति निगोद' इतना गते रहना चाहिए । इसी प्रकार नित्यनिगोद साधारणशरीर-
पानेन 'पर्याप्त' गोते भी आलाप होते हैं । विशेष बात यह है कि यहाँ पर ' नित्यनिगोद '
इत परसे रहना चाहिए ।

पञ्चक्रियाक जीवके सामान्य आलाप रहने पर—चौदहों गुणस्थान, डीन्द्रिय,
डीन्द्रिय, चतुर्गति, मनी पचेन्द्रिय और सती पचेन्द्रिय जीवके पर्याप्त और अपर्याप्तके
भेदसे इन जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां पाच पर्याप्तियां और पांच
पर्याप्तियां; इहो ज्ञान, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण, सात
प्राण, पाच प्राण, अट्ट प्राण, चार प्राण चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा
रस्यसंज्ञाया भी है, चारों गतियां, डीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय,
कइहो योग तथा प्रयोग्याल भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों रुपाय
तथा अनाहारकाय भी है, आठों जल, सातों संजम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

१. २३४ पञ्चक्रियाक जीवके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|-------|---|---|---|----|----|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | जी | प | प्रा. | म | ग | ३ | रा | यो | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|----|---|-------|---|---|---|----|----|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

द्व-भवेहि छ लेसाओ अलेसा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,
सण्णियो असण्णियो णेव सण्णियो णेव असण्णियो, आहारियो अणहारियो, सागरु-
वजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुपवदुवजुत्ता वा ।

" तेभि चैव पञ्जत्तानं भणमणे अत्थि चोहम गुणद्वयाणि, पंच जीवसमासा,
छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण
चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सणाओ सीणसणा वि अत्थि, चत्तारि गदी,
वेइंदियादी चत्तारि जदीओ, तसकाओ, एगारु जोग अजोगो वि अत्थि, तिणि वेद
अमगदेवो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अरुसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम,
चत्तारि दंसण, दव-भवेहि छ लेसा अलेसा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,
छ सम्मत्तं, सण्णियो असण्णियो णेव सण्णियो णेव असण्णियो वि अत्थि, आहारियो

लेद्याएं तथा अलेस्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक,
असंशिक तथा सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक,
अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत्
उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप रहने पर—चौदहों गुणस्थान,
डीन्द्रिय, चतुर्गति, असंती पचेन्द्रिय और सती पचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच
पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पाच पर्याप्तियां, इहो प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण,
सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी
है, चारों गतियां, डीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी
चार योगोंको छोड़कर दोन ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेद-
स्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, आठों जल, सातों संजम, चारों दर्शन,
द्रव्य और भावसे छहों लेद्याएं तथा अलेस्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों
सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक तथा सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान

नं. २३५ त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|-------|---|---|---|----|----|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | जी | प | प्रा. | म | ग | ३ | रा | यो | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|----|---|-------|---|---|---|----|----|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

वा, छ पाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दवंणेण काउ-सुम्फलेस्सा, भविण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा तदुमएणुवजुत्ता वा ।

^{१३} तसकाइय-मिच्छाइहीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दम जीवसमाप्ता, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अह पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि

और मनःपर्यय ज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असयम, सामाधिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्प्रमत्व, सधिक, असधिक तथा अनुभव स्थान भी है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

विशेषार्थ—यहां पर विकल्पसे तीन अथवा चार योग बतलाये हैं इसका कारण यह है कि जन्मके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तपर्यंत औदारिकमिश्र और वैकियिकमिश्र ये दो योग होते हैं और विग्रहगतिमें कार्मणकाययोग होता है इसलिये ये तीनों योग अपर्याप्त अवस्थामें बन जाते हैं । परंतु आहारकमिश्रकाययोग आहारकशरीरकी अपेक्षा अपर्याप्त अवस्थामें होता तो अवश्य है । फिर भी औदारिकशरीरकी अपेक्षा वहां पर्याप्तता भी है, इसलिये जब छठवे गुणस्थानमें होनेवाले आहारकशरीरकी अपेक्षा अपर्याप्तताकी अविश्वसा कर दी जाती है तब तीन योग कहे जाते हैं, और जब उसकी विश्वसा कर ली जाती है तब अपर्याप्त अवस्थामें चार योग भी कहे जाते हैं ।

त्रसकाधिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण स्थान, द्वीन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंखी पंचेन्द्रिय और सती पंचेन्द्रिय जीवसंख्यी पर्याप्त अपर्याप्तके भेदसे दश जीवसमास, संखी पंचेन्द्रिय जीवोंके छह पर्याप्तियां और छह अपर्याप्तियां, असंखी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तिया और पांच अपर्याप्तियां, संखी-पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंखी-पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण

नं. २३७ त्रसकाधिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | क | का | क्र | यो | वे | क | सा | स | म | स | ग | मा | उ |
|----|----|----|------|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १० | ६५ | १०,७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | २ | २ | २,७ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३,७ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४,७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५,७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६,७ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७,७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८,७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९,७ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १०,७ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवद्वजुत्ता वा ।

'तेमि चैन अपज्जत्तानं भणमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणानि, पंच जीवसमाप्ता, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा सीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, वेइदियादी चत्तारि जादीओ, तमसाओ, तिण्णि जोग चत्तारि वा, तिण्णि वेद अवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ

हे, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार उपयोगि युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

विशेषार्थ—त्रसकाधिक जीवोंके पर्याप्तकालसंख्यी आलापोंका वर्णन करते समय उन्हें अनाहारक भी कहनेका कारण यह है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवलिसमुदात्तके प्रतर और लोकपूरणन्प अवस्थाओंमें नोकरमें वर्णनाओंके नहीं आनेके कारण जीव अनाहारक तो होता है परंतु उस समय पर्याप्त नामकर्मका उदय और वर्तमान शरीरके पूर्ण होनेके कारण वह पर्याप्त भी है, इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त अवस्थामें भी अनाहारकता बन जाती है । इन्द्रिय मार्गणमें पंचेन्द्रिय मार्गणके आलापोंका कथन करते हुए पर्याप्त आलापोंका कथन करते समय इसीप्रकार अनाहारक कहा है । वहां पर भी अनाहारक कहनेका ऊपर कहा गया कारण जान लेना । इसीप्रकार दूसरे स्थलोंमें भी जानना चाहिए ।

उन्हीं त्रसकाधिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंख्यी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासा-दसस्यग्दृष्टि, अनिपनस्यग्दृष्टि, प्रमत्तस्यत् और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंखी और संखी पंचेन्द्रिय जीवोंसंख्यी पांच अपर्याप्त जीवसमास, चारों अपर्याप्तिया, पांच अपर्याप्तिया, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों सजाए तथा क्षीणसमास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको भाँटि लेकर चार जातिया, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंख्यी तीन योग अथवा चार योग, तीनों वेद तथा आपगतवेदस्थान भी है, चारों रुपाय तथा अकरायस्थान भी है, विभंगावधि

नं. २३६ त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | क | का | क्र | यो | वे | क | सा | स | म | स | ग | मा | उ |
|----|----|----|------|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १० | ६५ | १०,७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | २ | २ | २,७ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३,७ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४,७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५,७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६,७ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७,७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८,७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९,७ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १०,७ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुचुत्ता ह्येति अणागारुचुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तयसाओ, तिण्णिण जोग, तिण्णिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णण, असज्जो, दोइंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुचुत्ता ह्येति अणागारुचुत्ता वा" ।

और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं त्रसकारिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पचेन्द्रिय और संज्ञी पचेन्द्रिय सबन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, सन्धी पंचेन्द्रियोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच अपर्याप्तियां; सन्धी पचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चारों द्वीन्द्रिय-जातिकी आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैकृतिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कयाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २३२ त्रसकारिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १. | जा | ५ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|----|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णिण वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णिण अण्णण, असंजम, दो दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुचुत्ता ह्येति अणागारुचुत्ता वा ।

"तेसिं चैव पज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णम पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णिण वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णिण अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्सा,

और सात प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण. द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतिया, द्वीन्द्रियजातिकी आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना तेरह जोग, तीनों वेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं त्रसकारिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, सन्धी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां; सन्धी पचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवों तक क्रमसे दस प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चारों द्वीन्द्रियजातिकी आदि लेकर चार जातिया, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैकृतिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु

नं. २३१ त्रसकारिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १. | जा | ५ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|----|----|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

नामगणममाहट्टिपट्टि जात अजोषिकेवलि ति मूलोघ-भंगो ।

अह्लादयणं भणमणे अथि अदीदगुणट्टाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीद-
पञ्चतीओ, अदीदपाणा, मीणमण्णा, चट्टगदिमदीदो, अणिदिओ, अकाओ, अजोगो,
आगदोदो, अरुमाओ, केवलणणं, नेत मंजमो नेत असंजमो नेत संजमामंजमो,
केवलदंमण, दव्व-मोदि अलेस्सा, नेत भवसिद्धिया नेव अभवसिद्धिया, सडयसम्भत्तं,
नेत मणिणो नेत अमणिणो, अणाहारिणो, मागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता
वा होति ।

एतं समत्तायणिव्चपिपञ्जत्तस्स सिन्धोहट्टिपट्टि जात अजोषिकेवलि ति
मूयोप-भंगो ।

तस ह्लादय-लट्टि-अपञ्जत्तणं भणमणे अथि एयं गुणट्टाणं, पंच जीवसमासा,
छ अपञ्चतीओ पंच अपञ्चतीओ, सत्त पाण सत्त पाण छपाण पंच पाण चत्तारि पाण,

एतत्तायिक मासाएनमस्सरट्टि जीनोंसे लेकर अयोषिकेवली निन तकके आलाप मूल
ओचालापके समान जानता चाहिए ।

एतायिक जीनोंके आलाप कहने पर—अतीत गुणस्थान, अतीत जीवसमास, अतीत
पर्याय, भतीत प्राण, क्षीणसजा, अतीत चतुर्गति, अतीन्द्रिय, अकाय, अयोग, अपगतवेद,
अक्रयाय, केवलज्जन, सयम, असयम और संयमासयम इन तीनों विकल्पोंसे निमुक्त,
केवलपूर्वज, द्रव्य और भावसे अलेस्य, भव्यमितिक और अभव्यमितिक इन दोनों विकल्पोंसे
रहित, शायिकमस्सरट्ट, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक,
मासर और अनाकार उपयोगोंसे युक्तपत् उपयुक्त होते हैं ।

एतस्मिन्कार एतकायिक निवृत्तिपर्याप्तक जीनोंके सिव्याद्ये गुणस्थानसे लेकर
एयोषिकेवली गुणस्थान तकके आलाप मूल ओचालापोंके समान जानना चाहिए ।

एतकायिक लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक सिव्याद्ये गुणस्थान,
त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुर्न्द्रिय, सभी और अस्त्री पचेन्द्रिय सबन्धी पांच अपर्याप्त जीव-
मासा, संज्ञी पचेन्द्रियोंके छतों अपर्याप्तिया, अस्त्री पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच
अपर्याप्तियां, सभी पचेन्द्रियसे लेकर त्रीन्द्रियतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण,

न २५०

अक्रयायिक जीवोंके आलाप.

| प | प | प | ग | ग | ग | क | क | क | सा | सा | सा | म | म | म | ल | ल | ल | म | म | म | स | स | स | अ | अ | अ | उ | उ | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, वीहंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, वे
जोग, गंधुंसायेवो, चत्तारि कसाय, दो अपणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-
सुक्कलेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सिच्छत्तं,
सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता होति अणागारवजुत्ता वा ।

एत कायमगणा समत्ता ।

जोगाणुवदेण अणुवावो मूलोघ-भंगो । गवरि विसेसो तेरह गुणट्टाणाणि, अजोषि-
गुणट्टाणं अदीदगुणट्टाणं च गत्थि, तदो जाणिज्जग मलोचालाना वत्तव्वा ।

मणजोगीणं भणमणे अथि तेरह गुणट्टाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पञ्ज-
चीओ, दस पाण । केहं वचि-कायपाणे अवणोति, तण्ण वड्ढे; तेसि मत्ति-भंगवावो ।

पाच प्राण और चार प्राण, चारों सशणं, तिर्यच और मनुष्य ये दो गतियां, छिन्द्रियजातिको
आदि लेकर चार जातियां, वसकाय, औदारिकमितिक्राययोग और कामणकाययोग ये दो योग
नहुंसकवेद, चारों कयाय, आदिके दो अज्ञान, असयम, आदिके दो वरुण, द्रव्यसे कापोत और
शुल लेदयाप. भावसे कृणा, नील और कापोत लेदयाणं; भव्यमितिक, अभव्यमितिक; मिथ्यात्व,
संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपरयोगी और असाकारोपरयोगी होते हैं ।

इसप्रकार कायमर्गणा समाप्त हुई ।

योगमर्गणोंके अनुचावसे आलापोंका क्रम मूल ओच आलापोंके समान जानना
चाहिए । विशेष बात यह है कि यहां पर तेरह ही गुणस्थान होते हैं, अयोषिगुणस्थान
और अतीतगुणस्थान नहीं होता है जो आगमाधिरोगसे जानकर मूल ओचालाप कहना
चाहिए ।

मनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, एक सजी-पर्याप्त
जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, वरुणों प्राण होते हैं । कितने ही आचार्य मनोयोगियोंके दश
प्राणोंसे वचन और काय प्राण कम करते हैं, किन्तु उनका धैरा करना चंडिन नहीं होता है,
स्वोंकि, मनोयोगी जीवोंके वचनबल और कायबल इन दो प्राणोंकी शक्ति पाई जाती है,

नं. २५१

असक्रयायिक लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

| प | प | प | ग | ग | ग | क | क | क | सा | सा | सा | म | म | म | ल | ल | ल | म | म | म | स | स | स | अ | अ | अ | उ | उ | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

वचि-कायवलिमिच-पुगल-संधस्स अत्थिचं पेक्खिअ पज्जत्तीओ होति चि सरिर-वचि-पज्जत्तीओ अत्थि । चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद अचगद्वेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट णाण, सच्च संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णियो णेव असण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा सागार-अणगारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{२३} ।

मणजोगि-मिच्छइद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

इसलिये ये दो प्राण उनके वन जाते हैं । उसीप्रकार वचनबल और कायबल प्राणके निमित्तभूत पुद्गलस्कन्धका अस्तित्व देखा जानेसे उनके उक्त दोनों पर्याप्तिया भी पाई जाती हैं इसीलिये उक्त दोनों पर्याप्तिया भी उनके वन जाती हैं । प्राण आलापके आगे चारों सज्ञाप तथा क्षीणसज्ञास्थान भी है । चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्यमनो-योग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ये चार मनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेकस्थान भी है । चारों कयाय तथा अकयायस्थान भी है । आठों ज्ञान, सातो सयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यत्त्व, सन्निक तथा सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है । आहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सर्त्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाप, चारों गतिया, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो

नं. २४२

मनोयोगी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----------|------|---|------|---|---|---|-----|----|----|---|------|----|---|-----|---|---|-------|----|---------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यी | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ | |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | द्र | ६ | २ | ६ | १ | २ | |
| अयो विना | स. प | | | | | | मनो | | | | | | | मा | ६ | म | अ | अव | संज्ञा. | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | अना. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | यु उ |

दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{२४} ।

मणजोगि-सासणसम्मइद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, (तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{२४} ।

मणजोगि-सम्मामिच्छइद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो,

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सर्त्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सज्ञाप, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कयाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,

नं २४३

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|---|------|---|---|-----|----|-----|----|---|------|----|--------|-----|---|---|-------|----|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यी | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ | |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | द्र | ६ | २ | ६ | १ | २ | |
| मि. | स. प | | | | | पचे | नस | मनो | | | | अस | चक्षु. | भा | ६ | म | मि. | स. | आहा | |
| | | | | | | | | | | | | | अच | | अ | | | | | सका |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | अना |

नं २४४

मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|---|------|---|---|---|------|----|----|---|------|----|-------|-----|---|---|-------|---|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यी | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ | |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | ४ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | द्र | ६ | २ | ६ | १ | २ | |
| विना | स. प | | | | | | मनो. | | | | | अस | चक्षु | मा | ६ | म | सासा | स | आहा | |
| | | | | | | | | | | | | | अच | | | | | | | सका |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | अना |

सण्णो, आहारिणो, सागारवजुत्ता होति अणागारवजुत्ता वा^{१०८} ।

मणजोगि-अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो ।
णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा । सजोगिकेवलिसस सच्चमोसमणजोगो
इदि दो मणजोगा वत्तव्वा । सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति
ताव मूलोघ-भंगो । णवरि सच्चमणजोगो एक्को चैव वत्तव्वो । एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि,
णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चैव वत्तव्वो ।

मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि वारह्ण गुणट्टणाणि, एगो जीवसमासो, छ
पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ,
पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

ये तीन सम्यस्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अप्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर सयोजिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगी जीवोंके
आलाप मूल ओघालापोंके समान ही हैं, विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय
वारह्वें गुणस्थानतक चारों ही मनोयोग कहना चाहिए । किन्तु सयोजिकेवलीके सत्यमनो-
योग और असत्यमृया अर्थात् अनुभय मनोयोग ये दो ही मनोयोग कहना चाहिए ।

सत्यमनोयोगियोंके आलाप मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोजिकेवली गुणस्थानतक
मूल ओघालापोंके समान हैं । विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक सत्यमनो-
योग आलाप ही कहना चाहिए । इसीप्रकारसे असत्यमृया अर्थात् अनुभय मनोयोगियोंके
भी आलाप होते हैं । विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक असत्यमृया
मनोयोग आलाप ही कहना चाहिए ।

मृयामनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके वारह्ण गुणस्थान, एक सब्बी-पर्यान्त
जीवसमास, छहों पर्यान्तियां, दशों प्राण, चारों सक्कणं तथा क्षीणसबास्थान भी है । चारो
गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, मृयामनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है ।

नं. २४८

मनोयोगी प्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | के | हा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|------|------|----|------|---|---|---|----|----|----|----|----|----|---|----|---|---|-------|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ७ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| सयो | स.प | १० | ४ | ४ | १ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ७ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अयो | विना | १० | ४ | ४ | १ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ७ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| विना | विना | १० | ४ | ४ | १ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ७ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

कसाय अक्रसाओ वि अत्थि, केवलणणेण विणा सत्त गाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण,
दव्व-भावहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो,
सागारवजुत्ता होति अणागारवजुत्ता वा^{१०९} ।

मोसमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणसण्णाओ त्ति ताव मणजोगि-भंगो ।
एक्को चैव मोसमणजोगो वत्तव्वो । एवं सच्चमोसमणजोगीणं पि वत्तव्वं ।

वचिजोगीणं मण्णमाणे अत्थि तेरह्ण गुणट्टणाणि, पंच जीवसमासा, छ
पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण, मण-सरीर-
पज्जत्तीहितो उप्पणसत्तओ सरीर-मणबलपाणा उच्चत्ति । ताओ वि उप्पणसमयदो जाव
जीविदचरिससमओ त्ति ताव ण विणसंति । जेण मण-वचि-कायजोगा पाणेषु ण गहिदा

चारों कयाय तथा अकयायस्थान भी है । केवलबानके चिना सात ज्ञान, सातों संयम,
आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों
सम्यक्त्व संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मृयामनोयोगी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकयाय गुणस्थान तकके
आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान हैं । विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते
समय एक मृयामनोयोग आलाप ही कहना चाहिए । इसीप्रकार सत्यमृयामनोयोगियोंके भी
आलाप कहना चाहिए ।

वचनयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह्ण गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,
चतुरिन्द्रिय, असब्बी और सब्बी पंचेन्द्रिय जीवसवन्धी पांच पर्यान्त जीवसमास, छहों
पर्यान्तियां, पांच पर्यान्तिया, सब्बी पचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः दशों प्राण,
नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण होते हैं । मनःपर्यान्ति और शरीरपर्यान्तिसे
उत्पन्न हुई शक्तियोंको मनोबलप्राण और कायबलप्राण कहते हैं । ये शक्तियां भी उनके
उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जीवनके अन्तिम समयतक नष्ट नहीं होती हैं ।
और जिसकारणसे मनोयोग, वचनयोग और काययोग प्राणोंमें नहीं प्रद्वण क्रिये गये हैं,
इसलिये वचनयोगियोंके वचनयोगसे निरुद्ध अर्यान् युक्त अवस्थके होने पर भी दशों

नं २४९

मृयामनोयोगी जीवोंके आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | के | हा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|------|------|----|------|---|---|---|----|----|----|----|----|----|---|----|---|---|-------|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ७ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| सयो | स.प | १० | ४ | ४ | १ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ७ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अयो | विना | १० | ४ | ४ | १ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ७ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| विना | विना | १० | ४ | ४ | १ | १ | १ | ४ | ३ | ४ | ७ | ३ | ३ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नेण चचिजोग-गिरुद्धे नि दस पाणा हवन्ति । चत्तारि मण्णाओ सीणमण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेडंडियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि चचिजोग, तिण्णि वेद अणदवेदो पि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सच भंजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-भानेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, मण्णिणो अण्णिणो गेम मण्णिणो गेव अण्णिणो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता होति अण्णारुवजुत्ता ना मागार-अण्णारोहि जुगवदुवजुत्ता वा” ।

चचिजोगि-मिच्छादृष्टिं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वयं, पंच जीवसमासा, छ पञ्चचीओ पंच पञ्चचीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि मण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेडंडियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि चचिजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-

माण होने हैं । प्राण आलापक आगे चारों मशाय तथा क्षीणसत्तास्थान भी है । चारों गतियां, छिद्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद तथा अपगतयेवस्थान भी है । चारों कसाय तथा अकसायस्थान भी है । आठों गान, सातों मयम, चारों रसन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याण, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों मयकन, मत्रिक, अमत्रिक तथा सत्तिक और असत्तिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी भ्यान होता है : आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

चचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप करने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, छिद्रिय जीवोंने लगभग सभी पंचेन्द्रिय तन्त्रके जीवोंकी अपेक्षा पांच पर्याप्त जीवसमास, चारों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; चारों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों मत्राण, चारों गतिया, छिद्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों रसनयोग, तीनों वेद, चारों कसाय, तीनों अजान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य

नं. २०० चचनयोगी जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|----|----|---|----|----|----|-----|----|-------|----|---|----|---|---|-----|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | सं | ग. | द | का | जा | वो | वे | क | सा | मय | द | ले | म | स | मणि | आ | उ. |
| १ | ५ | ६ | १० | ६ | ४ | ४ | २ | ४ | ४ | ३ | ४ | २ | ७ | २ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| मि. | नी | प | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | वच | असा | अस | वक्षु | अ | अ | ५ | ५ | ५ | ५ | आहा | मका |
| | च | ” | ८ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | अम. | ” | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | म | ” | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

भावहेि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता होति अण्णारुवजुत्ता वा” ।

सासणसम्माडिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि चि ताव मणजोगीणं भंगो । णवरि चत्तारि चचिजोगा वचव्वा । सजोगिकेवलिस्स सचवचिजोगो असचमोसवचिजोगो च भवदि । सचवचिजोगस्स सचमणजोग-भंगो । णवरि जत्थ सचमणजोगो तत्थ ते अवणेण्ण सचवचिजोगो वचव्वो । मोसवचिजोगस्स वि मोसमणजोग-भंगो । णवरि मोसवचिजोगो वचव्वो । एवं सचमोसवचिजोगस्स वि वचव्वं । असचमोसवचिजोगस्स वचिजोग-भंगो । णवरि असचमोसवचिजोगो एकको चैव वचव्वो ।

और भावसे छहों लेश्याणं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सत्तिक, असत्तिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सजोगिकेवली गुणस्थान तकके चचनयोगी जीवोंके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । विशेष वात यह है कि वचनयोग आलाप कहते समय चार वचनयोग कहना चाहिए । सजोगिकेवली जिनके सत्यवचनयोग और असत्यसृष्टपावचनयोग ये दो ही वचनयोग होते हैं । सत्यवचनयोगके आलाप सत्यमनोयोगके आलापोंके समान होते हैं । विशेष वात यह है कि आलाप कहते समय जहाँ पहले सत्यमनोयोग कहा गया है वहाँ उसे निकाल करके उसके स्थानमें सत्यवचनयोग कहना चाहिए । सृष्टपावचनयोगके आलाप भी सृष्टमनोयोगके आलापोंके समान होते हैं । विशेषता यह है कि सृष्टपावचनयोग पर सृष्टपावचनयोग कहना चाहिए । इसी प्रकारसे सत्यसृष्टपावचनयोगके भी आलाप कहना चाहिए, अर्थात् उभयवचनयोगके आलाप सत्यसृष्टपावचनयोगके आलापोंके समान जानना चाहिए । असत्यसृष्टपावचनयोगके आलाप वचनयोग सामान्यके आलापोंके समान होते हैं । विशेषता यह है कि असत्यसृष्टपावचनयोग आलाप कहते समय एक असत्यसृष्टपावचनयोग ही कहना चाहिए ।

नं. २५२ चचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|----|----|---|----|----|----|-----|----|-------|----|---|----|---|---|-----|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | सं | ग. | द | का | जा | वो | वे | क | सा | मय | द | ले | म | स | मणि | आ | उ. |
| १ | ५ | ६ | १० | ६ | ४ | ४ | २ | ४ | ४ | ३ | ४ | २ | ७ | २ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| मि. | नी | प | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | वच | असा | अस | वक्षु | अ | अ | ५ | ५ | ५ | ५ | आहा | मका |
| | च | ” | ८ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | अम. | ” | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | म | ” | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

कायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणद्वगणणि, चोइस जीवसमासा, छ पज्ज-
त्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि
अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच
पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि
सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ,
पुढवीकायादी छक्काय, सत्त कायजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि
कैसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दन्व-भोवेहि छ
लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवासिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो
णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागासुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा
सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा^१ ।

काययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास,
छहो पर्याप्तिया छहों अपर्याप्तिया, पांच पर्याप्तियां पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तिया चार
अपर्याप्तिया. दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, अठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच
प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण तीन प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों सन्नप तथा
क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतिया, एकेन्द्रियजातिको आदि लेकर पांचों जातियां, पृथिवी-
कायको आदि लेकर छहों काय, सातो काययोग, तीनो वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों
कपाय तथा अक्रपायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे
छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक, असन्निक तथा सब्बी
और असब्बी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी,
अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

न २५२

काययोगी जीवोंके आलाप

| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ |
|------|----|----|------|---|---|---|----|-----|----|---|------|----|---|----|---|---|-------|---|---|
| २३ | १४ | ६प | १०,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| अयो- | ६अ | | १,७ | | | | | काय | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| विना | ५प | | ८,६ | | | | | काय | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ४प | | ७,५ | | | | | | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ४अ | | ६,४ | | | | | | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | | | ४,३ | | | | | | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | | | ४,२ | | | | | | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |

६३८]

संत-परुवणणायुयोगदारे जोग-आलाववणण

[१, १-

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणद्वगणणि, सत्त जीवसमासा, छ
पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण
छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि
गदीओ, एइंदियादी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, वेउव्वियमिस्सेण विणा छ
जोग तिण्णि वा, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि,
अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दन्व-भोवेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,
छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो
आहारिणो चैव वा, सागासुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि
जुगवदुवजुत्ता वा^२ ।

उन्हीं काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह
गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां,
दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण, चारों
सन्नप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां,
पृथिवीकाय आदि छहों काय, वैक्रियकामिश्रकाययोगके विना छह काययोग अथवा औदारिक-
काययोग, वैक्रियककाययोग और आहारककाययोग ये तीन काययोग, तीनों वेद तथा अप-
गतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अक्रपायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों
दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सन्निक,
असन्निक तथा सब्बी और असब्बी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक
अथवा आहारक ही होते हैं, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार-अनाकार उप-
योगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालमें जो वैक्रियकामिश्रके विना छह
अथवा तीन योग बतलाये हैं। इसका कारण यह है कि छठवें और तेरहवें गुणस्थानमें
आहारकसमुदात और केवलिसमुदातके समय भी विवक्षाभेदसे जब पर्याप्तता स्वीकार कर

न २५३

काययोगी जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्नि | आ | उ |
|------|----|---|------|---|---|---|----|-----|----|---|------|----|---|----|---|---|-------|---|---|
| २३ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| अयो- | ७ | | १० | | | | | काय | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| विना | ५ | | ९ | | | | | काय | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ४ | | ८ | | | | | काय | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ४ | | ७ | | | | | | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | ४ | | ६ | | | | | | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| | | | ४ | | | | | | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | २ | ६ | २ | २ | २ |

तेमि चेन अपञ्जत्तार्णं भण्णमाणे अत्थि पंचं गुणद्वानाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णायो खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अण्णद्वेदो वि, चत्तारि कसाय अरुसाओ वा, छण्णाण, चत्तारि संजम,

अज्ञी जाली हे तत्र उसकी ओक्षा पर्याप्त अवस्थामें भी छहों योग बन जाते हैं और जब अपर्याप्तता मान ली जाती है तब पर्याप्त अवस्थामें औदारिक, आहारक और चैत्रियिक ये तीन योग भी बनते हैं। इन्हींपर आहारमार्गणाके कथनमें पहले आहारक और अनाहारक ये दो आलाप शब्दोंके अन्तर एक आहारक आलाप ही बतलाया है। इसका भी कारण यह है कि तेरहवें गुणस्थानमें कैवलिसमुदातेके समय भी पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेसे आहारक और अनाहारक दोनों आलाप बन जाते हैं। परंतु कपाट, प्रतर और लोकपूरण अवस्थामें केवल अपर्याप्तताके स्वीकार कर लेने पर अनाहारक आलाप नययोगियोंकी पर्याप्त अवस्थामें नहीं बनता है-इसका यह कारण हुआ कि जब काययोगियोंके पर्याप्त अवस्थामें छह योग ऋहे जावें, तब आहारक और अनाहारक ये दोनों ही आलाप रहना चाहिए और जब केवल तीन योग ही ऋहे जावें तब एक आहारक आलाप ही रहना चाहिए। सतों समयोंके सन्ध्यामें भी यही विवक्षा भेर जान लेना चाहिये।

उर्ध्वी काययोगी जीवोंके अपर्याप्त कालसन्ध्या आलाप कहने पर—मिव्यादृष्टि, सासा-रुतस्यस्यदृष्टि, अरिततस्यस्यदृष्टि, प्रमत्तस्यत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चार प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीण मात्रास्थान भी है। चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग चैत्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कर्मणकाय-योग ये चार योग; तीनों वेद तथा अण्णद्वेदस्थान भी है; चारों रुपाय तथा अरुपायस्थान भी है, विभंगादि और मन-पर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और

१. निर' त्वारि' इति पाठ ।

न २५३ काययोगी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु | जी | प. | प्रा | म. | ग. | ३ | का. | यो. | वे. | क. | सा | स्य. | द. | ले. | म. | संज्ञि | आ | उ. |
|----|----|----|------|----|----|---|-----|-----|-----|----|----|------|----|-----|----|--------|---|----|
| १ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| २ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ४ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवुत्ता होति अणागारवुत्ता वा तदुभएण वा ।

कायजोगि-मिच्छाहृदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, चोद्दस जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अह्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, पंच काय-जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवुत्ता होति अणागारवुत्ता वा ।

यथाव्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुकु लेख्यापं, भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सस्यमिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, साक्षिक, असाक्षिक तथा अनुस्यस्थान भी है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञापं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, साक्षिक, असाक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २५५ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| गु | जी | प. | प्रा | म. | ग. | ३ | का. | यो. | वे. | क. | सा | स्य. | द. | ले. | म. | संज्ञि | आ | उ. |
|----|----|----|------|----|----|---|-----|-----|-----|----|----|------|----|-----|----|--------|---|----|
| १ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| २ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ४ | १५ | ५ | १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णो असण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अणागारवजुत्ता वा ।

कायजोगि-सासणसम्माद्द्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्दणं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सातणसम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अणागारवजुत्ता वा ।

और शुद्ध लेश्याप, भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और सब्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अन्नान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं २५७ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क. | हा | सप | द | ले | म | स. | सक्ति | आ. | उ. |
|-----|--------|----|----|---|---|---|-------|-------|----|----|----|------|-------|------|---|----|-------|------|------|
| १ | ७ | ६अ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ |
| मि | अपर्या | ५अ | ७ | ४ | ५ | ६ | ओ मि | ओ मि | ३ | ४ | २ | अस | चक्षु | का | म | मि | स | आहा | साका |
| | | ४अ | ७ | ४ | ५ | ६ | वे मि | वे मि | ३ | ४ | २ | अच | अच | अ | अ | अस | अना. | अना. | अना. |
| | | ४अ | ७ | ४ | ५ | ६ | कार्म | कार्म | ३ | ४ | २ | मा ६ | मा ६ | मा ६ | अ | अ | अ | अ | अ |

नं. २५८ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोके सामान्य आलाप.

| गु. | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क. | हा | सप | द | ले | म | स. | सक्ति | आ | उ |
|-----|------|---|----|---|---|---|------|-------|----|----|-----|----|-------------|----|---|----|-------|------|---|
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | २ | ५ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ |
| सा | स प. | प | ७ | ४ | ४ | १ | जम | ओ २ | ३ | ४ | अना | अस | चक्षु. मा ६ | अच | म | म | आहा | साका | |
| | स अ | अ | ७ | ४ | ४ | १ | जम | वे. २ | ३ | ४ | अना | अच | अच | अ | म | म | अना | अना. | |
| | | अ | ७ | ४ | ४ | १ | का २ | का २ | ३ | ४ | अना | अच | अच | अ | म | म | अना | अना. | |

तेसिं चेत्त पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्दणं, सत्त जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण पव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पच जादीओ, पुढवीकायादी छत्राया, ते जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णो असण्णो, आहारिणो, सागारवजुत्ता ह्येति अणागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चेत्त अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्दणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अमजम, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भोवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तिया, चार पर्याप्तिया; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति आदि पाचों जालिया, पृथिवीकाय आदि छहों काय, ओशरिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अन्नान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां. सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति आदि पाचों जालियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, ओशरिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो दर्शन, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत्त,

न. २५६ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोके पर्याप्त आलाप

| गु. | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क. | हा | सप | द | ले | म | स. | सक्ति | आ | उ |
|-----|--------|---|----|---|---|---|------|------|----|----|-----|----|-------|------|---|-----|-------|------|------|
| १ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ |
| मि | पर्या. | ५ | १० | ४ | ४ | ५ | ओ २ | ओ २ | ३ | ४ | अना | अस | चक्षु | मा ६ | म | मि. | स | आहा | साका |
| | | ५ | १० | ४ | ४ | ५ | वे २ | वे २ | ३ | ४ | अना | अस | अच | अ | अ | अस | अना. | अना. | |
| | | ५ | १० | ४ | ४ | ५ | का २ | का २ | ३ | ४ | अना | अच | अच | अ | अ | अ | अ | अ | |

तेमि चैत्र पञ्चत्वारिंशत् भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्वारिंशत्, दस पाण, चत्तारि सण्णओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसय, तिण्णि अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भनसिद्धिया सासणम्मत्तं, मण्णणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हेति अण्णारुजुत्ता वा ।

“ तेमि चैत्र अपञ्चत्वारिंशत् भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्वारिंशत्, मत्त पाण, चत्तारि सण्णओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, अण्णारुजुत्ता वा ।”

उत्तरीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाए, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और चैक्रियिक काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उत्तरीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाए, नर-रगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग,

न. २१९ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|------|------|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|-----|-----|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ |
| गु. | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ | |
| १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ | २ |
| गु. | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ | |
| १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ | २ |
| गु. | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ | |
| १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ | २ |

न. २२० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|------|------|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|-----|-----|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ |
| गु. | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ | |
| १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ | २ |
| गु. | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ | |
| १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ | २ |

तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कपाय, दो अण्णण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया, सासणम्मत्तं, सण्णणो, आहारिणो, अण्णारुजुत्ता हेति अण्णारुजुत्ता वा ।

कायजोगि-सम्मामिच्छाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्वारिंशत्, दस पाण, चत्तारि सण्णओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसय, तिण्णि गण्णणि तीहि अण्णणोहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता वा हेति अण्णारुजुत्ता वा ।”

कायजोगि-असंजदसस्माद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासो, छ पञ्चत्वारिंशत् अपञ्चत्वारिंशत्, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णओ, चत्तारि गदीओ, चैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुलु लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाए, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और चैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानले मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी असत्यतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर— एक अचिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और संबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाए, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

नं. २६१ काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|------|------|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|-----|-----|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ |
| गु. | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ | |
| १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ | २ |
| गु. | प | प्रा | स | ग | ह | का | गो | वे | क | सा | सप | द | ले | म | स | सति | आ | उ | |
| १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | २ | ६ | १ | २ | २ | २ | २ |

पंचिदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, असंजम, तिणिण दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१३} ।

^{१३}तेसिं चैव पज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, असंजमो, तिणिण दंसण, दव्व-भावेहि

त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये पांच योग, तीनों वेद, चारों कयाय, आविके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षापिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके

नं २६२ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|------|---|-------|---|---|---|----|----|-----|----|-----|-----|-------|------|----|----|-------|-----|-------|
| शु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स्य | द | ले | म | स | सक्ति | जा | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र | ६ | २ | २ | २ | २ |
| १ | स | प | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | मति | अस | मति | अस | के.द. | सा | ६ | ३ | ३ | आहा | साका. |
| १ | स.अ. | अ | | | | | | | शुत | अव | शुत | अव | विना | विना | सा | सा | अना | अना | अना |

नं २६३ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|------|---|-------|---|---|---|----|----|-----|----|-----|-----|-------|------|----|----|-------|-----|-------|
| शु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स्य | द | ले | म | स | सक्ति | जा | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र | ६ | २ | २ | २ | २ |
| १ | स | प | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | मति | अस | मति | अस | के.द. | सा | ६ | ३ | ३ | आहा | साका. |
| १ | स.अ. | अ | | | | | | | शुत | अव | शुत | अव | विना | विना | सा | सा | अना | अना | अना |

छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिणिण जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, असंजम, तिणिण दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१४} ।

कायजोगि-संजदांसंजदाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरा-लियकायजोगो, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गाण, संजमांसंजमो, तिणिण दंसण, तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षापिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्रु लेस्याएं, भावसे छहों लेस्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षापिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी संयतासयत जीवोंके आलाप कहने पर— एक देशसंयत गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्थचगति और मनुष्यगति ये दो गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, समयसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्याएं, भावसे

न. २६४ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|------|---|-------|---|---|---|----|----|-----|----|-----|-----|-------|------|----|----|-------|-----|-------|
| शु | जी | प | प्रा. | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स्य | द | ले | म | स | सक्ति | जा | उ. |
| २ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र | ६ | २ | २ | २ | २ |
| १ | स.अ. | अ | | | | | | | मति | अस | मति | अस | के.द. | सा | ६ | ३ | ३ | आहा | साका. |
| १ | स.अ. | अ | | | | | | | शुत | अव | शुत | अव | विना | विना | सा | सा | अना | अना | अना |

दन्वेण छ लेसमाओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वां ।

कायजोगि-पमतसंजदानं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमामा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दम पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचि-दियजादी, तसकाओ, ओरालिय-आहार-आहारमिस्सा इदि तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि' गाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दन्वेण छ लेसमाओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वां ।

तेज, पम और शुलु लेश्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यन्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, संबी-पर्याप्त और समी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों सजाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे तेज, पम और शुलु लेश्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यन्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

१ गतिपू ' तिण्णि ' उति पाठ ।

नं २६६: काययोगी सयतासयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------------|------------|---------|---------|------|------|-------|------|------|-------|-------|------|
| गु. जी. १ | प. प्रा. ६ | प. प्रा. ४ | म. ग. २ | स. ग. २ | द. ३ | स. ३ | ले. ३ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | जा. ३ | उ. ३ |
| २ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

न. २६६

काययोगी प्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------------|------------|---------|---------|------|------|-------|------|------|-------|-------|------|
| गु. जी. १ | प. प्रा. ६ | प. प्रा. ४ | म. ग. २ | स. ग. २ | द. ३ | स. ३ | ले. ३ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | जा. ३ | उ. ३ |
| २ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

कायजोगि-अपमत्तसंजदानं भणमाणे अत्थि एय गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दम पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि गाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दन्वेण छ लेसमाओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वां ।

अपुव्यरणपहुडि जाव खीणकसाओ चि ताव कायजोगिणं मूलोघ-भंगो । णवरि ओरालियकायजोगो चैव सव्वत्थ वत्तव्वो ।

कायजोगि-केवलीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो दो वा, छ पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-रुम्मइयकायजोगो इदि तिण्णि जोग, अवगदवेदो,

काययोगी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसयत गुणस्थान, एक संबी-पर्याप्त जीवसमास. छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञके विना दोष तीन संज्ञाय, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे तेज, पम और शुलु लेश्याए, भव्यसिद्धिक, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थानतक काययोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान है । विशेष बात यह है कि काययोग आलाप ऋते समय सर्वत्र केवल एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए ।

काययोगी केवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, अथवा समुदातकी अपेक्षा पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, चार प्राण और केवलिसमुदातकी अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा दो प्राण, क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाय-

नं. २६७ काययोगी अप्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | |
|-----------|------------|------------|---------|---------|------|------|-------|------|------|-------|-------|------|
| गु. जी. १ | प. प्रा. ६ | प. प्रा. ४ | म. ग. २ | स. ग. २ | द. ३ | स. ३ | ले. ३ | म. ३ | स. ३ | सा. ३ | जा. ३ | उ. ३ |
| २ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | १० | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

अकसाओ, केवलपण, जहाक्खादिविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दवेण छ लेस्सा, भोवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागर-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होति^{११८} ।

ओरालियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणद्वगणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण गव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एंडियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट पाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, आहारिणो, सागरवजुत्ता

योग और कामणकाययोग ये तीन योग; अपगतवेदस्थान, अकपायस्थान, केवलद्वान, यथाव्यथाविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, भावसे शुक्कलेदया, भव्य-सिद्धिक, धायिकसम्पत्त्य, सब्बी और असंझी इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक; साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

औदारिककाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तक जीवोंके सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यंचगति और मनुचगति ये दो गतियां, एकोन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्पत्त्य, सांज्ञिक, असंज्ञिक तथा सब्बी और असंझी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है;

न. २६८

काययोगी केवली जिनके आलाप.

| गु | जी. | प | शा | सं. | ग | इ | का | या. | वे | क. | भा. | सय. | द. | ले. | म | स | सति. | जा. | उ. |
|------|-----|---|----|-----|---|---|----|-----|----|----|-----|-----|----|-----|---|---|------|-----|----|
| १ | १ | ५ | ४ | ० | १ | १ | १ | ३ | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० | २ | २ |
| स्यो | ५ | ४ | २ | ५ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| प | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

होति अणागारुजुत्ता वा सागर-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा^{११९} ।

ओरालियकायजोगी-मिच्छाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वगणं, सत्त जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण गव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एंडियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णण, अमंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागरवजुत्ता होति अणागारुजुत्ता वा^{१२०} ।

आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

औदारिककाययोगी मिथ्याद्वी जिवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्वी गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञापं, तिर्यंच और मनुच ये दो गतिया, एकोन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिक-काययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अदान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सांज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २६९

औदारिक काययोगी जीवोंके आलाप

| गु | जी. | प | शा | सं. | ग | इ | का | या. | वे | क. | भा. | सय. | द. | ले. | म | स | सति. | जा. | उ. |
|------|-----|---|----|-----|---|---|----|-----|----|----|-----|-----|----|-----|---|---|------|-----|----|
| १३ | ७ | ६ | १० | ४ | २ | ५ | ६ | १ | ३ | ४ | ८ | ७ | ५ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ |
| अयो. | ५ | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| विना | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

न. २७०

औदारिककाययोगी मिथ्याद्वी जिवोंके आलाप

| गु | जी. | प | शा | सं. | ग | इ | का | या. | वे | क. | भा. | सय. | द. | ले. | म | स | सति. | जा. | उ. |
|-----|-----|---|----|-----|---|---|----|-----|----|----|-----|-----|----|-----|---|---|------|-----|----|
| १ | ७ | ६ | १० | ४ | २ | ५ | ६ | १ | ३ | ४ | ८ | ७ | ५ | ६ | २ | ६ | २ | १ | २ |
| मि. | ५ | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| प | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

ओरालियकायजोगि-मागणममाहृडीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवमिद्विया, मासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, मागाळवुत्ता मा अणागारवुत्ता वा” ।

“ओरालियकायजोगि-सम्मामिच्छाहृडीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाणाणि तीहि

ओद्वारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सती-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सक्षारं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औद्वारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे त्यों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी दोने हैं ।

ओद्वारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक भती-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सक्षारं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औद्वारिककाययोग, तीनों वेद,

नं. २७१ ओद्वारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|-------|---|----|---|----|-----|----|---|------|-----|-------|-----|---|---|-----|------|-----|
| शु | जी | प | प्रा. | म | ग | ङ | का | यो. | वे | क | ज्ञा | मय | द | ले. | म | ग | सति | आ. | उ. |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ |
| सं.प | | | | | ति | म | स | ओ. | | | मति. | अस. | के.द. | मा | ६ | ३ | आहा | साका | अना |

नं. २७२ ओद्वारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|-------|---|----|---|----|-----|----|---|------|-----|-------|-----|---|---|-----|------|-----|
| शु | जी | प | प्रा. | म | ग | ङ | का | यो. | वे | क | ज्ञा | मय | द | ले. | म | ग | सति | आ. | उ. |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ |
| सं.प | | | | | ति | म | स | ओ. | | | मति. | अस. | के.द. | मा | ६ | ३ | आहा | साका | अना |

अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवुत्ता होति अणागारवुत्ता वा ।

ओरालियकायजोगि-असंजदसम्मामहृडीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवुत्ता होति अणागारवुत्ता वा” ।

संजदासंजदप्पहुद्धि जाव सजोगिकेवलि ति ताव कायजोगि-भंगो । णवरि सव्वत्थ ओरालियकायजोगो एक्को चेव वत्तव्वो । सजोगिकेवली च पज्जत्ता आहारि ति भण्णिदव्वा ।

चारों कपाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

ओद्वारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सती-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सक्षारं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औद्वारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, शार्थिक और शार्थोपशमिक ये तीन सम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

ओद्वारिककाययोगी जीवोंके संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप काययोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि सर्वत्र योग आलाप कहते समय एक औद्वारिककाययोग ही कहना चाहिए । और सयोगिकेवलीके जीवसमास कहते समय पर्याप्तक जीवसमास, तथा आहार आलाप कहते समय आहारक, इसप्रकार कहना चाहिए ।

नं. २७३ ओद्वारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|-------|---|----|---|----|-----|----|---|------|-----|-------|-----|---|---|-----|------|-----|
| शु | जी | प | प्रा. | म | ग | ङ | का | यो. | वे | क | ज्ञा | मय | द | ले. | म | ग | सति | आ. | उ. |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | १ | २ | १ | २ |
| सं.प | | | | | ति | म | स | ओ. | | | मति. | अस. | के.द. | मा | ६ | ३ | आहा | साका | अना |

ओरालियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणह्णणाणि, सत्त जीव-समासा, सण्णि-असण्णीहिंतो सजोगिकेवली वदिरित्तो ति अदीदजीवसमासेण सजोगिणा होद्व्वं ? ण, दब्बमाणस्स अत्थिचं भावगद-पुब्बगहं च अस्सिउण तस्स सण्णित्तब्बुधुवगमादो । पुढवी-आउ-तेउ-पाउ-पत्तेय-साहारणशरीर-तस-पज्जत्तापज्जत्त-चोदस-जीवसमासाणं सत्त-अपज्जत्तजीवसमासेसु सजोगि-सत्तब्बुधुवगमादो वा । एसो अत्थो सव्वत्थ वत्तवो । छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्स-कायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अक्काओ वि अत्थि, विमंग-गणपज्जवणणेहि विणा छ पाणाणि, जहाक्खादसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दब्बेण काउलेस्सा । कि कारणं ? मिच्छाइडि-सासण-असंजद-

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा सात अपर्याप्त जीवसमास होते हैं ।

शंका—जब कि सयोगिकेवली जितेन्द्र सक्षी और असक्षी इन दोनों ही व्यपदेशोंसे रहित हैं, इसलिए सयोगी जिनको अतीत जीवसमासवाला होना चाहिए ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्रव्यमनके अस्तित्व और भावमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके आश्रयसे सयोगिकेवलीके संबन्धीपना माना गया है । अथवा, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अशिकायिक, वायुकायिक, प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक और वसकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तसंबन्धी चौदह जीवसमासोंमेंसे सात अपर्याप्त जीवसमासोंमें कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुदागत सयोगिकेवलीका सत्त्व माना जानेसे उन्हें अतीत जीवसमासवाला नहीं कहा जा सकता है । यही अर्थ सर्वत्र कहना चाहिए ।

जीवसमास आलापके आगे छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और सयोगिकेवलीके कपाटसमुदातके कालमें दो प्राण होते हैं । चारों सक्ष्मापं तथा क्षीणसक्ष्मास्थान भी हैं, तिर्यच-गति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकैन्द्रियजाति आदि पावों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हैं । चारों कवाय तथा अकवायस्थान भी हैं । विमगावधि और मनःपर्यय ज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, यथाव्यत-विहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन और द्रव्यसे कापोतलेख्या होती हैं ।

शंका—द्रव्यसे एक कापोतलेख्या ही होनेका क्या कारण है ?

सम्माइड्डीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वड्डुताण शरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि; छव्वण्णोरा-लियपरसाण्णं धवल-विस्ससोपचय-सहिद-छव्वण्णकम्मपरसाण्णहि सह मिलिदाणं कायोद-वण्णुप्पचीदो । कवाडगद-सजोगिकेवल्लिस्स वि शरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि । एत्थ वि कारणं पुब्बं व वत्तव्वं । सजोगिकेवल्लिस्स पुब्बिउल्ल-शरीरं छव्वण्णं जदि वि हवदि तो वि तण्ण वेप्पदि; कवाडगद-केवल्लिस्स अपज्जत्तजोगे वड्डुमाणस्सप पुब्बिउल्ल-शरीरेण सह संबंधाभावादो । अहन्ना पुब्बिउल्ल-छव्वण्ण-शरीरमस्सिउण उवयाणेण दब्बदो सजोगि-केवल्लिस्स छ लेस्साओ हव्वति । । भावेण छ लेस्साओ । कि कारणं ? मिच्छाइडि-सासण-सम्माइड्डीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वड्डुमाणं किण्ह-णील-काउलेस्सा चेव हव्वति, कवाडगद-सजोगिकेवल्लिस्स सुक्कलेस्सा चेव भव्वदि, किंतु देव-णेरइयसम्माइड्डीणं सणुसगदीए उप्पण्णणं ओरालियमिस्सकायजोगे वड्डुमाणं अविण्ह-पुब्बिउल्ल-भाव-लेस्साणं भावेण छ लेस्साओ लब्भंति चि । भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया, उवसससम्मत्त-

समाधान—औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके शरीरकी कापोतलेख्या ही होती है, क्योंकि, धवलविल्लसोपचय सहित छहों वर्णोंके कर्म-परमाणुओंके साथ मिले हुए छहों वर्णवाले औदारिकशरीरके परमाणुओंके कापोत वर्णकी उत्पत्ति बन जाती है, इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके द्रव्यसे एक कापोतलेख्या ही होती है ।

कपाटसमुदागत सयोगिकेवलीके शरीरकी भी कापोतलेख्या ही होती है । यहां पर भी पूर्वके समान ही कारण कहना चाहिए । यद्यपि सयोगिकेवलीके पहलेका शरीर छहों वर्णवाला होता है, तथापि वह यहां नहीं ग्रहण किया गया है, क्योंकि अपर्याप्तयोगमें वर्तमान कपाट-समुदागत सयोगिकेवलीका पहलेके शरीरके साथ सम्बन्ध नहीं रहता है । अथवा, पहलेके पडवर्णवाले शरीरका आश्रय लेकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा सयोगिकेवलीके छहों लेख्याएं होती हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंके भावसे छहों लेख्याएं होती हैं ।

शंका—औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके भावसे छहों लेख्याएं होनेका क्या कारण है ?
समाधान—औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेख्याए ही होती हैं । और कपाटसमुदागत औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके एक शुक्कलेख्या ही होती है । किंतु जो देव और नारकी मनुष्यगतियोंमें उत्पन्न हुए हैं, औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान हैं और जिनकी पूर्वभव-सम्बन्धी भावलेख्याए अभी तक नष्ट नहीं हुई हैं, ऐसे जीवोंके भावसे छहों लेख्याए पाई जाती हैं, इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके छहों लेख्याएं कही गई हैं ।

लेख्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्व और सम्य-

मम्मामिच्छतेहि विणा चत्तारि सम्मत्तणि, सणिणो असणिणो णेव सणिणो णेव असणिणो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता हति अणगरुवजुत्ता वा सागर-अणगरिहि ज्ञानद्वजुत्ता वा" ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सिच्छाहडीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जचीओ पंच अपज्जचीओ चत्तारि अपज्जचीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिणि पाण, चत्तारि सणाओ, दो गदीओ, एइदियजादि-अदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, दो अणण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, गिमथ्याल्लके विना शेष चार सम्यन्त्व, संबिक, असंबिक तथा संबी और असंबी इन दोनों गिरुल्लोमि रहित भी स्थान है। आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप कइते पर—एक मिथ्यादष्टि गुणस्थान, मान अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पाच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सान प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पाच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संश्रापं, तिर्यवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्यापं; भव्यसिद्धिक, अभव्य-

न २७३ औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |

नं. २७५; औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |

भावेण किण्ह-गील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छंत्तं, सणिणो असणिणो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता हति अणगरुवजुत्ता वा ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सासणसम्महडीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जचीओ, सत्त पाण, चत्तारि सणाओ, दो गदीओ, पंचि-दियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, दो अणण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण किण्ह-गील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता हति अणगरु-वजुत्ता वा" ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-असंजदसम्महडीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जचीओ, सत्त पाण, चत्तारि सणाओ, दो गदीओ, पंचि-दियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिणि पाण, असंजमो, तिणि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, जहा देव-मिच्छाद्वि-

सिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, असंबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं। औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके आलाप कइते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सबी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संश्रापं, तिर्यवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छण, नील और कापोतलेश्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्दष्टि, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके आलाप कइते पर—अविरतमस्य-दष्टि गुणस्थान, एक सबी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संश्रापं, तिर्यवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिक-मिश्रकाययोग, पुरुषवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या और भावसे छहों लेश्यापं होती हैं। यहा पर भावसे छहों लेश्या-

नं. २७६ औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |
| ७ | ४ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ |
| मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि | मि |

सासणसम्मादिद्विणो तेउ-पम्म-सुव-कलेस्सासु वट्टमाणा णट्ट-लेस्सा होऊण तिरिकख-मणुस्सेसुप्पज्जमाणा उप्पण-पढम-समए चेव किण्ह-णील-काउलेस्साहि सह परिणमंति सम्माइद्विणो तथा ण परिणमंति, अतोमुहुत्तं पुव्विल्ल-लेस्साहि सह अच्चिय अणलेस्सें गच्छंति । किं कारणं ? सम्माइद्विणं बुद्धि-द्विय-परमेद्विणं मिच्छाइद्विणं मरणकाले संक्रिलेसाभावादो । णेरइय-सम्माइद्विणो पुण चिराण-लेस्साहि सह मणुस्सेसुप्पज्जंति ।

अंके होतिका कारण यह है कि जिसप्रकार तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याओंमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देव तिर्यच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते समय नष्टलेश्या नोकरके अर्थात् अपनी अपनी पूर्व शुभ लेश्याओंको छोड़कर (तिर्यच और मनुष्योंमें) उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही रूपण, नील और कापोत लेश्यारूपसे परिणत हो जाते हैं, उसप्रकारसे सम्यग्दृष्टि देव अशुभ लेश्यारूपसे नहीं परिणत होते हैं किन्तु तिर्यच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके प्रथमसमयसे लगाकर अन्तर्मुहूर्तक पूर्व भवकी लेश्याओंके साथ रह कर पीछे अन्य लेश्याओंको प्राप्त होते हैं, अतएव यहाँपर छहों लेश्याएँ बन जाती हैं ।

शंका—तिर्यच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले सम्यग्दृष्टि देव अन्तर्मुहूर्तक अपनी पहली लेश्याओंको नहीं छोड़ते हैं, इसका क्या कारण है ?

समाधान—इसका कारण यह है कि बुद्धिमें स्थित है परमेष्ठी जिनके अर्थात् परमेष्ठीके स्वरूप चिन्तनमें जिनकी बुद्धि लगी हुई है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंके मरणकालमें मिथ्यादृष्टि देवोंके समान संकेश नहीं पाया जाता है, इसलिये अपर्याप्तकालमें उनकी पहलेकी शुभ-लेश्याएं त्यों बनी रहती हैं ।

विशेषार्थ—‘सम्माइद्विण परमेद्विणं मिच्छाइद्विणं मरणकाले सकिलेसा-भावादो’ इस वाक्यके दो अर्थ समभव हैं । एक तो यह कि मरणके समय मिथ्यादृष्टियोंको जिसप्रकार संकेश होता है उसप्रकार जिनकी बुद्धिमें परमेष्ठी स्थित है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंको मरणके समय संकेश नहीं होता है । तथा दूसरा अर्थ इसप्रकारसे होता है कि सम्यग्दृष्टि देवोंके और जिनकी बुद्धिमें परमेष्ठी स्थित है ऐसे मिथ्यादृष्टि देवोंके मरणके समय संकेश नहीं पाया जाता है । प्रथम अर्थ करते समय ‘मिच्छाइद्विण’ पदके आगे ‘इव’ पदकी अपेक्षा है और दूसरा अर्थ करते समय ‘च’ पदकी । परतु ‘मिच्छाइद्विण’ इस पदके आगे इन दोनों पदोंमेंसे कोई भी पद नहीं पाया जाता है और प्रकरणको देखते हुए पहला अर्थ संगत प्रतीत होता है, इसलिये ऊपर अर्थमें पहले अर्थका ही ग्रहण किया है ।

किन्तु नारकी सम्यग्दृष्टि तो अपनी पुरानी विरंतन लेश्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं ।

कारण, जादिविसेण संक्रिलेसाहियादो । भवसिद्धिया, उवसमसम्मचेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुमज्जुत्ता हंति अणगारुवज्जुत्ता वा ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जचीओ, आयु-कालवलपाणा दो चेव हंति, पंचिंदियपाणा णत्थि; खीणावरणे खओवसमाभावादो खओवसम-लवखण-भविंदियाभावादो । ण च दंविदिएण इह पओजणमत्थि, अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाणमत्थि त-पदुप्पायण-संतसुत्त-दंसाणादो । मण-वचि-उस्सातपाणा वि तत्थ णत्थि, मण-वचि-उस्सातपज्जची-सण्णिणद-पोगमलखंथ-

शंका—नारकी सम्यग्दृष्टि जीव मरते समय अपनी पुरानी कृष्णादि अशुभ लेश्याओंको क्यों नहीं छोड़ते हैं ?

समाधान—इसका कारण यह है कि नारकी जीवोंके जातिविशेषसे ही अर्थात् स्वभावत संकेशकी अधिकता होती है, इसकारण मरणकालमें भी वे उन्हे नहीं छोड़ सकते हैं ।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशामिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिकमिश्रक्राययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं । किन्तु पांच इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं, क्योंकि, जिनके ज्ञानावरणादि कर्म नष्ट हो गये हैं ऐसे क्षीणावरण सयोगिकेवलीमें आचरण कर्मोंका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है, और इसलिये उनके क्षयोपशम लक्षण भावेन्द्रियां भी नहीं पाई जाती हैं । तथा इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंसे प्रयोजन है नहीं, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें पांचों इन्द्रिय प्राणोंके अस्तित्वका प्रतिपादन करनेवाला सत्प्ररूपणाका सूत्र देखा जाता है । मनोबलप्राण, वचनबलप्राण और श्वासोच्छ्वासप्राण भी औदारिकमिश्रक्राययोगी सयोगिकेवलीके नहीं होते हैं, क्योंकि, मनः पर्याप्त, वचन पर्याप्त और आनापान पर्याप्त सक्षिक पौद्गलिक संकेशोंसे निर्मित

१ स. सू. ३७, ६१, ७६

न. २७७ औदारिकमिश्रक्राययोगी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|------|---|-----|---|-----|----|----|------|------|------|----|----|---|----|-----|-----|-------|
| गु. | जी | प्रा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | मलि | आ | उ |
| १ | १ | ७ | ४ | २ | २ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | १ | १ | २ | १ | १ | २ |
| अवि | म | अ. | अ | ति. | म | मि. | ओ | मि | मति. | अस | के | द | का | म | का | स | आहा | साका. |
| | | | | म | म | अव | मि | मि | अव | अव | विना | मा | ६ | म | का | स | आहा | अना |

गिन्ध्रिचन्द्र-मपणमण्णा-मंजुतमत्तीणं कनाडमद-केवल्लिन्धि अभावादो । अहवा तेसिं
कारणभूद-पञ्जत्तीओ अत्थि ति पुणो उतरिम-उट्टममयपहुडिं वचि-उस्तासपाणाणं समणा
मत्ति नत्तारि ति पाणा हन्ति । स्त्रीणसण्णा, मणुसण्णा, पंचिदियजादी, तसकाओ,

मपण मंजाओमि अर्थात् मन, वचन और द्यालोच्छ्वास प्राणसे सयुक्त शक्तियोंका कपाट
ममुद्रात-गत केवलीमें अमान पाया जाता है । अथवा, समुद्रातगत-केवलीके वचनवल और
दाम्बोन्ट्राम प्राणोंकी कारणभूत नचन और आनापान पर्याप्तियां पाई जाती हैं, इसलिये
तोरुपणममुद्रातके अनन्तर होनेवाले प्रतरसमुद्रातके पश्चात् उपरिम छेडे समयसे लेकर
प्रागे वचनवल और द्यालोच्छ्वास प्राणोंका सद्भाव हो जाता है, इसलिये सयोगिकेवलीके
आदारमिश्रकाययोगमें चार प्राण भी होते हैं ।

विशेषार्थ— समुद्रातगत केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें आयु और काय ये दो प्राण होते
हैं शेष आठ प्राण नहीं होते हैं । उनमेंसे पाचों इन्द्रिय प्राण तो इसलिये नहीं होते हैं कि
उनके आनाचरण कर्मका अयोपशम नहीं पाया जाता है । कदाचित् यह कहा जा सकता है
कि केवलीके पांचों उद्येन्द्रियां पाई जाती हैं इसलिये द्रव्येन्द्रियोंकी अपेक्षा उनके पांच प्राण
मान लेना चाहिये । परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका उपचारसे ही
ग्रहण किया है, मुख्यतासे नहीं । यदि इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका मुख्यतासे ग्रहण
करना स्वीकार किया जावे तो अपर्याप्तकालमें पाच इन्द्रिय प्राणोंका सद्भाव नहीं बन
सकता है । परन्तु अपर्याप्तकालमें पाचों इन्द्रियप्राण होते हैं ऐसा आगमवचन है, इसलिये
यह निश्चय है कि इन्द्रिय प्राणोंमें मुख्यतारो पांच भावेन्द्रियोंका ही ग्रहण किया गया है
और ये भावेन्द्रिया केवलीके होती नहीं हैं, इसलिये उनके पाचों इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं ।
उसीप्रकार केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें मनोबल, वचनवल और द्यालोच्छ्वास ये तीन
प्राण भी नहीं होते हैं, क्योंकि, इन तीनों प्राणोंकी कारणभूत मन, वचन और आनापान ये
तीन पर्याप्तिया है । परन्तु अपर्याप्त अवस्थामें ये तीनों पर्याप्तिया होती नहीं हैं, इसलिये
पर्याप्तियोंके अभावमें उनके उक्त तीनों प्राण भी नहीं पाये जाते हैं । इसप्रकार इन आठ
प्राणोंके अतिरिक्त केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें शेष दो प्राण पाये जाते हैं । अथवा, केवलीके
विद्यमान शरीरकी अपेक्षा पूर्वाक्त प्राणोंकी कारणभूत पर्याप्तियां रहती ही हैं, इसलिये छेडे
समयसे वचनवल और द्यालोच्छ्वास ये दो प्राण और माने जा सकते हैं । इसप्रकार
पूर्वाक्त दोनों प्राणोंमें इन दोनों प्राणोंके मिला देने पर केवलीके औदारिकमिश्रकाययोगमें
चार प्राण भी करे जा सकते हैं । मन-पर्याप्तिके रहने पर भी केवलीके मनःप्राण नहीं माना
है, इसका कारण यह है कि मन-प्राणमें भावमन और मन-पर्याप्ति ये दोनों कारण हैं, इस-
लिये एतमेंसे जहां केवल एक कारण होता है वहां मनःप्राण नहीं कहा गया है । केवलीके
भावमन नहीं पाया जाता है, इसलिये मनःपर्याप्तिके रहने पर भी मनःप्राण नहीं कहा गया
है और शेष सभी जीवोंके अपर्याप्त अवस्थामें भावमनका अस्तित्व होते हुए भी मनःपर्याप्ति

ओरालियमिससय कायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाकखादविहारसुद्धि-
संजमो, केवलदंसणं, दवणेण काउलेसा, मूलशरीरस्स छ लेसाओ संति ताओ किण्ण
उच्चंति ति मणिदे ण, चौहस-रञ्जु-आयमेण सत्त-रञ्जु-वित्थारेण एक-रञ्जुमादिं कादूण
वाड्ढि वित्थारेण वारिद-जीव-पदेसाणं पुव्वसरारेण संखेज्जंगुलोगाहणेण संबधाभावादो ।
भावे वा जीवपदेस-परिमाणं शरीरं होज्ज । ण च एवं, वंधहरस्स' शरीरस्स तेत्थियमेत्तद्वृण-
पसरण-सत्ति-अभावादो, ओरालियमिससकायजोगणहाणुववत्तीदो वा । ण चिराण-सरारेण
कवाडगद-केवल्लिस्स संबधो अत्थि । भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव
नहीं पाई जाती है, इसलिये मनःप्राण नहीं माना गया है ।

प्राण आलापके आगे क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, व्रसकाय, औदा-
रिकमिश्रकाययोग, अणतवेदस्थान, अरुणयस्थान, केवलज्ञान, यथाव्यालविद्यार-शुद्धिसंयम,
केवलदर्शन, और द्रव्यसे कापोत लेख्या होती है ।

शंका—सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी तो छहों लेख्याएं होती हैं, फिर उन्हें यहाँ
क्यों नहीं कहते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, कपाटसमुद्रातके समय चौदह राजु आयाम (लम्बाई) से
और सात राजु विस्तारसे अथवा चौदह राजु आयामसे और एक राजुको आदि लेकर बड़े हुए
विस्तारसे व्याप्त जीवके प्रदेशोंका संख्यात अंगुलीकी अवगाहनावाले पूर्व शरीरके साथ संबन्ध
नहीं हो सकता है । यदि संबन्ध माना जायगा, तो जीवके प्रदेशोंके परिमाणवाला ही औदारिक
शरीरकी होना पड़ेगा । किन्तु ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि, विशिष्ट बंधको धारण करनेवाले
शरीरके पूर्वाक्त प्रमाणरूपसे पसरने (फैलने) की शक्तिका अभाव है । अथवा, यदि मूलशरीरके
कपाटसमुद्रात प्रमाण प्रसरणशक्ति मानी जाय तो फिर उनकी औदारिकमिश्रकाययोगता
नहीं बन सकती है । तथा कपाटसमुद्रातगत केवलीका पुराने मूलशरीरके साथ संबन्ध है नहीं,
अतएव यही निष्कर्ष निकलता है कि सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी छहों लेख्याएं होनेपर भी
कपाटसमुद्रातके समय उनका ग्रहण नहीं किया जा सकता है । किन्तु औदारिकमिश्रकाययोग
होनेके कारण एक कापोतलेख्या ही कही गई है ।

विशेषार्थ—पूर्वाभिमुख केवलीके समुद्रात करने पर कपाटसमुद्रातमें जीवके प्रदेश
ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और उत्तर दक्षिण सात राजु फैल जाते हैं ।
तथा उत्तराभिमुख केवलीके कपाटसमुद्रातके समय ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते
हैं और पूर्व पश्चिम एक राजुको आदि लेकर बड़े हुए विस्तारके अनुसार फैल जाते हैं,
परन्तु मूलशरीर संख्यात अंगुलीकी अवगाहना प्रमाण ही होता है, इसलिये मूलशरीरकी
लेख्या औदारिकमिश्रकाययोगमें नहीं ली जा सकती है । किन्तु उस समय जो नोकर्यवर्णाएं
आती हैं उर्ध्वकी लेख्या ली जायगी । अतः केवलीके औदारिकमिश्रकाययोगकी अवस्थामें
द्रव्यसे कापोतलेख्या कही है ।

१ प्रतिप ' ए बवदस्स ' इति पाठ- ।

सण्णिणो नेव असण्णिणो, आहारिणो, सागार-अणारगारेहि जुगवदुवजुत्ता वा^{१८८}।

वेडवियकायजोगीणिं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वानाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी देवगदि त्ति दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेडवियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ते, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणारगारवजुत्ता वा^{१८९}।

द्रव्यलेस्या आलापके अतो भावसे शुक्कलेस्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकस्यस्त्व, सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके चार गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सन्नपं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इत्सप्रकार थे छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सप्यस्त्व, संन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २७८ औरिकमिश्रकाययोगी सयोरिकेवलीके आलाप.

| यु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स | य | द | ले | म | स | स | सि | आ | उ |
|-----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|---|---|---|----|---|---|---|----|---|---|
| १ | अप | ६ | २ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० | १ | २ |
| सयो | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं २७९ वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

| यु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स | य | द | ले | म | स | स | सि | आ | उ |
|------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|---|---|---|----|---|---|---|----|---|---|
| ४ | अप | ६ | २ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० | १ | २ |
| मि | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| सा | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| सप्य | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| अवि | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

वेडवियकायजोगी-मिच्छाहृदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेडवियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणारगारवजुत्ता वा^{१९०}।

वेडवियकायजोगी-सासणसम्महृदीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी,

वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सन्नप, नरकगति और देवगति ये दो गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्पद्यदृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सन्नप, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों

नं. २८० वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| यु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स | य | द | ले | म | स | स | सि | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|---|---|---|----|---|---|---|----|---|---|
| १ | अप | ६ | २ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० | १ | २ |
| मि | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. २८१ वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्पद्यदृष्टि जीवोंके आलाप

| यु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | स | य | द | ले | म | स | स | सि | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|---|---|---|----|---|---|---|----|---|---|
| १ | अप | ६ | २ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० | १ | २ |
| सा | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तमज्ञाओ, वेडविव्यक्रायजोगो, तिणिण वेद, चचारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भनसिद्धिया, सासणसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, नागारुवजुत्ता हौति अणगारुवजुत्ता वा ।

वेडविव्यक्रायजोगि-सम्मामिच्छाड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्काणं, एओ जीव-ममामो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तमज्ञाओ, वेडविव्यक्रायजोगो, तिणिण वेद, चचारि कसाय, तिणिण णाणाणि तीहि अण्णाणहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, नागारुवजुत्ता हौति अणगारुवजुत्ता वा ।

वेडविव्यक्रायजोगि-असंजदमम्माड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्काणं, एओ जीवममामो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तमज्ञाओ, वेडविव्यक्रायजोग, तिणिण वेद, चचारि कसाय, तिणिण णाण, असंजमो, दो, चारो क्कयाय, तीनों अजान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेदयापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यत्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैकृतिकक्राययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्या-दृष्टि गुणस्थान, एक गदी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दोषों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसक्राय, वैकृतिकक्राययोग, तीनों वेद, चारों रूपाय, तीनों अजानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेदयापं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैकृतिकक्राययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्य-ग्दृष्टि गुणस्थान, एक सजी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दोषों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसक्राय, वैकृतिकक्राययोग, तीनों वेद, चारों रूपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

नं. २८२ वैकृतिकक्राययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

तिणिण दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, नागारुवजुत्ता हौति अणगारुवजुत्ता वा ।

वेडविव्यक्रायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तिणिण गुणङ्काणाणि, एओ जीव-समामो, छ अपज्जत्तीओ, सच पाण, चचारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेडविव्यक्रायजोगो, तिणिण वेद, चचारि कसाय, विभंगणणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिणिण दंसण, दब्बेण काउलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भव-सिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, नागारुवजुत्ता हौति अणगारुवजुत्ता वा ।

लेदयापं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपरामिक ये तीन सम्यत्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैकृतिकक्राययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि, और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान. एक सजी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसक्राय, वैकृतिकक्राययोग, तीनों वेद, चारों रूपाय, विभंगवाधिलानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे नापोलेदया, भावसे छहों लेदयापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यत्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २८३ वैकृतिकक्राययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

नं. २८४ वैकृतिकक्राययोगी जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

वेडविव्यमिस्सकायजोगि-मिच्छाद्विणीं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेडविव्यमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा^{२८५} ।

“वेडविव्यमिस्सकायजोगि-सासणसम्माद्विणीं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी,

वैक्रियकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सब्बी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो दर्शन, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत-लेख्या, भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैक्रियकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सब्बी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाए, देवगति,

१ ग सासणो णायपुण्णे । गो जी १२८

नं २८५ वैक्रियकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु.जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि.स.अ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प.प्रा. | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| स.ग. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| क.ज्ञा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| सय. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ले. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म.स. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| संज्ञि. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| आ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| उ. | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |

न. २८६ वैक्रियकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु.जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि.स.अ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प.प्रा. | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| स.ग. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| क.ज्ञा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| सय. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ले. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म.स. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| संज्ञि. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| आ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| उ. | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |

तसकाओ, वेडविव्यमिस्सकायजोगो, गधुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेडविव्यमिस्सकायजोगि-असंजदसम्माद्विणीं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, वे गदीओ, पंचि-दियजादी, तसकाओ, वेडविव्यमिस्सकायजोगो, पुरिस-गधुंसयवेदा चि दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण जहणिया काउलेस्सा तेउ-पम्म-सुव-कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा^{२८६} ।

पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियकमिश्रकाययोग, नपुसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेख्या, भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैक्रियकमिश्रकाययोगी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सब्बी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद और नपुसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेख्या, भावसे जघन्य कापोत लेख्या और तेज, पद्म तथा शुक्र लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, संब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं २८७ वैक्रियकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु.जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि.स.अ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प.प्रा. | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| स.ग. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| क.ज्ञा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| सय. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ले. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म.स. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| संज्ञि. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| आ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| उ. | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |

आहारकायजोगाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चचीओ, त्रम पाण, चत्तारि मण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, आहार-सायजोगो, पुरिमवेदो, इतिथणउंसयवेदा णत्थि । किं कारणं ? अप्पसत्थवेदेहि सहा-हारिदी ण उप्पञ्जदि ति । चत्तारि कमाय, तिण्णि गाण, मणपञ्चवणाणं णत्थि । कारणं, आहार मणपञ्चवणाणाणं महणपट्टणलम्बणविरोहदो । दो संजम, परिहारसुद्धिअंजमो णत्थि; एदेण णि मह आहारसरीरस विरोहदो । तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, माणेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मचं, उवसमसम्मचं णत्थि; एदेण णि मह विरोथादो । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हौति अणगारुजुत्ता वा^१ ।

आहारकामययोगी जीवोंके आलाप कहने पर--एक प्रसक्तसंयत गुणस्थान, एक सती पर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारकामिश्रकाययोग, एक पुरुषवेद होता है तथा स्त्री और नपुंसकवेद नहीं होते हैं ।

शंका--आहारकामययोगी जीवोंके रीतिवेद और नपुंसकवेदके नहीं होनेका क्या कारण है ?

समाधान--न्यौकि, अन्नशान्त वेदोंके साथ आहारककच्छि नहीं उत्पन्न होती है । वेद आलापके आगे चारों रूपाय, आदिके तीन शान होते हैं । मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका यह कारण है कि आहारककच्छि और मन पर्ययज्ञानका सहानवस्थानलक्षण विरोध है अर्थात् ये दोनों एक साथ एक जीवमें नहीं रहते हैं । ज्ञान आलापके आगे सामायिक और श्रेयोपस्थापना ये दो समय होते हैं परंतु परिहारविशुद्धिसमय नहीं होता है, न्यौकि, इसके साथ भी आहारकशरीरका विरोध है । संयम आलापके आगे आदिके तीनों दर्शन, द्रव्यसे श्रुतलेश्या, भावसे तेज, पत्र और शुरु लेश्याए; भव्यसिद्धिक, क्षायिक और शायोपशमिक ये दो समयत्व होते हैं, परंतु उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है, न्यौकि, इसके साथ भी आहारकशरीरका विरोध है । सम्यन्त्र आलापके आगे सन्निक, आहारक, मान्दरोपयोगी और यन्त्रारोपयोगी होते हैं ।

१ णापञ्चपरिदिपो पट्टममत्त दोणि आहारा । एदस एक्कपदे णत्थि ति जत्तेसय जाणे ॥

नो जी ७२८

न २८८ आहारकामययोगी जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|------|-----|----|----|-----|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|
| गु. जी. | प. | मा. | स. | ग. | क. | सा. | सग. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
| १ | ६ | ७ | ४ | २ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ | २ | १ | २ | २ |
| म. | स.अ. | अ. | ग. | म. | पु. | मति. | मामा. | के.द. | मा. | स. | धा. | सा. | आहा. | साका. |
| | | | | | | भुत | उदो | विना | मा. | सायो | सायो | आहा | आहा | अत्ता. |
| | | | | | | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. |

आहारमिस्रकायजोगाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चचीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्रकायजोगो, पुरिमवेदो, चत्तारि कमाय, तिण्णि गाण, दो संजमा, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भव्णेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हौति अणगारुजुत्ता वा^१ ।

कम्मइयकायजोगाणं भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वयानि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्चचीओ पंच अपञ्चचीओ चत्तारि अपञ्चचीओ, सजोगिकेवल्लि पडुच्च दो पाण, सेसाणं सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण; चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायदी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो णि अत्थि, चत्तारि

आहारकामिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर--एक प्रसक्तसंयत गुणस्थान, एक सती अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारकामिश्रकाययोग, पुरुषवेद, चारों रूपाय, आदिके तीन शान, सामायिक और छंदोपस्थापना ये दो समय, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शायोपशमिक ये दो समयत्व, तलिक, पत्र और शुरु लेश्याए, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और शायोपशमिक ये दो समयत्व, तलिक, आहारक, मान्दरोपयोगी और यन्त्रारोपयोगी होते हैं ।

कामंणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर--सिध्याद्वयि, सासादत्तसम्यग्द्वयि, अविदत्तसम्यग्द्वयि और सयोगिरेवली ये चार गुणस्थान, सत्री-पचेन्द्रिय जीवोंसे लेकर पचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां प्रतर और लोकपूरण समुदातगत सयोगिकेवलीकी अपेक्षा आयु और कायचल ये दो प्राण होते हैं तथा शेष जीवोंके क्रमशः सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं । चारों संज्ञाप तथा शीणसंज्ञास्थान भी हैं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति आदि पावों जातियां, धृथिर्वाक्याय आदि छहों काय, कामंणकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हैं, चारों कपाय तथा अरुपायस्थान भी

१ प्रतिपु ' णाऽ एक्कलस्सा ' इति पाठ ।

न २८९

आहारकामिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|------|-----|----|----|-----|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|
| गु. जी. | प. | मा. | स. | ग. | क. | सा. | सग. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
| १ | ६ | ७ | ४ | २ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ | २ | १ | २ | २ |
| म. | स.अ. | अ. | ग. | म. | पु. | मति. | मामा. | के.द. | मा. | स. | धा. | सा. | आहा. | साका. |
| | | | | | | भुत | उदो. | विना | मा. | सायो | सायो | आहा | आहा | अत्ता. |
| | | | | | | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. | अत्र. |

कसाय अकसाओ वि अस्थि, मणपञ्चत्र-विभ्रणणोणेहि विणा छ गाणणि, जहाकवाद-विहारसुद्धिसंजमो असजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, अहवा छहि पञ्चतीहि पञ्चत्त-पुव्वसरिरं पेक्खिखणुवयोरण दब्बेण छ लेस्साओ हवंति । भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णियो असण्णियो णेव सण्णियो णेव असण्णियो, अणाहारिणो, णोकम्मग्गहणाभावादो । कम्मग्गहणमत्थित्तं पडुच्च आहारित्तं किण्ण उच्चदि त्ति मणिदे ण उच्चदि; आहारस्स तिण्णि-समय-विरहकालोव-लद्धीदो । सागारवजुत्ता हति अणागरुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवहु-वजुत्ता वा^{३०} ।

हे, मनःपर्यवधान और विभगावधिज्ञानके विना छह ज्ञान, यथाव्ययात विदारशुद्धिसंयम और असंयमये दो समय, चारों वरान, द्रव्यसे शुक्कलेस्या होती है। अथवा, केवलीके छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त पूर्व शरीरको देखकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेस्याए होती हैं। भावसे छहों लेस्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; समयमिथ्यात्वके विना शेष पाव, समयस्त्व, सन्निक, असन्निक तथा सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। अनाहारक होते हैं। आहारक नहीं होनेका कारण यह है कि कर्मणकाययोगी जीव नो कर्मवर्णियोंको ग्रहण नहीं करते हैं।

शंका—कर्मणकाययोगी अवस्थामें भी कर्मवर्णियोंके ग्रहणका अस्तित्व पाया जाता है, इस अपेक्षा कर्मणकाययोगी जीवोंको आहारक क्यों नहीं कहा जाता ?

समाधान—ऐसा शंकाकारके कहने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि उन्हें आहारक नहीं कहा जाता है, क्योंकि, कर्मणकाययोगके समय नो कर्मणओंके आहारका अधिक से अधिक तीन समयतक विरहकाल पाया जाता है।

आहार आलापके आगे साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. २९० कर्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

| शु. | जी | प | प्रा | सा | ग | इ | का | वे | के | सा | सय | द | ले | म. | स | सक्ति | आ | उ. |
|------|-----|----|------|----|---|---|----|----|----|----|------|---|----|----|---|-------|---|----|
| ४ | ७ | ६अ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | २ | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |
| मि. | अप. | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | अस | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |
| सासा | जि. | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | यथा | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |
| जि. | सयो | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | विना | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |
| सयो | | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | विना | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |

कम्मइयकायजोग-मिच्छाहट्टीणं भण्णमाणे अस्थि एयं गुणद्वानं, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ चत्तारि अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णियो असण्णियो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागरुवजुत्ता वा^{३१} ।

कम्मइयकायजोग-सासणसम्महट्टीणं भण्णमाणे अस्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया,

कर्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों, चार अपर्याप्तियों, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञायं, चारों गतियों, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियों, पृथिवीनाय आदि छहों काय, कर्मणकाययोग, तर्तनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अन्नान, असंयम, आदिके दो वरान, द्रव्यसे शुक्कलेस्या, भावसे छहों लेस्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कर्मणकाययोगी सासादनसम्यदृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुण-स्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियों; सात प्राण; चारों संज्ञायं, नरकगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कर्मणकाययोग, तर्तनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अन्नान, असंयम, आदिके दो वरान, द्रव्यसे शुक्कलेस्या, भावसे छहों

नं. २९१ कर्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| शु. | जी | प | प्रा | सा | ग | इ | का | वे | के | सा | सय | द | ले | म. | स | सक्ति | आ | उ. |
|-----|----|----|------|----|---|---|----|----|----|----|----|---|----|----|---|-------|---|----|
| १ | ७ | ६अ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | २ | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |
| मि | अप | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | अस | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |
| | | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | अस | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |
| | | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | अस | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |
| | | ५ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | अस | ४ | १ | २ | ५ | २ | १ | २ |

१, १-] अवगद्वेदो, अकसाओ, अलेस्ता, गेव भवसिद्धिया गेव अभवसिद्धिया, गेव सण्णियो गेव असण्णियो, सणार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति चि एदे आलावा ण वत्तन्वा । केवलणाणं, केवलदंसणं, सुहमसांपराइयसुद्धिसंजमो जहाक्सादविहारसुद्धिसंजमो च अवणेदन्वा । अणिदिया वि अत्थि, अकाइया वि अत्थि, एदे वि आलावा ण वत्तन्वा ।

“इत्थिवेदाणं भणमणो अत्थि णव गुणद्वणाणि, चचारि जीवसमासा, छ पज्ज-चीओ छ अपज्जचीओ पंच पज्जचीओ पंच अपज्जचीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, आहार-आहारमिस्सकायजोगेहि विणा तेरह जोग, इत्थिवेद, चचारि कसाय, मणपज्जव केवलणाणेहि विणा छ णाण, परिहार-सुहमसांपराइय-जहाक्सादविहारसुद्धि-संजमेहि विणा चचारि संजम, तिण्णि दंसण, दुव्व-भोवेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभव-

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, सत्तिक और असत्तिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त स्थान, इतने आलाप नहीं कहना चाहिए । तथा केवलज्ञान, केवलदर्शन, सुहमसाम्परायशुद्धिसंयम, और यथाव्याप्तविहारशुद्धिसंयम इतने आलाप भी निकाल देना चाहिए । और अनिन्द्रिय भी होते हैं, अकार्यिक भी होते हैं, ये आलाप भी नहीं कहना चाहिए ।

स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके नौ गुणस्थान, सत्री पर्याप्त, सत्री-अपर्याप्त, असत्री-पर्याप्त और असत्री-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियों, छहों अपर्याप्तियों, असत्रीके पांच पर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों; संज्ञीके दसों प्राण, सात प्राण, असत्रीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियों, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारक-नाययोग और आहारक-मिश्र-नाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कणाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छ ज्ञान, परिहारविशुद्धि, सुहमसाम्पराय और यथाव्याप्तविहारशुद्धिसंयमके विना शेष चार संयम, आदिके तीन दर्शन, दुव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व,

न २१५ स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शु | १ | ५ | १० | ४ | १ | ३ | १ | ३ | ५ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ |
| जी | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| सा | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| स | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| उ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| आ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| इ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ए | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ओ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| उ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

सिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सगारुवजुत्ता इति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्तानं भणमणो अत्थि णव गुणद्वणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जचीओ पंच पज्जचीओ, दस पाण णव पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेदो, चचारि कसाय, छ णाण, चचारि संजम, तिण्णि दंसण, दुव्व-भोवेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो, सगारुवजुत्ता इति अणागारुवजुत्ता वा” ।

इत्थिवेद-अपज्जत्तानं भणमणो अत्थि ने गुणद्वणाणि, ने जीवसमासा, छ अपज्जचीओ पंच अपज्जचीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चचारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, संविक, असामिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं स्त्रीवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहते पर—आदिके नौ गुणस्थान, सत्री पर्याप्त और सत्री अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियों पांच अपर्याप्तियों, दसों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियों, पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनयोग, चारों वचनयोग, औपचारिक-नाययोग और वैभित्तिक-नाययोग ये दस योग; स्ववेद, चारों कणाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छ ज्ञान, अत्ययम, देशसंयम, सामायिक और छेत्रोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, प्रज्ज और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, सत्तिक, असत्तिक; आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहते पर—मिथ्याश्रयि और सासारक-सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, सत्री-अपर्याप्त और असत्री अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियों, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औपरिक-मिश्र-नाययोग, वैभित्तिक-मिश्र-नाययोग और कार्मणक-नाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेद, चारों कणाय, आदिके दो अज्ञान, प्रसयम, प्राणिके

न २१६ स्त्रीवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शु | १ | ५ | १० | ४ | १ | ३ | १ | ३ | ५ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ |
| जी | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| सा | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| स | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| उ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| आ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| इ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ए | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ओ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| उ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

दो दंसण, दब्बेण काउ-मुस्केस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभयमिद्धिया, मिच्छन्तं मायणसम्मचमिदि दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा” ।

“इत्थिवेद-मिच्छाहदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, चचारि जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ उ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण गव पाण गत्त पाण, चचारि मण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह गेण, इत्थिवेद, चचारि कप्पाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहि छ

ये दर्शन, उच्चसं कापंत और शुरु लेख्याण, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभयसिद्धिक: मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक, प्रसन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, सती अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, ज्ञी पर्याप्तियां, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण और मात प्राण, नौ प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्वीवेद, चारों कप्पाय, तीनों अमान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

न २२७ स्वीवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

न. २२८ स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ, दस पाण गव पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चचारि कप्पाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छन्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा” ।

तेसिं चैव अपञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, वे जीवसमासा, छ अपञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदो, चचारि कप्पाय, दो अण्णाण, छहों लेख्यां, भव्यसिद्धिक, अभयसिद्धिक, मिथ्यात्व, संक्षिक, असंक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हां स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्वीवेद, चारों कप्पाय, तीनों अमान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यां, भव्यसिद्धिक, अभयसिद्धिक मिथ्यात्व, संक्षिक, असंक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हां स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग स्वीवेद, चारों कप्पाय, आदिके दो अमान, असंयम, आदिके

नं. २२९ स्वीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

असंजमो, दो दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्समा, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भव-सिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छंत्ते, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार वजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१००} ।

इत्थिवेद-सासणसम्मह्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१०१} ।

दो दर्शन, दव्वसे कापोत और शुक्क लेस्यापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेस्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, साक्षिक, असक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

खीवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, संक्षी-पर्याप्त और सब्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों सन्नाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, खीवेद, चारों कपाय, तीनों अन्नान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

१ प्रतिपु 'तेउ' इत्यधिक पाठ समास्ति ।

नं ३००

खीवेदी मिथ्यादष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|------|------|---------|-----|------|-----|--------|------|------|-------|--------|------|----------|------|-----|----------|-------|--------|-------|
| शु. १ | जी २ | प ६ | प्रा. ७ | स ४ | ग ३ | इ १ | का १ | यो ३ | वे १ | क ४ | ज्ञा २ | सय १ | द १ | ले २ | म २ | संक्षि २ | जा २ | उ २ | |
| मि. २ | स. २ | अ. ५ | ७ | ७ | ति ५ | ७ | त्रस ५ | ओ ५ | मि ५ | कुम ५ | कुशु ५ | अस ५ | चक्षु. ५ | का ५ | उ ५ | मि. ५ | आहा ५ | साका ५ | अना ५ |

नं. ३०१

खीवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|------|------|---------|-----|------|-----|--------|------|------|-------|--------|------|----------|------|-----|----------|-------|--------|-------|
| शु. १ | जी २ | प ६ | प्रा. ७ | स ४ | ग ३ | इ १ | का १ | यो ३ | वे १ | क ४ | ज्ञा २ | सय १ | द १ | ले २ | म २ | संक्षि २ | जा २ | उ २ | |
| सा. २ | स. २ | अ. ५ | ७ | ७ | ति ५ | ७ | त्रस ५ | ओ ५ | मि ५ | कुम ५ | कुशु ५ | अस ५ | चक्षु. ५ | का ५ | उ ५ | मि. ५ | आहा ५ | साका ५ | अना ५ |

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्व भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा^{१०२} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो,

उर्हों खीवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; खीवेद, चारों कपाय, तीनों अन्नान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, साक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्हों खीवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सन्नाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिक-मिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; खीवेद, चारों कपाय, आदिके दो अन्नान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्क लेस्यापं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, साक्षिक, आहारक,

१ प्रतिपु 'तेउ' इत्यधिक पाठ समास्ति ।

नं. ३०२

खीवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|------|------|---------|-----|------|-----|--------|------|------|-------|--------|------|----------|------|-----|----------|-------|---------|-------|
| शु. १ | जी २ | प ६ | प्रा. ७ | स ४ | ग ३ | इ १ | का १ | यो ३ | वे १ | क ४ | ज्ञा २ | सय १ | द १ | ले २ | म २ | संक्षि २ | जा २ | उ २ | |
| सा. २ | स. २ | अ. ५ | ७ | ७ | ति ५ | ७ | त्रस ५ | ओ ५ | मि ५ | कुम ५ | कुशु ५ | अस ५ | चक्षु. ५ | का ५ | उ ५ | मि. ५ | आहा ५ | साका. ५ | अना ५ |

आहारिणो अणहारिणो, सागरुचुत्ता ह्येति अणगरुचुत्ता वा^{१०} ।

इथिवेद-सम्प्राप्तिदृष्टिं भणमाणे अथि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, उ पञ्जतीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दम जोग, इथिवेद, चत्तारि रुसाय, तिण्णि पाणाणि तीहि अण्णणेहि मिस्साणि, अमंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्माभिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुचुत्ता ह्येति अणगरुचुत्ता वा^{१०} ।

इथिवेद-अमंजदसम्मादृष्टिं भणमाणे अथि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो,

अनाकारकः साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सश्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसक्ताय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-ज्ञाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; छविद, चारों कपाय, तीनों अद्यानसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक अविततसम्यग्दृष्टि गुण-

नं. ३०३ स्त्रीवेदी सासावनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ. | का. | यो | वे. | क | सा. | सप | द. | ले | म | स | सति | आ | उ. | |
| २ | २ | ६ | २० | ४ | ३ | २ | २ | १० | २ | ४ | ३ | २ | ३ | ६ | १ | १ | २ | २ | २ | २ |
| म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ३०४ स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ. | का. | यो | वे. | क | सा. | सप | द. | ले | म | स | सति | आ | उ. |
| २ | २ | ६ | २० | ४ | ३ | २ | २ | १० | २ | ४ | ३ | २ | ३ | ६ | १ | १ | २ | २ | २ |
| म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

छ पञ्जतीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इथिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुचुत्ता ह्येति अणगरुचुत्ता वा^{१०} ।

इथिवेद-संजदासंजदाणं भणमाणे अथि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जतीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, गव

स्थान, एक सश्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसक्ताय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-ज्ञाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; छविद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, श्रायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक देशसयत गुणस्थान, एक सश्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, प्रसक्ताय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ३०५ स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ. | का. | यो | वे. | क | सा. | सप | द. | ले | म | स | सति | आ | उ. |
| २ | २ | ६ | २० | ४ | ३ | २ | २ | १० | २ | ४ | ३ | २ | ३ | ६ | १ | १ | २ | २ | २ |
| म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ३०६ स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ. | का. | यो | वे. | क | सा. | सप | द. | ले | म | स | सति | आ | उ. |
| २ | २ | ६ | २० | ४ | ३ | २ | २ | १० | २ | ४ | ३ | २ | ३ | ६ | १ | १ | २ | २ | २ |
| म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. | म.प. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणागारवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-पमत्तसंजदानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, आहारदुग णत्थि । इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, मणपज्जवणणेण विणा तिण्णि गण, परिहारसंजमेण विणा दो संजम, कारणं आहारदुग-मणपज्जवणण-परिहारसंजमेहि वेददुगोदयस्स विरोहादो । तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति

औदारिककाययोग ये नौ योग, खीवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याप, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याप, भव्यसिद्धिक, औप-शमिक, क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

खीवेदी प्रमत्तसयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सन्न्यापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं, किन्तु आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नही होता है । योग आलापके आगे खीवेद, चारों कपाय, मनःपर्ययज्ञानके विना आदिके तीन ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना आदिके दो संयम होते हैं । यहाँपर आहारककण्टिक मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके नही होनेका कारण यह है कि आहारककण्टिक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके साथ खीवेद और नपुंसकवेदके उदय होनेका विरोध है । संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्यापं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी

नं ३०७

खीवेदी प्रमत्तसयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प्रम | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| शु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प्रम | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

अणागारवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-अपमत्तसंजदानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हँति अणागारवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-अवुचयरणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ; मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि गण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

खीवेदी अप्रमत्तसयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसयत गुणस्थान, एक संब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, खीवेद, चारों ऋणय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्यापं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं ।

खीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहते पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाय-योग ये नौ योग, खीवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन,

नं ३०८

खीवेदी अप्रमत्तसयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| शु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प्रम | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| शु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प्रम | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

के समाप्तो, भोजन मुकलेस्वा, भवभिमिद्विया, वेदयोग विना दा मम्मत्तं, सण्णियो, प्राहारिणो, मागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा ।

इत्थियेद-अणियत्थीणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वयणं, एवो जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थियेद, चचारि कसाय, तिण्णि णाण, दो मंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भोजेण मुकलेस्वा; भवसिद्विया, दो मम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा ।

इत्थिये इहां लेदयापं, भावसे शुद्धलेय्या; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यस्त्वके विना औपश- विन और क्षायिक ये दो सम्यस्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना- कारोपयोगी होते हैं ।

रत्तिवेदी अनित्यकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनित्यकरण गुणस्थान, एक मनी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो मंजाप; मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, जसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदा- रिक्तकाययोग ये नो योग, खविद, चारों कयाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, इत्यसे छहों लेदयाप, भावसे शुद्धलेय्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यस्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३०९.

रत्तिवेदी अनित्यकरण जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १० | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १० | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

नं. ३१०

रत्तिवेदी अनित्यकरण जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १० | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १० | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

पुरिसवेदाणं भणमणो अत्थि णव गुणद्वयाणि, चचारि जीवसमासा, छ पञ्च-त्तीओ छ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, पुरिसवेद, चचारि कसाय, सत्त पाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ मम्मत्तं, सण्णियो अमण्णियो, आहारिणो अणगारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्ताणं भणमणो अत्थि णव गुणद्वयाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ, दस पाण णव पाण, चचारि सण्णा, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चचारि कसाय, सत्त पाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ मम्मत्तं,

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, सत्री पर्याप्त, सत्री-अपर्याप्त, असत्री-पर्याप्त और असत्री-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों अपर्याप्तियां, पंच पर्याप्तियां, पंच अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण. चारों सहाय, नर-गतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, जसकाय, पंद्रहों योग, पुरुषवेद, चारों कयाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, इव्य और भावसे छहों लेदयापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यस्त्व, सत्तिक, असत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्हां पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, सत्री-पर्याप्त और सत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दसों प्राण, नौ प्राण, चारों सहाय, नर-गतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, जसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारक-काययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कयाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, इव्य

नं. ३११

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १० | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |
| १० | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प | प |

सन्धिणो असन्धिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा^{३३} ।

“तेसिं चैव अपञ्जत्तार्णं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वयाणि, दो जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, पंच पाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुख-रुल्लेसा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता और भावसे छहों लेख्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सब्बिक, असब्बिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्याद्यष्टि, सासा-दनसम्यग्द्यष्टि, अविरतसम्यग्द्यष्टि और प्रमत्तसयत ये चार गुणस्थान, संबन्धी-अपर्याप्त और असंबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, सात प्राण, सात चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, चैक्रियकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमाति, कुभुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, सब्बिक, असब्बिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ३१२ पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|----|------|----|----|----|------|-----|----|----|----|----|-------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द. | ले | म | स | सन्धि | आ | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | स | प. | ति | स | दे | प. | त्र. | व. | व. | व. | व. | व. | के | मा | भ | स. | अहा | साका | अना. |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

नं. ३१३ पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|----|------|----|----|----|------|-----|----|----|----|-----|-------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द. | ले | म | स | सन्धि | आ | उ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | स | प. | ति | स | दे | प. | त्र. | व. | व. | व. | व. | के | मा | भ | स. | अहा | साका | अना. | अना. |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

ह्येति अणगारुवजुत्ता वा ।

पुरिसवेद-मिच्छाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, चत्तारि जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावोहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा^{३४} ।

तेसिं चैव पञ्जत्तार्णं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पुरुषवेदी मिथ्याद्यष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्यष्टि गुणस्थान, संबन्धी-अपर्याप्त, संबन्धी-अपर्याप्त और असंबन्धी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग. पुरुष-वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सब्बिक, असब्बिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्याद्यष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्यष्टि गुणस्थान, संबन्धी-अपर्याप्त और असंबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां-पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाप, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और चैक्रियकाययोग ये दश योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो

नं ३१४

पुरुषवेदी मिथ्याद्यष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|----|------|----|----|----|------|-----|----|----|----|-----|-------|------|------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| मि | स | प. | ति | स | दे | प. | त्र. | व. | व. | व. | व. | के | मा | भ | स. | अहा | साका | अना. | अना. |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
| अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस | अस |

असंजमो, दो दंमण, द्रव्य-भवेदि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छर्त्तं, सण्णो असण्णो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा^{११} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुककलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छर्त्तं, सण्णो असण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा^{११} ।

दर्यंत, द्रव्य और भावसे छहों लेदयाए. भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संक्षिक, भयसिद्धिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संक्षी-अपर्याप्त और असंक्षी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां. पांच अपर्याप्तियां सात प्राण, सात प्राण; चारों संद्राएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पनेन्द्रियजाति, तसकाय, औशक्तिसिद्धि, वैक्रियकमिथ्र और कर्मण-काययोग ये तीन योग, पुरुषवेद. चारों कयाय, आदिके दो अन्नान, अंत्यम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापात और शुक्र लेदयाए, भावसे छहों लेदयाए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संक्षिक, असंक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३१५: पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | म. | ग. | ग. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| मि. | प. | म. | ग. | ग. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सि. | आ. | उ. | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |

नं. ३१६: पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | म. | ग. | ग. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| मि. | प. | म. | ग. | ग. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सि. | आ. | उ. | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |

पुरिमवेद-भासणसम्मारुडिणहुडि जावं पढम-अणियट्टि ति ताव मूलोष-भंगो । गवरि सव्वत्थ पुरिसवेदो चैव वत्त्वो । सासण-सम्माभिच्छ-अंसजदसम्माइट्टीणं तिण्णि गदीओ वत्तवाओ ।

“णवुंमयवेदानं भण्णमाणे अत्थि णव गुणद्वणाणि, चोइस जीवसमासा, छ पज्ज-त्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अप-ज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अहु पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ देवगदी गत्थि, एंडियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीजायादी छक्कायां, तेरह जोग, णवुंमयवेद,

पुरुषवेदी जीवोंके सासादनसम्पदृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिशुचितकरण गुणस्थानके प्रथम भागत कके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं । विशेष यात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए । तथा सासादनसम्पदृष्टि, सम्प-गिमथ्यादृष्टि और असंघतसम्पदृष्टि जीवोंके गति आलाप कहते समय नरकगतिके विना शेष तीन गतियां कहना चाहिए ।

नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संक्षी-पंचेन्द्रिय जीवोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंक्षी-पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संक्षी-पंचेन्द्रिय जीवोंसे लगाकर एकेन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः पर्याप्त अपर्याप्तकालमें दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संद्राएं, नरकगति, तिर्यग्गति और मनुष्यगति ये तीन गतियां होती हैं परंतु नपुंसकवेदी जीवोंके देवगति नहीं होती है । एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिथ्रकाययोगके विना तेरह योग; नपुंसकवेद, चारों कयाय, मनःपर्ययज्ञान

नं. ३१७: नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | म. | ग. | ग. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| मि. | प. | म. | ग. | ग. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सि. | आ. | उ. | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |

चत्तारि कसाय, छण्णाण, चत्तारि सजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणह्राणाणि, सच्च जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पच्च अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सच्च पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एंडियजादि-जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, णवसंयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{३८} ।

और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशस्यम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार समय, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, छहों समयक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—आदिके नौ गुण-स्थान, पर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञापं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों समयक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, साकारोप-योगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न ३१८

नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|--------|---|------|---|---|------|------|------|------|------|------|------|------|------|----|----|----|-----|------|-----|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे. | क. | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | स | सा | आ | व | |
| ९ | ७ | ६ | १० | ४ | ३ | ५ | ६ | १० | १ | ४ | ६ | ४ | ३ | ६ | २ | ६ | २ | २ | १ | २ | ७ |
| ३ | पर्या. | ५ | ९ | ८ | न | न | मन | म | न | मन | केवल | अस. | के द | मा | म. | अ | स | आहा | साका | व | |
| | | ४ | ७ | ६ | म | विना | विना | विना | विना | विना | विना | देश | विना | विना | अ | अस | अस | अस | अना | अना | |
| | | | ४ | | | | | १ | २ | २ | | सामा | विना | विना | | | | | | | |
| | | | | | | | | ३ | ३ | ३ | | छेदी | | | | | | | | | |

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणह्राणाणि, सच्च जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पच्च अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सच्च पाण सच्च पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एंडियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, णवसंयवेद, चत्तारि कसाय, पंच पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुव-कलेस्सा, भवेण किण्ह-णील-ताउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छच्चं सासण-खइय-वेदगमिदि चत्तारि सम-चाणि, सण्णिणो अमण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारु-वजुत्ता वा^{३९} ।

णवसंयवेद-मिच्छाइड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्राणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पच्च अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ; दस पाण सच्च पाण णव पाण सच्च पाण अट्ट पाण छह पाण

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविपत्तसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञापं, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिथ, वैक्रियकमिथ और कर्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्कलेख्याएं, भावसे छण्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासा-दन, शायिक और वेदक इसप्रकार चार समयक्त्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तिया, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तिया, चार अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण,

नं ३१९

नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|----|------|------|------|------|------|------|------|------|------|----|----|----|-----|------|-----|---|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे. | क. | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | स | सा | आ | व | |
| ३ | ७ | ६ | ७ | ४ | ३ | ५ | ६ | ३ | १ | ४ | ६ | ४ | ३ | ६ | २ | ६ | २ | २ | १ | २ | ७ |
| ३ | मि | ५ | ७ | न | न | न | मन | म | न | मन | कुम | अस | के द | का | म. | मि | स | आहा | साका | व | |
| | ५ | ४ | ७ | ति | म. | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | अ | अस | अस | अना | अना | अना | |
| | | ५ | ५ | | | | | ३ | ३ | ३ | | अस | | | | | | | | | |
| | | | ४, ३ | | | | | ३ | ३ | ३ | | अस | | | | | | | | | |

भोवेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, सायगसम्मचं, नणिगो, आहारिओ, सागालसुचा होति जगालसुचा सा ।

तेसि चैत्र अपज्जाणं भणमाणे अत्थि एणं गुणद्वणं, एओ जीवममाणं, छ अपज्जाओ, दस पाण, चचारि मन्नाओ, दो गदीओ, दो-गिग्गदी गत्थि । पंचि-दियजादी, तसकाओ, वारह जोग, सासणगुणेण जीवा गिरयगदीए ण उपज्जति तेण वेडव्वियमिससकायजोगो गत्थि । गणुंअयवेद, चचारि कमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, सायगसम्मचं, गणिणो, आहारिओ अणाहारिणो, सागालसुचा होति अणागालसुचा सा ।

तेसि चैत्र पज्जताणं भणमाणे अत्थि एणं गुणद्वणं, एओ जीवममाणो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चचारि नणाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, गणुंसयवेद, चचारि कमाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजसो, दो दंसण, दब्ब-

नुसकवेदी सासादतसम्यग्दष्टि जीवोके सामान्य आहार कइने पर-एक सामान्य गुणस्थान, संबो-पर्याप्त ओर सती-अपर्याप्त ये दो जीवसमान, छहों पर्याप्तिया, उठों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचे-न्द्रियजाति, त्रसकाय, आहार-रुकाययोगिक, और वैकल्पिक-रुकाययोगके विना शेष चारव योग होते हैं। यहा पर वैकल्पिकमित्रके नहीं होतेका कारण यह है कि सामान्य गुणस्थानमे मर कर जीव नरकगतिके नहीं उत्पन्न होते हैं, इसलिए यहां पर वैकल्पिकमित्रस्ययोग नहीं है। नुसकवेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दसों, उच्च और भावसे उठों लेश्याप, भव्यमिदिक, सासादतसम्यक्त्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नुसकवेदी सासादतसम्यग्दष्टि जीवोके पर्याप्तकालसंख्यी आहार कइने पर-एक सासादत गुणस्थान, एक संबो-पर्याप्त अनसमान, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मंगयोग, चारों वचनयोग, औद्धारिककाययोग और वैकल्पिककाययोग ये दस योग। नुसकवेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दसों, उच्च और भावसे उठों लेश्याप, भव्यमिदिक,

नं. ३२३ नुसकवेदी सासादतसम्यग्दष्टि जीवोके सामान्य आहार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|-----|----|----|----|-----|----|
| गु. | जी. | प. | पा. | सा. | जा. | का. | यो | वे. | क. | जा | मं | द. | के. | म | म | मं | भा. | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सा | प | ज | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सा | प | ज | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |

भोवेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, सायगसम्मचं, नणिगो, आहारिओ, सागालसुचा होति जगालसुचा सा ।

तेसि चैत्र अपज्जाणं भणमाणे अत्थि एणं गुणद्वणं, एओ जीवममाणं, छ अपज्जाओ, दस पाण, चचारि मन्नाओ, दो गदीओ, दो-गिग्गदी गत्थि । पंचि-दियजादी, तसकाओ, वारह जोग, सासणगुणेण जीवा गिरयगदीए ण उपज्जति तेण वेडव्वियमिससकायजोगो गत्थि । गणुंअयवेद, चचारि कमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजसो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहि छ लेस्साओ, भवमिदिया, सायगसम्मचं, गणिणो, आहारिओ अणाहारिणो, सागालसुचा होति अणागालसुचा सा ।

नुसकवेदी सासादतसम्यग्दष्टि जीवोके पर्याप्तकालसंख्यी आहार कइने पर-एक सामान्य गुणस्थान, एक संबो-पर्याप्त अनसमान, छहों पर्याप्तिया, उठों अपर्याप्तिया, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहार-रुकाययोगिक, और वैकल्पिक-रुकाययोगके विना शेष चारव योग होते हैं। यहा पर वैकल्पिकमित्रस्ययोग नहीं होतेका कारण यह है कि सामान्य गुणस्थानमे मर कर जीव नरकगतिके नहीं उत्पन्न होते हैं, इसलिए यहां पर वैकल्पिकमित्रस्ययोग नहीं है। नुसकवेद, चारों कमाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दसों, उच्च और भावसे उठों लेश्याप, भव्यमिदिक, सासादतसम्यक्त्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२४ नुसकवेदी सासादतसम्यग्दष्टि जीवोके पर्याप्त आहार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|-----|----|----|----|-----|----|
| गु. | जी. | प. | पा. | सा. | जा. | का. | यो | वे. | क. | जा | मं | द. | के. | म | म | मं | भा. | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सा | प | ज | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सा | प | ज | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |

नं. ३२५ नुसकवेदी सासादतसम्यग्दष्टि जीवोके पर्याप्त आहार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|----|----|----|-----|----|----|----|-----|----|
| गु. | जी. | प. | पा. | सा. | जा. | का. | यो | वे. | क. | जा | मं | द. | के. | म | म | मं | भा. | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सा | प | ज | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सा | प | ज | ति | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म | म |

णवसंयवेद-सम्प्राप्तिसिद्धिर्गुणमणो अत्यि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चशीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णंसंयवेद, चत्तारि कसाय, तिणि गाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिससाणि, अर्मजमो, दो दंसण, दव्व-भावोहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्प्राप्तिसिद्धिं, सण्णो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा^{३३} ।

णंसंयवेद-असंजदसम्प्राप्तिसिद्धिं भण्णमाणे अत्यि एयं गुणद्वयं, वे जीवसमासा, छ पञ्चशीओ छ अपञ्चशीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो गत्यि । णंसंयवेद, चत्तारि कसाय, तिणि गाण, असंजमो, तिणि दंसण, दव्व-भावोहि छ लेस्साओ,

नपुंसकवेदी सस्यमित्थ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सस्यमित्थ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, औदा-रिक्काययोग और वैकृतिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों वचनयोग, औदा-भिप्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, सस्यमित्थ्यात्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनकारोपयोगी होते हैं ।

नपुंसकवेदी असंयतसस्यगृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविस्त-सस्यगृष्टि गुणस्थान, संखी-पर्याप्त और खबी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, औदा-रिक्काययोग, वैकृतिककाय-योग, वैकृतिकमित्थकाययोग और कामणकाययोग ये चारद योग होते हैं । किन्तु यहां पर चोत्तरिकमित्थकाययोग नहीं होता । नपुंसकवेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, क्षायिक

नं. ३२६ नपुंसकवेदी सस्यमित्थ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | १०१ | १०२ | १०३ | १०४ | १०५ | १०६ | १०७ | १०८ | १०९ | ११० | १११ | ११२ | ११३ | ११४ | ११५ | ११६ | ११७ | ११८ | ११९ | १२० | १२१ | १२२ | १२३ | १२४ | १२५ | १२६ | १२७ | १२८ | १२९ | १३० | १३१ | १३२ | १३३ | १३४ | १३५ | १३६ | १३७ | १३८ | १३९ | १४० | १४१ | १४२ | १४३ | १४४ | १४५ | १४६ | १४७ | १४८ | १४९ | १५० | १५१ | १५२ | १५३ | १५४ | १५५ | १५६ | १५७ | १५८ | १५९ | १६० | १६१ | १६२ | १६३ | १६४ | १६५ | १६६ | १६७ | १६८ | १६९ | १७० | १७१ | १७२ | १७३ | १७४ | १७५ | १७६ | १७७ | १७८ | १७९ | १८० | १८१ | १८२ | १८३ | १८४ | १८५ | १८६ | १८७ | १८८ | १८९ | १९० | १९१ | १९२ | १९३ | १९४ | १९५ | १९६ | १९७ | १९८ | १९९ | २०० |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|

भवसिद्धिया, तिणि सम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागरुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा^{३३} ।

तेसिं चैव पञ्चत्तारिं भण्णमाणे अत्यि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चशीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णंसंयवेद, चत्तारि कसाय, तिणि गाण, असंजम, तिणि दंसण, दव्व-भावोहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणि सम्मत्तं, सण्णो, आहारिणो, सागरुवजुत्ता होति अणागरुवजुत्ता वा^{३३} ।

और क्षायोपशामिक ये तीन सस्यवत्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नपुंसकवेदी असंयतसस्यगृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविस्तसस्यगृष्टि गुणस्थान, एक संखी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदा-रिक्काययोग और वैकृतिककाययोग ये दश योग, नपुंसक-वेद, चारों कसाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सस्यवत्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३२७ नपुंसकवेदी असंयतसस्यगृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | १०१ | १०२ | १०३ | १०४ | १०५ | १०६ | १०७ | १०८ | १०९ | ११० | १११ | ११२ | ११३ | ११४ | ११५ | ११६ | ११७ | ११८ | ११९ | १२० | १२१ | १२२ | १२३ | १२४ | १२५ | १२६ | १२७ | १२८ | १२९ | १३० | १३१ | १३२ | १३३ | १३४ | १३५ | १३६ | १३७ | १३८ | १३९ | १४० | १४१ | १४२ | १४३ | १४४ | १४५ | १४६ | १४७ | १४८ | १४९ | १५० | १५१ | १५२ | १५३ | १५४ | १५५ | १५६ | १५७ | १५८ | १५९ | १६० | १६१ | १६२ | १६३ | १६४ | १६५ | १६६ | १६७ | १६८ | १६९ | १७० | १७१ | १७२ | १७३ | १७४ | १७५ | १७६ | १७७ | १७८ | १७९ | १८० | १८१ | १८२ | १८३ | १८४ | १८५ | १८६ | १८७ | १८८ | १८९ | १९० | १९१ | १९२ | १९३ | १९४ | १९५ | १९६ | १९७ | १९८ | १९९ | २०० |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|

नं. ३२८ नपुंसकवेदी असंयतसस्यगृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | १०१ | १०२ | १०३ | १०४ | १०५ | १०६ | १०७ | १०८ | १०९ | ११० | १११ | ११२ | ११३ | ११४ | ११५ | ११६ | ११७ | ११८ | ११९ | १२० | १२१ | १२२ | १२३ | १२४ | १२५ | १२६ | १२७ | १२८ | १२९ | १३० | १३१ | १३२ | १३३ | १३४ | १३५ | १३६ | १३७ | १३८ | १३९ | १४० | १४१ | १४२ | १४३ | १४४ | १४५ | १४६ | १४७ | १४८ | १४९ | १५० | १५१ | १५२ | १५३ | १५४ | १५५ | १५६ | १५७ | १५८ | १५९ | १६० | १६१ | १६२ | १६३ | १६४ | १६५ | १६६ | १६७ | १६८ | १६९ | १७० | १७१ | १७२ | १७३ | १७४ | १७५ | १७६ | १७७ | १७८ | १७९ | १८० | १८१ | १८२ | १८३ | १८४ | १८५ | १८६ | १८७ | १८८ | १८९ | १९० | १९१ | १९२ | १९३ | १९४ | १९५ | १९६ | १९७ | १९८ | १९९ | २०० |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|

तेसिं चैव अपञ्जचाणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जचीओ, सच पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिणि णाण, असंजम, तणिण दंसण, दव्वेण काउ-सुवक्कलेस्सा, भावेण जहणिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मच्चं, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मच्चं लद्धं । सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होत्ति अणागारुवजुत्ता वा^{३३} ।

णउंसयवेद-संजदांसंजदाणं भणमाणे अत्थि एगं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिणि णाण, संजमांसंजम, तिणिण दंसण, दव्वेण छ

ननुसकवेदी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक अचिरतसम्यग्दष्टि गुणस्थान, एक सञ्जी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सन्नाप, नरक्रगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चैत्रियकिमिधकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग. ननुसकवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याए, भावसे जघन्य कापोतलेख्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये दो सम्यक्त्व, होते हैं, यहाँ पर क्षायोपशामिक सम्यक्त्वके होनेका कारण यह है कि कृतकृत्यवेदकी अपेक्षासे यहाँ पर क्षायोपशामिकसम्यक्त्व पाया जाता है । संक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

ननुसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संञ्जी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशो प्राण, चारों संज्ञापं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, ननुसकवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, सम्यासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेख्याए, भव्यसिद्धिक,

ने ३२९

ननुसकवेदी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा. | स. | ग | ङ | का | गो | वे. | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स. | सक्ति | आ | उ. |
|----|----|---|-------|----|---|---|----|----|-----|---|------|----|---|----|---|----|-------|---|----|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | २ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ४ | ४ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ६ | ६ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ७ | ७ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ८ | ८ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ९ | ९ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १० | १० | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ११ | ११ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १२ | १२ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १३ | १३ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १४ | १४ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १५ | १५ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १६ | १६ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १७ | १७ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १८ | १८ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १९ | १९ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| २० | २० | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |

६९८]

संत-परूवणाशुयोगद्वारे वेद-आलापवर्णनं

[१, १.

लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुवक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिणिण सम्मच्चं, सणिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होत्ति अणागारुवजुत्ता वा^{३३} ।

णउंसयवेद-पमत्तसंजदपहुडि जाव पढम-अणियद्वि त्ति ताव इत्थिवेद-भंगो । णवरि सव्वत्थ णउंसयवेदो वत्तव्वो ।

अवगदवेदणं भणमाणे अत्थि छ गुणद्वानाणि अदीदगुणद्वानं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पञ्जचीओ छ अपञ्जचीओ अदीदपञ्जची वि अत्थि, दस पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणो वि अत्थि, परिगह-सण्णा खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिदियजादी अण्णदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अक्रायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो,

औपशामिक, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

ननुसकवेदी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिच्छित्करण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप खंविदी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक ननुसकवेद ही कहना चाहिये ।

अपगतवेदी जीवोंके आलाप कहने पर—अनिच्छित्करणके अवेद भागसे लेकर अन्तके छह गुणस्थान और अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञा-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमास स्थान भी होता है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीत-पर्याप्तस्थान भी होता है, दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी होता है, परिग्रहसंज्ञा तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी होती है, पंचेन्द्रियजाति तथा अतिन्द्रियस्थान भी होता है, त्रसकाय तथा अक्रायस्थान भी होता है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिधकाययोग तथा कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी होता है, अपगतवेद, चारो कपाय

१ प्रतिशु ' पंचिदिय अणिटियत्त अत्थि ' इति पाठ ।

ने ३३०

ननुसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| शु | जी | प | प्रा. | स. | ग | ङ | का | गो | वे. | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स. | सक्ति | आ | उ. |
|----|----|---|-------|----|---|---|----|----|-----|---|------|----|---|----|---|----|-------|---|----|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | २ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ४ | ४ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ५ | ५ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ६ | ६ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ७ | ७ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ८ | ८ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ९ | ९ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १० | १० | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| ११ | ११ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १२ | १२ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १३ | १३ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १४ | १४ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १५ | १५ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १६ | १६ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १७ | १७ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १८ | १८ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| १९ | १९ | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |
| २० | २० | ५ | ७ | ५ | २ | २ | २ | २ | १ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ |

चत्तारि क्कसाय अक्कमाओ वि अत्थि, पंच गाण, चत्तारि संजसो गेव संजसो गेव असंजसो गेव संजसामंजसो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; ममसिद्धिया गेव ममसिद्धिया गेव अमवसिद्धिया वि अत्थि, दो मम्मत्तं, मण्णिणो गेव मण्णिणो गेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, मागाकमजुत्ता हँति अणागारुजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा^{१३} ।

निदिय-अणियट्ठिप्पन्नुइं जाण सिद्धा चि ताव मूलोच-भंगो ।

ए१ वेदमगणा समत्ता ।

कमायाणुमदेण ओघालावा मूलोच-भंगा । गवरि दस गुणट्ठाणाणि वत्तव्वाणि । अदीदुणट्ठाणं, अदीदजीवसमासो, अदीदपञ्चचीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी,

तथा अक्कामन्यान भी होता है, मतिमान आदि पांचों घान, नामायिक, छेत्तेपस्थापना, म्मससण्णाय ओर यथान्यात ये चार सयम तथा संयम, असंयम और संयमालंयम चिकणोंसे रहित भी न गान होता है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे शुल्लेश्या तथा अलेश्यास्थान भी होता है; भव्यमिस्सिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों चिकणोंसे रहित भी स्थान होता है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, सक्षिक तथा सक्षिक और असंक्षिक इन दोनों चिकणोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

अपगतयेरी जीवोंके अनियुक्तिरूपके छितीयभागसे लेकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए ।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई ।

कमायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान हैं । विशेष बात यह है कि कमायमार्गणसे वरा गुणस्थान कहना चाहिए । यहाँ पर अतीतगुणस्थान, अतीत-जीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, क्षीणसंभ्रा, सिद्धगति, अनिन्द्रियत्व, अकायत्व,

नं. ३३२

अपगतयेरी जीवोंके आलाप.

| उ | जी | प | शा | स | ग | का | यो | वे | क | सा. | स | म | सा. | आ | उ |
|---|----|---|----|---|---|----|----|----|---|-----|---|---|-----|---|---|
| १ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |
| २ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |
| ३ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |
| ४ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |
| ५ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |

अणियत्तं अकायत्त, अजोगो, अक्कसाओ, केवलगाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजसो, केवलदंसणं, दब्ब-भावहेहि अलेस्साओ, गेव भवसिद्धिया, गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा चि णत्थि ।

क्रोधकसायणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, नोइस जीवसमासा, छ पञ्चचीओ छ अपञ्चचीओ पंच पञ्चचीओ पंच अपञ्चचीओ चत्तारि पञ्चचीओ चत्तारि अपञ्चचीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अहु पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, क्रोधकसाय, सत्त गाण, पंच सजम सुहुम-जहाक्खादसंजसा णत्थि, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावहेहि छ लेस्साओ, मवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हँति अणागारुजुत्ता वा^{१४} ।

अयोग, अक्कपाय, केवलज्ञान, यथायथाविहारसुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्यत्व, भव्यसिद्धिक चिकणसे रहित, सक्षिक और असंक्षिक इन दोनों चिकणोंसे रहित, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त इतने स्थान नहीं होते हैं ।

क्रोधकपायी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण, चारों संदापं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकपाय, केवलज्ञानके विना शेष सात घान, पांच संयम होते हैं, किन्तु यहाँ पर सूक्ष्मसास्पराय और यथायथातसंयम नहीं होते हैं; आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, सक्षिक, असंक्षिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

१ आ श्रुती 'अणियट्ठियत्त पि अत्थि' इति पाठ ।

नं. ३३२

क्रोधकपायी जीवोंके सामान्य आलाप.

| उ | जी | प | शा | स | ग | का | यो | वे | क | सा. | स | म | सा. | आ | उ |
|---|----|---|----|---|---|----|----|----|---|-----|---|---|-----|---|---|
| १ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |
| २ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |
| ३ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |
| ४ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |
| ५ | १४ | ६ | १० | ४ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ७ | ३ | ६ | २ | २ | २ |

आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा^{३३८} ।

तेसिं चैव पञ्जत्तानं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, क्रोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा^{३३९} ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सन्न्याप, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और चैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकपाय, तीनों अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संबन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों

नं. ३३८ क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|---|------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु. | जी | २ | प | प्रा | १० | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-----|----|---|---|------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

नं. ३३९ क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|---|------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु. | जी | २ | प | प्रा | १० | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-----|----|---|---|------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, क्रोधकसाओ, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काड-सुभक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा^{३४०} ।

क्रोधकसाय-सम्मामिच्छद्दीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, क्रोधकसाय, तिण्णि पाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता ह्येति अणगारुवजुत्ता वा^{३४१} ।

संज्ञाप, नरकगतिको छोड़ कर शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, चैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, क्रोधकसाय, आदिके दो अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेस्याप, भावसे छहों लेस्याप, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

क्रोधकपायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सन्न्याप, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और चैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकसाय, तीनों अज्ञानसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्यापं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संबन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३४० क्रोधकपायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|---|------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु. | जी | २ | प | प्रा | १० | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-----|----|---|---|------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

नं. ३४१ क्रोधकपायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|---|------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु. | जी | २ | प | प्रा | १० | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|-----|----|---|---|------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

कोधकसाय-संजदासंजदानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि गाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुकुक्केस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, साण्णिणो, आहारिणो, सागारुवञुत्ता होति अणागारुवञुत्ता वा ।

कोधकसाय-पमत्तसंजदानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठानं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ दस पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, (मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारुह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ,) चचारि गाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुकुक्केस्साओ; भव-

कोधकपायी संयतासयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संबो पर्यंत जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिथिचगति ओर मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, कोधकसाय, आविके तीन दान संयमासंयम, आविके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पम और शुक्र लेख्याएं, भवसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्पत्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी ओर अनाकारो-पयोगी होते हैं ।

कोधकपायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, संबो-पर्यंत और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, कोधकसाय, आविके चार ज्ञान, सामायिक, छेत्रोपस्थापना ओर परिहारचिद्युद्धि ये तीन संयम, आविके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पम और शुक्र लेख्याएं,

१ शक्ति कोष्टतर्गतपाठो नास्ति ।

न ३४५ कोधकपायी संयतासयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | का | यो | वि. | क. | भा | सग | द | के. | म | म | मात्ति | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|----|----|-----|----|----|----|---|-----|---|---|--------|---|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | २ |
| २ | स | ५ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ |
| ३ | प | ५ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ |

सिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, मण्णिणो, आहारिणो, सागारुवञुत्ता होति अणागारुवञुत्ता वा । कोधकसाय-अपमत्तसंजदानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, चचारि गाण, तिण्णि मंजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुकुक्केस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, साण्णिणो, आहारिणो, सागारुवञुत्ता होति अणागारुवञुत्ता वा ।

भवसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्पत्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कोधकपायी अमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक अमत्तसंयत गुणस्थान, एक संबो पर्यंत जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, आहारककायेके षिना शेष तीन मन्नाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, कोधकसाय, आविके चार ज्ञान, सामायिक, छेत्रोपस्थापना ओर परिहारचिद्युद्धि ये तीन संयम, आविके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तेज, पम और शुक्र लेख्याएं, भवसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्पत्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होने हैं ।

नं. ३४६ कोधकपायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | का | यो | वि. | क. | भा | सग | द | के. | म | म | मात्ति | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|----|----|-----|----|----|----|---|-----|---|---|--------|---|---|
| १ | १ | ५ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ |
| २ | स | ५ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ |
| ३ | प | ५ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ |

नं. ३४७ कोधकपायी अमत्तसयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | का | यो | वि. | क. | भा | सग | द | के. | म | म | मात्ति | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|----|----|-----|----|----|----|---|-----|---|---|--------|---|---|
| १ | १ | ५ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ |
| २ | स | ५ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ |
| ३ | प | ५ | १० | ४ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ |

शोधकसाय-अणुव्यकरणं भणमणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, शोधकसाय, चचारि गाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणुगारुजुत्ता वा^{१०} ।

'शोधकसाय-पदमथणियद्वीणं भणमणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग,

शोधकसाय अर्धकरण जीवोंके आलाप कहते पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक मंजी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, आहारसंज्ञके विना शेष तीन संज्ञाएँ, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, चारों समोयोग, चारों वचनयोग, और औद्यत्तिककाय-योग ये नौ योग, तीनों वेद, शोधकसाय, आदिके चार ज्ञान, सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ, भावसे शुक्लेख्या. भव्यसिद्धिक, आपशमिक और आधिक ये दो सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

शोधकसाय प्रथम भागवती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहते पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिश्रमे दो संग्रह, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, तीनों

न. ३४८ शोधकसाय अर्धकरण जीवोंके आलाप.

| जी | प | मा | म | ग | ल | वा | श | स | य | द | ले | म | म | स | सि | आ | उ |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ३४९ शोधकसाय प्रथम भागवती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

| जी | प | मा | म | ग | ल | वा | श | स | य | द | ले | म | म | स | सि | आ | उ |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

तिण्णि वेद, शोधकसाय, चचारि गाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणुगारुजुत्ता वा ।

शोधकसाय विदियअणियद्वीणं भणमणे अस्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, परिगहसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवमदवेदो, शोधकसाय चचारि गाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणुगारुजुत्ता वा^{१०} ।

एवं माण-नायाकसायाणं पि मिच्छाद्विप्पहुडिं जाव अणियद्वि चि वत्तं । णवरि जत्थ शोधकसाओ तत्थ माण-नायाकसाया वत्तव्वा । लोभकसायस्स शोधकसाय-भंगो । णवरि ओघालावे भणमणे दस गुणद्वयाणि, छ संजम, लोकसाओ च वत्तव्वो ।

वेद, शोधकसाय, आदिके चार ज्ञान, सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएँ, भावसे शुक्लेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और श्राधिक ये दो सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

शोधकसाय द्वितीय भागवती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहते पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिश्रमे चार मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, शोधकसाय, आदिके चार ज्ञान, सामाधिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन द्रव्यसे छहों लेख्याएँ, भावसे शुक्लेख्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और श्राधिक ये दो सम्यक्त्व, सन्निक आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसी प्रकारसे मानकसाय और मायाकसाय जीवोंके मिथ्याद्वि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके आलाप कहना चाहिए । विशेष बात यह है कि कसाय आलाप कहते समय जहां ऊपर शोधकसाय कहा है, वहांपर मानकसाय और मायाकसाय कहना चाहिए । लोभकसायके आलाप शोधकसायके आलापोंके समान है । विशेष बात यह है कि लोभकसायके ओघालाप कहने पर-आदिके द्वारा गुणस्थान, सयम आलाप कहते समय यथास्थानसयमके

नं. ३५० शोधकसाय द्वितीय भागवती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप.

| जी | प | मा | म | ग | ल | वा | श | स | य | द | ले | म | म | स | सि | आ | उ |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, दो एणं अत्थि चत्तारि गुणद्वानाणि अदीदगुणद्वानं पि अत्थि, दो वि अत्थि, दस चत्तारि दो एणं पाण अदीदपाणो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिदियजादी अर्णिदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकापत्तं पि अत्थि, एणारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अरुसाओ, पंच पाण, जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजमो गेव संजमो गेव असंजमो गेव संजमांसंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भवेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया गेव भवसिद्धिया गेव अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो, आहारिणो विना छह सयम और कपाय आलाप कहते समय लोभकपाय कहना चाहिये ।

अकपायी जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकपाय, क्षीणकपाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, सबी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तस्थान भी है, दशों प्राण, सयोगिकेवलीके समवित चार प्राण और दो प्राण, अयोगिकेवलीके समवित एक प्राण और सिद्ध जीवोंकी अपेक्षासे अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसत्ता, मत्थ्यगति तथा सिद्धगति भी है, पचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्वस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाय-योग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकपाय, पाँचों सम्यग्ज्ञान, यथाव्यतविहारशुद्धिसंयम तथा सयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान भी है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्याणं, भावसे शुक्कलेदया तथा अलेस्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक तथा

१ आ प्रती " एण १०-४-२-१ " इति पाठ ।

नं ३५२

अकपायी जीवोंके आलाप

| गु | जी. | प | प्रा | सं. | ग | इ | का | यो. | वे | क | ज्ञा | मय. | द | ले | म. | स | सखि | आ | उ. | |
|-----|-----|-----|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| २ | २ | २ | १०,४ | ० | १ | १ | २ | ११ | ० | ० | ५ | १ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अत | स प | ६अ. | २,१ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अती | स.अ | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती | अती |
| ग. | अती | पयी | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण | प्राण |
| | जीव | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

अणाहारिणो, सागारुवञ्जता हति अणागारुवञ्जता वा ('सागार-अणागारोहिं जुगवहु-वञ्जता वा ।)

उवसंतकसायपपहुडि जाव सिद्धा चि ओघ-भंगो ।

एवं कसायमगणा समत्ता ।

गाणाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगा ।

मदि-सुदअण्णाणीणं भणमणे अत्थि दो गुणद्वानाणि, चोदस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण गव पाण सत्त पाण अहु पाण छ पाण सत्त संक्षिक और असंक्षिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

अरुषयी जीवोंके उपशान्तकपाय गुणस्थानसे लगाकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप ओघालापके समान जानना चाहिये ।

इसप्रकार कपायमार्गणा समाप्त हुई ।

ज्ञानमार्गणके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिये ।

मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण,

१ प्रतिगु कोष्ठकार्गताठो नास्ति ।

नं. ३५२

मति श्रुत-अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप

| गु | जी. | प | प्रा | सं. | ग | इ | का | यो. | वे | क | ज्ञा | सय. | द | ले | म. | स | सखि | आ | उ. | |
|----|-----|----|------|-----|---|---|----|-----|----|---|------|-----|---|----|----|---|-----|---|----|---|
| २ | २ | २ | २०,७ | ० | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | २ | ४ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि | ६अ | ६अ | ९,७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| सा | ५अ | ५अ | ७,५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ४प | ४प | ६,४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ४अ | ४अ | ४,३ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

पाण पंच पाण छ पाण चत्वारि पाण तिणि पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिणि वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णणो अमण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जचाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणद्वयाणि, सत्त जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्वारि पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्वारि पाण, चत्वारि सण्णाओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिणि वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णणो अमण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

चार प्राण तीन प्राण; चारों संज्ञापं, चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, प्रथमिकाय आदि छारों काय, आहाररुकाययोग और आहाररुमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कपाय, कुमति और कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सामानसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक, असक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उत्तरी मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञापं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, प्रथमिकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों तन्त्रयोग, औपारिककाययोग और वैकिकिककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक, असंक्षिक;

नं. ३५३

मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|---|-------|----|----|----|-------|-----|----|----|-------|------|--------|-----|----|-----|-----|-----|--------|
| श्रु | जी | प | प्रा. | स. | ग. | इ. | क्रा. | यो. | वे | क. | मा. | स्य. | द. | हे. | स. | स. | सि | आ | उ |
| २ | १ | १ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | २ | १ | २ | ६ | २ | २ | २ | १ | २ |
| मि. | पयो. | ५ | ६ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | कुम. | अम | चक्षु. | मा | म. | मि | स. | आहा | साज्ञ. |
| मा. | | ४ | ८ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | कुशु. | अच | अच | अच | अ. | मा. | अम. | | अना. |
| | | | | | | | | जी. | १ | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | वे. | १ | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ४ | | | | | | | | | | | |

सण्णणो असण्णणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्जचाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणद्वयाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्वारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्वारि पाण तिणि पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिणि जोग, तिणि वेद, चत्वारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

मदि-सुदअण्णाण-मिच्छाइहीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, चोइस जीव-समासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्वारि पञ्जत्तीओ चत्वारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उत्तरी मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, प्रथमिकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैकिकिकमिश्रकाययोग और कार्भणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याप, भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासा-दसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संक्षिक, असक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मति-श्रुत-अज्ञानी मित्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मित्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात

नं. ३५४

मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|-------|----|----|----|-------|-----|----|----|-------|------|--------|-----|----|-----|------|------|-----|
| श्रु | जी | प | प्रा. | स. | ग. | इ. | क्रा. | यो. | वे | क. | मा. | स्य. | द. | हे. | स. | स. | सि | आ | उ |
| २ | १ | १ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | ६ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | अप | ५ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | कुम. | अम | चक्षु. | मा | मि | स. | आहा. | अना. | अना |
| मा. | | ४ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | कुशु. | अच | अच | अच | अ. | मा. | अम. | | अना |
| | | | | | | | | जी. | १ | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | वे. | १ | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ४ | | | | | | | | | | | |

दस जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगदीए विणा तिणिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिणिण जोग, तिणिण वेद, चत्तारि क्रमाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुव-कलेस्साओ, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०} ।

विभंगणाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणह्णणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, औदारिककाययोग ओर वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कपाय, कुमाति ओर कुशुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य ओर भावसे छदों लेइयाएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सखी अपर्याप्त जीवसमास, छदों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, व्रतकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत ओर शुछ लेइयाएं, भावसे छदों लेइयाएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विभंगज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, एक संबन्धी पर्याप्त जीवसमास, छदों पर्याप्तियां, दस पाण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

नं. ३६० मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| शु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | ६. | ६. | गो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सखि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|----|----|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| सा. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |

मदि मुद-अण्णाण-सासणसमाह्णणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, दो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भोवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, औदारिककाययोग ओर वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य ओर भावसे छदों लेइयाएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सखी-पर्याप्त जीवसमास, छदों पर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, व्रतकाय, औदारिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य ओर भावसे छदों लेइयाएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३६० मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| शु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | ६. | ६. | गो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सखि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|----|----|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| सा. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |

नं. ३६० मति श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| शु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | ६. | ६. | गो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सखि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|----|----|
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| सा. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |
| का. | ६ | ६ | ७ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | २ | २ | १ | २ | २ | १ | १ | १ | २ | २ |

दस जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, विभंगणणं, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वा^{३३} ।

विभंगणणि-मिच्छाहदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, विभंगणण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वा^{३३} ।

त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैकिकिकाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, एक विभगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विभंगण्णानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

न. ३६१ विभंगण्णानी जीवोंके सामान्य आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|-------|----|---|------|-------|-----|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | १ | १ | २ | २ | ६ | २ | १ | १ | २ |
| २ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | अस | चक्षु | अव | ६ | ६ | ६ | आहा | २ |
| मि | प | | | | | | | औ | १ | | | | | | अ | सासा | | अना | |
| पा | | | | | | | | वै | १ | | | | | | | | | | |

न ३६२ विभंगण्णानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
|----|------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|-------|----|---|----|-------|-----|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | १ | १ | २ | २ | ६ | २ | १ | १ | २ |
| मि | स.प. | | | | | | | म | ४ | | | अस | चक्षु | अव | ६ | ६ | ६ | आहा | २ |
| | | | | | | | | व | ४ | | | | | | अ | मि | | अना | |
| | | | | | | | | औ | १ | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | वै | १ | | | | | | | | | | |

विभंगणणि-सासणसम्माहदीण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, विभंगणण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणगारुवुत्ता वा^{३३} ।

आभिणिबोहिय-सुदणणणं भण्णमाणे अत्थि तत्र गुणद्वण्णाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चचारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगद-वेदो वि अत्थि, चचारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो पाण, सत्त सजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो

विभंगण्णानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविततसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, सन्धी-पर्याप्त और सन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं. ३६३ विभंगण्णानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
|------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|-------|----|---|-----|-------|-----|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | १ | १ | २ | २ | ६ | २ | १ | १ | २ |
| सासा | स | प | | | | | | म | ४ | | | अस | चक्षु | अव | ६ | ६ | ६ | आहा | २ |
| | | | | | | | | व | ४ | | | | | | म | सा. | स | अना | |
| | | | | | | | | औ | १ | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | वै | १ | | | | | | | | | | |

अणाहारिणो, सागारुच्युता इति अणागारुच्युता वा^१ ।

तेषिं चैव पञ्चतानं भण्णमाणे अत्थि णव गुणद्वयाणि, एगो जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एमारुह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अरुणाओ वि अत्थि, दो पाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुच्युता इति अणागारुच्युता वा^१ ।

पयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं आभिनिवोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवे क्षीणकृपाय तकके नौ गुणस्थान, एक संक्षी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियों; दस पाण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसजास्थान भी है, चारों गतियों, पंचेन्द्रिय-जाति, तसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कृपाय तथा अकृपायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याय, भव्यसिद्धिक, औपनामिक आदि तीन सम्यक्त्व; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३६४

मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| का | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ग | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| स | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| पा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

नं. ३६५

मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| का | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ग | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| स | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| पा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

तेषिं चैव अपञ्चतानं भण्णमाणे अत्थि दो गुणद्वयाणां, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो पाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुच्युता इति अणागारुच्युता वा^१ ।

आभिनिवोहिय-सुदण्णण-असंजदसम्मइण्णं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

उन्हीं आभिनिवोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियों, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियों, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, औदारिकमिश्र, चैन्नियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कर्मणकृत्ययोग ये चार योग, खंविदेके विना शेष दो वेद, चारों कृपाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं; भव्यसिद्धिक, औपनामिक आदि तीन सम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आभिनिवोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संक्षी-पर्याप्त और संक्षी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियों, छहों अपर्याप्तियों, दस पाण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियों, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, आहारककृके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कृपाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं,

नं. ३६६

मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| प | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| जा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| का | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ग | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| स | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| पा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| वि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| म | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चैव पज्जचाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जचीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो पाण, असंजसो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा" ।

भयसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, अनाहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं आभिनियोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, चारों प्राण, चारों संज्ञायं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कपाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीनों सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं ३६७ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|-------|-----|-----|----|----|-----|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|-------|-------|
| गु.जी. | प. | पा. | सं. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | व. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सं.प. | सं.अ. | १० | ७ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | के.द. | के.द. | म. | म. | ३ | २ | २ |
| सं.अ. | सं.अ. | ७ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | अस. | विना. | विना. | म. | म. | ३ | २ | २ |
| | | | | | | वि. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं ३६८ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|-------|-----|-----|----|----|-----|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|-------|-------|
| गु.जी. | प. | पा. | सं. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | व. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सं.प. | सं.अ. | १० | ७ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | के.द. | के.द. | म. | म. | ३ | २ | २ |
| सं.अ. | सं.अ. | ७ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | अस. | विना. | विना. | म. | म. | ३ | २ | २ |
| | | | | | | वि. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेसिं चैव अपज्जचाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जचीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो पाण, असंजसो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणागारुवजुत्ता वा" ।

संजदासंजदप्पहुं ज्ञान खीणकसाओ चि ताव मूलोव-भंगो । गवरि आभिणि-वोहिय-सुदण्णाणि वचव्वाणि । एवमोहिणणं पि वचव्वं । गवरि ओहिणणं एकं चैव भाणिदव्व । गाण-दंसणमगण्णाथा जेण खओवसमसस्सिउण द्दिआओ तेण मदि-सुदण्णाणेषु गिरुद्वेषु दोहि तीहि चउहि वा ओहि-मणपज्जवण्णाणेषु गिरुद्वेषु तीहि

उन्हीं आभिनियोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञायं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग. पुरुषवेद और नपुसकवेद ये दो वेद, चारों कपाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय आभिनियोधिकज्ञान और श्रुतज्ञान ही कहना चाहिए । इसीप्रकार अवधिज्ञानके आलाप जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि यहां पर पूर्वोक्त दो ज्ञानोंके स्थानमें एक अवधिज्ञान ही कहना चाहिए ।

टीका—जब कि मतिज्ञानादि क्षायोपशमिक ज्ञानमार्गणा और चक्षुदर्शनादि क्षायोप-शमिक दर्शनमार्गणाएं अपने अपने आवरणिय कर्मोंके क्षयोपशमके आश्रयसे स्थित हैं, तब मति-ज्ञान और श्रुतज्ञान-निरुद्ध आलापोंके कहने पर दो, तीन अथवा चार ज्ञान, तथा अवधिज्ञान

नं. ३६९ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|-------|-----|-----|----|----|-----|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|-------|-------|
| गु.जी. | प. | पा. | सं. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सक्ति. | आ. | व. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| सं.प. | सं.अ. | १० | ७ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | के.द. | के.द. | म. | म. | ३ | २ | २ |
| सं.अ. | सं.अ. | ७ | ७ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | अस. | विना. | विना. | म. | म. | ३ | २ | २ |
| | | | | | | वि. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. | विना. |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

चउदि वा गणोदि होद्वमिति सचमेदं, किंतु इयरेखु संतेसु वि ण विवक्खा कया, तेण विवक्खिय-गाण-वदिरित्त-गाणाणभवणयणं कयं ।

मणपञ्जवणाणीणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणद्वाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदिय-जादी, तससाओ, आहारदुगेण विणा गव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपञ्जवणाणं, परिहारसंजमेण विणा चत्तारि संजस, विणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुम्भलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, वेदगसम्मत्त-पच्छायद-उजसमतम्मत्तसमाद्दिस्सि पढमसमए वि मणपञ्जवणाणुवलंभादो । मिच्छत्त-

ओर मनःपर्ययज्ञान-निरुद्ध आलापोंके कहते पर तीन अथवा चार ज्ञान होना चाहिए ?

विशेषार्थ—शंकाकारके कहने का यह भाव है कि जब मतिज्ञान आदि चार ज्ञान शायोपशामिक होनेके कारण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानके साथ अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान हो सकते हैं, तब विचक्षित किसी भी ज्ञानमार्गणके आलाप कहते समय अपने सिचाय शेष ज्ञानोंको भी कहना चाहिए । अर्थात् छन्दस्य जीवोंके कससे कम मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान तो होते ही हैं; तथा इनके साथ अवधिज्ञान, अथवा मनःपर्ययज्ञान अथवा दोनों ही ज्ञान हो सकते हैं, इसलिये मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय मति और श्रुत ये दो अथवा मति, श्रुत और अवधि ये तीन अथवा, मति, श्रुत और मन पर्यय ये तीन अथवा, मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए । इसीप्रकार अवधि-ज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय—क्रमशः मति, श्रुत और अवधि ये तीन तथा मति, श्रुत और मनःपर्यय ये तीन ज्ञान अथवा मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए ।

समाधान—आपका यह कहना सत्य है, किन्तु विवक्षित ज्ञानके साथ इतर ज्ञानोंके होने पर भी उनकी विचक्षा नहीं कि गई है, इसलिये विवक्षित ज्ञानसे अतिरिक्त अन्य ज्ञानोंको नहीं गिनाया गया है ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहते पर—प्रमत्तसंयत्तसे लेकर क्षीणकषाय तकके सात गुणस्थान, एक सदी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, वृशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसत्तास्थान भी हैं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकक्राययोग और आहारकमिप्रक्राययोगके विना नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी हैं, मनः-पर्ययज्ञान, परिहारियुक्तिसंयमके विना चार संयम, आदिके तीन वर्तन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, भागसे तेज, पम ओर श्रुत लेस्यापं; भव्यसिद्धिर, तीन सम्यक्त्व होते हैं; मनःपर्ययज्ञानिके ओपशामिकसम्यक्त्व कैसे होता है, इसका समाधान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि जो

१ वागमचीगदिपुरो वेदगमको जग निजोविता । अतोपुहुत्तकाळ अथापमवो पमचो य ॥ तवो विपारिणिग सन्मोरे गम नु उवममरि । उ ध. २०३, २०४.

पच्छायद-उवसमसमाद्दिम्मि मणपञ्जवणाणं ण उवल्लभदे; मिच्छत्तपच्छायदुक्कसुव-समसम्मत्तकालादो वि गहियसंजमपढमसमयादो सव्वजहणमणपञ्जवणाणुपायाण-संजमकालरूप बहुसुवलभादो । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारु-

वेदकसम्यक्त्वसे पीछे द्वितीयोपशामसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उस उपशामसम्यक्त्वके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है । किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशामसम्यक्त्वके जीवमें मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशामसम्यक्त्वके उत्कृष्ट उपशामसम्यक्त्वके कालसे भी ग्रहण किये गये संयमके प्रथम समयसे लगाकर सर्व जघन्य मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेवाला संयमकाल बहुत बड़ा है ।

विशेषार्थ—ऊपर मनःपर्ययज्ञानिके तीनों सम्यक्त्व बतलाये गये हैं । क्षायिक और क्षायोपशामिकसम्यक्त्वके साथ तो मनःपर्ययज्ञान इसलिये होता है कि मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें जो विशेष संयम हेतु पड़ता है वह विशेष संयम इन दोनों सम्यक्त्वोंमें हो सकता है । अब रही औपशामिकसम्यक्त्वदर्शनकी बात, जो उसके प्रथमोपशामसम्यक्त्व और द्वितीयोपशामसम्यक्त्व ऐसे दो भेद हैं । उनमें प्रथमोपशामसम्यक्त्वको अनादि अथवा सादि मिथ्या-दृष्टि ही उत्पन्न करता है और उसके रहनेका जघन्य अथवा उत्कृष्टकाल अन्तर्मुहूर्त ही है । यह अन्तर्मुहूर्तकाल, संयमको ग्रहण करनेके पश्चात् मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेके योग्य संयममें विशेषता लानेके लिये जितना काल लगता है उससे छोटा है । इसलिये प्रथमोपशाम सम्यक्त्वके कालमें मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति न हो सकनेके कारण मनःपर्ययज्ञानके साथ उसके होनेका निषेध किया गया है । द्वितीयोपशामसम्यक्त्व उपशामश्रेणीके अभिमुख विशेष संयमके ही होता है, इसलिये यहाँपर आलगसे मनःपर्ययज्ञानके योग्य विशेष संयमको उत्पन्न करनेकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है और यही कारण है कि द्वितीयोपशाम-सम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञानकी प्राप्ति हो सकती है । अथवा जिस संयमिति पहले वेदकसम्यक्त्वके कालमें ही मनःपर्ययज्ञानको ग्रहण कर लिया है उसके भी उपशामश्रेणीके अभिमुख होनेपर द्वितीयोपशामसम्यक्त्वकी प्राप्ति हो जाती है, इसलिये भी द्वितीयोपशामसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें मनःपर्ययज्ञान पाया जा सकता है । ऊपर दीक्षामें 'पढमसमए वि' में जो अपि शब्द आया है उससे यह ध्वनित होता है कि द्वितीयोपशामसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके द्वितीयार्थिक समयमें वर्द्धमान चारित्र रहता है, इसलिये वहाँ तो मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न हो ही सकता है, किन्तु प्रथम समयमें भी संयममें इतनी विशेषता पाई जाती है कि वह मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें कारण हो सकता है । इस कथनका तात्पर्य यह हुआ कि प्रथमोपशामसम्यक्त्वके अनन्तर या उसके साथ संयमकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उसमें तो मनःपर्ययज्ञान नहीं उत्पन्न हो सकता है । परन्तु द्वितीयोपशामसम्यक्त्व संयमिके ही होता है, इसलिये उसमें मनःपर्ययज्ञानके उत्पन्न होनेमें कोई विशेष नहीं है । इसप्रकार मनःपर्ययज्ञानके साथ तीनों सम्यक्त्व तो देते हैं, किन्तु औपग-

वजुता वा^{१२} ।

मणपञ्जवणान-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ ति ताव मूलोघ-मंगो ।
णवरि मणपञ्जवणानं एक्कं चैव वत्तव्वं । परिहारसुद्धिसंजसो वि गत्थि ति भाणिदव्वं ।

केवलणाणानं भण्णमाणे अत्थि वे गुणद्वणाणि अदीदगुणद्वानं पि अत्थि, दो जीवसमासा एगो वा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पञ्जचीओ छ अपञ्जचीओ अदीदपञ्जचीओ वि अत्थि, चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणा वि अत्थि, खीणसणाओ, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिदियजादी अणिदियं पि अत्थि, तसकाओ अकाओ वि अत्थि, सत्त जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेद, अकत्ताओ, केवलणाणं, जहाक्सादसुद्धिसंजसो गेव संजसो गेव असंजसो गेव संजसांसंजसो वि

सिकसम्यक्कम्मं द्वितीयोपशमका ही ग्रहण करना चाहिए, प्रथमोपशमका नहीं । सम्यक्त्व आलापके आगे संक्षिप्त, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकथाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके आलाप मूल ओघालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय एक मनःपर्ययज्ञान ही कहना चाहिए । तथा संयम आलाप कहते समय परिहारशिशुद्धिसंयम नहीं होता है, ऐसा कहना चाहिए ।

केवलज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये दो गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो अथवा एक पर्याप्त जीवसमास है तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तस्थान भी होता है, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासाच्छ्वास ये चार प्राण, अथवा सद्गुदागत अपर्याप्तकालमें आयु आर कायबल ये दो प्राण और अयोगिकेवलीके एक आयु प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भा है, पंच-न्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदारिककथायोग, औदारिकमित्रतायोग आर कामर्ण-काययोग ये सात योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकथाय, केवलज्ञान, यथाख्यात-

न. ३७०

मन-पर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|-------|----|----|-----|-----|----|
| गु. | जी. | प. | ग. | स. | ग. | द. | ले. | स. | क. | ज्ञा. | स. | स. | सा. | जा. | उ. |
| ७ | १ | ६ | १० | ४ | १ | ४ | ३ | ६ | १ | १ | ३ | १ | १ | १ | २ |
| प्रम | मं | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| क्षीण | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

अत्थि, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भव-सिद्धिया गेव भवसिद्धिया गेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{१३} ।

सजोगि-अजोगि-सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा ।

एव णाणमगणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणद्वणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्जचीओ छ अपञ्जचीओ, दस सत्त चत्तारि दो एक पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसणा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि

विहारशुद्धिसंयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, केवल-दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे शुक्कलेख्या तथा अलेख्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संक्षिप्त और असंक्षिप्तसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारो-पयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

केवलज्ञानकी अपेक्षा भी सयोगिकेवली अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान कहना चाहिए ।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण, चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिक-काययोग और वैक्रियिकमित्रतायोग इन दो योगोंके विना शेष तेरह योग तथा अयोग-

नं ३७१ केवलज्ञानी जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-------|----|----|----|----|----|-----|----|----|-------|----|----|-----|-----|----|
| गु. | जी. | प. | ग. | स. | ग. | द. | ले. | स. | क. | ज्ञा. | स. | स. | सा. | जा. | उ. |
| २ | २ | ६ | १ | ० | १ | १ | १ | ६ | ० | १ | १ | १ | ० | २ | २ |
| सयी. | पर्या | अप | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अप | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| क्षीण | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

अस्थि, तिष्ठि वेद अग्रद्वेदो वि अस्थि, चत्वारि कसाय अरुसाओ वि अस्थि, पंच गण, पंच मंत्रम, चत्वारि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ अस्सेमा वि अस्थि; भनसिद्धिया, तिष्ठि सम्मत्तं, मण्णिणो नेव असण्णिणो, याहारिणो अणाहारिणो, यागारुवुत्ता होति अणागारुवुत्ता वा सागार-अणागारोहिं जुगारुवुत्ता वा होति" ।

पमत्तमंजदणं भण्णमाणे अस्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तमनाओ, एगारु जोग, निण्णि वेद, चत्वारि कसाय, चत्वारि गाण, तिष्ठि संजम, तिष्ठि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भनसिद्धिया, तिष्ठि

म्यान मी हे, तीनों वेद तथा अपग्रद्वेदस्थान भी है, चारों कथाय तथा अरुयायस्थान भी है, मतिघानादि पांचों मुज्ञान, सामायिकादि पांचों मयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयाए, भावसे तेज, पत्र और गुरु लेइयाए तथा अलेइयास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, ओपशमि-त्तादि तीन मय्यारन, सन्निक तथा सन्निक और असंशिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगल उपयुक्त भी होते हैं ।

संयममार्गणाकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कइने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, मत्री-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दूर्गा प्राण, स्वात प्राण; चारों सजाए, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, वसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये म्यारण योग, तीनों नेम, चारों कथाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेपेपस्थापना और परिहारिगुणि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयाए, भावसे तेज, पत्र और गुरु लेइयाए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन संयमस्त्व, संशिक, आहारक,

नं. ३७२

संयमी जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जि. | प. | प्रा. | स. | ग. | क. | यो. | वे. | क. | शा. | सय. | द. | ले. | म. | म. | सा. | सा. | उ. | |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|-----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होति अणागारुवुत्ता वा" ।

अपमत्तसंजदणं भण्णमाणे अस्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, तिष्ठि सण्णाओ आहारसणा गस्थि, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिष्ठि वेद, चत्वारि कसाय, चत्वारि गाण, तिष्ठि संजम, तिष्ठि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिष्ठि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होति अणागारुवुत्ता वा" ।

अपुव्वयरणपहुडि जाव अजोगिकेजलि ति ताव मूलोव-भंगो ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कइने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक सत्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दूर्गा प्राण, भय, मेशुन और परिश्रद्ध ये तीन संज्ञाएं होती हैं किंतु यहां पर आहारसंज्ञा नहीं है । मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, वसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कथाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकादि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयाए, भावसे तेज, पत्र और गुरु लेइयाए, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन संयमस्त्व, सशिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक संयमी जीवोंके आलाप मूल औघालाओंके समान होते हैं ।

नं. ३७३

संयमकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

| गु. | जि. | प. | प्रा. | स. | ग. | क. | यो. | वे. | क. | शा. | सय. | द. | ले. | म. | म. | सा. | सा. | उ. | |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|-----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |

नं. ३७४

संयमकी अपेक्षा अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु. | जि. | प. | प्रा. | स. | ग. | क. | यो. | वे. | क. | शा. | सय. | द. | ले. | म. | म. | सा. | सा. | उ. | |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|----|-----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |

सामाह्यसुद्धिसंज्ञदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वानि, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, चत्तारि पाण, सामाह्यसुद्धिसंज्ञमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागार-वञ्जुत्ता हति अणागारवञ्जुत्ता वा^{३३५} ।

पमत्तसंज्ञदप्पहुडि जाव अणियट्ठि त्ति ताव मूलोच-भंगो । एवं छेदोवद्वावण-संज्ञमस्स वि वत्तन्नं ।

परिहारसुद्धिसंज्ञदाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणद्वानि, एगो जीवसमासो, छ

सामायिकशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंज्ञत, अपूर्व-करण और अतिवृत्तिकरण ये चार गुणस्थान, सब्बी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों मनोयोग, और आहारकक्रायायोग नहीं पचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिकक्रायायोग आहारक-क्रायायोग और आहारकक्रायायोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकशुद्धिसंज्ञम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसंज्ञत गुणस्थानसे लेकर अतिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानधर्ती सामायिकशुद्धिसंज्ञतोंके आलाप मूल औचालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि संज्ञम आलाप कहते समय एक सामायिकशुद्धिसंज्ञम ही कहना चाहिए । इसप्रकार छेदोपस्थापना संज्ञमके भी आलाप जानना चाहिए, किन्तु संज्ञम आलाप कहते समय एक छेदोपस्थापना-संज्ञम ही कहना चाहिए ।

परिहारविशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंज्ञत और अप्रमत्तसंज्ञत ये

नं ३७५

सामायिकशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|---|----|----|----|-------|----|---|
| गु. | जी | प | ग्रा | स | ग | ह | का | या | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | मं | सं | सन्धि | आ. | उ |
| ४ प्र | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | २ | १ | २ | ४ | १ | ३ | ६ | २ | ३ | २ | २ | २ |
| अप्र | स | प | ७ | म | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अप्र | स | अ | ६ | अ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| जि. | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग आहारहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण मणपञ्चवण्णणं णत्थि, कारणं आहारदुगं मणपञ्चवण्णणं परिहारसुद्धिसंज्ञमो एदे जगवेदेव ण उच्चंजति । परिहारसुद्धिसंज्ञमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवञ्जुत्ता हति अणागारवञ्जुत्ता वा^{३३५} ।

पमत्त-अप्पमत्त-परिहारसुद्धिसंज्ञदाणं पुध पुध भण्णमाणे ओच-भंगो । गवरि आहारदुग-मणपञ्चवण्णण-उवसमसम्मत्त-सामाह्य-छेदोवद्वावणसुद्धिसंज्ञमा च णत्थि । परिहारसुद्धिसंज्ञमो एको चेव संज्ञमद्वाने । वेदद्वाने पुरिसवेदो चेव वत्तन्नो ।

दो गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहो पर्याप्तियां, दशो प्राण, चारो संज्ञापं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिकक्रायायोग ये नौ योग होते हैं, किन्तु यहाँपर आहारकक्रायायोग और आहारकक्रायायोग नहीं होते हैं । पुरुषवेद, चारो कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं, किन्तु यहाँपर मनःपर्ययज्ञान नहीं है, कर्षिकि, आहारकक्रायायोग, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंज्ञम ये तीनों युगपत् नहीं उत्पन्न होते हैं । ज्ञान आलापके आगे परिहारविशुद्धिसंज्ञम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसंज्ञत-परिहारविशुद्धिसंज्ञत और अप्रमत्तसंज्ञत-परिहारविशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप पृथक् पृथक् कहने पर उनके आलाप औचालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि यहाँ पर आहारकक्रायायोगद्विक, मनःपर्ययज्ञान, औपशमिकसम्यक्त्व, सामायिकशुद्धिसंज्ञम और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंज्ञम इतने आलाप नहीं होते हैं । संज्ञमस्थान पर एक परिहार-विशुद्धिसंज्ञम ही होता है । तथा वेदस्थानपर एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए ।

१ प्रतिपु 'एदाओ' इति पाठ ।

नं. ३७६

परिहारविशुद्धिसंज्ञत जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|---|----|----|----|-------|---|---|
| गु. | जी. | प | ग्रा | स | ग | ह | का | या | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | मं | सं | सन्धि | आ | उ |
| २ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | ४ | १ | ३ | ६ | २ | ३ | २ | २ | २ |
| प्र | स | प | ७ | म | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |

मोघ-भंगो ।

असंजदाणं भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणणि, चोदस जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अह पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, असंजमो, तिण्णि वंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{३०८} ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणणि, सत्त जीवसमासा,

शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

संयतासयत जीवोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं ।

असंयत जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमाल, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, रात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, एकैन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहाररुकाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इन्द्रकार छह ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों छेदप्राण, भग्नि सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यग्भव, सन्निक, असंनिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान,

चं. ३७८

असंयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | फ | भा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ. |
|-----|----|---|------|---|---|---|-------|--------|----------|------|-------|-----|------|--------|---|-----|-----|-----|-------|
| ४ | १४ | ६ | २,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ६ | २ | ३ | ३ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| मि. | ६ | ६ | ९,७ | | | | आदि | के. द. | अना. अम. | अना. | अना. | अम. | विना | सा. द. | अ | स. | स. | आह. | माका. |
| मा | ५ | ५ | ८,६ | | | | विना. | | | ३ | ज्ञान | | | | | जस. | अना | अना | अना. |
| स. | ४ | ४ | ७,५ | | | | | | | ३ | ३ | | | | | | | | |
| अ. | ४ | ४ | ६,४ | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | ४,३ | | | | | | | | | | | | | | | | |

मुद्रममांपराइयमुद्रिमंजदाणं भणमाणे मूलोघ-भंगो ।

जटास्वदसुद्धिमंजदाणं भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणणि, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दम चत्तारि दो एक पाण, सीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिन्द्रियजादी, तमकाओ, एगारह जोग, अवगदवेदो, अरुसाओ, पंच पाण, जहाइसादि-मुद्रिमंजमो, चत्तारि वंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भागिद्विया, वेदगयम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णणो णेव सण्णणो णेव असण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगमद्वयजुत्ता वा^{३०९} ।

उत्तंतकमायप्यद्दुडि जाव अजोगिकेवलि चि मूलोघ-भंगो । संजदासंजदाण-

एकसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर उनके आलाप मूल ओघाला-

पके समान ही जानना चाहिये ।

यथाशान्तविहारशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकपाय, क्षीणकपाय, मयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, सवी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण क्षीणत्वशा, मनुष्यजाति, पचेन्द्रियजाति, व्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन-योग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, अणुगतवेद, अकपाय, मतितानादि पांचों सुज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, चारों दर्शन, प्रथमे उन्हीं लेस्याप, भावसे शुद्धलेस्या तथा अलेस्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, वेदकस-म्यस्तके विना शेष दो सम्यात्त्व, सन्निक तथा संनिक और असंनिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

उपशान्तकपाय गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतकके यथाख्यातविहार-

चं. ३७७ यथाख्यात शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | फ | भा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ. |
|-----|----|---|------|---|---|---|-------|--------|----------|------|-------|-----|------|--------|---|-----|-----|-----|-------|
| ४ | २ | ६ | १,० | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ६ | २ | ३ | ३ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| मि. | ६ | ६ | ९,७ | | | | आदि | के. द. | अना. अम. | अना. | अना. | अम. | विना | सा. द. | अ | स. | स. | आह. | माका. |
| मा | ५ | ५ | ८,६ | | | | विना. | | | ३ | ज्ञान | | | | | जस. | अना | अना | अना. |
| स. | ४ | ४ | ७,५ | | | | | | | ३ | ३ | | | | | | | | |
| अ. | ४ | ४ | ६,४ | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | ४,३ | | | | | | | | | | | | | | | | |

पंच पाण, असंजमो, तिणिण दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा^{१०} ।

मिच्छाद्दिट्ठिण्हुडि जाव असंजदसम्महाड्ढि चि मूलोघ-भंगा ।

एवं सजममग्गा समत्ता ।

दंसणानुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगो ।

चक्खुदंसणीणं भणमणो अत्थि बारह गुणट्ठणाणि, छ जीवसमासा, छ पञ्ज-चीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ,

तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुद्ध लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संबिक, असंबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तकके असंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिए ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंखीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त, असंखीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त, संखी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संखीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त ये छह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है चारों गतियां,

नं. ३८०

असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | स्य | द | ले | म | स | सि | आ | उ |
| ३ | ७ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५ | ३ | १ | ३ | ३ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | अप | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| सा | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, छ पाण, असंजमो, तिणिण दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भणमणो अत्थि तिणिण गुणट्ठणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिणिण जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय,

सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तिया, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिकमाययोग और चैक्रियरुक्ताययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कसाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संबिक, असंबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्ध्वी असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—मिथ्यादृष्टि, सासा-दनसम्यग्दृष्टि और अविस्मृतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, चैक्रियकामिश्रकाययोग, और कार्पणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कसाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके

नं. ३७९ असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|------|------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | जा | स्य | द | ले | म | स | सि | आ | उ |
| ४ | ६ | ५ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५ | ३ | १ | ३ | ३ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | प्रा | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| सा | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

चक्षुदंसण-मिच्छाद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, छ जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, दस पाण मत्त पाण णम पाण मत्त पाण अट्ट पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, तेह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि रुमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्षुदंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भममिद्विया भममिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागरुमज्जुचा हंति अणागरुमज्जुचा वा ।

तेसि चैव पञ्चत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं. तिण्णि जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ पंच पञ्चत्तीओ, दस पाण णम पाण अट्ट पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि

चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप करने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त, असंजीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त, सत्री-पंचेन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त ये छह जीवसमासा; उन्हीं पर्याप्तियों, उन्हीं अपर्याप्तियों, पांच पर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, चारों सत्ताएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, दसकाय, आहार-रूपाययोगिकके विना तेरह योग, तिनों वेद, चारों कणाय, तिनों सजान, असंजम, चक्षुदर्यानी, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यमिन्द्रिक, अमध्यमिन्द्रिक, मिथ्याय, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आश्रय करने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंजीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और सर्गिपंचेन्द्रिय पर्याप्त ये तीन जीवसमासा, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, चारों सत्ताएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, दसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिकरूपाययोग और वैकल्पिकरूपाययोग ये दस योग तिनों वेद,

नं. ३८३ चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|------|-------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु. | जी | प | पा | स | ग | ६ | का | यो | वे | क | का- | सण | द | ले | म. | ग. | गु. | भा. | ६. |
| २ | ६ | ६ | १०,१० | ४ | ४ | २ | ६ | ३३ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| व | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| मि | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. |

रूमाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्षुदंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भममिद्विया भममिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो, सागरुमज्जुचा हंति अणागरुमज्जुचा वा ।

तेसि चैव अण्णत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, तिण्णि जीवसमासा, छ अपञ्चत्तीओ पंच अपञ्चत्तीओ, दस पाण णम पाण अट्ट पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, तेह जोग, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि रुमाय, दो अण्णाण, असंजमो, चक्षुदंसण, दब्ब-भोवेहिं छ लेस्साओ, भममिद्विया भममिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो, सागरुमज्जुचा हंति अणागरुमज्जुचा वा ।

चारों कणाय, चारों गतियां, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंजीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त, सत्री-पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन जीवसमासा; छहों पर्याप्तियों, पांच अपर्याप्तियों, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, चारों सत्ताएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, दसकाय, आहार-रूपाययोग, वैकल्पिकरूपाययोग और अनाकारोपयोग ये तीन योग; तिनों वेद, चारों कणाय, आदि के दो सजान, असंजम, चक्षुदर्यानी, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यमिन्द्रिक, अमध्यमिन्द्रिक, मिथ्याय, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आश्रय करने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंजीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और सर्गिपंचेन्द्रिय पर्याप्त ये तीन जीवसमासा, छहों पर्याप्तियों, पांच पर्याप्तियों, दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, चारों सत्ताएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, दसकाय, आहार-रूपाययोग, वैकल्पिकरूपाययोग और अनाकारोपयोग ये तीन योग; तिनों वेद, चारों कणाय, आदि के दो सजान, असंजम, चक्षुदर्यानी, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याप, भव्यमिन्द्रिक, अमध्यमिन्द्रिक, मिथ्याय, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३८४ चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|------|-------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु. | जी | प | पा | स | ग | ६ | का | यो | वे | क | का- | सण | द | ले | म. | ग. | गु. | भा. | ६. |
| २ | ६ | ६ | १०,१० | ४ | ४ | २ | ६ | ३३ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| व | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| मि | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. |

नं. ३८६ चक्षुदर्यानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|------|-------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| गु. | जी | प | पा | स | ग | ६ | का | यो | वे | क | का- | सण | द | ले | म. | ग. | गु. | भा. | ६. |
| २ | ६ | ६ | १०,१० | ४ | ४ | २ | ६ | ३३ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| व | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ | अ |
| मि | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. | असं. |

आहारिणो, सागरुचुत्ता इति अणगारुचुत्ता वा ।

चक्षुदुंदुसण-सायणमस्माद्विपुहडि जाव सीणकसाओ चि मूलोच-भंगो, गवरि चक्षुदुंदुसणं ति भाणिद्वं ।

“अक्षदुंदुसणाणं भणमणे अत्थि वारह गुणट्टणाणि, चोदस जीवसमासा, छ पञ्जतीओ पंच पञ्जतीओ पंच पञ्जतीओ पंच अपञ्जतीओ चत्तारि पञ्जतीओ चत्तारि पञ्जतीओ छ अपञ्जतीओ, दस पाण सत्त पाण अह पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिणि पाण, चत्तारि सणाओ सीणसणा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीत्तायादी छ काय, पणा-रह जोग, तिणि वंद अगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकमाओ वि अत्थि, सत्त पाण, सत्त संजम, अक्षदुंदुसण, दव्-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तेरसाय; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सजिक, असजिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

चक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे ले कर क्षीणकृपाय गुणस्थान तकके आलाप मूल ओताकपके समान होते हैं । विशेष यात यह है कि दर्शन आलापमें ‘चक्षुदर्शन’ पेसा रहना चाहिए ।

चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके वारह गुणस्थान, चौदहों जीवसमान, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, उर प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों सज्ञापं तथा सीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकैन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय पांचे छहों क्राय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कृपाय तथा कृपायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों सयम, अक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, सजिक, असजिक, आहारक,

नं. ३८७

अक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

| ग | नी | प | प्रा. | म | ग | घ | का | यो. | वे | क | सा | सय | द | ले. | म | स | सक्ति | जा. | उ. |
|-----|----|----|-------|---|---|---|----|-----|----|---|----|----|---|-----|---|---|-------|-----|----|
| १ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| वि. | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| म | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| सि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| सि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

छ सम्मत्तं, सणिणो असणिणो, आहारिणो अणहारिणो, सागरुचुत्ता इति अणगारुचुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भणमणे अत्थि वारह गुणट्टणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पञ्जतीओ पंच पञ्जतीओ चत्तारि पञ्जतीओ, दस पाण णव पाण अह पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सणाओ सीणसणा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीत्तायादी छ काय, एगारह जोग, तिणि वंद अगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकमाओ वि अत्थि, सत्त पाण, सत्त संजम, अक्षदुंदुसण, दव्-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सणिणो असणिणो, आहारिणो, सागरुचुत्ता इति अणगारुचुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्जत्ताणं भणमणे अत्थि चत्तारि गुणट्टणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जतीओ पंच अपञ्जतीओ चत्तारि अपञ्जतीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धा अक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंयन्धी आलाप कहने पर—आदिके वारह गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमासा, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों सज्ञाप तथा क्षीण-संज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकैन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों क्राय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कृपाय अकृपायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों सयम, अक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेस्याप, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, सजिक, असजिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्द्धा अक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमासा, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण,

नं. ३८८

अक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| ग | नी | प | प्रा. | म | ग | घ | का | यो. | वे | क | सा | सय | द | ले. | म | स | सक्ति | जा. | उ. |
|-----|----|----|-------|---|---|---|----|-----|----|---|----|----|---|-----|---|---|-------|-----|----|
| १ | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| वि. | १५ | १० | ४ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ७ | ७ | १ | ६ | २ | ६ | २ | २ | २ |
| म | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| सि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| सि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणा-हरिणो, सागारवसुत्ता ह्येति अणागारवसुत्ता वा^{३०} ।

“तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

असंयम, अचक्षुदर्शिन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संक्षिक, असाह्यक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारो संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैकिकिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अन्नान, असंयम, अचक्षुदर्शिन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

नं ३९०

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| शु | जी. | प | प्रा | स. | ग. | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय. | द. | ले. | म. | स. | सन्धि. | आ. | उ. |
|-----|-----|-----|------|----|----|---|----|--------|----|---|-------|-----|----|--------|----|----|--------|------|-------|
| १ | १४ | ६प. | १०,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | अज्ञा | १ | १ | द्र. ६ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मि. | | ६अ. | ९,७ | | | | | आ द्वि | ३ | ४ | | अस | अच | मा ६ | २ | २ | स. | आहा | २ |
| | | ५प. | ८,६ | | | | | विना | | | | | | | अ | मि | अस | अना. | २ |
| | | ५अ | ७,५ | | | | | | | | | | | | | | | | साका. |
| | | ४प | ६,४ | | | | | | | | | | | | | | | | अना. |
| | | ४अ | ४,३ | | | | | | | | | | | | | | | | अना. |

नं ३९१

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| शु | जी. | प | प्रा | स. | ग. | इ | का | यो. | वे | क | ज्ञा | सय | द. | ले. | म | स | सन्धि | आ | उ. |
|----|-----|---|------|----|----|---|----|-------|----|---|-------|-----|----|--------|----|----|-------|-----|------|
| १ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | अज्ञा | १ | १ | द्र. ६ | २ | २ | २ | १ | २ |
| मि | | ५ | ९ | | | | | म ४ | ३ | ४ | | अस. | अच | मा ६ | २ | २ | स | आहा | २ |
| | | ४ | ८ | | | | | व ४ | | | | | | | अ. | मि | अस | अना | २ |
| | | | ७ | | | | | औ १ | | | | | | | | | | | साका |
| | | | ६ | | | | | वे. १ | | | | | | | | | | | अना |

पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच गण, तिण्णि संजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो अणाहरिणो, सागारवसुत्ता ह्येति अणागारवसुत्ता वा^{३१} ।

अचक्खुदंसण-मिच्छादृष्टिणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोइस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ

छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुथुत और आदिके तीन ज्ञान ये पाच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोप-स्थापना ये तीन संयम, अचक्षुदर्शिन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यगिमिथ्यात्वके विना पांच सम्यन्त्व, संक्षिक, असंक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अन्नान,

१ प्रतिपु ' चत्तारि गदीओ ' इति पाठो नास्ति ।

न ३९२

अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सन्धि | आ | उ |
|----|----|----|------|---|---|---|----|-------|----|---|------|------|-------|-------|---|----|-------|-----|------|
| ४ | ७ | ६अ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ४ | ३ | ४ | कुम | ३ | १ | द्र २ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| मि | | ५अ | ७ | | | | | औ मि | ३ | ४ | कुशु | अस | अच | का | म | २ | स | आहा | २ |
| | | ४अ | ६ | | | | | वे मि | | | मति | मामा | शु | शु | अ | अस | अना | अना | २ |
| | | | ५ | | | | | आ मि | | | शुत | छेदो | मा. ६ | | | | | | साका |
| | | | ४ | | | | | कार्म | | | अव | | | | | | | | अना |

ओहिंसणीणं मणमणे अत्थि गव गुणद्वुणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ अपञ्जत्तीओ, दस पाण मत्त पाण, चत्तारि सणाओ खीणसणा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्यारह जोग, तिण्णि वेद अवगदेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अरुसाओ वि अत्थि, चत्तारि पाण, मत्त संजम, ओहिंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हंति अणागारुजुत्ता वा” ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं मणमणे अत्थि गव गुणद्वुणाणि, एगो जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सणाओ खीणसणा वि अत्थि, चत्तारि नदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अरुसाओ वि अत्थि, चत्तारि पाण, मत्त संजम, ओहिंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हंति

अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्पद्युष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, सश्री-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अरुपायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्तत्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्पद्युष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसवन्धी श्यारह योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अरुपायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्तत्व, सन्निक,

नं. ३९३ अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

| शु. | जी | प | श | स | ग. | द | का | यो | वे | क | म. | स | म | म. | श | उ. |
|-----|-------|------|-----|---|----|----|----|----|----|---|----|---|---|----|---|----|
| ९ | अवि | ६ | २० | ४ | ४ | २ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ७ | ६ | ३ | २ | २ |
| | से. | स प. | ६ अ | ७ | ७ | ५. | ५. | ५. | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | क्षीण | स अ | | | | | | | | | | | | | | |

मिच्छन् मण्णिणो अमण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हंति अणागारुजुत्ता वा ।

नेमिं चैव पञ्जत्ताणं मणमणे अत्थि गव गुणद्वुणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सणाओ, चत्तारि गईओ, एहिंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढीत्तायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कपाय, दो अण्णाण, अमंजमां, अनमपुदंमण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भाविण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अममभिसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता हंति अणागारुजुत्ता वा” ।

सायणसम्माइदिपट्टुडि ज्ञाप सीणरुसाओ चि ताव मूलोघ-मंगो । गवरि अचरपुदंमणं ति माणिदव्वं ।

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अनधुदर्शनी मिथ्यायुष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यायुष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, नार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकसिद्धि, वैकल्पिकसिद्धि और कर्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो ज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सामान्यसम्पद्युष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तकके अचक्षुदर्शनी जीवोंके आत्राप मूल ओचालापके समान होते हैं । विशेष यान यह है कि दर्शन आलाप कहते समय 'अचक्षुदर्शन, ही करना चाहिए ।

नं. ३९२ अचक्षुदर्शनी मिथ्यायुष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| शु. | जी | प | श | स | ग. | द | का | यो | वे | क | म. | स | म | म. | श | उ. |
|-----|-------|------|-----|---|----|----|----|----|----|---|----|---|---|----|---|----|
| ९ | अवि | ६ | २० | ४ | ४ | २ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ७ | ६ | ३ | २ | २ |
| | से. | स प. | ६ अ | ७ | ७ | ५. | ५. | ५. | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | क्षीण | स अ | | | | | | | | | | | | | | |

अणारुजुता वाँ ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तानं भणमाणे अत्थि दो गुणद्वुण्णणि, एगो जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, तिण्णि संजम, ओहिदंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणारुजुता हँति अणारुजुता वाँ ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—अविरतसम्य-रुष्टि और प्रमत्तसयत्त ये दो गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, त्रैक्रि-पिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, खीवेदके विना पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोप-स्थापना ये तीन संयम, अवधिदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याप, भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यग्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं ३२४ अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

| शु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | ङ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|-------|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-------|-----|-----|-----|----|----|---------|-----|-----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| अवे | सप | १० | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ७ | १ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| से | | | | | | | | | | | | | अव. | मा | ६ | ३ | स. | आहा | २ |
| क्षीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | अना |

नं ३२५

अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | ङ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|------|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-------|-----|----|-----|----|----|---------|------|-----|
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| अवि. | स | ६ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | १ | ६ | १ | ३ | १ | १ | २ |
| प्रम | | | | | | | | | | | | | अव | मा | ६ | ३ | स. | आहा. | २ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | अना |

असंजदसम्ममाह्विप्पहुडि जाव खीणकसाओ ति ताव ओहिणण-भंगो । णवरि ओहिदंसणं ति भाणिदब्बं ।

केवलदंसणस्स केवलणण भंगो ।

एवं दसणसगणा समत्ता ।

लेस्साशुवादेण ओघालावो मूलोघ-भंगो । णवरि अजोगिगुणद्वुण्ण विणा तेरह गुणद्वुण्णाणि अत्थि, तेण अजोगिजिण सिद्धे च पडुच्च जे आलावा ते ण भाणिदब्बा ।

“किणहेल्लेस्सालावे भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणद्वुण्णाणि, चोदस जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ,

अवधिदर्शनी जीवोंके अस्यतसम्यग्रुष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके आलाप अवधिज्ञानके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय अवधिज्ञानके स्थान पर अवधिदर्शन कहना चाहिए ।

केवलदर्शनके आलाप केवलज्ञानके समान होते हैं ।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई ।

लेश्यामार्गणके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान होते है । विशेष बात यह है कि अयोगिकेवली गुणस्थानके विना तेरह गुणस्थान ही होते हैं, इसलिये अयोगि-केवलीजिन और सिद्धभगवाय्की अपेक्षासे जो आलाप होते हैं, वे नहीं कहना चाहिए ।

कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञापं,

नं. ३२६

कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

| शु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | ङ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-------|-----|----|-----|----|----|---------|----|------|
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| मि | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| सा | | | | | | | | | | | | | | | | | | | २ |
| स. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | माका |
| अ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | अना |

चत्वारि गर्ह्यो, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिणि वेद, चत्वारि कसाय, छ गाण, असंजमो, तिणि दंसण, दव्णेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हौति अणागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चेर पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्वारि गुणद्वयाणि, सत्त जीवसमासा छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्वारि पञ्जत्तीओ, दस पाण गव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्वारि पाण, चत्वारि मण्णाओ, तिणि गर्ह्यो, देवगई णत्थि; देवाणं पञ्जत्त-काले अमुह-तिलेस्साभावादो । पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिणि वेद, चत्वारि कसाय, छ गाण, असंजमो, तिणि दंसण, दव्णेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो,

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कसाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे कृष्ण लेख्या. भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, उहों सम्यक्त, सत्तिक, असत्तिक आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृष्णलेख्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर--आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, गो प्राण. आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों सत्ताएं, नरकगति तिर्यग्यगति और मनुयगति ये तीन गतियां, यद्वापर देवगति नहीं है, स्पर्शिक, देवोंके पर्याप्तकालमें अग्रिम तीन लेख्याओंका अभवाव है । पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनो-योग, चारों त्वन्योग, औदारिकमिश्र और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कसाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे उहों लेख्याएं, भावसे कृष्णलेख्या भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों

नं. ३१७ कृष्णलेख्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

सागारवजुत्ता हौति अणागारवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिणि गुणद्वयाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्वारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्वारि पाण तिणि पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गर्ह्यो, पंच जादीओ, छ काय, तिणि जोग, तिणि वेद, चत्वारि कसाय, पंच गाण, असंजमो, तिणि दंसण, दव्णेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिणि सम्मत्तं मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं वेदगसम्मत्तं च भवदि; छह्ठीदो पुडवीदो किण्हलेस्सा-सम्माइड्ढिणो मणुसेसु जे आगच्छंति तेसिं वेदगसम्मत्तेण सह किण्हलेस्सा लब्भदि चि । सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवजुत्ता हौति अणागारवजुत्ता वा ।

सम्यक्त, सत्तिक, असत्तिक, आहारक, अनाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृष्णलेख्यावाले जीवोंके अर्थात्कालसंबन्धी आलाप कहने पर--मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अर्थात्त जीवसमास, छहों अर्थात्तियां, पांच अर्थात्तियां, चार अर्थात्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों जातियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कसाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याएं, भावसे कृष्णलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त और वेदकसम्यक्त ये तीन सम्यक्त होते हैं । कृष्णलेख्यावाले जीवोंके अर्थात्तकालमें वेदकसम्यक्त होनेका कारण यह है कि छठी युथिविले जो कृष्णलेख्यावाले अविरतसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्योंमें आते हैं, उनके अर्थात्तकालमें वेदकसम्यक्तके साथ कृष्णलेख्या पाई जाती है । सम्यक्त आलापके आगे संज्ञिक, अनंज्ञिक, आदारक, अनादारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३१८ कृष्णलेख्यावाले जीवोंके अर्थात्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

किण्वलेस्सा-मिच्छाद्गीर्णं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, चोदत जीवसमासा, छ पञ्जतीओ छ अपञ्जतीओ पंच पञ्जतीओ चत्तारि पञ्जतीओ चत्तारि अपञ्जतीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण किण्वलेस्सा; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो अण्णाणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होंति अण्णाणरुजुत्ता वा^{११} ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, सत्त जीवसमासा, छ पञ्जतीओ पंच पञ्जतीओ चत्तारि पञ्जतीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ,

कृण्वलेस्सावाले मिथ्याद्वयि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्वयि गुणस्थान, चोददों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पंच पर्याप्तियां, पंच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पाच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों सत्ताएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहाररूपाययोगिकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो वर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्साएं, भावसे कृण्वलेस्सा, भवसिद्धिक, असंयम, आदिके दो वर्शन, चारों मनेयोग, चारों चवत्तयोग, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृण्वलेस्सावाले मिथ्याद्वयि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्वयि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पंच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चारों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों सत्ताएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनेयोग, चारों चवत्तयोग,

नं. ३९९ कृण्वलेस्सावाले मिथ्याद्वयि जीवोंके सामान्य आलाप

| गु. जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | भा. | साय. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति. | आ. | उ. |
|---------|----|-------|----|----|----|-----|----------|-----|----|-----|------|-------|---------|------|----|--------|-----|------|
| १ | ६५ | १०,७ | ४ | ५ | ६ | ६ | ३३ | ३ | ४ | ३ | ३ | २ | ६ | २ | १ | २ | २ | २ |
| २ | ६५ | ९,७ | | | | | आ. द्वि. | | | | अस. | चक्षु | द्र. मा | १ म. | मि | स | आहा | गका. |
| ३ | ५५ | ८,६ | | | | | विना | | | | अस. | अच. | कृण्व | अ | | अस | अना | अना |
| ४ | ५५ | ७,५ | | | | | | | | | अस. | अच. | कृण्व | अ | | अस | अना | अना |
| ५ | ४५ | ६,४ | | | | | | | | | अस. | अच. | कृण्व | अ | | अस | अना | अना |
| ६ | ४५ | ५,३ | | | | | | | | | अस. | अच. | कृण्व | अ | | अस | अना | अना |

छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण किण्वलेस्सा; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होंति अण्णाणरुजुत्ता वा^{११} ।

‘तेसिं चैव अपञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जतीओ पंच अपञ्जतीओ चत्तारि अपञ्जतीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दब्बेण

औदारिककाययोग और धैक्रियि-काययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो वर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्साएं, भावसे कृण्वलेस्सा, भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक, मिथ्यात्व, संसिक, असंयम; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृण्वलेस्सावाले मिथ्याद्वयि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्वयि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पंच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पंच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों सत्ताएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिथ्य, धैक्रियिकमिथ्य और कामणकाययोग ये तीन योग. तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम,

नं. ४०० कृण्वलेस्सावाले मिथ्याद्वयि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु. जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | भा. | साय. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति. | आ. | उ. |
|---------|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|-------|---------|------|----|--------|-----|-----|
| १ | ७ | १० | ४ | ५ | ६ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | ३ | २ | ६ | २ | १ | २ | २ | २ |
| २ | ५ | ९ | ४ | ५ | ६ | ६ | ५ | ३ | ४ | ३ | अस. | चक्षु | द्र. मा | १ म. | मि | स | आहा | गका |
| ३ | ४ | ८ | ४ | ५ | ६ | ६ | ५ | ३ | ४ | ३ | अस. | अच. | कृण्व | अ | | अस | अना | अना |
| ४ | ४ | ७ | ४ | ५ | ६ | ६ | ५ | ३ | ४ | ३ | अस. | अच. | कृण्व | अ | | अस | अना | अना |

नं. ४०१ कृण्वलेस्सावाले मिथ्याद्वयि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु. जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | भा. | साय. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति. | आ. | उ. |
|---------|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|------|-------|---------|------|----|--------|-----|-----|
| १ | ७ | १० | ४ | ५ | ६ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | ३ | २ | ६ | २ | १ | २ | २ | २ |
| २ | ५ | ९ | ४ | ५ | ६ | ६ | ५ | ३ | ४ | ३ | अस. | चक्षु | द्र. मा | १ म. | मि | स | आहा | गका |
| ३ | ४ | ८ | ४ | ५ | ६ | ६ | ५ | ३ | ४ | ३ | अस. | अच. | कृण्व | अ | | अस | अना | अना |

कृत-शुक्लेस्माथो, भावेण कृण्वेत्स्मा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्, सण्णिणो अभवणियो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता ह्येति अणागारुजुत्ता वा ।

कृण्वेत्स्मा-भावेण अण्वेत्स्मा अण्वेत्स्मा अण्वेत्स्मा, दो जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ छ अण्वेत्स्माओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजदी, तसकाओ, तेद जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, अंसजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण कृण्वेत्स्मा; भवसिद्धिया, भावेण अण्वेत्स्मा, अण्वेत्स्मा अण्वेत्स्मा अण्वेत्स्मा, सागारुजुत्ता ह्येति अणागारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एणं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवर्गईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिदियजदी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, अंसजमो, दो

आदिने दो दर्शन, द्रव्यसे कपोत और शुकु लेख्याए, भावसे कृण्वेत्स्मा; भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक, भिद्यार, संनिक, असनिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कृण्वेत्स्मावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थान, सभी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियों, छहों अपर्याप्तियों; चारों संघाएं, चारों गतियों, चारों वेद, चारों कपाय, तीनों प्रसक्त्याय, आहारकक्रियायोगिकके विना शेष तीन गतियों, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिने दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे कृण्वेत्स्मा, भवसिद्धिक, भासादनसम्यग्दष्टि, संनिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृण्वेत्स्मावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंयन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संघी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियों, छहों अपर्याप्तियों, चारों संघाएं, चारों गतियों, पंचेन्द्रियजाति, त्रसक्त्याय, चारों मनोयोग, चारों मनोयोग, भौतिकक्रियायोग और धैर्यिकक्रियायोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय,

1 श्रीपु ' चत्तारि गदीओ ' इति पाठो नास्ति ।

नं. ४०२ कृण्वेत्स्मावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | क | सा | वे | क | सा | वे | क | सा | मय | द. | ले | म. | स. | सि | आ | उ | |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मा | मं. | प | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण कृण्वेत्स्मा; भवसिद्धिया, भावेण कृण्वेत्स्मा, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता ह्येति अणागारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एणं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयर्गईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिदिय-जादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, अंसजमो, दो दंसण, दव्वेण कृत-शुक्लेस्माओ, भावेण कृण्वेत्स्मा; भवसिद्धिया, भावेण अण्वेत्स्मा, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुजुत्ता ह्येति अणागारुजुत्ता वा ।

तीनों अज्ञान, असंयम, आदिने दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे कृण्वेत्स्मा; भवसिद्धिक, सासादनसम्यग्दष्टि, संनिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृण्वेत्स्मावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंयन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संघी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियों, सात प्राण, चारों संघाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियों, पंचेन्द्रियजाति, त्रसक्त्याय, औदा-रिकभित्ति, धैर्यिकभित्ति और कार्यक्रियायोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिने दो अज्ञान, असंयम, आदिने दो दर्शन, द्रव्यसे कपोत और शुकु लेख्याए, भावसे कृण्वेत्स्मा, भवसिद्धिक, सासादनसम्यग्दष्टि, संनिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४०३ कृण्वेत्स्मावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | क | सा | वे | क | सा | वे | क | सा | मय | द. | ले | म. | स. | सि | आ | उ | |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मा | मं. | प | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

नं. ४०४ कृण्वेत्स्मावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|
| गु. | जी | प | प्रा | स | ग | क | सा | वे | क | सा | वे | क | सा | मय | द. | ले | म. | स. | सि | आ | उ | |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मा | मं. | प | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |

क्रिह्लेस्सा-सम्प्राप्तिदृष्टिर्णं भणमाणे अरिथ एवं गुणद्वानं, एतौ जीव-
समाप्तौ, छ पञ्चवीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देग्गोए विया तिलि गँओ,
पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिणि वेद, चत्तारि कमाय, तिणि पाणानि तीहं
अण्णोहं मिस्सणि, असंजसो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, माणेण क्रिह्लेस्साण;
भवसिद्धिया, मग्गामिच्छत्तं, मणिणो, जहाणिणो, मागाकउत्ता होनि 'पणाक-
वसुत्ता वा' ।

क्रिह्लेस्सा-असंजदसम्प्राद्धिणं भणमाणे अरिथ एवं गुणद्वानं, ओ जीवमाणा,
छ पञ्चवीओ छ अपञ्चवीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देग्गोए रिना
तिणिण गदीओ, पंचिदियजादी, तपसाओ, पेउञ्चियमिम्मंण विा बाग्ग जोग, निन्ति
वेद, चत्तारि कमाय, निणिण पाण, अमंसओ, निणिण दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, माणेण

ठण्णोइयायले सम्पत्तिध्यायि जीविके भलाय क्खजे पर—एक नसर्वात्मधारादि
गुणस्थान, एक सबी पर्याय्य जीवमास, उहों पर्याय्यिया, दसों प्राण, चारों भोजन,
देवगतिके विना दोष तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों मनोयोग, चारों पर्याययोग,
औदारिककाययोग और वैश्विककाययोग ये दस योग: तीनों वेद, चारों कमाय, तीनों
अजानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, अमंसय, दो दर्शन, उच्चसे उरों केस्साए, आरथे
ठण्णोइया: मग्गामिच्छिक्क, मग्गामिच्छ्याय, सन्निक, आहारक, माकारोपयोगी और धमा-
कारोपयोगी होते हैं ।

ठण्णोइयायले अमयतस्यस्सदि जीविके सामास्य भलाय क्खजेपर—एक अद्विक
सम्यग्बुद्धि गुणस्थान, सबी-पर्याय्य और सबी-अपर्याय्य ये दो जीवमास, उहों पर्याय्यियो,
उहों अपर्याय्यिया: दसों प्राण, मात प्राण: चारों सजाप, देग्गोइके विना दोष तीन ममियां,
पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैश्विकसिद्धकाययोग और आहारककाययोगइक्के विा दोष
बाह्य योग, तीनों वेद, चारों कमाय, आदिके तीन ज्ञान, अमंसय, आदिके तीन दर्शन,

नं. ४०८: ठण्णोइयायले सम्पत्तिध्यायि जीविके भलाय.

| गु. | जी | प. | पा | मं | कं | दा | यो. | वे. | क | भा | दीप. | द. | के. | अ | म. | पी | या | क |
|-----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|---|----|------|----|-----|---|----|----|----|---|
| १ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

क्रिह्लेस्सा; मग्गामिद्धिया, तिनि मम्मयं, मग्गिनो, जहाणिओ, आहारिणो अजारीणो, मागाक-
वसुत्ता होनि अजागाकरउत्ता वा ।

तेनि चेर पण्णातं मन्तानं अरिथ एवं गुणद्वानं, एतौ जीवमाणां, छ
पञ्चवीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देग्गोए विा तिनि गदीओ, पंचिदियजादी,
तपसाओ, दस योग, तिणि वेद, चत्तारि कमाय, तिनि ज्ञान, अमंसओ, निन्ति
दसा, दब्बेण छ लेस्साओ, माणेण जिह्लेस्साण; मग्गामिद्धिया, तिनि मम्मयं, मग्गिनो,
आहारिणो, मागाकरउत्ता होनि अजागाकरउत्ता वा ।

दरमसे उहों विभाग, आरथे सम्पत्ति अजागारि अजगतिरपम्पक्य आदि तीन
समस्यर, अदिक, अजागार, अजागार अजागरोपयोगी और अजागरोपयोगी होते हैं ।

उहों अजागरोपयोगी अजागारमासदि जीविके मग्गिय अजागरोपयोगी अजागरोपयोगी
पर—एक परिमाणमयस्सदि गुणस्थान, एक सबी पर्याय्य जीवमास, उहों पर्याय्यियो,
दसों प्राण, चारों भोजन, पंचेन्द्रिय विना दोष तीन गतियां, चारों पर्याययोग, चारों
औदारिककाययोग, चारों वैश्विककाययोग और वैश्विककाययोग ये दस योग:
तीनों वेद, चारों कमाय, आदिके तीन ज्ञान, अमंसय, आदिके तीन दर्शन, उच्चसे उहों
केस्साए, आरथे क्खजेस्साण; मग्गामिच्छिक्क, मग्गामिच्छ्याय अजागरोपयोगी और धमा-
कारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४०९: ठण्णोइयायले अमयतस्यस्सदि जीविके सामास्य भलाय.

| गु. | जी | प. | पा | मं | कं | दा | यो. | वे. | क | भा | दीप. | द. | के. | अ | म. | पी | या | क |
|-----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|---|----|------|----|-----|---|----|----|----|---|
| १ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

नं. ४०९: ठण्णोइयायले अमयतस्यस्सदि जीविके पर्याय्य भलाय.

| गु. | जी | प. | पा | मं | कं | दा | यो. | वे. | क | भा | दीप. | द. | के. | अ | म. | पी | या | क |
|-----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|---|----|------|----|-----|---|----|----|----|---|
| १ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| २ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | २ | ३० | ३ | ३ | ३ | ३० | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

सण्णियो असण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणद्वयाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण काउ-लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, चत्तारि मिच्छत्तं, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{११} ।

असंबिकि, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही कापोतलेइयावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यक्त्व और अद्विगतसम्यक्त्व ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों सद्भाष, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कामणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, कुमति, कुथुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेइयां, भावसे कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिक और क्षायोपशामिक ये चार सम्यक्त्व, संबिक, असंबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं ४१० कापोतलेइयावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|------|-------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|----------|----|---|---|-------|-----|---|
| ४ | ७ | ६ | १० | ४ | ३ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ६ | १ | ३ | ३ | ६ | २ | २ | १ | २ |
| मि | पर्यो | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द, मा | ३ | २ | ६ | स | आहा | २ |
| सासा | सम्य | ४ | ७ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | विना | ३ | २ | ६ | अस | आहा | २ |
| अवि | | ४ | ७ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | विना | ३ | २ | ६ | अस | आहा | २ |

न ४११ कापोतलेइयावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|------|-------|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|----------|----|---|---|-------|-----|---|
| ३ | ७ | ६ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५ | १ | ३ | ३ | २ | ४ | २ | २ | २ |
| मि | पर्यो | ५ | ७ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | के द, मा | ३ | २ | ६ | स | आहा | २ |
| सासा | सम्य | ४ | ७ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | विना | ३ | २ | ६ | अस | आहा | २ |
| अवि | | ४ | ७ | ७ | ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | अस | विना | ३ | २ | ६ | अस | आहा | २ |

काउलेस्सा-मिच्छाइइणीं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वयं, चोहस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णत्र पाण सत्त पाण अह पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णियो असण्णियो, आहारिणो अणहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा^{१२} ।

तेसिं चैव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णत्र पाण अह पाण सत्त पाण

कापोतलेइयावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, तीन प्राण चारों संज्ञाएं, चारों गतिया, पांचों जातियां, छहों काय, आहाररुकाययोगद्विके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयां, भावसे कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संबिक, असंबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही कापोतलेइयावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों

नं ४१२ कापोतलेइयावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| शु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
|----|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|----|----|-------|----|---|---|-------|---|---|
| २ | १४ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि | ६ | ५ | ९ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ३ | अस | वक्षु | ३ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | ५ | ५ | ९ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ३ | अस | वक्षु | ३ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | ५ | ५ | ९ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ३ | अस | वक्षु | ३ | २ | १ | २ | २ | २ |
| | ५ | ५ | ९ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ३ | अस | वक्षु | ३ | २ | १ | २ | २ | २ |

३ पाण चत्वारि पाण, चत्वारि सण्णाओ, देवगर्दए विणा तिणिण गर्ईओ, पंच जादीओ, ४ काय, दस जोग, तिणिण वेद, चत्वारि रुसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दवेण छ लेस्सा, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, सण्णिणो अस्सण्णिणो, आहारिणो, सागारुजुत्ता हति अण्णागारुजुत्ता ना ।

“ नेमि चेम अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एणं गुणह्णणं, मच्च जीवसमात्ता, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्वारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्वारि पाण तिणिण पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गर्ईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिणिण जोग, तिणिण वेद, चत्वारि रुसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

मत्ताय, देवगर्दके विना शंप तीन गतियां, पांचों जातिया. छहों काय, चारो मनोयोग, चारों चत्वारिणो, ओशरि रुसाययोग और चैक्रियि रुसाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों काय, तीनों अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्साएं, भावसे कापोत-लेस्सा; भव्यविरिक, अभव्यविरिक; मिथ्यात्व, सत्तिक, असाहिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाहारोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेस्सावाले मिथ्यावादि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यावादि गुणस्थान, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों सत्ताय, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिथ्य, वैक्रियिकमिथ्य और कारणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों काय, आदिके दो अज्ञान, असंजम, आदिके

नं. ४२३ कापोतलेस्सावाले मिथ्यावादि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|
| ग | प | सा | क | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ४२४ कापोतलेस्सावाले मिथ्यावादि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|
| ग | प | सा | क | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

दवेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, भिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अण्णागारुजुत्ता ना ।

काउलेस्सा-सासणसम्मइहीणं भण्णमाणे अत्थि एणं गुणह्णणं, दो जीवसमात्ता, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गर्ईओ, पंचिदियजादी, तससाओ, तेरह जोग, तिणिण वेद, चत्वारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दवेण छ लेस्साओ, भवेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अण्णाहारिणो, सागारुजुत्ता हति अण्णागारुजुत्ता ना ।

तेसिं चेम पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एणं गुणह्णणं, एओ जीवसमात्तो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, देवगर्दए विणा तिणिण गर्दीओ, पंचिदियजादी,

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्क लेस्साएं, भावसे कापोतलेस्सा, भव्यविरिक, अभव्यविरिक, मिथ्यात्व, सत्तिक, असत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेस्सावाले सासादत्तसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादत्त गुणस्थान, सत्री-पर्याप्त और सत्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संजाप, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिथ्यकाययोग इन दो योगोंके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों काय, तीनों अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्साएं, भावसे कापोतलेस्सा, भव्यसिद्धिक, सासादत्तसम्यग्दत्त, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उर्दी कापोतलेस्सावाले सासादत्तसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादत्त गुणस्थान, एक संशी-पर्याप्त जीवसमास. छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संजाप, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

नं. ४२५ कापोतलेस्सावाले सासादत्तसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|
| ग | प | सा | क | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सत्ति | आ | उ |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

तसकाओ, दस जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवुत्ता हौति अण्णारुवुत्ता वा^{१५} ।

^{१५} तैसिं चैव अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गईओ, णिरयगई गत्थि । पंचि-दियजादी, तसकाओ, तिणि जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्खलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैकियिककाययोग ये वरा योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयाएं, भावसे कापोत-लेइया, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कापोतलेइयावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यक, मनुष्य और देव ये तीन गतियां होती हैं, किन्तु नरकगति नहीं है । पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैकियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेइयाएं, भावसे कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संक्षिक,

न ४१६ कापोतलेइयावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|------|---|----|---|----|----|----|--------|------|-------|------|-----|---|------|-------|-----|------|
| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | ६ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र | ६ | १ | २ | १ | २ |
| सा | स | प | न | ति | प | न | म | ४ | अज्ञा. | अस. | चक्षु | मा | १ | म | नासा | स | आहा | साका |
| | | | | | | | | | | | अच. | कापो | | | | | अहा | अना. |

न ४१७ कापोतलेइयावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|------|---|----|---|----|----|----|-----|------|-----|-------|-----|---|------|-------|-----|------|
| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | ६ | १० | ४ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र | ६ | १ | २ | १ | २ |
| सा | स | प | न | ति | प | न | म | ४ | कुम | कुशु | अस | चक्षु | का | म | सासा | स | आहा | साका |
| | | | | | | | | | | | अच. | अच. | मा | १ | | अना | अना | अना |

सण्णियो, आहारिणो अण्णारिणो, सागारुवुत्ता हौति अण्णारुवुत्ता वा ।

काउलेस्सा-सम्मामिच्छाईद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिणि गदीओ, पंचिदिय-जादी, तसकाओ, दस जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि णाणाणि तीहिं अण्णोहिं मिससाणि, असजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवुत्ता हौति अण्णारु-वुत्ता वा^{१६} ।

काउलेस्सा-असंजदस्ममाइद्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिणि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेइयावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैकियिककाययोग ये वरा योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेइयाएं, भावसे कापोतलेइया, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेइयावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संबन्धी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके

नं. ४१८ कापोतलेइयावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|------|---|----|----|----|----|----|-------|------|-------|----|-----|----|---|-------|-------|------|
| गु जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ |
| १ | ६ | १० | ४ | ३ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र | ६ | १ | २ | १ | २ |
| सम्य | स | प | न | ति | म. | न | म | ४ | अज्ञा | अस | चक्षु | मा | १ | म. | स | आहा | साका. | अना. |
| | | | | | | | | | | | अच | का | | | | | | |

गान, अमृतमणि, निष्णा दंनण, दव्येण छ लेस्माओ, भवेण काउलेस्मा; भवसिद्धिया, निष्णिण सम्मत्तं, गन्धिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुजुत्ता होति अणागारु-जुत्ता वा ।

तेसि चैत पञ्जचाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणहुणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जचीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिष्णिण गईओ, पंचिदियजादी, वसकाओ, दस चोप, निष्णिण वेद, चचारि कमाय, तिष्णिण गाण, असंजमो, तिष्णिण दंसण, दव्येण छ लेस्माओ, भवेण काउलेस्मा; भासिद्धिया, तिष्णिण दंसण, दव्येण छ लेस्माओ, भवेण काउलेस्मा; भासिद्धिया, तिष्णिण सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, मागारुजुत्ता होति अणागारुजुत्ता वा ।

तीन ज्ञान, अनंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छद्दां लेस्याए, भावसे ऋपोतलेस्या, भवगित्तिर, ओपशमिकस्य तीन सम्यक्त्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी दोते दे ।

उन्हीं ऋपोतलेस्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंनधी आलाप कइने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संजी-अपर्याप्त जीवसमास, छद्दों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, आहारिककाययोग और वैश्विककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छद्दों लेस्याए, भावसे कापोत-लेस्या, भवगित्तिर, औपशमिक जादि तीन सम्यक्त्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी दोते दे ।

नं. ५२९. ऋपोतलेस्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | |
|------------------|--------------------|----------------|------------------|------------|------------|------------------|------------------|----------|------------------|-----------|------------|
| ग. जी. | प. ग. म. ग. इ. का. | गो. | वे. | क. | सा. | स. | ले. | म. | गति. | आ. | उ. |
| २ | १० | ३ | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| अधि. स. प. म. य. | न. प. नो. म. | आदि. ति. विना. | अम. के. द. विना. | मति. त. अ. | मति. त. अ. | आप. क्षा. क्षायो | अस. के. द. विना. | म. म. म. | अस. के. द. विना. | आहा. अना. | साका. अना. |

नं. ५३०. ऋपोतलेस्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | |
|------------------|--------------------|----------------|------------------|------------|------------|------------------|------------------|----------|------------------|-----------|------------|
| ग. जी. | प. ग. म. ग. इ. का. | गो. | वे. | क. | सा. | स. | ले. | म. | गति. | आ. | उ. |
| २ | १० | ३ | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| अधि. स. प. म. य. | न. प. नो. म. | आदि. ति. विना. | अम. के. द. विना. | मति. त. अ. | मति. त. अ. | आप. क्षा. क्षायो | अस. के. द. विना. | म. म. म. | अस. के. द. विना. | आहा. अना. | साका. अना. |

तेसि चैव अपञ्जचाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणहुणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जचीओ, सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिष्णिण गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिष्णिण जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चचारि कमाय, तिष्णिण गाण, असंजमो, तिष्णिण दंसण, दव्येण काउलेस्माओ, भवेण काउलेस्मा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, मागारुजुत्ता होति अणागारुजुत्ता वा ।

तेउलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणहुणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्जचीओ अपञ्जचीओ, दस पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, गिरयगईए विणा तिष्णिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिष्णिण वेद, चचारि कमाय, सत्त पाण, पंच संजम, तिष्णिण दंसण, दव्येण छ लेस्सा, भवेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

उन्हीं कापोतलेस्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंनधी आलाप कइने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संजी-अपर्याप्त जीवसमास, छद्दों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारिक-मिश्र, वैश्विकमिश्र, और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्वीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुद्ध लेस्याए, भावसे कापोतलेस्या, भवसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना शायिक और शायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी दोते दे ।

तेजोलेस्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कइने पर—आदिके सात गुणस्थान, साती-पर्याप्त और सती अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छद्दों पर्याप्तियां, छद्दों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाप, नस्करगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रस-काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कपाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सुदृग्-साम्पराय और यथाव्यातसयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छद्दों लेस्याए, भावसे तेजोलेस्या, भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक, छद्दों सम्यक्त्व, सत्तिक,

नं ५३१. ऋपोतलेस्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | |
|------------------|--------------------|----------------|------------------|------------|------------|------------------|------------------|----------|------------------|-----------|------------|
| ग. जी. | प. ग. म. ग. इ. का. | गो. | वे. | क. | सा. | स. | ले. | म. | गति. | आ. | उ. |
| २ | १० | ३ | ३ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| अधि. स. प. म. य. | न. प. नो. म. | आदि. ति. विना. | अम. के. द. विना. | मति. त. अ. | मति. त. अ. | आप. क्षा. क्षायो | अस. के. द. विना. | म. म. म. | अस. के. द. विना. | आहा. अना. | साका. अना. |

छ सम्मत्, सण्णियो, आहारिणो, सागारुञ्जुता ह्येति अणागारुञ्जुता वा^{५३} ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अस्थि सत्त गुणद्वाराणि, एओ जीवसमासो, छ

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विशेषार्थ—गोमट्टसार जीवकाण्डके अन्तमें आलाप अधिकारके ऊपर प टोडरमल्लजी ने जो सद्यष्टियां दी हैं उनमें इन्द्रियमार्गणकी अपेक्षा असंक्षी पंचेन्द्रियके पर्याप्त अवस्थामें चार लेख्याए, तेजोलेश्याके आलाप बतलते हुए तेजोलेश्यामें सक्षी-पर्याप्त और अपर्याप्तके अतिरिक्त असक्षीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास और सक्षीमार्गणके आलाप बतलते हुए असक्षियोंके चार लेख्याए बतलाई हैं । परंतु जिस आलाप अधिकारके अनुसार पंडितजीने ये सद्यष्टिया सग्रहीत की हैं उसमें केवल सक्षीमार्गणके आलाप बतलते हुए असक्षियोंके तीन चार लेख्याए बतलाई हैं । किन्तु इन्द्रियमार्गणके आलाप बतलते हुए असक्षियोंके तीन अग्रुम लेख्याए और तेजोलेश्याके आलाप बतलते हुए सक्षी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो ही जीवसमास बतलाये हैं । किन्तु धवलायें सर्वत्र असक्षियोंके तेजोलेश्याका अभाव या तेजोलेश्यामें असक्षीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमासका अभाव ही बतलाया है । इससे इतना तो निश्चित हो जाता है कि गोमट्टसार जीवकाण्डमें सक्षीमार्गणके आलाप बतलते हुए असक्षियोंके जो चार लेख्याए बतलाई हैं वह कथन धवलकी मान्यताके विरुद्ध है । परंतु गोमट्टसार जीवकाण्डके मूल आलाप अधिकारमें ही जो दो मान्यताए पाई जाती हैं उसका कारण क्या होगा, इसका ठीक निर्णय समझमें नहीं आता है । एक बात अवश्य है कि पंडित टोडरमल्लजीने सर्वत्र एक ही मान्यता अर्थात् असक्षियोंके तेजोलेश्या या तेजोलेश्यामें असक्षीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमासको स्वीकार कर लिया है, इसलिये उनके सामने सर्वत्र उक्त मान्यताका पोषक ही पाठ रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं । यदि पंडितजीने मूलमें दिये गये सक्षीमार्गणके निर्देशके अनुसार ही सर्वत्र सुधार किया होता तो कहीं न कहीं उन्हेंने उसका संकेत अवश्य किया होता । जो कुछ भी हो, फिर भी यह प्रश्न विचारणीय है ।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके सात

नं. ४२२ तेजोलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
|------|----|---|------|----|----|---|----|------|------|------|------|------|------|----|---|---|-------|---|---|
| ७ | ५ | ६ | २० | ४ | ३ | २ | १ | २ | ५ | ७ | ४ | ५ | ३ | ३ | ६ | २ | ६ | २ | २ |
| मि. | स | प | ४ | ४ | ति | प | ५ | के | विना | विना | विना | विना | के | मा | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| से | अ | | ७ | म. | दे | | | विना | विना | विना | विना | विना | विना | ते | अ | अ | अ | अ | अ |
| अप्र | | | | दे | | | | | | | | | | | | | | | |

७७०] संत-परुवणापुयोगदारे लेस्सा-आलावण्णं

[१, १

पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, गिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त पाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्बेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्, सण्णियो, आहारिणो, सागारुञ्जुता ह्येति अणागारुञ्जुता वा^{५३} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अस्थि चत्तारि गुणद्वाराणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि ति दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, गणुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, पंच

गुणस्थान, एक संक्षी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, नरक-गतिके विना शेष तीन गतिया, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह जोग, तीनों वेद, चारों कपाय, केवल ज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसास्पगय और यथाव्ययत-संयमके विना शेष पाच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहो लेख्यापं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यासिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—भिव्याद्यट्टि, सासादनसम्पद्यट्टि, अवरतसम्पद्यट्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारों जोग, नपुंसकवेदके विना शेष दो वेद, चारों कपाय, कुमति, कुशुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पंच ज्ञान,

नं. ४२३ तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
|------|----|---|------|----|----|---|----|------|------|------|------|------|------|----|---|---|-------|---|---|
| ७ | १ | ६ | २० | ४ | ३ | २ | १ | २ | ४ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | ६ | २ | ६ | २ | २ |
| मि | स | प | ४ | ४ | ति | प | ५ | के | विना | विना | विना | विना | के | मा | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| से | अ | | ७ | म | दे | | | विना | विना | विना | विना | विना | विना | ते | अ | अ | अ | अ | अ |
| अप्र | | | | दे | | | | | | | | | | | | | | | |

नं ४२४ तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा | स्य | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
|------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|------|-----|----|----|---|---|-------|---|---|
| ५ | १ | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | २ | ५ | ३ | २ | २ |
| मि | ल | अ | | ४ | २ | २ | १ | ५ | २ | ५ | ५ | अ | के | का | २ | ५ | ३ | २ | २ |
| से | अ | | | ४ | २ | २ | १ | ५ | २ | ५ | ५ | अ | के | का | २ | ५ | ३ | २ | २ |
| अप्र | | | | ४ | २ | २ | १ | ५ | २ | ५ | ५ | अ | के | का | २ | ५ | ३ | २ | २ |

जोग, दो वेद, ण्डुसयवेदो णरिय; चचारि रुसाय, दो अगाण, अंतत्रसो, दो रंगण, दवेण काउ-सुक्कलेसाओ, भोत्रेण तेउलेसा; भवमिदिया अममिदिया, पिन्ठरं, सण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, माणारुअनुजा होति अणाणारुअनुजा स ।

तेउलेसा-सासणसस्माद्विणं भज्जामलो अरिय एयं गुणद्वारं, दो जीणमामा, उ पज्जचीओ छ अपज्जचीओ, दस पाण मच पाण, चचारि नज्जाओ, निग्गमएण विना तिण्णि गईओ, पंचिदियजादी, वमसाओ, जेराळियविस्सेण विना चारु जोग, तिण्णि वेद, चचारि रुसाय, तिण्णि अगाण, अंतत्रसो, दो रंगण, दवेण छ वेस्साओ, भोत्रेण तेउलेसा; भवमिदिया, माणणसम्भत्तं, मण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, माणारुअनुजा होति अणाणारुअनुजा स" ।

तेमि चैव पज्जचारं भणमणे अरिय एयं गुणद्वारं, एओ चिणमामो, उ पज्ज-

दो योग; पुरुष और स्त्री ये दो वेद होते हैं, किन्तु ण्डुसयवेद गहां होग है । कर्षो रुसाय, आदिके दो अज्ञान, अंत्यम, आदिके दो रतन, द्रयमं सणोय और गुल वेदयां, आत्मने तेजोलेदया, भव्यमिदिक, अभयमिदिक। मिणयाय, मत्रिक, आहारक, अणाणारुअनुजाकारोपयोगी और अन्तकारोपयोगी होते हैं ।

तेजोलेदयावाले साम्प्रतसस्यदृष्टि त्रिवीकं सामान्य आचार करने पर—उरु सामान्य गुणस्थान, सबी पर्याप्त और सबी-अपर्याप्त ये दो जीणमाम, उहां पर्याडिया, उहां अपर्याप्तियां; दुरो माण, सात माण, चारो मक्काय, तरकगनिके विना दोष भीत गतियां, पवेन्द्रियजाति, अक्काय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारकालययोगिके विना दोष चारु योग, तीनों वेद, चारो रुसाय, तीनों अज्ञान, अंत्यम, आदिके दो रतन, द्रयमं अहां लेदयाएं, आत्मने तेजोलेदया; भव्यमिदिक, माणारुअनुजाकार, मत्रिक, आहारक, अणाणारुअनुजाकारोपयोगी और अन्तकारोपयोगी होते हैं ।

उहां तेजोलेदयावाले साम्प्रतसस्यदृष्टि जीणोके पर्याप्तान्मवसथी आचार करने

नं ५२८ तेजोलेदयावाले साम्प्रतसस्यदृष्टि जीणोके सामान्य आचार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु | जी | प | म | म | ग | द | का | यो | रे | रु | भा. | भव | द | वे | म. | म. | व. | व. | व. | व. |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| स | प | व | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ |
| म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. |
| अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

चीओ, दस पाण, चचारि गगाओ, तिण्णि मसो, पंचिदियजादी, वमसाओ, दो रंगण, तिण्णि वेद, चचारि रुसाय, तिण्णि अगाण, अंतत्रसो, दो रंगण, दवेण तेउलेसा; भोत्रेण तेउलेसा; भवमिदिया, माणणसम्भत्तं, मण्णिणो, आहारिणो, अणाणारुअनुजा होति अणाणारुअनुजा स ।

तेमि चैव पज्जचारं भणमणे अरिय एयं गुणद्वारं, एओ चिणमामो, उ पज्जचीओ, मच पाण, चचारि नज्जा वे, वेसथी, पंचिदियजादी, वमसाओ, दो रंगण, तिण्णि वेद, चचारि रुसाय, तिण्णि अगाण, अंतत्रसो, दो रंगण, दवेण तेउलेसा; भोत्रेण तेउलेसा; भवमिदिया, माणणसम्भत्तं, मण्णिणो, आहारिणो, अणाणारुअनुजा होति अणाणारुअनुजा स ।

उहां तेजोलेदयावाले साम्प्रतसस्यदृष्टि त्रिवीकं सामान्य आचार करने पर—उरु सामान्य गुणस्थान, सबी पर्याप्त और सबी-अपर्याप्त ये दो जीणमाम, उहां पर्याडिया, उहां अपर्याप्तियां; दुरो माण, सात माण, चारो मक्काय, तरकगनिके विना दोष भीत गतियां, पवेन्द्रियजाति, अक्काय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारकालययोगिके विना दोष चारु योग, तीनों वेद, चारो रुसाय, तीनों अज्ञान, अंत्यम, आदिके दो रतन, द्रयमं अहां लेदयाएं, आत्मने तेजोलेदया; भव्यमिदिक, माणारुअनुजाकार, मत्रिक, आहारक, अणाणारुअनुजाकारोपयोगी और अन्तकारोपयोगी होते हैं ।

नं ५२९ तेजोलेदयावाले साम्प्रतसस्यदृष्टि त्रिवीकं सामान्य आचार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु | जी | प | म | म | ग | द | का | यो | रे | रु | भा. | भव | द | वे | म. | म. | व. | व. | व. | व. |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| स | प | व | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ |
| म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. |
| अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

नं ५३० तेजोलेदयावाले साम्प्रतसस्यदृष्टि जीणोके सामान्य आचार.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु | जी | प | म | म | ग | द | का | यो | रे | रु | भा. | भव | द | वे | म. | म. | व. | व. | व. | व. |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| स | प | व | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ | ए | ओ | अ | इ | उ |
| म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. | म. |
| अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. | अ. |

बहुता होति अणापाकभुजात्ता ॥

तेसि चैव अपञ्चत्तार्णं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वयं. एत्थो जीवमाणो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुमपादि पि दो गदीओ, पंचिदिय-जादी, तमहाओ, तिणि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि रुपाय, तिणि पाण, अंबवओ, तिणि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भोवेण तेउलेस्सा; मरविदिया तिणि मम्मनं, सण्णणो, आहारिणो अणादाणिओ, नागाकभुजा होति अणापाकभुजात्ता ।

तेउलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वयं, एत्थो जीवमाणो, छ

आहारक, नाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं तेजोलेखायाले असंयतसम्पत्ति त्रीयोंके अर्थात्तसम्पत्तिसंख्या आन्नाप कहते पर—एक अतिरतसम्पत्ति गुणद्वयान, एक मही-अपयोगी जीवतमानाय, छहों अर्थात्तियां. सात प्राण, चारों संक्रां, देवगति और मनुच्यगति ये दो गतियां. त्वेन्द्रियजाति, स्वप्नराय, औद्यतिकमित्र, वैश्विकमित्र और कामेजकाययोग ये तीन योग; पुरातौर, चारों कलाय, आविके तीन ज्ञान, असंयत, आविके तीन दर्शन, दृश्यमे जापोत और मूक लेखायं, भाषणे तेजोलेखा; भयवित्तिक, नोपनामिक आदि तीन सम्पत्तय, मक्षिक, गदाकार, अनाकारक-साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

तेजोलेखायाले संयत्तासंयत त्रीयोंके आन्नाप कहले पर—एक देवातिरत गुणद्वयान, एक

नं. ४३३ तेजोलेखायाले असंयतसम्पत्ति त्रीयोंके एर्पोल्य मालाया.

| | | | | | | | |
|--------|-------------|-------|---------|------------|-------|-----------|----------|
| गं. जी | प. प्रा. म. | ग. इ. | का. गो. | वे. क. भा. | ग. द. | जे. म. प. | क. ल. र. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ४३४ तेजोलेखायाले असंयतसम्पत्ति त्रीयोंके अपर्पोल्य आन्नाप.

| | | | | | | | |
|--------|-------------|-------|---------|------------|-------|-----------|----------|
| गं. जी | प. प्रा. म. | ग. इ. | का. गो. | वे. क. भा. | ग. द. | जे. म. प. | क. ल. र. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि मण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तमहाओ, नर जोग, तिणि देव, चत्तारि रुपाय, तिणि पाण, मंत्रमामंत्रओ, तिणि दंसण, दब्बेण छ केस्साओ, नांग वेउलेस्सा; मरविदिया, तिणि मम्मनं, मत्तियाओ, आहारिणो, नागाकभुजा होति अणापाकभुजात्ता ।

वेउलेस्सा-मन्त्रमन्त्राणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणद्वयं, दो जीवमाणो, छ पञ्चत्तीओ छ मन्त्रमन्त्राओ. दस पाण नरा पाण, चत्तारि मण्णाओ, मणुगपरी, पंचिदियजादी, तमहाओ, एगाह योग, तिणि देव, चत्तारि रुपाय, चत्तारि पाण, तिणि मत्तिया होति अणापाकभुजात्ता ।

धंदा एर्पोल्य आन्नाप, छहों एर्पोल्यो, एतौ ज्ञान, चारों संक्रां, देवगति और मनुच्यगति ये दो गतिया, त्वेन्द्रियजाती, स्वप्नराय, चारों मरपोल्य, चारों एक्कलेस और वैश्विक-रूपयोग ये भी योग; त्रिंशो वेद, चारों कलाय, आविके तीन ज्ञान, मन्त्रमन्त्रय, मरविके तीन एतौ, इत्यमे छहो इन्द्रगते, भाषणे नोपनामिक अर्थात्तित्तिक, नोपनामिक आदि तीन सम्पत्तय, मक्षिक, गदाकार, नाकार केओ और अनाकारोपयोगी होये हैं ।

तेजोलेखायाले मन्त्रमन्त्रा; त्रिंशोके अन्नाप कहले पर—एक अमर्षित गुणद्वयान, छहों एर्पोल्य और अर्थात्तये दो वेदमन्त्राण, छहों एर्पोल्यो, एत्थो अर्थात्तियाओ; एतौ ज्ञान, पाण प्राणा चारों संक्रां, मणुगपरी, पंचिदियजाति, रुपाय, चारों मरपोल्य, चारों मन्त्र-योग, पंचिदियजातयोग, आन्नापकमित्रायोग और आन्नापकमित्रायोग ये चारद भोज त्रीयों वेद, चारों कलाय, आविके चार ज्ञान, मत्तियाओ, ऐश्वर्यमन्त्रा और वैश्वर्यमन्त्रिये

नं. ४३५ तेजोलेखायाले संयत्तासंयत त्रीयोंके मालाया.

| | | | | | | | |
|--------|-------------|-------|---------|------------|-------|-----------|----------|
| गं. जी | प. प्रा. म. | ग. इ. | का. गो. | वे. क. भा. | ग. द. | जे. म. प. | क. ल. र. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ४३६ तेजोलेखायाले संयत्तासंयत त्रीयोंके मालाया.

| | | | | | | | |
|--------|-------------|-------|---------|------------|-------|-----------|----------|
| गं. जी | प. प्रा. म. | ग. इ. | का. गो. | वे. क. भा. | ग. द. | जे. म. प. | क. ल. र. |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्टाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसग्गदि चि दो गदीओ, पंचि-दियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, पंच गण, तिणि संजम, तिणि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भोवेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{२०} ।

पम्मलेस्सा-मिच्छाद्दृष्ट्वाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्टाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा वारह जोग, तिणि वेद, चत्तारि

अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पत्रलेख्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्याद्यष्टि, सासादनसम्पद्यष्टि, अविरतसम्पद्यष्टि और प्रमत्तचयत ये चार गुणस्थान, एक सखी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सजाए, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योग, पुरुषवेद, चारों कराय, कुमति, कुयुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असयम, सामाधिक और छेदोपस्थापना ये तीन सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुकु लेख्याए, भावसे पत्रलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्प्यगिमिथ्यात्वके विना शेष पांच समयत्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पत्रलेख्यावाले मिथ्याद्यष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्यष्टि गुण-स्थान, संशो-पर्याप्त और संशो अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संद्रापं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहाररज-काययोगद्विकके विना शेष वारह योग,

न ४३० पत्रलेख्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|----|----|---|---|----|---|----|---|----|-----|---|----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | पा | सा | स | ग | का | ओ | के | फ | सा | साय | द | ले | म | म | मपि | आ | व |
| ४ | १ | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| मि. | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| मासा | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| अधि | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| यम. | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |

कसाय, तिणि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भोवेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{२१}

" तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्टाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भोवेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,

तीनों वेद, चारों कराय, तीनों ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे पत्रलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सत्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पत्रलेख्यावाले मिथ्याद्यष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याद्यष्टि गुणस्थान, एक संशो-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संद्रापं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कराय, तीनों ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे पत्रलेख्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सत्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो

नं. ४३१

पत्रलेख्यावाले मिथ्याद्यष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|----|----|---|---|----|---|----|---|----|-----|---|----|---|---|-----|---|---|
| गु | जी | प | पा | सा | स | ग | का | ओ | के | फ | सा | साय | द | ले | म | म | मपि | आ | व |
| १ | २ | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| मि. | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| मासा | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| अधि | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| यम. | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |

नं. ४३२

पत्रलेख्यावाले मिथ्याद्यष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|----|----|---|---|----|---|----|---|----|-----|---|----|---|---|-----|---|---|
| ग | जी | प | पा | सा | स | ग | का | ओ | के | फ | सा | साय | द | ले | म | म | मपि | आ | व |
| १ | २ | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| मि. | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| मासा | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| अधि | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |
| यम. | क | ६ | ७ | ४ | २ | २ | १ | ४ | २ | ४ | ५ | ३ | ३ | २ | २ | ५ | १ | १ | २ |

सागराजुचा हेंति अणागराजुचा वा ।

तेसि चैव उपज्जत्तानं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ उपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुनिवोदो, चत्तारि कसाय, दो उण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दव्वेण ताउ-सुक्कलेस्साओ, भांण पम्मलेस्सा; भविसिद्विया अपमिसिद्विया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणा-रिणो, सागराजुचा हेंति अणागराजुचा वा^{१११} ।

पम्मलेस्सा-मासणमम्माड्डीणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जिविसमासा, छ उपज्जत्तीओ छ उपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, नारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भांण पम्मलेस्सा; भविसिद्विया, सासणसम्मत्तं, पयोगी तेणे हे ।

उद्धं पमलेश्यावाले मिथ्याएठि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्याएठि गुणस्थान, एक संशी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये दो योग; पुनरंश-चारों कपाय, आदिके दो दर्शन, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और गुण-लेश्याए, भावसे पमलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभाव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, सक्षिक, आहारक, पनाकारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हे ।

पमलेश्यावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, मती पर्याप्त और स-जी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दस प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगदिकके विना शेष वारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए,

नं. ४४३ पमलेश्यावाले मिथ्याएठि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. जी. | प | प्रा | सा | ग | इ | का | यो. | वे | क | सा | सय | द | ले. | म | स | मक्षि | जा | उ. | |
|---------|------|------|----|---|------|----|-----|----|---|--------|-----|-------|-----|---|------|-------|-----|-----|--|
| १ | १ | १० | ४ | ३ | ३ | ३ | १२ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | २ | १ | २ | २ | |
| मा | म.प. | ७ | ३ | ३ | ३ | ३ | १२ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | २ | १ | २ | २ | |
| स | अ | | ति | प | त्र. | म. | ४ | व | ४ | अप्रा. | अस | चक्षु | मा | म | मासा | स. | अना | अना | |
| | | | दे | | का. | ओ. | २ | व | २ | | अव. | अव. | प. | | | | | | |

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागराजुचा हेंति अणागराजुचा वा^{११२} ।

तेसि चैव पज्जत्तानं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, अमंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भांण पम्मलेस्सा; भविसिद्विया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरा-जुचा हेंति अणागराजुचा वा^{११३} ।

भावसे पमलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, सक्षिक, आहारक, अनाहारक; साकारो-पयोगी और अनाकारोपयोगी हेते हे ।

उद्धं पमलेश्यावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संशी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दस प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छह लेश्याएं, भावसे पम-लेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाका-रोपयोगी हेते हे ।

नं. ४४४ पमलेश्यावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. जी. | प | प्रा | सा | ग | इ | का | यो. | वे | क | सा | सय | द | ले. | म | स | मक्षि | जा | उ. |
|---------|------|------|----|---|------|----|-----|----|---|--------|-----|-------|-----|---|------|-------|-----|-----|
| १ | १ | १० | ४ | ३ | ३ | ३ | १२ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | २ | १ | २ | २ |
| मा | म.प. | ७ | ३ | ३ | ३ | ३ | १२ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | २ | १ | २ | २ |
| स | अ | | ति | प | त्र. | म. | ४ | व | ४ | अप्रा. | अस | चक्षु | मा | म | मासा | स. | अना | अना |
| | | | दे | | का. | ओ. | २ | व | २ | | अव. | अव. | प. | | | | | |

नं. ४४५ पमलेश्यावाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. जी. | प | प्रा | सा | ग | इ | का | यो. | वे | क | सा | सय | द | ले. | म | स | मक्षि | जा | उ. |
|---------|------|------|----|---|------|----|-----|----|---|--------|-----|-------|-----|---|------|-------|-----|-----|
| १ | १ | १० | ४ | ३ | ३ | ३ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | २ | १ | २ | २ |
| मा | म.प. | ७ | ३ | ३ | ३ | ३ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३ | १ | २ | १ | २ | २ |
| स | अ | | ति | प | त्र. | म. | ४ | व | ४ | अप्रा. | अस | चक्षु | मा | म | मासा | स. | अना | अना |
| | | | दे | | का. | ओ. | १ | व | १ | | अव. | अव. | प. | | | | | |

असंजमो, दो दंमण, दव्णेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मा-
 भिच्छंतं, मण्णिणो, आहारिणो, सागारजुत्ता होति अणागारजुत्ता य।
 पम्मलेस्सा-असंजदस्समाद्द्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, वे जीवसमाया,
 छ पज्जत्तीओ उ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ,
 पंचिदियजदी, तमकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कस्साय, तिण्णि पाण,
 असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्णेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि
 सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारजुत्ता होति अणागारजुत्ता य।

तेहिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमातो, छ
 पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजदी, तमकाओ,
 काययोग भेट वोंककियकराययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अन्नानोंगे
 मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों देखाय, चारसे
 पम्लेदशा; भवसिद्धिक, सव्यमित्थ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनासा-
 रोपयोगी होते हैं।

पम्लेदशाकले असंजतवस्वरुदृष्टि जीवोंके सामान्य आत्माय कहने पर—एक अविश्व-
 सस्वरुदृष्टि गुणस्वात्म, संबो पर्याप्त और संबो-अपर्याप्त ये दो जीवस्वभाव, छहों पर्याप्तियां, छहों
 अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संबांध, नरकगतिके पिना दोष भीज गतियां, पंचेन्द्रिय-
 ज्ञाति, त्रयकाय, आहारकराययोगदिकेके पिना दोष तेरह योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके
 तीन ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों देखाय, चारसे पम्लेदशा
 सव्यमित्थिक, औपचारिकद्वि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, प्रसाहारक; साकारोपयोगी
 और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उत्तरी पम्लेदशाकले असंजतवस्वरुदृष्टि जीवोंके पर्याप्तस्वात्मसंबन्धी आत्माय कहने
 पर—एक अविश्वतवस्वरुदृष्टि गुणस्वात्म, एक संबो पर्याप्त जीवस्वात्म, छहों पर्याप्तियां, दसों
 प्राण, चारों संबांध, नरकगतिके पिना दोष तीन गतियां, पंचेन्द्रियज्ञाति, त्रयकाय, चारों प्रत्येयोग,

नं. ७८६ पम्लेदशाकले असंजतवस्वरुदृष्टि जीवोंके सामान्य आत्माय.

| | | | | | | | | | |
|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| १. १. १ | २. २. २ | ३. ३. ३ | ४. ४. ४ | ५. ५. ५ | ६. ६. ६ | ७. ७. ७ | ८. ८. ८ | ९. ९. ९ | १०. १०. १० |
| १०. १०. १० | ११. ११. ११ | १२. १२. १२ | १३. १३. १३ | १४. १४. १४ | १५. १५. १५ | १६. १६. १६ | १७. १७. १७ | १८. १८. १८ | १९. १९. १९ |

नं. ७८७ पम्लेदशाकले असंजतवस्वरुदृष्टि जीवोंके सामान्य आत्माय.

| | | | | | | | | | |
|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| १. १. १ | २. २. २ | ३. ३. ३ | ४. ४. ४ | ५. ५. ५ | ६. ६. ६ | ७. ७. ७ | ८. ८. ८ | ९. ९. ९ | १०. १०. १० |
| १०. १०. १० | ११. ११. ११ | १२. १२. १२ | १३. १३. १३ | १४. १४. १४ | १५. १५. १५ | १६. १६. १६ | १७. १७. १७ | १८. १८. १८ | १९. १९. १९ |

असंजमो, दो दंमण, दव्णेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मा-
 भिच्छंतं, मण्णिणो, आहारिणो, सागारजुत्ता होति अणागारजुत्ता य।

पम्मलेस्सा-असंजदस्समाद्द्वीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, वे जीवसमाया,
 छ पज्जत्तीओ उ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ,
 पंचिदियजदी, तमकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कस्साय, तिण्णि पाण,
 असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्णेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि
 सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारजुत्ता होति अणागारजुत्ता य।

तेहिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमातो, छ
 पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियजदी, तमकाओ,
 काययोग भेट वोंककियकराययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अन्नानोंगे
 मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों देखाय, चारसे
 पम्लेदशा; भवसिद्धिक, सव्यमित्थ्यात्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनासा-
 रोपयोगी होते हैं।

पम्लेदशाकले असंजतवस्वरुदृष्टि जीवोंके सामान्य आत्माय कहने पर—एक अविश्व-
 सस्वरुदृष्टि गुणस्वात्म, संबो पर्याप्त और संबो-अपर्याप्त ये दो जीवस्वभाव, छहों पर्याप्तियां, छहों
 अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संबांध, नरकगतिके पिना दोष भीज गतियां, पंचेन्द्रिय-
 ज्ञाति, त्रयकाय, आहारकराययोगदिकेके पिना दोष तेरह योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके
 तीन ज्ञान, असंजम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों देखाय, चारसे पम्लेदशा
 सव्यमित्थिक, औपचारिकद्वि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, प्रसाहारक; साकारोपयोगी
 और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उत्तरी पम्लेदशाकले असंजतवस्वरुदृष्टि जीवोंके पर्याप्तस्वात्मसंबन्धी आत्माय कहने
 पर—एक अविश्वतवस्वरुदृष्टि गुणस्वात्म, एक संबो पर्याप्त जीवस्वात्म, छहों पर्याप्तियां, दसों
 प्राण, चारों संबांध, नरकगतिके पिना दोष तीन गतियां, पंचेन्द्रियज्ञाति, त्रयकाय, चारों प्रत्येयोग,

नं. ७८६ पम्लेदशाकले असंजतवस्वरुदृष्टि जीवोंके सामान्य आत्माय.

| | | | | | | | | | |
|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| १. १. १ | २. २. २ | ३. ३. ३ | ४. ४. ४ | ५. ५. ५ | ६. ६. ६ | ७. ७. ७ | ८. ८. ८ | ९. ९. ९ | १०. १०. १० |
| १०. १०. १० | ११. ११. ११ | १२. १२. १२ | १३. १३. १३ | १४. १४. १४ | १५. १५. १५ | १६. १६. १६ | १७. १७. १७ | १८. १८. १८ | १९. १९. १९ |

दस जोग, निष्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिष्णि गाण, असंजसो, तिष्णि दंसण, दब्बेण छ जेसाओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिष्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, मागारुवजुत्ता हँति अणारुवजुत्ता वा^{१०} ।

तेसिं चेन उपजत्तानं भण्णमाणे अरिथ एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपजत्ततीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि चि दो गदीओ, पंचिदिय-जादी, तसकाओ, तिष्णि जोग, पुत्तिसिदेद, चत्तारि कसाय, तिष्णि गाण, असंजसो, निष्णि दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिष्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणारुवजुत्ता हँति अणारुवजुत्ता वा^{१०} ।

चारों एतन्तयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कणय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे पञ्च-लेख्या; भयन्त्रिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पमलेख्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—एक अपरिग्रस्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संदी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, गान प्राण, चारों संज्ञाप, वेद्यगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमित्र, वैक्रियिकमित्र और तार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद, चारों कणय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे ज्ञायोत और शुल लेख्याएं, भावसे पमलेख्या; भयन्त्रिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक।

नं. ४३२. पमलेख्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|------|-----|---|------|----|------|---|----|------|----|------|----|-----|-----|-----|---|---|-----|-----|-----|
| १ | जी | १ | प | प्रा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सि | आ | व |
| २ | रेख. | स.प | ५ | १० | ४ | २ | १ | २ | ६ | ३ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | ३ | ३ | २ | २ |
| | | | | ति | म. | प. | ५ | ५ | म. | ५ | मति. | म. | आप | आ | द | आ | म | आहा | अना | अना |
| | | | | म. | | विना | प | अव | विना | अव | शुत | जव | साओ | अना | अना | | | | | |

नं. ४३०. पमलेख्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|------|-----|---|------|----|------|---|----|------|----|------|----|-----|-----|-----|---|---|-----|-----|-----|
| १ | जी | १ | प | प्रा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सि | आ | व |
| २ | रेख. | स.प | ५ | १० | ४ | २ | १ | २ | ६ | ३ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | ३ | ३ | २ | २ |
| | | | | ति | म. | प. | ५ | ५ | म. | ५ | मति. | म. | आप | आ | द | आ | म | आहा | अना | अना |
| | | | | म. | | विना | प | अव | विना | अव | शुत | जव | साओ | अना | अना | | | | | |

७८८] सत-परुषणपुयोगइरे लेस्सा-आलानवणण

[१, १.

पम्मलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अरिथ एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पजत्ततीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, गव जोग, तिष्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिष्णि गाण, संजमासंजसो, तिष्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; उच्चं च पिडियाए^{११}—

लेस्सा य दब्ब-भावं कम्म गोरुम्मिस्सय दब्ब ।

जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो ॥ २२८ ॥

भवसिद्धिया, तिष्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणारुवजुत्ता वा^{११} ।

पम्मलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अरिथ एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा, छ साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पमलेख्यावाले सयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संदी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रस काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कणय, आदिके तीन ज्ञान, सयमासयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे पमलेख्या होती है । पिडिका नामके ग्रन्थमें कहा भी है:—

लेख्या वो प्रकारकी है, द्रव्यलेख्या और भावलेख्या । नो कर्मवर्गणाओसे मिश्रित कर्मवर्गणाओको द्रव्यलेख्या कहते हैं । तथा जीवना कणय और योगके निमित्तसे दुनेवाला जो आत्मिक परिणाम है, वह भावलेख्या कहलाती है ॥ २२८ ॥

लेख्या आलापके भागे भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पमलेख्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, संदी-पर्याप्त और संदी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दसों प्राण,

१ आ प्रती ' पिडियाए ' इति पाठ ।

नं. ४५१

पमलेख्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|------|-----|---|------|----|------|---|----|------|----|------|----|-----|-----|-----|---|---|-----|-----|-----|
| १ | जी | १ | प | प्रा | म | ग | इ | का | यो | वे | क | सा | सय | द | ले | म | स | सि | आ | व |
| २ | रेख. | स.प | ५ | १० | ४ | २ | १ | २ | ६ | ३ | ५ | ३ | २ | ३ | ३ | ६ | ३ | ३ | २ | २ |
| | | | | ति | म. | प. | ५ | ५ | म. | ५ | मति. | म. | आप | आ | द | आ | म | आहा | अना | अना |
| | | | | म. | | विना | प | अव | विना | अव | शुत | जव | साओ | अना | अना | | | | | |

दरभीसे छ धराजमीचो, दस पाण मत्त पाण, चत्तारि मज्जाओ, मणुमगदी, पंचि-
रिवरदी, मज्जाओ, एगारह जोग, तिणि वेद, चत्तारि रुसाय, चत्तारि पाण, तिणि
संरय, तिणि रंजण, दुबेगं छ देसाओ, भाणेन पम्मेस्सा; मन्मिदिया, तिणि
मरमर्ष, मन्दिओ, आहारिओ, गणाकानुचा होति अणागकानुचा वा ।

' दम्मेस्सा-अपमवर्णपदानं भग्गमाणे अत्थि ष्यं गुणद्वयानं, एओ जीमयमाओ,
उ पञ्चमीचो, दस पाण, तिणि मज्जाओ, मणुमगदी, पंचिदियजादी, मज्जाओ, पाण

एव मत्त, पाणो संजम, मणुमगदी, पञ्चिदियजाति, मज्जाओ, चारो मज्जाओ, चारो पक्क-
जोग, ओसोसककामयोग, आहारककामयोग और आहारकमिधक.पयो.ग ये एगारह जोग, तीनों
वेद, चारो रुसाय, आदिके चार भाव, सामाधिक, ऐश्वर्यमाला और परिहारविगुदिसंयम ये
संके मरय, आदिके तीन दर्शन, दुसरो एहो नेदराणं, भावने पम्मेदया। मन्मिदिक,
मन्मिदिक आदिके तीन मज्जाओ, मन्मिदिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी
होते हैं ।

एकदियमाओ उ मज्जासयत जीओके पानाय इहो एर—एक अममममयत गुणद्वयान,
एक पञ्च-अणोच मज्जासयत, एहो पञ्चिदियां, एहो मज्जा, आहारसजाके पिना जेप ननि
संके. मज्जासयत, पञ्चिदियजाति, मज्जाओ, चारो मज्जाओ, चारो पक्कजोग और ओस-

१. ११३ एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय.

| | | | |
|--------|-----------------------------------|--------|-----------------------------------|
| १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. | १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. |
| १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. | १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. |
| १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. | १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. |
| १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. | १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. |

१. ११३ एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय.

| | | | |
|--------|-----------------------------------|--------|-----------------------------------|
| १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. | १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. |
| १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. | १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. |
| १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. | १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. |
| १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. | १. ११३ | एवमेवमाओ उ मज्जासयत जीओके अन्नाय. |

जोग, तिणि वेद, चत्तारि रुसाय, चत्तारि पाण, तिणि संजम, तिणि दंसाण, दुबेग
छ लेसाओ, भाणेन पम्मेस्सा; मन्मिदिया, तिणि मम्मचं, मन्दिओ, आहारिओ,
गणाकानुचा होति अणागकानुचा वा ।

मुम्मेस्साणं भण्णमाणे अत्थि अजोगि पिगा तेरह गुणद्वयानि, दो जीवयमासा,
छ पञ्चमीओ छ अपज्जतीआ, दस पाण मत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि
सज्जाओ मीणमग्गा पि अत्थि, तिणि गदीओ, पंचिदियजादी, तससाओ, पण्णारह
जोग, तिणि वेद अमगदेदो पि आत्थ, चत्तारि रुसाय अरुसाओ पि अत्थि, अट्ट
पाण, मत्त संजम, चत्तारि दंसण, दुबेग छ लेसाओ, भाणेन मुम्मेस्सा; मन्मिदिया,
अमममिदिया, उ मम्मचं, मन्दिओ जेप मन्दिओ वेर अयण्णिओ पि अत्थि, अहारिओ
जणाहारिओ, गणाकानुचा होति अणागकानुचा वा मागार-अणागारंठि जुगण-
वजुचा वा ।

रिक्तताययोग ये जो योग, तीनों वेद, चारों रुसाय, आदिके चार भाव, सामाधिक, ऐश्वर्यमाला
और परिहारविगुदिक ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, दुसरो एहो लेदराणं, भावने
पम्मेदया, मन्मिदिक, औपसमिक गदि तीन संयमरय, मन्मिदिक, आहारक, साकारोपयोगी
और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय काले एर—अयोनिक्खली गुणद्वयान्ते पिना
आदिके तेरह गुणद्वयान, मन्मि पर्वान और मन्मि-अपर्याज ये दो जीवयमास, उहो पर्वानियां,
एहो अपर्याजियां, दसों पाण, मत्त पाण तथा मयोजिकेजकी अपेक्षा चार पाण और दो पाण;
चारों सजाएं तथा शीणमंसायान भी होना है, नरकगतिके पिना जेप तीन मन्मियां, पन्ने-
दियजाति, मज्जाओ, एट्टहो जोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होना है, चारों
रुसाय तथा अरुसायस्थान भी है । अहो मज्जा, मज्जाओ मज्जा, चारों दर्शन, दुबेग छहों
लेदराणं, भावने मुम्मेदया। मन्मिदिक, अमममिदिक उहो मज्जासयत, मन्मिदिक तथा
मन्मिदिक और मन्मिदिक इन दोनों पिदराणोने रहित भी स्थान होना है, आहारक, अनाहारक
साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा माकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोने गुणद्व-
उपयुक्त भी होते हैं ।

१. ११३ मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय.

| | | | |
|--------|-------------------------------------|--------|-------------------------------------|
| १. ११३ | मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय. | १. ११३ | मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय. |
| १. ११३ | मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय. | १. ११३ | मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय. |
| १. ११३ | मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय. | १. ११३ | मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय. |
| १. ११३ | मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय. | १. ११३ | मुम्मेस्साणं जियोकै सामान्य अन्नाय. |

सम्मामिच्छत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणगारुवजुत्ता वा” ।

शुक्लेस्सा-असजदसम्माइहँणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवममासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियज्जादी, तसकाओ, तेह जोगं, तिण्णि वेद, चचारि रुसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण सुम्फलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणगारुवजुत्ता हँति अणगारुवजुत्ता वा” ।

शुक्लेस्सा, भव्यसिद्धिक, सम्ययिमथ्यात्थ, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

शुक्लेस्सायाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—एक अरिस्तसम्यग्दष्टि गुणस्थान, संजी-पर्याप्त और संजी-अपर्याप्त ये दो जीवममास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण; चारों सभाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, असकाय, आहाररुकाययोगिकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन दान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयाएं, भावसे शुक्लेस्सा, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४६३ शुक्लेस्सायाले सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|
| गु | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | मय | द | हे | म | प | गग्नि | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अग्नि | सप. | स | ज | प | म | इ | का | यो | वे | क | भा | मय | द | हे | म | प | गग्नि | आ | उ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ४६४ शुक्लेस्सायाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|
| गु | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | मय | द | हे | म | प | गग्नि | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अग्नि | सप. | स | ज | प | म | इ | का | यो | वे | क | भा | मय | द | हे | म | प | गग्नि | आ | उ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तेमिं चेत्त पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवममासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिदियज्जादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चचारि रुसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भवेण सुम्फलेस्सा; भवसिद्धिया. तिण्णि सम्मत्तं, सण्णियो. आहारिणो, सागारुवजुत्ता हँति अणगारुवजुत्ता वा” ।

तेमिं चेत्त अणज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणद्वणं, एओ जीवममासो, छ अणज्जत्तीओ, सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, देव-मणुसगादि चि दो गदीओ, पंचिदियज्जादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिषवेदो, चचारि रुसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण काउ सुम्फलेस्साओ, भवेण सुम्फलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

उन्हीं शुक्लेस्सायाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्तसालसंयन्त्री आलाप कहते पर—एक अरिस्तसम्यग्दष्टि गुणस्थान, एक संजी-पर्याप्त और संजामास, छहों पर्याप्तियों, दसों प्राण, चारों सभाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, चारों नतोयोग, चारों रवायोग, औपशमिकारयोग और वेदित्तिरुकाययोग ये इन योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन जल, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेदयाएं, भावसे शुक्लेस्सा, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी प्रांत हैं ।

उन्हीं शुक्लेस्सायाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके अपर्याप्तसालसंयन्त्री आलाप कहते पर—एक अरिस्तसम्यग्दष्टि गुणस्थान, एक संजी-अपर्याप्त जीवममास, छहों अपर्याप्तियों, सात प्राण, चारों सभाएं, नरकगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, औपशमिकारयोग, वेदित्तिरुकाय और कामतसकाययोग ये तीन योग; पुरुरवेद, चारों कपाय, आदिके तीन दान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे सायत और शुक्लेस्सा, भावसे शुक्लेस्सा; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक;

नं. ४६५ शुक्लेस्सायाले असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|----|----|
| गु | जी | प | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | मय | द | हे | म | प | गग्नि | आ | उ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| अग्नि | सप. | स | ज | प | म | इ | का | यो | वे | क | भा | मय | द | हे | म | प | गग्नि | आ | उ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो अस-
ण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१००} ।

तेसिं चैव पज्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, सत्त जीवसमासा, छ
पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण
छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस
जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दा दंसण, दव्व-भवेहिं
छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्चत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता
होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०१} ।

छहों लेश्यापं, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक, अनाहारक, साका-
रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि
गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दसों
प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों सत्तापं, चारों गतियां, दसों
पाचों जातियां, छहों काय, चारों मन्तयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और
वैक्रियिककाययोग ये दस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो
दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याप, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सन्निक, असन्निक, आहारक,
साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४७० अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | सं | ग | ह | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | महि | आ | उ | |
|----|----|----|------|----|---|---|----|------|----|-------|-------|----|-------|-----|---|---|-----|-----|------|--|
| १ | १४ | ६५ | १०,७ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | २ | २ | |
| मि | | ६अ | ९,७ | | | | | आ.दि | | अज्ञा | अज्ञा | अस | चक्षु | द्र | १ | १ | २ | आहा | साफा | |
| | | ५प | ८,६ | | | | | विना | | | | | अच | | | | अस | अना | अना | |
| | | ५अ | ७,५ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४प | ६,४ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४अ | ४,३ | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ४७१ अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | प्रा | म | ग | ह | का | यो | वे | क | हा | सय | द | ले | म | स | महि | आ | उ |
|----|------|---|------|---|---|---|----|----|----|-------|-------|----|-------|-----|---|---|-----|-----|------|
| १ | ७ | ६ | १० | ४ | ४ | ५ | ६ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | २ | १ | २ |
| मि | | ५ | ९ | | | | | म | | अज्ञा | अज्ञा | अस | चक्षु | द्र | १ | १ | २ | आहा | साफा |
| | प्रा | ४ | ८ | | | | | व | | | | | अच | | | | अस | अना | अना |
| | | ४ | ७ | | | | | ओ | | | | | | | | | | | |
| | | | ७ | | | | | वे | | | | | | | | | | | |
| | | | ६ | | | | | वे | | | | | | | | | | | |

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि गाण, तिण्णि संजस, तिण्णि दंसण, दव्वेण
छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,
सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

अप्युयरणपहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओघ-भंगो; तेसु सुक्कलेस्सा-वदि-
रित्तणलेस्साभावादो । अलेस्साणं अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो चैव ।

एव लेस्साणगणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणं भण्णमाणे मिच्छाद्विपहुडि जाव अजोगिकेवलि
ति ओघ-भंगो । णवरि भवसिद्धिया ति वत्तव्वं ।

अभवमिद्धियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, चोदस जीवसमासा, छ पज्ज-
त्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि
अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण
पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि
गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,
ओर औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान, सामा-
यिक, छेदोपस्थानता और परिहारविमुद्धि ये तीन सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों
लेश्याप, भावसे सुक्कलेस्सा, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन समयकत्व, सन्निक,
आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके सुक्कलेस्सावाले
जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान ही होते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें सुक्कलेस्साको
छोड़कर अन्य लेश्यामोंका अभाव है ।
लेश्यारहित अयोगिकेवली ओट सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापोंके ही
समान होते हैं ।

इत प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भयमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंके आलाप कहने पर मिथ्यादृष्टि गुण-
स्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं । विशेष
तान यह है कि भव्य आलाप कहते समय एक भव्यसिद्धिक आलाप ही कहना चाहिए ।

अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,
नौदस जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां,
चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, आठ प्राण,
छ प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों
सत्तापं, चारों गतियां, पाचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगिकेके विना शेष तेरह
योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

चत्वारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, वेउवियमिस्सेण विणा चोदह जोग अहवा एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदेवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसप अकसाओ वि अत्थि, पंच गण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दब्ब-मोवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो पेउ सण्णिणो पेउ असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुअुत्ता होति अणागारुअुत्ता वा सागार-अणागारोहिं छुगवहुअुत्ता वा” ।

तेसिं चेउ अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणद्वयाणि, एगो जीउममामो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा नि अत्थि, चत्तारि

गतियां. पंचेन्द्रियजाति, तसकाय, वैक्रियिकमित्रकाययोगके चिना चौदह योग अथवा तीनों मिश्र योग और कार्मणकाययोगके चिना दोष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी हे; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हे, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी हे, पांचों प्रान, नारों मयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेदयाएं तथा अलेदयास्थान भी हे, भव्यमित्तिक, आपदासिक आदि तीन सम्यन्व, सीबक तथा सक्षिक और असक्षिक इन दोनों त्रिकुण्योमे रहित भी स्थान हे, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा मात्तार और अनात्तार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हे ।

विशेषार्थ— छठवें गुणस्थानकी आहारकसमुदात अवस्थामें और तेरहवें गुणस्थानकी केवलिसमुदात अवस्थामें पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर आदारकमित्र, ओयारकमित्र और कार्मणकाय ये तीन योग पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं। इसीप्रकार स्योणिकेजलीके दो प्राणोंके सबन्धमें भी समझ लेना चाहिये ।

उर्ध्वो सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसङ्घी आलाप कहते पर—अधिरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और स्योणिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संभ्री-अपर्याप्त जीवसमाय, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण दो प्राण, चारों संभ्राए तथा क्षीणसमास्थान भी हे, चारों गतिया, पचेन्द्रिय-

नं. ४७४

सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | के | क. | भा. | माय | दे. | म | म. | मि. | आ. | उ |
|-------|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|-----|-----|-----|---|----|-----|----|---|
| १२ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १४ | ३ | ४ | ५ | ७ | ४ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ |
| अक्षि | म | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| अयो. | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

मदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदेवेदो नि अत्थि, चत्तारि कसप त्रकसाओ नि अत्थि, चत्तारि गण, चत्तारि नंजम, चत्तारि दंसण, दब्बेग ऋउ-मुक्खेस्साओ, मोक्खे छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो अणुमया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुअुत्ता होति अणागारुअुत्ता वा तदुमाएण वा” ।

उत्तरि अनंजदमम्मार्द्धिपट्टि वाप त्तोमिक्कालि चि वाप मुलोअ-अंगो; तेसिं सव्वेभिं सम्मत्तंसंभवतो ।

जाति, प्रनसार, ओयारिकमित्र, वेक्रियिकमित्र, आहारकमित्र और अनाहारकयोग, स्योणिके त्रिण दोष तथा अयोगस्थान भी हे, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी हे, सति, पुन, ज्यपि और रे-अणाय ये चार प्रान, प्रनंजम, मामासिक, छेदो-अणुमया और यथास्थानोपहारमुद्रिमंजम ये चार मंजम चारों दर्शन, द्रव्यमे स्योत और शुक्र लेदयाएं, भायमे छहों लेदयाएं, भव्यमित्तिक, आपदासिक चारि तीन सम्यत्त्व, सक्षिक तथा सक्षिक और अनक्षिक इन दोनों त्रिकुण्योमे रहित, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा सात्तार और असात्तार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हे ।

विशेषार्थ— यहांपर सम्यत्तयशांजाले अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए भारतमे छहों लेदयाएं बतलाई गई हे, और गोनटवार जीरुण्डके आगारकमित्र में सम्यत्तयशांजालेके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए एक गणोत और तीन शुभ रत्नप्रकार चार लेदयाएं भी बतलाई हे । परंतु गोनटवारमें लेया कलन स्यो किया यह कुछ समझमें नहीं आता, स्योकि, आपे उनीमं वेदकमम्याप्तके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए उर्ध्वो लेदयाएं कहीं गई हे । संभव हे यह लिपिकारकी मूल हे जो परापर यहा तक चली आई हे । प्रस्तु, भयलका काल ठीक प्रतीत होना हे ।

कार अंत्यगसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमे लेकर अयोणिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूठ ओपालाएके समान होते हे; स्योकि उन सभी गुणस्थानवर्ती जीवोंके सम्यत्तय परया जाता हे ।

नं. ४७५

सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु | जी | प | पा | स | ग | इ | का | यो | के | क. | भा. | माय | दे. | म | म. | मि. | आ. | उ |
|-------|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|-----|-----|-----|---|----|-----|----|---|
| १२ | १ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १४ | ३ | ४ | ५ | ७ | ४ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ |
| अक्षि | म | प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| अयो. | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

गहयमममाहृद्रीणं भणमणे अथि एगारह गुणद्वयगुणानि अदीदगुणद्वयगुणानि अथि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अथि, छ पञ्चत्वीओ छ अपञ्चत्वीओ अथि, चचारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अथि, दम पाण सत्त पाण अदीदपाणो वि अथि, चचारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अथि, चचारि गईओ सिद्धगई वि अथि, पंचिदियजादी अणिदियत्तं वि अथि, तसकाओ अक्रायत्तं वि अथि, पण्णारह जोग अजोओ वि अथि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अथि, चचारि कसाय अक्रसाओ वि अथि, पंच पाण, सत्त संजम, चचारि दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अथि, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो वि अथि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हाँति अणगारुवजुत्ता वा सागार-अणगारेहिं जुगनदुवजुत्ता वा^{११} ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे केकर अयोगिकेवली गुणस्थानक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी होता है, संक्षी-पर्याप्त अट संजी अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तस्थान भी है, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पंचदशों योग तथा अनिन्द्रियस्थान भी है, बस-पाय तथा अक्रायस्थान भी है, पंचदशों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत-स्थान भी है, चारों क्रयय तथा अक्रययस्थान भी है, पंचों ज्ञान, सातों संयम तथा संयम, अंशयम और संयमसंयमभे रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए तथा अलेख्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों गिक्त्योंसे गति भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक तथा सन्निक और अनाकारो-पेनों विक्त्योंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

नं. ५७६

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके सामान्य आलाप.

| गु | नी | प | प्रा | स | ग | क | का | यो. | वे | रु. | मा | मय | द. | ले. | म | म | गति | जा. | उ. |
|------|----|----|------|---|---|---|----|------|----|-----|----|----|----|-----|---|---|-----|-----|----|
| ११ | १ | ५ | १० | ५ | ५ | १ | १ | ११म५ | ३ | ५ | ५ | ७ | ५ | ५ | १ | १ | १ | २ | २ |
| वि | स | प. | | | | | | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ | ५ | ५ | १ | १ | १ | २ | २ |
| से | | | | | | | | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ | ५ | ५ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ज्यो | | | | | | | | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ | ५ | ५ | १ | १ | १ | २ | २ |

तेसिं चैव पञ्चत्वाणं भणमणे अथि एगारह गुणद्वयगुणानि, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्वीओ, दस चचारि एग पाण, चचारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अथि, चचारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोओ वि अथि, तिण्णि वेद अवगद-वेदो वि अथि, चचारि कसाय अक्रसाओ वि अथि, पंच पाण, सत्त संजम, चचारि दंसण, दव्व-भवेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अथि, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो वि अथि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हाँति अणगारुवजुत्ता वा सागार-अणगारेहिं जुगनदुवजुत्ता वा^{११} ।

तेसिं चैव अपञ्चत्वाणं भणमणे अथि तिण्णि गुणद्वयगुणानि, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्वीओ, सत्त पाण, चचारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अथि, चचारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चचारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदवेदो वि अथि,

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक ग्यारह गुणस्थान, एक संजी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसवन्धी ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों क्रयय तथा अक्रययस्थान भी है, पंचों सम्यग्ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याए तथा अलेख्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक तथा सन्निक और अनाकारो-प-इन दोनों विक्त्योंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-प-योगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—अविरत-सम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संजी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाप तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है चारों गतियां, पंचे-न्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसवन्धी चारों योग, खोविके विना शेष दो वेद तथा

नं. ५७७

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीविके पर्याप्त आलाप.

| गु | नी | प | प्रा | स | ग | क | का | यो. | वे | रु. | मा | मय | द. | ले. | म | म | गति | जा. | उ. |
|------|----|----|------|---|---|---|----|------|----|-----|----|----|----|-----|---|---|-----|-----|----|
| ११ | १ | ५ | १० | ५ | ५ | १ | १ | ११म५ | ३ | ५ | ५ | ७ | ५ | ५ | १ | १ | १ | २ | २ |
| वि | स | प. | | | | | | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ | ५ | ५ | १ | १ | १ | २ | २ |
| से | | | | | | | | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ | ५ | ५ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ज्यो | | | | | | | | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ | ५ | ५ | १ | १ | १ | २ | २ |

चत्वारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्वारि णाण, चत्वारि संजम, चत्वारि दंसण, दव्वेण काउ-खुक्कलेसाओ, भावेण जहणणकाउ तेउ-पम्म-सुक्कलेसाओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मचं, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा^{१०८} ।

^{१०९} खइयसम्माहट्ठीणं असंजदानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, दो जीवसमासा, छ पञ्जत्ताओ छ अपज्जत्ताओ, दस पाण सत्त पाण, चत्वारि संण्णाओ, चत्वारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णि णाण, असं-

अपगतवेदस्थान भी है, चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है, मति, श्रुत, अद्यधि और केवल-ज्ञान ये चार ज्ञान; असयम, सामाधिक छेदोपस्थापना और यथास्थितविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक तथा अनुभयस्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संबन्धी-पर्याप्त और संबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अप-र्याप्तियां, दसों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,

न ४७८

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|----|---|---|----|---------|---------|------|----|------|-----|-------|-------|-------|-------|-----|------|------|
| शु | जी | प | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म. | स | सक्ति | आ | उ | |
| ३ | २ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | |
| अवि. | प्रम | स्यो | | | | | ओ मि पु | वे मि न | मि | मि | सामा | अस | शु | का. | म | का | आहा | साका | |
| | | | | | | | वे मि न | आ मि | कर्म | अव | केव | परे | शुक्ल | पद्म. | शुक्ल | मनु | अना | तथा | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | पु उ |

नं. ४७९

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|----|---|---|----|---------|---------|------|----|-----|-----|-------|-------|-------|-------|------|-----|------|
| शु | जी | प | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ | |
| ३ | २ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | |
| अवि. | प्रम | स्यो | | | | | ओ मि पु | वे मि न | मि | मि | अस | शु | का. | म | का | आहा | साका | तथा | |
| | | | | | | | वे मि न | आ मि | कर्म | अव | केव | परे | शुक्ल | पद्म. | शुक्ल | मनु | अना | तथा | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | पु उ |

जमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेसाओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्चत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वयं, एओ जीवसमासो, छ पञ्-चीओ, दस पाण, चत्वारि सण्णाओ, चत्वारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्वारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेसाओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हौति अणागारुवजुत्ता वा^{१०९} ।

आहारककाययोगदिकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आविके तीन ज्ञान, असंयम, आविके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंवन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैकिकिकाययोग ये दश योग, तीनों वेद चारों कपाय, आविके तीन ज्ञान, असंयम, आविके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४८०

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|----|---|---|----|---------|---------|------|----|-----|-----|-------|-------|-------|-------|------|-----|------|
| शु | जी | प | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म. | स | सक्ति | आ | उ | |
| ३ | २ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | |
| अवि. | प्रम | स्यो | | | | | ओ मि पु | वे मि न | मि | मि | अस | शु | का. | म | का | आहा | साका | अना | |
| | | | | | | | वे मि न | आ मि | कर्म | अव | केव | परे | शुक्ल | पद्म. | शुक्ल | मनु | अना | तथा | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | पु उ |

नं. ४८१

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|----|---|---|----|---------|---------|------|----|-----|-----|-------|-------|-------|-------|------|-----|------|
| शु | जी | प | सा | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | स | सक्ति | आ | उ | |
| ३ | २ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | |
| अवि. | प्रम | स्यो | | | | | ओ मि पु | वे मि न | मि | मि | अस | शु | का. | म | का | आहा | साका | अना | |
| | | | | | | | वे मि न | आ मि | कर्म | अव | केव | परे | शुक्ल | पद्म. | शुक्ल | मनु | अना | तथा | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | पु उ |

सपिण्णो, आहारिणो, सागारवञ्चता ह्येति अणागारवञ्चता वा^{११} ।

सइयसम्माइहीणं पमत्तंसजदप्पहुडि सिद्धावसाणणं मूलोघ-भंगो । णवरि सव्वत्थ सइयसम्मतं चैव वत्तव्वं ।

वेदगसम्माइहीणं भण्णमाणे अत्थि चचारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गण, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, चचारि गण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भवेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मतं,

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सिद्ध जीवों तकके प्रत्येक स्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापके समान होते हैं । विशेष वात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र परु क्षायिकसम्यक्त्व ही कहना चाहिए ।

वेदरूसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहते पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अग्रमत्तसंयत गुणस्थानतक चार गुणस्थान, सशी-पर्याप्त और संशी-अपर्याप्त थे दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार प्राण, असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पाच सयम, आदिके

नं ४८२

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | पू | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | मा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|----|----|----|----|---|---|---|----|----|----|---|-----|-----|------------|------|---|---|-----|-----|---|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | २ |
| २ | ८ | | | | ५ | | ७ | ४ | | | ३ | देख | के द. मा ३ | ३. ६ | १ | १ | १ | आहा | २ |
| ३ | ३ | | | | ५ | | ७ | ४ | | | भुत | अव | विना युग | ३ | १ | १ | स | आहा | २ |
| | | | | | | | | १ | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | १ | | | | | | | | | | | |

नं. ४८३

वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | पू | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | मा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|-------|----|----|----|---|---|---|----|----|----|---|-----|----|---------------|----|---|---|-----|-----|-----|
| ४ | २ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | २ |
| अधि | स | प | ६ | ५ | ४ | ५ | ५ | ५ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ३ | १ | १ | १ | २ | २ |
| से | स | अ | ७ | | | | | | | | भुत | अव | के द. मा. ६ ग | ३ | १ | १ | २ | आहा | २ |
| अग्र. | | | | | | | | | | | अव | मम | विना | | | | | अना | अना |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नेमि चैव अरञ्जसाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्चत्तीओ, सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थियेदेण विणा दो वेद, चचारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भवेण जहण्णकाउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, सइयसम्मत, सपिण्णो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारवञ्चता ह्येति अणागारवञ्चता वा^{११} ।

सइयसम्माइहीणं सजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, गण जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, तिण्णि पाण, संजमासजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, सइयसम्मतं,

उच्चों क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संशी-अपयात जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों सजाप, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, चैत्रिकमिश्र और त्रार्गनजायोग ये तीन योग, रविवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, आदिके तीन प्राण, पसयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुरु लेस्यापं, भावसे जघन्य कापोत, दोज, पम और शुरु लेस्यापं, भव्यविन्द्रिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संशी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन प्राण, सयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेस्यापं, भावसे तेज, पम और शुरु लेस्यापं, भव्यविन्द्रिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सन्निक, आहारक,

नं. ४८२ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु | जी | पू | मा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | मा | सय | द | ले | म | स | सति | आ | उ |
|-----|----|----|----|---|---|---|----|----|----|---|-----|----|-------------|----|---|---|-----|-----|-----|
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | ९ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | २ |
| अधि | ग | म | ७ | | | | | | | | ३ | अस | के द. मा. ३ | ३ | १ | १ | १ | २ | २ |
| | | | | | | | | | | | ३ | अस | विना मा ४ | ३ | १ | १ | १ | अना | अना |
| | | | | | | | | | | | भुत | अव | विना | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

मण्डिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारालुचुचा होति जगालुचुचा सा ।

तेमिं चैत्र पञ्जत्तारणं भण्णामणे अनिय चचारि गुणद्वण्णानि, एओ चीरममांसा, छ पञ्जत्तीओ, दम पाण, चचारि मण्णाओ, चचारि गइओ, पंचिदियजदी, नमत्ताओ, एगारह जोग, तिण्णि देद, चचारि रुपाय, चचारि नाण, पंच मंस, निगि इंसन, दन्व-भापेहि छ लेस्साओ, भन्निदिया, वेदगाममं, मण्णिणो, अहारिणो, सागारालुचुचा होति अणागारालुचुचा सा ।

तेमिं चैत्र अपज्जत्तारणं मण्णामणे अनिय दो गुणद्वण्णानि, एओ चीरममांसा, उ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चचारि मण्णाओ, चचारि गदीओ; देमदि-मण्णामदी । रुइ-रुणिज्जे वेदगामममाडडि पडुअ णिरय-निरिकमगइओ लज्जंति । पंचिदियजदी, नमत्ताओ, तीत वरान, उय और भायवे उहाँ लेदयापं, भन्निदिय, वेदममसत्त, मन्तिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होने हैं ।

उन्हीं वेदकस्यस्वरुधि जीवोंके कर्णालकायसंरन्धी आलाय करने पर—अपिरल मय-रुधि गुणस्थानमे लेकर अमत्तस्यत गुणस्थान तरुके चार गुणग्याय, एक वंशी कर्णाल जीवत्तमान, उहाँ पर्याप्तिया, दसों प्राण, चारों सहाय, चारों गतिओ, पंचेदियजानि, नमत्ताय, पर्याप्तकालमयी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों नयाय, आदिके चार प्राण, अर्थमय, देवसंयमा, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पात्र संयमा आदिके त्रिंन इंसन, दम और भायसे उहाँ लेदयापं, भन्निदियक, वेदकस्यस्वरु, मन्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वेदकस्यस्वरुधि जीवोंके मर्णालकायसंरन्धी भायण करने पर—अपिरलमय-रुधि और प्रमत्तस्यत ये दो गुणस्थान, एक सञ्जी-जर्णालन जीपमगाय, उहाँ भयसोपिया, सात प्राण, चारों संजापं, चारों गतिया होती हैं, स्म्योकि, वेदकस्यस्वरुधिके मर्णालकायसं देवगति और मनुष्यगति तो पाई ही जाती हैं, किन्तु इनहल्य वेदकस्यस्वरुधिकी ओरसाये नरकगति और तिर्यचगति भी पाई जाती हैं । पंचेदियजानि, त्वक्काय, मर्णालनकायजारी चार

नं. ४८३

वेदकस्यस्वरुधि जीवोंके मर्णाल आलाय.

| गु. | जी. | प. | जा. | मं. | ग. | इ. | का. | मो. | क. | इ. | क. | भा. | गा. | द. | हं. | मं. | मं. | मं. | मं. |
|-----|-----|----|-----|-----|----|----|-----|-----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ४ | १ | ५ | १० | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अधि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अय | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

चचारि जोग, इण्णोदेन विता दो देद, चचारि रुपाय, निगि नाण, निगि मंस, निगि इंसन, दमो कउ मुरसंकेपयो, मांता उ लेस्साओ; भन्निदिया, वेदग-ममं, मन्तिओ, आहारिणो अणाहारिणो, सागारालुचुचा होति अणागारालुचुचा सा ।

वेदकस्यस्वरुधि-संरन्धी मर्णालकायसंरन्धी अनिय लं गुणद्वारं, दो चीरममांसा, उ पञ्जत्तीओ छ मत्तमगीओ, दम पाण मय पाण, चचारि मण्णाओ, चचारि नरेओ, पंचिदियजदी, त्वक्काय, वेद गोग, निगि देद, चचारि रुपाय, निगि नाण, जंमओ, निगि देदका, उदर-मोहि उ लेस्साओ, भन्निदिया, वेदगममं, मन्तिओ, आहारिणो अणाहारिणो, सागारालुचुचा होति अणागारालुचुचा सा ।

जोग, स्म्योकि पिता मंर हो दे, चारों कर्णाल, आदिके त्रिंन पात्र, अर्थमय, स्म्योकि और छेदोपस्थापना ये त्रिंन संजापं आदिके त्रिंन इंसन, उदरवे मणोय हे मुरु देदयापं, भायसे उहाँ वेदयाय, भन्निदियक, वेदकस्यस्वरु, मन्तिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होने हैं ।

वेदकस्यस्वरुधि मर्णाल जीवोंके मर्णाल आलाय करने पर—अपिरलमय-रुधि गुणस्थान और सञ्जी-जर्णालन ये दो जीपमगाय, उहाँ मर्णालकाय, उहाँ मर्णालकायसंरुधि जिया। एओ मान, मय मय, चारों संजापं, चारों गतिओ, पंचेदियजानि, त्वक्काय, मर्णालकायसं देवगति और मनुष्यगति तो पाई ही जाती हैं, किन्तु इनहल्य वेदकस्यस्वरुधिकी ओरसाये नरकगति और तिर्यचगति भी पाई जाती हैं । पंचेदियजानि, त्वक्काय, मर्णालनकायजारी चार

नं. ४८४

वेदकस्यस्वरुधि जीवोंके मर्णाल आलाय.

| गु. | जी. | प. | जा. | मं. | ग. | इ. | का. | मो. | क. | इ. | क. | भा. | गा. | द. | हं. | मं. | मं. | मं. | मं. |
|-----|-----|----|-----|-----|----|----|-----|-----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ५ | १ | ५ | १० | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अधि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अय | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

नं. ४८५

वेदकस्यस्वरुधि मर्णाल जीवोंके मर्णाल आलाय.

| गु. | जी. | प. | जा. | मं. | ग. | इ. | का. | मो. | क. | इ. | क. | भा. | गा. | द. | हं. | मं. | मं. | मं. | मं. |
|-----|-----|----|-----|-----|----|----|-----|-----|----|----|----|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ५ | १ | ५ | १० | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अधि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| अय | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

तेमि चैत्र पञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पत्तनीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, अंजमो, तिण्णि दंसण, दब्ब-भावेहि न् लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति उणागारुवजुत्ता वा ।

“तेसि चैत्र अपञ्जत्तानं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, चचारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चचारि कसाय, तिण्णि गाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण उणागारुवजुत्ता वा ।”

उन्हीं वेदकसम्पद्यष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसन्ध्या आलाप कहने पर—एक अतिरक्तसम्पद्यष्टि गुणस्थान, एक संश्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियों, दसों प्राण, चारों सञ्जाप, चारों गतियों, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैश्वदेविक-काययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, अभयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएँ, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्पद्यष्टि, सधिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वेदकसम्पद्यष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसन्ध्या आलाप कहनेपर—एक अतिरक्तसम्पद्यष्टि गुणस्थान, एक संश्री-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियों, सात प्राण, चारों सञ्जाप, चारों गतियों, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिथ, वैश्वदेविकमिथ और कामेणकाययोग ये तीन योग; पुनर और ननुसक ये दो वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान,

न. ४८० वेदकसम्पद्यष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | द | का | यो | वे | क | शा | म | स | सि | आ | उ |
|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

न. ४८१ वेदकसम्पद्यष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | द | का | यो | वे | क | शा | म | स | सि | आ | उ |
|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

काउ-सुककलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेदगसम्माइडि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, तिण्णि गाण, संजमासजसो, तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुककलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगवम्मचं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेदगसम्माइडि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, दो जीवसमासा छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगरह जोग, तिण्णि वेद, चचारि कसाय, चचारि णाण,

असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्र लेख्याणं, भावसे छहों लेख्याणं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्पद्यष्टि, संश्लिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं ।

वेदकसम्पद्यष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशधिरत्त गुणस्थान, एक संश्री-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियों, दसों प्राण, चारों सञ्जाप, तिच्यगति और मनुष्य-गति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याणं, भावसे तेज, षष्ठा और शुक्ल लेख्याएँ, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्पद्यष्टि, सधिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वेदकसम्पद्यष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संश्री-पर्याप्त और संश्री-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियों, छहों अपर्याप्तियों, दसों प्राण, सात प्राण; चारों सञ्जाप, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिथकाययोग ये ग्यारह योग

नं. ४८२ वेदकसम्पद्यष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | द | का | यो | वे | क | शा | म | स | सि | आ | उ |
|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

तिष्णि संज्ञम, तिष्णि दंसण, दवेण छ लेस्सा, भवेण तिष्णि सुहेस्साओ; भवसिद्धिया, वदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा” ।

वेदगसम्महाड्डि-अप्पमत्तंसज्जाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीव-समासो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, तिष्णि सण्णाओ, मणुसरदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिष्णि वेद, चचारि कसाय, चचारि णाण, तिष्णि मंजम, तिष्णि दंसण, दवेण छ लेस्साओ, भवेण तिष्णि सुहेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा” ।

तीनों वेद, चारों कसाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याए, भावसे तीन शुभ लेख्याएं; भव्यमिदिक, वेदकसव्यस्त्व, मन्त्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक अप्रमत्तसंयत गुण-स्थान, एक सबी-पर्याप्त जीवसमान, छहों पर्याप्तिया, दसों प्राण, आहारसंज्ञाके पिना दोर तीन संज्ञाएं, मनुष्यजाति, पंचेन्द्रियजाति, त्रयकाय, चारों मलोयोग, चारों यन्त्रयोग और औद्यारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कसाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे तीन शुभ लेख्याएं, भव्यमिदिक, वेदकसव्यस्त्व, संबिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४९० वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|-----|-----|----|
| पु. नी. | प. अ. | प. अ. | प. ग. | प. इ. | प. इ. | प. यो | पे | क | जा | भा | म | ह. | के | के. | म. | म. | की. | भा. | उ. |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

नं. ४९१ वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|-----|-----|----|
| पु. नी. | प. अ. | प. अ. | प. ग. | प. इ. | प. इ. | प. यो | पे | क | जा | भा | म | ह. | के | के. | म. | म. | की. | भा. | उ. |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

उपमसम्महाड्डिणं मण्णमाणे अत्थि अट्ट गुणद्वानाणि, दो जीवममाना, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण मत्त पाण, चचारि मण्णाओ उपमंतपरिग्गहमण्णा नि अत्थि, चचारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्स-आहार-आहार-मिस्सेहि विणा आरह जोग, तिष्णि वेद अगददेओ नि अत्थि, चचारि कसाय उपमंत-कसाओ नि अत्थि, चचारि णाण, परिहारसंज्ञेग विणा छ मंजम, तिष्णि दंसण, दव्य-मोद्धि छ लेस्साओ, भवमिद्धिया, उपमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो ज्ञाहारिणो, सागारवजुत्ता हति अणागारवजुत्ता वा” ।

तेषि चैव पञ्चानं भण्णमाणे अत्थि अट्ट गुणद्वानाणि, एओ जीवममानो, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चचारि मण्णाओ उपमंतपरिग्गहमण्णा नि अत्थि, चचारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिष्णि वेद अगददेओ नि अत्थि, चचारि

उपमसम्यग्दृष्टि चैरोंके सामान्य आलाप कहते पर—अधिरतस्यग्दृष्टि गुणस्थाने छेकर उपशालकपाय गुणस्थानक आठ गुणस्थान, मंजो पर्याप्त और मंजो-अपर्याप्त ये दो त्रियसमान, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, मात्र प्राण, चारों संज्ञाएं तथा उपशालपरिमदसंज्ञा भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रयकाय, आहारक, औद्यारिककाययोग आहारककाययोग और आहारक विकाराययोग इन तीन योगोंके पिना दोर आरह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदग्यात भी है, चारों कसाय तथा उपशालकपाययोग भी है, आदिके चार ज्ञान, परिहारपरिच्छिद्वयमके पिना दोर छह संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यमिदिक, औपदायिक मस्यस्त्व, संबिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हों उपमसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर—अधिरतस्यग्दृष्टि गुणस्थानके छेकर उपशालकपाय गुणस्थानक आठ गुणस्थान, एक मंजो पर्याप्त अति सामान्य, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा उपशालपरिमदसंज्ञा भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रयकाय, चारों मलोयोग, चारों यन्त्रयोग, औद्यारिककाययोग और औद्यारिककाययोग ये दस योग। तीनों वेद तथा अपगतवेदग्यात भी है, चारों कसाय तथा

नं. ४९२

उपमसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|-----|-----|----|
| पु. नी. | प. अ. | प. अ. | प. ग. | प. इ. | प. इ. | प. यो | पे | क | जा | भा | म | ह. | के | के. | म. | म. | की. | भा. | उ. |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

जोग, तिष्णि वेद, चचारि कसाय, असंजसो, तिष्णि पाण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणारुजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्तानं भण्णमाणे अरिय एयं गुणद्वानं, एओ जीसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चचारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चचारि कसाय, तिष्णि पाण, असंजसो, तिष्णि दंसण, दब्बेण ऋउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण तिष्णि सुहेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो अणारुजुत्ता होति अणारुजुत्ता वा” ।

उवसमसम्माइडि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणद्वानं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी,

काययोग और वैकिकिककाययोग ये दोस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन इरान, इध्यने छहों लेदयाए, भावसे छहों लेदयाए, भव्यसिद्धिक, औपशामिक-सस्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं उपशामस्यग्रहटि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहते पर— एक अधिरतसस्यग्रहटि गुणस्थान, एक सबी अपर्याप्त जीवसामम, छहों सपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाए, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैकिकिकसिद्धकाययोग और कार्यण-काययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन इरान, इध्यसे कापोत और शुक्ल लेदयाए, भावसे तेज, पस और शुक्ल ये तीन शुभ लेदयाए; भव्य-सिद्धिक, औपशामिकसस्यक्त्व, सन्निक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं ।

उपशामस्यग्रहटि संयतासयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक वेदासंयत गुणस्थान, एक सबी पर्याप्त जीवसामस, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाए, त्रियजगति और मनुष्यगति ये दो गतिया, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों पचनयोग और

न ४९७ उपशामस्यग्रहटि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|----|----|----|-----|-----|-----|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| शु | जी | प | प्रा | स | ग | ह. | क. | यो. | वे. | क. | भा | साय | द | ले | स | स. | सति | आ | उ. |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | २ | २ | १ | २ | २ |
| क | क | अ | अ | दे | दे | प | प | वे | वे | वे | मति. | अस | के | द | म. | म. | म. | म | म. |
| | | | | | | | | वि. | वि. | वि. | युत | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना |
| | | | | | | | | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव |
| | | | | | | | | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव |

तसकाओ, णव जोग, तिष्णि वेद, चचारि कसाय, तिष्णि पाण, मंजमासंजसो, तिष्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णियो, आहारिणो, सागारुजुत्ता होति अणारुजुत्ता वा” ।

उवसमसम्माइडि-पमचमंजदाणं भण्णमाणे अरिय एयं गुणद्वानं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, मणुमगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिष्णि वेद, चचारि कसाय, चचारि पाण, मणपज्जणणेण सह उवसम-सेदीदो अयसिय पमचगुणं पडिअणस्स उवसमममचेण सह मणपज्जणणं लब्भदि, ण भिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइडि-पमचमंजदस्स; तन्पुप्यत्ति-संमनाभावादो । दो संजम, परिहारसंजसो गतिय । कारणं, ण तत्र भिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइडि-मंजदा

औपशामिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमानसम, आदिके तीन इरान, इध्यने छहों लेदयाए, भावसे तेज, पस और शुक्ल लेदयाए; भव्यसिद्धिक, औपशामिकसस्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उपशामस्यग्रहटि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहते पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक सबी पर्याप्त जीवसामम, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाए, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों पचनयोग, और औपशामिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके चार ज्ञान होते हैं । उपशामस्यग्रहटिके मत-पर्ययज्ञान होता है इसका कारण यह है कि मत-पर्ययज्ञानके साथ उपशामधेर्णमे उतरपर प्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके औपशामिकसस्यक्त्वके साथ मत-पर्ययज्ञान पाया जाता है । किन्तु, भिष्णारसे पंठे अये हुए उपशामस्यग्रहटि प्रमत्तसंयत जीवके मत-पर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है; क्योंकि, प्रयोगोपशामस्यग्रहटि प्रमत्तसंयतके मत-पर्ययज्ञानको उरतानि संभव नहीं है। ज्ञान आलापके अगे सागारिक, और देओपस्थाना ये दो संयम होने हैं; किन्तु परिहार-दुत्सिंयम नहीं होता है । इसका कारण यह है कि, भिष्णारसे पंठे अये हुए प्रयोगोपशाम-स्यग्रहटि संयत जीव तो परिहारदुत्सिंयमको प्राप्त होते नहीं हैं, क्योंकि, सर्वोत्तर भी

नं. ४९८ उपशामस्यग्रहटि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|----|----|----|-----|-----|-----|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| शु | जी | प | प्रा | स | ग | ह. | क. | यो. | वे. | क. | भा | साय | द | ले | स | स. | सति | आ | उ. |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | १ | ३ | ३ | २ | २ | १ | २ | २ |
| क | क | अ | अ | दे | दे | प | प | वे | वे | वे | मति. | अस | के | द | म. | म. | म. | म | म. |
| | | | | | | | | वि. | वि. | वि. | युत | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना | विना |
| | | | | | | | | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव |
| | | | | | | | | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव | अव |

णत्थि । उत्तं च—

मणपञ्चपरिहारा उवसमसम्मत्त दोणिण आहारा ।

एदेसु एककपपदे णत्थि ति य सेसय जाणे' ॥ २२९ ॥

तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तिण्णि सुहेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुञ्जुत्ता होंति अणगारुञ्जुत्ता वा^{०००} ।

कहा भी है—

मन-पर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम, प्रथमोपशमसस्यस्त्व, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इनमेंसे किसी एकके प्रकृत होनेपर शेषके आलाप नहीं होते हैं; ऐसा जानना चाहिए ॥ २२९ ॥

विशेषार्थ — गोमटसार जीवकाण्डमें भी यही गाथा पाई जाती है, परंतु उसमें 'उवसमसम्मत्त' के स्थानमें 'पढमुवसम्मत्त' पाठ पाया जाता है जो समत प्रतीत होता है; क्योंकि, प्रथमोपशमसस्यस्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम और आहारदिक इन सबके होनेका विरोध है औपशमिकसस्यस्त्वके साथ नहीं। यद्यपि औपशमिकसस्यस्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयम और आहारदिक नहीं होते हैं फिर भी द्वितीयोपशमसस्यस्त्वकी अपेक्षा औपशमिकसस्यस्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञानका होना संभव है, इसलिये गाथामें 'उवसमसम्मत्त' ऐसा सामान्य पद रखनेसे औपशमिकसस्यस्त्वके साथ भी मनःपर्ययज्ञानके होनेका निषेध हो जाता है जो आगम विरुद्ध है। तो भी 'उवसमसम्मत्त' पदका अर्थ प्रथमोपशमसस्यस्त्व कर लेने पर कोई दोष नहीं आता है यही समझकर पाठमें परिवर्तन नहीं किया है।

संयम आलापके आगे आदिके तीन वर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं, भावसे तीन शुभ लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसस्यस्त्व, संब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मणपञ्च परिहारी पदपुत्रममत्त दोणिण आहारा । एदेसु एककपपदे णत्थि ति अहेतय जाणे ॥

गो जी ७२९.

नं. ५००

उपशमसस्यग्दष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | प्रा. | सय | द. | ल. | म. | स | सति | आ | उ |
|----|----|------|------|---|---|----|----|----|----|-------|-------|----|----|----|----|-----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| क | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | प्रा. | सय | द. | ल. | म. | स | सति | आ | उ | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

परिशारंगं त्रमं पडिवज्जंति; अद्द-उवसमसम्मत्तकालं मंतरं तदुत्पत्तिणिमित्तगुणानं संभवा-
मात्तादो । गो उवसमसम्मत्तं चढमाणो; तस्य पुव्वमेवमंतोमुहुत्तमतिय ति उवसंहरिद-
त्रिशारादो । ण ततो ओदिण्णाणं पि तस्स संभवो; णडे उवसमसम्मत्तेण विहारस्सा-
भंगमादो । तिण्णि दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण तिण्णि सुहेस्साओ; भवसिद्धिया,
उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागरुञ्जुत्ता होंति अणगारुञ्जुत्ता वा^{०००} ।

उवसमसम्मत्त-अप्यमत्तसंज्ञाणं भणमणो अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीव-
गमामो, छ पज्जचीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजदी, तस-
काओ, णन जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि क्कमाय, चत्तारि णाण, दो संजम, परिहारसंजमो

प्रथमोपशमसस्यस्त्वकालके भीतर परिहारविशुद्धिसंयमकी उत्पत्तिके लिये त्रिभूत विशिष्टसंयम,
तीर्थकर-चरणमूल यसात्ति, प्रत्यास्थानपूर्व मदारणवपटन आदि गुणोंके होनेकी संभावनाका अभाव
है। और न उपशमश्रेणीपर चढनेवाले द्वितीयोपशमसस्यग्दष्टि जीवोंके भी परिहारविशुद्धि-
संयमकी संभावना है। क्योंकि, उपशमश्रेणीपर चढनेके पूर्व ही जब अन्तर्मुहूर्तकाल शेष
रहता है तभी परिहारविशुद्धिसंयम अपने गमनागमनदि विहारको उपसंहरित अर्थात्
संग्रहित या बन्द कर लेता है। और उपशमश्रेणीसे उतरे हुए भी द्वितीयोपशमसस्यग्दष्टि
संयत जीवोंके परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना नहीं है। क्योंकि, श्रेणी चढनेके पूर्व ही
परिहारविशुद्धिसंयमके नष्ट हो जानेपर उपशमसस्यस्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयमका
निवार संभव नहीं है। संयम आलापके आगे आदिके तीन वर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्यापं,
भावसे तीन शुभ लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसस्यस्त्व, संब्रिक, आहारक, साकारोपयोगी
और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसस्यग्दष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कदने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुण-
स्थान, एक संकी पर्योत्त जीवसमास, छहों पर्योत्तियां, दसों प्राण, आहारसंज्ञाके चिन्ता
शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, प्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग
और भौतिकरुक्काययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों क्कमाय, आदिके चार दान, सामाधिक
और हेतुपस्यापना ये दस संयम होते हैं। किन्तु, परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है।

नं. ४२९. उपशमसस्यग्दष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | प्रा. | सय | द. | ल. | म. | स | सति | आ | उ |
|----|----|------|------|---|---|----|----|----|----|-------|-------|----|----|----|----|-----|-----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| क | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | प्रा. | सय | द. | ल. | म. | स | सति | आ | उ | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

अध्वयरणपहुडि जाव उवसंतकसाओ ति ताव ओष-भंगो । जपरि गव्यन्य उवससम्मत्तं भाणियच्चं ।

मिच्छत्त-सासणसम्मत्त-मम्मामिच्छत्तानं ओष मिच्छद्दि-सासणसम्मद्दि-मम्मामिच्छद्दि-भंगो ।

एत मन्तवणणा मत्ता ।

पाथणपदे अवलंबिज्जमाणे सब्बाणुपादानं मूलोप-भंगो होदि; कथ मव्य-वियप संभवादे । गुणणमि अवलंबिज्जमाणे ण होदि । पावध्वपदे अमालंबिज्जमाणे अमंजमादीणं कथं गहणं ? ण; वदिरेगमुहेण मंजमादि-परुपाट्टं तथरुपाट्टं । नेण दोणि नि वक्खाणाणि अविबुद्धाणि । एसत्थो मव्यस्य वत्तवो ।

सण्णियणुपादेण सण्णीणं भयमाणे अरिय वारु गुणद्वान्नाणि, दां अरिसमाना, छ पवजतीओ छ अपवजतीओ, दम पाण सच पाण, चत्तारि मत्ताओ मीरण्णा नि

उपशममव्ययथि जीविके अपूरंकरण गुणस्थानं केहर उवसान्नायाप गुणस्थानाह प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीविके आलाप ओर आलापके चमल होतं हैं । विवेक सच यह है कि मस्यस्य आलाप कबूते समर संभ उपासमपरस्पर ही रहना चहिये ।

मित्यास्य, सान्नाजमव्यस्य ओर मण्णिवध्यापके अत्ता कम्मता: निव्यासथि, सात्तावनामव्ययथि ओर मय्यमिथ्यायथि गुणस्थानके आलापके समार जाना चहिये ।

इसप्रकार मन्वन्नामार्गणा ममात्तं कुरे ।

प्राधान्य पदके अवलंबन स्तलेपर सभी अनुपादके आलाप मूल बोधालापके समान होते हैं, क्योंकि, मूल बोधालापमें विधि प्रतिलिख्य सभी लिख्य संभव है । किन्तु गौलमान-पदके अवलंबन करनेपर सभी लिख्य समर नहीं हैं; क्योंकि, इस नामपर सभी लिख्ये गुण-नामोंके भंगोंके ही आलाप कबूे जायेंगे, दूसरोंके नहीं ।

अंता—तो फिर प्राधान्यपदके स्तलगत नहीं करनेपर मंयमादि के प्रीपत्तो अल्प-साधिका गहण कैसे किया जा सकता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, ब्यतिरेकउपरमे मंयमादि विरहसोंकी प्रकृत्यलके त्तिर ही अमंयमादि विपक्षी विरहसोंकी प्रकृत्यणा की जाती है; तसो विवक्षित मार्गानुपारा मयस्य जीविका मार्गण हो सकता है, अन्यथा नहीं । इन्मिण्य मंयमादि अम्यपरुप और अमंयमादि व्यतिरेकरूप दोनों ही व्याख्यात अधिद्वय है । यही अर्थ सभी मार्गालाओंके विषयमें कहना चाहिये ।

संबी मार्गणके अनुयायसे सबों जीविके आलाप करने पर—भादिके वारुह गुणस्थान, संबी-पर्याप्त ओर संबी-अपर्याप्त ये दो जीव्यसमान, छहों पर्याप्तियों, छहों अपर्याप्तियों, एतों प्राण, सात प्राण; चारों संब्रापं तथा शीणसंब्रास्थान भी है, चारों गलियों, एवेदिद्वयजाति,

अन्य, चत्तारि गंधो, पंचिदिरजादी, तगताओ, एवमारु वेण, तिलिने देह उमगदेवो नि अनिय, चत्तारि कलाप अरुमाओ नि अनिय, मच जाण, मच मंजस, तिलिने रंमण, दव-मोवेदि छ केममाओ, नाभिरिया मयसिगिदिया, छ मम्मचं, मचिओ, आशुरिओ अनाशुरिओ, मागारुपुण होति अनागाकरुपुणा स' ।

नेति चेत्त एवमन्युत्पत्तेरि अन्वि वारु गुणद्वान्नाणि, एते जीवसमां, एवमन्युत्पत्तेरि, एत एव, चत्तारि मत्ताओ मीरण्णा नि अरि, चत्तारि मभीओ, पंचिदिरजादी, गामाओ, एवमारु वेण, तिलिने देह अमरुओं नि चत्ति, चत्तारि एवमन्युत्पत्तेरि नि अनिय, मच पाण, मच मंजस, तिलिने रंमण, दव-मोवेदि छ

एवमारु, ए-उठो वेण, अंती रंमणस्य पानां उव्यता भी है चारों हजारा मयस्य अरुत्तरमयस्य भी है, एवमारु वेण देह मच पाण, एते मंजस, तिलिने रंमण, उव्य मोवे चत्तारि छहों केममाओ, एवमिदिर अरुमाओ, एते ममरुप, मणि, अरुत्तर, एवमारु, एवमारु मत्ताओओ ओर अनाशुरिओ । ओं ३ ।

इतं संबी जीविके रण्णिसंभवात्तस्य भी अत्ता एते पर—पदि वारु गुणस्थान, एव संबी पर्याप्त अरुत्तर, एते रण्णिसंभवात्, एते एव, मच मंजस मच मीण अत्ताओ भी है, चारों मत्ताओ, पंचिदिरजाति, एवमारु, एवमारु मयस्य मी एवमारु वेण, अंती येन मयस्य अमरुवेदियत्ता भी है, चारों मच पाण मयस्य मयस्य मी है, देहमत्ताओ तिलिने देह मच पाण, मचो मंजस, पदि के वेण एतों, उव्य ओर भाग्ये एते केममाओ, एवमन्युत्पत्तेरि,

॥ ५०१ संबी जीविके साधान्य आलाप.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

॥ ५०२ संबी जीविके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिणिण जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अमवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०६} ।

^{१०६}(सण्णि-) सासणसम्माहट्ठीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण,

उन्हीं सब्बी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्या-दृष्टि गुणस्थान, एक सब्बी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्यापं, भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुण-स्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, चारों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग-

१ गतिवचनान्न कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्त्येति हेयम् ।

नं. ५०६ सब्बी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|-----|-------|----|----|----|-----|------|-----|------|-------|-----|--------|-----|----|----|--------|-----|------|
| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति. | आ. | उ. |
| २ | २ | ६प. | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| सा. | स.प. | ६ज | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | कुम. | कुशु | अस. | चक्षु. | का | म | मि | स | आहा | साका |
| | स.अ | | | | | | | वै | वै | कुशु | कुशु | अस. | अच | शु | अ | | | अना | अना |
| | | | | | | | | कर्म | | | | | | सा | ६ | | | | |

नं. ५०७ सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|-----|-------|----|----|----|-----|------|-----|------|-------|-----|-------|-----|-----|------|--------|-----|------|
| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति. | आ. | उ. |
| २ | २ | ६प. | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | २ |
| सा. | स.प. | ६ज | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ३ | कुम. | कुशु | अस. | चक्षु | मा | ६म. | सासा | स | आहा | साका |
| | स.अ | | | | | | | वै | वै | कुशु | कुशु | अस. | अच | मा | ६ | | | अना | अना. |
| | | | | | | | | विना | | | | | | | | | | | |

असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा^{१०८} ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणिण गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिणिण जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण

द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सब्बी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, चारों प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये चार योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान,

नं. ५०८ सब्बी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|-------|----|----|----|-----|-----|-----|-------|-------|-----|-------|-----|----|----|--------|----|------|
| गु. | जी. | प. | प्रा. | स. | ग. | इ. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सत्ति. | आ. | उ. |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| सा. | स.प | | | | | | | म | ४ | अज्ञा | अज्ञा | अस. | चक्षु | मा | ६ | म | मासा | स | आहा |
| | | | | | | | | वै | ४ | वै | वै | अस. | अच | | | | | | साका |
| | | | | | | | | वै | १ | वै | वै | | | | | | | | अना. |

(सणि-) असंजदसम्माइड्डीणं भणमणे अस्थि एयं गुणङ्गणं, दो जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ छ अपञ्चत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि पाण, असंजमो, तिणि दंमण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणि सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा^{११०} ।

^{१११} तेसिं चैव पञ्चत्तणं भणमणे अस्थि एयं गुणङ्गणं, एओ जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ,

संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अखिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण, सत्त प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसत्तय, आहारक-काययोगिकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन दान, असंयम, आदिके तीन वर्तन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औदारिककाययोग आदि तीन सम्यग्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालमन्धी आलाप कहने पर—एक अधिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसत्तय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-

नं. ५११ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| यु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | ङ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|------|-----|-----|-----|----|----|------|-------|-------|------|-------|-----|-----|-------|------|----|------|------|------|----|
| १ | २ | ६प. | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ | २ |
| अधि. | सप. | ६ख | ७ | | ५. | त्र. | आ.दि. | विना. | मति. | श्रुत | अव | अस. | के.द. | विना | भा | क्षा | अना | अना. | |

नं. ५१२ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| यु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | ङ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|------|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-------|-------|----|------|------|------|----|
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ | २ |
| अधि. | सप. | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ३ | ४ | ३ | अम. | के.द. | विना. | भा | क्षा | अना | अना. | |

साउ-धुम्फलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सातणसम्मत्त, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा^{१११} ।

(सणि-)सम्मामिच्छइड्डीणं भणमणे अस्थि एयं गुणङ्गणं, एओ जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दग जोग, तिणि वेद, चत्तारि कसाय, तिणि पाणापि तीहि अण्णाणेहि सिस्साणि, अगजमो, दो दंमण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सणिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हति अणागारुवजुत्ता वा^{११२} ।

सम्यग्त्व, आदिके दो वर्तन, द्रव्यसे कापोत ओर शुक्र लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं; भव्य-निर्दिष्टक, सात्त्विकसम्यग्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं ।

संज्ञी सम्यग्दृष्ट्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्दृष्ट्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसत्तय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और चैक्रियिक-काययोग ये त्रस योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, त्रसंयम, आदिके दो वर्तन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्दृष्ट्यादृष्ट्यादृष्टि, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ५१० संज्ञी सात्त्विकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| यु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | ङ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|-----|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|------|------|-----|----|
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ | २ |
| गा. | अ. | ५ | ७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ३ | ४ | ३ | अम | अव | अव | भा | क्षा | अना | अना | |

नं. ५१० संज्ञी सम्यग्दृष्ट्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| यु. | जी. | प. | पा. | स. | ग. | ङ. | का. | यो. | वे. | क. | सा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सति. | आ. | उ. |
|------|-----|----|-----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|----|------|------|------|----|
| १ | २ | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ | २ |
| अधि. | सप. | ६ | १० | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ३ | ४ | ३ | अम | अव | अव | भा | क्षा | अना | अना. | |

दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गण, असंजमो, तिणिण दंसण, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिणिण जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण गण, असंजमो, तिणिण दंसण, दब्बेण काउ-सुकलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिणिण सम्मत्तं, सणिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा^{१३} ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ चि ताव मूलोव-भंगो ।

काययोग और चैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशामिक आदि तीन सम्यक्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सक्षी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अचिरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सक्षी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों संज्ञाप, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, चैक्रियिकमिश्र और कर्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेख्याएं, भावसे छहों लेख्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशामिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, सक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके सक्षी जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापोंके समान होते हैं ।

नं. ५१३ सक्षी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

८३४] सत परूवणाप्रयोगद्वारे सणिण-आलावषण्णं

[१, १०]

असर्णीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, बारह जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादीओ, छ काय, चत्तारि जोग असच्चमोसवचि-जोगो ओरालिय-ओरालियमिस्स-त्रायजोगा कम्मइयकायजोगो चेदि, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण छ लेस्सा, भवेण किण्ह-शील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, छ जीवसमासा, पंच पज्ज-त्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादी, छ काय, दो जोग, तिणिण वेद, चत्तारि

असक्षी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संक्षी पर्याप्त और संक्षी-अपर्याप्तके विना शेष बारह जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तिया, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यचगति, पांचों जातियां, छहों काय, असत्पृष्ठावचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मण-काययोग ये चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगवचिज्ञानके विना शेष दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेख्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेख्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असक्षिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असक्षी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, सात पर्याप्त जीवसमासोंमेंसे एक संक्षी-पर्याप्तके विना शेष छह पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तिया, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाप, तिर्यचगति, पांचों जातियां, छहों काय, अनुभवचनयोग, और औदारिककाययोग ये

नं. ५१४ असक्षी जीवोंके सामान्य आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| गु | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| जी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

तेसिं चैव पञ्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि तेरह् गुणह्णणणि, सत्त जीवसमासा, छ पञ्चत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ट पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, एगारह जोग, ओरालिय-वेउविय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगा णत्थि । तिण्णि वेद अवगद्वेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट णत्थि । तिण्णि वेद अवगद्वेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ट णत्थि, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावोहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो णेव सण्णणो णेव असण्णणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा सागार-अणगारोहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{५५} ।

तेसिं चैव अपञ्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणह्णणणि, सत्त जीवसमासा, छ अपञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोणिण पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

उन्हीं आहारक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--आदिके तेरह गुण-स्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञा-स्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग होते हैं; क्योंकि, यद्वापर औदारिकमिश्र, चैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग नहीं होते हैं । तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों कर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभ्यसिद्धिक, छहों सम्यग्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा सक्षिक और असक्षिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं आहारक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--मिथ्यादृष्टि, सासा-द्वन्द्वसम्यग्दृष्टि, अद्विन्द्वसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, सात अप-यास जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, दो प्राण, चारों संज्ञापं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी

नं. ५१८ आहारक जीवोंके पर्याप्त आलाप

| गु. | जी. | प. | प्रा. | ग. | का. | यो. | वे. | क्र. | ज्ञा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सक्षि. | आ. | उ. |
|-----|--------|----|-------|----|-----|-----|-----|------|-------|------|----|-----|----|----|--------|----|----|
| १२ | ७ | ६ | १० | ४ | ५ | ६ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| मि. | पर्यां | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | स्यो. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगद्वेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ पाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णणो असण्णणो अणुभया वि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणगारुवजुत्ता वा (सागार-अणगारोहिं जुगवदुवजुत्ता वा^{५५}) ।

आहारि-मिच्छाहृदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणह्णणं, चोदस जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ छ अपञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ पंच अपञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ चत्तारि अपञ्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (णव पाण सत्त पाण अट्ट पाण छ पाण सत्त पाण) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, वारह जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि । तिण्णि

है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, चैक्रियिकमिश्र और आहारकमिश्र-काययोग ये तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय-स्थान भी है, विभगावधि और मतःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेवोपस्थापना और यथाव्यतविद्वारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों कर्शन, द्रव्यसे कापोत लेख्या, भावसे छहों लेख्यापं, भव्यसिद्धिक, अभ्यसिद्धिक, सस्यमिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यग्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर--एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, छौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोगद्विक और चैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग होते हैं; किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है । तीनों

१ कोष्ठकान्तर्गतपठो नास्ति ।

आहारक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

नं. ५१९

| गु. | जी. | प. | प्रा. | ग. | का. | यो. | वे. | क्र. | ज्ञा. | स्य. | द. | ले. | म. | स. | सक्षि. | आ. | उ. |
|-----|--------|----|-------|----|-----|-----|-----|------|-------|------|----|-----|----|----|--------|----|----|
| २ | ७ | ६ | ७ | ४ | ५ | ६ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | ४ | ६ | ६ | २ | २ | २ |
| मि. | पर्यां | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| से | स्यो. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

१, १.] पंचदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिणिण कसाय, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव पञ्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

तेसिं चैव अपज्जत्तणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिणिण गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्तिक्काययोगद्विक ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेक्ष्याप, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यग्दृष्टि, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक, काययोग और वैक्तिक्काययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेक्ष्याप, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञापं, नररुगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और

असंजम, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

न ५२४ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-------|----|-------|----|---|---|-------|-----|-----|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १ | १० | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ |
| सा. | स.प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अज्ञा | अस | चक्षु | सा | ६ | म | स | आहा | अना |
| | | | | | | | | ओ | १ | | | | अच | | | | | | |

जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दब्बेण काउ-लेस्सा, भवेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागार-वजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

आहारि-सम्मामिच्छाईड्ढिणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिणिण वेद, चत्तारि कसाय, तिणिण पाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दब्ब-भवेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारवजुत्ता हति अण्णागरवजुत्ता वा ।

वैक्तिक्कमिश्रकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेक्ष्या, भावसे छहों लेक्ष्यापं, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञापं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्तिक्काययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञानसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंजम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेक्ष्यापं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सक्षिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ५२५ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|------|----|----|---|-----|----|----|------|------|----|-------|----|---|------|-------|-----|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | २ | २ | १ | १ | १ | २ |
| सा | क | अ | म | दे | ति | प | त्र | औ | मि | कुम. | कुशु | अस | चक्षु | का | म | सासा | स | आहा | साका. |
| | | | | | | | | वै | मि | | | | अच. | मा | ३ | | | | अना. |

नं. ५२६ आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|-----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-------|----|-------|----|---|---|-------|-----|-------|
| गु | जी | प | प्रा | स | ग | इ | का | यो | वे | क | भा | सय | द | ले | म | स | सक्षि | आ | उ |
| १ | १ | ६ | १० | ४ | १ | १ | १० | ३ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ६ | १ | १ | १ | १ | २ |
| सम्य | स.प | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | अज्ञा | अस | चक्षु | मा | ६ | म | स | आहा | साका. |
| | | | | | | | | ओ | १ | | | | अच. | | | | | | अना. |

जोग, तिणिण वेद, चचारि कसाय, तिणिण गण, संजमासजमो, तिणिण दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिणिण सम्मच्चं, । सणिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणागारुवुत्ता वा^{५३०} ।

^{५३१} आहारि-पमत्तसंजदाणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, चचारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचि-दियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिणिण वेद, चचारि कसाय, चचारि गण, तिणिण संजम, तिणिण दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया,

गति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आविके तीन ज्ञान, संयमासयम, आविके तीन वरीन, द्रव्यसे छहों लेस्यां, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेस्यां, भव्यसिद्धिक, औपशमिक-सम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी-और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आहारक प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संबन्धी-पर्याप्त और संबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, वर्रों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और आहारककाययोगद्विक ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आविके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आविके तीन वरीन, द्रव्यसे छहों लेस्यां, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेस्यां; भव्यसिद्धिक,

नं. ५३०

आहारक संयतसंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| प्रा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| स. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| म. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| क. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| वे. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| सा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| अना. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

नं. ५३१

आहारक प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| प्रा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| स. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| म. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| क. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| वे. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| सा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| अना. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

तिणिण सम्मच्चं, सणिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणागारुवुत्ता वा ।

एत्थ पज्जत्तापज्जत्ता आलावा वत्तन्वा । एवं सव्वत्थ ।

आहारि-अपमत्तसंजदाणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिणिण सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिणिण वेद, चचारि कसाय, चचारि गण, तिणिण संजम, तिणिण दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिणिण सम्मच्चं, सणिणो, आहारिणो, सागारुवुत्ता होंति अणागारुवुत्ता वा^{५३१} ।

आहारि-अपुव्वयरणाणं भणमणे अत्थि एयं गुणद्वानं, एओ जीवसमासो, छ

औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इस आहारक प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंरन्धी आलाप भी कहना चाहिये । इसीप्रकार जहां पर संबन्धी पर्याप्त और संबन्धी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास होवें वहां भी सामान्य आलापके आतिरिक्त दोनों प्रकारके आलाप और कहना चाहिए ।

आहारक अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संबन्धी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, वर्रों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आविके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आविके तीन वरीन, द्रव्यसे छहों लेस्यां, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेस्यां; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आहारक अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तों जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुण-

नं. ५३२

आहारक अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गु. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| जी. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| प्रा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| स. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| म. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| क. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| वे. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| सा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| अना. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

असंजमो, दो दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासन-सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवञ्जुत्ता हति अणागारुवञ्जुत्ता वा ।

अणाहारि-असंजदसम्माइहीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सच्च पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, इत्थिवेदेण विणा दोण्णि वेदा, चत्तारि कसाय, तिण्णि पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा, भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवञ्जुत्ता हति अणागारुवञ्जुत्ता वा ।

अणाहारि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दोण्णि पाण, मण-वचि-उस्सासपाणा गत्थि; खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलपाणं,

क्षार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रब्यसे शुक्लेश्या, भावसे छहों लेस्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सन्निक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनाहारक असयतसम्यदष्टि जीवोंके आलाप कहते पर—एक अविस्तसम्यदष्टि गुणस्थान, एक संबन्धी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, क्षार्मणकाययोग, खीवैवके विना दो वेद, चारों कबाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रब्यसे शुक्लेश्या, भावसे छहों लेस्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आवि तीन सम्यक्त्व, सन्निक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप कहते पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं, किंतु यहांपर मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राण नहीं हैं। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यजाति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, क्षार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकपाय, केवलज्ञान, यथास्थितविहारशुद्धि-

नं. ५४२

अनाहारक असंयतसम्यदष्टि जीवोंके आलाप

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|------|---|---|---|----|----|----|---|-------|-----|----|-----|----|----|---------|-----|----|
| शु. | जी | प | प्रा | ग | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सन्निक. | जा. | उ. |
| १ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| अवि. | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

८५४]

संत-परुवपाणुयोगद्वारे आहार-आलाववण्णं

[१, १]

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दब्बेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वां, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, गेव सण्णिणो गेव असण्णिणो, सरिणिप्पाय-णत्थं गोकम्मयोगलाभावादो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवञ्जुत्ता वा हति ।

अणाहारि-अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गाण, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एक पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलपाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दब्बेण संयम, केवलदर्शन, द्रब्यसे शुक्ल अथवा छहों लेस्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षार्मणकसम्यक्त्व, सन्निक और असन्निक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, शरीर-निष्पादनके लिये आने वाली नोकर्म पुद्गलवर्णाणोंके अभाव हो जानेसे अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे गुणपत् उपयुक्त होते हैं ।

विशेषाथ—ऊपर अनाहारक सयोगिकेवलियोंके लेस्या आलापका कथन करते समय सभी प्रतियामें 'दब्बेण छ लेस्साओ' इतना ही पाठ पाया जाता है परंतु पूर्वमें क्षार्मणकाययोगी सयोगिकेवलीके आलाप बतलाते समय द्रब्यसे शुक्लेश्या अथवा छहों लेस्याएं कहाँ गई हैं, इसलिये यहांपर भी उसीके अनुसार सुधार कर दिया गया है ।

अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यजाति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोग, अपगतवेद, अकपाय, केवलज्ञान, यथास्थितविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन,

१ प्रतिशु 'दब्बेण छ लेस्साओ' इति पाठ ।

नं. ५४३

अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|------|---|---|----|----|----|---|-------|-----|----|-----|----|----|---------|-----|----|
| शु. | जी | प | प्रा | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सन्निक. | जा. | उ. |
| १ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| सयो. | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

नं. ५४४

अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|------|---|---|----|----|----|---|-------|-----|----|-----|----|----|---------|-----|----|
| शु. | जी | प | प्रा | ग | इ | का | यो | वे | क | ज्ञा. | सय. | द. | ले. | म. | स. | सन्निक. | जा. | उ. |
| १ | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| अयो. | १ | ६ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ४ | ३ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

छ लेस्माओ, भावेण अलेस्सा; भवमिन्द्रिया, सइयसम्मत्तं, नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारोहिं जुगपदुवजुप्पा वा ।

अणाहारि-सिद्धानं भण्णमाणे अत्थि अदीदयुणट्ठाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीदपञ्चत्तीओ, अदीदपणा, सीणसण्णा, सिद्धगदी, अदीदजादी, अकाओ, अजोओ, अजोओ, अणमादेवो, अरुमाओ, केवलणानं, नेम संजमो नेव असंजमो नेव संजमासंजमो, केवल-दमण, दव्व-भावेहिं अलेस्सा, नेव भवसिद्धिया नेव अभवसिद्धिया, सइयसम्मत्तं, नेव सण्णिणो नेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारोहिं जुगपदुवजुप्पा वा ।

एवं आहारमगणा समत्ता ।

तदेव च

संत-परूवणा समत्ता ।



द्रव्यमे छाँ लेइयां, भावसे अलेइया, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसस्यक्त, संदिक और असंधिक ज्ञान शैलीं विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

अनाहारी भिन्न जीवोंके आलाप करने पर--अतीतयुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतार्थानि, अतीतप्रण, श्रीणवशा, मिद्धगति, अतीतजाति, अकाय, अयोग, अणगतवेद, अकपाय, केवलणान, संयम, असयम और सयमासंयम विकल्पोंसे विमुक्त, केवलवर्तन, द्रव्य और भावसे अलेइया, भव्यमिन्द्रिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित, क्षायिकसस्यक्त, सन्निक और असन्निक विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

इसप्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई । और इसीप्रकार उसके साथ

सत्प्ररूपणा भी समाप्त हुई ।

नं. ५४५

अनाहारी सिद्ध जीवोंके आलाप.

| प | य | म | ग | र | हो | वे | क | भा | गण | द | ले | म | स | सिद्धि | जा | उ |
|----|---|---|---|---|----|----|---|----|----|---|----|---|---|--------|----|---|
| १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |



(५०) इन्दी शब्दोंका समूह क्रिया गया है निम्नकी निर्दिष्ट शृङ्खल परिभाषा पाई जाती है।)

१ परिभाषिक-शब्द-सूची

| शब्द | शृङ् | शब्द | पृष्ठ |
|----------|---------------|-------------------|-----------|
| अक्षय | ३५१ | अयोगकेवली | पृष्ठ १९२ |
| अक्षयिणी | २६६, २७७ | अयोगी | २८० |
| अक्षयणी | ११५ | अतिवाक् | ११७ |
| अक्षयिणी | ३८२ | अरिहंत | ४२, ४३ |
| अक्षयिणी | २८ | अर्जुन | ४४ |
| अक्षयिणी | ३६३, ३६३ | अलेख्य | ३९० |
| अक्षयिणी | ४१७ | अपञ्चगुह (अनुयोग) | १५८ |
| अक्षयिणी | ४१९ | अमरक | ३५४, ३७२ |
| अक्षयिणी | १०२ | अवधि | ३५९ |
| अक्षयिणी | १२० | अवधिजान | ९३, ३५८ |
| अक्षयिणी | ८६ | अवधिदर्शन | ३८२ |
| अक्षयिणी | ३५४ | अवयवपद | ७७ |
| अक्षयिणी | ५७ | अवयव | ३५४ |
| अक्षयिणी | ३५७ | अवयवमन | २८१ |
| अक्षयिणी | ३५७ | अक्षयमोचनयोग | २८१ |
| अक्षयिणी | ५७ | अक्षयस्थापना | २० |
| अक्षयिणी | २५३ | अक्षयत | ३७३ |
| अक्षयिणी | ७६ | अक्षयतमस्यगच्छे | १७१ |
| अक्षयिणी | २६३ | अक्षयनास्तिमवाक् | ११५ |
| अक्षयिणी | १८४ | | |
| अक्षयिणी | १८४ | | |
| अक्षयिणी | १०३ | | |
| अक्षयिणी | ३४२ | | |
| अक्षयिणी | २६७, ४४३ | | |
| अक्षयिणी | २६६, २५७ | | |
| अक्षयिणी | १८०, १८१, १८४ | | |
| अक्षयिणी | २७३ | | |
| अक्षयिणी | ११७ | | |
| अक्षयिणी | १७८ | | |
| अक्षयिणी | ३३९ | | |
| अक्षयिणी | ११७ | | |
| अक्षयिणी | ३१४ | | |
| अक्षयिणी | ११६ | | |
| अक्षयिणी | ११६ | | |
| अक्षयिणी | ११६ | | |

(२)

| आहारपर्याप्ति | आहारमिश्रकाययोग | आहारसंज्ञा | इ | उ | ए | औ | क | व |
|---------------|------------------------|-------------|---------------------|---|---|---|---|---|
| कर्ममगल | २५४ | कल्पव्यवहार | २९३, २०४ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ४१४ | कल्पव्यवहार | ४१४ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १२१ | कल्पव्यवहार | १२१ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १४१ | कल्पव्यवहार | १४१ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २८९ | कल्पव्यवहार | २८९ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १३८, ३०८ | कल्पव्यवहार | १३६, १३७, २३२, २६० | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २७९, ३०८ | कल्पव्यवहार | २५५ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २९५ | कल्पव्यवहार | २९९ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २९९ | कल्पव्यवहार | २४ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २९५ | कल्पव्यवहार | ३५४ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २० | कल्पव्यवहार | ३५७ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १५८ | कल्पव्यवहार | ९७ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १२२ | कल्पव्यवहार | ११४ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ९७ | कल्पव्यवहार | [परिशिष्ट भा. १] २८ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ३८८ | कल्पव्यवहार | [परिशिष्ट भा. २] १६ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ९५, १११, ३५८, ३६०, ३८५ | कल्पव्यवहार | २३६ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ३८२ | कल्पव्यवहार | ७२ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ३५० | कल्पव्यवहार | ११७ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ३४२ | कल्पव्यवहार | २३६, ४१३ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २१६ | कल्पव्यवहार | २११ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १६१, १७२ | कल्पव्यवहार | ३९५ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ३९५ | कल्पव्यवहार | १७१ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १७१ | कल्पव्यवहार | १८६, १८९ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १६१, १७२ | कल्पव्यवहार | ५० | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १८९ | कल्पव्यवहार | १०२ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १९० | कल्पव्यवहार | २४८, २६३ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ४१९ | कल्पव्यवहार | ९० | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २८ | कल्पव्यवहार | १६१ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १२० | कल्पव्यवहार | २८९, ३१६ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १५८ | कल्पव्यवहार | २९०, ३१६ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १७४ | कल्पव्यवहार | १६१, १७२ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | १८ | कल्पव्यवहार | ११९ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ३०० | कल्पव्यवहार | १२१ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | ७३ | कल्पव्यवहार | २२१ | | | | | |
| कल्पव्यवहार | २३५ | कल्पव्यवहार | | | | | | |

| | | | | | | | | |
|---|-----------------------|-------------------------|---------------------|--------------------|-------------------|---------------|------------------|----------|
| च | चतुर्भूतानि | ३७९, ३८२ | वृत्तान्त | १४५, १४६, १४७, १४८ | परिग्रहसंज्ञा | ४१५ | बाह्यानिवृत्ति | २३४ |
| | चतुरिन्द्रिय | २६४ | द्विवाद् | १४९, ३८३, ३८४, ३८५ | परिहारशुद्धिसंयत | ३७०, ३७१, ३७२ | भक्तप्रत्याख्यान | २४ |
| | चतुरिन्द्रिय | २४४, २४८ | देव | २०३ | पर्याप्त | २५४, २६७ | भव्य | १५० |
| | चतुर्विंशतिस्तव | ९६ | देवगति | २०३ | पर्याप्ति | ८४ | भव्यनोआगमद्रव्य | २६ |
| | चन्द्रप्रज्ञप्ति | १०९ | देशसत्य | ११८ | पर्यायार्थिक | ७३ | भव्यसिद्ध | ३९२, ३९४ |
| | चयनलब्धि | १२४ | द्रव्य | ८३, ३८६ | परुवावास्तुपूर्वी | ३०० | भाव | २९ |
| | च्यावित | २२ | द्रव्यमन | २५९ | पाणिमुक्तागति | १६१ | भावमन | २५९ |
| | च्युत | २२ | द्रव्यमल | ३२ | पारिणामिक | ११९ | भावमल | ३२ |
| | चेतत्य | १४५ | द्रव्यमंगल | ८३ | पुद्गल | ३४१ | भावमगल | २९, ३३ |
| छ | छात्र | १८८, १९० | द्रव्यार्थिक | १५८ | पुष्प | ७३ | भावलेख्या | ४३१ |
| | छेदोपस्थापक | ३७२ | द्रव्यानुयोग | ३२२ | पूर्वगत | ११७ | भावसत्य | ११८ |
| | छेदोपस्थापनशुद्धिसंयम | ३७० | द्रव्येन्द्रिय | २४१, २४८, २६४ | पूर्वास्तुपूर्वी | २४६, २४८, २६४ | भावानुयोग | २३६ |
| ज | जगत्प्रत्यय | ११८ | द्वीन्द्रिय | ११० | पैशुन्य | २६४ | भावोन्द्रिय | २५५ |
| | जन्तु | १२० | द्वीपसागरप्रज्ञप्ति | ३५४ | पंचेन्द्रिय | ३४१ | भाषापर्याप्ति | ११९ |
| | जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति | ११० | धारणा | ३५७ | पंचेन्द्रियजाति | ९८ | भोक्ता | ३५४ |
| | जलगता | ११३ | ध्रुवावग्रह | ३४१, ३४२ | पुण्डरीक | ७६ | मतिज्ञान | ३५८ |
| | जाति | १७ | नपुंसक | ८३ | प्रतिक्रमण | ३३८, ३३९ | मत्यज्ञान | ३०८ |
| | जीव | ११९ | नय | २०१, ३०२ | प्रतिपक्षपद | ११८ | मनस् | २५५ |
| | जीवसमास | १३१ | नरकगति | २०१ | प्रवीचर | १३५ | मनःपर्याय | ३३९ |
| | जीवस्थान | ७९ | नारकगति | १०१ | प्रतीत्यसत्य | १२१ | मनःपर्याप्ति | २०३ |
| | ज्ञान | ३५३, ३६३, ३८४ | नाथधर्मकथा | ७७ | प्रत्यक्ष | २७३ | मनःप्रवीचर | २०२ |
| | ज्ञानप्रवाद | १४२, १४३, १४६, १४७, ३६४ | नामपद | १७, १९ | प्रत्याख्यान | २६८ | मनुष्य | २७९, ३०८ |
| त | तदुभयवक्तव्यता | ८२ | नाममगल | ११७ | प्रत्येकअनन्तकाय | ११२ | महाकलय | ९८ |
| | तिर्यग्गति | २०२ | नामसत्य | १२७ | प्रत्येकशरीर | १७६ | महापुण्डरीक | ९८ |
| | तीर्थकर | ५८ | निकृतिवाक् | १२७ | प्रथमानुयोग | ४११ | महामण्डलीक | ५८ |
| | तेजोलेश्या | ३८९ | निक्षेप | १२७ | प्रमत्तसंयत | १७६ | महाराज | ५७ |
| | तेजस्काय | २७३ | निरतगति | १० | प्रमाणपद | ७७ | मान | ३५० |
| | त्यक्त | २६ | निर्वदनी | २०१ | प्ररूपणा | ४११ | मानकषाय | ३४९ |
| | त्रसकाय | २७४ | निषिद्धिका | १०५ | प्रश्नव्याकरण | २०४ | माननी | १२० |
| | त्रिखण्डधरणीश | ५८ | नीलेश्या | ९८ | प्राण | २५६, ४१२ | माया | ३५० |
| | त्रीन्द्रिय | २४२, २४८, २६४ | नैगमनय | ३८९ | प्राणावाय | १२२ | मायाकषाय | ३४९ |
| द | दशवैकालिक | ९७ | नैगोण्यपद | ८४ | प्राणान्यपद | ७६ | मायाकषाय | १२३ |
| | | | पमलेश्या | ७४ | प्रायोपगमन | २३ | मायाकषाय | १२० |
| | | | परसमयवक्तव्यता | ३९० | वाद् | २४९, २६७ | मायागता | १२० |
| | | | परिणाम | १८० | वाद् | २५३ | मार्गण | १३१ |

| | | | | | | |
|---|------------------|---------------|--------------|--------------|--------------|----------|
| म | महानिवृत्ति | ४१५ | मतिज्ञान | ३५४ | मतिज्ञान | ३५४ |
| | भक्तप्रत्याख्यान | ३७०, ३७१, ३७२ | मत्यज्ञान | ३५८ | मत्यज्ञान | ३५८ |
| | भव्य | २५४, २६७ | मनस् | ३०८ | मनस् | ३०८ |
| | भव्यनोआगमद्रव्य | ८४ | मनःपर्याय | ९४, ३५८, ३६० | मनःपर्याय | ३५५ |
| | भव्यसिद्ध | ७३ | मनःपर्याप्ति | २५५ | मनःपर्याप्ति | २५५ |
| | भाव | ३०० | मनःप्रवीचर | ३३९ | मनःप्रवीचर | ३३९ |
| | भावमन | १६१ | मनुष्य | २०३ | मनुष्य | २०३ |
| | भावमल | ११९ | मनुष्यगति | २०२ | मनुष्यगति | २०२ |
| | भावमगल | ३४१ | महाकलय | २७९, ३०८ | महाकलय | २७९, ३०८ |
| | भावलेख्या | ४३१ | महापुण्डरीक | ९८ | महापुण्डरीक | ९८ |
| | भावसत्य | ११८ | महामण्डलीक | ५८ | महामण्डलीक | ५८ |
| | भावानुयोग | २३६ | महाराज | ५७ | महाराज | ५७ |
| | भावोन्द्रिय | ११७ | मान | ३५० | मान | ३५० |
| | भाषापर्याप्ति | २४६, २४८, २६४ | मानकषाय | ३४९ | मानकषाय | ३४९ |
| | भोक्ता | ३४१ | माननी | १२३ | माननी | १२३ |
| म | | ९८ | माया | ३५० | माया | ३५० |
| | | ९७ | मायाकषाय | ३४९ | मायाकषाय | ३४९ |
| | | ३३८, ३३९ | मायागता | १२० | मायागता | १२० |
| | | ११८ | मायी | १२० | मायी | १२० |
| | | १३५ | मार्गण | १३१ | मार्गण | १३१ |
| | | १२१ | | | | |
| | | २७३ | | | | |
| | | २६८ | | | | |
| | | ११२ | | | | |
| | | १७६ | | | | |
| | | ७७ | | | | |
| | | ४११ | | | | |
| | | २०४ | | | | |
| | | २५६, ४१२ | | | | |
| | | १२२ | | | | |
| | | ११९ | | | | |
| | | ७६ | | | | |
| | | २३ | | | | |
| | | २४९, २६७ | | | | |
| | | २५३ | | | | |

(५)

| | | | |
|--------------------------|--------------------|--------------------|---------------|
| मिथ्यादर्शनवाक् | ११७ | विद्यानुवाद | १२२ |
| मिथ्यादृष्टि | १६३, २६२, २७३ | विपाकसूत्र | १०७ |
| मि प्रसंगल | २८ | विभंगज्ञान | ३५८ |
| मैत्रुनन्त्रा | ४१५ | धिष्णु | ११९ |
| मोपमनोयोग | २८०, २८१ | वीर्यनुप्रवाद | ११५ |
| मंग | ३३ | द्वैते | १३७, १४८ |
| मंगल | ३२, ३३, ३४ | वेद | ११९, १४०, १४१ |
| मंडलीक | ५७ | वेदक | ३९८ |
| यथारयातविद्यारशुद्धिसंयत | ३७१ | वेदकसम्प्रदाष्टि | १७१ |
| यथाख्यातसंयत | ३७३ | वेदकसम्प्रन्व | ३९५ |
| यथातथानुपूर्वी | ७३ | वेदनादृरत्नमाश्रुत | १२५ |
| योग | १४०, २९९ | वैकृतिक | २९१ |
| योगी | १२० | वैकृतिककाययोग | २९१ |
| रतिवाक् | ११७ | वैकृतिकमिश्रकाययोग | २९१, २९२ |
| रसननिर्वृत्ति | २३५ | व्यवहार | ८३ |
| राजा | ५७ | व्याख्याप्रज्ञप्ति | १०१, ११० |
| रूपगता | ११३ | व्यजननय | ८६ |
| रूपप्रविचार | ३३९ | व्यंजनावग्रह | ३५५ |
| रूपसत्य | ११७ | शब्दनय | ८७ |
| लान्य | २३६ | शब्दप्रवीचार | २३९ |
| लान्गलिका | २०० | शरीरपर्याप्ति | २५५ |
| लेख्या | १४९, १५०, ३८६, ४३१ | शरीरी | १२० |
| लोत्तान्दुस्वार | १२२ | शुक्लेख्या | ३९० |
| लोभ | ३५० | शुतमान | ९३, ३५७, ३५९ |
| लता | ११९ | शुताज्ञान | ३५८ |
| लस | ३०८ | शान | २४७ |
| लान्ना | ९७ | सन्निसमंगल | २८ |
| लान्नु | १७४ | सत्ता | १२० |
| लागुत्ति | ११६ | सत्यप्रवाद | ११६ |
| लाग्योग | २७९, ३०८ | सत्यमन | २८१ |
| लागुत्तिक | २७३ | सत्यमनोयोग | २८०, २८१ |
| लिप्तपनी | १०५ | सत्यमोपमनोयोग | २८०, २८१ |
| लिप्ता | २२१ | ससुयोग | १५८ |
| लिप्तगति | २९९ | सद्भावस्यापना | २० |
| | | समभिरुत् | ८९ |
| | | समयसत्य | ११८ |

(६)

| | | | |
|-------------------------|----------|-----------------|---------------|
| समवाय | १०१ | सूत्रकृत | ९९ |
| समवायद्रव्य | १८ | सूर्यप्रज्ञप्ति | ११० |
| सम्यक्त्व | १५१, ३९५ | संशुद्ध | १२० |
| सम्यग्दर्शन | १५१ | संशुद्ध | ८४ |
| सम्यग्दर्शनवाक् | ११७ | संज्ञ | १५२ |
| सम्यग्मिथ्यादृष्टि | १६६ | सज्ञी | १५२, २५९ |
| सयोग | १९१, १९२ | संयतासंयत | १७३ |
| सयोगकेवली | १९१ | सयम | १४४, १७६, ३७४ |
| साधारणशरीर | २६९ | सयोगद्रव्य | १८ |
| साधु | ५१ | संयोजनासत्य | ११८ |
| सामायिक | ९६ | संशुद्धिसत्य | ११८ |
| सामायिकशुद्धिसंयम | ३६९, ३७० | संवेदन्ती | १०५ |
| सामायिकशुद्धिसंयत | ३७३ | स्त्री | ३४० |
| सासादन | १६३ | स्त्रीवेद | २४०, ३४१ |
| सासादनसम्यग्दृष्टि | १६६ | स्थलगता | ११३ |
| सिद्ध | ४६ | स्थानांग | १०० |
| सिद्धिगति | २०३ | स्थापनामंगल | १९ |
| सुचक्रधर | ५८ | स्थापनासत्य | ११८ |
| सुक्ष्म | २५०, २६७ | स्पर्शन | २३७ |
| सुक्ष्मज्ञर्म | २५३ | स्पर्शानुगम | १५८ |
| सुक्ष्मसापराय | ३७३ | स्पर्शप्रवीचार | ३३८ |
| सुक्ष्मसापरायशुद्धिसंयत | १८६, ३७१ | स्वयंभू | १२० |
| सूत्र | ११० | स्वसमयवक्तव्यता | ८२ |

२ अवतरण-गाथा-सूची

| | | | | | | | | |
|---------|---------------------|-----|---------------|----------|-----------------|-----------------|---------------|-------------|
| क्रम स. | गाथा | पृ. | अन्यत्र कहा | क्रम स | गाथा | पृ. | अन्यत्र कहा | |
| २१८ | आहार-सरीरिदिय- | ४१७ | गो जी | ११९, २२७ | तिण्हं दोण्हं | ५३४ | गो. जी. ५३४ | |
| २२२ | काक काक | ४५६ | गो जी | ५२९, २२६ | तेज तेज | ५३४ | गो. जी. ५३५ | |
| २२३ | क्रिष्ण भ्रमरसवण्णा | ५३३ | पञ्चसं १, १८३ | २२१ | दस सण्णीणं पाणा | ४१८ | गो. जी. १३३ | |
| २१७ | गुण जीवा पञ्चत्ती | ४१२ | गो जी, २ | २२४ | पम्मा पजमसवण्णा | ५३३ | पञ्चसं १, १८४ | |
| २१९ | जह पुण्णापुण्णाइ | ४१७ | गो जी. | ११८ | २२० | पंच वि ईदियपाणा | ४१७ | गो. जी. १३० |
| २२५ | णिम्मूलगंघसाहुव- | ५३३ | गो. जी | ५०८ | २२९ | मणपज्जव परिहारा | ८२४ | गो. जी. ७२९ |

(अर्धसमता)

३ प्रतियोगिके पाठ-भेद

| पृष्ठ | पंक्ति | अ | आ | क | स | मुद्रित |
|-------|--------|--------------------|--------------------|------------|------------|---------------------|
| ४११ | ४ | सणि-असणीसु | सणीसु | असणीसु | सणि-असणीसु | सणि-असणीसु |
| ४११ | ६ | पणती | पजती | | | |
| ४१२ | ५ | -मापेक्षया | -मापेक्ष्य | | | -मापेक्षया |
| ४१२ | ११ | -यस्यैकत्वाभावाच्च | यस्य चैकत्वाभावात् | | | -यस्य चैकत्वाभावात् |
| ४१३ | ३ | -संज्ञायां | | | | -संज्ञाया |
| ४१३ | ४ | लोभोदय | लोभोदय | | | लोभोदय- |
| ४१३ | ७ | संज्ञान- | संज्ञान- | | | संज्ञान- |
| ४१४ | १ | -संज्ञानां | | | | -संज्ञानां |
| ४१४ | ८ | मायाप्रेमयो- | | | | मायालोभयो- |
| ४१४ | १० | -प्रभावा | | | | -प्रभावा |
| ४१५ | ६ | इदिया | | | | इदिया |
| ४१६ | ४ | ए | ए | | | ए |
| ४१७ | ३ | -गत- | -गत- | | | -गत- |
| ४१७ | ४ | -घट- | -घट- | | | -घट- |
| ४१८ | ३ | -आणापणेहि | | | | -आणापणापणेहि |
| ४१८ | ८ | पज- | अपज- | | | |
| ४१८ | ११ | -पजत्तस्स | | | | पजत्तयस्स |
| ४१९ | ३ | एवासि | एवासि | | | एवासि |
| ४२० | ३ | -विसिद्धे | | | | -विसिद्धे |
| ४२० | ११ | -भावेण | | | | -भावेहि |
| ४२१ | २ | छणं भेवं | छलेस्साभेवं | छ-भेवं | | छभेवं |
| ४२१ | ८ | सत्त पाण | | | | सत्त पाण २ |
| ४२२ | ९ | भणदि | भणिवे | | | भणवे |
| ४२५ | ४ | -त्तणे | -त्तणं | | | -त्तोये |
| ४२६ | ६ | -जुत्ता | | | | -जुत्ता वि अरिथि |
| ४२६ | ७ | वि अरिथि | | | | |
| ४२६ | ७ | -णमोघालोवे | -णं भणमाणे | -णमोघालोवे | | |
| ४२६ | ८ | भणमाणे | मोघालोवे | | | |
| ४२६ | ८ | अपज- | | | | अपज |
| ४२८ | ४ | अणाहारिणो | | | | अणाहारिणो |
| ४३० | २ | पजत्तीओ | | | | अपजत्तीओ |
| ४३० | ७ | -जीवाणं | जीवा ण | | | जीवा ण |
| ४३३ | १ | X | | | | -मोघालोवे |

| | | | | | | |
|-----|----|--------------------|--------------------|--|--|--------------------------|
| ४३३ | २ | दंसण | | | | सण्णाओ |
| ४३६ | ३ | अरिथि | | | | गरिथि |
| ४३६ | १० | -दयाणं सदि | | | | -दयो णस्सदि |
| ४३८ | ४ | -माण- | | | | -माया- |
| ४४३ | २ | णिव्वत्त- | णिव्वत्त | | | |
| ४४४ | ४ | भवति | भवति | | | भवति |
| ४४४ | ७ | अरिथि | गरिथि | | | |
| ४४६ | २ | लेव- | णेव- | | | लेव- |
| ४४७ | ३ | करणेत्ति | | | | करणेत्ति |
| ४४८ | ८ | णाण | | | | सण्णेत्ति |
| ४५३ | ३ | पज्जं | | | | |
| ४५८ | ३ | काउसुक्क- | | | | काउ- |
| ४५९ | ४ | काउसुक्क- | | | | काउ- |
| ४६० | १ | पज्जं | | | | अपज्जत्तीओ |
| ४६० | ४ | तदिय- | | | | |
| ४७० | २ | इदियाणं | | | | इदयाणं |
| ४७० | ३ | एवो ओदो | एवाओ दो | | | |
| ४७१ | १ | पचिविय-अपज्जत्ता | | | | पंचिवियतिरिक्ख-अपज्जत्ता |
| ४७१ | ४ | अणाहारिणो | | | | आहारिणो |
| ४७५ | ८ | सत्त पाण | | | | दस पाण सत्त पाण |
| ४७६ | ८ | पज्जत्तीओ | | | | अपज्जत्तीओ |
| ४७८ | २ | सम्मामित्याइट्ठीणं | सम्मामिच्छाइट्ठीणं | | | |
| ४७८ | ६ | -ज्जमाणं | -ज्जमाणं | | | -ज्जमाणं |
| ४८१ | ३ | पचिवियतिरिक्खाणं | पचिवियतिरिक्खं | | | पचिविय-तिरिक्खाण |
| ४८२ | ७ | रिक्खअपज्जत्ताणं | | | | |
| ४८४ | ७ | X | | | | |
| ४८८ | ७ | आहारिणो | | | | आहारिणो अणाहारिणो, |
| ४९२ | ७ | णव पाण | | | | णव पाण सत्त पाण |
| ४९७ | ४ | दव्वभावेहि | दव्वभावेण | | | |
| ४९८ | २ | असण्णिणीओ | | | | सण्णिणीओ |
| ४९८ | ७ | -काउसुकलेस्सावि | -काउसुकलेस्साओ | | | काउलेस्साओ |
| ५०० | ८ | सत्त पाण | | | | सत्त पाण सत्त पाण |
| ५०२ | ५ | अजोगी | अजोगो | | | |
| ५०२ | ७ | असण्णिणो | असण्णिणो | | | असण्णिणो णव |
| | | वि अरिथि | अणुभया या वि अरिथि | | | असण्णिणो वि अरिथि |

| | | | | | |
|-----|----|-----------------------|---|----------------------|----------------------|
| ६०० | १ | वीप | " | पदे | दोषिण |
| ६०२ | ३ | तिणिण | " | " | " |
| ६०३ | ४ | अकसावा | " | " | " |
| ६०४ | २ | मूलोघमुत्तजीव- | " | अपज्जत्तीओ | मूलोघमुत्तजीव- |
| ६०६ | २ | पज्जत्तीओ | " | तिरिक्कगदी | तिरिक्कगदी |
| ६०६ | " | तिणिणगदी | " | आहारिणो | आहारिणो |
| ६०९ | ३ | आहारिणो | " | अणाहारिणो, | अणाहारिणो, |
| ६०९ | १२ | -मुवसाणिय- | " | " | " |
| ६१० | ३ | पद | " | " | " |
| ६१० | ६ | -काइयणिव्वत्ति- | " | काइयणिव्वत्ति- | काइयणिव्वत्ति- |
| ६१० | " | पज्जत्ता- | " | पज्जत्तापज्जत्ताणं | पज्जत्तापज्जत्ताणं |
| ६१० | ९ | पज्जत्तापज्जत्ताण- | " | पज्जत्ताणमकम्मोदय- | पज्जत्ताणमकम्मोदय- |
| ६११ | २ | मकम्मोदयाण | " | तेउकाइयाणं | तेउकाइयाणं |
| ६११ | " | वणिज्ज- | " | " | " |
| ६११ | " | पज्जत्ताणं | " | पज्जत्ताणं | पज्जत्ताणं |
| ६१२ | २ | अण्णोयवण्णालावे | " | " | " |
| ६१४ | ७ | गुलिवसा । | " | अण्णोयवण्णा | अण्णोयवण्णा |
| ६१४ | " | भवसिद्धिया | " | तोवि रुद्धिवसा | तोवि रुद्धिवसा |
| ६१५ | ८ | पज्जत्तीओ | " | भवसिद्धिया अमव- | भवसिद्धिया अमव- |
| ६२० | १० | तेसि २ | " | सिद्धिया, | सिद्धिया, |
| ६२१ | १ | वण्णकरकाओ वण्णकर-भंगो | " | तेसि | तेसि |
| ६२२ | ३ | सत्त पाण | " | " | " |
| ६२७ | १ | -इट्ठिण्णहुडि | " | सत्त पाण २ | सत्त पाण २ |
| ६२७ | ३ | चउगदिगदीओ | " | चउगदिगदीओ | चउगदिगदीओ |
| ६२७ | ५ | द्व्व-भावेहि | " | द्व्व-भावेहि अलेस्सा | द्व्व-भावेहि अलेस्सा |
| ६२७ | " | छ लेस्साओ | " | " | " |
| ६३३ | ४ | इदिओ | " | इदि ओ | इदि ओ |
| ६३४ | ४ | -जोगीभगो | " | ताओ वि | ताओ वि |
| ६३४ | ८ | ताओवि | " | " | " |
| ६५३ | ३ | सण्णित्तिभु | " | सण्णित्तिभु | सण्णित्तिभु |
| ६५४ | १ | जोगेव उत्ताणं | " | जोगेव उत्ताणं | जोगेव उत्ताणं |
| ६५४ | १ | उज्जत्ताणं | " | उज्जत्ताणं | उज्जत्ताणं |
| ६५४ | १ | छव्वण्णकालिय- | " | छव्वण्णोराणिय | छव्वण्णोराणिय |
| ६५४ | २ | परमाणाण | " | परमाणुणं | परमाणुणं |
| ६५४ | २ | परमाणादि | " | परमाणुहि सह | परमाणुहि सह |
| ६५४ | " | सद्दामिलिक्काण | " | मिलिक्काण | मिलिक्काण |

| | | | | | |
|-----|----|-----------------------------------------------------------|---|--------------------------------|---|
| ६५४ | ७ | कालोद- | " | काचोद- | " |
| ६५८ | ४ | -केवलि | " | " | " |
| ६५९ | २ | अयोग- | " | समणो | " |
| ६६० | ५ | समणा | " | समणो | " |
| ६६० | " | पबंध- | " | बंध- | " |
| ६६९ | ६ | विरहाकालाव- | " | विरहकालोव- | " |
| ६७२ | ८ | तंजहा गेदव्वा तम्हा गेदव्वा जं जहा गेदव्वा जं जहा गेदव्वा | " | जहा मूलोघो गीदो तं जहा गेदव्वा | " |
| ६८४ | ८ | सण्णिणो | " | " | " |
| ७०० | १ | अण्णियत्तं अण्णियत्तं अण्णियत्तं | " | अण्णियत्तं अण्णियत्तं | " |
| ७०० | २ | छ लेस्साओ | " | अलेस्साओ | " |
| ७०५ | ५ | आहारिणो | " | " | " |
| ७१२ | १० | अणाहारिणो | " | " | " |
| ७१२ | ३ | मुणं सुए | " | माण-माया- | " |
| ७१३ | ३ | X १० ४ २-१ | " | " | " |
| ७२६ | ७ | -णाणाणं | " | -णाणाणि वत्तव्वाणि | " |
| ७२६ | " | वत्तव्वाणं | " | " | " |
| ७२६ | ८ | तिणिण | " | तेण | " |
| ७२७ | १ | इयकेसु सत्तीसु | " | इयरेसु सत्तेसु | " |
| ७२७ | २ | -विवक्खियाणाण- | " | " | " |
| ७२७ | ७ | -तं पिच्छायद- | " | -तं पिच्छायद- | " |
| ७३० | ४ | मूलोघोव्व मूलोघोव्व मूलोघो | " | मूलोघो व्व | " |
| ७३३ | ७ | विवट्ठिओ | " | " | " |
| ७५० | १ | वट्टावण- | " | एवं छेदोवट्टावण- | " |
| ७५१ | २ | खीणत्तणाविओ | " | खीणत्तणाविओ | " |
| ७५१ | २ | किण्ह-णील किण्हलेस्साओ किण्ह-णील | " | किण्हलेस्सा | " |
| ७५४ | २ | काउलेस्साओ | " | " | " |
| ७५४ | २ | भावेण भावेण छ लेस्साओ | " | भावेण किण्हलेस्सा | " |
| ७६३ | ७ | वि एवं | " | " | " |
| ७७८ | ४ | पविदियजादि | " | पंच जादीओ | " |
| ७९४ | ६ | X तिन्व लाहाणं | " | पिडियाणं | " |
| ८०१ | ४ | अजोगि-केवलि | " | तिव्वलोहानं | " |
| ८०१ | ५ | अण्णलेस्साणं | " | अजोगिकेवलि X | " |
| ८१६ | ८ | वेवगसम्मारट्ठि-प्यहुडि | " | वेवगसम्मारट्ठि- | " |
| ८१६ | " | " | " | पमत्त- | " |

(१३)

| | | | | | | |
|-----|---------------|-------------|-----------|-----------------|--------------|---|
| ८२० | ओरालिय | " | ओयरिय | " | तद्युपपत्ति- | " |
| ८२१ | तद्युपपत्ति- | भवा- | " | संभवा- | पञ्चागद- | " |
| ८२२ | पाञ्चागद- | " | " | पडियज्जति | " | " |
| ८२३ | पडियज्जति | " | " | तसो ओदिण्णाणं | " | " |
| ८२४ | उवसंघडिट- | उवसंहरिट- | " | सेसयं जाणे | " | " |
| ८२५ | तसो उदिण्णाणं | " | " | पसत्थो | " | " |
| ८२६ | -सेसपज्जोणे | " | " | वत्तब्बो | " | " |
| ८२७ | पसत्था | " | " | सण्णिसासणसम्मा- | " | " |
| ८२८ | सासणसम्मा- | " | " | चत्तारि जोग- | " | " |
| ८२९ | चत्तारि जोग- | चत्तारि जोग | सव्व जोगो | असंजमो | " | " |
| ८३० | सव्वजोगो | सव्वजोगो | " | जोगो | " | " |

४ प्रतियोगं छूटे हुए पाठ.

| | | | |
|-------|-------------|---------------------------|---------------------|
| पृष्ठ | पक्षि प्रति | कथसि | कथांतक |
| ४५५ | ३ अ | | ओरालियकायजोगो |
| ४६४ | ३ अ | | छ अपज्जत्तीओ, |
| ५०८ | ७ अ. | मणुस्स-सम्माभिच्छाट्टुणिं | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ५२५ | ७ आ. | मणुसिणी-विदिय- | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ५२९ | १ आ | रुव्वेण छ लेस्साओ | केवलंत्तण, |
| ५४३ | ६ आ. | " | अइयसम्मत्तेण विणा |
| ५४५ | १ आ. | तेसि चेत पज्जसाण | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ५६० | ७ क | पवमिणियपुरिम- | " |
| ५६३ | १० अ. आ. क. | पज्जत्तकाले | " |
| ५६६ | ३ अ. | भिच्छाट्टुणि- | " |
| ५७० | ९ अ आ. क. | भोणेण | " |
| ५७८ | ५ अ. क. | " | तसकाओ, |
| ५८६ | ३ अ. आ. क. | " | सत्त पाण, |
| ५९२ | ५ अ. आ. | तमकाइया | नियल्लिविया ति |

(१४)

| | | | | |
|-----|-----------------------|-----|-----|---------------------|
| ६०० | पइदियजादि-आवी | ... | ... | अवगदवेदो वि अरिय, |
| ६३० | तिणिण अण्णाण | ... | ... | चत्तारि कसाय, |
| ६३६ | असच्चमोस- | ... | ... | णवरि |
| ६५४ | कवाडगद- | ... | ... | चेव भवादि, |
| ६५६ | ओरालियमिस्सकायजोगो | ... | ... | तसकाओ, |
| ६६२ | वेउदिव्यकायजोगो- | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ६७८ | तेसि चेत पज्जत्ताणं | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ६८७ | तेसि चेत अपज्जत्ताणं | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ६९८ | दो जीवसमासा | ... | ... | -समासो वि अरिय |
| ७०४ | छ अपज्जत्तीओ, | ... | ... | |
| ७०९ | मणुसगवी | ... | ... | कोधकसाओ, |
| ७१२ | कोधकसाय-विदिय- | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ७१२ | लोभकसायस्स | ... | ... | वत्तब्बो |
| ७१४ | सागर- | ... | ... | -दुवजुत्ता वा । |
| ७१६ | चत्तारि गदीओ, | ... | ... | चत्तारि गदीओ, |
| ७१८ | छ अपज्जत्तीओ, | ... | ... | चत्तारि गदीओ, |
| ७३६ | छ अपज्जत्तीओ, | ... | ... | चत्तारि गदीओ, |
| ७४५ | चत्तारि गदीओ, | ... | ... | चत्तारि गदीओ, |
| ७५५ | चत्तारि गदीओ, | ... | ... | चत्तारि गदीओ, |
| ७६४ | छ अपज्जत्तीओ | ... | ... | छ अपज्जत्तीओ |
| ७६९ | तेसि चेत पज्जत्ताणं | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ७७९ | तेउलेस्सा-अप- | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ७८४ | सागरुव- | ... | ... | -रुवजुत्ता वा । |
| ७८४ | तेसि चेत पज्जत्ताणं | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ७८५ | विणिण णाणाणि | ... | ... | असंजमो, |
| ८१६ | वेक्कसम्माइट्टि-पमत्त | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| ८१७ | वेक्कसम्माइट्टि-अप्प- | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |
| | अणाहारि-असंजद- | ... | ... | अणागारुवजुत्ता वा । |

५ विशेष टिप्पण (पुस्तक १)

- पृ० ५०
१५७ २ “ण च संतमर्थमागमो ण परूवेइ तस्स अत्थावयत्तप्पसगादो” में आये हुए ‘अत्थावयत्तप्पसगादो’ का अर्थ ‘अर्थापदत्व अर्थात् अतर्थकपदत्वका प्रसंग प्राप्त हो जायगा’ ऐसा किया गया है। जयधवला अ. प्र. पृ. ५१२ में भी ‘ण च संतमर्थं ण परूवेदि सुंचं, तस्स अब्बावयत्तदोसप्पसगादो’ इस प्रकारका वाक्य पाया जाता है। जिसमें आये हुए ‘अब्बावयत्तदोसप्पसगादो’ का अर्थ ‘अव्यापकत्वदोषका प्रसंग प्राप्त हो जायगा’ होता है। धवलाके पाठसे जयधवलाका पाठ शुद्ध प्रतीत होता है।

(पुस्तक २)

- ४११ ५ पदासिं विधि पुध पुध उवसंदरिसणा परूवणा।
जयध. अ. पृ. ६३१
- ४३५ ४ उदीरणाए चव उदयो उदीरणोदओ ति।
जयध. अ. पृ. ५२६.

इस पंक्तिके अनुसार ‘उदीरणामें ही होनेवाले उदयको उदीरणोदय कहते हैं’ ऐसा अर्थ होता है। परन्तु हमने अर्थ करते समय उदीरणोदयका उदीरणा तथा उदय ऐसा अर्थ किया है। इसका कारण यह है कि आठवें गुणस्थानके अन्तिम समयमें भय प्रकृतिकी उदीरणा व्युच्छित्ति तथा उदय व्युच्छित्ति होती है।

- ४४८ ८ १ ‘णिरया किरहा’ गो जी ४९६ णेरइया णं भंते ! सब्बे समवन्ना ? गोयमा ! णो इण्ठे समट्ठे ! से केणट्ठेण भंते ! एवं बुअइ—नेरइया नो सब्बे समवन्ना । गोयमा ! णेरइया दुविह पन्नत्ता, तं जहा—पुवोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुवोववन्नगा ते णं विसुद्धवन्नतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धवन्नतरागा । मन्ना. १७ १ ३

